प्रकाशक —नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शंभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम संस्करण, सं० २०३१, ११०० प्रतियाँ

मूल्य ६०-००

वक्तव्य

खोज का उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठको के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम सवत् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमे स० २००१ से २००३ तक (सन् १९४४ से १९४६ ई०) के खोजकार्य का उल्लेख किया गया है। यद्यपि इसका आकार बहुत बडा हो गया है, तथापि अनुसधान की उपयोगिता की दृष्टि से सक्षेपीकरण नही किया गया है। यह दो खडो मे प्रकाशित किया जा रहा है। इस विवरण को भूतपूर्व निरीक्षक प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने तत्कालीन खोज अन्वेषको, विशेपत श्री दौलतराम जुयाल की सहायता से हिंदी मे संपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण मे भी ग्रथो और ग्रथकारो का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,०००) रु० के अनुदान से चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६—३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणो (सन् १९२३—४९ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५९ ई० मे कृपापूर्वक ७,०००) का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य तो सपन्न हो ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८–४० तथा सन् १९४१–४३) त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन मे प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलत. आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणो के प्रकाशन का कार्य रुक गया। सन् १९५६ से ही उक्त दोनो त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठको के समुख न आ सके।

अनुसधित्सुओ की आवश्यकताओ को दृष्टि मे रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अत मे केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाज कल्याण मत्रालय की २९.६.१९७४ की एफ ९–२।७४–एच (डी० आई०) (एल) सख्यक राजाज्ञा द्वारा १२,९७६) का अनुदान प्राप्त हुआ। इससे प्रस्तुत विवरण के प्रकाशन का कार्य प्रारभ हुआ और यह इस रूप मे विद्वत्समाज के समक्ष उपस्थित है। इसका दूसरा खड भी मुद्रित हो रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यत आभारी हैं।

मेष सक्राति,
स० २०३२ वि०

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

विषय सूची

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

सवत् २००१–२००३ वि०

सभा के नियमानुसार उसके सभी कार्यों मे पहले से ही सौर विक्रम सवत् का उपयोग होता आ रहा है। परतु अग्रेजी शासन मे प्रातीय सरकार के (जिसकी सहायता से यह कार्य हो रहा है) नियमानुकूल खोज विवरणों मे ईसाई सन् का ही व्यवहार होता रहा। खोज का प्रस्तुत त्रैवार्पिक विवरण विक्रम सवत् के क्रम से तैयार किया गया है। वैसे इसमे तीन ही वर्षों के विवरण-पत्र रहने चाहिए थे, परतु वि० सवत् के क्रम से व्यवस्थित करने के लिये इसमे लगभग चार मास के विवरण-पत्र और सम्मिलित कर देने पडे। आगे के खोज-विवरण अग्रेजी मे न छपकर हिंदी मे ही छपेगे।

खोज की उक्त कार्यविधि मे तीन अन्वेषको—श्री दौलतराम जुयाल, श्री विद्याधर त्रिवेदी और श्री कृष्णकुमार वाजपेयी ने विवरण लेने का कार्य किया। श्री विद्याधर त्रिवेदी ने प्रस्तुत त्रिवर्षी के आरभ मे ही थोडे दिन काम करके त्यागपत्र दे दिया, जिसके एक वर्ष पश्चात् श्री कृष्णकुमार वाजपेयी उनके स्थान पर नियुक्त हुए। इस प्रकार वर्ष भर एक अन्वेपक का काम वद रहने से विवरण लेने के कार्य मे निश्चय ही कुछ कमी हुई।

श्री दौलतराम जुयाल ने सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय के थोडे से ग्रथो के विवरण लेने का कार्य निपटाकर आजमगढ, गोरखपुर, इलाहाबाद और सुलतानपुर जिलो मे कार्य किया। प्रथम तीन जिलो का कार्य समाप्त हो गया है और अब सुलतानपुर मे कार्य चल रहा है। श्री कृष्णकुमार वाजपेयी ने गाजीपुर जिले का कार्य समाप्त करके जौनपुर जिले मे कार्य आरभ किया ही था कि वहाँ के अधिकाश भागो मे प्लेग का प्रकोप हो गया। अत वहाँ का कार्य स्थगित कर उन्हें श्री जुयाल जी के साथ ही काम करने के लिये सुलतानपुर भेज दिया गया।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे १२५४ ग्रथो के विवरण लिए गए हैं। इसमे ३४७ ग्रथो के विवरण श्री कटमणि शास्त्री (शिक्षाविभाग, कांकरोली) और २७ ग्रथो के विवरण श्री मोतीलाल अग्रवाल (एक्साइज इस्पेक्टर रियासत छतरपुर) से प्राप्त हुए। शेप कार्य तीन वर्षो मे इस प्रकार विभक्त हैं —

स० २००० (पौष–चैत्र) मे २०१ विवरण, स० २००१ मे १२६, सं० २००२ मे २४१ और स० २००३ मे ३१२ विवरण।

५६६ ग्रथकारो के रचे ८७२ ग्रथो की ६६७ प्रतियो के विवरण लिए गए हैं। इनके अतिरिक्त २५७ ग्रथ ऐसे है जिनके रचयिता अज्ञात है। ४०३ ग्रथकारों के रचे ५६७ ग्रथ खोज मे बिलकुल नए है। इनमे १६३ ऐसे नवीन ग्रथ सम्मिलित है जिनके रचयिता तो ज्ञात थे; किंतु उनके इन ग्रथो का पता न था।

ग्रंथों और उनके रचयिताओं का शताब्दि-क्रम निम्नलिखित है—

शताब्दी	१०वीं	१३वीं	१४वीं	१५वीं	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	२०वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	१	१	१	५	१२	४३	७३	८७	३१	३१२	५६६
ग्रंथ	१	१	१	२३	३८	१७८	६२	१८१	४५	४७४	१२५४

विषय-विभाग की सामग्री यों है—

काव्य–१३६, दर्शन और अध्यात्म–७३, भक्ति–१५०, योग–३, अलंकार–१७; शृंगार–१२२, पिंगल–११, नाटक–२, संगीत–६, कोश–७, व्याकरण–१, भूगोल–७, ज्योतिष तथा गणित–२६, पुराण और इतिहास–३६; पौराणिक कथाएँ–५५, कथा-कहानी–५८, परिचयी या जीवनवार्ता–६, धार्मिक और सांप्रदायिक–५०, लीलाविहार–६२, नीति, राजनीति और हितोपदेश–६५, माहात्म्य और स्तोत्र–५०, वैद्यक–३६, कोकशास्त्र–५, स्वरोदय–६, शालिहोत्र–१०, रमल और शकुन–६, वंशावली–६; वास्तुविद्या–२, यात्रा–६, पाकविद्या–१, पहेली–१, रत्नपरीक्षा–१, जंत्र, मंत्र और तंत्र–५, सामुद्रिक–४, रसायन–१, आखेट–१, धनुर्विद्या–१, फुटकल–१८६।

नवीन रचयिताओं में ईश्वरदास, कन्हैयालाल भट्ट "कान्ह", कान्ह कवि (लघु-कान्ह), कुदरतीदास या कुदरती साहब, कृष्णदास, गंगाराम, घनदेव मान्यकुब्ज (वैष्णव), चतुर्भुज मिश्र, छविनाथ, जान कवि, मिरजा मुहम्मद जान, तामसन साहब, बेघनाथ या बेघू, देवेश्वर माथुर, नवरंगदास स्वामी, पचौली देवकर्ण, प्राणनाथ सोती, फणींद्र मिश्र, बलदेव कवि, बलरामदास, भगवतदास, भरनी मिश्र–रामनाथ पंडित, भारथ सिंह या भारथ साहि; भीम, महीपति या महीप, मुरलीधर कविराउ, शिवदत्त त्रिपाठी, शिवदास गदाधर, शेख अहमद, शेख निसार, समाधान, हसन अली खाँ, हेमरतन और हेमराज सधेन मुख्य है।

१. ईश्वरदास (इशरदास)—इनकी एक रचना 'सत्यवती की कथा' (काशी नागरी-प्रचारिणी सभा में विद्यमान) का पता खोज में प्रथम बार ही लगा है। यह खंडित है जिसमें केवल संख्या ४, १८ और १६ के तीन ही पत्रे हैं। रचनाकाल और लिपिकाल तो अज्ञात हैं ही, पर इन पत्रों द्वारा रचना के नाम का भी पता न चल सका। ग्रंथकार का नाम अंतिम पत्र में इशरदास (ईश्वरदास) दिया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कृत हिंदी साहित्य के इतिहास में इस नाम के एक रचयिता की रचना 'सत्यवती-कथा' का उल्लेख है। उसमें कथा का सार भी दिया है। मिलान करने पर पता चला कि प्रस्तुत रचना में भी वही कथा है। इसी आधार पर इसका नाम 'सत्यवती-कथा' विदित हुआ। उक्त इतिहास में रचनाकाल और रचयिता के संबंध में ये उद्धरण दिए हैं :—

भादों मास पाख उजियारा। तिथि नौमी औ मंगल वारा ॥
नषत अस्विनी मेषक चंदा। पंच जना सो सदा अनंदा ॥
जोगिनिपुर दिल्ली बड थाना। साह सिकंदर बड सुलताना ॥
कंठे बैठ सरसुती, विद्या गनपति दीन।

इसके अनुसार रचयिता दिल्लीपति शाह सिकदर के राज्यकाल (सवत् १५४६–१५७४ वि०) मे वर्तमान थे और दिल्ली के ही पास जोगिनीपुर स्थान के निवासी थे। भाव, भाषा और शैली के विचार से, विवरणिका मे आए "भरतविलाप" (सख्या २१) और "अगदपैंज" (सख्या १३) भी इन्ही के रचे जान पडते है। उदाहरण के लिये इन ग्रथो से कुछ उद्धरण दिए जाते हैं—

सत्यवती की कथा

कंठे वैठ सरसुती, विद्या गनपति दीन्ह।
ता दिन कथा आरंभ यह, इसरदास कवि कीन॥
रोवैं व्याधि वहुत पुकारी। छोहन मिछ रोवैं सव झारी॥
बाघ सिंघ रोवत वनमांही। रोवत पंछी बहुत ओनाही॥

(हिंदी साहित्य का इतिहास)

रिषिअन के राआ पुछत हव मौ तोहि।
कैसे बाढे ही पाचौ पडौ चोथे अरथ सुनावहु मोहि॥

(खोज मे प्राप्त प्रति)

भरतविलाप

सुरसत चरन मनिवहु, मनमैं वहुत उछाह।
राम कथा कछु भाषहु, जाकै गुन औगाह॥
रामचंदर छाडा असथाना। रोए नगर सकल परधाना॥
रोए सीआ सतीवर नारी। राम लखन वीनु अवध उजारी॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
चोथे दूत विदा जब भयऊ। अतरवास जोजन सत गयऊ॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
घर घर रोअही पुरुषवर नारी। राह वाट रोए पनिहारी॥
मन मह रोवत पसु ओ पछी। हाहाकार रोए जल मंछी॥
:o: :o: :o: :o: :o:
भरथवीलाप कथा वीमल, इसरदास कही गाव।
जो नर सुनही जो गावही, जनम जनम अघ जाइ॥
:o: :o: :o: :o: :o:

अगद पैंज

मोरी दोहई मंत्री चोथे पठवहु एक दूता।
वेगि जइ लै अवही वलि रइक पुता (?वालिराइ के पूता)॥
:o: :o: :o: :o: :o:
रैंघुनंदन अस बोले अंगद को नही जन (जान ?)।
राम राम जग तरन इसरदास कवि मान॥

"भरतविलाप" और "अगदपैंज" तो एक ही ग्रथ के अश जान पडते हैं। सभव है, कवि ने 'रामचरित्र' पूरा लिखा हो और उसी के ये अश हो। इन उद्धरणो से स्पष्ट है कि सरस्वती की वंदना "सत्यवती कथा" और "भरतविलाप" दोनो मे की गई है। "अगदपैंज" की प्रति खडित मिली है जिससे उसके—यदि वह स्वतत्र रचना हो—मगलाचरण के उद्धरण प्राप्त नही; पर विलाप-वर्णन दोनो के मिलते-जुलते है। कवि का नाम "इसरदास" तीनो ग्रथो मे दिया है। भाषा भी सवकी अवधी ही है।

२. कन्हैयालाल भट्ट उपनाम "कान्ह"—इनका पता भी इस विवरणों में नया ही लगा है। ये जयपुर के निवासी थे और मथुरा में रहने लगे थे। उन्होंने अपने को किसी सरदार नरेश का मत्तसिरताज कहा है—

श्री सिरदार नरेस को सकल मत्र सिरताज।
जग जाहर जमरा के हित यह रचित समाज॥
श्री जैपुर वासी सुकवि मथुरान्य द्विजराज।
'कानभट्ट' कीने कवित्त विशति श्लेष समाज॥

उनकी "श्लेषार्थविंशति" नामक महत्त्वपूर्ण रचना के विवरण लिये गए हैं, जिसमें श्लेषालंकार पर एक सौ कवित्त हैं। ग्रंथ पूर्ण होने हुए भी उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं।

३. कान्ह कवि (लघुकान्ह)—इन्होंने संवत् १९१६ में "हरिनाथविनोद" नामक नायिका-भेद-विषयक ग्रंथ की रचना की। ये पाली शहर के निवासी मनीराम के वंशज थे। ग्रंथ के दूसरे अध्याय की समाप्ति के लेख से पता चलता है कि ये जगदम्बा के भक्त थे—

इति श्री सकल गुन विचच्छन स्वच्छ लच्छन प्रतच्छ परेस्वर पदारविंद अनुरक्त भक्त भवद जोतम स्वयवर सुवन दुवन दहन रोगवन अनल विध्वंसन दुखहर वंमावतंस समर्थ परमार्थ स्वारथानुरक्त वैद्यराज हरिनाथविनोदे जगदंब जन कान्ह कृत संछेप स्वकीया वर्ननोनाम द्वितीयोध्यायः॥

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना उन्होंने किसी हरिनाथ के नाम पर की है जो अलवरनरेश विनेश के यहाँ छह रत्नों में से एक थे—

······उपजे जू पंडित जहाँ पाली सहर जरूर॥ ४॥
मनीराम के वंश में कान्ह सुजान। कीनो रचना ग्रंथ को रस सिंगार पहिचान॥
श्री विनेश भूपति भयो भू पर भान समान। जिनकी कीरति छन्द पढ़ि कवि कल करत बयान॥
तिन कर कृपा कटाक्ष ये राखे छै गुनवंत। एक स्वयंवर बोध को लखिगुन गूढ़ अनंत॥
दूजे कवि हरिनाथ को भवभूषनि मनिमानि। ················ ॥
················तिनके हित यह कान्ह कवि रचो ग्रंथ सुखदाई॥"

इन उद्धरणों से यह भी विदित होता है कि हरिनाथ के पिता का नाम स्वयंवर बोध (वैद्य ?) था। दोनों पिता-पुत्र वैद्य और बड़े गुणी तथा अलवर राजदरबार के छह रत्नों में से प्रथम दो रत्न थे। ये पाठक ब्राह्मण थे। ग्रंथ-स्वामी गयाप्रसाद पाठक का कहना है कि हरिनाथ पाठक उनके बाबा थे और मई ग्राम—जहाँ ग्रंथ-स्वामी रहते हैं—के निवासी थे।

ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित तथा जीर्णावस्था में मिली है। बहुत से स्थानों की स्याही उखड़ गई है और अक्षर भी ठीक पढ़े नहीं जाते। अतः रचयिता के उपर्युक्त वृत्त के संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। ग्रंथ का लिपिकाल अज्ञात है। काव्य की दृष्टि से रचना सुंदर है।

४. कुदरतीदास या कुदरती साहब—इनकी दो रचनाएँ "रामायण" (अनुमान से) और "विश्वकारन" मिली है, जिनका विवरण निम्नलिखित है—

रामायण—यह खंडित है जिससे ग्रंथ के नाम तक का उल्लेख नहीं। विषय को देखकर ही इसका नाम "रामायण" रखा गया है। इसमें चौपाई और साखियों में रामचरित वर्णित है। दोहे के लिये साखी शब्द प्रयुक्त हुआ है। कथावस्तु में जहाँ तहाँ परिवर्तन किया गया है। अनेक कथाएँ स्वतंत्र रूप से वर्णित है और कितनी ही छोड़ भी दी गई है। कथारंभ रचयिता ने अपना पूर्व जन्म का इतिहास देकर किया है, जिसका वर्णन स्वयं भगवान रामचंद्र करते हैं। ग्रंथ में

काडों, अध्यायो और सर्गो आदि का उपयोग नही हुआ है। और कथा भी अत्यत सक्षेप मे लिखी गई है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

विश्वकारन—यह ग्रथ पूर्ण है। इसमे जगत् की उत्पत्ति के कारण तथा भस्मासुर की कथा का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है पर लिपिकाल सवत् १९०८ वि० दिया है।

इन ग्रथो के द्वारा रचयिता के विषय मे केवल इतना ही पता चलता है कि इनको स्वप्न मे राम-दर्शन होने पर भक्ति का वरदान मिला था। अन्य कोई विवरण नही मिलता। परतु ग्रथ-स्वामी (गुसाँई रामस्वरूपदास, कुटी, सठियाँव, डाकघर जहानागज रोड, जिला, आजमगढ) के कथनानुसार ये जिला गोरखपुर के अतर्गत गोला बाजार के निकट बराहगाँव के रहनेवाले ब्राह्मण थे। सतमत ग्रहण करने पर इन्होंने अपना नाम कुदरतसाहब रख लिया था। इन्होंने बहुत से ग्रथो की रचना की। लगभग चौबीस ग्रथ ग्रथ-स्वामी के पास थे जो काल-गति से नष्ट हो गए और कुछ इधर उधर चले गए। उनमे एक ग्रथ "जगसमाधि" भी था।

ग्रथो को पढने से पता चलता है कि रचयिता निर्गुण और सगुण दोनो प्रकार की भक्ति के समर्थक थे। भक्ति करते हुए कष्टो को झेलना ये वाछनीय नही समझते थे। ससार के सब सुखो को भोग कर भी भक्ति की जा सकती है, परतु सत्य और विश्वास अवश्य करना चाहिए।

५. कृष्णदास—सवत् १६२८ मे इन्होंने "जैमुनि कथा" की रचना की, जिसमे पाडवो के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है। इसकी वर्तमान प्रति सवत १८९७ मे लिखी गई। इसमे मध्यकाल का कुछ ऐतिहासिक लेख मिलने से ग्रथ महत्त्व का है। इसके अनुसार रचयिता सरजू और गडक के बीच गोरखपुर प्रात के निवासी थे। इनके पितामह का नाम धानो और पिता का नाम परान था। पिता का जन्म सरजू और गडक के सगम पर बसे कलेस्वर स्थान मे हुआ था जहाँ उदैसिह नाम का राजा राज्य करता था। राज्यविद्रोह होने के कारण इनके पितामह तथा पिता कुटुब सहित उस स्थान से भागकर तिवई जदुनदनपुर मे जा बसे। ये चार भाई थे जिनके नाम मुकुद, भक्तमनि, केदार और कृष्णदास थे। वह समय अकबर बादशाह का था।

एक अनंत भौ सागर तरना। कृष्णदास प्रभु प्रनवं चरना॥
कविन माह हम कवित आना। पुन्यभूमि गोरखपुर थाना॥
इत सरजू उत गडक सीला। कलेस्वर मध्य मनोरम मीला॥
उदैसिह तह भयो नरेसा। पीता हमार जन्म तेही देसा॥
पितु परान पितामह धानो। राज उपद्रौ अगमन जानो॥
सकुल सहित लै तुरित सिधाए। तीवइ जदुनंदनपुर आए॥
चिन्हए पुन्य दया सत धर्मा। चारि पुत्र मति मानस कर्मा॥
प्रथम मकुद महा मतिमाना। प्रम भक्त मनि अप सुजाना॥
तीसर पुत्र केदार सुग्याता। चौथे कृष्णदास विष्याता॥
संवत्सर जो गयो सतेंसा। सोरह सौ जो उपर अठेंसा॥
जैठ मास जे पछ उजियारा। तिथि सातै ता दिन गुरुवारा॥
कीन्ह अरंभ तब कथा समाजा। अकबर साह छत्रपति राजा॥

६. गगाराम*—इनकी एक पुस्तक "पोथी मैननत के उत्तर" नाम से मिली है जिसमे

---

* रचयिता और रचना के संबंध मे श्री परमेश्वरीलाल गुप्त (प्रिंस ऑव वेल्स म्यूजियम फोर्ट, बंबई) यो सूचित करते हैं—'मैना सत के उत्तर' वस्तुतः गगाराम कृत नहीं हैं। वह साधन कृत 'मैनासत' या 'मैनासतवती' के नाम से प्रसिद्ध प्रेमाख्यान की प्रति है। उसकी अनेक प्रतियां ज्ञात हैं।······ज्ञात प्रतियो पर अगरचंद नाहटा का एक लेख आगरा विद्यापीठ की पत्रिका में छपा है। दूसरा 'अवध भारती' के नवंबर दिसंबर सन् १९५६ ई० के अंक मे छपा है।

मैन नाम की सती की कथा है। कथा संक्षेप में इस प्रकार है—सातन कुँवर के दूत के कहने पर रतन मालिनी ने लोर की पत्नी मैन का सत डिगाने की बड़ी चेष्टा की, पर असफल रही। विरह के अवसर पर बारहमासों के कष्टों का वर्णन कर पर-पुरुष से प्रेम करने के लिये इसने मैन को उत्साहित करना चाहा, परन्तु वह तिल भर भी सत से विचलित न हुई। अंत में जब मालिनी की पापयुक्त बातें सहन न हो सकीं तो मैन ने उसकी दुर्गति करने का निश्चय किया। उसने उसके केश मुँड़वा दिए, फिर सिंदूर से रँगवा दिया और माथे पर काले पीले टीके लगवा कर और गदहे पर बिठाकर हाट-बाट फिराने के पश्चात् निकाल दिया। इस प्रकार सत की विजय हुई।

रचना प्राचीन प्रेम-कथानक के ढंग की है और प्राचीन अवधी में लिखी गई है। इसकी प्रस्तुत प्रति कैथी लिपि में है जो अत्यन्त भ्रष्ट है और ठीक ठीक पढ़ी नहीं जाती। रचना-काल अज्ञात है। लिपिकाल अस्पष्ट संवत् ८३२ लिखा है। अनुमान से इसको संवत् १८३२ मान लिया गया है। रचयिता का नाम आरम्भ में तथा पुष्पिका में "साधन" या "साधनराम" लिखा है। अन्य परिचय नहीं मिलता। इस नाम के कई रचयिताओं का उल्लेख पिछले खोज विवरणों में पाया जाता है, पर वे इन सबसे भिन्न ज्ञात होते हैं।

७ घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)—इनकी "नवतरंग" नाम की रचना मिली है, जिसमें कृष्णलीलाओं के अंतर्गत मिलन और वियोग-शृंगार का सुंदर वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८५८ है। लिपिकाल नहीं है।

रचयिता काशी-निवासी कान्यकुब्ज दुबे ब्राह्मण थे। इस ग्रंथ की रचना इन्होंने द्वारा-वती जाकर की थी, जहाँ के भूमिपति का उल्लेख इन्होंने "राणा श्री सुरतान" कहकर किया है—

समत अष्टादस सुमत, चौवन ही परमान ।
माघ मास दसमी सुकल, वार भानु सुत जानि ॥ ९ ॥
कहे ग्रंथ घनदेव कवि, विप्र बनारस वासि ।
कान्यकुब्ज दुबे सही, जैसो बुध प्रकास ॥१०॥
पछिम धरि द्वारावती, देस कुसस्थल जानि ।
पुरी सुदामा जगत तहा, महामुक्ति की दानि ॥११॥
ताहा भूमिपति जानिये, है राणा श्री सुरतान ।
दाता ईस मानि पुनि, वीर जथा हनुमान ॥१२॥
दरस द्वारिकानाथ को, आय करे घनदेव ।
पुनि पूरव हर मे तहा, कीनो ग्रंथ सुभेव ॥१३॥

८. चतुर्भुज मिश्र—प्रस्तुत खोज में इनका "भाषा-संग्रह" नामक ग्रंथ मिला है, जिसमें रचनाकाल संवत् १७०२ वि० उल्लिखित है। लिपिकाल अज्ञात है। यह महत्त्वपूर्ण संग्रह है, जिसमें इनके अतिरिक्त अन्य अनेक कवियों के नौ रसों पर रचे गए १२०० छंद संगृहीत हैं। कवियों के नाम अंत के दो पत्रों में इस प्रकार दिए हैं—

गंग, केसोदास, अनंत, सुंदर, प्रसिद्ध, मुरलिराइ, बीरबर, रामकृष्ण, गोपीनाथ मिश्र, प्रेमनाथमिश्र, शंकरमिश्र, नरोत्तममिश्र, गोवर्धनमिश्र, सूरदास, सूरदासमदनमोहन, नरदास, गो० तुलसीदास, परमानंद, कबीर, ईश्वरदास, दयादेव, सिरोमनि, माधो, जगदीस, अभिमन्य, हरिवंश, रूपनारायन, शंकर, श्याम, मदन, परवत, मधुसूदन, विद्यापति, कासीराम, ब्रह्म, दामोदर, नैन, बान, जगजीवन, बलभद्र, नारायण, जदुनाथ, मज्जन, रघुराम, निरंजन, अमद, राजा जगतमनि, छीत, मत्त, मुकुट, पुरुषोत्तम और राम।

इसमें संग्रहकर्ता के स्वरचित १६० छंद हैं। इसको इन्होंने सायस्ताखान के आदेश से तैयार किया था—

"यो भाषा संग्रह भयो, नौरस कवित समेत।
साहिब साइस्तखान के, मन रंजन के हेत॥

ये सायस्ताखान सभवत औरगजेब के सेनापति ये जो शिवाजी को जीतने के अभिप्राय से पूना गए थे, पर हारकर भाग खडे हुए थे। रचयिता का अन्य वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो (१७-३८, ३८-२७) मे आए चतुर्भुज मिश्र से ये भिन्न जान पडते है। सग्रह के ऊपर "गोस्वामी श्री गोकुलनाथात्मज श्री पुरुषोत्तमस्य' लिखा है, अत इसका लिपिकाल इनके (श्री पुरुषोत्तम के) समय सवत् १८४७-१९०३ के लगभग होना चाहिए।

९. छविनाथ—इनके पिंगलविषयक "माधव-सुयश-प्रकाश" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे छदो के जो उदाहरण हैं उनमे जयपुर-नरेश महाराज माधवसिंह का यश वर्णित है। जयपुर राज्य का भी सुदर वर्णन है। रचनाकाल का ग्रथ मे कोई उल्लेख नही, पर जयपुराधीश राजा माधोसिंह का राज्यकाल काँकरोली के इतिहास के अनुसार सवत् १८२५ के लगभग है। अत इसी समय प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई होगी। लिपिकाल का सवत् भी अज्ञात है, पर मास, पक्ष, तिथि और वार दिए है, जो इस प्रकार है—"बहुधान्य सवत्सरे उत्तरायणे शिशिर ऋतौ फाल्गुने मासि कृष्णपक्षे एकादश्या गुरुवासरे समाप्त।" यह रचनाकाल विदित होता है, क्योकि इसमे लिपिकर्ता का कोई उल्लेख नही। यदि यह नकल की हुई होती तो लिपिकर्ता ने अपना नाम भी अवश्य दिया होता।

रचयिता उपमन्यु गोत्र के कान्यकुब्ज अवस्थी ब्राह्मण थे। पिता का नाम गोविंददास था। गगा के तट पर स्थित बक्सर (बगसर, जिला उन्नाव ?) के ये निवासी थे, जहाँ एक ओर चडी का और दूसरी ओर महादेव का मदिर है। यहाँ के राजा भवानीसिंह थे। ये (रचयिता) द्वारिकेश (श्रीकृष्ण) की सेवा करते थे और महाराज माधवेश के आश्रय मे रहते थे—

गंगा जू के निकट सहर बगिसर सोहै जामे एक ओर चडी दूजी घा महेश हैं।
जामे चारि वर्णहू को पालै मरजाद ही सो सुख सो भवानीसिंह प्रबल नरेश है।
तामे गोविंददास उपमन्यवंशी आवस्थीक तापुत छविनाथ सेयि द्वारकेश हैं।
तिहि शिरताज महाराज माधवेश जू को सुजस प्रकाश करि दीनो ग्रंथ देश है॥२५॥

१०. जान कवि—इस त्रिवर्षी मे मिले नवीन और प्रमुख रचयिताओ मे ये मुसलमान कवि भी है। हिंदुस्तानी एकेडेमी (प्रयाग) मे इनकी छोटी-बडी ६९ रचनाओ का वृहद् हस्तलेख मिला है, जो अत्यत जीर्णावस्था मे है। रचनाओ मे अधिकाश प्रेमकथाएँ हैं, जो विवरण-पत्रो मे यथास्थान दे दी गई हैं। ग्रथो के नाम रचनाकाल सहित नीचे दिए जाते हैं—

रत्नावली (१६९१ वि०), लैलामजनू (१६९१ वि०), रतनमजरी (१६८७ वि०), कथा नलदमयती (१७१९ वि०), कथा पुहुपवरिखा (१६८५ वि०), कथा कँवलावती की (१६७० वि०), बारहमासा, सवैया या झूलना, बरवा, पट्ऋतुबरवा बध, पवगमपट्ऋतु वर्णन, कथा छविसागर (१७०६ वि०), कथा कामलता की (१६७८ वि०), कथा छीता की (१६९३ वि०), कथा कलावती की (१६७० वि०), कथा रूपमजरी की (१६८५ वि०), मोहनी (१६९४ वि०), चद्रसेन राजा शीलनिधान की कथा (१६९१ वि०), कथा अरदसेर पातसाहि (१६९० वि०), कथा कामरानी व पीतमदास की (१६९१ वि०) पाहनपरीक्ष्या शृगारसत (१६७१ वि०), भावसत (१६७१ वि०), विरहसत, वलूकिया विरही की कथा (१६८७ वि०), तमीम असारी की कथा (१७०२ वि०), कथाकलदर की (१७०२ वि०), कथा निरमल की (१७०४ वि०), कथा सतवती की (१६७८ वि०), कथा सीलवती की (१६८४ वि०), कथा कुलवती की (१६९३ वि०), कथा खिजरखाँ शाहजादे व देवल दे की (१६९४ वि०), कथा कनकावती की (१६७५ वि०), कथा कौतूहली की (१६७५ वि०), कथा सुभटराइ की (१७२० वि०), बुधिसागर या मधुकर मालती की कथा (१६९१ वि०), चेतनामा, सिख-ग्रथ, ग्रथ सुधासिख, ग्रथ वुद्धिदाइक, वुद्धिदीप, घूंघट नावा, दरसनावा, अलक-

नावा, बारहमासा, सतनावा (१६९३ वि०) वर्णनावा, बाँदीनावा, बाजनावा, कबूतरनावा, गूढग्रथ, ग्रथ देसावली, ग्रथ रसकोप (१६७६ वि०), ग्रथ उत्तमशब्दा, सिप-सागर पदनावा (१६९५ वि०), वैद्यकसतपदनावा (१६९५ वि०), सिंगार तिलक (१७०९ वि०), पैमसागर (१६९४ वि०), वियोगसागर (१७१३ वि०), रस तरगिनी (१७११ वि०), कद्रप कलोल, भाव कल्लोल (१७१३ वि०), पदनामा लुकमान का (१७२१ वि०), जफरनामा नौसेरवा (१७२१ वि०), मानविनोद, विरही कौ मनोरथ (१६९४ वि०), पैमु-नामा (१६७५ वि०), नाममाला अनेकार्थ।

कथा कँवलावती, पुहुपवरिपा और कथा नलदमयती से रचयिता के सबध मे निश्चित रूप से इतना ही पता चलता है कि इनका नाम "जान" है। इनके पीर हाँसी वाले शेख मुहम्मद चिश्ती थे। ये मुगल बादशाह जहाँगीर, शाहजहाँ और औरगजेब के समय मे वर्तमान थे जिससे इनकी दीर्घायु का पता चलता है। ये सभवत शिया मत के मुसलमान थे तथा आजम इमाम के मार्ग को मानते थे। शेख मुहम्मद चिश्ती के चार कुतुब कहलाए गए है जिनके नाम जमाल, बुरहान, नूरदी और नरवर थे—

अवहि साहि की अस्तुति करिहूँ। रसन धाग जस मुकुता भरिहूँ॥
जहाँगीर जानहुँ तिह नाव। आन फिरी जाकी सब ठाँव॥
पीर सेप महमद है चिसती। वदन नूरि भाषतु हौं फिसती॥
रहन ठाव जानहु तिह हांसी। देषत कटै चित्त की फासी॥
क्यो न होइ प।छै जिहि कुतुव। चहूँ कूट प्रगट जिन रुतब॥

दोहा—पहिलै कुतुव जमाल है, दूसर है बुरहान।
नाव जाहि औषद परम, लये चित जुरहान॥

तीसर जानहु नूरदी चतुर मनवर हेर।
सभ जग मै जिनकी फिरी, कुतुबपने की रेर॥ (कँवलावती)

साहिजहाँ साहिन को साह। जहांगीर सुत जगतपनाह॥ (पुहुपवरिषा)
दारा सुजा षेत बिचराये। पुनि मुराद ग्वारेर चढाये॥
को अरि रह्यौ लरिन को नाहि। इकछत राज करै जग माहि॥
दीनहार बरवडडो जूझार। औरगजेव साहिमू द्वार॥ (नलदमयंती)

"राजस्थान मे हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज" नामक पुस्तक के प्रथम भाग मे इनके विषय मे इस प्रकार लिखा है —

"ये मुसलमान जाति के कवि मुगल सम्राट् शाहजहाँ के समय मे जयपुर राज्य के फतेह-पुर परगने के नवाब थे। इनका असली नाम अलफ खाँ था। कविता मे अपना नाम "जान" लिखा करते थे। इनके पिता का नाम मुहम्मद खाँ और दादा का नाम ताज खाँ था। इनका "रसमजरी" नामक ग्रथ मिला है, जो सवत् १७०९वि० मे लिखा गया था। यह नाम इसी नाम के किसी सस्कृत ग्रथ का भाषातर है। इनके सिवा इनके रचे चार और ग्रथो का पता है—रत्ना-वती, सतवधी, मदनविनोद, कविवल्लभ। ये ग्रथ जैपुर के प्रसिद्ध विद्वान् हरिनारायण पुरोहित बी० ए० के पुस्तकालय मे सुरक्षित है।"

प्रथम दो ग्रथ प्रस्तुत खोज विवरण मे आ गए है। श्री अगरचद नाहटा का एक लेख "कविवर जान और उनका कायमरासौ" शीर्षक से "हिंदुस्तानी" (अप्रैल-जून ४५ ई०)मे छपा है जिससे रचयिता के सबध मे यह पता चलता है—

"फतेहपुर (जयपुर के अतर्गत) के कायमखानी नवाबो के वंश मे अलफ खाँ के पुत्र न्यामत खाँ "जानकवि" थे। इनके अन्य भाई दौलत खाँ, शरीफ खाँ, जरीफ खाँ और फकीर

खाँ थे। ये दौलत खाँ से छोटे और अतिम तीन भाइयो से वडे थे। इनका वश पहले चौहान था, जिसका कवि को अपने जीवन मे वडा गर्व था।

'पुहुपवरिषा' रचना से विदित होता है कि अलफ खाँ का पुत्र दौलत खाँ था जिसके दादौ (पुरखे) का नाम क्याम खाँ था। इसमे दौलत खाँ की वीरता का वर्णन है—

जहांगीर प्रिथी के पाल। साहिन साहि भये वस काल॥
उपज्यो सोर मेदनी माही। काहू कं मन कीं कल नाहि॥
कियो अचानक साहि पयानो। सकल जगत पल मे थहरानों॥
जे हे वडडे राजं राने। घर आगजे सव तजि तजि थाने॥
तिहिं छिन दौलत खाँ चहुवान। रोपे पाव मेर परवान॥

नीकें राख्यौ काँगरो, स्वामधर्म ज्यो माहिं।
अलिफ खान जाकौ पिता, तातें अचिरज नाहि॥
इनकौ दादौ क्यामखाँ, मारयौ पेरोसाहि।
दौलतखाँ कौं बावनी दै, करिहौं सम ताहि॥

रचनाओ को देखने से पता चलता है कि "जान" वडे प्रतिभा-सपन्न कवि थे। विपयो की विविधता से इनकी वहुज्ञता का भी परिचय मिलता है। हिंदी मे लिखनेवाले मुसलमान रचयिताओ मे सवसे अधिक इन्ही की रचनाएँ है और सभवत सवसे अधिक प्रेम-कथानक काव्य लिखनेवाले भी ये ही है। प्रेम-कथानक काव्यो की कथावस्तु भारतीय और भारतीयेतर दोनों तरह की है। इनकी भापा अवधी न होकर व्रज और ग्वालियरी है। ग्वालियरी का "कथा कनकावती" मे उल्लेख स्पष्ट है—

भाषा आनी जो सुख आई। ग्वारेरीहू मनसा धाई॥

प्रस्तुत ग्रथो मे कथा नलदमयती, कथा कुलवती, कथा खिजिरखाँ शाहजादे व देवल दे की, और कथा "सुभटराई" ऐतिहासिक रचनाएँ हैं। "कथा खिजिरखाँ शाहजादे व देवलदे" मे हिंदुओ पर मुसलमानो के अत्याचारो का उल्लेख है जिसके अनुसार मुसलमानी काल में हिंदुओ को वलात् मुसलमान (तुरक) वनाया जाता था। जो मुसलमान वनना अस्वीकार करते उनको मार दिया जाता था—

हिंदू वहुत तुरक करि डारे। जे न भये ते पल में मारे॥

"सिख ग्रथ" और ग्रथ "सुधासिख" मे जहाँ दशावतारो को ईश्वर न समझने का वर्णन है वहाँ मक्का-मदीना जाने का उपदेश किया गया है।

निरंजन एक को धावहु। कहा चौवीस दस गावहु॥
अयोध्या राम कहिए ना। मुमथुरा स्याम लहिए ना।
भए वे कालवस सिगरे। तिनहिं मानहु जनम घिगरे॥ (सिख ग्रथ)
करता दये जुग पाइ रे। मकं मदीनें जाइ रे॥
.... .सेवा करहु चित लाइ रे॥ (सुधासिख)

स्वर्ग मे भी हिंदू मुसलमानो का द्वेप दिखलाया गया है। "वलूकिया विरही की कथा" और "तमीम असारी की कथा" मे हिंदू अप्सराओ (अप्सरो) और मुसलमान अप्सराओ की लडाई का उल्लेख है, जिसमे उत्तर पक्ष की विजय होती है। साहित्यिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टियो से ये ग्रथ महत्त्वपूर्ण हैं। पाहन-परीक्षा, वाजनामा और कवूतरनामा भी अपने अपने विषय की सुदर रचनाएँ है। "रत्नावती" मे रचयिता ने प्राचीन कथा को नई करने का उल्लेख किया है—

कथा पुरातन कीनी नई । नौ दिन में संपूरन भई ॥

लैलामजनू, नलदमयंती, छीता, अरदसेर पातसाहि, तमीम असारी आदि कथाएँ प्राचीन है। रतनमजरी, पुहुपवरिषा, छविसागर, कँवलावती कामलता, कलावती, रूपमजरी आदि कथाओ का भी प्राचीन आधार सभाव्य है।

११. मिरजा मुहम्मद "जान"—इनकी "प्रेमलीला" नामक पुस्तक प्रेममार्गी शैली की है, जिसमे प्रेम के अतर्गत कोमल और मधुर भावो का अत्यत स्वाभाविक और सरस वर्णन है। इसमे कोई प्रेम-कथा नही दी है वरन् प्रेम की ही अनेक व्यजनाएँ है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल हिजरी सन् १२६५ (१६०६ वि० ?) है।

प्रस्तुत रचना के साथ साथ इन्होंने फारसी अनुवाद भी रखा है।

१२. तामसन साहब—इनका "ज्योतिष और गोलाध्याय" नाम से एक पुराना छपा ग्रथ मिला है। यह पहले बँगला मे था जिसका इन्होंने हिंदी खडी बोली गद्य मे अनुवाद कर श्रीरामपुर (बगाल) मे सन् १८२२ ई० (सवत् १८६६ वि०) मे छपवाया था। इसमे भूगोल और खगोल का वर्णन प्राचीन भारतीय ग्रथो एव आधुनिक खोज और विज्ञान के आधार पर किया गया है। नीचे इनकी भाषा का नमूना दिया जाता है—

ज्योतिष के विवरण

आकर्षण विषय

ईश्वर ने सब वस्तुओ को ऐसा स्थापन किया है कि सब वस्तु महत्व क्षुद्रत्व के अनुसार आपस मे आकर्षण करती है तिससे सब बड़ी वस्तु चारो ओड को छोटी वस्तुओ को अपनी तर्फ खेंचती हैं इसलिए सूर्य पृथ्वी को अरु और और ग्रह को आकर्षण करता है और पृथ्वी चान्द को आकर्षण करती है क्योकि वह पृथ्वी से छोटा है।

१३. थेघनाथ या थेघू—इस त्रिवर्षी मे इनका "गीताभाषा" नामक ग्रथ मिला है, जो गीता का पद्यानुवाद है। रचनाकाल सवत् १५५७ वि० है। लिपिकाल चतुरदास कृत भागवत एकादश स्कध के आधार पर सवत् १७२७ है। ये दोनो ग्रथ एक ही जिल्द मे थे, परतु जिल्द टूट जाने पर इनको अलग अलग बँधवा दिया गया। इसके अत मे स्वर्गीय मयाशकर जी याज्ञिक ने निम्नलिखित टिप्पणी लिखी है—

"थेघनाथ कृत गीता अनुवाद का लिपिकाल सवत् १७२७ वि० मानना चाहिए कारण कि चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) की प्रति जो इसी जिल्द मे थी उसका लिपिकाल १७२७ वि० है: दोनो के लिपिकार एक ही व्यक्ति है। देखो प्रति न० २७८।५०। जिल्द टूट जाने से दोनो पुस्तकें अलग कर दी गई है।"

रचयिता का नाम थेघनाथ या 'थेघू' है। इनके आश्रयदाता का नाम भानुकुँवर था जो गोपाचल (ग्वालियर) के तत्कालीन राजा मानसाहि के पुरखो मे थे। उनके पिता का नाम कीरतसिह था।

पंद्रसै सत्तावनि आनु। गढु गोपाचल उत्तम ठानु॥
मान साहि तिह दुर्ग निरिंदु। जनु अमरावति सोहै इंद॥
ता घर भान महा भरु तिसे। हथनापुर महि भीषम जिसे॥
सर्व जीव प्रतिपालै दया। भानु निरदु करै तिह मया॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
इहि संसार न कोऊ रह्यौ। भान कुवरु थेघू सों कह्यौ॥
माता पिता पुत्र ससारु। यहि सब दीसै माया जारु॥
जाहि नाम ना कलजुग रहै। जीवै सदा मुवौ को कहै॥

कहा बहुत करि कीजै आनु । जो जानै गीता को ग्यानु ॥

१४. देवेश्वर माथुर—इन्होने भरतपुर-नरेश बहादुरसिंह के पुत्र पहौपसिंह के नाम पर "पहौपप्रकाश" की रचना की। इसमे शारदास्तुति, श्रीकृष्ण और राधिका का गुण-वर्णन, प्रीतपावस, बसत-वर्णन, राजकुल वर्णन, नगर-वर्णन आदि पर रचनाएँ हैं। रचनाकाल और लिपिकाल सवत् १८३६ वि० है।

रचयिता ने ग्रथ को प्रस्तुत करने मे सुजानसिंह को भी हेतु माना है।

ताही छिन उत्पति कीय, उन मन मतो उपाइ ।
सिंह सुजान बैठ्यो हुतौ, यौ तासौ फुरमाइ ॥
देवेसुर और राज कौ, है विसेस विवहार ।
हमहू उनतौ हुतौ, परपाटो कौ प्यार ॥
पिता पिता के नाम के, हूँ स्कंद उधारि ।
वेउ हित करिकें करे, पोहौप 'प्रकाश' प्रकार ॥
सिंघ सुजान सुभ गौर कुल, राजस्यंघ कौ भाय ।
कहो क्यों न विधिपूरवक, देवेश्वर सौं जाय ॥
:o: :o: :o: :o: :o: :o:
इम सुजान मम अइसु पाइव । गिरा गनेस ध्यान धरि ध्याइव ॥
जुक्त युक्त तिनतै तव पाइव । यथा यथा परसग रचाइव ॥

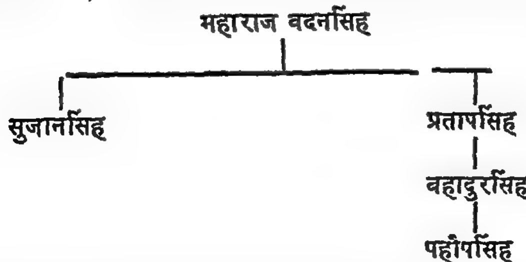
॥ दोहा ॥

टिपन देवेस्वर कियव, जुरति जुगति सौ सांठि ।
वासुदेव वसुदेव सुत, वरस गाठि कौ गाठि ॥

इस अवतरण से स्पष्ट है कि पहौपसिंह ने गौड-कुलोद्भव सुजानसिंह को आज्ञा दी कि वह देवेश्वर की सहायता से पहौपप्रकाश की रचना करे। अस्तु।

देवेश्वर माथुर पहौपसिंह के आश्रित थे; जिनके वश के साथ इनका परपरागत सबध था। ये माथुर चौबे थे या माथुर कायस्थ, यह स्पष्ट नही होता। ग्रथ के छठे अध्याय की पुष्पिका मे इस प्रकार उल्लेख है—"इति श्री यदुकुल कलस मनिराजो राज पोहोपसिंह माथुर कुल कवि देवेस्वर रसमजरी षष्टमो दलः ६ ॥'

पहौपसिंह वैरीगढ (भरतपुर राज्य) मे रहते थे। इनकी वशावली नीचे दी जाती है—



१५. नवरंगदास—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे 'लीलाप्रकाश' नाम से इनका एक ग्रथ मिला है जिसमे धामी पथ के सिद्धातानुसार ब्रह्म के अवतारो की लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल एव लिपिकाल अज्ञात हैं।

ग्रथ द्वारा रचयिता के सवध मे इतना ही पता चलता है कि ये धामी पंथ के अनुयायी थे। मदिरवालो (धामी पथ का मदिर, विसुनपुरा, डाकखाना भागलपुर, जिला—गोरखपुर)

से पूछने पर पता लगा कि ये स्वामी प्राणनाथ जी के शिष्य थे। इससे ग्रंथ की प्राचीनता प्रकट होती है।

उक्त मंदिर से तथा वहाँ रखे हुए ग्रंथ "निजानंद चरितामृत" (रचयिता कानपुर-निवासी पं० कृष्णदत्त शास्त्री, प्रकाशक—श्री निजानंद प्रि० प्रेस, श्री नवतन पुरी, जामनगर) से स्वामी प्राणनाथ जी के संबंध में बहुत सी नवीन बातें ज्ञात हुईं, जो इस प्रकार हैं—

इंद्रावती, श्री जी और महामति स्वामी प्राणनाथ जी के नाम हैं। उनके निवास-स्थान का नाम नवतनपुरी (गुजरात), माता-पिता के नाम धनबाई और केशवराय, भाइयों के नाम क्रमशः हरिवंश जी, सामलिया जी, गोवरधन जी, श्री मेहेराज जी (स्वयं प्राणनाथ जी) और उद्धव जी थे। पिता राजा के दीवान थे। गुरु का नाम श्री देवचंद था। फूलबाई और तेज-कुँवरि इनकी स्त्रियाँ थीं। पिछले खोज विवरणों में इंद्रावती, श्री जी और महामति उनकी स्त्रियों के नाम माने गए हैं। स्वामी प्राणनाथ जी के लिये देखिए खोज विवरण (२०—१२९, ६—९०, २६—३४९, ४१—१४०, दि० ३१—६५, २६—२६६, ६—२२५, ३२—१६८, ३८—१०९)।

१६ पंचौली देवकर्ण—ये 'वाराणसी-विलास' नामक वृहद ग्रंथ के रचयिता हैं। प्रस्तुत ग्रंथ वाराह-पुराणांतर्गत काशी-खंड के आधार पर लिखा गया है। रचनाकाल संवत् १८०७ और लिपिकाल १८०८ वि० है।

ग्रंथ की पुष्पिका के आधार पर रचयिता महाराणा जगतसिंह (मेवाड़ ?) के अमात्य थे। ग्रंथों में इन्होंने अपने गुरु लछीराम का उल्लेख किया है—

ब्राह्मण माथुर एक जाति जाकी घरवारी।
हरजी मिश्रह नाम भक्त गणपति के भारी॥
तिन सुत उद्धवदास आहि जो चतुर सिरोमनि।
लछीराम तिन पुत्र देववानी प्रवीन मनि॥
जिन सम न वियौ भाषाय मे, उन असीस की शक्ति सो।
मुहि करयौ कवी तब मै रच्यौ, यहै ग्रंथ शिव भक्ति सो॥ ९७॥

इससे विदित होता है कि उनके गुरु लछीराम के पिता का नाम उद्धव जी और पितामह का नाम हरि जी मिश्र था। ये लोग माथुर चौबे थे। और कोई परिचय नहीं मिलता। "राजस्थान में हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज" (प्रथम भाग) में रचयिता का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—"ये कायस्थ जाति के कवि, मेवाड़ के राणा जगतसिंह (दूसरे) के दीवान थे। इनके पिता का नाम हरनाथ और दादा का नाम महीदास था। संवत् १८०३ में इन्होंने 'वाराणसी विलास' नामक एक बहुत बड़ा और उच्च कोटि का ग्रंथ वाराह पुराण के काशीखंड के आधार पर लिखा था—

आश्विन कृष्णा अनंत तिथि, अठारह से तीन।
उदयपुर शुभ नगर मे, उपज्यौ ग्रंथ नवीन॥

"देवकर्ण हिंदी, संस्कृत के अच्छे विद्वान् और प्रतिभाशाली कवि थे। वाराणसी-विलास में इन्होंने कई प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है और विषय के अनुसार छंदों के बदलने में भी अच्छी पटुता प्रदर्शित की है। इनकी भाषा ब्रजभाषा है। कविता प्रौढ़, कर्णमधुर और सद्भावोत्पादक है।"

उपर्युक्त विवरण में दिया गया रचनाकाल प्रस्तुत प्रति के रचनाकाल से नहीं मिलता। प्रस्तुत प्रति में रचनाकाल इस प्रकार है—

श्री विक्रम तें वर्ष बीतिगे जबही 'इतने।
७ ० ८ १
मुनि, नभ, वसु, अरु इंदु, जानि लीज्यौ चित तितने॥

परतु यह रचनाकाल अनुक्रमणिका के अश मे दिया है, जो ग्रथ की समाप्ति के पीछे
ड़ा गया होगा ।

१७ प्राणनाथ सोती—इनकी' जेहली जवाहिर" नाम से एक रचना मिली है जिसमे
र्ख (जेहली) और सुकुमार (सोफी) तथा व्यसनी (ग्रमली) और नपुसक (नामर्द) लोगों
। लडाई का वर्णन किया गया है । मूर्ख और सुकुमार एक ओर थे तथा व्यसनी और नपुंसक
सरी ओर । पूर्व पक्ष लडाई मे नष्ट हो जाता है । कथा हास्य-रस की है । रचनाकाल नही दिया
। लिपिकाल १७९० वि० है । रचयिता का नाम पुष्पिका के अनुसार प्राणनाथ सोती है ।
न्य परिचय नही मिलता ।

प्रस्तुत प्रति महत्त्वपूर्ण है । यह सुप्रसिद्ध कवि सोमनाथ की लिखी है । इसमे उस समय
प्रसिद्ध कवियो की शुद्धाशुद्ध लेखन-शैली के विषय मे पता चलता है । अनुस्वार के बदले
द्रबिंदु प्रयुक्त हुआ है । प्रति शुद्ध है । एक महाकवि को दूसरे के ग्रथ की प्रतिलिपि करने मे
पने उत्तरदायित्व का किस प्रकार निर्वाह करना चाहिए, यह इसमे प्रकट होता है ।

१८ फणींद्र मिश्र—इन्होने सवत् १७०१ मे हुई एक पचायत की अध्यक्षता की थी
र मिताक्षरो के आधार पर उसमे न्याय भी किया था । यह न्याय एक देशी कागज के पत्र
र लिखा मिला जिसका विवरण लेते समय सुविधा की दृष्टि से "पचायत का न्यायपत्र" नाम
व दिया गया है । यह गद्य मे है और इसकी भाषा पूर्वी अवधी है । मध्यकालीन पचायतो की
र्यवाही का स्वरूप किस प्रकार का था, इसके द्वारा उसकी जानकारी प्राप्त होती है । साथ ही
समे प्रयुक्त तत्कालीन स्थानीय बोली का नमूना भी देखने को मिलता है, जो भाषाशास्त्र की
ष्टि से पठनीय है । नीचे पत्र की नकल् दी जाती है—

श्री कृष्णश्शरणम् ॥

लि० फणींद्र मिश्र आगे हमने इहाँ भूमि के विवाद मे मिताक्षरा पूँछे ऐलहि लाग वादी
रूराय प्रतिवादी विजयीराय से वद दुनौ वादी क शुनल दुनौ वादी मोचलिका लिखि दिहल
ताक्षरा क पूजा भैलि मिताक्षरा देषल मिताक्षरा की उक्ति तें धारूराय कें दिव्य उतरल
रूराय लोहें आपन सत्व साधि लेहि वैशाख सुदि मह (?) आदितवार कें दिव्य होइ ॥
या च वाक्य ॥ भोगे नष्टे तत कश्चिद सोयं मे भुनवत्युत । तद्दिवा देवि धातव्यं दिव्य
सारदंरिति वचनादेवेति किं वहु विस्तरेण=सवत् १७८१ चैत्र वदि चतुर्दशी शनैश्चर

लिखनक वृत्ततदशी रेवतीराम पाठक

१९ बलदेव कवि—इनका 'दशकुमार-चरित" ग्रथ मिला है जो इसी नाम के सस्कृत
थ का हिंदी अनुवाद है । इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का
ई पता नही चलता । रचयिता का इसके द्वारा इतना ही वृत्त मिलता है कि ये किसी बघेल-
डी राजा विक्रमाजीत देव के आश्रय मे रहते थे—

"इति सकलाराति जनाकी कीर्तिछ्पामुपाम्युदित्य यशश्चदचद्रिकानदि मित्र चकोर
घेल वंसावतस श्रीमहाराजकुमार विक्रमाजीतदेव प्रोत्साहित बलदेव कवि विरचिते दसकुमार-
रिते अपहारवर्मा चरित नाम सप्तमोछ्वास ॥ ७ ॥"

अन्य विवरण अप्राप्य है । परतु "शिवसिंहसरोज" (पृ० ४५५) मे जिस बलदेव का
ल्लेख है वह यही जान पडते है । उसमे इनका उल्लेख इस प्रकार है—

"ये कवि राजा विक्रमसाहि बघेल देवरानगर वाले के इहाँ थे । उन्ही राजा की आज्ञा-
सार एक ग्रथ 'सतकविगिराविलास' नाम बहुत ही अदभुत सग्रह बनाया । इस ग्रंथ मे १७
वि लोगो की कविताई है अर्थात् शभुनाथमिश्र १ शभुराजसुलकी २ चिंतामणि ३ मतिराम ४
लकठ ५ सुखदेव पिंगली ६ कविंद त्रिवेदी ७ कालिदास ८ केशवदास ९ विहारी १०

रविदत्त ११ मुकुदलाल १२ विश्वनाथ अताई १३ वावू केशवराइ १४ राजागुरुदत्तसिंह १५ नवाव हिम्मतिवहादुर १६ दूलह १७ और वलदेव की काव्य महा विचित्र है ॥ २०६ सफा ॥"

२० वलरामदास—"गीता-ग्रथ-सार" नाम से इन्होने गीता का अनुवाद किया है। रचनाकाल लिपिकाल ग्रथ मे नही दिए हैं। इसकी भाषा विहार-उडीसा की सीमा पर बोली जानेवाली हिंदी है।

रचयिता के पिता का नाम सोमनाथ महापात्र था जो सभवत नीलगिरि के राजा जगन्नाथ के मत्री थे। इन्ही जगन्नाथ की आज्ञा से प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई—

श्रीकृष्ण कहे अर्जुन सुणि गीता ग्रथुसार। से योग वलरामदास भणिये आज्ञा देले जगन्नाथ ॥१॥

:o: :o: :o: :o: :o: :o:

प्रथम अध्यागीता प्रश्नुधा वलरामदास भणी। नीरगिरी जगन्नाथदास प्रसने परम रस वखाणी १२५

:o: :o: :o: :o: :o: :o:

रामराज्य लक्ष्मि सुखे भोग करु थाई श्री जगन्नाथ प्रसने गिता शास्त्र एहि अष्टादश अध्या गिता सार ए सपूर्ण पुठिला सुणिला लोक कर वड़ पुन्य लिलगिरी विजये मो प्रभु जगन्नाथ मुकुट कुंडलहार सख चक्र हस्त स्थूल जोगभोग पुन्यर प्रकास निल मुख भावि भणे वलरामदास ६० मन्त्रिवर महापात्र सोमनाथ नाम ताहार तनये मुँहि वलराम जगन्नाथ ठाकुर सुदया मोते कले विष्णुरपिरित बोलि लोके प्रते गते गले ६१ मथन चतुरो वेदा सार उद्धार षाडसि लवणी भुजती ज्ञानिनो तिक्त भक्षति पदिता।

ये संभवत विहार-उडीसा की ही ओर के रहने वाले थे, जैसा ग्रथ की भाषा से प्रकट होता है। नीलगिरि राज्य भी उधर ही है।

२१ भगवतदास—ये "शृगाररससिंधु" नामक ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ मे शृगार रस का शास्त्रीय विवेचन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल क्रमश सवत् १७७० वि० और सवत् १७७७ वि० है। रचनाकाल का दोहा इस प्रकार है—

सवत् सत्रह से सुभग, सत्तर वरस वखानि।
माधव सित तृतीया गुरौ, धाता सोभन मानि ॥ २१ ॥

रचयिता पुष्पिका के अनुसार किसी कृष्णदास के वशज थे, अन्य परिचय नही मिलता—

"इति श्री कृष्णदास वस सभव भगवद्दास प्रकासिते शृगाररस सिंधौ द्वादसमासवर्णन नाम द्वादश कल्लोल सपूर्ण।"

पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है।

२२ भरसीमिश्र—रामनाथ पडित—ये "नलोपाख्यान" ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। इसकी प्रस्तुत प्रति जीर्ण-शीर्ण एव खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का उससे कोई पता नही चलता। साहित्यिक दृष्टि से यह उत्तम रचना है।

रचयिता ने अपना जो वृत्त दिया है उसके कई अश नष्ट हो गए है। जो कुछ वच गया है उसके अनुसार ये आजमगढ के दक्षिण मेहाग्राम के निवासी थे। इस गाँव से दक्षिण की ओर वसे महादेवपारा की इन्होने प्रशसा की है। इसके अतिरिक्त इनका और कोई वृत्त नही मिलता। परतु ऐसा हो सकता है कि भरसीमिश्र और रामनाथ पडित अलग व्यक्ति हो। एक मेहाग्राम के और दूसरे महादेव पारा के।

आजमगढ के दछिन अहई। मेहाग्राम विदित जग कहई ॥
ताके दखिन महदेवपारा। तापर रामदयाल कृपाला ॥

:o: :o: :o: :o:

रामनाथ पंडित तहं रहई । राम कृपा ते बहु सुख लहई ॥ २४ ॥

प्रस्तुत ग्रथ की रचना हर्षकृत नैषध के आधार पर हुई है जिसमे महाभारत की कथा से भी कुछ सहायता ली गई है—

नैषध कवि श्रीहर्ष बनाए । विद्यामानन्ह के... ॥
ताहि बिलोकि कियो हम भाषा । भारथ कथहि कछुक तह राषा ॥

२३ भारथसिंह या भारथसाहि—इन्होने "सतकवि कुलदीपिका" नाम के महत्वपूर्ण ग्रथ की रचना की है जिसमे साहित्य (पिंगल, अलकार और नायिकाभेद) और कविशिक्षा (राजा, रानी, पुरोहित और सेनापति) सबधी विषयो का वर्णन है । नीचे विषयो का नामोल्लेख किया जाता है—

पिंगल, झूठ, सत्य, टेढा, त्रिकोण, आवर्त, सीत, कठिन, सुख, दुख, चचल, वर्ण, ऋतु-राज, राजा, रानी, कुमार, पुरोहित, सेनापति; आखेट, जुक्ताजुक्त, अतिशयोक्ति, उपमालकार, किलकिंचित-हाव, नख-शिख, शृगार, राग, अनुराग और अर्थविधान आदि ।

रचनाकाल का उल्लेख नही किया गया है । लिपिकाल सवत् १८६७ है । रचयिता ने अपने निवास-स्थान का नाम 'देउरा' और पिता का नाम 'हरिसिंघ' लिखा है । अपनी विस्तृत वशावली भी दी है जिसके अनुसार ये राजवशी थे । अत ग्रथ का महत्त्व ऐतिहासिक दृष्टि से और बढ जाता है । इनके मूल पुरुष पृथीचद बाधवगढनरेश शालिवाहन के भाई थे । इस गढ को सौमित्त (शत्रुघ्न ?) ने बनवाया था । पृथीचद यहाँ से अमिला (जमुनातट, प्रयाग) मे जा बसे और उनके पुत्र कर्णराय देउरी मे । ग्रथकर्ता ने अपनी वशावली इस प्रकार दी है—

बाँधवगढ सब गढ़नि वर, विरच्यौ जेहि सौमित्त ।
दुर्गम दुसह दुरूह अति, उन्नत अमित पवित्त ॥
दीर्घ कोस लौ उच्च अति, कोस चकरइ चारि ।
केदली केतकि आदि वन, चहुँदिसि पूरित वारि ॥ ४
घेरि सिखर चहुँ फेरि जहँ, सिध्यन केर निवास ।
होम धूम प्रगटत महा, निसिवासर चहु पास ॥
असगड के वर भूप भैं, सालिवाँह तेहि नाम ।
ताहि सहोदर पुन्निमैं, प्रोथीचद भैं राव ॥
बौउ पदवी पाइ तिनि, कीन अमिलिआ धाम ।
जमुना तट पावन परम, सुख समूह बसु जाम ॥ ७ ॥
:o: :o: :o: :o:
पृथीचंद के प्रथम सुत, कर्नराय जेहि नाम ।
छोडि अमिलिआ सो वसैं, देउरा गुनमं धाम ॥
ताके सुत वर पुन्निमैं, नाम मेदिनीसिंघ ।
तेहि सन्मुष खलहु हृदैं, भुलिहु रहै न रिंध ॥ १० ॥
ताके प्रथम कुमार भे, मानसिंघ जेहि नाम ।
ताके सुत वर पुन्निमैं, राइसिंघ जसुधाम ॥
तासु तनैं वर जुध्य कृत, जसीराव कल्यान ।
फतेसिंघ ता सुत भए, सुंदर सील निधान ॥ १२ ॥
तासुत भैं पुनि राइजीव, महासुभट रनधीर ।
दानि षानि गुन मानि हित, अति भरि ग्यान गंभीर ॥ १३ ॥
सत्रुसाल ता तनुज भो, जाचक करत निहाल ।
गऊ पाल ब्रह्मन सहित, सत्रुन के वर काल ॥ १४ ॥

पृथीपति ता सुत भए महासुभट रनधीर ।
तेज देवाकर रूप ससि, सागर ज्ञान गभीर ॥ १५ ॥
ताके प्रथम कुमार भो, नाम विक्रमाजीत ।
जनपालक घालक द्रुमन, व्राम्नन कुल के मीत ॥ १६ ॥
प्रतापदित्य ता तनुज भो, जग्तराज सुत ताहि ।
छत्रपति ता सुत भए दाता, सील निवाहि ॥ १७ ॥
हरीसिंघ विक्रम अनुज, ता सुत भारथसाहि ।
एह सतकुल कविदीपिका, कीन्हो ग्रंथ निवाहि ॥ १८ ॥

इसमे सदेह नही कि रचयिता प्रौढ और सर्वतोमुखी प्रतिभा के कवि थे ।

२४ भीम—इनकी राजस्थानी भापा मे रची हुई "हरिलीला सोलह कला" नामक रचना मिली है । इसमे भागवत का विषय विशेपकर श्रीकृष्ण चरित्र का सक्षेप मे वर्णन किया गया है। रचनाकाल सवत १५४१ वि० है—

संवत् १५ रुद्रनी बीस । वर्ष एक उपस्य (? उपरय = उपरि) चालीश ॥
उत्तमे उत्तरायण वीशेप । रतु वसत संक्रात्य मेष ॥ ८ ॥

अर्थात, १५ सौ ऊपर एक चालीस या १५४१ । 'रुद्रनी बीस' से यह तात्पर्य है कि उस समय रुद्र-वीसी चल रही थी । लिपिकाल सवत १७२६ है ।

रचयिता का, नाम के अतिरिक्त, और कोई वृत्त नही मिलता । परतु प्रस्तुत ग्रथ राजस्थानी भापा मे होने के कारण स्पष्ट है कि ये राजस्थान के रहनेवाले थे । प्रस्तुत विवरण मे आए अपने नाम के रचयिता से ये सर्वथा भिन्न है ।

रचना दोहे-चौपाइयो और पदो मे की गई है ।

२५ महीपति या महीप—ये "कविकुल-तिलक-प्रकास" नामक ग्रथ के रचयिता हैं । ग्रथ मे नायिकाभेद, रस, अलकार, गुण-दोष तथा पिंगल आदि का वर्णन है । इसमे सदेह नही कि यह साहित्यशास्त्र पर लिखे गए उत्तम ग्रथो मे से है । रचनाकाल सवत् १७६६ वि० है । लिपिकाल नही दिया गया है । आधुनिक वादामी कागज पर लिखी होने से इसकी प्रस्तुत प्रति वहुत प्राचीन नही ।

रचयिता ने अपना जो परिचय दिया है, उसके अनुसार इनका नाम 'महीपति' या 'महीप' है । ये रायपुर (अमेठी, सुलतानपुर, अवध) के रहनेवाले थे । अन्य वृत्त अप्राप्त है—

१७ ६६
संवत् सत्रह सौ मिलै, तापर छासठि दीन्ह ।
भादौ सुदि दसमी गुरौ, विदित ग्रथ तव कीन्ह ॥ ७ ॥
गढा अमेठी देश है, रायपुरा शुभ थान ।
आश्रम-चारि बसै जहां, सब पंडित सव जान ॥ ८ ॥
सुललित ताहि नगर मे, कियो "महीपति" वास ।
तिन्ह कीन्हो सुपरासि यह, "कविकुल तिलक प्रकास" ॥

ग्रथस्वामी कुँवर रणजयसिंह (ददन सदन, अमेठी, जि० सुलतानपुर) से पता चला कि ये (रचयिता) अमेठी राज्य के अधिपति थे । इनका वास्तविक नाम हिम्मतसिंह था । सुप्रसिद्ध कवि राजा गुरुदत्तसिंह उपनाम 'भूपति' के ये पिता थे । इनके आश्रय मे सुखदेवमिश्र, कालिदास त्रिवेदी, उदयनाथ कविंद्र और दूलह आदि कवि रहते थे ।

२६ मुरलीधर कविराई—ये भागवत भापा पचम-स्कध के रचयिता है । ग्रथ मे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं तथा रचयिता का वृत्त भी अज्ञात है । अपने नाम मे

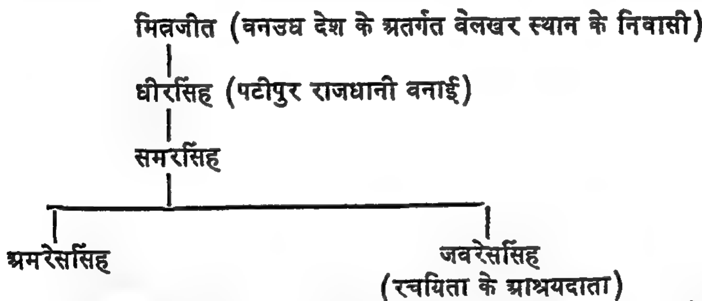
इन्होने 'कविराई' शब्द जोडा है, इसकी पुष्टि ग्रथ द्वारा भी होती है, जो काव्य की दृष्टि से सरस है। इन्होने अपने आश्रयदाता का नाम राजा नवलसिह लिखा है, परतु यह पता नही चलता कि वे कहाँ के राजा थे। ग्रथ मे जहाँ तहाँ "यदुराज सुजान को सुत" आदि प्रयोगो से पता चलता है कि ये भरतपुर के महाराजा सुजानसिंह के पुत्र थे। पिछले खोज विवरणो (१७-१७८) मे उनका उल्लेख है, जिसके अनुसार वे सवत् १८१८ मे वर्तमान थे।

ग्रथ मे चौपाइयो का प्रयोग न करके दोहा, सवैया, कवित्त, तोमर, छप्पय, कुडलिया, भुजगप्रयात, सखनारी, मालिनी और हरिगीतिका आदि छदो मे कविता की गई है। भाषा ब्रज है। पता चलता है कि रचयिता ने अपने आश्रयदाता के आदेशानुसार केवल पचम-स्कध का ही अनुवाद किया था—

नवलसिंह नृप ने कही, मुरलीधर कविराइ।
स्कंध पाँचयो भागवत भाषा देहु बनाइ॥

२७. शिवदत्त त्रिपाठी—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे "दशकुमारचरित" नाम से इनकी एक रचना मिली है, जो इस नाम के मूल सस्कृत ग्रथ का सरस हिंदी पद्यानुवाद है। इसमे दोहा, चौपाई, कवित्त और सवैया आदि छद प्रयुक्त हुए हैं। साहित्य की दृष्टि से रचना निस्सदेह उत्तम है। खेद है, इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता ब्राह्मण थे और वनउध देश (सभवत प्रयाग के अतर्गत ?) के अतर्गत पटीपुर के राजा जबरेससिंह के आश्रित थे। अन्य विवरण अज्ञात है। आश्रयदाता का वशवृक्ष इस प्रकार है—



ये राजा वत्सगोत्रीय चौहान थे और पहले वनउध के अतर्गत वेलखर मे रहते थे—

धरनी चक्र समस्त मे, वनवध देश अनूप।
नीति रीति जुत भीति विनु, विविध वसै तह भूप॥
वनउध हू मै अति सुभग, सोभित वेलषर देस।
बसत लोक विनु सोक तहं, धन ते तुलित धनेस॥ ३॥
:o: :o: :o: :o:
ता पति सुरपति के सरिस, अद्भुत वीर चरित्र।
मित्रजीत भूपति भए, निज कुल-सरसिज-मित्र॥
जगत प्रसंसा होत जेहि, वंस विदित चौहान।
बछगोती विष्यात महि, उदभट उदित कृपान॥
धीरसिंह ताके तनै, भये प्रवल रनधीर।
को नर सकै सराहि तेहि, जैसी मति गंभीर॥
:o: :o: :o: :o:

नीति रीति बसकरि सबै, उद्यत धीर नरेस ।
पटीपुर नृपपुर कियो, मध्य सकल निज देस ॥ १० ॥
:o: :o: :o: :o:
धीरसिंह के सुत भये, समरसिंह छितिपाल ।
नृपगुण रंचि विरंचि वहु, लिषे भाग्य जेहि भाल ॥
:o: :o: :o: :o:
श्री समरेस नरेस के, दो सुत भे अभिराम ।
अमरसिंह जबरेस यों, धरे जयारथ नाम ॥ १७ ॥
:o: :o: :o: :o:
यो जबरेस महीपमनि, मंगलमय सब काल ।
राजत राजसमाज मैं, भूरि भाग्य भरि भाल ॥
:o: :o: :o: :o:
वार वार सिवदत्त द्विज, इमि करि वुद्धिविचार ।
तेहि विनोद कारन रच्यौ, भाषा दसोकुमार ॥

२८. शिवदास गदाधर—इन्होने सवत् १६१० मे "दिग्विजै चपू" की रचना की, जिसमे सृष्टि-तत्त्व, राजनीति, धर्म और ज्ञानोपदेश वर्णित है । ज्ञानोपदेश देव्यागमो के आधार पर हुआ है, जिसमे दीक्षा, निर्णय, योग, ध्यान, आसन, जप-तप, नियम-उपनियम, माला, नाम-स्मरण, पूजा और कलि-ससर्ग-दोष आदि समिलित है । पुष्टि और प्रमाणो के लिये शैवागमो और वैदिक ग्रथो से भी उद्धरण दिए गए हैं । प्रत्येक विषय का वर्णन अध्यायो (खडो) मे काव्य-शैली पर हुआ है, अत यह एक उत्तम काव्य भी है । यद्यपि इसको चपू कहा गया है, पर यह सार्थक नही । समग्र रचना पद्य मे ही है ।

रचयिता का निवास-स्थान वलरामपुर रियासत (गोडा, अवध) के अतर्गत मोगरा स्थान था, जहाँ समग्रनाथ महाज्योतिर्लिंग वतलाया गया है । पिता का नाम रामदीन था जो उक्त रियासत के राजा नेवलसिंह के मत्री थे । ये राजा दिग्विजयसिंह (नेवलसिंह के पौत्र) के आश्रय मे रहते थे । राजा दिग्विजयसिंह के पैतृक राज्य को शत्रुओ के चगुल से छुड़ाने मे इन्होंने उनकी अपूर्व सहायता की थी, ग्रथारभ मे इसका इन्होने वडा विस्तृत और कवित्वपूर्ण वर्णन किया है । ग्रथ को पढने से पता चलता है कि ये धुरधर राजनीतिज्ञ, उद्भट विद्वान्, प्रतिभा-सपन्न कवि और वडे सहृदय व्यक्ति थे । सभवत ये शैव थे और देवी की भी उपासना करते थे । इनके आश्रयदाता की वशावली इस प्रकार है—

पावागढ गुजरात तें, आयो नृप जनवार ।
सुभट वीर वरिवंड वहु, संघ मे सैन अपार ॥
सूबा अवध को जेर करि, छीनि मुल्क सब लीन ।
ता मंह यह वलिरामपुर, सुभग थली निज कीन ॥
:o: :o: :o: :o:
तातें अब संछेप करि, कहत हों सुनिये राज ।
नौ पीढी के वादि भे, नेवलसिंह महाराज ॥
:o: :o: :o: :o:
ता नृप के जुग तनै भै, सिंह बहादुर वीर ।
अर्जुनसिंह भे सिंह सम, धीर वीर गंभीर ॥
ता अर्जुन भूपाल के, भये उग्र द्वै वंस ।
जैनारायन प्रथम भे, हंस वंस अवतंस ॥

दूजो सुत है आप प्रभु, विदित तेज गुणधाम ।
पसु पंछी सुर असुर नर, गावत जाको नाम ।।
नेवलसिंह पर पिता तुम्हारे । ता समीप पितु आय हमारे ।।
दीन(ज) कुलीन जानि विद्वाना । "रामदीन" अस नाम बखाना ।।
:o: :o: :o: :o:
रामदीन को निज जन जानी । सौंपे पुनहु सकल रजधानी ।।
धर्मपुत्र महाराज को, ताको सुत मैं तात ।
नाम गदाधरदास शिव, प्रगट जगत विख्यात ।। २७६ ।।

ग्रंथ की पूर्णता की तिथि

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंद है, संवत सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
बान दीप रिषि ब्रह्ममो, सका सुभग सुजान ।।

नृपवश का वर्णन करने के कारण प्रस्तुत ग्रथ का महत्व ऐतिहासिक दृष्टि से भी बढ जाता है ।

२६. शेख अहमद—इनकी दो रचनाएँ 'वियोगसागर' और 'मोहनी' मिली है, जो एक ही विवरण पत्र मे है । प्रथम मे वियोग-शृगार और दूसरी मे शिख-नख का वर्णन है । काव्य की दृष्टि से दोनो सरस और उत्तम हैं तथा कवि की प्रतिभा को व्यक्त करती है । इनमे केवल दोहा छद प्रयुक्त हुआ है । ये रचनाएँ प्रस्तुत विवरण की सख्या १२६ मे आए कवि जान की रचनाओ के साथ एक ही हस्तलेख में हैं । रचनाकाल का उल्लेख नही है । लिपिकाल सवत् १७७८ दिया है ।

रचयिता के गुरु पीर साहि मुहुदी औलिया के पुत्र पीर जलाल मुहुदी थे । अन्य विवरण अज्ञात है ।

३०. शेख निसार—इनकी सूफी शैली पर लिखी हुई 'यूसुफ जुलेखा' सुदर प्रेम कथानक काव्य है, जिसमे यूसुफ और जुलेखा के प्रेम का अत्यत सरस एव उत्कृष्ट वर्णन किया गया है । रचनाकाल सवत् १८४७ और लिपिकाल सवत् १९५६ है । इसका कथानक रोम देश का है ।

रचयिता शेखपुर (सुलतानपुर) के निवासी थे । इनके पुरखे रोम देश मे रहते थे । पिता का नाम गुलाम मुहम्मद और पितामह का शेख मुहम्मद था । शेख हवीवुल्ला इनके मूल पुरुष थे, जिन्होने अकवर वादशाह के समय शेखपुर गाँव वसाया था । ये (रचयिता) मौलवी थे और सस्कृत, हिंदी, फारसी, तुरकी के वडे विद्वान् थे । इन सभी भाषाओ मे इन्होंने सात रचनाएँ भी की—

शेख हबीबुल्ला सोहाए (सोहाई) । शेखपुर जिन्ह आन बसाई ।।
पातसाह अकबर सुलताना । तंह के राजकर जगत बखाना ।।
औ वह देस सूबा होइ आई । तीस बरस की रही सोहाई ।।
तंह के शेख मुंहमद वारा । रूपवंत भू के अवतारा ।।
शेख गुलाम मुहंमद नाऊँ । सो मम पिता औ ताकर गाँऊँ ।।
:o: :o: :o: :o:
वंस मोलबी रोमकी, जंह कर प्रेम गरंथ ।
हुई सिद्ध पढ़ मसनबी, पावे प्रेम को पंथ ।।
सात ग्रंथ अनूप बनाई । हिंदी और पारसी सोहाई ।।
संसकृत तुरकी मन भाई । सबै प्रेम रस भरी सोहाई ।।

प्रस्तुत रचना इन्होने सत्तावन वर्ष की वयस्था मे की। इससे पहले सभवत शृंगार और चोज की अधिक रचनाएँ की, जिनसे इनका चित्त हटकर सत्य से पूर्ण रचनाओ की ओर आकर्षित हो रहा था। प्रस्तुत रचना इसी बात की द्योतक है। यह सात दिन मे लिखी गई थी—

झूठ जान सबते मन भागा। अब यह सांच कथा चित लागा॥
हिजरी सन् बारह से पाँचा। बरन्यो पेमकथा यह साँचा॥
अठारह से सैंयतालीसा। संवत् विक्रमसेन नरेसा॥
सतरह सै बारह पुन साका। पौष मास पून्यौ बस राका॥
सत्तावन बरख बीते आव। तब उपज्यो यह कथा के चाव॥
सात दिवस मह कीन समापत। दुरमत नाम लह्यो यह संवत॥

इन्होने कुछ ऐतिहासिक विवरण भी दिया है। उस समय दिल्ली की गद्दी पर शाहआलम नाम मात्र का बादशाह था। नादिर खाँ रुहेला ने उसको अधा कर दिया था और उसकी स्त्री और पुत्रो को अत्यत दुख देकर तैमूर के वश को अप्रतिष्ठित कर दिया था—

आलमशाह हिंद सुलताना। तहं के राज यह कथा बखाना॥
देहली राज करी अवनीता (सा)। अपर वहीं तेह कीन्ह अनीता॥
नादिरखाँ सो अधम रुहेला। सवा परध कीन्ह बड़ पेला॥
पातसाह कंह अध जो कीन्हा। सुत और नार सबै दुख दीन्हा॥
कीन्ह अपत तैमूर घराना। राज प्रताप अधम तेह माना॥

रचयिता ने ग्रथ समाप्त करते हुए विनीत भाव का परिचय दिया है, जो विद्वानो और पहुँचे हुए भक्तो का विशेष गुण है—

पढ़े प्रेम के अच्छर कोई। दई असीस मुक्ति जिन होई॥
हम न रहब अच्छर रह जायह। जो कोउ पढ भेद नर पायह॥
अवगुन होइ तो लेहु छिपाई। हम न रहब जो देव बताई॥
रहें वो भगत पेम अव ज्ञाना। धरम नीत सुभ कथा बखाना॥

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि मे लिखी हुई है।

३१. समाधान—इनका "लक्ष्मणशतक" नाम से वीररसपूर्ण उत्तम काव्यग्रथ मिला है। ग्रंथ मे लक्ष्मण और मेघनाद के युद्ध का बडा ओजस्वी वर्णन है। खेद है, ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। ग्रथ से ये प्रतिभावान् कवि ज्ञात होते हैं। इनकी यह रचना सवत् १९५६ (सन् १८९९ ई०) मे बाबू रामकृष्ण वर्मा (सपादक, "भारतजीवन") द्वारा भारतजीवन प्रेस से प्रकाशित हो चुकी है, परतु उसमे भी इनका कोई वृत्त नही दिया है।

किरवान छद इन्हें विशेष प्रिय है। उदाहरणस्वरूप दो कवित्त दिए जाते हैं—

कहूं हथ्थिन पै हथ्थि कहूं रथ्थिन पै रथ्थि कहू बथ्थिन पै बथ्थि कपि कौन पमिलान।
कहूं मुंडन पै मुड कहूं रुंडन पै रुंड कहू तुडन पै तुंड परे लोटत धरान।
मच्यौ जोर सफर जंग टुट्ट फुट्ट तन भंग छिन्न भिन्न अंग अग भगे राछस जमान।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर लछ्छन सुजान झुक झारै किरवान॥
बढ्यौ जोर पारावार चहु ओर धारापार नहि जासु वारापार ग्रह ग्राह उछलान।
करै असुर अतंक मिलै नभ मै निसंक अनदेषे हक हंक अन्न घालत अमान।
फिरै भूत प्रेत धार मुष बोलै मार मार कपि सीस असरार सार झार झहरान।
तहाँ तेज के निधान करि कोप "समाधान" वीर लछ्छन सुजान झुक झारै किरवान॥

३२. हसनअली खाँ—इन्होने "दस्तूर शिकार" का फारसी मे हिंदी-गद्य (हिंदवी) मे अनुवाद किया, जिसमे शिकारी पक्षियो को पकडने, पालने और उनके रोग तथा चिकित्सादि का वर्णन है। प्रति खडित है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८१६ है। पुष्पिका से विदित होता है कि यह मूल प्रति है, अत रचनाकाल और लिपिकाल एक ही मनना उचित होगा—

"तमाम हुवा दस्तुर सीकार का वनाया हुवा हसन अली खाँ का सवत् १८१६ मीती क्वार वदी १५ सुकरवार फारसी से हीदवी कीय ॥"

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता।

३३. हेमरतन—राजस्थानी भाषा मे रची हुई "गोरा-वादल-पद्मिनी चौपाई" नामक इनकी एक रचना का विवरण लिया गया है, जिसमे गोरा, वादल और पद्मिनी की कथा का अत्यत सरस वर्णन है। रचनाकाल सवत् १६४५ (?) है। लिपिकाल का पता नही चलता।

हस्तलेख का अत का पत्र अत्यत जीर्ण-शीर्ण दशा मे है। उसमे रचयिता ने रचनाकाल के साथ साथ अपना परिचय भी दिया था, पर वह अश पढा नही जाता। इसके आरभ के अश को पढने से पता चलता है कि ये किसी पद्मराज वाचक के शिष्य थे—

पदमराज वाचक प्रभुति, प्रणमी निज गुरु पाय।
केलविसूं साची कथा, कानन आवै दाय ॥

ग्रथ की भाषा के आधार पर ये राजस्थान के निवासी जान पडते हैं। "राजस्थान मे हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज" (प्रथम भाग पृष्ठ ५३, १७८) मे भी इस ग्रथ का उल्लेख है। उसमे रचयिता का वृक्ष इस प्रकार दिया है—

"ये मेवाड के जैन साधु थे। गुरु का नाम पद्मराज था। इनका "पद्मिनी चौपई" नामक एक ग्रथ उपलब्ध हुआ है, जो सवत् १७६० मे रचा गया था। यह ग्रथ इन्होंने मेवाड के महाराणा अमरसिंह (द्वितीय) के राज्यकाल मे कुभलनेर मे लिखा था। इसमे मेवाड की इतिहास-प्रसिद्ध महाराणी पद्मिनी की कथा का वर्णन है। ग्रथ जायसी कृत पद्मावत की छाया पर लिखा गया प्रतीत होता है। इसकी भाषा वोलचाल की राजस्थानी है। रचना सरस और मनोहारिणी है।"

इस विवरण से तो प्रस्तुत प्रति मे दिया गया रचनाकाल अशुद्ध ठहरता है। इसमे नाम के साथ 'गोरावादल' और जुडा है। रचनाकाल का छद इसमे खडित है, पर जो अश वर्तमान है उससे सवत् १६४५ का ग्रहण किया जा सकता है—

सवत सोले सोले से पहंता . . . . ।
पुहुनी पीठ वरण परग की सवलपुरी सोहे सादगी ॥७०१॥

उपर्युक्त राजस्थानी खोज-विवरण मे रचनाकाल निम्नलिखित प्रकार से है—

वदि चैतह साठै वरस, तिथि चौदसि गुरुवार।
बंधे कवित्त सुवित्त परि, कुभलमेर मँझारि ॥६१७॥

राणा अमरसिंह (द्वितीय) का राज्यकाल ओझा जी कृत 'राजपूताने का इतिहास' (पृ० ६०५) के अनुसार सवत् १७६० के आसपास है।

परतु श्री अगरचद नाहटा ने सूचित किया है कि प्रस्तुत रचना का रचनाकाल स० १६४५ ही है। उन्होंने 'शोध पत्रिका' (साहित्य सस्थान, राजस्थान विश्वविद्यालय, उदयपुर की प्रमुख त्रैमासिक पत्रिका)—भाग ३, अक २—मे "हेमरत्न रचित गोरावादल का रचनाकाल और अन्य ज्ञातव्य वातें" शीर्षक से लेख छपाया है, जिसमे ग्रथ का उक्त रचनाकाल प्रति-

पादित किया है। उसमे उल्लिखित रचनाकाल और रचयिता के वृत्तसंबधी उद्धरण इस प्रकार हैं :—

'पूनिम गछि गिरुआ गणधार, देव तिलक सूरीसर सार ।
न्यान तिलक सूरीसर तास, प्रतपइ पाटइ बुद्धि निवास ॥६०६॥
पदमराज वाचक परधान, पुहवी परगट बुद्धि निधान ।
तास सीस सेवक हम भणई, हेमरतन मनि हरखइ घणई ॥६१०॥
समत सोले सइ पणयाल, श्रावण सुदि पंचमि सुविसाल ।
पुहवी पीठ घणू परगड़ी, सबल पुरो सोहइ सादड़ी ॥६११॥'

इसके अनुसार रचयिता पूनिम (पूर्णिमा) गछ के देवतिलक सूरि के पट्टधर ज्ञानतिलक सूरि के शिष्य पद्मवाचक के शिष्य थे।

इस सबध मे ना० प्र० प० (भा० ५७, अ० १) भी द्रष्टव्य है।

३४. हेमराज मथेन—इनकी "वैन वत्तीसी" शृगार रस की उत्तम रचना है, जिसमे श्रीकृष्ण की वशी के प्रति गोपियो का द्वेप भाव वर्णित है। रचना सवैयो मे है। केवल अत मे दो दोहे हैं। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। वीच वीच के कितने ही छद अथवा उनके चरण स्याही के उखड जाने से नष्ट हो गए है, अत नही कहा जा सकता कि कुल कितने छद थे। परतु ग्रथ के नाम से स्पष्ट है कि वत्तीस सवैए रहे होगे। प्रस्तुत प्रति मे दोहे-सवैयो की समस्त सख्या छत्तीस है। अत स्पष्ट है कि चार छद वढे हुए हैं। पुराने ग्रथो मे कवित्तो और सवैयो के साथ दोहे-सोरठो की सख्या प्राय परिगणित नही होती थी।

रचनाकाल सवत् १६१६ वि० है। लिपिकाल का उल्लेख नही है। रचयिता का नाम मथेन हेमराज है। और कोई परिचय उपलब्ध नही। इनकी उपाधि या आस्पद लिपिकर्ता की भी उपाधि है—

लिषतं मथेन हरिचंद वासी रूपनगर

अत. अनुमान होता है कि ये और लिपिकर्ता एक ही वश के और एक ही स्थान (रूपनगर) के थे।

ज्ञात लेखको मे, जिनके ग्रथ मिले हैं, अलीमुहीवखाँ "प्रीतम", आलम और शेख, गिरिधरदास, जटमल नाहर, देवीदास, भीम, रसरासि, लखनसेनि, विश्वनाथ सिंह, वृ द कवि और सोमनाथ मुख्य है।

३५. अलीमुहीब खाँ "प्रीतम"—ये अपनी सुप्रसिद्ध रचना "खटमल-वाईसी" के कारण हिंदी साहित्य मे अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। इस वार इनकी "रसधमार" नाम से एक और नवीन रचना मिली है। रचनाकाल सवत् १७६७ है और लिपिकाल सवत् १८००। लिपिकाल को देखकर प्रस्तुत प्रति रचयिता के समय की ही लिखी जान पडती है। इसको जानी भवानी शकर वृद्धनाम कृपाराम नाम के किसी व्यक्ति ने लिखा था। ग्रथ का विपय उसके नाम से ही स्पष्ट है। कविता दोहा, चौपाई और कवित्त आदि छदो मे की गई है।

रचयिता आगरा-निवासी थे तथा वही के प्रसिद्ध कवि सूरतिमिश्र के शिष्य थे—

प्रीतम वसत सुआगरे, अलीमुहब खाँ नाम ।
सूरत कवि कौ सिष्य है, जानो कवि रसधाम ॥२॥
सर के मन इहि मास मो, उपजत सरस तरंग ।
रस धमार बरनन करों, फागुन पाइ प्रसंग ॥३॥
सत्रह सै सत्तानवै, सवत फागुन मास ।
सुकल पक्ष बुधवार छठ, रसधमार जगवास ॥४॥

'खटमल-वाईसी' का उल्लेख पिछले खोज विवरण (०३–७०) मे हो चुका है।

३६. आलम और शेख—ये हिंदी साहित्य ससार मे प्रेमी दपति के रूप मे प्रसिद्ध हैं।

पिछली खोज मे इनकी बहुत सी रचनाओ का पता लगा है। इस बार भी इनके कवित्तो के तीन सग्रह 'कवित्त चतु शती', 'कविता-सग्रह' और 'अकार के कवित्त' और मिले हैं। रचनाकाल, लिपिकाल तथा विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख नीचे किया जाता है—

१—कवित्त चतु.शती—इसमे चार सौ कवित्त है जिनमे अधिकतर शृगार रस और राधाकृष्ण की लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल ज्ञात नही, लिपिकाल सवत् १७१२ दिया है। विवरणपत्र मे दिए गए उद्धरणो मे सग्रह का नाम 'कवित्त चतु शती' नही मिलता। पुष्पिका मे 'शेख आलम के कवित्त' लिखा है। विवरणकर्त्ता (प० कठमणि जी शास्त्री)ने विशेष ज्ञातव्य मे लिखा है कि श्री भवानीशकर जी याज्ञिक (स्व० प० मायाशंकर जी याज्ञिक के भतीजे) ने इस सग्रह को देखा था और एक कागद पर जो इसी सग्रह मे रखा है, इस प्रकार लिखा है—

(१) चतु शती कल्पित नाम प्रतीत होता है। इस ग्रथ की कई प्रतियाँ हमारे देखने मे आई हैं, पर चतु शती नाम किसी मे भी नही दिया हुआ है।

(२) यह प्रति सवत् १७१२ वि० की है। हमारे अनुमान से समस्त प्राप्त प्रतियो मे यह सबसे प्राचीनतम है।

(३) इस प्रति मे बीसवाँ पत्र नही है। इस कारण जो भाग लुप्त हो गया है उसे एक अलग पत्र पर लिख दिया है। अत इससे पता चलता है कि इस सग्रह मे चतु शती नाम कही न कही अवश्य दिया है।

२—कविता संग्रह—इसका भी विषय शृगार (राधाकृष्ण के केलिकलाप का वर्णन) है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। कुछ 'कवित्त-सग्रह' खोज विवरण (०३–६; २३–६, ४१–१२) मे उल्लिखित हैं।

३—अकार के कवित्त—इस सग्रह मे कवित्तो का विभाग अक्षरक्रम से किया गया है, पर विवरणपत्र मे दिए गए उद्धरणो से पता चलता है कि इन्हें अक्षरक्रम मे लिखा नही। आरभ मे 'न' पर लिखा गया दोहा है और अत मे 'अ' पर की रचनाएँ है। इनका विषय भक्ति और शृगार है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल अनुमान से सवत् १८२१ से १८५५ तक है।

इनके अतिरिक्त 'सुदामाचरित्र' की एक प्रति और 'माधवानल-कामकदला' की छह प्रतियो के भी विवरण लिए गए है। इन दोनो ग्रथो का उल्लेख खोज विवरण (३५–४, ०४–६, २३–८, २६–८) मे हो चुका है।

३७. गिरधरदास—ये खोज विवरण (१२–६०, २६–१४०, ४१–४६) मे उल्लिखित गिरिधरदास हैं जो भारतेंदु बाबू हरिश्चद्र के पिता थे। इनके सबध मे प्रसिद्ध है कि इन्होने 'नहुष नाटक' की रचना की थी जिसका आज से पहले 'खोज' मे कोई पता नही चल सका था। इस बार इसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। प्रति पूर्ण है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९२३ दिया है। इसमे सूर्यवशी राजा नहुष की कथा का वर्णन है और प्राचीन सस्कृत नाटको की शैली पर लिखा गया है। पहले मगल और फिर नादीपाठ है। गद्य और पद्य दोनो का प्रयोग हुआ है।

ग्रथ द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरण मे इनका उपनाम 'गोपालचद' लिखा है। जन्मकाल सवत् १८८१ माना गया है। सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की अल्पावस्था मे ही ये स्वर्गस्थ हो गए थे। फिर भी इतनी अवस्था तक लगभग चालीस ग्रथो की रचना कर चुके थे।

यहाँ नाटक का कुछ अश दिया जाता है—

मातलि की ओर देखि कै ॥ नहुस ॥ सानंद ॥

दोहा

देखनीय कमनीय अति, उपवन यह रमनीय ।
अहै कौन को सो कहहु, लग्यो मोहि अति प्रीय ॥७३॥

मातलि ॥

दोहा

यह सब रितु सोभा भर्यो, सुखमय पूरन काम ।
महाराज को विपिन है, नंदन याको नाम ॥७४५॥

नहुस । सानंद । सीघ्र चलहु सीघ्र चलहु ॥

तब मातलि रथ चढाय नंदनवन में गयो ॥ तहां को सोभा देखि कैं
नहुष ॥ सानंद ॥............

३८. जटमल नाहर—इनके "प्रेमविलास—प्रेमलता-कथा" ग्रथ के विवरण लिए गए है। यह शुद्ध भारतीय प्रेम-कथानक शैली पर लिखा गया मनोरजक और सरस काव्य है। इसमे दी हुई कथा इस प्रकार है—

यौतनपुर मे राजा प्रेमविजय राज करता था। उसकी रानी का नाम प्रेमवती और पुत्री का प्रेमलता था। उसके मत्री मदनविलास के एक पुत्र था, जिसका नाम प्रेमविलास रखा गया। प्रेमलता और प्रेमविलास दोनो एक गुरु के पास पढने लगे। दोनो रूपवान् थे, अत गुरु ने आशका से कि कही उनमे अनुचित प्रेम न हो जाय, दोनो को एक दूसरे के झूमझूठ दोष बताए। राजकुमारी से कहा कि प्रेमविलास कोढी है और प्रेमविलास को बताया कि राजकुमारी अधी है। फलस्वरूप साथ साथ पढते हुए भी दोनो एक दूसरे को घृणित दोष से युक्त समझकर देखना भी पाप समझते थे। एक दिन जव गुरु किसी काम से बाहर गए हुए थे, राजकुमारी के पढने मे कुछ अशुद्धि हो गई, जिसपर प्रेमविलास ने उसको अधी कह दिया। राजकुमारी को बडा क्रोध आया और उसने भी प्रेमविलास को कोढी कहकर सबोधित किया। प्रेमविलास ने कहा—"गुरु ने तुम्हे अधी वतलाया था। अत यह सोचकर कि उसी दोप से तुमने अशुद्ध पढा है, मैंने तुमको अधी कहा, परतु तुमने मुझे कोढी क्यो कहा ?" राजकुमारी ने भी सत्य बात वतला दी। इसपर दोनो एक दूसरे को ध्यानपूर्वक देखने लगे। दोनो रूपवान् तो थे ही, अत शीघ्र ही एक दूसरे पर अनुरक्त हो गए। इतने मे गुरु जी आ गए और देखा कि उनकी चतुरता का परदा खुल गया। उन्होंने उनको डाँटा और समझाया, पर फल कुछ न हुआ। दोनो ने गुरु से अपने अपने हृदय की बातें कह दी। दुष्परिणाम की आशका से गुरु ने शीघ्र ही दोनो को घर जाने का आदेश दिया। परतु दोनो प्रेमियो को शाति कहाँ ? एक दिन उन्होंने निश्चय किया कि महाकाल के सम्मुख विवाह कर भाग जायँ। आगे की अमावास्या का दिन इसके लिये निश्चित हुआ। इस बीच नगर मे एक जोगिन आई, जो वीणा वजाना और गाना बहुत अच्छा जानती थी। लोग उसकी कला पर मुग्ध हो गए। राजा भी उससे मिलकर प्रसन्न हुआ। उसने उससे राजकुमारी को भी वीणा वजाना और गाना सिखाने की प्रार्थना की। जोगिनी ने स्वीकृति दे दी। राजकुमारी नित्य जोगिनी की कुटिया पर सगीत-शिक्षा के लिये जाने लगी। प्रेमविलास भी अवसर पाकर कुटिया पर राजकुमारी से मिल लिया करता। दोनो एक दूसरे को देखकर व्याकुल हो उठते। एक दिन ऐसे ही अवसर पर राजकुमारी की आँखो से आँसू गिरते देख जोगिन को वडा आश्चर्य हुआ, पर मूल कारण ज्ञात हो जाने पर उसने राजकुमारी को आँखो का अजन देकर उडने तथा रूप पलटने की विद्या सिखाई। थोडे ही दिनो पश्चात् राजकुमारी की शिक्षा पूर्ण होने पर जोगिन चली गई। इधर पूर्व निश्चयानुसार दोनो प्रेमी चपकमाला सखी के साथ महाकाल के सामने वैवाहिक कृत्य सपन्न कर और देवता का आशीर्वाद लेकर आकाश-मार्ग से उड भागे। तीनो रतनपुर नगर पहुँचे, जहाँ का राजा उसी दिन मर चुका था। राजा सतानहीन था, अत. यह निश्चय हुआ कि हाथी जिसको राजतिलक कर देगा वही

राजा बनाया जायगा। सयोगवश हाथी ने प्रेमविलास को ही राजतिलक कर दिया। अत. वह और प्रेमलता उस राज्य के राजारानी हो गए। कुछ दिनोपरात प्रेमविलास को चद्रपुरी पाटण के राजा चद्रचूड से घोर युद्ध करना पडा, जिसमे चद्रचूड पराजित हुआ। इस प्रकार अनेक कठिनाइयो पर विजय प्राप्त कर प्रेमलता और प्रेमविलास अपने दिन सुखपूर्वक विताने लगे। एक दिन उन्होने अपने मातापिता के पास एक दूत भेजा। उनके मातापिता उनके लिये अत्यत व्याकुल रहते थे, पर महाकाल की उपासना मे जब उन्हे पता चला कि वे रतनपुरी मे राज करते हैं तो उनको पाने की उत्कट अभिलाषा रखते हुए भी सतोष कर चुप रह गए। इधर जब दूत उनके पास पहुँचा तो वे प्रसन्न हुए और उसको अनेक पारितोषिक तथा उपायन देकर प्रेमलता और प्रेमविलास को पौतनपुर आने का सदेश भेजा। दोनो प्रेमी अपने घर आए और मातापिता से मिलकर आनदित हुए। दोनो का पुन विधिवत् विवाह किया गया। इस प्रकार कुछ दिन मातापिता के पास रहकर वे दोनो फिर अपनी राजधानी को लौट गए।

ग्रथ का रचनाकाल सवत् १६६३ है। इसकी प्रस्तुत प्रतिलिपि राजपूताने के प्रसिद्ध लेखक श्री अगरचद नाहटा ने सवत् १६६६ वि० मे करके, हिंदी-साहित्य सम्मेलन को दी थी। यह सवत् १८०६ की लिखी प्रति की नकल है। ग्रथ के अनुसार रचयिता लाहौर के निवासी थे और सिंधु नदी से लगे हुए प्रदेश के अतर्गत जलालपुर के राजा सहिवाज के आश्रय मे रहते थे। ये नाहर वश के थे। राजा सहिवाज को सइदा का सहिवाज खाँ भी कहा गया है—

संवत् सोलह सै त्रैयानुं। भादरमास सुकल पछ जानुं॥
पचमि चौथ तिथै सलगना। दिन रविवार परम रस मगना॥७८॥
सिंध नदी कै कंठ पइ, मैवासी चोफेर।
राजा बली पराक्रमी, कोऊ न सक्कै घेर॥७९॥

पूरा कोट कटक पुनि पूरा। परसिरदार गाऊ का सूरा॥
मसलत मंत्र बहुत सुजाने। मिले खान सुलतान पिछाने॥
सइदा को सहिवाजखां, वइरी सिर कलवत्र।
जानत नाही जेहली, सब अवान को छत्र॥८१॥

रइयत बहुत रहत सुराजी। मुसलमान सुखास निमाजी॥
चोर जार देख्या न सुहावै। बहुत दिलासा लोक बसावै॥८२॥
बसै अडोल जलालपुर, राजा थिरु सहिवाज।
रइयत सकल बसै सुखी, जब लगि थिरहू राज॥८३॥
तहाँ बसै जटमल लाहोरी। करनै कथा सुमति तसु दोरी॥
नाहरबंस न कुछ सो जानै। जो सरसती कहै सो आनै॥८४॥

अन्य परिचय नही दिया है। नाहटा जी ने प्रति और कवि के विषय मे इस प्रकार लिखा है—

(१) प्रतिपरिचय—हमारे सग्रह की ८ पत्रो वाली प्रति से प्रस्तुत प्रति नकल करवाई गई है। प्रशस्ति (पुष्पिका) से स्पष्ट है कि प्रति सवत् १८०८ की वैशाख वदी ७ को मरोठ मे स्वरूपचद ने लिखी है। प्रस्तुत ग्रथ की एक और प्रति हमारे सग्रह मे है।

(२) कविपरिचय—आप (जटमल नाहर) नाहरगोत्रीय ओसवाल जैन श्रावक थे। इनकी गोरावादल की वात हिंदी-ससार मे काफी प्रसिद्धि-प्राप्त है। आप अच्छे कवि थे। अभी तक हमारी खोज मे निम्नोक्त ग्रथ प्राप्त हुए हैं एव हमारे सग्रह मे है। ये अपने को लाहोरी लिखते है, अत. ये लाहोर-निवासी थे। आपके पिता का नाम धर्मसी था।

पुस्तको के नाम—(१) गोरावादल की वात—सवत् १६८६ भादवा ११ सुवली;

(२) प्रेमविलास प्रेमलता चौपाई—सवत् १६९३ भा० सु० ४।५ रवि; (३) जटमल बावनी, (४) लाहोर गजल, (५) सुदरी (स्त्री) गजल, (६) झिगोर गजल, (७) फुटकर सवैयादि।

रचयिता की गोराबादल की कथा का उल्लेख खोज विवरण (१-४८), (३८-७१) मे हो चुका है। उनमे इनका जो परिचय मिला, वह ठीक नही।

३९. देवीदास—इनकी "सोमवश की वशावली" ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रचना है। सवत् ११०३ वि० (फागुन तीन रविवार) की एक ऐतिहासिक घटना का इसमे उल्लेख है। उस समय इस वश के राजा विजयपाल थे, जो बडे प्रसिद्ध हुए और जिन्होंने विजयगढ दुर्ग का निर्माण कराया। गुजरात, महाराष्ट्र, तैलग, भोट और नेपाल के राजाओ को इन्होंने जीत लिया था। कदहार के बूवक्कसाहि से इनकी दस मास तक घोर लड़ाई हुई, जिसमे ग्यारह हजार यवन (तिमिर) मारे गए थे। परतु इस लडाई का परिणाम भारत के लिये अच्छा नही हुआ। दिन-प्रति-दिन हिंदुओ का ह्रास होता गया और यवनो की शक्ति बढती गई। कवि के शब्दो मे इसका उल्लेख इस प्रकार है—

तब तें भई देस तुरक्कमई। भइ घोर मसीति तु बाँग दई॥
कलमा पढि पाँच नवाज करी। भुवपाल 'विजै' विनु गाइ परी॥
हिंदुवान घट्यौ तुरकान बढ्यौ। सबको सब भाँति निपोतु कढ्यौ॥

इस घटना के अतिरिक्त बहुत सी पौराणिक कथाएँ भी दी हैं। जैसे कलियुग का प्रवेश और व्यासदेव जी का अपने शिष्य वैशपायन को सब पुराण देना तथा श्रीकृष्ण-वश का वर्णन करते रहने का उपदेश देकर गुप्त हो जाना आदि।

सोमवंश के राजाओ के नामो की तालिका विषय के खाने मे दी हुई है। ग्रथ मे रचनाकाल का उलेल्ख नही। लिपिकाल संवत् १८३१ वि० है।

रचयिता ने अपना और कोई वृत्त न देकर केवल आश्रयदाता रतनपाल (करौली नरेश) का उल्लेख किया है। वे सोमवशी थे। अत इस आधार पर ये पिछले खोज विवरणो (६-२२०; १७-४७, २३-९६, २६-९८, दि० ३१-२५, ०२-१; २-८३, ६-२७) मे उल्लिखित देवीदास ही है। उक्त विवरणो मे आए प्रेमरत्नाकर और "राजानीतिरा कवित्त" इन्ही की रचनाएँ है।

४०. भीम—इन्होंने सवत् १५५० मे "डँगवेपुराण" की रचना की। यह महाभारतांतर्गत डगवे-कथा का अनुवाद है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल संवत् १७७७ वि० है।

रचयिता ने अपना विस्तृत विवरण दिया है, पर ग्रथ कैथी लिपि मे अत्यत अशुद्ध लिखा होने के कारण ठीक ठीक पढा नही गया। फिर भी, यह अश जैसा कुछ पढा जा सका, उद्धृत किया जाता है—

संवत पंद्रह सै पचास जब भएऊ। द्रमुष नम संमत चलि गएऊ॥
सावन सुकुल संतमी आई। डंगवे कथ भीम सुनाई॥
कवन नग्र कैसनो ठाऊ। कौन देस कौन से गाऊ॥
जह ए भए कवीसर विचरा। तह वसंत है कौन भूभ्रर॥
पुहुमी धर्म प्रन एक देसा। वसै लोग न्त्रीमल रेह॥
:o: :o: :o: :o:
नसै कवी दोसन को देही। जो कवी अपन नाउ न लेइ॥
कवीत तहव भै उतपती। कवन नग्र कौन सो जती॥
नग्र अमर सब वै रे कहा। वसुक इंद्रदेव तीस लहा॥
जती के कएथ करन कुवेरु। महीपत ही कलीनेम अचेरु॥

तसुत नौ रतन बर बीरू । अती प्रचंड नीक सुसरीरू ॥
मत मतंग वीरू मह दीन्ह । तब तेनह सब गवरह लीन्ह ॥
तेही कुल भीम बरियरा । वैरी बुघी बहु बैसरा ॥
कहै चहै कछु कथा सुभउ । भरथ कथा डगवे गउ ॥
चह्ल उरव फोरी आवे सोहइ । सोइ प्रीती कठमन लइ ॥

जान पडता है कि रचयिता अमर नगर के निवासी और वसुक इन्द्रदेव कायस्थ के पुत्र नौरतन के कुल मे उत्पन्न हुए थे। सभवत ये खोज विवरण (२०–१६) मे उल्लिखित महाभारत 'द्रोणपर्व' के रचयिता भीम है, क्योकि दोनो ग्रथ महाभारत से ही सवध रखते है और भाषा भी दोनो की एक ही है। अत इनका एक ही रचयिता द्वारा रचा जाना सभव है।

४१. रसरासि (रामनारायण)—"रसिकपच्चीसी" के ये रचयिता है। ग्रथ मे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है। साहित्यिक दृष्टि से रचना सरस और सुदर है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता जयपुर-नरेश सवाई प्रतापसिह के आश्रय मे रहते थे, जिनकी आज्ञा से इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। खोज विवरण (१–६३) मे इनकी 'कवित्त रत्नमालिका' का उल्लेख है जिसके अनुसार इनका नाम रामनारायण था और ये जयपुर-निवासी ब्राह्मण, रामानुज-सप्रदाय के अनुयायी थे तथा जयपुर-नरेश महाराज प्रतापसिह के दीवान जीवरखसिह के आश्रित थे।

इनकी प्रस्तुत रचना का उल्लेख राजस्थान की "हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज" (प्रथम भाग, पृष्ठ १०६) मे भी है।

४२. लखनसेनी—इस त्रिवर्षी मे इनके "हरिचरित्र विराट पर्व" का विवरण लिया गया है। ग्रथ महाभारत के 'विराट' पर्व का हिंदी पद्यानुवाद है। रचनाकाल सवत् १४८१ (?) और लिपिकाल सवत् १८८७ है।

रचयिता का उल्लेख "महाभारत भाषा" के साथ पिछले खोज विवरण (६–१६८) मे हो चुका है। परतु उसमे इनके न तो वृत्त का उल्लेख है और न समय का ही। प्रस्तुत प्रति मे अपना वृत्त इन्होने विस्तृत रूप से दिया है। कुछ कवियो, यथा जयदेव, घघ, विद्यापति, बैजलदास आदि का उल्लेख भी है तथा तत्कालीन देशकाल की परिस्थिति के सबध मे भी ऐतिहासिक बातें दी है। परतु खेद के साथ कहना पडता है कि यह विवरण ठीक ठीक स्पष्ट नही होता। इसका कारण ग्रथ की प्राचीनता ही है। लिपिकारो की असावधानी और उनकी अयोग्यता के कारण इतने दीर्घ समय से ग्रथ की प्रतिलिपि होते रहने से अशुद्धियाँ हो जाना असभव नही। परतु जब तक कोई शुद्ध और प्रामाणिक प्रति नही मिलती तब तक इसी से सतोष करना पडता है। आशा है, सावधानी से अध्ययन करने पर कुछ काम की बातें ज्ञात हो सकेंगी। विवरण का सार इस प्रकार है—

जौनपुर का राजा (बादशाह) बीराहीमसाहि (इब्राहीम शाह) बडा शक्तिशाली था। उस समय गुणियो का अत्यत ह्रास हो गया था। यह देख कवि बैजल दासराइ (?) के पास गया और प्रस्तुत ग्रथ लिखना आरभ किया। इसके पश्चात् 'सखाराजा' तथा डीलेश्वर (?) के अधिपति अनुकाराम और उसके पुत्र लखनकुमार के उल्लेख हैं। ये जब कवि-मडली मे जाने लगे तो बडे बडे कवि इनकी प्रतिभा के सामने लज्जित होने लगे। जयदेव, घघ और विद्यापति उठ चुके थे। उस समय देश का (सभवत जहां कवि का निवास था) घोर पतन हो गया था। अच्छे अच्छे राजाओ और उनके आश्रय मे रहनेवाले गुणी जनो मे न रहने से अधम श्रेणी के मनुष्यो का बाहुल्य होता जा रहा था। अत. जन-परिजन सहित कवि ने वह देश छोड़ दिया, पर

जहाँ गया वहाँ भी वही दुर्दशा थी। गोदू महत कान फूंकते थे और सुदर कामो को छोड बुरे काम करते थे। कपटी धर्माधिकारी वने हुए थे। खोटे वैद्य व्याधि की पहचान तक नही कर सकते थे। हाथी वँधे वँधे भूख से मरते थे और गदहो की यत्नपूर्वक सेवा टहल होती थी। चदन और आम के वृक्ष काटकर लोग करील और ववूल लगाते थे। कोकिल, हस और मजार (विल्ली) मारकर काक का पालन करते थे। सारिका का पख उखडवाते थे और मुर्गियो का पोपण करते थे। कवि उस देश मे पहुँचा जहाँ लोग उधार लेकर खाते थे।

चौसा नगर प्रसिद्ध था, जहाँ गोरखनाथ का रामराज था। वहाँ के नृपति वडनदन दूसरे राम थे, जिसने गगा के किनारे शत्रुओ को वुरी तरह परास्त किया था। उसी के अनुरूप उसका पुत्र पूरणमल भी था।

उपर्युक्त विवरण से पता चलता है कि उस समय हिंदू समाज और हिंदू सस्कृति का वहुत पतन हो गया था तथा देश मे चारो ओर मुसलमानी आचार-विचार फैल रहा था। कवि ने 'घघ' का उल्लेख किया है जिससे यह जिज्ञासा होती है कि ये प्रसिद्ध 'घाघ' तो नही है। वैजलदास राई और अनुकाराम (डीलेश्वर) का निश्चित विवरण अप्राप्त है। ग्रथ ऐतिहसिक महत्व रखता है।

चौपाई

वादसाहि जे विराहिमसाही। राज करहि महि मंडल माही॥
आपुन महावली पुहमी धावै। जउनपुर मह छत्र चलावै॥
सवत चौदह सइ एकासी। लषनसेन कवि कथा प्रगासी॥
गुनी जन सव अषीर भैउ। वैजलदास राइ पह गएउ॥

दोहा

वैजलदास मन हरपीत, ताहीमरावै जीव।
लषनसेनि कवि भाषा, कथा वैरठ जे कीव॥

:o: :o: :o: :o:

कैसे मेरवउ अछर कै पाती। सरवार राजा कइ जाती॥
हंसन पति होइ छन छन वाका। महवेलाभ भए नीहलका॥
अछर सुनत सुन्य सुधी काढा। अम्रती वोल वचन सो वाढा॥

दोहा

नर्गहि चहि नगसरी पडित रहै सोर धुनी।
छलै वैल सव होषै लषनसेनी कवि गुनी॥
ढीलेस्वर अनुकाराम। तेजरासि कुल राजा धर्म।
तासु तनै जे लषन कुमार। दुरजन द्रवन सींघ करीवार॥

दोहा

कंठे वसै सुरसती, हीरदै वसहि गनेस।
लषनसेनी तहने वसे, धन्य धन्य सो देस॥ ५॥
लषनसेनी कविजन मे आइ। बड़ वड कविता गए लगाइ॥
गए धर्म औ सतजुग राजा। देवीपुर गए वली के काजा॥
गए कीती धनसेनि नरेसा। भोजपुर गए देव गनेसा॥
जैदेव चले सर्ग की वाटा। औ गए घघ सुरपति भाटा॥
नगर नरिंद्र जो गए उनारी। वीद्यापति कइ गइ लचारी॥

अविरत कुड नग्र जे थहाइ । न्रीधनी कुड नग्र अब गहइ ।।
तेन्ह पापीन्ह कह पोज उठाऊ । जे नहीं लीन जन्म भरि नाऊ ।।

दोहा

तेहि पापी तह रापीए, जेई हरिनाम न लीन ।
अछर तीनीसा जीव करि, ध्रम होइ दीन दीन्ह ।।

जन-परिजन छडि सो देसा । जहव उपमवन वसं नरेसा ।।
भोदु महथ जे लागे काना । काज छाडि जे अकार्ज जाना ।।
कपटो लोग सव मे धरमाधो । पोट वाद नहि चीन्हे वीयाधी ।।
कुजल वाँधं भुप्पन मरई । आदर सो पर सेइ चराइ ।।
चदन काटि करील जे लावा । आवं काटि कइ बबुर बोआवा ।।
कोकिल हस मजारही मारी । वहुत जतन कागहि प्रतिपाली ।।

दोहा

सारीव पष उपरिव पालं तमचुर जग संसार ।
लषनसेनी ताहने वसं काढि जो थाहि उधारि ।।

चौपाई

चौसा नगर जगत परमोधा । रामराज तह गोरप सोधा ।।
जंजं कहि जवा वीग्रह चढाइ । कापं सेज (सेस?) धरनी लरपरइ ।।
प्रीथीमी वडनदन नरनाहा । दूसर रघुपति उपजे ताहा ।।
चारी षानी चौरासी भीरा । भारेउ सबं गगा के तीरा ।।
जेकर पुत्र जे पुरनमाला । अरि के हीरदं महाबलसाला ।।

दोहा

साठि गाइ वांधी चरु पुरनमल के ठाट ।
कौतुक कीन सुरस कवी विविध कथा वैराट ।।

प्रस्तुत विवरण मे सख्या ३६८ के रचयिता भी यही लखनसेनि कवि जान पडते हैं ।

४३. विश्वनाथसिंह—इनका "भाषा भक्तचंद्रिका" नामक उत्तम काव्यग्रथ मिला है, जिसमे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है । इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है । रचनाकाल लिपिकाल क्रमश १८६४ और १६०५ वि० है ।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता । सभव है, ये रीवाँ के महाराज विश्वनाथसिंह (राज्यकाल सवत् १८७०–१६११) हो । इनके लिये देखिए, खोज-विवरण (००–८३, १–६, ३–२२– ६–३२८) ।

४४. वृंद कवि—इनका "यमकालकार सतसैया" या "वृंदविनोद" नाम से एक उत्तम ग्रथ मिला है जिसमे यमकालकार के अव्यपेत और व्यपेत नाम से दो भेद तथा उनके भिन्न-भिन्न प्रयोगो का वर्णन है । इसका रचनाकाल अस्पष्ट है—

गुन रस सुष (ऋषि) अमृत बरस, वरस मुकुल नभ मास ।
दूज सुकवि कवि वृंद ए, दोहा किए प्रकास ।।

यह सवत १७६३ जान पडता है । लिपिकाल अज्ञात है । खोज विवरण (४१–२५६ग) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है ।

पिछले खोज विवरणो मे रचयिता के कई ग्रथ आ चुके है (द्रष्टव्य खोज विवरण

४१–२५६, ६–३३०, २३–४४६ और ००–१२१; २–६, १७–३३०)। उक्त विवरणों मे इनका वृत्त इस प्रकार है—

"ये सेवक जाति के ब्राह्मण, मेडता जोधपुर-निवासी, सवत् १७४३–१७६१ के लगभग वर्तमान और कृष्णगढ-नरेश महाराज सावतसिह (नागरीदास) के पिता महाराज राजसिह के गुरु थे। सवत् १७६१ मे ये बादशाह औरगजेब की फौज के साथ ढाके तक गए थे। इनके वशज जयलाल कवि कृष्णगढ मे वर्तमान हैं।"

४५. सोमनाथ या शशिनाथ—ये हिंदी के सुप्रसिद्ध कवियो मे से है। इनकी कई रचनाएँ पहले मिल चुकी हैं। (द्रष्टव्य खोज विवरण ४–४७, ६–२६८, १७–१७६, २३–३६६, प० २२–१०३)। उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर चौबे, नीलकठ के पुत्र, सवत् १८०६ के लगभग वर्तमान और भरतपुर के महाराजकुमार प्रतापसिह के आश्रित थे। इस बार इनकी दो नवीन रचनाएँ "शृगारविलास" और "प्रेमपच्चीसी" नाम से और मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण इस प्रकार है—

शृंगार विलास—रचनाकाल-लिपिकाल अज्ञात। विषय नायिकाभेद। इसमे भावो को स्पष्ट करने के लिये कही-कही गद्य का भी प्रयोग किया गया है। उदाहरणार्थ यहाँ एक कवित्त दिया जाता है, जिसका भाव गद्य मे स्पष्ट किया गया है—

प्रेमरगराते परजंक पै हसत दोऊ अंक भरि लेत करि विरह निवारनें।
कबहूँ बिनोद सो बिलोकत उमंग संग संगहीं सरस किये भूषन सँवारनें।
"सोमनाथ" रीझि पियें अधर पियूष ऐसी सोभ कित पाई रति मदन गँवारनें।
छाई अजों नैननि निकाई.आजु दंपति की हेरति हिराई री किए मैं प्रान वारनें।

इहाँ दंपति आलबन विभाव ॥ भूषन सुंदरता उद्दीपन विभाव ॥ बिलोकिबो अरु अधरपान करिबौ अनुभाव ॥ विनोद सब्द करि हर्ष सचारो भाव ॥ इन सबते रति स्थायी व्यंग तातें सिंगार रस पूर्ण ॥

प्रस्तुत प्रति स्वय रचयिता के हाथ की लिखी है। इसमे जहाँ-तहाँ काट-छाँट की गई है और प्रत्येक अध्याय (उल्लास) की पुष्पिका मे त्रुटियो का भी उल्लेख है।

(२) **प्रेमपच्चीसी**—इसके भी रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। विषय श्रीकृष्ण-भक्ति है। यह पजाबी भाषा मे रची गई है, जिसमे फारसी शब्दो का भी मिश्रण है और खड़ी बोली का भी प्रयोग है। इसमे कवि के 'सोमनाथ' और 'शशिनाथ' दोनो नाम पाए जाते हैं।

प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इस कवि के सबध की खोज विशेष महत्त्व रखती है। 'शृगार-विलास' की प्रति स्वय उनके हाथ की लिखी प्रतीत होती है। इस विवरण मे सख्या २२० पर उल्लिखित प्राणनाथ सोती कृत "जेहली जवाहर" की नकल भी इन्होने ही की है। उसकी लिपि का प्रस्तुत ग्रथ की लिपि के साथ मिलान करने से स्पष्ट पता चलता है कि दोनो एक ही व्यक्ति की लिखी हुई हैं। दोनो की लिपियाँ मिलती हैं और दोनो के अक्षरो के ऊपर अनुस्वार लगाने मे एकता पाई जाती है। 'शृगारविलास' मे इनके गद्य का नमूना ऊपर दिया गया है। 'प्रेमपच्चीसी' इनके पजाबी भाषा के ज्ञान का प्रमाण है। प्रसन्नता की बात है कि ये दोनो रचनाएँ सभा के लिये प्राप्त हो गई हैं और आर्यभाषा पुस्तकालय के याज्ञिक-सग्रह मे सुरक्षित हैं।

प्रेमपच्चीसी से दो छद दिए जाते हैं—

क्या कीती तकसीर तुसांडी नही मुषउ दिखलावैं है।
राति दिहां विन् तैंडी चरचा मुझनू और न भावैं है।

बेदरदीं महबूब गीरदे क्यो जरदगी करदा है ।
सोमनाथ नेही सो कैसा दिल अंदरदा परदा है ॥२॥
:o: :o: :o: :o:
काम नही यह सवदा कोइल नीरवाहे टाडा है ।
साहिव दे दरसन दा दरसन नही ठोदा चाटा है ।
कहि ससिनाथ सुनो वेदाए नहचं दिलदा साटा है ।
नही किसीदा आठा तो भी इसका सेहदा काटा है ॥२६॥

नीचे विवरण के परिशिष्टो की सूची दी जाती है—

परिशिष्ट १—ग्रथकारो पर टिप्पणियाँ ।
,, २—ग्रथो के विवरणपत्र (उद्धरण, विपय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं—आदि विवरण) ।
,, ३—उन महत्त्वपूर्ण रचनाओ के विवरणपत्र (उद्धरण, विपय, लिपि और कहाँ वर्तमान हैं आदि विवरण) जिनके रचयिता अज्ञात है ।
,, ४—(क) परिशिष्ट १ और २ मे आए उन कवियो की नामावली जो आज तक अज्ञात थे ।
(ख) परिशिष्ट १ और २ मे आए पूर्वज्ञात रचयिताओ के उन ग्रथो की नामावली जो खोज मे नवीन मिले है ।
(ग) काव्य-सग्रहो मे आए उन कवियो की नामावली जिनका पता आज तक न था ।
,, ५—ग्रथकार और उनके आश्रयदाताओ की सूची ।

अत मे ग्रथकारो और ग्रथो की नामानुक्रमणिकाएँ ।

१. अखैराम—इस त्रिवर्षी मे "गगा माहात्म्य" के रचयिता अखैराम का पता प्रथम बार ही लगा । ये इसी नाम के अन्य रचयिताओ से भिन्न है । पुस्तक के आधार पर इतना ही पता चलता है कि सुप्रसिद्ध स्वामी चरणदास जी के शिष्य गुरु छीना इनके गुरु थे, जिन्होंने स्वप्न मे इनको प्रस्तुत ग्रथ लिखने की आज्ञा दी । अन्य वृत्त अज्ञात है ।

ग्रथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है । इसका रचनाकाल सवत् १८३२ है और लिपिकाल सवत् १८४० वि० ।

२. अखैराम—इनकी "सिंघासन वत्तीसी" (सिंहासन वत्तीसी) की एक प्रति मिली है, जिसका उल्लेख पिछले खोज विवरण (३२–४वी) मे हो चुका है । इसका दूसरा नाम 'सुजान विलास' है—

प्रथम ताहि आसीस करि उपज्यो हिये हुलास ।
सूरज मल्ल के नाम कौ रच्यौ "सुजानविलास" ॥

रचनाकाल सवत् १८१२ वि० है । प्रस्तुत प्रति सवत् १९१० मे लिखी गई । रचयिता भरतपुर नरेश सुजानसिंह के आश्रित थे । पूर्वोक्त खोज विवरण मे इन्हें मथुरा प्रात के अतर्गत चून नगर निवासी और भागवत के अनुवादकर्त्ता भीष्म का वशज लिखा है ।

३. अग्रस्वामी—अग्रस्वामी की 'गुरुअष्टक' नाम से नवीन रचना मिली है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे न तो रचना काल का उल्लेख है और न लिपिकाल का ही । रचयिता का भी

---

० इस त्रैवार्षिक खोज-विवरण की सामग्री खोज-विभाग के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल ने प्रस्तुत की है, एतदर्थ उन्हें धन्यवाद । —निरीक्षक ।

कोई वृत्त नही मिलता। कृष्णदास पयहारी के शिष्य, स्वामी अग्रदास जी से ये भिन्न जान पडते हैं। सभवत खोज विवरण (१७–६०) मे उल्लिखित युगलप्रिया के ये गुरु है। रचना साधारण है।

४. **अचलकीर्ति**—इस रचयिता की "अठारह नातें" के नाम से नई रचना मिली है। इसमे जैन धर्मानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल तथा लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। रचयिता के सवध मे पता चलता है कि ये फिरोजावाद के रहनेवाले थे। अन्य परिचय अज्ञात है। पिछले खोज विवरणो मे उल्लिखित 'विपापहार' के रचयिता नारनौल (दिल्ली प्रात) निवासी अचलकीर्त्ति (आचारज) से ये भिन्न ही जान पडते हैं, देखिए खोज विवरण (१६००–१०३) (दिल्ली ३१–१) (३२–१)।

५. **अजगरनाथ**—यद्यपि प्रस्तुत रचयिता की 'हरसूब्रह्ममुक्तावली' नामक रचना छप गई है (प्रकाशक—वावू महावीर प्रसाद राजवैद्य व महादेवराम, अध्यापक, पो०–चैनपुर), पर खोज मे इनका पता प्रथम वार ही लगा है। सवत् १६०४ मे इन्होने उक्त ग्रथ की रचना की। ये अजगरा (वनारस) के निवासी थे।

ग्रथ काव्य की दृष्टि से रोचक हे। इसका विपय मध्यकालीन एक ऐतिहासिक घटना है जो इस प्रकार है—"विहारप्रात मे शाहावाद जिला के अतर्गत चैनपुर स्थान मे राजा शालिवाहन ने रानी मानमती के कहने पर अपने कर्मनिप्ठ पुरोहित हरसू पाडेय का घर अकारण ही नप्ट कर दिया था। फलस्वरूप ब्रह्मकोप से राजा सपरिवार नप्ट हो गया। एकमात्र ज्ञानकुवरि, राजकन्या वच रही। राजकन्या ने पुरोहित को राजमहल मे अनशन करते समय रस पिलाकर प्रसन्न कर लिया था, अत उसको वशरहित न होने का आशीर्वाद मिला। पुरोहित हरसू पाडेय ने वीस दिन तक अनशन करने के पश्चात् सवत् १४८४ मे माघ कृप्ण गणेश चतुर्थी के दिन प्राण त्याग किए। पश्चात् फिर रूप (तैजसरूप) धारण कर दिल्ली गए और सैयद वश के तत्कालीन वादशाह मुवारकशाह (आलमशाह) को लेकर चैनपुर पर आक्रमण किया। घोर युद्ध के पश्चात् शालिवाहन मारा गया और उसका समस्त परिवार भी अग्नि मे भस्म हो गया।

"हरसू पाडेय का उनके मृत्युस्थान पर चवूतरा वना दिया गया जो उनके स्मृतिस्वरूप अभी तक प्रसिद्ध है तथा जिसका वडा माहात्म्य भी कहा जाता है।"

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति आदि अत मे खडित है। लिपिकाल का भी कोई पता नही।

६. **अनंतदास**—अनतदास कृत "परचरी पीपा जी की (परिचयी पीपाजी की)" मिली है। पिछले दो खोज विवरणो मे भी इसका उल्लेख है, दे० खो० वि० (६–१२८ ए २३–१८ सी)। इनके गुरु के सवध मे कुछ भ्रम दिखाई देता है। उपर्युक्त अतिम खोज विवरण मे इसके निराकरण करने की चेप्टा की गई, पर पूरी तरह समाधान नही हुआ। उसमे गुरु-परपरा का जो उद्धरण दिया गया है, उसके अनुसार रचयिता के गुरु 'विनोदा' या 'विनोददास' ठहरते हैं, परतु टिप्पणी मे उन्हें अग्रदास जी का शिष्य लिखा है। उद्धरण इस प्रकार है—

रामानंद के अनंतानदा। सदा प्रकट ज्यो पूरन चंदा।
ताके कृष्णदास अधिकारी। सव कोउ जाने दूधाधारी।
ताके अग्र आगरो प्रेमू। लै वैठे सुमिरन को नेमू।
अग्र के शिष्य विनोदहि पाई। ताकी दास अनंत पै आई।

अतिम पद से स्पप्ट है कि अग्र की शिप्यता 'विनोद', 'विनोदा' या 'विनोददास' ने पाई और उसकी ('ताकी' शव्द से तात्पर्य है, विनोद की) शिप्यता अनतदास पर आई। अत अव यह निश्चित हो गया कि अनतदास विनोददास के शिष्य थे न कि अग्रदास के।

प्रस्तुत ग्रथ मे सुप्रसिद्ध भक्त पीपाजी की भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १७८६ वि० है। इस दृष्टि से ग्रथ की प्रस्तुत प्रति प्राचीन है।

७. अमरदास—इनका पता पहली वार लगा है। इस नाम के दो रचयिता पिछले खोज विवरणो मे भी उल्लिखित हैं, दे० खो० वि० (६–१२३, २०–५, २६–८ ए, वी, २६–६ ए, वी, ६–२३६, २६८)। पर उनसे ये भिन्न हैं। इनके "एकादशी माहात्म्य" का विवरण लिया गया है। ग्रथ के अनुसार ये लखनऊ (लक्ष्मणपुरी) के रहने वाले थे—

लछिमन पुरी प्रसिद्धि जग पटकुल विप्रनेवास ॥
नदी गोमती तट रहत चारिउ वरन सुपास ॥

रचनाकाल सवत् १८१५ वि० है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १६६६ वि० की लिखी है।

८. अमरेश कुमार—ये "राधाकृष्णरूप युगल विलास" नामक ग्रथ के रचयिता हैं। इनका पता पहली वार लगा है। ग्रथ द्वारा ज्ञात होता है कि ये साहपुर के राजा या राजकुमार थे

धन्य नगरी धन्य देसा। सुष सोवे नृपत हमेसा॥
सदा सहाय गिरीसा। चिरजीवो कोर वरीसा॥१६॥
साहपुर प्रगट भई श्री अमरेस कुमार।
तिन लीला वरनन करी भक्ति रूप निसतार॥२०॥

ग्रथ का विषय श्रीकृष्ण लीला है। रचनाकाल सवत् १६२३ है। लिपिकाल दिया नही।

६. अयोध्या गिरि—अयोध्या गिरि के कुछ 'पद' मिले हैं। पदो द्वारा ये प्रौढ एव प्रतिभाशाली कवि जान पडते है। खेद है, इनका विवरण अज्ञात है। सभवत ये रामभक्ति-शाखा के थे। इस शाखा के वहुत से लोगो ने अपने को 'सखी' या 'अली' शब्द से सबोधित किया और राधा-कृष्ण सवधी रचनाओ की तरह राम और जानकी के सवध मे भी शृगारपूर्ण पद रचे। प्रस्तुत 'पद' इसी कोटि के हैं। इनमे राम और कृष्ण मे से किसी का नाम नही। 'पद' की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। इससे न तो रचनाकाल का पता लगता है और न लिपिकाल का ही। रचयिता नवोपलब्ध है।

१०. अली मुहीब खाँ "प्रीतम"—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग, सख्या ३५।

११. अली रंगीली—इनकी 'रासपचाध्यायी' नामक रचना का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होने पर भी इसके द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल और रचयिता के सवध मे कुछ पता नही चलता। विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचना पदो मे साधारण कोटि की है। रचयिता नवोपलब्ध है।

१२. अहलाद दास—'अहलाद दास' के कुछ शब्द 'झूलना' नाम से पहले भी मिले है, देखिए खोज विवरण (३५–१)। इस वार 'ज्ञानचेटक' नाम से इनकी नवीन कृति मिली है, जिसमे ३३३ चौपाइयाँ हैं। रचनाकाल सवत् १८२८ और लिपिकाल सवत् १६१६ है। विषय सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है। रचयिता के सवध मे केवल इतना ही पता चलता है कि ये स्वामी जगजीवनदास के सप्रदाय के थे। उनको इन्होंने 'सतगुरु' और 'प्रभु' नाम से सबोधित किया है। परतु उपर्युक्त खोज विवरण के अनुसार ये चदेलवशी क्षत्रिय स्वामी जगजीवनदास के भतीजे थे। इन्होंने स्वामीजी के वनाए हुए कई ग्रथ लिखकर पूरे किए थे। फारसी मे भी वहुत से रेखते वनाए। उक्त विवरण मे सवत् १७४० मे इनके जन्म की सभावना की गई है।

प्रस्तुत हस्तलेख के लिपिकर्त्ता फकीरदास के कथनानुसार हस्तलेख मे दूलनदास की रचनाएँ, प्रभु सिध्या (सिध्यादास वावा) के दोहे और शब्द तथा गिरिवरदास जी के शब्द लिपिवद्ध थे। परतु अव इसमे प्रस्तुत रचना के अतिरिक्त गिरिवरदास जी के शब्दो का केवल एक पत्र विद्यमान है। पत्रो की सख्याओ से विदित होता है कि इसमे उपर्युक्त रचनाएँ रही होगी। हस्तलेख का जो अश प्राप्त है उसके प्रथम पत्र की सख्या १२६ है और अत मे पत्र की १३८। इससे स्पष्ट है कि हस्तलेख का वहुत वडा अश नष्ट हो गया है।

१३. आत्माराम—आयुर्वेदविषयक इनके 'आत्मप्रकाश' ग्रथ की एक छपी प्रति मिली है। इसमे रचनाकाल का उल्लेख नही। मुद्रणकाल सवत् १९३५ है।

रचयिता ग्रथ के अनुसार जूनियानगर के निवासी थे। इनकी गुरु परपरा इस प्रकार है—

दादू
|
मोखप्रकाश
|
वेणीदास
|
गगाराम
|
भगतराम
|
नारायणदास
|
दौलतिराम
|
आत्माराम

अन्य वृत्त नही दिया है। विपय की दृष्टि से ग्रथ उपादेय है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है।

१४. आनंद (कृष्णानंद या गंगाराम)—इनके छह ग्रथो—(१) आनद अनुभव, (२) दानलीला, (३) प्रवोध चद्रोदय नाटक, (४) भगवद्गीता, (५) भागवत दशम स्कध और (६) रासपचाध्यायी के उल्लेख पिछले खोज विवरणो मे हो चुके है। देखिए खोज विवरण (३–३७, ६–४ ए, वी, सी, २०–७, ४१–६)।

इस वार इनके एक और नवीन ग्रथ 'अर्जुनगीता' का पता चला है, जिसकी प्रस्तुत प्रति अत से खडित है। रचनाकाल का उल्लेख तो नही है, परतु ग्रथकार के सवत् १८३५ मे काशी आने का उल्लेख किया गया है। अत ग्रथ का रचनाकाल भी लगभग यही होगा। लिपिकाल अज्ञात है।

पिछले ग्रथो मे रचयिता का कोई विशेप वृत्त नही मिलता, पर इस वार इनका पूरा परिचय प्राप्त हुआ है। प्रस्तुत ग्रथ के अनुसार इनका जन्म दिल्ली मे हुआ था। ये सारस्वत व्राह्मण थे। कुछ वर्षो के पश्चात् दिल्ली छोडकर वृदावन चले गए और गोविंद का भजन करने लगे। सवत् १८३५ मे इन्हे वृदावन छोडकर काशी जाना पडा। और तव से काशी मे ही रहने लगे। इनका पहले का नाम 'गगाराम' था। पश्चात्—जैसा कि इनका कहना है—घनश्याम (श्रीकृष्ण) ने 'आनद' नाम रखा, जिसमे 'कृष्ण' शब्द और जोड़कर इन्होने 'कृष्णानद'

नाम रख लिया। इसपर इन्होंने देहाभिमान को समूल नष्ट कर दिया और कृष्णभक्ति मे लीन रहने लगे।

प्रस्तुत ग्रथ की टीका करते समय इनकी आयु बीस वर्ष की थी :

'बीसवर्ष की हमारी आयो। ज्ञान विष्ण कृपा ते पायो' ॥

रेखाकित 'विष्ण' शब्द से अनुमान होता है कि कोई 'विष्णुदास' इनके गुरु रहे। इनके समस्त ग्रथो मे मगलाचरण का दोहा एक ही है जो इस प्रकार है :

आदि करूं परणाम जगत गुरु जगदीश को।
ईष्ट आनंद के श्याम तिने निवाऊं सीस को ॥१॥

पर (४१–६) मे उल्लिखित 'रासपचाध्यायी' मे यह दोहा नही मिलता। अत. उसको प्रस्तुत रचयिता की रचना मानने मे कुछ सदेह होता है।

१५. **आनंद कवि**—इस कवि के नाम से दो पुस्तकें 'आनद विलास' और 'ककावली' मिली है। दोनो एक हस्तलेख मे होने के कारण एक ही रचयिता की कृतियाँ मान ली गई है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही है। पहली पुस्तक मे राधा-कृष्ण के लीलासबधी ५६ कवित्त है और दूसरी मे 'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहे रचकर राम क्रीडा का सक्षेप मे वर्णन किया है।

रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१६. **आनंदकवि**—आनद कविकृत 'कोकशास्त्र' का उल्लेख 'कोकसार', 'कोकमजरी' और 'कोकविलास' आदि भिन्न भिन्न नामो से पिछले कई खोज विवरणो मे हो चुका है। देखिए खोज विवरण (२–५, ६–१२६ ए; १७–७, २०–६ ए, बी, २३–१३ 'बी' मे 'जे' तक, २६–१० 'ए' से 'के' तक, २९–११ 'ए' से 'जी' तक, दि० ३१–७, प० २२–५), परतु अभी तक इनका परिचय अज्ञात ही है। इस बार इस पुस्तक की दो पुरानी प्रतियाँ और मिली हैं। इनमे से एक मे लिपिकाल सवत् १७०५ तथा दूसरी मे सवत् १७९३ है। रचनाकाल का उल्लेख किसी मे नही है।

१७. **आनंददास**—इस त्रिवर्षी मे इनका पता पहली बार लगा है। इनकी 'सुदामा-चरित्र' नामक रचना का विवरण लिया गया है। इसका विषय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का विवरण भी अप्राप्य है। ग्रथ की रचना-शैली फारसी है। भाषा प्राचीन खड़ी बोली है जिसमे फारसी शब्दो का बाहुल्य है।

१८. **आलम और शेख**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३६।

१९. **ईशकवि या कवि व्यंकटेश**—इनकी 'महा महोत्सव' (अन्नकूट लीला) नामक रचना का विवरण लिया गया है। यह पहले भी एक बार मिल चुकी है, देखिए, खोज विवरण (३२–९०)। वल्लभकुल सप्रदाय मे मनाये जाने वाले 'अन्नकूट लीला महोत्सव' का इसमे वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८७९ वि० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का वृत्त पुष्पिका मे दिया है, जिसके अनुसार इनका दूसरा नाम 'व्यकटेश' था। ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी और गोकुल निवासी तैलंग ब्राह्मण मोहन भट्ट के पुत्र थे। प्रस्तुत रचना वल्लभ कुल के गोस्वामी श्री दामोदर महाराज के लिए रची गई।

२०. **ईश**—'शिव अंबिका स्तोत्र' के ये रचयिता हैं। रचना मे अंबिका भवानी की स्तुति वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचना साधारण है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। अपने नाम के पूर्व रचयिता से ये सर्वथा भिन्न हैं। खोज मे नवोपलब्ध है।

२१. ईश्वरदास (इसरदास)—ईश्वरदास की "भरतमिलाप" या "भरतविलाप" नामक रचना मिली है, जिसका उल्लेख खोज विवरण (२३–१७३) मे भी है। इस बार इसकी चार प्रतियाँ प्राप्त हुई है, पर रचनाकाल का उल्लेख किसी मे भी नही हैं। लिपिकाल केवल दो प्रतियो मे सन् १६६ और सवत् १८८० वि० दिए है। सन् १६६ सभवत हिजरी सन् १०६६ जान पडता है जो स० १७०७ के लगभग होता है। इस दृष्टि से यह प्रति प्राचीन है। विपय चित्रकूट मे राम-भरत-मिलन का वर्णन है। रचना का नाम किसी प्रति मे "भरतमिलाप" तथा किसी मे "भरतविलाप" है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। सभवत ये आचार्य रामचद्र शुक्ल के "हिंदी साहित्य के इतिहास" के पृष्ठ सख्या ७२, ७३ पर उल्लिखित "सत्यवती की कथा" के रचयिता ईश्वरदास है। दोनो ग्रथो मे रचयिता का नाम "इसरदास" लिखा मिलता है। इसके अतिरिक्त दोनो की वर्णन शैली मिलती जुलती है, देखिए आगे सख्या २२ पर का विवरण।

२२ ईश्वरदास (इसरदास)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत. देखिए भूमिका भाग मे सख्या १।

२३. ईश्वरदास (इसरदास)—इनकी "अगदपैज" नामक रचना नई मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अप्राप्त है। लिपिकाल दो दिए है—सवत् १७०६ और सवत् १८०६। इससे स्पप्ट से कि प्रस्तुत प्रति सवत् १७०६ मे लिखी गई प्रति से नकल हुई है। विपय इसके नाम से ही स्पप्ट है।

रचयिता का वृत्त नही मिलता, पर ये भी 'भरतमिलाप' और 'सत्यवती कथा' के रचयिता (सख्या २१, २२) जान पडते हैं। क्योकि भरतमिलाप और इनके प्रस्तुत ग्रथ का विषय एक ही है, अर्थात् रामायण की कथा का वर्णन करना। दोनो मे रचयिता का नाम भी 'इसरदास' ही दिया है। इस दृष्टि से यदि दोनो एक ही ग्रथ के अश हो तो सदेह भी नही। इनकी और 'सत्यवती की कथा' की रचनाशैली मिलती जुलती है।

२४. ईश्वर कवि—इनके नाम से अलकारविपयक विना नाम का एक ग्रथ मिला है। ये सभवत. पजाव (खोज विवरण २२–११७) तथा खोज विवरण १२६–१५६ वी सी) मे आए ईश्वरकवि है। उक्त खोज विवरण मे इनके क्रमश "चित्र चद्रिका", "नरेंद्रभूपण", "भक्ति रत्नावली" और "मानव प्रवोध" नामक ग्रथो के उल्लेख है। "चित्र चद्रिका" प्रस्तुत ग्रथ विदित होता है। पजाव खोज विवरण मे ग्रथो के उद्धरण नही छपे है, जिससे विवरण पत्रो का मिलान नही हो सका। प्रस्तुत ग्रथ मे—जैसा चित्र चद्रिका मे है—तुलसी कृत रामायण मे आए प्रसिद्ध प्रसिद्ध अर्थालकारो और चित्रालकारो का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है, पर पजाव खोज विवरण मे सवत् १६१७ वि० रचनाकाल के रूप मे उल्लिखित है। लिपिकाल सवत् १६१६ है।

रचयिता के सवध मे कुछ पता नही चलता, पर उपर्युक्त खोज विवरणो के अनुसार ये सवत् १६१३ से १६३० के लगभग वर्तमान थे। ये पहले पटियाला नरेश महाराज नरेंद्र सिंह के आश्रय मे रहते थे, पर पीछे धौलपुर के महाराणा भगवत सिंह के यहाँ रहने लगे।

२५. उदय या उदयराम—इनकी पहले वहुत सी रचनाएँ मिली हैं, देखिए खोज विवरण (००–६८), (३२–२२३), (३५–१०२) और सन् (३८–१५६)। इस वार इनकी "दामोदरलीला" और मिली है, जिसमे श्रीकृप्ण की "दधि माखन" और गोवर्द्धन लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८५२ है। लिपिकाल दिया नही। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मोहनलाल कृत 'रगमजरी' (याज्ञिक सग्रह, आर्यभापा पुस्तकालय) के साथ एक हस्तलेख मे है।

रचयिता का अन्य परिचय नही मिलता पर ऊपर लिखित खोज विवरणो के अनुसार ये जाति के वैश्य और ब्रज निवासी थे। स्वर्गीय मयाशकर जी याज्ञिक इनके सबध मे कहा करते थे कि "नददास जडिया तो उदै पालसिया। इसमे सदेह नही कि इनकी कविता उत्तम है।

२६. उदै—ये महाशय इस नाम के अन्य कवियो से भिन्न प्रतीत होते है। प्रस्तुत खोज मे इनकी "राम रघुनाथ स्तोत्र" नामक रचना मिली है। इसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही। रचयिता का वृत्त भी अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७. उमादास—इस रचयिता के नाम पर "नवरत्न कवित्त" का विवरण लिया गया है। विवरण पत्र मे जो उद्धरण हैं उनमे इनका नाम कही नही मिलता। अन्वेषक का कथन है कि इनका रचा "नवरत्न" नामक नीति ग्रथ है, अत सभव है कि प्रस्तुत कवित्त उन्ही के हो।

उमादास के 'नवरत्न' को देखने से इस सबध मे कुछ भी पता नही चलता, देखिए खोज विवरण (४–६५)। उसमे कोई ऐसी वात नही मिलती जिसका प्रस्तुत कवित्तो से किसी प्रकार साम्य वैठाया जा सके। उसके रचयिता सवत् १६१६ के लगभग वर्तमान थे। परतु प्रस्तुत 'कवित्तो' के लिपिकाल (स० १८८८ वि०) को देखने से पता चलता है कि इसके रचयिता स० १८८८ वि० के पहले वर्तमान थे। अत प्रस्तुत "नवरत्न कवित्त" को 'नवरत्न' के कर्त्ता उमादास कृत वतलाना ठीक नही। अस्तु, ग्रथ का रचनाकाल अज्ञात है। विषय नीति तथा ज्ञानोपदेश है।

२८. ऋषिकेश—इनकी "स्वरोदय षट् प्रकाश" नामक रचना मिली है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (६–२२१) मे भी है, परतु उसमे विवरण पत्र नही छपा है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १८०८ वि० है। अत का भाग खडित होने के कारण लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता ने जीवनराम नामक अपने एक मित्र की प्रेरणा से प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। ये स० १८०८ के लगभग वर्तमान थे और आगरा मे रहते थे।

२९. ऋषिकेश—ये महाशय 'ऋतुराजमजरी' के रचयिता है। ये वृदावन के रहने वाले थे। खोज मे इनका पता पहली वार लगा है। इनके प्रस्तुत ग्रथ मे षट्ऋतुओ के अनुसार राधाकृष्ण की लीलाओ का सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

३०. कनाय साहव (फरासीसी हकीम)—'अजल पुराण' फरासीसी हकीम के नाम पर पहले कई वार मिल चुका है, देखिए खोज विवरण (२–११३) (६–१६६) और (२६–१०० ए, वी)। अव इसकी एक प्रति और मिली है, जिसकी पुष्पिका से ज्ञात हुआ है कि इसके वास्तविक रचयिता 'कनाय साहव' है, जो फरासीसी हकीम के पुत्र थे —

"इति श्री अजुल पुराणे वैद सास्त्रे हकीम फरासीस मतीस सुत कनाय साहेव विरचिताया रोग उत्पत्ति नाम षष्टमोध्याय १"

इनका काल एव अन्य वृत्त फिर भी अज्ञात ही है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे किसी सवत् का उल्लेख नही।

३१. कन्हैयालाल भट्ट उपनाम 'कान्ह'—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। भूमिका भाग मे सख्या २।

३२. कबीर—इस त्रिवर्षी मे कवीर के नाम पर निम्नलिखित ग्रथ और मिले है।

(१) कवीर सागर—लिपिकाल सवत् १७२३ वि०।
(२) कबीर और निरंजन ज्ञानगुष्टि, शब्द, मंगल, रेखता तथा हेला—लिपिकाल सवत् १६०८ वि०।
(३) ज्ञानसागर।

(४) चिंतामनि—लिपिकाल स० १८८४ वि० ।
(५) बसिष्ट बोध ।
(६) मूलख्यान ।
(७) मूलबानी ।

(८) सुकृतध्यान—इसमे कबीर का नाम नही आया । सवत् १५१६ एक स्थान पर आया है जो सभवत. सुकृत के अवतार किसी जुडावन (जुदावन) का जन्म समय है । यह ज्ञात नही होता कि ये जुडावन कौन थे और किस स्थान मे पैदा हुए थे तथा उन्होंने क्या काम किया ।

(९) हनुमानबोध ।

रचनाकाल किसी मे नही दिया है । विषय सत मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है ।

निश्चित रूप से यह नही कहा जा सकता कि ये कबीर की ही रचनाएँ हैं । रचयिता के वृत्त के सबध मे भी कोई नवीन बात प्रकट नही होती ।

३३. करता राम—इनके एक ग्रथ की खडित प्रति मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल के अतिरिक्त ग्रथ के नाम का भी उल्लेख नही । ग्रथ मे श्रीकृष्ण और गोपियो की दधिलीला का वर्णन है । अत इसी आधार पर इसका "दधिलीला" नाम रख दिया गया है ।

रचयिता का कोई परिचय नही दिया है । यह भी नही कहा जा सकता कि ये खोज विवरण (४१–२२) पर उल्लिखित शालिहोत्र के रचयिता 'करताराम' से भिन्न है या अभिन्न ।

३४. करताराम—इनकी "शालिहोत्र" रचना की एक प्रति का विवरण इस बार भी लिया गया है । रचना का खोज विवरण (४१–२२) मे उल्लेख हो चुका है । रचनाकाल सवत् १८५४ है और लिपिकाल सवत् १९२३ वि० ।

उपर्युक्त खोज विवरण और ग्रथ की प्रस्तुत प्रति के अनुसार रचयिता पडरौना (गोरखपुर) के अतर्गत सिधुआ ग्राम के रहनेवाले थे । वहाँ के नरेश प्रबलराय के कहने पर इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की ।

३५. कल्याणदास—इनके "सुदामा जी के सवैया" मिले है, जो इन्ही के 'सुदामा चरित्र' से लेकर सगृहीत किए गए है । 'सुदामा चरित्र' का उल्लेख खोज विवरण (३५–५०) मे है । रचयिता के सबध मे अभी तक कुछ पता नही चला । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

३६. कल्यानदास—प्रस्तुत खोज मे इनकी 'बहुला लीला' विवृत हुई है । ग्रथ का विषय एक पौराणिक आख्यान है, जिसमे एक ब्राह्मण की बहुला गाय की सत्यप्रियता और एक सिंह की उदारता का वर्णन है । रचनाकाल का उल्लेख नही । लिपिकाल सवत् १८४८ है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता । अत नही कहा जा सकता कि पूर्व कवि से ये भिन्न है या अभिन्न ।

३७. काकराम—इनकी "राम विवाह" नामक छोटी सी रचना मिली है । इनके सबध मे केवल यह कि ये अधे थे और कोई वृत्त नही मिलता । ग्रथ की प्रति खडित है । रचनाकाल का पता नही । लिपिकाल सवत् १७६९ वि० दिया है । रचयिता खोज मे नवोपलब्ध है ।

३८. कान्ह कवि (लघु कान्ह)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । अत देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३ ।

३९. कान्ह और व्यास—इन दो महाशयो ने "बिहारी सतसई" का सपादन अकारादि क्रम से किया है । गद्य मे दोहो का मर्म भी सूत्र रूप मे लिखा है । अपने रचे इनके केवल तीन दोहे हैं जो ग्रथात मे दिए हैं और जिनमे प्रस्तुत प्रयास का कारण प्रकट किया है—

सरस सलंकृत सतसया किये विहारी दास ।
तिनकी पूरब पीठिका कीन्ही "कान्ह व व्याम" ॥७१०॥
प्रथम अकारादि आदि दै अवर हकार अवमान ।
मसकत कर एकत्र कीये अति प्रबंध यह जानि ॥७११॥
जाको जासौ वचन है सोइ कीयो प्रवान ।
जहां होइ अनमिल कहू लेहु सुधारि सुजान ॥७१३॥

ग्रथ द्वारा इनका कोई परिचय नहीं मिलता । यह भी नही कहा जा सकता कि पिछले खोज विवरणो (२९–१८४) (३–९०) (६–२२७) (३२–१०७) मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न हैं या अभिन्न ।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल सवत् १७८७ दिया है । रचनाकाल ज्ञात नही ।

४०. कालिदास—इनके "वसतराज" नामक एक ग्रथ की दो प्रतियो के विवरण लिए गए है । ग्रथ मे शुभाशुभ शकुन का विषय वर्णन है । रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी प्रति मे नही है ।

रचयिता का परिचय भी अज्ञात है । पिछले खोज विवरणो (१–६८) (४–५; ६–१७८) (२०–७५, २३–२००) (प० २२–५२, ९–१४४) मे इस नाम के दो रचयिताओ का उल्लेख है, परतु प्रस्तुत रचयिता उनसे सर्वथा भिन्न जान पडते है ।

४१. कासी गिरि—प्रस्तुत रचयिता कृत "भगवद्‌गीता" का विवरण पहिले भी लिया जा चुका है, देखिए खोज विवरण (३२–१०८) । इस बार संवत् १८६३ की लिखी इसकी एक प्रति और मिली है जिसमे रचनाकाल का उल्लेख है । परतु उपर्युक्त खोज विवरण के अनुसार रचनाकाल सवत् १७९१ है ।

रचयिता का परिचय अभी तक अज्ञात है ।

४२. किसनलाल—इस त्रिवर्षी मे इनके नाम से "वियोग मालती" का विवरण लिया गया है । विवरण पत्र मे दिए गए उद्धरणो से रचयिता और ग्रथ के नाम का कोई पता नही चलता । अत: नही कहा जा सकता कि अन्वेषक ने किस आधार पर इन नामो का उल्लेख किया है । ग्रथ मे वियोग शृगार पूर्ण कहानी का वर्णन है । इसमे एक 'राजाराम सिंह' (सभवत भरतपुर नरेश) का वर्णन है जो रचयिता के आश्रयदाता जान पडते हैं । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता । खोज विवरण (४१–१२७) मे इस नाम के एक रचयिता का उल्लेख है, पर उनके साथ इनका कोई साम्य है या नही कहा नही जा सकता ।

४३. किसोरदास—इनकी "गीता भाषा टीका" नाम की पुस्तक मिली है, जो गद्य मे है । नाम के अतिरिक्त इनका और कोई वृत्त नही मिलता । पिछले खोज विवरणो (६–६१) (१२–९३) (२३–२१३) मे इस नाम के कुछ रचयिता आए है पर प्रमाणाभाव मे नही कहा जा सकता कि उनमे से ये कोई एक हैं या नही । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

४४. कुंभनदास—इनकी "दानलीला" की दो प्रतियों के विवरण लिए गए हैं । इनका कोई वृत्त नही मिलता । अत: नही कहा जा सकता कि अष्टछाप वाले कुभनदास (३२–१२८) से ये भिन्न हैं अथवा अभिन्न ।

ग्रथ मे कृष्ण और गोपियो की दानलीला का वर्णन है । रचनाकाल उल्लिखित नही । लिपिकाल केवल एक प्रति मे सवत् १९१८ है ।

४५. कुदरतीदास या कुदरती साहब—रचयिता का विस्तृत विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग मे संख्या ४ ।

४६. कृपाराम—इनका "भागवत" ग्रथ मिला है। ग्रथ का उल्लेख पिछले खोज-विवरण (२६–२४५) मे भी है। उक्त विवरण के अनुसार ये जाति के नागर ब्राह्मण, सवत् १७७२ के लगभग वर्तमान और जयपुर नरेश महाराज सवाई जयसिंह के आश्रित थे। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १८९६ वि० दिया है।

४७. कृष्णचंद अग्रवाल—खोज मे ये नवोपलव्ध है। इनके "कृष्ण विलास" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ की पुष्पिका के आधार पर ये वल्लभ कुल के गुसाईं श्री गुलाल चद जी के पुत्र श्री द्वारिकानाथ जी के सेवक (शिष्य) थे।

इतिश्री भगवते महापुराणे दशम स्कंध लीला अध्याई ॥९०॥ संपूर्ण॥ संवत् १८०४ माघ सुदी ३० गुरुवासरे। . .इत्र काथ सवत् १७९४ पस वद ११ बुधवासरे कृष्णचंद्र आग्रवाल गुलाल चंद जु के सुत श्री द्वारकानाथ वल्लभ कुल के गोसाईं के सेवक ने जथा मत श्रीगुर ईश्वर की कृपा तें वरनन कीये सुभ॥

'श्री गुर ईस्वर' का तात्पर्य यही हो सकता है कि ये गुरु को ईश्वर तुल्य समझते थे। गुरु इनके "द्वारिकानाथ" अथवा "द्वारिकेश" ही थे जैसा कि ग्रथारभ मे भी दिया है—

"द्वारकेस गुरुदेव कृपा तें मोंहि भरोसो है निरधारि॥२॥"

ग्रथ भागवत दशमस्कध का अनुवाद है। रचनाकाल सवत् १७९४ और लिपिकाल सवत् १८०४ है।

४८. कृष्णदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ५।

४९. कृष्णदास (अनुमान से)—इनकी विना नाम की खडित रचना मिली है। रचना मे भगवद् विरुदावली का वर्णन है। अत विपय के आधार पर ग्रथ का नाम "विरुदावली" रख दिया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचना साधारण है।

रचयिता का नाम "दास कृसुन" लिखा मिलता है। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

५०. कृष्णदास (अष्टछाप)—इस वार इनके पदो का एक वडा सग्रह "कृष्णसागर" नाम से मिला है। सगृहीत पदो मे राधा-कृष्ण की भक्ति का सकीर्तन है। रचना काल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता, पर भाषा तथा शैली से ये अष्टछाप के कवि ज्ञात होते है।

पिछली वार इनकी दो रचनाएँ—(१) जुगलमान चरित और (२) दानलीला, मिली हैं, देखिए खोज विवरण (९–३०३) (२६–२४७)।

५१. कृष्णदास जाडा—इनकी "विद्रुभदेस" (विदर्भदेस?) नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे कृष्णरुक्मिणी विवाह वर्णित है। "विद्रुभ्देस विदर्भदेस" का विगड़ा हुआ। रूप है जो लिपिकर्ता के हस्तदोप से जान पडता है।

इसमे रचनाकाल और लिपिकाल नही दिए हैं।

रचना मे रचयिता का नाम कृष्णदास तो नही मिलता पर ग्रथात मे "जनकृष्ण" और "जाडा" नामो का उल्लेख हुआ है। अत इन्ही के आधार पर अन्वेपक ने "कृष्णदास जाडा" नाम रख दिया है। उन्होंने इनको अष्टछाप का कवि माना है, पर इनकी रचनाशैली अष्टछाप के कवियो की शैली से मेल नही खाती।

५२. कृष्णदास कायस्थ—इस कवि का पता प्रथम वार लगा है। खोज मे इनकी "रासपचाध्यायी" की खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता रामपुर, शमशावाद निवासी और जाति के कायस्थ (सकसेना) थे—

"कृष्णदास" मम नाम हरिजन चरन सरोजरज ।
रहत रामपुर ग्राम शमशाबाद प्रसिद्ध जो ॥
करी कृपा पूंछो वरन वरन सुनावों तोहि ।
सक सुन्यो कायस्थ कुल जान दूसरो मोह ॥

अन्य वृत्त नही मिलता । प्रस्तुत प्रति फारसी लिपि मे है ।

५३. कृष्णदेव—खोज मे ये पहले पहल मिले है । इनकी "बब्रुवाहन" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है, जिसमे महाभारत के आधार पर 'बभ्रुवाहन' की कथा का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८६७ अथवा शकाब्द १७३१ दिया है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता । खोज विवरण (६–१५६) मे आए कृष्णदेव से ये भिन्न जान पडते है ।

५४. कृष्णराम संतोखिया चक्रवर्ती—इन्होने गीता की टीका "गीता भाषा टीका" नाम से की है, जो गद्य मे है । टीका का रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १६२३ है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

५५. कृष्णाबाई या कृष्णदासि (श्री आचार्य जी की सेविका)—श्रीकृष्ण और गोपियो के रास विषय पर लिखी गई "शरदनिसा" नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है । खोज मे इनका पता पहली बार लगा है । अन्वेषक ने इनके लिये, "अडल निवासी, सवत् १६०० के पूर्व वर्तमान और आचार्यजी के सेवक" लिखा है, परतु विवरण मे दिए गए उद्धरणो मे ऐसा पता नही चलता । सभवत सुनी सुनाई बातो पर ही ऐसा लिखा गया है ।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचना काल और लिपिकाल उल्लिखित नही हैं ।

५६. केवललीन "द्विज"—इनके कुछ 'कवित्त' मिले हैं, जिनका विषय भगवद्भक्ति है । यद्यपि रचना का शीर्षक 'कवित्त' है पर कविता सवैया छदो मे की गई है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चला । कविता साधारण है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता । खोज मे नवोपलब्ध हैं ।

५७. केशव किशोर—इन्होने "श्री आचार्य जी की वशावली" की रचना की, जिसमे वल्लभ सप्रदाय के सस्थापक श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली का वर्णन है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

ग्रथ के आधार पर रचयिता वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे । गुरु का नाम द्वारिकेश था ।

श्री द्वारिकेस जी कृपा करी लीनो हूँ अपनाय ।
श्री वल्लभ कुल की केलि पर "केसो किसोर" बलि जाय ॥

अन्य परिचय अज्ञात है । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

५८. केशवदास—प्रसिद्ध कवि केशवदास के नाम से "वैराग्यशतक" (विवेक दीपिका) ग्रथ का विवरण लिया गया है । यह व्रजभाषा गद्य मे भर्तृहरिकृत सस्कृत ग्रथ "वैराग्यशतक" का अनुवाद है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १७४३ है । प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है । ग्रथ की निम्नलिखित पुष्पिका के आधार पर रचयिता केशवदास माने गए हैं —

"इति श्री मत्सकल नृपति मौलि मडन मनि श्री मधुकरी नृपति तनूज श्री मदिद्र विरचिताया विवेक दीपिकाया भर्तृहरि विरचिताया वैराग्यसत सपूर्ण भवति ॥"

केशवदास ने अपने ग्रथो की पुष्पिकाएँ इसी प्रकार लिखी हैं, जिनमे आश्रयदाता को ही रचयिता के रूप मे लिखा है । अत इसी आधार पर उन्हें प्रस्तुत ग्रथ का रचयिता माना है, अन्यथा रचयिता के सबध मे कोई निश्चित पता नही लगता ।

५९. केशवदास नारायण—"विवाहखेल" नामक रचना के ये रचयिता है। रचना मे राधा कृष्ण की विवाह खल लीला (इसमे राधा 'वधु' और श्रीकृष्ण 'वर' वने है) का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का परिचय भी अनुपलब्ध है। खोज मे ये नये मिले है।

६०. केशवप्रसाद शर्मा—इन्होने "केशव विनोद भापा निघटु" की सवत् १८९७ वि० मे रचना की। ग्रथ पहले सस्कृत मे रचा गया था, पर लोकोपचार की भावना से हिंदी मे अनुवाद कर विद्या रत्नाकर यन्त्रालय आगरा मे पुराने पत्थर टाइप मे छापा गया। मुद्रणकाल सवत् १९३० वि० है। इसमे ओपधियो, व्यजनो और अनेक प्रकार के मासो के गुण-दोषो का वर्णन है।

रचयिता के पिता का नाम परमसुख और छोटे भाई का नाम वलदेव था। इनके पूर्वज भवानीदत्त द्विवेदी थे, जो अयोध्या के समीप वैसवार के अतर्गत जैराजमऊ ग्राम मे रहते थे। वहाँ से वे विठूर के पास राधनगाँव मे जा वसे। पश्चात् इनके पिता पडित परमसुख इनको लेकर आगरे चले गए और अध्यापन कार्य कर जीवन यापन करने लगे। ये भी आगरा कॉलेज मे सस्कृत के प्रथम अध्यापक हो गए। इनका उल्लेख खोज विवरण (२६–२३०) मे भी हुआ है।

६१. केशोराम—इनके केवल दो 'कवित्त' मिले है, जिनमे चतुराईहीन मनुष्यो की निंदा की गई है। कवित्तो का रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी परिचय अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

६२. केसोदास—इस त्रिवर्षी मे इनके "महाभारत" (स्वर्गारोहणपर्व) ग्रथ का पता लगा है। ग्रथ मूल सस्कृत का हिंदी पद्यानुवाद है। यह खडितावस्था मे है और इसकी भाषा अवधी है। रचनाकाल का कोई पता नही चलता। लिपिकाल अस्पष्ट है, पर अनुमान से सवत् १८३२ जान पडता है।

"गिरिवर जन जगजीवन साँइ। सदा राषु सत सरन गोसांइ॥"

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति कैथी लिपि मे है, जो अत्यत भ्रष्ट है। परतु भाषा प्राचीन जान पडती है, जिससे रचयिता का प्राचीन होना विदित होता है। सभवत रचयिता उस समय के हैं जिस समय गोरखनाथ को ज्ञानियो मे श्रेष्ठ वतलाने की प्रथा सी चल पडी थी :—

जसदेवन्ह म नरायन भोगी। तस ग्यानीन्ह म 'गोरष' जोगी॥

६३. क्षेमकरण—ये "श्रीराम गीतमाला" के रचयिता हैं। ग्रथ मे रामचरित्र के अतर्गत वालकाड की कथा वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचना साहित्यिक है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। खोज विवरण (९–४६) मे भी 'कृष्ण-चरितामृत' के रचयिता एक क्षेमकरन आए है, पर प्रमाणाभाव मे नही कहा जा सकता कि वे इनसे भिन्न हैं या अभिन्न।

६४. खेम कवि—इनकी "खेम पच्चीसी" नामक रचना की एक अपूर्ण प्रति का विवरण लिया गया है। रचना मे हनुमान जी की लकायात्रा का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का विशेप वृत्त नही मिलता। अत- नही कहा जा सकता कि खोज विवरण (२३–२०९) (३२–११७) और (४१–४२) पर आए इस नाम के रचयिताओ से इनका कोई साम्य है या नही।

६५. गंग या गंगाराम—इनके "महाभारत" (शल्यपर्व) की एक जीर्णशीर्ण तथा खंडित प्रति मिली है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। विपय नाम से ही स्पष्ट है।

ग्रंथ मे रचयिता का नाम "गग" या "गगाराम" दिए हैं। अन्य परिचय नही मिलता। इस त्रिवर्षी मे "धर्मदास" और "श्रीपति" कृत महाभारत के कुछ पर्वो के विवरण लिए गए हैं, जिनमे गग का भी उल्लेख है। धर्मदास ने पुत्र और श्रीपति ने उन्हें भाई लिखा है। सभवतः उनके ग्रथो मे उल्लिखित गग प्रस्तुत गग ही हों। एक बात का सदेह अवश्य होता है कि गग की कविता के सबध मे जितनी प्रशसा उन लोगो ने की है, प्रस्तुत ग्रथ को देखकर उस सबध मे निराशा सी होती है। हो सकता है कि प्रस्तुत रचना उनकी आरभिक रचनाओं मे मे हो। ग्रथ की लिपि भी इतनी भ्रष्ट है कि ठीक ठीक पढने मे नही आती। श्रीपति का समय सवत् १७१९ दिया है।

अत इस दृष्टि से ये सवत् १७१९ के लगभग वर्तमान थे। खोज विवरण (२०–४१) मे उल्लिखित गग यही जान पडते हैं।

६६. गगकवि—"गोदोहन लीला" के रचयिता इस कवि का कोई परिचय नहीं मिलता। अत नही कहा जा सकता कि पिछले खोज विवरणों मे आए इस नाम के रचयिताओं मे ये भिन्न है या अभिन्न। देखिए खोज विवरण (२०–४१) (१२–५५) (२६–१२६) (२९–१०९) (३२–६२) (९–८४) और (२३–११४)।

ग्रथ मे श्रीकृष्ण की गोदोहन लीला का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

६७. गंगसरन—इनकी "चौर्यलीला" नाम की छोटी सी पुस्तक मिली है। पुस्तक मे श्रीकृष्ण की दधि-माखन-चोरी की लीला वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

६८. गंगागिरि—इनके दो ग्रथ—"ज्ञानकथा रहस्य" और "ज्ञानकथा कर्म निर्णय" मिले हैं। दोनो रचनाओ का विषय ब्रह्म ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल दोनो मे सवत् १९३४ है।

ग्रथो द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। सभवत ये खोज विवरण (६–२१५) मे आए रामरसिक के गुरु गगागिरि है।

६९. गंगादास—इनके "शब्द या वाणी" मिले है जिनमे भक्ति तथा ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचयिता का ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि इनके गुरु कोई काशीराम थे। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कुछ रचयिताओं का उल्लेख है पर प्रमाणाभाव मे नही कहा जा सकता कि उनमे से किसी के साथ इनका कोई साम्य है या नही। देखिए खोज विवरण (९–८५) (२–५६) (६–२५२) (२६–१२७) (३८–४६) (३५–२५)।

७०. गंगादास (जनगंगा)—इनके दो ग्रथो "तिथिप्रबध" और "दोहावली" के विवरण लिए गए है। ग्रथो का विषय क्रमश तिथियो का आध्यात्मिक वर्णन एव ब्रह्म ज्ञानोपदेश है।

रचना और लिपिकाल अज्ञात हैं। सभवत पूर्व रचयिता भी यही हैं।

७१. गंगाराम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ६।

७२. गंजन सिंह कायस्थ—इस रचयिता के "शालिहोत्र प्रकाश" की एक प्रति का विवरण इस बार भी लिया गया है। पिछले खोज विवरण (९–८९) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है।

इसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी विशेष परिचय नही मिलता, परतु उपर्युक्त खोज विवरणो मे इन्हे शिवप्रसाद का पुत्र और सवत् १८४० के लगभग वर्तमान लिखा है।

७३. गजराज—इनकी पिंगल विषय पर लिखी हुई "सुवृहतहार (? सुवृत्तहार) पुस्तक मिली है। पुस्तक का विवरण पहले भी लिया जा चुका है, देखिए खोज विवरण (३–७१)।

रचनाकाल सवत् १६०३ वि० है। लिपिकाल अप्राप्त है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज-विवरण मे इनको बनारसनिवासी बतलाया गया है।

७४. गजेंद्र—खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है। "कोक शास्त्र" नाम से इनकी एक पुस्तक मिली है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का परिचय भी अनुपलब्ध है।

७५. गणराम (ऋषि)—इनकी "सगुनौटी या अकारवल" शकुनविषयक रचना मिली है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १६२० है।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

७६. गिरिधर—शकुन विषय पर लिखी हुई इनकी "शकुनावती' नामक रचना मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही है।

रचयिता का भी परिचय अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

७७. गिरिधरदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३७।

७८. गिरिधर जी—इनकी रची "समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका' मिली है। रचना मे पुष्टिमार्गीय दीक्षा सिद्धातो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता—विद्या विभाग कॉंकरोली के सचालक श्री कठमणि शास्त्री के कथनानुसार—कॉंकरोली मे स्थित वल्लभ सप्रदाय की तृतीय पीठ के सस्थापक श्री बालकृष्ण जी के पौत्र और श्री द्वारकेश्वर जी के पुत्र थे। ये सवत् १६६२ से सवत् १७१६ तक वर्तमान थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

७९. गिरिधर लाल जी—इनकी दो रचनाएँ (१) "श्री द्वारिकानाथ जी के घर की उत्सवमालिका" और (२) "श्री गिरधरलाल जी के वचनामृत" नाम से मिली है। उक्त रचनाएँ साप्रदायिक है, जिनका सबध वल्लभ सप्रदाय के सिद्धात एव सेवा शृगार प्रणाली से है। दूसरे ग्रथ के आरभ मे एक सवत् १६३३ दिया है, अत इसी के लगभग दोनो का रचनाकाल माना जा सकता है। लिपिकाल दिया नही ।

रचयिता कॉंकरोली निवासी थे। इनके पिता का नाम गो० श्री पुरुषोत्तम जी था। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

८०. गो० श्री गिरिधरलाल जी—इन्होंने "सर्वोत्तम स्तोत्र" नामक सस्कृत ग्रथ का हिंदी मे पद्यानुवाद किया है। ग्रथ मे श्री वल्लभाचार्य जी के एक सौ आठ नामो का गुणगान है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के पिता का नाम व्रजभूषण था। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८१. गिरिवरदास—इनका उल्लेख खोज विवरण (२०–२०) (२३–१२८) और (२६–१४२) मे भी है, जिनके अनुसार ये जगजीवनदास (सतनामी पथ के सस्थापक) के पौत्र, कोटवा (बाराबकी) निवासी और सवत् १८४८ के लगभग वर्तमान थे। इस बार इनके कुछ "शब्द" मिले हैं, जिनमे निर्गुण सिद्धातानुसार भक्ति एव ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल अह्लाददास कृत 'ज्ञान चेटक' के आधार पर, जो इस ग्रथ के साथ एक ही हस्तलेख मे है, सवत् १६१६ है।

रचयिता ने प्रस्तुत 'शब्दो' मे भी 'जगजीवनदास' जी का उल्लेख साईं के रूप मे किया है—

८२ गुमानकवि—इनकी "रुक्मिणी मगल" नामक रचना मिली है। जिसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही। प्रति मे रचना का नाम भी नहीं दिया है। विषय को देखने से उपर्युक्त नाम रख दिया है।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो (६–४८) (५–२३) (१२–६८) (४१–४६०) (२३–१४१) (२६–१५७) मे इस नाम के दो रचयिताओं के उल्लेख हैं, पर पता नही उनमे से ये कोई एक हैं या नही।

८३ गुरु गोविंद (?)—इनके नाम पर "प्रह्लादलीला" नाम की रचना मिली है। रचना मे एक स्थान पर 'सम १५५६' लिखा मिलता है, जिसको यदि सवत् १५५६ माने तो रचयिता के समय से मेल नही खाता। अत यह रचना काल नहीं हो सकता। लिपिकाल भी अज्ञात है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। इसमे रचयिता के नाम का कोई निश्चित पता नही चलता। यदि ये गुरु गोविंद हैं तो प्रसिद्ध गुरु गोविंद सिंह ही हैं या उनसे भिन्न, प्रमाणाभाव मे कुछ नही कहा जा सकता।

८४. गुरुदीन कवि (पाडे)—इनके "शालिहोत्र" की दो प्रतियों के विवरण लिए गए है। ग्रथ मे घोडे की उत्पत्ति, उनके गुण-अवगुण और रोगो के उपचारो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी मे नही है।

रचयिता के सबध मे नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

८५. गुलाम मुहम्मद—इस कवि की एक रचना "प्रेमरसाल" नाम से मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। विवरण पत्र मे दिए गए ग्रथ के उद्धरणो मे रचयिता और रचना के नामों के सबध मे कुछ ज्ञात नही होता। पता नही, अन्वेषक ने इन्हें किस आधार पर लिखा है। रचना सभवत प्रेम कथानक शैली की है, पर खडित होने से पता नही चलता कि इसमे कौन सी कथा वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल का भी कोई पता नही चलता।

८६. गोकुल कवि—इस त्रिवर्षी मे इस कवि की "नखशिख" नामक रचना का पता चलता है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण के अग प्रत्यग (नख से शिख तक) का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। इसके अतिरिक्त इनका अन्य कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

८७. गोकुल कायस्थ—पिछली खोज मे इनके चार ग्रथ मिले है, देखिए, खोज विवरण (२३–१२६) (२६–१४३) और (६–६५)। इस बार दो नये ग्रथो—(१) भक्ति प्रभाकर (अद्भुतरामायण) और (२) "शोक विनास" का पता और चला है। प्रथम ग्रथ मे सीता जी द्वारा सहस्रवदन रावण का वध वर्णित है और दूसरे मे आध्यात्मिक विषय का वर्णन है। रचनाकाल दोनो ग्रथो के क्रमश सवत् १६१३ और १६१२ है तथा लिपिकाल सवत् १६३६ और १६३३ है।

रचयिता वलरामपुर (गोंडा) के निवासी थे और वहीं के राजा दिग्विजय सिंह के आश्रय मे रहते थे।

८८. गोकुलनाथ 'गोस्वामी'—ये वल्लभ सप्रदाय के सस्थापक श्री वल्लभाचार्य जी के पौत्र और गोस्वामी श्री विट्ठलनाथ जी के पुत्र थे तथा सवत् १६२५ मे वर्तमान थे। इनके कुछ ग्रथ पहले मिल चुके है, देखिए खोज विवरण (२६–१२२) (३२–६५) (३५–२८)। इस बार निम्नलिखित ग्यारह ग्रथ और मिले है :—

(१) त्रिविध भावना भाषा—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय, पुष्टिमार्ग के अंतर्गत सेवाभावादि का वर्णन।

(२) श्री महाप्रभूजी श्री गुसाईं जी को स्वरूप विचार—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय श्री वल्लभाचार्य जी तथा उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी के स्वरूपो का आध्यात्मिक वर्णन।

(३) श्री आचार्य जी महाप्रभूजी की (प्राकट्य) वार्ता द्वादश कुंज भावना—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय श्री वल्लभाचार्य जी के प्राकट्य सबधी आध्यात्मिक, आधिदैविक रहस्यो तथा भगवल्लीलाओ का वर्णन।

(४) जप को प्रकार—रचनाकला अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९६४ वि०। विषय—वल्लभकुल के भावनानुसार जप तथा पूजा आदि का विधान वर्णन।

(५) चौरासी वैष्णव की वार्ता—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय—श्री वल्लभाचार्य जी के चौरासी सेवको की वार्ता का वर्णन।

(६) चरण चिह्न की भावना—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १९६४ वि०। विषय—श्री राधा जी के चरणचिह्नो का ध्यान तथा उनकी पूजाविधि का वर्णन।

(७) गोवर्द्धननाथ जी की वार्ता प्रागट्य की—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल खडित सभवत १९०४ वि०। विषय—श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रकट होने की कठा का वर्णन।

(८) श्री गुसाईं जी को व्रज चोरासी कोस की वन यात्रा सवत् १६०० की—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८१३ वि०। विषय—व्रज की चौरासी कोस की यात्रा का वर्णन।

(९) वैष्णव लक्षण ग्रंथ—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—सप्रदाय के लोगो द्वारा पालन करने योग्य नियमो एव शिक्षाओ का वर्णन।

(१०) नित्य सेवा शृंगार की भावना—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९५९। विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा प्रकार मे अनुभवादि का वर्णन।

(११) बत्तीसलक्षण—(भगवदीय वैष्णवो के लक्षण)—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवो को पालन करने योग्य बत्तीस लक्षणो का वर्णन।

८९. गोपाल (जन)—इनका "भागवत" ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही है, लिपिकाल सवत् १९०७ है। ग्रथ द्वारा रचयिता का परिचय नही मिलता, पर ये सभवत पिछले खोज विवरण (००–२८) (२३–१९) (६–१७५) (२९–१२४) (प० २२–४४) मे आए दादूदयाल जी के शिष्य गोपाल 'जन' है, जो सवत् १६५७ मे वर्तमान थे

९०. गोपाल (जन)—इनकी रचनाएँ, (१) "विजयाष्टक" और (२) "हनुमदष्टक", एक ही हस्तलेख मे मिली हैं। रचनाकाल किसी भी रचना मे नही है। लिपिकाल दोनो का सवत् १८९५ है। प्रथम पुस्तक मे विजया (भग) का गुणगान और दूसरे मे हनुमान की स्तुति की गई है।

रचयिता का ग्रथो द्वारा कोई परिचय नही मिलता। परतु ग्रथस्वामी से पता चला कि ये विरोही स्टेशन (जिला मिरजापुर मे विध्याचल से एक स्टेशन पश्चिम) से ग्रथस्वामी के बावा प० हरिहर जी के पास आकर रहने लगे थे। उनके कोई न था। हनुमान जीके बडे भक्त थे। एक दिन विना पूजा किए कचहरी चले गए तो हनुमान जी रुष्ट हो गए। इससे उन्हे वात रोग हो गया था।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

९१. गोपालदास (स्वर्णकार)—इन्होने "गोवर्द्धन चरित्र" की रचना की, जिसमे

भागवत पुराण के आधार पर भगवान् श्रीकृष्ण के गोवर्द्धन चरित्र का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल दोनो अज्ञात हैं।

ग्रथ की पुष्पिका के अनुसार रचयिता जाति के स्वर्णकार और किसी गगाविष्णु के शिष्य थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नए मिले हैं।

९२. गोपालदास—ये खोज मे नए मिले हैं। "गुरु हरि भक्ति प्रकाश" और "गुरुभक्ति चद्रिका" नाम से इनके दो ग्रथो के विवरण लिए गए है। पहले मे गुरुभक्ति का वर्णन है और दूसरे मे इन्होंने अपने गुरु गो० श्री ब्रजभूषण (सभवत वल्लभ सप्रदायी) जी का वर्णन किया है। रचना काल और लिपिकाल दोनो के अज्ञात है।

रचयिता का परिचय किसी ग्रथ मे नहीं मिलता।

९३. गोपिकालकार जी (गोस्वामी)—इनकी "श्रीनाथ जी को सेवाविधि" नामक रचना मिली है, जिसमे श्रीनाथद्वारा मे स्थित श्रीनाथ जी की सेवाविधि का वर्णन है। ग्रंथ की पुष्पिका के अनुसार ये रचयिता श्री वल्लभाचार्य के वश मे उत्पन्न श्री मथुरानाथ जी के पौत्र और श्री द्वारकेश जी के पुत्र थे। इनके एक पुरखे श्री वल्लभ जी भी थे जो 'काका वल्लभ' जी के नाम से प्रसिद्ध हुए —

"श्री वल्लभाचार्य के वश मे प्रगट भए काका श्री वल्लभ जी तिनके मुख्य वस मे प्रकट भए श्री मथुरानाथ जी सुत श्री द्वारिकेस जी महासय सुत श्री गोपिकालकार जी ने कृत शुभमस्तु"

अन्य परिचय नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ ब्रजभाषा गद्य मे है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

९४. गोविंद या गोविंददास—इस त्रिवर्षी मे इनके भक्तिविषयक कुछ 'कवित्त' मिले हैं। कवित्तो की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नही हैं। रचयिता के सबध मे भी कुछ ज्ञात नही होता। परतु ग्रथस्वामी (श्री नृसिंह नारायण शक्ल, ग्राम—मीर जहाँपुर, पो०—सिडारा, जिला—इलाहाबाद) के कथनानुसार रचयिता उन्ही के पूर्वजो मे से कोई एक थे। खोज मे रचयिता का पता प्रथम वार लगा है।

९५. गोविंद—इन्होने चार रचनाओ—(१) गोवर्द्धन लीला, (२) उत्सव के प्रकार, (३) वैष्णवो के नित्यकर्म और (४) गोवर्धन लीला का सग्रह किया है। उक्त रचनाएँ सूरदास आदि की रची हुई है, जिनमे प्राय वल्लभ सप्रदायानुसार भक्ति, उत्सवो के प्रकार तथा नियमो का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता। रचयिता का भी वृत्त उपलब्ध नही।

प्रस्तुत रचनाएँ गद्य-पद्य दोनो मे हैं। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

९६. गोविंददास—इनके कुछ शब्द या पद "शब्द विष्णुपद" नाम से मिले हैं। शब्दो मे भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। सभवत ये (३२—६६) वाले गोविंद-दास है। उनकी रचनाशैली भी इन्ही जैसी है। दोनो 'सतगुरु' का उल्लेख करते हैं, यथा :—

'सतगुरु' दास आस चरनन्ह की मरन जीवन दोउ शुभा॥२॥
—प्रस्तुत रचयिता

गोविंददासु दया 'सतगुरु' की आपु आपु सों देखी॥
—पिछले रचयिता

९७. गोविंद पंडित (काश्मीरी)—ये "मुमोक्षशास्त्र" के रचयिता है, जिनमे मोक्ष विषयक बातो का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल नही है, लिपिकाल संवत् १८८८ दिया है। सभवत. यह मूल प्रति है।

रचयिता के सबध मे केवल इतना ही पता चलता है कि ये काश्मीरी थे। खोज मे ये नये मिले हैं।

९८. गोविंद स्वामी (अष्टछाप)—ये सुप्रसिद्ध अष्टछाप के कवि हैं। पिछली बार इनके 'पद' मिल चुके हैं। देखिए खोज विवरण (४१–६०) (३२–६७)। इस बार भी 'पदो' की दो प्रतियाँ तथा "कीर्तन सग्रह" और "श्रीनाथ जी के शृगार के वस्त्रन के नोरग" नामक रचनाएँ और मिली हैं। पिछली दो रचनाएँ इनके 'पदो' के फुटकर सग्रह मात्र हैं। विषय सब रचनाओ का कृष्णभक्ति है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल पिछली दो ग्रथो की प्रतियो मे दिए है, जो क्रमश सवत् १८९३ और सवत् १९३५ है।

रचयिता के विषय मे नयी बात कुछ नही मिली।

९९. गोविंदलाल—इनके "कलिजुग के कवित्त" पहले मिल चुके हैं, देखिए खोज विवरण (२९–१२६)। इस बार भी उक्त ग्रथ को एक प्रति मिली है, पर उसमे न तो रचनाकाल का उल्लेख पाया जाता है और न लिपिकाल का ही।

रचयिता के सबध मे भी कुछ पता नही चला। इनके रचयिता होने मे भी सदेह है।

१००. गोरखनाथ—इस त्रिवर्षी मे इनके नाम पर निम्नलिखित ग्रथ और मिले हैं —

(१) वेद गोरखनाथ का—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८५६ वि०, विषय, तत्व ज्ञानोपदेश।

(२) गोरख ग्रंथ—ग्रथात मे हाशिए पर १४१३ लिखा है जिसको सवत् अनुमित किया गया है। लिपिकाल दिया नही, विषय, ज्ञानोपदेश।

(३) गोरखबोध—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८५६ है। विषय, तत्वज्ञानोपदेश।

(४) गोरख कुंडली—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १८५५। विषय, योग।

(५) सूक्ष्मवेद—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८३७। विषय, ब्रह्मज्ञानोपदेश।

रचयिता के सबध मे विशेष कुछ ज्ञात नही हुआ।

१०१. घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)—रचयिता का विवेचम भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १०।

१०२. घनश्याम (चतुर्भुज मिश्रात्मज)—इन्होने सवत् १७०० मे "रागमाला" की रचना की। ग्रथ की एक प्रति का इस बार विवरण लिया गया है। इसमे हनुमत सगीतशास्त्र के अनुसार सगीत का वर्णन है। विषय की दृष्टि से ग्रथ उपादेय है। लिपिकाल का कुछ पता नही।

ग्रथ के अनुसार रचयिता आगरा के राजघाट स्थान पर रहते थे। पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र और गुरु का नाम शिरोमनि मिश्र था। आश्रयदाता कोई कासिम थे —

"प्रथम सरसुती देवी गणेश मनाई के। मिश्र शिरोमनि जानि सुबुध गुरु पाइके।।
कासिम जानि सुजान कृपा कवि पर करी। 'रागमाला' भाषा करिबे को चित धरी।।
स्यामु आगरे नगर को राजघाट हे ठोर। पुत्र चतुरभुज मिश्र घट वापिनि की पोरि।।
संवत् सवह सं बरस तापर बीतें होइ। फागुन सुदि तिथि त्रोदसी सुनहु जुगुन जन लोइ।।"

खोज मे नए मिले है।

१०३. घनश्याम 'द्विज'—इन्होने "वैद्य जीवन" नाम से सस्कृत के सुप्रसिद्ध वैद्यक ग्रथ "लोलबराज" का अनुवाद किया है। ग्रथ का रचनाकाल सवत् १९१४ है और लिपिकाल सवत् १९१७।

रचयिता का स्थान आजमगढ मे गौरीशकर के निकट था। ये रामानुजी सम्प्रदाय के अनुयायी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१०४. घनश्याम या स्यामदास—इनकी "प्रह्लाद लीला" मिली है। ग्रंथ का रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८०२ दिया है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। इनका पता प्रथम बार लगा है।

१०५. घनश्यामदास—"यमुना लहरी" नाम की छोटी सी रचना इनके नाम से मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का भी कोई विशेष परिचय नही मिलता। अतिम पद मे ये गोवर्धन (ब्रज) के रहनेवाले विदित होते हैं। अन्वेषक ने पता नही किस आधार पर इनको भरतपुरवासी लिखा है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१०६. चंद (गुसाई)—इनकी "अरिल्ल" नामक रचना प्राप्त हुई है, जिसमे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है। पिछले खोज विवरण (६–१६) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख हो चुका है। उसके अनुसार ये बुदेलखड के निवासी थे। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे न तो रचयिता का कोई परिचय दिया है और न रचनाकाल का ही उल्लेख है। लिपिकाल सवत् १८१८ है।

१०७. चंद परतिष—इस त्रिवर्षी मे इस रचयिता की "वूढा रासो" नामक डिंगल भाषा की रचना मिली है, जिसकी एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचना मे वृद्ध विवाह के दोष वर्णन किए गए है।

रचनाकाल सवत् १८३२ और लिपिकाल सवत् १६१४ है। रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१०८. चक्रपाणि—ये "भाषा लीलावती" के रचयिता हैं। पुस्तक मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। यह सस्कृत लीलावती का अनुवाद है। विवरण मे दिए गए उद्धरणो से रचयिता के नाम का पता नही चलता, पर अन्वेपक का कहना है कि पुस्तक मे 'चक्रपाणि' का नाम कही कही आता है।

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१०९. चतुरराय—इनकी "गढपथैना रासो" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे भरतपुर के अतर्गत 'गढ पथैना' पर अली सहादत खाँ के आक्रमण का वर्णन है। विवरण पत्र मे दिए गए उद्धरणो द्वारा रचयिता के नाम का पता नही लगता। उनका अन्य वृत्त भी अप्राप्त है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है।

प्रस्तुत ग्रथ ऐतिहासिक महत्व रखता है, पर यह खडित है। इसके आरभ के सख्या चालीस और अत के सख्या सैंतालीस के पश्चात् के पत्ते नष्ट हो गए है। रचयिता का पता पहली बार लगा है।

११०. चतुर्भुजदास कायस्थ—चतुर्भुजदास कायस्थ कृत "मधुमालतीकथा" की एक प्रति इस बार भी प्राप्त हुई है। रचना मे मधु और मालती की प्रेम-कथा (भारतीय पद्धति पर) वर्णित है। पिछले खोज विवरण (२–४४) (प० २२–१६) मे इसका उल्लेख है।

ग्रथ पूर्ण होते हुए भी इसके द्वारा रचयिता का कोई परिचय नही मिलता और न इसमे रचनाकाल का ही उल्लेख है। लिपिकाल सवत् १८८४ वि० है। उक्त खोज विवरणो के अनुसार रचयिता निगम जाति के कायस्थ थे और सभवत राजस्थान की ओर के रहनेवाले थे।

१११. चतुर्भुज मिश्र—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ८।

११२. चतुर्भुजदास (अष्टछाप)—इनकी नवीन रचना, "मृग कपोत की लीला" नाम से मिली है, जिसमे एक मृग और एक कपोत की कथा वर्णित है। मृग को एक व्याघ्र ने घेर-कर मारना चाहा, परतु कपोत के उपदेश से एव हरिनाम स्मरण करने से मृग वच गया और व्याध सर्प के काटने से मर गया।

रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८८८ वि० है।

रचयिता के "कीर्त्तनो" की दो खडित प्रतियो के भी विवरण लिए गए हैं, जिनका उल्लेख खोज विवरण (३२–४०) मे हो चुका है। 'मृग कपोत की लीला' मे रचयिता ने श्री वल्लभ के गुण गाए है। अत इसी आधार पर इन्हें वल्लभसप्रदायानुयायी सुप्रसिद्ध 'अष्टछाप' कवि माना गया है। अन्य वृत्त अप्राप्त है।

११३. चरपटनाथ—इनकी दो रचनाओ—'चरपटिका पत्रिका' और "सवदी"—के विवरण लिए गए हैं। प्रथम रचना का विपय वैद्यक है, जिसमे राजरोग और अठारह कुष्ठो के उपचारो का वर्णन है। इसमे रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल ग्रथस्वामी के कथनानुसार सवत् १९३२ है, क्योकि उन्होने ही ग्रथ की प्रतिलिपि की है। रचना पर कई स्थलो पर गोरखनाथ का भी नाम आता है।

दूसरी रचना का विपय ज्ञानोपदेश, समाज सुधार और धर्म सुधार है। इसमे पाखडी तथा धूर्त जोगियो, सन्यासियो, ज्ञानियो और गृहस्थो को फटकारा गया है। इसकी भापा प्राचीन है। अत इस दृष्टि से यह महत्व की है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के सवध मे इन रचनाओ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये गोरखनाथ के समकालीन अथवा उनके शिष्य थे—

"आई भी छोडिये लेन भि जाइये कहे गोरखनाथ पूता विचारि विचारि षाईये ॥४६॥ (सवदी) जनश्रुति से भी प्रसिद्ध है कि ये गोरखनाथ के शिष्य थे। अन्य कोई परिचय नही मिलता। इनका उल्लेख खोज विवरण (४१–५९) मे भी है।

'सवदियो' से प्रकट होता है कि रचयिता के समय मे धर्म के नाम पर समाज मे अनेक तरह के अनाचार और दुराचार फैल रहे थे। यदि यह कहा जाय कि आर्य जाति का उस समय तक बहुत ही पतन हो गया था तो अत्युक्ति न होगी। नामधारी जोगियो और सन्यासियो ने तो अधेर मचा रखा था। क्रियाहीन ज्ञानियो, दुराचारी गृहस्थो और कुलटा स्त्रियो ने भी उनका साथ दिया। गोरखनाथ और उनके अनुयायियो ने इस अनैतिकता को दूर करने का घोर प्रयत्न किया।

११४. चूडामणि—इनकी "नागलीला" नामक रचना की एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचना का विपय उसके नाम से ही स्पप्ट है। रचनाकाल अप्राप्त है, लिपिकाल संवत् १८९० वि० है। ग्रथ पूर्ण है, फिर भी रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरण (५–७०) मे उल्लिखित चूडामणि से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कहा नही जा सकता।

११५. छबिनाथ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे संख्या ९।

११६. छितिपाल—खोज मे इस रचयिता का पता प्रथम वार लगा है। 'नखशिख' नाम की इनकी एक प्रौढ साहित्यिक कृति मिली है जिसके द्वारा इनकी प्रतिभा का अच्छा परिचय मिलता है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता।

११७. छंल—इनकी "कवित्त" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है, जिसमे

केवल दो ही छंद हैं। उक्त छदो मे राजाराम कायस्थ और फतेह मुहमद के यश का वर्णन किया गया है। शेख मुहमद द्वारा सिगडीगढ जीतने का भी उल्लेख है। रचयिता सभवत जौनपुर के रहनेवाले थे —

"करन करतूति रीति प्रीति धर्म द्वार जाके जौरपुर माह छंल छह्व रितु देखियं॥"

शेख मुहमद और सिगडीगढ़ के सबध मे और कुछ ज्ञात नही होता। रचयिता का परिचय अप्राप्त है। रचना के साथ काल लिपिकाल भी अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

११८. जगजीवनदास—इनके दो ग्रथो—"महाप्रलय और ज्ञानप्रकाश" के विवरण लिए गए हैं। दोनो ग्रथो मे सतमतानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल दोनो प्रतियो का सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता का उल्लेख खोज विवरण (२९–१६३ क्यू, आर) मे भी हो चुका है। ये सतनामी सप्रदाय के सस्थापक प्रसिद्ध जगजीवनदास है। इनके सबध मे और कोई नई बात ज्ञात नही हुई।

११९. जगतानद—इस त्रिवर्षी मे इनके तीन ग्रथ—(१) "उपखाने (उपाख्यान) सहित दशम की लीला, (२) दोहासाखी और (३) श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली तथा स्वरूप वर्णन मिलते हैं। ग्रथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है —

(१) उपखाने (उपाख्यान) सहित दशम की लीला—इसमे श्रीमद्भागवत दशम स्कध का सक्षिप्त वर्णन है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात। परतु इसका उल्लेख खोज विवरण (१७–८० बी) मे है, जिसके अनुसार रचनाकाल सवत् १७३१ वि० है।

(२) दोहा साखी—इसमे वल्लभाचार्य का गुणगान किया गया है और उनके प्रति भक्ति प्रदर्शित की गई है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १९१४ वि० है।

(३) वल्लभाचार्य की वंशावली तथा स्वरूपवर्णन—इसमे श्री वल्लभाचार्य की वशावली वर्णित है। रचनकाल सवत् १७८१ वि० है, लिपिकाल दिया नही।

इन ग्रथो के द्वारा रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि वे वल्लभ सप्रदाय के थे।

१२०. जगदीश 'जन'—इनकी "इकादसि कथा" नामक रचना की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे एकादशी व्रत का माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८४६ वि० दिया है। रचयिता का कोई परिचय नही मिलता।

खोज विवरण (१२–७८) मे आए 'जगत रस रजन' के रचयिता जगदीश से ये भिन्न जान पडते है। अत खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१२१. जगदीश—इनकी "जगतरसरजन" नामक रचना मिली है, जिसमे नायिका-भेद और रसादि का वर्णन है। रचनाकाल १८६२ वि० है, लिपिकाल दिया नही। रचयिता जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह के आश्रित और श्रीकृष्ण भट्ट उपनाम 'कलानिधि' के पुत्र थे। खोज विवरण (१२–७८) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख हो चुका है। अन्य परिचय अप्राप्त है।

१२२. जगनकवि—ये "जगन बत्तीसी" नामक रचना के रचयिता है। खोज मे इनका पता पहली बार लगा है। पुस्तक मे बत्तीस छदो मे राम-कथा का वर्णन है। रचनाकाल लिपि-काल अज्ञात हैं। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। सभवत इनके गुरु का नाम छल था—

"एकचित ह्वै कै गुर छल को प्रनाम करूँ
जाके गुन ऐसे जैसे गुनदधि छोर के॥"

१२३. **जगन्नाथ**—इनके रचे "सुदरकाड" नामक ग्रथ की खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे राम-कथा वर्णित है। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय अप्राप्त है। खोज विवरण (२६–१६४ ए) (२६–१६४ ए) (६।–१३१) मे आए 'जन जगन्नाथ', 'जगन्नाथ दास' या 'जन अनाथ' से ये भिन्न हैं या अभिन्न, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

१२४. **जटमल नाहर**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३८।

१२५. **जयशकर (सहस्र अवदीच)**—इस त्रिवर्षी मे "व्यजनप्रकार" (पहला भाग) नामक रचना की एक छपी प्रति का विवरण लिया गया है। पुस्तक मे पाक विद्या का वर्णन है।

मुद्रणकाल सवत् १६२५ वि० है। अत रचना इसी के लगभग हुई होगी। रचयिता आगरा निवासी थे। प० वशीधर (खोज विवरण २६–२६) की प्रेरणा और प्रातीय गवर्नर की आज्ञा तथा एम० केमसन साहब, डाइरेक्टर ऑव पब्लिक इस्ट्रक्शन की इच्छा से इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की।

अन्य परिचय अप्राप्त हैं। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा है।

१२६. **जान कवि**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १०।

१२७. **मिरजा मुहंमद जान**—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। अत देखिए, भूमिका भाग सख्या मे ११।

१२८. **जानकीदास**—इनकी "शत्रुवश कुठार" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। रचना मे दुर्गा और हनुमान् की स्तुति की गई है।

रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् २६०८ वि० है। रचयिता का वृत्त अप्राप्त है। ग्रथ स्वामी के कथनानुसार ये "वरौंसा ग्राम" (सुलतानपुर) के रहनेवाले ब्राह्मण थे, जो वाद को साधु हो गए। य अठारहवी सदी मे वर्तमान थे।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१२६. **जीराम**—इस त्रिवर्षी मे इनके सीता स्वयवर विपयक कुछ पद "पदस्वयवर" के नाम से मिले है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। प्रस्तुत पद ख्याल और लावनी की शैली पर रचे गए हैं। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१३०. **जीवनदास**—इनकी "नारायण लीला" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचना मे नारायण के समस्त अवतारो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का भी वृत्त अनुपलब्ध है।

एक जीवनदास (गाजीपुर निवासी) का उल्लेख खोज विवरण '(६–१०५) मे हर-सहाय के गुरु के रूप मे हुआ है। परतु उनसे इनका कोई साम्य नही जान पडता। अत खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१३१. **जीवनराम**—इनकी "ज्ञानचद्रिका" की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे नासकेत कथा का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता। रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१३२. **जुगतानंद**—जुगतानद कृत "आठ प्रहर मूलचेत प्रसग" नामक अपूर्ण ग्रथ मिला है। ग्रथ मे आठ प्रहरो के कृत्यो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चला। रचयिता के सवंध मे इतना ही ज्ञात होता है कि ये स्वामी चरणदास के शिष्य थे।

पिछले खोज विवरण (४१—८३ क, ख) में इनका उल्लेख हो चुका है, उसके अनुसार ये संवत् १८२४ में वर्तमान थे।

१३३. जैकृष्णदास—इनकी "ढाढियादान" नामक रचना का विवरण लिया गया है। रचना में ढाढी द्वारा श्रीकृष्ण जन्म महोत्सव का उत्तम वर्णन है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के संबंध में भी नाम के अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नहीं होता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

१३४. झामदास—इस त्रिवर्षी में इनके "रामचरित समार्णव" नामक ग्रंथ की दो खंडित प्रतियों और "ज्वराकुश" की तीन खंडित प्रतियों के विवरण लिए गए हैं।

(१) रामार्णव—इसकी एक प्रति में द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचम अर्णव हैं। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। दूसरी प्रति में बाल और सुंदर कांड हैं। रचनाकाल संवत् १८१८ वि० है और लिपिकाल संवत् १८६५ वि०। इस प्रकार लंका और उत्तरकांड को छोड़कर अन्य सभी कांड इन दो प्रतियों में आ गए हैं।

(२) ज्वराकुश—इसमें हनुमान् जी की स्तुति की गई है। खंडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता।

रामार्णव की रचना विंध्याचल घाट (मिर्जापुर) में हुई थी। रचयिता साधु थे। अन्य परिचय नहीं मिलता। पिछले खोज विवरणों (१—२१) (२०—७२) (२३—१९०) (२६—२०८ ए, बी) में भी इनका उल्लेख हुआ है, जिनमें इनके 'पिंगल रामायण' और प्रस्तुत 'रामायण' को एक ही माना गया है, पर यह भूल है। ये ग्रंथ अलग अलग हैं।

१३५ टोडरमल कायस्थ—टोडरमल की "दंपति प्रत्युत्तर" नाम से छोटी सी पुस्तक मिली है। पुस्तक में स्त्री और पुरुष के प्रश्नोत्तर द्वारा भारतवर्ष के समस्त भागों में उत्पन्न होनेवाली वस्तुओं का वर्णन है।

रचनाकाल संवत् १८६७ वि० है, लिपिकाल दिया नहीं। रचयिता जाति के कायस्थ और जयपुर राज्य के अंतर्गत सुवसुवा के रहनेवाले थे। उस समय जयपुरनरेश जगत सिंह थे—

"टोडरमल कायथ प्रगट बसतु सुवसुवा बास॥
जगतसिंह जैपुर नृपति राज सुखद परकास॥"

खोज विवरण (००—१३४) (२६—४८२) (२३—४२६ ए, बी, सी) में भी एक टोडरमल का उल्लेख है पर उनसे इनका कोई साम्य है कि नहीं, कहा नहीं जा सकता।

१३६. डूंगरसी साधु—इनकी "लालदास की कथा" नामक ग्रंथ की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। कथा का संक्षेप इस प्रकार है—

लालदास का जन्म संवत् १५५७ (? पदरह से सतावणे) में हुआ था। पिता का नाम चाँदमल और माता का नाम समदा था। अलवर रियासत के धोलीदूव गाँव के निवासी थे। जन्म से ही अलौकिक गुण संपन्न थे और इनकी कृपा से कितने ही पापियों का तरणतारण हुआ। इनकी शिष्य परंपरा इस प्रकार है—

लालदास
वेगादास
मारूदास
निहालदास
हीरादास
ठाकरदास
ज्ञानदास
मलूकदास



(सं० १६५५ में इन्ही के कहने से प्रस्तुत प्रति लिखी गई।)

रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६५५ है। प्रस्तुत ग्रथ से रचयिता का इतना ही पता चलता है कि ये पुरपट्टन क रहनेवाले थे। नाम के साथ 'साधु' शब्द जुडने से ये विरक्त थे, ऐसा प्रतीत होता है।

सभवत रसिकलाल कृत 'भापा करुणानद' के लिपिकर्ता यही हैं, देखिए प्रस्तुत विवरण मे सख्या (३३०)। उक्त ग्रथ की प्रतिलिपि सवत् १८१७ मे हुई थी, अत इसी के लगभग इनका वर्तमान होना निश्चित होता है।

१३७. तामसन साहव—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १२।

१३८. ताराचद, चेतनचंद या चेतनिचद—इस वार इनकी "शालिहोत्र" की दो प्रतियाँ और मिली है। पहले इस ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (६–४६, २३–७७ ए, बी, २६–७०, ३२–२१४ ए) मे हो चुका है। इसका दूसरा नाम "अश्वविनोद" भी है। इसकी प्रस्तुत प्रतियो मे जो रचनाकाल है, वह उक्त विवरणो मे आई प्रतियो मे उल्लिखित रचनाकाल से नही मिलता। इसीलिए इनका उल्लेख प्रस्तुत विवरण मे पुन किया जा रहा है। इन प्रतियो मे रचनाकाल सवत् १६१६ दिया है —

"संवत् सोरह सैए आधीका चारी चौगुनो जान।
ग्रंथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान॥६३॥"
(प्रथम प्रति)

संवत पोन सै अधीक चारी चौगुनी जान।
ग्रंथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान"॥
(दूसरी प्रति)

दूसरी प्रति मे 'सोरह' वाची शब्द नही। शेप प्रथम प्रति के तुल्य ही है। अत दोनो के अनुसार रचनाकाल सवत् १६१६ होने मे कोई तात्त्विक अतर नही पडता। पिछली प्रतियो का रचनाकाल खोज विवरण (२३–७७) के अनुसार सवत् १६२८ निश्चित किया गया है —

संवत् सोरह सौ अधिक वार चौगुने आन। ग्रथ कह्यौ कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान॥
मास फाल्गुन शुक्ल पक्ष द्वितीया शुभ तिथि नाम। चेतनचंद भाषियत गुरु को कियो प्रनाम॥"

यहाँ 'वार चौगुने' का तात्पर्य स्पप्ट २८ है। 'वार' और 'चार' शब्दो ने किस प्रकार अतर उपस्थित कर दिया है, ध्यान देने योग्य है। प्राचीन काल की गणनाओ मे सामान्यत इसी प्रकार की कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाया करती हैं। अस्तु। सवत् १६२८ वाली प्रति मे मास और तिथि के साथ यदि वार भी दिया गया होता तो गणना से सवत् निकाला जा सकता था, परतु ऐसा नही किया गया। अत इस सवध मे कुछ अधिक नही कहा जा सकता। फिर भी प्रस्तुत प्रतियो का रचनाकाल विचारणीय है। इनमे से किसी मे भी 'वार' शब्द प्रयुक्त नही हुआ है। वार शब्द प्रयुक्त करने वाली केवल पिछली एक प्रति है। दो प्रतियो मे जो इस वार मिली हैं 'वार' के स्थान पर 'चार' है जो ठीक जान पडता है। अतएव रचनाकाल सं० १६१६ होने की सभावना अधिक है। लिपिकाल दूसरी प्रति मे दिया है जो सवत् १६३० है।

रचयिता कान्यकुब्ज ब्राह्मण और गोपीनाथ के पुत्र थे। इद्रजीत, लक्ष्मण (प्रथम प्रति मे सिधिमन) और जदुराई इनके भाई कहे गए हैं। राजा शुभकरन के पुत्र कुशल सिंह (कुशलेश) के ये आश्रित थे।

१३९. ताराचंद—इनकी "तत्व उपदेश या पोथी ज्ञान गोप्ठी" नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे तत्त्वज्ञान का उपदेश वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपि-

काल सवत् १८१२ वि० दिया है। रचयिता जाति के कायस्थ, पितवर के पुत्र और रामचंद्र के शिष्य थे। इनका जन्मवास वराहिम नगर था और मूल ग्राम भोजपुर। सभवत वराहिम-नगर मे उस समय खेडवाल शासन था —

"पिता पितवर नाम षेडवाल शासन कहै।
जन्म वास ता धाम नगर वराहिम महम ढिग॥
ते पूरन जोगेश रामचंद शत गुरु गए।
:o: :o: :o:
श्रीवासतव सोइ काएथ दुसरी पंक्ति के।
साल होत्र पद होइ मूलग्राम · सोई भोजपुर॥"

खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१४०. ताहिर—इनके दो ग्रथ—"अद्‌भुत विलास" और "मुक्ति विलास (हठ प्रदीपिका)" मिले है, जिनका विषय क्रमश वशीकरण और हठयोग है। रचनाकाल केवल प्रथम ग्रथ मे १६५५ सवत् का अत समय उल्लिखित है —

"सवत् सोले सौ गने॥ और पचपन मे राष॥
अतकाल गिनि लीजिये॥ वेद भेद सब भाष॥"

लिपिकाल किसी मे नही है। रचयिता के गुरु का नाम अहमद था। अन्य वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरण (६–३१६) (३२–२) मे उल्लिखित ताहिर यही हैं। इन विवरणों के अनुसार ये आगरे के निवासी थे।

१४१. गो० तुलसीदास—इस वार इनकी "रामायण" की पाँच प्रतियाँ मिली है। इनके अतिरिक्त "तुलसी सतसई या राम सतसई" और "सर्वांग परिमोचन" ग्रथो के भी विवरण लिए गए है।

"रामायण" की प्रतियाँ प्राचीन है, "तुलसी सतसई" मे रचनाकाल संवत् १५४२ दिया है और "सर्वांग परिमोचन" नई रचना है। अत इन दृष्टियो से ये महत्व की है। रामायण की प्रतियो मे लिपिकाल निम्नलिखित प्रकार से है —

(१)	रामायण (बालकाड)	लिपिकाल सवत्	१७४६ वि०।
(२)	,, (अयोध्याकाड)	,, ,,	१७७७ वि०।
(३)	,,	,, ,,	१७५२ वि०।
(४)	,,	,, ,,	१७७७ वि०।
(५)	,,	,, ,,	१७८३ वि०।

"तुलसी सतसई" मे रचनाकाल इस प्रकार है —

२ ४ ५ १
"अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिन गुरुवार।
माधव सित सिय जन्म तिथि सतसैया अवतार॥"

इससे सवत् १५४२ आता है, जो रचयिता के जीवनकाल से मेल नही खाता। ऐसा जान पड़ता है कि दोहे मे "रस" के बदले लिपिकर्त्ता के हस्तदोष से 'सर' हो गया। 'रस' मानने से रचना काल सवत् १६४२ होता है जो सगतिपूर्ण है।

सर्वांग परिमोचन—इसका पता प्रथम बार ही लगा है। पिछले किसी खोज विवरण मे भी इसका उल्लेख नही मिलता। इसमे समस्त शरीर के रोग निवारणार्थ हनुमान जी की स्तुति की गई है। रचनाकाल अविदित है। लिपिकाल संवत् १८७४ वि० दिया है। रचयिता के सबध में और विशेष विवरण नही मिलता।

१४२. **तुलसीदास**—इस बार इनके दो ग्रथो—"बानी" और "वृहस्पति काड या रत्नसागर ज्योतिष" के विवरण फिर से लिए गए हैं। प्रथम ग्रथ का विषय निरगुन मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश है। दूसरे का सवध ज्योतिष से है, जिसमे वृहस्पति की द्वादश राशियो का फलाफल वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी मे नही दिया है। ग्रथो का उल्लेख क्रमानुसार खोज विवरण (९–३२३ आई) और (३–३०) मे हो चुका है।

रचयिता के सवध मे इतना ही पता चलता है कि ये सुप्रसिद्ध महाकवि गोस्वामी तुलसीदास जी से भिन्न निरगुन मतानुयायी कोई सत थे।

१४३. **तुलसीदास**—प्रस्तुत रचयिता के नाम पर निम्नलिखित तीन ग्रथो के विवरण लिए गए हैं —

(१) **ज्ञानबारामासा**—इसकी दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

(२) **रामजन्म**—इसमे रामचद्र जी के जन्म और विवाह तक की कथा का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९२७ वि० दिया है।

(३) **भरतविलाप**—इसमे भरत का विलाप तथा चित्रकूट मे राम से उनकी भेंट का सरस वर्णन है। इसकी तीन प्रतियाँ उपलब्ध हुई हैं। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख किसी मे नही। यह रचना विवादग्रंस्त है। इसमे तथा ईसरदास या ईश्वरदास कृत 'भरत विलाप' मे, जिसका उल्लेख प्रस्तुत विवरण मे इससे पूर्व सख्या (२०) पर हो चुका है, साम्य है। प्रस्तुत तीनो रचनाएँ रामचरित्र से सबधित होने के कारण एक ही रचयिता की मानी गई हैं, जो पिछले खोज विवरण मे आए इस नाम के रचयिताओ से भिन्न हैं। इनका वृत्त उपलब्ध नही है।

१४४. **तेज कवि**—इनकी कवित्त सवैयो मे रची गई "भ्रमर गीत" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे गोपी-उद्धव सवाद वर्णित है। इसमे जहाँ तहाँ कहावतो के भी प्रयोग हैं। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचना के नाम का उल्लेख नही है। विषय के अनुसार नाम रख दिया गया है। रचयिता का भी कोई वृत्त नही मिलता।

खोज विवरण (४१–९२) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है। उक्त खोज विवरण की प्रति और प्रस्तुत प्रति एक ही है तथा एक ही स्थान की है।

१४५. **त्रिलोक सिंह**—'राजनीति के दोहा' नाम से इनका ग्रथ मिला है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। पुस्तक की प्रस्तुत प्रति मे समस्त एक सौ सोलह (११६) दोहे है।

पिछले खोज विवरण (४१–९३) मे "राजनीति चद्रिका" के साथ इनका उल्लेख हो चुका है। 'राजनीति चद्रिका' और 'राजनीति के दोहे' दोनो एक ही ग्रथ हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। 'राजनीति चद्रिका' मे विषय से सबधित २०२ दोहे है। इनके अतिरिक्त दो दोहे और एक छद और दिए है जिनसे ग्रथ का उपसहार किया गया है।

रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता।

१४६. **थेघनाथ या थेघू**—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या १३।

१४७. **दक्षसखी**—"अष्टकाल की लीला" नाम से इनकी रचना मिली है। ये गौडीय सप्रदाय के वैष्णव थे, जिसमे चैतन्य महाप्रभु हुए हैं। इसके अतिरिक्त इनका और वृत्त नही मिलता।

ग्रथ मे राधाकृष्ण की अष्ट प्रहर की लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८३६ है। लिपिकाल दिया नही। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१४८. दत्तकवि—"सूरजमल की कृपाण" नाम से इनकी खंडित पूर्ण रचना का विवरण लिया गया है। रचना द्वारा इनका इतना ही पता चलता है कि ये भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह, राज्यकाल सवत् १७१२–१७२० वि०) के आश्रित थे। अन्य वृत्त नही मिलता। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

१४९. दयाराम भाई—इनके निम्नलिखित पाँच ग्रथो के विवरण लिए गए हैं :—

(१) कृष्णनामचद्रिका—रचनाकाल सवत् १८७० के लगभग। लिपिकाल अज्ञात। विषय—नाम माहात्म्य वर्णन।

(२) दयाराम सतसई—रचनाकाल सवत् १८७२ तथा लिपिकाल सवत् १८९५ वि०। विषय—भक्ति, नीति तथा ज्ञानोपदेश।

(३) श्रीमद्भागवतानुक्रमणिका—रचनाकाल सवत् १८७० के लगभग। लिपिकाल अज्ञात। विषय—भागवत की अनुक्रमणिका श्री वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातानुसार वर्णन की गई है।

(४) श्रीकृष्ण अनन्य चद्रिका—रचनाकाल सवत् १८७०। लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री वल्लभ सप्रदाय के अनुसार भगवान् की सेवा पद्धति का वर्णन।

(५) वस्तुवृदनामदीपिका—रचनाकाल सवत् १८७४ वि० और लिपिकाल सवत् १८९५ वि०। विषय—कोश।

तीसरे और चौथे ग्रथ के अनुसार रचयिता गुर्जरदेश (गुजरात) के अतर्गत नर्मदा तट पर बसे चडी ग्राम (अब चाणोद) के निवासी, नागर ब्राह्मण और श्री वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे।

खोज मे ये नए मिले हैं।

१५०. दयालदास (? संभवत लछीदास)—ये 'सुखसागर पुराण' के रचयिता है। ग्रथ द्वारा इनका कोई वृत्त नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ मे इन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान का वर्णन किया है, जो इनके तथा इनके शिष्य लछीदास के कथोपकथन के रूप मे है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के नाम मे भूल दिखाई देती है। सभवत लछीदास रचयिता है।

इनका पता खोज मे प्रथम बार लगा है।

१५१. दरियासाहब—इनकी "शब्दलीला" और "साखी" ग्रथ मिले है, जिनमे सत-परपरा के अनुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल का उल्लेख किसी भी ग्रथ मे नही है। लिपिकाल केवल साखी मे सवत् १९३८ वि० दिया है।

'साखी' का उल्लेख खोज विवरण (९–५५ एल) मे भी हो चुका है।

प्रस्तुत ग्रथो से रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। परतु उपर्युक्त खोज विवरण और (१७–४३) मे इनका अन्य ग्रथो के साथ भी उल्लेख हुआ है, जिनके अनुसार ये एक महात्मा थे, अपने को कबीर का अवतार बतलाते थे, धार कथी मे निवास करते थे और सं० १८३३ वि० मे मृत्यु को प्राप्त हुए थे।

१५२. दलजीत—इनकी "सुदामाचरित्र" नामक रचना की एक खंडित प्रति मिली है। रचना का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८१८ दिया है। रचयिता का नाम के अतिरिक्त अन्य परिचय नहीं मिलता।

इनकी प्रस्तुत रचना काव्य की दृष्टि से सरस और सुदर है। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

१५३. दादू (? संभवतः चैन या भूपति)—इनका "चित्रवध" काव्य मिला है, जिसमे वृक्ष वध, पर्वतवध, स्वस्तिकवध, कदलीवध, धनुपवध, कपाटवध, सर्पवध, तालावध, चौपडवध, हारवध, कलभवध, जहाजवध और ध्वजावध आदि चित्रकाव्यो का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। ग्रथ विपय की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता के नाम मे भूल दिखाई देती है। वास्तविक रचयिता 'चैन' या 'भूपति' मे से कोई एक है। इन दोनो नामो का उल्लेख चित्रवधो मे हुआ है तथा ये दादू के अनुयायी थे। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा है।

१५४. दास—दासकृत "राज निर्णय" ग्रथ की खडित प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे सगीत विपय का वर्णन है। इसमे अध्यायो के स्थान पर 'प्रकासो' का प्रयोग हुआ है। इसके साथ माणिक कृत सस्कृत ग्रथ 'रागरत्न' भी लिपिवद्ध है, जिसकी पुष्पिका इस प्रकार है—

"इति नादार्णवेहि श्री मदुपाध्याय जदुनदन सूनुना माणिक्येन कृतो रागरत्न समाप्त ॥"

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते। उपर्युक्त 'रागरत्न' के आधार पर लिपिकाल सवत् १८३५ वि० माना गया है। इसके नाम का पता वाईसवें प्रकाश की पुष्पिका के द्वारा चला है —

"इति दीपक पुत्र गारा जलधर भरन अरत करन वर्णन राग निर्णय वाइसमो प्रकासा ॥२२॥"

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और कोई पता नही चलता। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के अन्य रचयिताओ से ये भिन्न हैं या अभिन्न, निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता।

१५५. दास—इनकी "व्रज महात्मचद्रिका" कृष्णभक्ति और व्रजमाहात्म्य विषयक रचना है। इसमे प्रकाश नाम से छह अध्याय हैं। रचनाकाल का उल्लेख नही है। लिपिकाल सवत् १८०५ है। ग्रथ की पुष्पिका से विदित होता है कि लिपिकाल ही रचना काल भी है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है।

रचयिता का वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ ज्ञात नही होता।

१५६. दास—ये "पथ पारख्या" के रचयिता है। ग्रथ से इनका इतना ही पता चलता है कि ये दादूपथी थे। ग्रथ मे पथ के सिद्धातो और नियमो का वर्णन है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। खोज मे रचयिता का पहली वार पता लगा है।

१५७. दासराम—इनकी ज्योतिप विपय पर "सूर्यकाड" नाम की पुस्तक मिली है जिसमे सूर्य के वारह राशियो पर रहने का फलाफल वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६११ वि० दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१५८. दिग्विजय सिंह—इस त्रिवर्पी मे प्रस्तुत रचयिता का 'नीतिरत्नाकर' ग्रथ मिला है। ग्रथ के अनुसार ये गोडा (अवध) के अतर्गत वलरामपुर के राजा थे। पिता का नाम अर्जुन सिंह था। ये वडे काव्यप्रेमी थे। प्रस्तुत ग्रथ मे इन्होने राजनीति के अतिरिक्त रस और अलकारो का भी वर्णन किया है। इनका उल्लेख अन्य ग्रथ के साथ विवरण (२०–४३) मे भी है।

प्रस्तुत ग्रथ छपा हुआ है। रचनाकाल सवत् १६२० है। खडित हो जाने के कारण इसका मुद्रणकाल विदित न हो सका।

१५६. दुखहरण (जन)—इनकी 'प्रह्लादचरित्र' रचना की तीन प्रतियाँ मिली हैं। ग्रथ का विपय इसके नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल किसी प्रति मे नही है। लिपिकाल केवल दो प्रतियो मे क्रमश सवत् १६३४ और सन् १२४० साल दिए है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। सभवत खोज विवरण (४१–१०५) मे उल्लिखित दुखहरण यही है।

१६०. दुखीराम बरनवाल—'वोलार चरित्र' नाम से इनका ग्रथ मिला है, जिसमे नाग कन्या से उत्पन्न भीमसेन के पुत्र वोलार का चरित्र वर्णित है। ग्रथ का रचनाकाल स० १८५३ ही लिपिकाल विदित होता है, क्योंकि पुष्पिका को देखने से पता चलता है कि प्रस्तुत प्रति मूल प्रति है। लिपिकर्त्ता का उल्लेख नहीं है —

"इतिश्री वोलार चरित्र दुखीराम बरनवार साकीन गोठनी परगने चौवरमी भादों वदी १४ रो वुध के तइआर भेआ समत १८५३, सन् १२८१ साल मोकाम वनुआ कोठी नई ॥"

इसके अनुसार रचयिता गोठनी गाँव परगना चौवरमी (सारन, विहार) के निवासी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६०. दूलनदास—इनकी "निर्गुन निहछुर" नामक रचना मिली है जिसमे निर्गुण भक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता के सवध मे इतना ही पता चलता है कि ये सत्यनामी सप्रदाय के प्रवर्तक स्वा० जगजीवनदास के शिष्य थे। इनकी प्रस्तुत रचना खोज विवरण (२३–१०८) मे उल्लि-खित है।

१६२. देवकृष्ण—'रामाश्वमेध' नाम से इनका ग्रथ मिला है। ग्रथ का विषय नाम से ही स्पष्ट है। रामचरितमानस की शैली पर इसकी रचना हुई है। आरभ मे स्तुति वदना उसी प्रकार विस्तारपूर्वक दी गई है। भाषा भी अवधी है। कथा का आरभ वात्सायन ऋषि और शेष के सवाद रूप मे हुआ है। काव्य की दृष्टि से रचना सुदर है।

रचनाकाल सवत् १८२८ है। ग्रथ अत से खडित है, अत लिपिकाल का कोई पता न चल सका। रचयिता का उपनाम 'देव' है। इसके अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१६३. देवीदत्त शुक्ल उपनाम 'पंडित' और 'धीर'—इनकी 'हनुमतवीररक्षा' और 'अलकार दर्पण' नाम से दो रचनाएँ मिली है। रचनाओ का विषय क्रमश हनुमान जी की स्तुति और अलकार वर्णन करना है। प्रथम ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल सवत् १९०४ है और दूसरे मे सवत् १९१०।

रचयिता प्रयाग (इलाहाबाद) जिले के अतर्गत हसराजपुर के रहनेवाले थे। इनके दो उपनाम थे—'पडित' और 'धीर'। पिता का नाम रामदत्त था। दोनो पिता पुत्र बडे धुरंधर विद्वान् तथा तात्रिक थे। ये होलागढ के राजा महरबान सिंह और उनके पुत्र शिवप्रसाद सिंह के आश्रय मे रहते थे। इन राजाओ का कवि ने ओजस्वी भाषा मे यश वर्णन किया है। इनका वश तो नि.शेष हो गया है, पर अब इनके भानजे प० लक्ष्मीदत्त का वश चल रहा है। प० लक्ष्मीदत्त भी बडे विद्वान् और तात्रिक थे।

१६४. देवीदास—यह कोई सत जान पडते है। प्रस्तुत खोज मे इनकी "बजानामा" नाम से छोटी सी रचना मिली है जिसमे निर्गुन मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८२३ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवो-पलब्ध है।

१६५. देवीदास—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ३९।

१६६. देवेश्वर माथुर—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या १४।

१६७. द्वारिकादास—प्रस्तुत खोज मे इनकी विना नाम की खडित रचना मिली है, जिसका नाम इन्ही के नाम पर "द्वारिका दास की वानी" रख दिया गया है। वानी मे भक्ति और विनय सवधी पद है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता का नाम, जहाँ तहाँ पदो मे, "द्वारिका दास" या "जन द्वारिका" दिया है। अन्य परिचय नही मिलता। इन्होने सगुन और निरगुन दोनो विपयो पर रचनाएँ की। सगुन पदो मे श्रीकृष्ण, राम और शिव की भक्ति का वर्णन है। निरगुन पदो मे निरगुनी सतो की तरह योग का भी वर्णन मिलता है। रेखता भी इन्होने रचे है।

इसमे सदेह नही कि इनकी प्रस्तुत रचना अपने विपय की उत्तम है। खोज विवरण (२६–११४) मे उल्लिखित 'राधाविलास' मे रचयिता से ये भिन्न जान पडते है। अत खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

१६८. गो० द्वारिकेश जी—इनकी 'सात स्वरूप के कीर्तन' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे वल्लभ सप्रदाय के सात स्वरूपो, मथुरेश जी, विट्ठलनाथ जी, द्वारकाधीश जी, गोकुल चद्रमा जी, गोकुलनाथ जी और मदनमोहन जी एव श्रीनाथ जी का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथ से कुछ पता नही चलता, पर इनका उल्लेख खोज विवरण (१२–५३) (६–१६४) और (३८–४८) मे अन्य ग्रथो के साथ हो चुका है, जिनके अनुसार ये व्रज निवासी, वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी, मथुरानाथ के पुत्र और सोलहवी शताव्दी के मध्य मे वर्तमान थे।

विद्या विभाग काँकरोली के सचालक श्री कठमणि शास्त्री के कथनानुसार ये श्री वल्लभाचार्य जी के वशज थे।

१६९. धनपाल—इस रचयिता के 'भविष्य दत्त कथा' नामक अपभ्रश भाषा के ग्रथ के दो पन्ने मिले हैं, जो अत्यत जीर्णशीर्ण अवस्था मे है। अपभ्रश हिंदी का प्रारभिक रूप है, जिसमे अनेक उच्चकोटि की रचनाएँ हुई है। अत इस दृष्टि से प्रस्तुत खोज महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत ग्रथ प्रवध काव्य है और गायकवाड ओरियेंटल सीरीज से छप गया है।

उपलव्ध पन्नो द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता। परतु स्याही, लिपि और कागद को देखने से ये कम से कम पाँच सौ वर्प पहले के लिखे जान पडते है। राहुल साकृत्यायन रचित 'हिंदी काव्यधारा' पुस्तक की पृष्ठ सख्या २६० पर धनपाल का उल्लेख है जो पुस्तक के अनुसार सवत् १००० मे वर्तमान, माएसर (गुजरात ?) देश का रहनेवाला धाकड़ वैश्य था।

१७०. धरनीदास—इनकी "चेतावनी" और "निर्गुनलीला" नाम से दो रचनाएँ मिली है, जिनमे सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल क्रमश सवत् १८४१ और १९१० वि० है।

प्रस्तुत ग्रथो मे रचयिता के वृत्त का कोई उल्लेख नही मिलता। खोज विवरण (४१–११४) तथा (९–७१) मे इनका उल्लेख हो गया है। प्रथम विवरण के आधार पर इनके सवध मे इस प्रकार ज्ञात होता है कि ये कायस्थ, माझी (सारन) के निवासी, टिकैतराय के पौत्र, परशुराम के पुत्र, सभवत विनोदानद के शिष्य और वाद मे गोसाई हो गए थे। दूसरे खोज विवरण मे इनका उल्लेख धरनीदास से अलग 'धरनीधर' नाम से किया गया है, जो भूल है। उक्त विवरण मे 'धरनीधर' के 'शव्दो' के जो उद्धरण दिए हैं, उनमे 'धरनीदास' नाम का भी स्पप्ट उल्लेख है —

"सूरमा सत साधु जन जेते जिन हरिनाम अधार।
'धरनीदास' वंदिआ तिनको इत उत वार उज्यार॥"

इनकी बानियाँ भी साहित्यविषयक है, अत उपर्युक्त दोनो खोज विवरणों मे उल्लिखित 'धरनीदास' और 'धरनीधर' एक ही है।

१७१. धरमादास—इस रचयिता के "धरमीनामा" की खंडित प्रति मिली है। ग्रथ मे सतमतानुसार निरगुन भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६६ वि० है।

प्रस्तुत ग्रथ द्वारा रचयिता के पिता का नाम घासी और गुरु का नाम गगाराम था। ये मानिकपुर शहर (काछी पट्टी) के निवासी थे। जब ये छोटे थे तभी माता और पिता का शरीरांत हो गया था। इन्होंने कुछ और भी विवरण दिया है, जो ठीक ठीक ज्ञात नहीं होता—

"एक दीली एक बग सजावे एक आगरा प आना हो।
एक लका एक मानिक गावं एक मारं मुलताना हो॥
काछीपटी सहर मानीकपुर तहा भया है धरमा हो।
आनं वाव वढाया साहेव आया वीबीपुर मा हो।
राम एक धरी ग्यान आपने सीर मो दाग दगाया हो।
वोन्ह वीनु कोई वात न पुछं वडा पहंगा पाया हो।
है घासी का बेटा धरमा गंगाराम क चेला हो।
नान्हे माई वाप कह पाएसी आपुही रहा अकेला हो।
जैसा खर्च महीना तैसा वीना उजुर पहुचावं हो।
:o: :o. :o.
भला औ बुरा एक कै जानं सो मेरा दील जाई हो।
पाक सवारो पाक कीता है नाम धरावा धरमा हो।
गगाराम गुरु दुआ दीआ है तव पावा कछु मरमा हो।"

ऐसा कुछ विदित होता है कि माता पिता के मर जाने पर ये मानिकपुर से वीबीपुर चले आए, जहाँ राम का ज्ञान (रामभक्ति) हो जाने से इन्होंने अपना सिर दगा लिया। इसके पीछे सभवत ये गुरु के साथ दिल्ली, बगाल, आगरा, लका और मुलतान आदि स्थानों पर घूमते रहे।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१७२. धर्मदास—इनके 'महाभारत' ग्रथ की चार प्रतियाँ इस बार भी मिली हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो मे आए पर्वो का उल्लेख नीचे किया जाता है —

(१) महाभारत भीष्मपर्व और द्रोणपर्व—रचनाकाल केवल द्रोणपर्व मे दिया है, जो सवत् १६६४ वि० है। लिपिकाल दोनो पर्वो का सवत् १६५० है। प्रस्तुत विवरण पत्र मे ग्रथ की दो प्रतियो के विवरण समिलित है। एक का विवरण विवरणपत्र मे ही है तथा दूसरे का विवरण अतिरिक्त कागदो मे है। प्रथम प्रति दूसरी की नकल है।

(२) महाभारत (सभापर्व, वनपर्व और उद्योगपर्व)—रचनाकाल सभापर्व के आधार पर सवत् १७११ वि० और लिपिकाल सवत् १८७७ वि० है।

(३) महाभारत (उद्योगपर्व, भीष्मपर्व और द्रोणपर्व)—रचनाकाल द्रोणपर्व के आधार पर सवत् १६६४। लिपिकाल उद्योगपर्व मे सवत् १८८८ वि० और अन्य पर्वो मे सवत् १८८४ वि०। इससे विदित होता है कि उद्योग पर्व बाद को लिखा गया।

(४) महाभारत (उद्योगपर्व)—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल संवत् १८६३ वि०।

रचयिता ने अपना वृत्त 'सभापर्व' और 'द्रोणपर्व' मे दिया है जो क्रमश नीचे दिया जाता है :—

द्रोणपर्व

प्रस्तुत पर्व की रचना कवि ने पच्चीस वर्ष की अवस्था मे की थी। बघेल खड में डहार-देश के अतर्गत मऊ इनका गाँव था। वासुदेव यहाँ का राजा था। इनके कुल मे हरिहर और चद्रभान दो प्रसिद्ध पुरुष हुए। इनका एक पुत्र 'गग' था, जो भाषा विलास मे वडा प्रसिद्ध हुआ —

"श्री नरसीह ओपा भइ जवही। वार्ष पाचीस केर कवि तवही॥
संवत वीक्रम भूपति भएऊ। सोरह सए औ चौसठी गएऊ॥
जँह लगि उगवै अथव ही आना। ताहि सलाम सकल सुठाना॥
महि बघेल वीक्रम काह साके। उपर सान्तु आही नहि जाके॥
मऊ गाँऊ औ देस डहारा। वासुदेव तेहि भुँम्या भुआरा॥
(तु वसंत औ माधव मासा। पुन्या देवस तेहि कीन्ह प्रकासा॥
.रथ सुनेही जवन फल होइ। पाछेहि वार्नी कहा रहे सोइ॥
धार्मक नतए महाकवि धार्मदास कविराज।
चाद्रभान तेन्ह के कुल वार्नत लागहि लाज॥
आपन मइ नहि कहा वषाना। जगत विदित जसु जेहि सब जाना॥
वीस्न भाक्ती पुरुष न चलि आइ। जप तप नेम धार्म अधिकाइ॥
पंडित गुनकर पारव पारा। भाषा मह कवि रीति रसारा॥
ओथावाद दोष कह डरउ। तेहि वरे नर कवित्या ना करउ॥
आपने कहे न कीरती होइ। परमुष अस्तुति सोभा सोइ॥
अपने मुष कर षान समाइ। इंद्री कहइ हरू होइ जाइ॥
थाना कहे घटि जानही लोगा। छोदै एक आपर जीभी जमोगा॥
हरिहर देव हरिहि लए लाए। चद्रभान जेन्ह के कुल जाए॥
तन्ह के वस धार्म कर धामा। धार्मदास कविराज क नामा॥
तासु तनए कुल मडन कवि सेषर कवि "गंग"।
जेन्ह के भाष विलास कै वानी तरल तरंग॥"

सभापर्व

इनके पुत्र श्रीपति वडे गुणी थे। उन्होंने महाभारत की रचना करने के लिये इनसे प्रार्थना की, जिसको इन्होंने स्वीकार कर लिया। उस समय शाहजहाँ वादशाह का राज्य था। विध्य मे डहारदेश के राजा प्रतापसाहि सेंगर के आदेश से इन्होने प्रस्तुत रचना की। एक आसान देव कवि का भी उल्लेख किया है, जिसने राजा को आज्ञा दी कि वे महाभारत की रचना करावें। इनके (रचयिता के) एक पुत्र का नाम 'गग' था जिसको इन्होंने कवियो मे श्रेष्ठ वताया है। प्रतापसाहि सेंगर के पुत्र का नाम महासिंह था —

"धर्मदास , कवि जेहि सेव जाना। तेनकर तनै गुनी सग्याना॥
तेनमह एकहि श्रीपति नामा। गुनगन विद्या कह अभिरामा॥
तेन हसि वचन कहा कर जोरी। तात सुनहु विनती एक मोरी॥
कवरौ पंडउ उपजैउ कैसे। दुनहुन दुसह वैर भा कैसे॥

॥ दोहा ॥

सो सब मोहि सुनावहु जस जानतहहु तात ।
व्यास कहा जो भारथ पर्व इगारह ग्रो मात ॥

पर्वात

संवत साह असोक कर भैउ । सत्रह सै इगारह गएउ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु बरिआर न ताके ॥
विंध्या उपर इहा देस डहारा । सेंगरसाहि प्रताप भुआरा ॥
महासिंघ ताकर जुवराजा । दान जुघ्य कै जासो लाजा ॥
आसान देव कवि इक जाहा । कुसुम दिस्टी वरषहि गुरताहा ॥
सो नरसिंहनि सु आएसु दीन्ह । धर्मदास कवि तब एह कीन्ह ॥
पुन्य कथा एह पातक हरइ । नर नारी जेहि सुनतं तरइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहि भातिन्ह भारत सभा प्रसंग ।
ताके तनं लोक मानी कविगन मह जनु "गंग" ॥१८॥"

इन वर्णनो से पता चलता है कि रचयिता ने ग्रथ की रचना केवल अपने पुत्र श्रीपति के कहने से ही नही की, वरन् उससे बहुत पहले अपनी पच्चीस वर्ष की अवस्था मे ही कर रहा था। इस अवस्था मे श्रीपति का जन्म सभव नही हो सकता क्योकि वह सबसे छोटा पुत्र था। अपने कर्णपर्व मे जो उसका रचा है, अपने से बडे तीन भाइयो गग, स्वर्गसेन (? खड्गसेन) और दलपति का उसने उल्लेख किया है। देखिए प्रस्तुत खोज विवरण मे सख्या (४३०)।

यह निश्चित रूप से विदित होता है कि पर्वो की रचना सिलसिलेवार नही हुई। श्रीपति और आसान देव के कहने पर रचयिता को क्रमपूर्वक ग्रथ रचने की सूझी। अत जो पर्व नही रचे गए थे उनकी रचना करने लगा। सभवत केवल द्रोणपर्व ही पहले रचा गया था। ऊपर सभापर्व से दिए गए उद्धरणो मे श्रीपति के कथन मे इसकी पुष्टि होती है। उसमे रेखाकित पदो से स्पष्ट है कि श्रीपति ने जब द्रोणपर्व को पढा होगा तब ही कौरव-पाडवो की उत्पत्ति और उनके वैर के विषय मे जानने की उसकी जिज्ञासा हुई होगी। यदि आदि के पर्व भी रचे रहते तो उक्त जिज्ञासा न होती, क्योकि उन्हें सिलसिलेवार कथा का सूत्र विदित रहता। उक्त उद्धरण मे यह भी पता चलता है कि उसने रचनाओ मे अपने पिता की सहायता की। वनपर्व के अत मे दिए गए हरिगीतिका छद से इसका सकेत मिलता है —

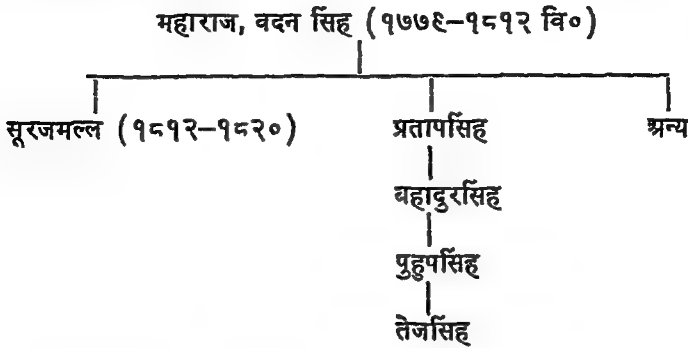
"दुखहरन रमानेवास सो सुनि राधीका पति बोलेउ ।
मम अंग जानेहु आपु सबको भंग कबो न बोलेउ ॥
अब अजर अमरा अछेह वरदं दान हरी गवनेव घरे ।
सुनि हर्ष धर्मनेवास श्रीपतिदास वनभाषा करो ॥"

रेखाकित पद मे श्रीपतिदास स्पष्ट आया है। धर्मदास के वृद्ध हो जाने से सहायता लेना सगत भी है। कर्णपर्व तो स्वय श्रीपति ने ही रचा, देखिए सख्या (४३०)।

इसमे सदेह नही कि प्रस्तुत ग्रथ अत्यत महत्वपूर्ण है। प्रसिद्ध 'गग' के सबध मे जिनकी भाषा 'तरल तरग' कही जाती है, निश्चित रूप से जानकारी प्राप्त होती है। प्रस्तुत खोज विवरण मे इसका उल्लेख सख्या (६५) पर है। ये निश्चय ही औरंगजेब के काल के गग है और अकबरकालीन गग से भिन्न है।

पिछले खोज विवरण (१७–४८ और २०–४१) मे भी प्रस्तुत रचयिता का उल्लेख हुआ है।

१७३. **धौंकल मिश्र**—इनका "प्रवोध चद्रोदय नाटक" मिला है, जो इसी नाम के मूल सस्कृत ग्रथ का अनुवाद है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। ग्रथ के अनुसार रचयिता भरतपुरनरेश पुहुपसिंह के पुत्र तेजसिंह के आश्रित थे। अन्य परिचय नही मिलता। आश्रयदाता तेजसिंह का वश इस प्रकार है —



खोज विवरण (३२–५५) मे रचयिता का 'शकुतला नाटक' आया है जिसके अनुसार ये सवत् १८५६ के लगभग वर्तमान थे।

१७४. **ध्रुवदास (हित)**—इस त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित रचनाएँ और मिली हैं'—

(१) **अनुरागलता**—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विपय—हित सप्रदाय के सिद्धातानुसार भगवत्प्रेम और युगलस्वरूप का वर्णन। खोज विवरण (९–२३) मे इसका उल्लेख है।

(२) **आनंदाष्टक**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—हित सप्रदाय की सेवा सिद्धात भावना के अनुसार भगवत्प्रेम का वर्णन। खोज विवरण (४१–११७) मे इसका उल्लेख है।

(३) **प्रेमलता**—रचनाकाल और लिपिकाल दिए नही। विपय—हित सप्रदायानुसार भगवत्स्वरूप सवधी प्रेम तथा उनके युगल स्वरूप की लीलाओ का वर्णन। खोज विवरण (००–१३) तथा (९–७३) मे इसका उल्लेख हो चुका है।

(४) **भजनाष्टक**—रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त। विपय—हितसप्रदायानुसार भगवद्भजन की महिमा आदि का वर्णन। खोज विवरण (४१–११७) मे इसका उल्लेख है।

(५) **रसानंदलीला**—रचनाकाल सवत् १६८५। लिपिकाल दिया नही। विपय—राधा कृष्ण का सयोग शृगार वर्णन। खोज विवरण (९–७३) मे यह आ गया है।

(६) **रस हीरावली**—रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त। विपय—राधा और कृष्ण का ऋतु विहार वर्णन। खोज विवरण (९–७३) मे यह उल्लिखित है।

(७) **हित सिंगार लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—राधा कृष्ण की सयोग शृगार विपयक लीलाओ का वर्णन। खोज विवरण (९–७३) मे इसका उल्लेख है।

(८) **व्रज लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही। विपय—श्रीकृष्ण तथा गोपियो की व्रज लीलाओ का वर्णन। इसका उल्लेख खोज विवरण (९–७३() मे है।

(९) **वैद्यक ज्ञान लीला**—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल सवत् १७८१ वि०। विपय—श्रीकृष्ण की वैद्यक लीला का वर्णन। खोज विवरण (९–७३) मे यह आ गया है।

रचयिता हित सप्रदाय के सस्थापक श्री हित हरिवश जी के शिष्य थे। पिछले खोज-विवरणो के अनुसार ये सवत् १६६० से १७०० तक रचना करते रहे। इनके लिखे बहुत से ग्रथ

हैं। देखिए खोज विवरण (००–१३, ६–१५६, ६–७३–१२–५२, १७–५१, २६–८६; ३८–४२, (४१–११७) और (प० २२–२६, दि० ३१–२६)।

१७५. नंददास—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित रचनाओ के विवरण लिए गए है :—

(१) रूपमंजरी—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधा के रूप शृगार का वर्णन। इसका उल्लेख खोज विवरण (६–३०१) और (प० २२–७२) मे हो गया है।

(२) रसमंजरी—रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही। विषय—नायिकाभेद। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (६–२०६) मे हो गया है।

(३) स्याम सगाई—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधाकृष्ण की सगाई का वर्णन। रचना खोज विवरण (६–२०० ई) (१७–११६) मे आ गई है।

इन रचनाओ के द्वारा रचयिता के सबध मे कुछ ज्ञात नही होता, पर पिछले खोज विवरणो (२०–११३, २३–२६४, २६–३१६–२६,२४४, ३५–६७, ६–२००) (३२–१५२; १–११, ४१–५०८) (१७–११६) मे इनका उल्लेख हो चुका है और उनके अनुसार ये अष्टछाप के प्रसिद्ध कवियो मे से है।

१७६. नजीर—इस त्रिवर्षी मे इनकी "नजीर की रचनाएँ फुटकर एव सुदामाचरित्र" नाम से कुछ रचनाएँ मिली हैं। रचनाओ का विषय उपदेश एव सुदामा चरित्र वर्णन करना है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का भी वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणो (२६–२५१; ३२–१५६; २६–३३३ ए, बी) के अनुसार इनका वृत्त इस प्रकार है—

ये प्रसिद्ध मुसलमान कवि, अकबराबाद (आगरा) के मुहल्ला ताजगज के रहनेवाले थे। इनका जन्म सवत् १७६७ और मृत्यु सवत् १८७७ है। ये सेठो और अमीरो के लडको को पढाया करते थे। सूफीमत के अनुयायी थे और इनका ८० वर्ष की अवस्था मे देहांत हुआ। ताजगज मे गाडे गए थे।

१७७. नयमल—"चौबीस तीर्थंकर की विनती" नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमे जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरो की स्तुति की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१७८. नयनसुख या नैन कवि—खोज मे इनकी "सारगधर वैद्यक" नामक रचना का पता लगा है, जो इसी नाम के सस्कृत ग्रथ का अनुवाद है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १८६० वि० है।

ग्रथ के द्वारा तो इनका नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरण मे उल्लिखित इनके 'वैद्यमनोत्सव' ग्रथ के अनुसार ये केशवराज के पुत्र, सरहिंद निवासी और सवत् १६४६ के लगभग वर्तमान थे। देखिए खोज विवरण (००–३४, ६–२१४, १७–१२५, २०–११६, २३–२६२, २६–३३२) और पजाब रिपोर्ट (२२–७५)।

१७६. नरसी मेहता—इनके भक्ति विषयक कुछ पदो का एक सग्रह "नरसी मेहता नी माला" नाम से मिला है। रचनाकाल विदित नही। लिपिकाल सवत् १८६३ वि० है।

रचयिता के विषय मे प्रस्तुत ग्रथ द्वारा कुछ पता नहीं चलता। पर ये प्रसिद्ध नरसी भक्त ही है, जो गुजरात के रहने वाले थे। खोज विवरण (२–६४) मे आए नरसी कदाचित् यही हैं।

पदो की भाषा पश्चिमी राजस्थानी है।

१८०. नरहरि दास बारहट—इनके "अवतार गीता या विजै अवतार गीता", "अवतार चरित्र" की दो प्रतियाँ इस बार भी मिली है। ग्रथ मे चौवीस अवतारो की कथाएँ सक्षेप मे दी गई हैं। रचनाकाल केवल एक प्रति मे सवत् १७३३ है। लिपिकाल क्रमश स० १७६७ और सवत् १८१२ हैं।

प्रस्तुत प्रतियो द्वारा रचयिता के सवध मे इतना ही पता चलता है कि ये जाति के चारण और किसी गिरिधर दीक्षित के शिष्य थे। गुरु का नाम प्रारभ के एक श्लोक मे है। पिछले खोज विवरणो के अनुसार ये "वारहट जाति के चारण, टह्लेंगा पडना, मेडता (जोधपुर) के निवासी, जोधपूर नरेश महाराज सूरसिह और जसवत सिंह के आश्रित एव सत्रहवी शताब्दी मे वर्तमान थे।" देखिए खोज विवरण (२–८८; ६–२१०) (२–५०, २–४८, २–५१; २–४६; ३२–१५३)।

१८१. नवनीत कवि—इनकी 'मनोरथ मुक्तावली' के विवरण लिए गए है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

१८२. मुंशी नवनीतराय—ये 'नवनीत नवसई' के रचयिता है। ग्रथ मे शृगारविपयक नौ सौ दोनो का सग्रह है। इसकी रचना विहारी सतसई के आधार पर हुई जान पडती है, क्योकि इसमे अधिकाश उसी के भाव लिए गए हैं। विहारी सतसई का प्रथम दोहा—'मेरी भव बाधा हरो' इसका भी प्रथम दोहा है जो उलट पुलट कर रखा गया है। रचनाकाल सवत् १८७७ वि० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं। संभवत. पूर्व कवि भी यही हैं।

१८३. नवरंगदास स्वामी—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे संख्या १५।

१८४. नवलदास—इनका "कहरनामा" (ककहरानामा) पहले भी मिल चुका है। देखिए खोज विवरण (२६–२४६)। रचना का विपय भक्ति तथा ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल का पता नही। लिपिकाल सवत् १६२३ है।

प्रस्तुत ग्रथ द्वारा तो रचयिता का कोई विवरण नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणो (२६–२४६; २३–३०१, २६–३२७; ६–१२८, २०–११८) के आधार पर ये सतनामी पंथ के अनुयायी, स्वामी दूलनदास जी के शिष्य और धनेशा निवासी थे। सवत् १८०७ से १८२३ तक वर्तमान थे।

१८५. नागरीदास—"नागरीदास जी के कवित्त सग्रह" नाम से इनके कुछ कवित्त मिले हैं, जिनमे विविध विपयो—यथा शरद, दिवाली, गोवर्द्धनपूजा, होरी, फागुन, ग्रीष्म, गगा जी, वर्षा, मान और वाल लीला आदि का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८७२ वि० है।

प्रस्तुत संग्रह द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरण मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

१८६. नागरीदास हित—इनका एक ग्रथ "समै प्रवध सेवा सात समे की भावना" नाम से मिला है। ग्रथ मे हित मप्रदाय के सिद्धातानुसार सात समय की सेवा भावना वर्णित है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८६३ है।

रचयिता हितानुयायी थे। इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ मे सेवक, दामोदर और श्री गोवर्द्धन लाल का उल्लेख किया है। अतिम व्यक्ति के लिये गुरु शव्द का प्रयोग है, अत ज्ञात होता है कि वे इनके गुरु थे :—

"प्रथम श्री सेवक पद सिर नाऊं। करौ कृपा दामोदर मोपं श्री हरिवंश चरन रति पाऊं ॥
। :o: ००० ००० ०००
श्री गुरु 'गोवर्द्धनलाल' जू चरन कमल उरधार। प्रणाम प्ररायम सुरम्य मति बाढं भजन बिचार ॥"

अन्य परिचय नही मिलता। खोज विवरण (१२-११६) में इनका उल्लेख हो चुका है, जिसके अनुसार ये हित हरिवश जी के पुत्र श्री वनचद्र जी के शिष्य थे। पहले वृदावन में ही रहते थे, पश्चात् बरसाने चले गए, जहाँ इनकी कुटी अब तक है।

१८७. नाथकवि—'रामविहार' नाम से इनकी रचना मिली है। रामचन्द्र जी ने स्त्री और भाइयो सहित जो जो आनद विहार किए, उन कथाओं का इसमे वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८६८ है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय विदित न हो सका। खोज विवरण (२६-३२५) में आए इस नाम के रचयिता यही जान पडते हैं। इनकी 'रगभूमि' भी रामचरित्र विषयक रचना है।

१८८. 'कवि' नाथ—इस कवि के कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनमे वर्णाश्रम धर्म का मडन और अन्य धर्मो का खडन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का कोई पता भी नही मिलता। परतु इन्होने कबीर, नानक, दरिया साहब, भीखा और शिवनारायण से लेकर स्वामी दयानद सरस्वती तक के वर्णाश्रम धर्म के विरोधी सभी मतो का खडन किया है। अत इस दृष्टि से ये स्वामी दयानद (स० १६२० के लगभग) के पीछे के कवि जान पडते है। खोज मे इनका पता पहले पहल लगा है।

१८९. नानक—इनके नाम से दो रचनाएँ—"सलोक महलानो" और "वैद्यक" मिली है। रचनाओ का विषय क्रमश ज्ञानोपदेश और आयुर्वेद है। रचनाकाल, लिपिकाल दोनो के अज्ञात है। पर इनमे प्रयुक्त कुछ रूढ प्रयोगो से विदित होता है कि ये सुप्रसिद्ध नानक ही है —जैसे—

"श्रीगणेशायनम. ॥ सतगुर प्रसादि ॥ सलोक महलानो ॥"
—सलोक महलानो

"१ ॐ सतिनाम करता पुरखु निरभउ निरवैर अकालि मुरति अजुनीसं भगुर प्रसाद"
—वैद्यक

ये प्रयोग नानक पथ मे प्रचलित है।

रचयिता का उल्लेख खोज विवरण (६-१६६, ३२-१५१, २३-२६३, २०-६६) और (प० २२-७०) तथा (६-२०७, २६-३१५) मे भी है।

१९०. नामदेव—इनके नाम से 'ककहरा' का विवरण लिया गया है, जिसमे नागरी के प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर शिवपार्वती का विवाह वर्णन किया गया है। रचना काल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता का भी प्रस्तुत ग्रथ द्वारा कोई पता नही चलता। ये महाराष्ट्र के सुप्रसिद्ध सत नामदेव से भिन्न जान पडते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

१९१. नारायणदास—इनका 'रामाश्वमेध' ग्रथ मिला है। ग्रथ मे पद्मपुराण के आधार पर रामाश्वमेध का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७३६ और लिपिकाल सवत् १६१५ वि० है।

रचयिता का नाम नारायणदास है। पहले इनका नाम 'उग्र' था, पर रामानुज सप्रदाय मे दीक्षित हो जाने से नारायणदास नाम पडा। ये वशिष्ठ गोत्र के माथुर ब्राह्मण थे। जमुना

के किनारे स्थित इटावा नगर निवासस्थान था। अपने को इन्होने ऋग्वेदी ब्राह्मण कहा है। गुरु परपरा एक 'छप्पय' मे दी है, जो इस प्रकार है :—

"वंदि पर्म गुर चरन सर्व गुर को सिर नावहुं।
रामानुज पद कमल चारु संतत उर लावहु।
नौमि परांकुस दास वहुरिया मुनि मुनिकायक।
राममिश्र द्रुग कलनाथ निज सुषदायक।
श्री सठारि पद वंदि कै विस्वकसैन उदारमति।
सेवहु जगदंबा चरन श्रीनिवास पद कमल रति॥२॥"

इसमे नामो का क्रम ठीक ठीक स्पष्ट नही होता। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

प्रस्तुत ग्रथ काव्य की दृष्टि से उत्तम है। इसकी शैली 'रामचरित मानस' की तरह है, पर छदो का स्वतत्र चुनाव हुआ है। अनेक प्रकार के छद प्रयुक्त किए गए है। कुछ नाम दिए जाते हैं —

"दडक, छप्पै, दोहा, कवित्त, विजय छद, चौपाई, रूपमाला, सोरठा, तोटक, नाराच, मालती, चद्रकला, सवैया, पद्धटिका, विजया, गीतिका, सुदरी, भुजगप्रयात, तोमर, दोधक, त्रिभगी, चरचरी, छद मोतीदाम, गीता, निसिपालिका, झूलना, पद्मावती, मरहटा, नगस्वरूप, मदभार, तारक, हरनीप्रिया, सजुता, रोला, प्लवगम और नगस्वरूपनी आदि।"

१६२. नारायणदास (व्रजवासिया)—इनकी 'गोवर्द्धनलीला' और 'स्वामिनी जी को ब्याह' नाम से दो ग्रथ मिले हैं। प्रथम ग्रथ मे श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन है और दूसरे मे राधाकृष्ण का विवाह वर्णित है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल गोवर्द्धन लीला मे सवत् १८२८ वि० दिया है।

रचयिता के सवध मे केवल प्रथम ग्रथ से पता चलता है कि वे व्रजवासी थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। पिछले खोज विवरण मे इस नाम के कई रचयिता हैं, पर नही कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता उनमे से कोई एक है या नही।

१६३. नारायण सिंह नृप—ये 'नामकुसुममाला' ग्रथ के रचयिता हैं और खोज मे नवोपलब्ध हैं। अन्य वृत्त नही मिलता। ग्रथ का विषय कोष है, जो हलायुध, धनजय, हेमचद्र और अमरसिंह कृत कोषो के आधार पर सवत् १७२० मे रचा गया। लिपिकाल दिया नही। विषय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

१६४. नित्यानंद—'माया को अग' नाम से इनकी ब्रह्मज्ञानविषयक रचना मिली है, जिसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६६ दिया है। ग्रथ द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर उनमे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

१६५. निर्मल कवि—इनका 'रस रत्नाकर' आयुर्वेद के अतर्गत रसायनविषयक ग्रथ है, जो इसी नाम के मूल सस्कृत ग्रथ से अनूदित हुआ है। रचनाकाल सवत् १७७३ वि० है। लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये जाति के कायस्थ और चडेस गाँव के रहनेवाले थे। चडेस गाँव सभवत चनेल गाँव है जो गोरखपुर जिला मे वरहज (सलेमपुर तहसील) के पास है।

खोज मे इस कवि का पता प्रथम बार लगा है।

१९६. **निर्मलदास**—इन्होंने सवत् १८३८ मे 'हृग्नानिका बनराधा' की रचना की। लिपिकाल भी इस ग्रथ का सवत् १८३८ ही है। अत इनकी प्रस्तुत प्रति मूल प्रति विदित होती है। इसका विषय नाम मे ही स्पष्ट है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। पूर्व कवि से ये भिन्न ज्ञात पडते है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

१९७. **निश्चयदास**—इनके रचे 'श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चिंतन को पद' मे श्री वल्लभाचार्य के स्वरूप का वर्णन किया गया है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही हैं। रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

१९८. **नूर मुहमद**—इनके "इद्रावती" नामक प्रेमाख्यान काव्य की एक खंडित प्रति इस बार भी मिली है। खोज विवरण (२–१०६) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो चुका है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता न चल सका। रचयिता के सबध मे भी कोई विवरण नही मिलता। ग्रथ स्वामी (शेख अब्दुल हमीद साहब, गाँव—चितारा, डाकघर गुरुहन, जिला—आजमगढ) द्वारा विदित हुआ कि ये भादो (ग्रथस्वामी के गाँव, चितारा के समीप) के निवासी थे। इनके वशज अभी तक उक्त गाँव मे रहते है।

उपर्युक्त खोज विवरण मे इनको सबरहद (जौनपुर) निवासी और अठारहवी शती मे वर्तमान बताया गया है।

इन दोनो कथनो मे, स्थान के विषय मे, स्पष्ट अतर दिखाई देता है। जहाँ तक अनुमान होता है, खोज विवरण के उल्लेख मे भूल है। उसमे उल्लिखित ग्रथ की प्रति मे जो उद्धरण दिए गए है उनमे रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। वह प्रति मिर्जापुर मे मिली है। अत सभव है, वहाँ से कवि के परिचय के सबध मे केवल आनुमानिक आधार पर ही सूचना मिली हो। इस बार जहाँ से सूचना मिली है वह स्थान कवि के स्थान के समीप ही है। अत विश्वास करने योग्य है। चितारा और भादो गाँव से थोडी ही दूर पर जौनपुर की सरहद लग जाती है। इस दृष्टि से हो सकता है कि सबरहद गाँव भी उक्त गाँवों के पास ही हो।

१९९. **पंचौली देवकर्ण**—रचयिता का उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या १६।

२००. **परमसुख दैवज्ञ**—ये ज्योतिषविषयक मूल सस्कृत ग्रथ 'पाराशरीजातक व उडुदाय प्रदीप' के अनुवादक है। अनुवाद सवत् १८६८ वि० मे सपन्न हुआ। इसकी प्रस्तुत प्रति १९०१ मे लिखी गई।

रचयिता के सबध मे इतना ही ज्ञात होता है कि इन्होंने प्रस्तुत अनुवाद किसी विष्णुदास के लिये किया था —

८ ६ ८ १

"वसु रस गज चद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे, शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्णपक्षे।
लिखित मिह हितार्थं विष्णुदासस्य पूर्वं, तदनुजवपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानो॥"

प्रस्तुत अनुवाद की भाषा प्राचीन खडी बोली है।

खोज मे ये रचयिता नवोपलब्ध हैं।

२०१. **परमानंद**—इन्होंने श्री शकराचार्य कृत ब्रह्मज्ञानविषयक सस्कृत ग्रथ 'आत्मबोध' और 'तत्वबोध' का हिंदी मे अनुवाद किया। अनुवादकाल और प्रतिलिपिकाल दोनो अज्ञात हैं।

प्रस्तुत ग्रथो की पुष्पिका के आधार पर ही रचयिता का नाम विदित हुआ। इन्होंने किसी रामावतार की सहायता से प्रस्तुत ग्रथो की टीकाएँ की। ग्रथ स्वामी (प० महानद शर्मा

वैद्य, ग्राम-पडित का पुरवा, गढवा, डाकघर-हडिया, जिला इलाहाबाद) से विदित हुआ कि प० रामावतार जी उनकी वुआ के श्वशुर थे, जिन्हें मरे लगभग सौ वर्ष हो गए। अत. इस दृष्टि से अनुवादकर्त्ता श्री परमानद जी का भी यही समय समझना उपयुक्त होगा, क्योकि ये उन्ही पडित जी के समसामयिक थे।

टीकाएँ खडी बोली मे की गई है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

२०२. परमानंददास (अष्टछाप)—इनकी दो रचनाएँ "परमानदसागर" और "विरह के पद" मिले हैं। दोनो रचनाओ का विषय श्रीकृष्ण भक्ति और उनका चरित्र तथा लीलाएँ हैं। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नही हैं। "विरह के पद" सभवत परमानदसागर से ही सगृहीत हुए हैं।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथो द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इनका वृत्त इस प्रकार दिया है :—

"उपनाम विष्णुदास, कन्नौज निवासी, वाद मे गोकुल मे रहने लगे। कदाचित् कान्य-कुब्ज ब्राह्मण थे। सवत् १६०६ के लगभग वर्तमान। अष्टछाप के प्रसिद्ध कवि। देखिए खोज-विवरण (३५–७२, ६–२०३, ३२–१६२, २३–३१०) और (२६–३४१, ४१–५१४; २–६२)।

२०३. परसनविप्र या परसन द्विज—प्रस्तुत रचयिता के 'पद' और 'कवित्तो' मे की गई रचनाओ के आठ खर्रो के विवरण लिए गए है। ये खर्रे स्वय रचयिता के ही हाथ के लिखे हैं, अत. रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सवत् १८८० से सवत् १८६० तक है। रचनाओ का विषय—राम, कृष्ण और शिव भक्ति है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलव्ध नही होता, पर ग्रथ स्वामी (प० जानकी चौबे; ग्राम, चौबौली; डाकघर, अहरौला, जिला, आजमगढ) जो इनके ही वशज हैं, इस प्रकार इनका वृत्त देते हैं—

"इनका वास्तविक नाम 'परसन' या 'परसनदास' था। नाम के साथ 'विप्र' और 'द्विज' जोडकर कविता करते थे। आजमगढ जिला के अतर्गत फूलपुर तहसील मे स्थित चौबौली गांव के निवासी, भार्गव गोत्रीय चौबे ब्राह्मण थे। इनके वशज अभी तक उस ग्राम मे रहते हैं। इनकी अवतक की वशावली इस प्रकार हैं —

परसन 'विप्र'
कालीदीन
ईश्वरीवक्स
सीताराम
जानकी चौबे (वर्तमान ग्रथ स्वामी)

खोज मे ये नए मिले हैं।

साहित्यिक दृष्टि से इनका रचनाएँ साधारणतया अच्छी है।

२०४. पर्मल—ये "कोकशास्त्र" पुस्तक के रचयिता हैं। पुस्तक की प्रस्तुत प्रति खडित है। इसमे न तो रचनाकाल, लिपिकाल का पता चलता है और न रचयिता के ही सवध मे कोई विवरण मिलता है।

खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

२०५. पलटू दास—पिछले खोज विवरणो मे इनका कई वार उल्लेख हो चुका है, देखिए—(२०–१२४, ६–२२२, ३८–१०६)। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये कवीर-पथी प्रसिद्ध सत और भीखा साहव के शिष्य जयगोविंद के शिष्य थे। सवत् १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

इस बार इनकी 'बानी' नामक रचना की खंडित प्रति और मिली है। बानी की प्रस्तुत प्रति से इनके संबंध में कोई विशेष बात ज्ञात नहीं होती। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

२०५. पुरुषोत्तम—इनके नाम से "फूलमजरी या पहोपमजरी" रचना का विवरण लिया गया है। रचना में इकतीस दोहे हैं, जिनमें राधाकृष्ण की भक्ति और शृगार वर्णन के साथ साथ फूलो का (प्रत्येक दोहे मे एक फूल का) नामोल्लेख भी किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। प्रस्तुत रचना खोज विवरण (२९–२४४ एच) मे नददास के नाम से उल्लिखित है, जो भूल है। इसकी वर्तमान प्रति में पुरुषोत्तम का नाम स्पष्ट रूप से आया है, जहाँ कि उक्त विवरण मे नददास का नाम संदिग्ध है।

खोज मे रचयिता का पता प्रथम बार लगा है।

२०७. पुरुषोत्तम—इनके पाँच ग्रंथ—१ उत्सव मालिका भाषा, २ द्रव्य शुद्धि भाषा, ३ वन यात्रा, ४ श्री द्वारिकाधीश के शृगार और ५ उत्सव निर्णय भाषा या उत्सव सेवा प्रणाली उत्सव निर्णय सहित मिले है। अंतिम ग्रंथ की दो प्रतियाँ है। सब ग्रंथो का विषय तथा रचनाकाल और लिपिकाल निम्नलिखित प्रकार से है —

(१) उत्सवमालिका—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय-पुष्टिमार्गी सिद्धांतानुसार सेवाक्रम तथा वर्ष भर के उत्सवो का धर्मशास्त्रो के आधार पर निर्णय।

(२) द्रव्यशुद्धि भाषा—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८४१। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार वस्तुओ की शुद्धि का वर्णन।

(३) वनयात्रा—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९१६ वि०। विषय—व्रज चौरासी कोस की परिक्रमा का वर्णन।

(४) श्री द्वारिकाधीश के शृगार—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल संवत् १८६५ वि०। विषय—श्री द्वारिकाधीश के शृगार का वर्णन।

(५) 'उत्सव निर्णय भाषा' तथा 'उत्सव सेवा प्रणाली' उत्सव निर्णय सहित—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धांतो के अनुसार वर्ष भर के उत्सवो का वर्णन। इस ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (१२–१२९) मे भी हुआ है, किंतु उसमें रचयिता को 'राधावल्लभी सप्रदाय' का होना बतलाया है।

इन ग्रंथो के आधार पर रचयिता वल्लभ संप्रदाय के गोस्वामी थे। अन्य परिचय नहीं मिलता। संभव है, प्रस्तुत ग्रंथो के रचयिता एक से अधिक पुरुषोत्तम हों। पर जब तक कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता तबतक उनको अलग अलग बताना संभव नहीं। ग्रंथो का विषय एक ही है। अतः प्रमाणाभाव के कारण इनको एक ही रचयिताकृत मान लिया गया है। रचयिता पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे से कोई एक है या नहीं, ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता।

२०८. पुरुषोत्तमदास—इनकी 'सिंहासन बत्तीसी' की खंडित प्रति मिली है। इसमें रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नहीं मिलता। यह सुप्रसिद्ध मूल संस्कृत ग्रंथ 'सिंहासन द्वात्रिंशिका' का अनुवाद है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नहीं मिलता। इस नाम के हुए रचयिताओ मे से ये कोई है या नहीं, इस विषय मे भी ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता।

२०९. पुरुषोत्तम—'विदिक्षय' (? विषदक्षय) तथा 'स्फुट रसादन' नामक इनकी खंडित रचना का विवरण लिया गया है। रचना मे अनेक प्रकार के विषो की औषधो और धातु मारने

तथा सोना वनाने की विधियो का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त कोई परिचय उपलब्ध नही। अपने नाम के पूर्व रचयिताओ से ये भिन्न जान पडते हैं। अत खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२१०. पूरनकवि—इन्होंने 'यमुना नवरत्न' की रचना की है जिसमे यमुना जी की स्तुति का वर्णन है। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का भी वृत्त अप्राप्त है। इस नाम के कुछ रचयिता पिछले खोज विवरणो मे आए हैं, पर ये उनसे भिन्न हैं या अभिन्न, निश्चयपूर्वक कुछ नही कहा जा सकता।

२११. पृथ्वीराज—इनकी "वेलरी या श्रीकृष्णदेव रुक्मिणी वेलि" राजस्थानी भाषा मे रची गई सुप्रसिद्ध रचना है, जिसमे श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह वर्णित है। इस वार ग्रथ की एक खडित प्रति मिली है जो टीका सहित है। टीका राजस्थानी भापा मे है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी इसके द्वारा कोई परिचय उपलव्ध नही होता, परतु ये वीकानेर के पृथ्वीराज राठौर है, जिन्होंने महाराणा प्रताप सिह को अकवरी अधीनता स्वीकार न करने के लिये लिखा था। ये अकवर के दरवार मे रहते थे और उस समय के प्रसिद्ध योद्धाओ मे थे। खोज विवरण (००–८७) और (दि० ३१–६६) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है।

२१२. प्रतापसिंह जी (सवाई)—इस त्रिवर्षी मे इनके निम्नलिखित ग्रथ मिले हैं :—

(१) प्रेम प्रकाश—रचनाकाल सवत् १८४८। लिपिकाल अज्ञात। विषय—प्रेम।

(२) नीति मंजरी—रचना काल सवत् १८५२। लिपिकाल अज्ञात। विपय—भर्तृहरिकृत सस्कृत ग्रथ 'नीतिशतक' का हिंदी अनुवाद। खोज विवरण (६–२०५ वी) मे इसका उल्लेख है।

(३) वैराग्यमंजरी—रचनाकाल सवत् १८५२। लिपिकाल अप्राप्त। विपय—भर्तृहरि कृत सस्कृत ग्रथ 'वैराग्य शतक' का हिंदी अनुवाद। खोज विवरण '(२२–८६) मे इसका उल्लेख है।

(४) स्नेहमंजरी—रचनाकाल सवत् १८५०। लिपिकाल दिया नही। विपय—प्रेम। पजाव खोज विवरण (२२–८६) मे इसका उल्लेख हो गया है।

(५) शृंगार मंजरी—रचनाकाल सवत् १८५२। लिपिकाल अज्ञात। विपय—भर्तृहरिकृत 'शृगार शतक' का हिंदी अनुवाद।

रचयिता जयपुर के सुप्रसिद्ध महाराज सवाई प्रताप सिंह उपनाम 'व्रजनिधि' हैं। ये महाराज सवाई जयसिह के पौत्र और महाराज जगतसिह के पिता थे। इनका राज्यकाल सवत् १८३५ से १८६० तक था। उपर्युक्त खोज विवरणो के अतिरिक्त इनका उल्लेख खोज विवरण (२३–३२२ ए, २६–३५२, २९–२७२) मे भी है।

२१३. प्रधान—ये 'अगद रावण सवाद' के रचयिता हैं। रचना की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल नही है। विपय ग्रथ के नाम से ही स्पप्ट है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता, पर जान पडता है कि ये खोज विवरण (१–८, ९–२५३, ६–२१४, २०–१५३ और २३–३४६) मे आए प्रधान हैं।

२१४. प्रधान—इनके कुछ 'कवित्त' मिले है, जिनमे अच्छे वुरे पचो और वैद्यो पर कटाक्ष किए गए है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२१५. प्रभुलाल—इनकी "बारहखड़ी" नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमें ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नहीं।
रचयिता का भी कोई विवरण नहीं मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

२१६. प्रमादास—इनकी 'दधिलीला' का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में श्रीकृष्ण और गोपियों की दधिलीला का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता न चल सका। प्रति अत्यंत अशुद्ध लिखी गई है, जिससे रचना की सरसता और मनोज्ञता में अवरोध उत्पन्न होता है।
रचयिता का विवरण अज्ञात है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

२१७. प्रवीन कवि—ये निम्नलिखित दो ग्रंथों के रचयिता हैं :—
(१) कृष्णवृत्त चंद्रावली—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात। विषय—पिंगल। इसमें दिए गए छंदों के उदाहरणों में श्रीकृष्ण चरित्र वर्णित है। विषय की दृष्टि से रचना उत्तम है।

(२) श्रीद्वारिकाधीश के विचित्र विलास—रचनाकाल संवत् १८१७। लिपिकाल अज्ञात। विषय—कांकरोली में स्थित द्वारिकाधीश मंदिर के ठाकुर जी और राय समुद्र तालाब का वर्णन।

रचयिता का वर्णन अप्राप्त है। खोज विवरण (६–२०७) में 'प्रवीन या कलाप्रवीन' नामक रचयिता का उल्लेख है, पर उसमें उनकी रचना, 'प्रवीन सागर' का उद्धरण नहीं दिया है। इसलिये निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता और वे एक ही हैं या भिन्न भिन्न। प्रस्तुत रचयिता खोज में नवोपलब्ध हैं।

२१८. प्राणचंद चौहान—इनकी 'प्रह्लादचरित्र' नामक रचना मिली है। रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। लिपिकाल संवत् १८८० है। रचयिता का कोई विवरण नहीं मिलता। ये खोज विवरण (३–९५, १७–१३४, २३–३१७, ४१–५१८) में आए प्राणचंद चौहान ही हैं। उक्त खोज विवरण में इनके संबंध में इतना ही दिया है कि ये चौहान क्षत्रिय थे और सं० १६६७ के लगभग वर्तमान थे।

२१९. प्राणनाथ (इंद्रावती और महामति)—इनका 'मारफतसागर' धामीपंथ का प्रधान ग्रंथ है, जिसमें भगवद्भक्ति, ज्ञानोपदेश और पंथ संबंधी अनेक बातों का वर्णन है। रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल संवत् १८५३ वि० है। पत्र ४३३ में 'मारफतसागर' की पुष्पिका में एक संवत् १७५१ भी दिया है जो उस प्रति का समय विदित होता है जिससे प्रस्तुत प्रति लिखी गई है। खोज विवरण (२०–१२९) में इस ग्रंथ का उल्लेख हो गया है।

रचयिता पन्नानरेश महाराज छत्रसाल के गुरु प्रसिद्ध हैं। उनके एक शिष्य केशवदास जी भी थे। पूर्वोक्त 'मारफतसागर' की पुष्पिका में केशवदास का और 'बड़ो कयामतनामा' में छत्रसाल का उल्लेख है। इनकी (रचयिता की) रचनाओं के साथ साथ 'इंद्रावती' और 'महामति' के नाम से भी रचनाएँ मिलती हैं। परंतु ये अलग अलग व्यक्ति न होकर रचयिता के ही अन्य नाम हैं। प्रस्तुत विवरण में आए 'नवरंगदास स्वामी' के विवरण में इस संबंध में पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती है। देखिए विवरण संख्या–१८३। उक्त विवरण में इनके संबंध में इस प्रकार लिखा गया है —

इंद्रावती श्री जी और महामति स्वामी प्राणनाथ जी की स्त्रियों के नाम नहीं, जैसा पिछले खोज विवरणों में लिखा है, वरन् उन्हीं के नाम थे। उनके निवास स्थान का नाम नवतन-पुरी (गुजरात), माता पिता का नाम धनबाई और केशवराई, भाइयों के क्रमशः नाम हरिवंश

जी, सामलिया जी, गोवर्द्धन जी, श्री मेहरा जी (स्वयं स्वामी प्राणनाथ जी का नाम) और उद्धव जी थे। पिता राजा के दीवान थे। गुरु का नाम श्री देवचद जी था। फूलराई और तेज-कुँवरि नाम की इनकी दो स्त्रियाँ थी।

पिछले खोज विवरणो मे इनके सवध मे जो कुछ भ्रजजनक वातें लिखी गई हैं, प्रस्तुत विवरण से अव उनका निवारण हो जायगा। इनके लिये द्रष्टव्य है, खोज विवरण (२०–१२६, ६–९०, २६–३४६, ४१–१४०, दि० ३१–६५, २९–२६९, ९–२२५, ३२–१६८, ३८–१०९)।

प्रस्तुत ग्रथ वहुत वडा है, जिसके लगभग १५ भाग है। इनमे हिंदू और मुसलमान धर्मों की दृष्टि से रचनाएँ दी गई हैं। वेद, वेदात, कुरान तथा भक्तिविपयक वातो का भी समावेश है। भाषाएँ अनेक प्रकार की प्रयुक्त हुई है। यथा उर्दू, हिंदी, गुजराती, राजास्थानी और सिंधी। शैली अधिकतर उर्दू है, परतु निर्गुण और सगुण भक्ति साहित्य के ढग पर भी रचनाएँ हुई हैं। इसमे जहाँ तहाँ मोमिनो को सवोधन करके ज्ञानोपदेश किया गया है।

२२०. **प्राणनाथ सोती**—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या १७।

२२१. **प्रेमदास**—ये 'मनमोहनलीला', 'प्रेमसागर', 'गेंदलीला या पचरतनी गेंद लीला' और 'नासकेतपुरान' के रचयिता है। इनका उल्लेख पिछले खोज विवरणो मे भी है, देखिए खोज विवरण (६–९३ ए, वी, डी) और (४१–५१०)। विपय, रचना काल और लिपिकाल का विवरण नीचे दिया जाता है :—

(१) **मनमोहनलीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की गेंद लीला और शिव दरसन लीला का वर्णन।

(२) **प्रेमसागर**—रचनाकाल सवत् १८२७। लिपिकाल दिया नही। विषय—श्रीकृष्ण और गोपियो के रास का वर्णन।

(३) **गेंद लीला या पंचरत्न गेंद लीला**—इसकी दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल संवत् १८४५। लिपिकाल केवल एक मे सवत् १९१७ वि०। विपय—श्री कृष्ण की गेंद-लीला का वर्णन।

(४) **नासकेत पुरान**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—नासकेत पुराण की कथा का वर्णन।

रचयिता का प्रस्तुत ग्रथो द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर उपर्युक्त पिछले खोज-विवरणो के अनुसार ये अग्रवाल वैश्य, आजमगढ निवासी, रामानुज सप्रदाय के अनुयायी और सवत् १८२७ के लगभग वर्तमान थे।

२२२. **प्रेमरंग**—इनकी दो रचनाएँ "आभास रामायण" और "गरवावली रामायण" मिली हैं। दोनो रचनाएँ वाल्मीकि रामायण के आधार पर रची गई हैं। प्रथम ग्रथ की दो प्रतियाँ मिली है, जिनमे रचनाकाल सवत् १८५८ है। लिपिकाल एक ही प्रति मे सवत् १८६७ दिया है। दूसरे ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल के कोई उल्लेख नही। यह सोरठराग मे है।

रचयिता नागर ब्राह्मण थे और काशी मे रामघाट पर स्थित राममदिर मे ठाकुर जी को गाना सुनाया करते थे। ये हनुमान जी के भी भक्त थे। अन्य परिचय नही मिलता। परतु नागर ब्राह्मण होने से ये गुजराती जान पडते हैं। 'गरवावली' रचना से उक्त वृत्त ज्ञात होता है। इसकी रचना पच्छिमी हिंदी मे हुई है, जिसमे गुजराती शब्दो का भी समावेश है। 'आभास रामायण' मे इन्होने हिंदी उर्दू मिश्रित रचना भी की है :—

"लवकुश ग्रहें श्री राम सुनें पुर नर मुनि बीच । रघुनाथ ने किया भी आखर मतलब भया ।।१३।।
एक अवधपुरी भरी पुरी जरजरी निशान । एजादिल दमें अमिदे मुतलब में गम गया ।।१४।।"

पिछले खोज विवरणो (४१–१८८) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है, पर इनमे इनका कोई विवरण नही मिलता।

२२३. फकीर सिंह और मनिकठ मनि—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनके नाम से 'अमरु-पच्चीसी' का विवरण लिया गया है, जो सुप्रसिद्ध सस्कृत ग्रथ का हिंदी रूपातर है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल सवत् १७८२ और लिपिकाल सवत् १८८७ है।

रचयिता वैश्य वर्ण के थे। इससे अधिक इनका कोई परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरण (४१–१४७) मे इनका उल्लेख है। उसके अनुसार ये वास्तव मे ग्रथ के रचयिता नही हैं। ग्रथ के रचयिता 'मनिकठ मनि' है, जो इनके आश्रय मे रहते थे। 'मनिकठ मनि' के लिये प्रस्तुत विवरण मे सख्या २७३ द्रष्टव्य है।

२२४. फणि नृपति—इस त्रिवर्षी मे इस रचयिता के नाम से पिंगलविषयक एक बिना नाम का तथा खडित ग्रथ (?वा० भू०) मिला है। ग्रथ की रचना यद्यपि सस्कृत मे है तो भी हिंदी मे प्रयुक्त होने वाले वृत्तो, यथा—दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया, कुडलिया आदि का भी इसमे वर्णन मिलता है। भाषा भी सरल सस्कृत है। इसी कारण इसका विवरण लिया गया है। यह पत्राकार रूप मे है और प्रत्येक पत्र के दाहिने किनारे कोनो पर "वा० भू०" लिखा है जिससे इसका नाम "वाग्भूषण" होने का अनुमान होता है। रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता फणिनृपति है। कही कही 'फणिपति' और 'फणिनायक' नाम भी मिलते हैं। जान पडता है, ये नाम वास्तविक रचयिता के न होकर पिंगल ऋषि के है, जिन्होंने पिंगल शास्त्र की रचना की।

२२५. फणींद्र मिश्र—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या १८।

२२६. फेकद्विज—इनकी 'चिरई चेतनी' नाम की रचना मिली है। ग्रथ मे विशद शृगार का वर्णन है। इसकी एक विशेषता यह है कि इनके प्रत्येक दोहे मे गुप्त नामरूप अथवा श्लेष से एक पक्षी का नामोल्लेख किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता के सबध मे केवल इतना ही विदित होता है कि ये किसी राजसभा मे रहते थे :—

"कहत 'फेक द्विज' समुझि चित पेम करौं विश्राम।
नृपति सभा मे बैठि के 'चिरइ चेतनी' नाम।।"

रचयिता और रचना के नाम इसी दोहे से विदित हुए है।

प्रस्तुत रचना साहित्यिक तो है ही, साथ ही साथ इसके द्वारा अनेक पक्षियो के नाम ज्ञात होते है। ये पक्षी अधिकतर साहित्य मे स्थान पाते रहे है। प्राचीन साहित्य मे तो इनका विशिष्ट स्थान था। सप्रति इस ओर मद प्रगति है, पर आशा है, आगे साहित्य जगत् मे इनका समुचित सम्मान होगा और प्रस्तुत रचना का भी आदर होगा।

२२७. बंशीधर (पंडित)—इनका छपा हुआ ग्रथ 'भोज प्रबधसार' मिला है। इसमे राजा भोज और उनकी रानी लीलावती की विद्याभिरुचि का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। मुद्रणकाल सन् १८७७ ई० है। ग्रथ खडी बोली गद्य मे है।

रचयिता ने अपने तथा ग्रथ-रचना के सबध मे पुस्तक के मुख पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है :—

"श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिम देशाधिकारी श्रीयुत् नव्वाव लेफ्टिनेंटगवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार श्रीयुत विद्या विज्ञ श्री साहब डैरेक्टर आफ पब्लिक इन्सट्रक्शन वहादुर के सरिश्तह मे पडित वशीधर ने सस्कृत भोज प्रबध और उसके अनुयायी ग्रथो से सङग्रह करके वनाया उसको अवधदेशीय पाठशालाओ के विद्यार्थियो के लिये नार्मल स्कूल के थर्ड मास्टर पडित कालीचरण ने जहाँ तहाँ अशुद्धियाँ बनाकर शुद्ध किया"

मुद्रण यत्रो एव हिंदी गद्य इतिहास की दृष्टि से प्रस्तुत ग्रथ का विशेष महत्व है। तत्कालीन पाठशालाओ मे किस प्रकार के उपयोगी ग्रथो का पठन-पाठन कराया जाता था, इस सबध मे भी जानकारी प्राप्त होती है।

खोज मे रचयिता नवोपलव्ध है।

२२८. बखत सिंह (राजा)—'इश्कशतक' इनकी प्रेमविषयक उत्तम रचना है। इनका यह प्रेम ईश्वर के प्रति ही है, पर सासारिक प्रेम की ओर भी कुछ झुका जान पडता है —

"बखत बरन दूहुन विषें कही इश्क की रीति।
जो बाचें समझें अरथ लगें ब्रह्म सो प्रीति॥"

यहाँ 'दूहुन' (दोनो) शब्द से सासारिक प्रेम की ओर भी लक्ष्य जान पडता है। रचना हिंदी और उर्दू मिश्रित भाषा मे की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का केवल इतना ही पता चलता है कि ये राजा थे, और किसी उमेदसिंह महाराज के पुत्र थे। स्थान तथा अन्य बातो का कोई पता नही चलता।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२२६. बदलीदास—इनका 'अनभौ प्रकास' ग्रथ मिला है। ग्रथ मे संत मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सवत् १६५० वि० है।

रचयिता वदली दास है। इनके गुरु का नाम जलाली था और ये सतनामी सप्रदाय के अनुयायी थे :—

"'जगजीवन' सुष मूल सूल हरन निज दास को।
होहु नाथ अनुकूल निज सुत सेवक जानि मोहि॥४॥"

इससे पता चलता है कि जलाली श्री जगजीवन स्वामी के पुत्र थे।

इन्होने निर्गुण और सगुण दोनो सिद्धातो का समान रूप से वर्णन किया है। खोज विवरण (३५–७) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख है।

२३०. बनादास—ये निम्नलिखित चार ग्रथो के रचयिता है —

(१) अनुराग विवर्द्धक रामायण—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६२२। विषय—रामचरित्र वर्णन।

(२) मात्रा मुक्तावली—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १६२०। विषय—ईश्वर भक्ति तथा ज्ञानोपदेश। खोज विवरण (२०–११ एन) मे इसका उल्लेख है।

(३) ब्रह्मायन द्वार—रचनाकाल सवत् १६२६। लिपिकाल दिया नही। विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश। खोज विवरण (२०–११ आई) मे इसका उल्लेख है।

(४) विज्ञान मुक्तावली—रचनाकाल अस्पष्ट है, पर अनुमान से सवत् १६२४ जान पड़ता है। लिपिकाल भी यही है। दोनो कालो मे एक मास का अतर दिखाई देता है। अत प्रतिलिपि भी रचयिता के समय में ही हुई है। विषय—ज्ञानोपदेश। सभवत यह रचना खोज-विवरण (२०–११ जी) मे आई, 'ब्रह्मायन ज्ञान मुक्तावली' ही है।

रचयिता का वृत्त इन ग्रथो द्वारा नही मिलता। उपर्युक्त पिछले खोज विवरण (२०–११) के अनुसार ये क्षत्रिय थे और पश्चात् साधु होकर अयोध्या मे रहने लगे थे।

ग्रथस्वामी (श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा) से इनके संबंध में निम्नलिखित प्रकार से ज्ञात हुआ है —

"ये गोंडा (अवध) जिला वासी थे। पीछे विरक्त होकर अयोध्या में आकर रहने लगे थे। इनके रचे लगभग ६१ ग्रंथों का पता चला है। रचनाएँ संवत् १६०० से लेकर संवत् १६८७ तक की मिलती हैं।"

प्रस्तुत रचनाएँ संवत् १६३७ के पहले की हैं। अत विवरण के अतर्गत आती हैं। इसके पश्चात् की रचनाओं के विवरण नियमानुसार नहीं लिये जाते हैं। इसी कारण इनके अन्य ग्रंथ छोड दिए गए हैं। इसमे सदेह नहीं कि ये प्रतिभासपन्न कवि, प्रौढ विद्वान और उच्चकोटि के रामोपासक भक्त थे।

२३१. बलदेव कवि—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–१६।

२३२. बलरामदास—इनका उल्लेख भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–२०।

२३३. बलिराम—ये 'विवेक बल्ली' के रचयिता हैं। रचना मे ज्ञानोपदेश वर्णित है। इसकी प्रस्तुत प्रति द्वारा रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२३४. गो० श्री वल्लभ जी—इनके 'रेखता तथा कीर्तन' मिले हैं, जिनका विषय शृगार है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय उपलब्ध नहीं। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२३५. वल्लभ रसिक—इस रचयिता की 'बारह बाट अठारह पैंडे' नामक रचना का इस बार भी विवरण लिया गया है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (१२–१४) में भी हुआ है। विषय, राधाकृष्ण का युगल स्वरूप वर्णन है। साहित्यिक दृष्टि से यह उत्तम रचना है।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणों के अनुसार ये स्वामी हरिदास के शिष्य थे। जन्मकाल सवत् १६८१ दिया है, देखिए खोज विवरण (००–६७, ९–३२६, १२–१४)।

२३६. बहोरन द्विज—इनकी 'अद्भुत रामायण' की खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे सीता जी द्वारा सहस्रबाहु रावण के मारे जाने का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अप्राप्त है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये कुलीन ब्राह्मण थे और सभवत सीता जी के भक्त थे :—

"दीज वर विमल कुलीन सुकवि 'बहोरन' नामरत।
जनक सुता आधीन कहत तासु महिमा कछुक॥"

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२३७. बालकृष्ण वैष्णव—इन्होने प्रसिद्ध रवि सूरदास के दृष्टिकूटो की भाषा टीका की है। टीका का काल तथा इनकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल दोनो अज्ञात है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। विवरण कर्ता ने इनको भावनगर निवासी तो लिखा है, पर यह नही बतलाया कि किस सूत्र से यह ज्ञात हुआ।

इनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रथ के साथ खोज विवरण (००–६) मे है, जिसके अनुसार ये गो० गिरिधर दास के शिष्य, वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी और सवत् १८८५ मे वर्तमान थे। इनका पूरा नाम वालकृष्ण दास था।

२३८. **विट्ठलदास**—'रामनाम गुण सागर' नाम से इनकी रचना मिली है। रचना मे राम माहात्म्य का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १७६५ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा है।

२३९. **गोस्वामी विट्ठलनाथ**—इनके 'यमुनाष्टक की टीका' और 'चतु श्लोकी टीका' के विवरण लिए गए है। ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही मिलते। 'यमुनाष्टक' का उल्लेख खोज विवरण (३२–७२ ए) मे भी है।

रचयिता सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीवल्लभाचार्य के पुत्र प्रसिद्ध हैं। देखिए, खोज विवरण (६–१९८, ६–२००) और (३२–७२)। प्रस्तुत खोज मे इनके सबध मे विशेप कुछ ज्ञात नही हुआ।

२४०. **बिहारी रमणेश**—इनका 'रामायण माहात्म्य' ग्रथ मिला है, जिसमे रामचरितमानस का माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १९३८ दिया है।

रचयिता अयोध्या के महत रसिकेश के शिष्य थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। पिछले खोज-विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर उनमे से ये कोई हैं या नही, कुछ कहा नही जा सकता।

२४१. **बैजनाथ**—इनके 'नीलकठ स्तोत्र' का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे नीलकठ महादेव की स्तुति है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२४२. **बोधदास, बोधादास या बोधीदास**—इस त्रिवर्षी मे इनकी 'झूलना' नामक रचना की एक खडित प्रति मिली है। ग्रथ का उल्लेख पिछले खोज विवरण (९–३३) मे हो चुका है। इसमे सतमतानुसार ज्ञान और भक्ति का वर्णन है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही हैं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। इनके लिये देखिए, खोज विवरण (२३–६५, २९–५५, २६–७१) और (दि० ३१–१४)।

२४३. **बोधलाल**—इनका पता प्रथम वार लगा है। 'सोनालोहावाद' नाम से इनकी मनोरजक रचना मिली है। रचना मे सोने और लोहे के विवाद का वर्णन है, जिसमे दोनो वरावर ठहरते हैं। विवाद का अत स्वय भगवान् श्रीकृष्ण ने किया। समाज की ऊँच नीच की विपमता मिटाने मे प्रस्तुत रचना सहायक हो सकती है। यह ठेठ ग्रामीण भापा मे रची गई है, जिसमे छदो का भी कोई नियम नही। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता के नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलव्ध नही।

२४४. **ब्रह्मज्ञानेंदु**—इनका 'व्रजविहार (द्वितीय सोपान)' नामक वृहद् ग्रथ मिला है। ग्रथ मे भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण की व्रज लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १८४४ वि० है।

रचयिता के वृत्त के सवध मे ग्रथ द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये किसी शुक्राचार्य के शिष्य थे। पिछले खोज विवरण (९–३७) मे वेदातविपयक 'ब्रह्म विलास ग्रथ' के साथ इनका उल्लेख है, पर उसमे भी इनका कोई विशेप परिचय नही मिलता।

२४५. भगवतदास—इनका उल्लेख भूमिका भाग में हो गया है, इन देखिए भूमिका भाग में संख्या–२१।

२४६. भगवतदास—इनकी 'राम सावित्री' नामक रचना मिली है, जिसमें श्रीरामचन्द्र के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत की लीलाओं एवं घटनाओं संबंधी निविदनों का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९१२ वि० है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नहीं मिलता। ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (२६–५२) में हो चुका है।

२४७. भगवतदास—इनके 'दीपरामायण' ग्रंथ का विवरण लिया गया है। इस में स्कंद पुराण के आधार पर रामचरित वर्णित है। रचनाकाल का पता नहीं। लिपिकाल संवत् १८९९ है।

रचयिता ने अपना इतना ही परिचय दिया है कि उसका निवास स्थान अयोध्या से दक्षिण था। पिछले खोज विवरणों में इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर इनमें से किसी के साथ इनका साम्य स्थापित करने के लिये निश्चित प्रमाण नहीं मिलते। संभव है, पूर्ववर्ती रचयिता और ये एक ही हो।

२४८. भगवतदास—इनका 'प्रयाग शतक भाषा' नाम से छपा हुआ ग्रंथ मिला है। ग्रंथ में प्रयाग माहात्म्य का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९१९ दिया है।

रचयिता प्रयाग में रहते थे और संभवत टहलदास जी के शिष्य थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। पिछले खोज विवरणों में उल्लिखित इस नाम के रचयिताओं में से ये एक है या नहीं, कहा नहीं जा सकता।

२४९. भगवतदास—इनके 'बोधरतन' नामक ग्रंथ की खंडित प्रति मिली है, जिसमें रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नहीं है। ग्रंथ का विषय वेदांत है।

रचयिता के संबंध में इतना ही पता चलता है कि ये रामानुज संप्रदाय के थे। खोज विवरण (२३–४४) में इनके प्रस्तुत ग्रंथ का उल्लेख है, पर वृत्त इनका उसमें भी नहीं दिया है।

२५०. भगवानदास—'रमलसार' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमें रचनाकाल का उल्लेख नहीं। इसकी प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल संवत् १८९९ है।

रचयिता का परिचय अज्ञात है। खोज विवरण (३५–११ ए, बी, सी) में इनके प्रस्तुत ग्रंथ का उल्लेख हो गया है। पर वृत्त उसमें भी उपलब्ध नहीं।

२५१. भगवानदास 'निरंजनी'—ये निरंजनी संप्रदाय के अनुयायियों में प्रसिद्ध हैं। 'गीता माहात्म्य' नाम से इनके ग्रंथ का विवरण लिया गया है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। खोज विवरण (२३–४२ ए, बी, सी) में इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता उपर्युक्त खोज विवरणों के अतिरिक्त अन्य खोज विवरणों (६–१३६, २६–४८) तथा (प० २२–१३) और (२६–३६ ए, बी, सी, डी, ३८–१० बी) में भी उल्लिखित हैं, जिनके अनुसार ये वारल विहटा खेतवान निवासी, अर्जुनदास के शिष्य और संवत् १७०० में वर्तमान थे।

इस बार इनका कोई विशेष विवरण नहीं मिला।

२५२. भगवान (भगवान हित रामराय)—ये पिछले खोज विवरण (४१–१५७) में उल्लिखित भगवानदास है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये माधव गौड़ेश्वर संप्रदाय के आचार्य के शिष्य थे। ये एक राजा (संभवत जयपुर के) थे, जिन्होंने गोवर्द्धन में मानसी गंगा का पक्का घाट और हरदेव जी का मंदिर बनवाया। ये अकबर बादशाह के समकालीन थे।

रचनाओ मे इन्होने अपना उल्लेख 'भगवान हितु रामराय' नाम से किया है। उक्त नाम मे प्रयुक्त 'हितु' शब्द को प्रतिलिपिकर्त्ताओ ने भ्रमवश 'हित' लिखा, जिससे इनका हितानुयायी होने का सदेह हुआ। परतु यह ठीक नही। ये जैसा कि ऊपर कहा गया है माध्व गौडेश्वर सप्रदायानुयायी थे।

इस त्रिवर्षी मे इनकी 'रुक्मिणीमगल' और 'प्रह्लादचरित्र' नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। रचनाओ का विषय उनके नामो से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचनाओ द्वारा रचयिता के सबध मे नवीन जानकारी कुछ नही होती।

२५३. भट्टोत्पल—इन्होने वराह मिहिराचार्य कृत ज्योतिष विषयक सुप्रसिद्ध सस्कृत ग्रथ 'बृहत्सहिता' का हिंदी गद्य मे अनुवाद किया है। टीका का रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८४८ है।

रचयिता का केवल इतना ही वृत्त मिलता है कि ये किसी महाराजकुमार अचलसिंह के आश्रित थे। सभवत ये खोज विवरण (३८–११) मे 'प्रश्नज्ञान' के रचयिता महोत्पल है।

२५४. भड्डली—इनके नाम से 'भड्डली ज्योतिष टीका' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति आदि और अत मे खडित हो जाने के कारण इसका और रचयिता का नाम ठीक ठीक विदित न हो सका। ग्रथ मे जहाँ तहाँ भड्डली को सबोधित किया गया है, जिससे रचयिता कोई दूसरा ही विदित होता है परतु प्रस्तुत विषय पर भड्डली की भी रचनाएँ पाई जाती है, अत इसी अनुमान पर इसका नाम 'भड्डली ज्योतिष' रखा गया है और रचयिता का भड्डली।

मूल ग्रथ पद्य मे है, जिसकी हिंदी गद्य मे टीका की गई है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही। रचयिता का जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है, कोई परिचय नही मिलता। पिछली खोज मे भी इनके सबध मे कोई निश्चित बात ज्ञात नही हुई।

पिछले खोज विवरणो (३५–९०, २६–४६, ००–९८, दि० ३१–२३, १२–२०, ३८–७) तथा (४१–५६९) मे भी इनके कुछ ग्रथो का उल्लेख है।

२५५ भरसी मिश्र रामनाथ पंडित—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–२२।

२५६. भवानी—इनकी 'बारहमासी' मिली है, जिसके अन्य नाम 'राम जी के बारहमासा' और 'कौशिल्या की बारहमासी' भी हैं। ग्रथ में रामचद्रजी के वनगमन पर कौशिल्या का पुत्रवियोग वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९३३ वि० है। रचना लावनी ढग की है।

रचयिता अयोध्या मे रहते थे। अन्य विवरण नही मिलता। खोज विवरण (२६–५८) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ आ चुका है।

२५७. भारतसिंह या भारथसाहि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–२३।

२५८. भीम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो चुका है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–४०।

२५९. भीम—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, अत देखिए भूमिका भाग मे सख्या–२४।

२६०. भीमसेन—'चक्रव्यूह' नाम की इनकी रचना मिली है, जिसमे महाभारतातर्गत अभिमन्यु की लडाई का वर्णन है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १९०७ है। रचना साधारण है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२६१. भीष्म—इनकी 'माधव विलास' या 'माधवानल कामकन्दला' नाम की रचना का विवरण लिया गया है। ग्रंथ में माधवानल कामकन्दला की प्रेमकथा का सरल सरस वर्णन है। साहित्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। रचनाकाल दिया तो है पर ग्रंथ के खंडित होने के कारण अपूर्ण है। अनुमान से संवत् १८०० विदित होता है —

० ८ १
"नभ वसु विधु वरष गणिए सुपद कार्तिकमास।
सुर गुर सुकुल त्रयोदसी कीनो ग्रंथ प्रकास॥"

लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के वृत्त का अंश भी खंडित है। जो कुछ उपलब्ध है उसके अनुसार ये पुष्पावती के राजा गोविंद चंद के आश्रित थे। इन्होंने अपने इसी आश्रयदाता की जुवती (स्त्री) के कहने पर प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की —

"अति पुनीत पुष्पावती पुरी रुचिर सब काल।
पुन्य पुंज तहँ अवतरयो गोविंद चंद भुआल॥
जुवती तिहि क्षितिपाल की कहे सुकवि से सा... ।
...सील जोवन गुण सो सब क्यो कहि जात॥"

शेष वृत्त अप्राप्त हैं। खोज में ये नवोपलब्ध है।

२६२. भुआल—इस रचयिता के 'भगवतगीता' और 'भूगोलपुराण' नामक दो ग्रंथ मिले हैं। प्रथम ग्रंथ गीता का अनुवाद है और दूसरे में पुराणों के आधार पर सृष्टि का भूगोल वर्णन किया गया है। रचनाकाल गीता में दिया तो है पर वह अस्पष्ट है —

"संवत सुनै कहै परावण। सहस्र सप्त तीन्ह कहो अन॥
मकमस जो कौसल पछ भएव। दुतीए अरच रह पुरा गएव॥"

यह ग्रंथ खोज विवरण (१७–२७) में आ चुका है, जिसमें रचनाकाल संवत् १७०० निर्णीत हुआ है। लिपिकाल केवल 'भूगोल पुराण' में संवत् १८६२ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं मिलता। उपर्युक्त खोज विवरण में भी इनका कोई विवरण नहीं दिया है। प्रस्तुत ग्रंथों के प्रारंभिक अंश एक दूसरे से मिलते है, अत इसी आधार पर इनको इन दोनों ग्रंथों का रचयिता मान लिया गया है।

२६३. भूषण—ये छत्रपति श्री शिवाजी महाराज के आश्रय में रहनेवाले सुप्रसिद्ध महाकवि हैं। इस बार इनके 'महाकवि भूषण के कुछ नवीन छंद' नाम से ३१ छंद मिले हैं। ये छंद सुप्रसिद्ध साहित्यिक पं० मयाशंकर जी याज्ञिक द्वारा काशी नागरीप्रचारिणी सभा को प्रदत्त 'याज्ञिक संग्रह' में सुरक्षित हैं। संग्रह के आदि में एक टिप्पणी निम्नलिखित प्रकार से है —

(१) यह ३१ छंद पं० रामनरेश त्रिपाठी को सिहोर निवासी पंडितवर गोविंद गिल्लाभाई काठियावाडी से प्राप्त हुए हैं। उन्होंने 'शिवाजी रासक' भेजा था उसके अन्य छंद 'भूषण ग्रंथा-वली' में मौजूद है।

(२) कुछ छंदों में भूषण का नाम नहीं है, लेकिन उनके रचयिता भूषण हैं, इसमें संदेह हो सकता है।

(३) छंद नं० २५ में 'इसलाम', 'रसियान' शब्दों का व्यवहार होने से यह छंद भूषण रचित होने में संदेह है।

(४) छंद नं० २० का अंतिम चरण भूषण ग्रंथावली के एक छंद से बिल्कुल मिलता है।

ये छंद 'प्रभा' (मासिक पत्रिका) में भी प्रकाशित हुए हैं। रचयिता का इनके द्वारा कोई नवीन वृत्त नहीं मिलता।

२६४. भोलानाथ—इनके 'सुमनप्रकाश' ग्रथ मे रस, नायिका भेद और काव्यागो का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। विपय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

रचयिता का वृत्त अस्पष्ट है, पर खोज विवरण (३२–२६) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है, जिसके अनुसार ये भरतपुर के रहनेवाले और वहाँ के राजा नरहरिसिंह के आश्रित थे।

२६५. मंडन—'वारामासी' नाम से इनकी खडित रचना मिली है। रचना का विपय विरह श्रृंगार है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का भी कोई वृत्त नही मिलता। सभवत ये बुदेलखड निवासी तथा राजा मगददेव के आश्रित सुप्रसिद्ध मडन हैं, देखिए, खोज विवरण (६–७२, २०–१०३, २३–२६५) और (२६–२९२, ४१–१७६)।

२६६. मगनजी—इनकी 'वारहमासी' नाम से विरह श्रृगार विषयक रचना मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

२६७. मटुकमनि—इनकी 'गोविंदस्तुति' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा है।

२६८. मतिराम—इन्होंने दूलह कवि कृत 'कठाभरन' की गद्य मे 'टीका' की है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

इनका कोई वृत्त नही मिलता। परतु ये महाकवि मतिराम से भिन्न वहुत इधर के जान पडते हैं। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

२६९. मतिराम—इनका 'वरवा' छदो मे रचा हुआ नायिका भेद विपयक ग्रथ मिला है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसके कारण रचनाकाल, लिपिकाल के साथ साथ इसका नाम भी विदित न हो सका। पत्रो के कोनो पर "व० ना०" अक्षर लिखे मिलते हैं, जिनके आधार पर "वरवै नायिका भेद" नाम रख दिया गया है। खोज विवरण (२३–२७६) मे इसका उल्लेख इसी नाम से हुआ है।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति से रचयिता के वृत्त के सवध मे कुछ पता नही चलता, पर उक्त खोज-विवरण से ये सुप्रसिद्ध महाकवि मतिराम विदित हुए।

२७०. मथुरादास कवि—ये खोज मे नए मिले है। 'नीति विलास' नामक इनकी रचना का विवरण लिया गया है। रचना का विपय नाम से ही स्पप्ट है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १९२९ हैं। पुस्तक विपय की दृष्टि से अच्छी है।

२७१. मथुरानाथ भारद्वाज—इनके 'गीत गोविंद भापा पद्यानुवाद' ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे रचनाकाल का उल्लेख नही मिलता। लिपिकाल सवत् १८२५ है।

रचयिता का वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

२७२. मनसाराम—इनके नाम से दो रचनाएँ—'चिंतामणि या हरिनाम गुरुनाम चिंतामणि' और 'चौवीस अवतार को जस' नाम से मिली हैं। प्रथम ग्रथ मे हरि और गुरु के यश का वर्णन किया गया है और दूसरे मे चौवीस अवतारो का। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नही हैं।

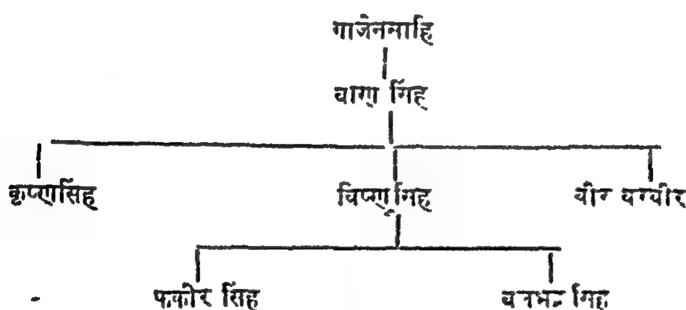
रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय अनुपलव्ध है। पिछले खोज विवरणो

में इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर प्रमाणाभाव से यह नहीं कहा जा सकता कि इनमें से ये कोई एक हैं या नहीं।

२७३. मनिकंठ मनि—इनकी रची 'वैताल पच्चीसी' इस नाम के मूल संस्कृत ग्रंथ का हिंदी पद्यानुवाद है। ग्रंथ की दो प्रतियों से विवरण लिया गया है। रचनाकाल संवत् १७८८ है। लिपिकाल दोनों प्रतियों के क्रमशः संवत् १८८१ और संवत् १८९२ है।

रचयिता का एक प्रति में 'मनिकंठ मनि' नाम लिखा है, जिससे ये मणि (त्रिपाठी) विदित होते हैं। त्रिपाठियों में 'मणि त्रिपाठी' श्रेष्ठ कहे जाते हैं।

ये गाजीपुर के अंतर्गत नगरानगर के राजा फकीरसिंह के आश्रित थे, जिनकी आज्ञा से प्रस्तुत ग्रंथ की उन्होंने रचना की। फकीरसिंह वंशकुल (नरवन वंश क्षत्रिय) के थे। इनकी वंशावली इस प्रकार है —



"गाधिपुर सरकार में नगरा नगर विख्यात। वहु भू सिरोमनि पुर वसैं आनदमय सुख गात॥
वेद विधि चारो वरण नर चलत वेद विचारि। रय नेम जो मग आपनी नीज धर्मरत सुख कारि॥
तहा राजनीति प्रतीति द्विज पद प्रेम उरमे चाहि। वंश वस सरोज पूरन भये गाजन साहि॥'

कुंडलिया

मरदाने ताको भयो 'वाणसिंह सुपधाम'। दाता दीन दयाल अति सुंदर तन ज्यौं काम॥
वाना केहरि को भये 'कृष्णसिंह' मरदान। ताको लहुरो विदित जग 'विस्नुसिंह' जगजान॥
दूनो ते लहुरो वहुरि भयो वीर 'वरवीर'। पातपने कालिपाल लखि गयो सो त्यागि शरीर॥
:o: :o: :o: :o: :o:
विष्णसिंह के पुत्र है करते दयो विचारि। 'फकीरसिंह' जेठो भयो जिन्ह रिपु हन्यो प्रचारि॥
अनुज भयो 'बलभद्रसाहि'। निज राज राखिये लाज साहि॥
श्री 'फकीर सिंहहि' दयो राजतिलक को भार। साम दाम दंड अरु भेद अनुपह कीति॥
:o: :o: :o: :o: :o:
कवि कोविद 'मनि कंठमनि' तहवा वसैं निसक। 'फकीरसिंह को' निरखि के करत कहायो अंक॥
वहु धन दै उन्हि कीन्ह निहोरा। वचन एक मानिये मोरा॥
अवर कथा मोसो न वचो सो। करु भाषा 'वयताल पचीसो॥"
(विनती यही एक द्विज मोरा) दूसरी प्रति में।

प्रस्तुत ग्रंथ का विवरण फकीर सिंह के नाम से भी लिया गया है। देखिए प्रस्तुत खोज विवरण में संख्या (२२३) और पिछले खोज विवरण में (२१-१८३)। परंतु अब वास्तविक रचयिता का पता चल गया है। फकीरसिंह रचयिता के आश्रयदाता मात्र थे। पुष्पिका में लिखे 'फकीर सिंह कारिते' से भी यही स्पष्ट है कि फकीर सिंह द्वारा बनवाया गया था।

रचयिता प्रस्तुत ग्रथ के साथ खोज विवरण (२३–२६६) पर भी उल्लिखित है, पर उसमे दिया गया विवरण सदेहोत्पादक है। उसमे ग्रथ से जो उद्धरण दिए गए है उनमे 'मनिकठ' का कही उल्लेख नही। पुष्पिका मे नीरतनलाल का उल्लेख है जिनका ग्रथारभ मे विवरण भी दिया है। इसके अनुसार ये आजमपुर ग्राम के निवासी भवानी साहु के पुत्र थे —

"है आजमपुर विदित ग्राम। सुख सपति आनद धाम॥
भूमि तिलक सम अति उदार। वेद विदित वाढे अचार॥
जहां चारि वर्न निज धर्म धारि। रथ नेमि चलत जो पथ विचारि॥
जप जोग जज्ञ नित करत दान। नितही सुनत घर घर पुरान॥
अगरवार के गोत सुभ तेहि पुर वसै अनेक।
गर्ग वंश घर एक है विदित धर्म की टेक॥
धर्म धुरंधर सीलजुत भए भवानी साहु।
मुदित जगहि लखि हित सदा अरि उर उपजत दाह॥
तिनके सुत तहं तीन मे लहुरे 'निरतनलाल'।
रूप काम सम कामतरु दाता दीनदयाल॥"

परतु जहाँ इतनी भिन्नता है वहाँ कुछ साम्य भी है। दोनो मे रचनाकाल एक ही है। तथा ग्रथात का एक दोहा भी मिलता जुलता है —

"साति सील के रुधिर ते त्रिपित कियो वैताल।
उन दीन्हो वस्तु सिद्धि तव हरषे विक्रमलाल॥
—प्रस्तुत प्रतियो मे सवत् १८८१ की लिखी।

सांति शील के रुधिर ते कीन्हो वृत्त वेताल।
उन्ह दीन्हे वहु सिधि वहुरि हर्षे विक्रमलाल॥
—प्रस्तुत प्रतियो मे सवत् १८९२ की लिखी

सातिसील के रुधिर को पिवत त्रिपित वैताल।
उन्ह दीन्हो वसु सिद्ध तव पाइ हरष भुआल॥
—खोज विवरण (२३–२६६)

उक्त खोज विवरण मे रचयिता का विवरण इस प्रकार है :—

"वैश्य, सवत् १७८२ के लगभग वर्तमान। आजमपुर निवासी। सूदन ने अपने 'सुजानचरित्र' मे इनका उल्लेख किया है।"

इन सब बातो से तो यही पता चलता है कि दोनो रचयिता एक ही हैं। निरतनलाल और फकीरसिंह उसके आश्रयदाता थे। उसने एक ही ग्रथ इन दो आश्रयदाताओ के नाम पर रचा है। हिंदी के अन्य कवियो ने भी ऐसा किया है, जैसे देव और पद्माकर। उपर्युक्त खोज विवरण मे इनको भूल से वैश्य लिखा है। ये ब्राह्मण ही थे जैसा कि ग्रथ के प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट है। एक विवरण पत्र के आदि मे 'मिश्र' शब्द भी लिखा है जो ब्राह्मणवाची ही है। सभवत इनके आश्रयदाता फकीर सिंह के नाम के साथ जो 'वैस' (वैस क्षत्रिय) शब्द प्रयुक्त हुआ है उसी ने यह भ्रम उत्पन्न किया है।

२७४. मनोहरदास—इनकी एक रचना 'वरन चरित्र' नाम से मिली है, जो दोहो मे है। प्रत्येक दोहे मे एक वर्ण (जातिगत, जैसे धोवी, ब्राह्मण, कायस्थ आदि) का नाम लेकर ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९३५ दिया है।

रचयिता का प्रस्तुत रचना द्वारा कोई पता नही चलता। पिछली खोज मे एक दूसरी रचना 'फूलचरित्र' भी मिली है, जो खोज विवरण (९–१९२, २६–२९६) मे आ चुकी है। उक्त खोज विवरणो मे इनके विषय मे इस प्रकार लिखा है :—

"सेवक जाति के चारण। स० १८५७ के लगभग वर्तमान। जोधपुर नरेश महाराज मानसिंह के आश्रित। इनको गुरु आयुस लाडलूनाथ ने एक लाख रुपये (? पसाव) और एक हाथी इनाम मे दिया था। उन्हें महाराज की ओर से एक गाँव भी मिला था।

खोज विवरण (२–१३) मे इनकी रची 'जस आभूपण चद्रिका' भी उल्लिखित है।

२७५. मलूकदास—इस त्रिवर्षी मे इनका 'साखी' ग्रथ मिला है, जिसमे भक्ति, उपदेश, नीति और चेतावनो आदि विपय वर्णित हैं। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता प्रसिद्ध महात्मा मलूकदास हैं, जो कडा मानिकपुर (इलाहाबाद जिला) मे रहते थे। प्रस्तुत ग्रथ उन्ही की गद्दी पर (कडा मानिकपुर मे) रखा रहता है। इस समय गद्दी के अधिकारी उन्ही के वशज श्री मथुरादास और महेशप्रसाद हैं। इन लोगो से पता चला कि ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मलूकदास जी के समय की है। इसके आरभ मे मलूकदास जी की 'साखी' है, जिनकी सख्या २७६ है। पश्चात् उनके वशज रामसनेही, कृष्णसनेही और कान्ह गुआल की साखियाँ है, जो क्रम से उनके उत्तराधिकारी हुए। रामसनेही की साखियाँ पद्रह है, कृष्णसनेही की एक और कान्ह गुआल की पैंतीस। इनके अतिरिक्त नराइनदास (मलूकदास जी के वशज) का भी एक पद मिलता है। ग्रथ की यह प्रति मलूकदास जी के हाथ की लिखी है, इसमे सदेह है, क्योकि कागद नया प्रतीत होता है, फिर भी हो सकता है कि प्रस्तुत प्रति मूल प्रति की नकल हो। लिपि कैथी है, जिसमे मात्राओ का उपयोग नही किया गया है। खोज विवरणो (६–१९८) (१७–१०६, ४१–१८८, ४–८०, ६–१८५, २६–२९०, ३२–१३८) मे भी रचयिता का उल्लेख हुआ है।

२७६. महम्मद औलिया और सरमद—इनके नाम से कुछ 'बैंत' मिले हैं, जिनमे साम्प्रदायिक (हिंदू-मुसलमान) द्वेप मिटाने के लिये ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

ग्रथारभ मे 'बैंत सरमद की' लिखा है, जिससे रचयिता सरमद जान पडते हैं, पर 'गालिब' और 'महमद औलिया' के भी नाम आते हैं। गालिब उर्दू के कवि प्रसिद्ध हैं। महम्मद औलिया के सबध मे कुछ ज्ञात नही।

प्रस्तुत रचना हिंदू मुसलमानो की एकता की दृष्टि से लिखी गई है। कहते हैं कि सरमद के उपदेशो का ही प्रभाव दाराशिकोह (औरगजेब के बडे भाई) पर पडा था जिससे वे हिंदू मुसलमानो की एकता के बडे समर्थक हो गए थे।

रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२७७. महरचद द्विज—ये 'रुक्मिणी मगल' के रचयिता हैं। ग्रथ मे श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७१६ है, लिपिकाल का पता नही।

रचयिता ने जो अपना वृत्त दिया है उसके अनुसार ये रूपनिधान नगर के निवासी थे और प्रस्तुत 'मगल' की रचना की —

"मंगल कियो हेत सौं साहिगग सुभ थान।
'महेरचद द्विज' जग सुन्यौ नगर रूप निधान॥"

अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२७८. महादास—'गनगौर के ख्याल' नाम से इनकी रचना मिली है, जिसमे गनगौर (चैत्र शुक्ल तृतीया) त्योहार के अवसर पर गाये जाने वाले गीतो का सग्रह है। गनगौर का त्योहार राजस्थान मे अधिक प्रचलित है। रचना की भाषा भी राजस्थानी (मारवाडी) है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९२३ वि० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता, पर ग्रथ की भाषा को देखने मे ये राजस्थान के विदित होते हैं। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

२७६. महाराज कवि—इन्होंने 'निघट मदनोदै' नामक ग्रथ की रचना की, जिसमे औषधो के नाम और उनके गुणो का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, जिससे रचनाकाल का कोई पता नही चलता। लिपिकाल सवत् १६०२ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२८०. महाबदास—'बाल चरित्र' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है, जिसमे श्रीकृष्ण की बाललीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है। सभवत आगे वाले रचयिता (सख्या—२८१) भी यही हैं।

२८१. महाबदास वैष्णव—इनकी 'रससिंधु' नामक रचना की दो प्रतियाँ मिली हैं। रचनाकाल किसी मे नही दिया है। लिपिकाल केवल एक प्रति मे है सवत् १८३५। विषय—वल्लभ सप्रदाय के सिद्धातो का वर्णन करना है।

रचयिता के सबध मे इतना ही पता चलता है कि ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे और गोकुल मे रहते थे। खोज मे नवोपलब्ध है।

सभवत ये पूर्व रचयिता 'महाबदास' (सख्या—२८०) है।

२८२. महीपति या महीप—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या—२५।

२८३. मातादीन शुक्ल—ये अजगरा (प्रतापगढ, अवध) निवासी और सवत् १६०३ के लगभग वर्तमान थे। पिछले खोज विवरणो मे इनका उल्लेख हो गया है। देखिए खोज विवरण (२६—२६७), (२३—२७४) और (३५—६१)।

(१) रससारिणी—रचनाकाल सवत १६०३। लिपिकाल सवत् १६२२। विषय—नायिकाभेद का सक्षिप्त वर्णन। इसकी दो प्रतियाँ मिली है। यह जगबहादुरीय यत्रालय, बलरामपुर (गोडा) मे छपी थी। श्री बाबू अजीतसिंह की आज्ञा से ग्रथ की रचना हुई। खोज विवरण (२६—२६७ एच० जी०) मे इसका उल्लेख है।

(२) रामायणमाला—रचनाकाल सवत् १८६६। लिपिकाल सवत् १६३१। विषय—रामचरित्र का सक्षेप मे वर्णन। यह नवल किशोर प्रेस मे छपा। खोज विवरण (२६—२६७ ई, एफ) मे यह उल्लिखित है।

(३) राम गीताष्टक—रचनाकाल सवत् १८६६। लिपिकाल सवत् १६३१ वि०। विषय—राम जी की स्तुति वर्णन। इसकी दो प्रतियाँ मिली है। एक नवलकिशोर छापेखाने की है और दूसरी जग बहादुरीय यत्रालय बलरामपुर (गोडा) की छपी है। खोज विवरण (२६—२६७ सी, डी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

पिछली दो रचनाओ से स्पष्ट है कि रचयिता सवत् १८६६ मे वर्तमान थे। और नवीन वृत्त कुछ नही मिलता।

२८४. माधवदास (मधवादास)—इनकी 'बालकाड और अयोध्याकाड युक्त' अध्यात्म रामायण' की एक प्रति मिली है। ग्रथ की उक्त प्रति द्वारा रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता का नाम प्रस्तुत प्रति मे मधवादास है। ये किसी दामोदर के शिष्य थे। ग्रथ द्वारा राम मतावलबी विदित होते हैं। सभवत ये खोज विवरण (प० २२—६०) मे आए 'मदालसाख्यान' के रचयिता माधवदास हैं। उसमे भी रचयिता के गुरु का नाम दामोदरदास मिलता है और वे दादू पथी एव १८वी शताब्दी मे वर्तमान थे।

२८५. **माधवदास**—ये 'तत्व चितामणि' के रचयिता हैं। ग्रथ का विषय भक्ति और ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नही।

रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता हैं, पर पता नही उनमे से ये कोई एक हैं या नहीं। पूर्ववर्ती रचयिता से ये भिन्न हैं। अत खोज मे नवोपलब्ध हैं।

२८६. **माधवदास**—इनकी निम्नलिखित रचनाएँ मिली हैं —

(१) **मुरली की लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की मुरली लीला का वर्णन।

(२) **दशमस्कध सक्षेप लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भागवत दशम स्कध की श्रीकृष्ण लीलाओ का सक्षेप मे वर्णन।

(३) **नारायण लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—अवतारो का वर्णन। खोज विवरण (६–१७७) मे यह आ गया है।

इन सब ग्रथो के नामो के आगे 'लीला' शब्द का प्रयोग है। अतएव ये एक ही रचयिता-कृत मान लिए गए है। इनके द्वारा रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता, पर खोज विवरण (६–१७७) मे आए माधवदास यही विदित होते है। उक्त विवरणो मे रचयिता का परिचय इसप्रकार दिया है —

'कायस्थ, वैष्णव, नागौद निवासी और १८वी शताब्दी मे वर्तमान। इनके लिये खोज-विवरण (१–७८) भी द्रष्टव्य है।

२८७. **माधवदास**—इनके नाम पर 'दानलीला' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। खोज विवरण (४१–१९५) मे इस नाम के एक रचयिता की दान लीला आई है, पर वह प्रस्तुत 'दानलीला' मे नही मिलती। भाषा भी उसकी राजस्थानी है। अत उसका रचयिता प्रस्तुत रचयिता से भिन्न है।

२८८. **माधवदास चारण**—इनका उल्लेख 'गुणरामरासो' तथा 'रामरासो' के साथ खोज विवरण (१–८०) मे हो गया है। उसके अनुसार ये दधिवरिया जाति के चारण, सवत् १६७५ के लगभग वर्तमान और मारवाड निवासी थे।

इनके उक्त ग्रथ की एक अपूर्ण प्रति इस वार भी मिली है, जिसमे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता के सबध मे भी इससे कोई विवरण नही मिलता।

२८९. **माधवदास भट्ट**—इनका 'सस्कृत हिंदी का कोश' मिला है। जो अमरकोश की ही शैली पर लिखा गया है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नही।

रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२९०. **माधवसिंह राजा (क्षितिपाल, छितिपाल, माधवनृप या नृप माधव)**—ये सुलतानपुर (अवध) के अतर्गत अमेठी के राजा थे। क्षितिपाल, छितिपाल, माधवनृप और नृप माधव नामो से भी ये रचनाएँ करते थे। ये बडे विद्याव्यसनी और काव्य रसिक थे। खोज-विवरण (२३–२५६) और (४१–१९८) मे इनके दो ग्रथो का उल्लेख है। इन्होंने बहुत से ग्रथो की रचनाएँ की, पर उनमे से अधिकाश सवत् १९३७ के पश्चात् रचित होने से विवरण के अतर्गत नही आती। इस बार निम्नलिखित दो ग्रथो के विवरण और लिए गए है —

(१) **रागप्रकाश**—रचनाकाल १७८० शकाब्द (सवत् १९१५) है। लिपिकाल दिया नही। विषय—राग रागनियो का सग्रह।

(२) **स्तुति**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—देवी-देवताओ की स्तुति।

रचयिता की रचनाएँ सवत् १९१५ से लेकर सवत् १९४५ तक की मिलती हैं, अत इसी के लगभग ये वर्तमान थे।

२९१. माधुरीदास कपूर—ये खोज विवरण (२–१०४, १२–१०५, ६–१९३, ९–१८०) और (३२–१३७, प० २२–६१) मे आए माधुरीदास है। उक्त विवरणों के अनुसार ये मथुरा (माधुरी कुड) के निवासी, सभवत १६८० के लगभग वर्तमान थे।

इस वार इनकी 'वनविहार माधुरी' के विवरण लिए गए है। ग्रथ मे रचनाकाल, और लिपिकाल उल्लिखित नही है। विपय—राधाकृष्ण का वन विहार वर्णित हैं। रचयिता का इसके द्वारा कोई नवीन वृत्त नही मिलता।

२९२. मानकवि या मुनिमान—खोज विवरण (२०–१०१, ३५–६६ और ४१–१९९) मे इनका उल्लेख हो चुका है। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये जैन, वीकानेर निवासी और सवत् १७३१ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत खोज मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ और मिली है —

(१) संयोगवत्तीसी—रचनाकाल सवत् १७३१, लिपिकाल दिया नही। विपय—नायिकाभेद का वर्णन। खोज विवरण (४१–१९९) मे इसका उल्लेख है।

(२) कवि विनोद—रचनाकाल सवत् १७४५, लिपिकाल अज्ञात। विषय—वैद्यक।

इनमे से दूसरी रचना नई है। इसमे रचयिता ने अपना वृत्त इस प्रकार दिया है —

"जाको गछ वासी प्रगट वाचक 'सुमतीमेर'।
ताको सिसै 'मुनिमान जी' वासी वीकानेर॥"

अर्थात् ये सुमतिमेर के शिष्य और वीकानेर के वासी थे। गछ का नाम अस्पप्ट है।

२९३. मानिक—इनके नाम से 'पाडे लीला' का विवरण लिया गया है। जिस स्थल पर इनका नाम आता है वहाँ श्लेप से इस नाम का 'मणि' (रत्न) अर्थ भी निकलता है। अत नाम मे कुछ सदेह सा है।

ग्रथ मे रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल सवत् १७११ है, जिससे इसकी प्राचीनता प्रकट होती है। विपय—भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण की पाडे लीला का वर्णन है। रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२९४. मिहिर या छत्रपति चौहान—ये 'समरसार' ग्रथ के रचयिता है। ग्रथ का विषय युद्ध ज्योतिप है। रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १९१२ है। रचयिता का नाम कुछ अस्पप्ट हैं। ग्रथ मे तीन नाम—'छत्रपति चौहान', 'वलिराम' और 'मिहिर' आते है —

"रजनीपति आदि गनै भट आदि किए ग्रह शेष वचै नवएक न ग्राम मे शत्रु सिवान कही।
नेत्रा रप्ट ८ वचैपुर मध्य रहैं मुनि ७ राम ३ यही पंथ जात सही।
वेदां ४ ग ६ वचै गृह मध्य रहै शर ५ शेप वचै निज सैन्य कही।
एह 'छत्रपति चौहान' भनै 'वलिराम' प्रताप ते सिद्ध यही॥९॥

जन्म पंचमे सप्तमे उदय अस्त स्वर जाहि।
'मिहिर कहे कवि काम सो संग न लीजै ताहि॥"

इस उद्धरण से पता चलता है कि सभवत छत्रपति चौहान का उपनाम 'मिहिर' था। 'वलिराम' नाम स्वतत्र है, जो या तो रचयिता के गुरु रहे होगे अथवा आश्रयदाता। इससे अधिक रचयिता का और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

२९५. मुकुंद (? शिवमुकुंद)—इनका "गगापुरान" ग्रथ मिला है, जिसमे भिन्न भिन्न विषय यथा—पूर्वजन्म की वात, नायिका भेद और ज्योतिष आदि का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति अपूर्ण है। उसमे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही। इसके रचयिता का नाम अन्वेपक ने मुकुद लिखा है, पर वास्तविक नाम 'शिवमकुद' जान पडता है, जो मगलाचरण के दोहे मे है :—

"श्रीगुरु चर्न शरोज रज शिर पर धारन कीन ॥
'सिव मुकुंद' वर गुन कहे सरस्वती वर दीन ॥१॥

इन्होंने व्याना (भरतपुर) के नरेश गगाप्रसाद के लिये इस ग्रथ की रचना की थी। अन्य विवरण अप्राप्त हैं। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

२९६. मुकुंद या रूपदेव्या—इनका 'विनय विहारी रुप उतसवाप्टक' मे विनयभूप की रानी राणावत द्वारा निर्मित मदिर के ठाकुर जी का वर्णन है। ये रानी कहाँ की थी, कुछ पता नही। मदिर का निर्माण सवत् १९०८ मे हुआ था। अत इसी समय के लगभग यह रचना भी हुई होगी। लिपिकाल सवत् १९०८ है।

रचयिता का नाम अन्वेपक ने मुकुद लिखा है, पर पुष्पिका मे 'रुप देवी' का नाम रचयिता के रूप मे आता है। सभव है, 'मुकुद' ने ही रुपदेवी के नाम पर यह रचना की हो। अन्य वृत्त अप्राप्त है।

२९७. मुकुंददास, जनमुकुंद (नददास)—मुकुददास या जनमुकुद के नाम पर 'भ्रमर-गीत' की एक प्रति और मिली है। पिछली वार खोज विवरण (२०–११३ एफ और २९–२४४ डी), मे इसका उल्लेख हो गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के सवध मे इस बार कोई नवीन विवरण नही मिला।

२९८. मुकुंदलाल—इनके नाम से 'पिंगल ग्रथ' का विवरण लिया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही। रचयिता के नाम का भी ग्रथ द्वारा कोई निश्चित पता नही चलता, पर अनुमान से 'मुकुदलाल' माना है। पत्रसख्या छह मे यह नाम आया है —

"वर्ण वर्ण के अर्धकरि तासम गुरु लहु तासु।
तासु मत्त गुरु वर्ण मिलि 'लालमुकुद' प्रकासु॥"

ग्रंथ की भाषा अपभ्रश है, पर कही कही शुद्ध हिंदी भी प्रयुक्त हुई है, यद्यपि इसका भी रुप प्राचीन है —

"लघु गुरु जासु मिलाइए तासु वर्ण गण तोण।
वर्ण मर्कटी भेदपुनि दुइते दूणे ठोण॥"

इससे रचयिता की प्राचीनता तो स्पष्ट रूप से प्रकट होती ही है, पर भाषा की दृष्टि से ग्रंथ भी महत्वपूर्ण है।

खोज मे रचयिता नवोपलब्ध है।

२९९. मुन्ना—इनकी 'सतान कल्प लतिका' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे वध्यारोग की औषधो आदि का वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता, परतु पुस्तक की भाषा देखने से ये २०वी शताब्दी के विदित होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक मे इन्होंने लुकमान हकीम के नुसखे भी लिखे है। खोज विवरण (२६–३११) मे इनका उल्लेख प्रस्तुत ग्रथ के साथ हो गया है।

३००. मेघराज (या मुनि मेघराज)—इनके 'मेघमाला' ग्रथ का विवरण लिया गया है, जो पिछले खोज विवरण (२६–३०२, पं० २२–६५ वी और २३–२७८) मे उल्लिखित है। उक्त खोज विवरण के अनुसार इनका उपनाम 'मेघमुनि' था और ये फगवाडा (कपूरथला राज्य) निवासी, श्वेतावर जैन और सवत् १८१७ के लगभग वर्तमान थे। इस बार गुरु परपरा और आश्रयदाता के सवध मे पता चला है, जो इस प्रकार है —

इनके आश्रयदाता फगवाड़ा (जालधर) के राजा 'भूरेमल चौधरी' थे। गुरु परपरा नीचे दी जाती है :—

जटमल
परमानंद
सदानद
नारायन
नरोत्तम
मुनिमेघराज (रचयिता)

"यह देस 'जलंधर' सोभा सुंदर नाम दुआवा ठौर कह्यौ ।
शुभदानपुन्य की यही ठौर है मानो सुरपुर आनि रह्यौ ॥
तामहि पंडित नर सोभै कवि भारी गीत व जंत्र न रंग रस्यौ ।
घर घर मंगल चार जु होवहि तामहि पर इक एह बस्यौ ॥५६॥
सकल रिधिकर सोभहे 'फगवाड़ा' शुभ थान ।
'तहांमेघ' कविता करी आछी विध मनि आन ॥५७॥
'भूरेमल' जो चौधरी फगवाड़ा को राइ ।
चतुर सैनकर सोभहे जिव ससि उडगन भाई ॥५८॥
सब कबियन सो वीनती कर मेघ कर जोरि ।
करो सुध इस ग्रथ को कह्यौ अधिक जिहि ठौर ॥५९॥

:o: :o: :o: :o:

श्री 'जटमल' मुनिस जी सब सब साधन राजा ।
'परमानंद' ससी जहे ग्रन्थन गुन साजा ॥
'सदानंद' भयो शिष्य ताहितें उपमा भारी ।
चौदह विद्या जुक्ति सुगुरु के अज्ञाकारी ॥
तासु शिष्य 'नारायन' नाम । ताको शिष्य 'सुनरोत्तम' ।
तिनकी दया भई मुझ पर । . . . . ।
७ १ ८ १
मुनि ससि वसु महि जान विक्रमादित संवत् आषत ।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभ भाषत ॥"

प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल १८१७ और लिपिकाल सवत् १९३९ है।

३०१. मुरलीदास—इनके दो ग्रथ 'ऊषालीला' और 'सुखदेवलीला' नाम से मिले हैं। ग्रथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है —

(१) ऊषाचरित्र—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८८८। विषय—ऊषाअनिरुद्ध की कथा का वर्णन।

(२) सुखदेव लीला—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री शुकदेव मुनि की कथा का वर्णन।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। परतु सतो और गुरु के प्रति आदर भावना व्यक्त करने के कारण ये कोई सत जान पडते हैं। सभवत ये खोज विवरण (२६–३१२) मे आए 'गुरुमहिमा' के रचयिता है। उक्त विवरण मे रचयिता को सतनामी सप्रदाय का अनुयायी और १६वी शताब्दी मे वर्तमान बताया है।

३०२. मुरलीदास—इनकी 'बारामासी' नामक रचना मिली है जिसका विषय शृगार है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। अपने पूर्ववर्ती और पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये भिन्न है या नही, कुछ निश्चित नही होता।

३०३. मुरलीधर (कविराई)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या २६।

३०४. मुरलीधर—इनके दो ग्रथ 'नल चरित्र' और 'रामचरित्र' मिले हैं। जिनका उल्लेख क्रमश खोज विवरण (१२–११७ और ३२–१४८) मे हो गया है। उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर ब्राह्मण, आगरा निवासी, दिनमणि के पुत्र और सवत् १८१४ के लगभग वर्तमान थे।

ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियो मे इनका विस्तृत विवरण मिलता है। वशवृक्ष इस प्रकार है —

परमानद सतावधानी (अकबर के काल मे तथा आश्रय मे)
कपूरचद
पुरुषोत्तम (शाहजहाँ काल तथा आश्रय मे)
प्रेमराज
पृथ्वीराज
दिनमणि (ज्योतिषी)
मुरलीधर (मुहमदशाह के आश्रित)

उपर्युक्त सभी लोग विद्वान् तथा कवि थे। परमानद (सतावधानी) गगा यमुना के बीच गभीरोपुरी मे रहते थे। पश्चात् कपूरचद अर्गलापुरी (कालिदी तट) चले गए। और तब से ये लोग वही रहने लगे। रचयिता दिल्ली के बादशाह मुहमदशाह के आश्रित थे। नादिरशाह का दिल्ली पर आक्रमण होने के कारण ये घर पर चले आए और राम भक्ति की ओर प्रवृत्त हुए —

"गगा जमुन के मधि गभीरो पुरीन को गाऊ है।
बहु कोट ऊँचो सुघर नीको परम उत्तम ठाऊ है॥
शुभ सरोवर तट विराजत सिद्ध बीरेश्वर थली।
उन अधिप को धर्मज्ञ कीनो कृपा करि भातिन भली॥
माथुर बसै है जामकै तहां सजे सदन सुहावनें।
मुनि से लसत है निगम आगम गुनन ज्ञान बढावने॥
उनही मे 'परमानद' प्रगटे पढ़ो विद्या जिन बली।
गुन गन सुनत ही बोलि लीनो आगरे अकबरबली॥
चरचा भई दरबार के मधि रीझि के अकबर कह्यो।
हम कह्यो तुमहि सतावधानी आन में नहि गुन लह्यो॥
बकसीस कीनी बहुत उनकों मिश्र की पदवी दई।
उन वास अपने ग्राम राख्यो चाकरि लांकरि रई॥
उनके सनामि 'कपूरचंद' तिन वास अर्गलपुर कियो।
टोला मथुरिया कालिदी तट सदन बसिबे, को लियो॥

वे वसे आय कुटुंव के युत सील गुन मति षानि हैं ।
सवहीन जान्यौं सवन मान्यौं सवत सौं हित वानिहै ।।
तिनके तनय 'पुरुषोत्तम' सु जिनकी सुनी कविता अतिभली ।
दिल्लीस के सेनापति की चाकरी तिनकौं फली ।।
वे मिले साहिजहा वली सौं मिली वकसीस प्यार मैं ।
सोभा वढ़ाई साहि जिनकी कविन के दरवार मे ।।
तिनके भये सुत 'प्रेमराज' न चाकरी चित मे धरी ।
मिलवो करैं सज्जन नहीं सौं जव का सहजें करी ।।
तिनके 'सुप्रथ्वीराज' तिनने लह्यौ गुन अरु ग्यान है ।
सवही सराहै सुघर ताकौं परम वुद्धि निधान है ।।
तिनके तनय 'दिनमणि' भए जिन ग्रंथ ज्योतिष के पढ़े ।
..............................।।
तिनके सुतन मे भयौ 'मुरलीधर' कछुक गुनवान है ।
कवि कोविदन ने कृप करिकें लई कविता मानिहैं ।।
दिल्ली महम्मद साहि सौं मिलि चाकरी हूं करि लई ।
औरो अमीरनि कृपा करि मनरीति कें वकसिस दई ।।
यह कथा अपनी कही मे अव ग्रथ की कारन कहौं ।
इक वार समयौ भयौ ऐसौ थिर न काहू कौं लहौ ।।
पश्चिम दिशा तें प्रवल आयौ शत्रु शोर वढ़ाय कैं ।
उन दावि लीनो राज दिल्ली भजे सव भय पाय कें ।।
उन किते मारे किते लूटे किते कीने वंदि में ।
केतेक अपने संग लीनें फसे वाकी फंदि मे ।।
वह गयो वहां हिंदुवान के मधि राज औरै ह्वै गयौ ।
सव मिटि गई गुन ज्ञान चर्चा कृपन जग सिगरौ भयौ ।।
तव चित्त आई हौंहु चाकर चरित वरनौ राम कौ ।
वे नेंक हू जौ कृपा करिहैं तो सवै हौं काम कौं ।।

उक्त उद्धरण से पता चलता है कि परमानद शतावधानी को अकवर ने 'मिश्र' की उपाधि दी थी, जो इनकी वश परपरा मे चलती रही। वास्तव मे ये माथुर ब्राह्मण थे।

ग्रथो की वर्तमान प्रतियो मे रचनाकाल क्रमश सवत् १८१४ और सवत् १८१८ है और लिपिकाल क्रमश. सवत् १९१० और सवत् १९०९।

३०५. मोकमदास—इनकी एक 'वाराखडी' मिली है जिसमे 'क' से लेकर 'क्ष' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहे चौपाइयाँ रचकर भगवद्भक्ति और ज्ञानोपदेश किया गया है। रचनाकाल सवत् १८३५ और लिपिकाल सवत् १८४० है।

रचयिता संभरपुरवावन प्रदेश मे स्थित खडेल स्थान के अतर्गत जोगीपुरा के रहने वाले थे—

"संभरपुर वावन जग प्रधान ।
सुखवासी जोगीपुरा खंडेल नगर सो थान ।।"

अन्य विवरण उपलब्ध नही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३०६. मोतीलाल—इनके रचे 'गणेश पुराण' की दो प्रतियाँ और मिली हैं। पिछले खोज विवरणो (१–६७, ६–२००, २३–२८२; २६–३०९ ए. से ई तक) मे इनका उल्लेख हो चुका है। उक्त विवरणो के आधार पर इनका जन्म काल सवत् १५९७ है। अन्य वृत्त का कोई उल्लेख नही। इस वार इनके निवास स्थान के सवंध मे पता चला है—

"नाग नगर के प्रगरणः नौस्ता सुभ ग्राम ।
सुरसर के तट वसत है तहा है कवि को धाम ॥
षट जोजन है प्राग ते पछिम दिसि सी गाउ ।
बसै विप्र बुद्धिमान तह नौवस्ता जेहि नाउ ॥"

इसके अनुसार ये प्रयाग से छह योजन पश्चिम नागनगर परगना के अतर्गत गगा तट पर बसे नौस्ता (नौवस्ता) ग्राम के निवासी थे । उक्त ग्राम मे 'बुद्धिमान विप्र वसते थे' से जान पडता है कि ये ब्राह्मण थे । ग्रथ की प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल नही है । लिपिकाल क्रमश. सवत् १८७२ और १७६६ है ।

३०७. मोहन—इनके तीन ग्रथो—(१) आनद लहरी, (२) केलि कल्लोल और (३) मोहन हुलास—के विवरण लिए गए है । दूसरा ग्रथ पहले भी मिल चुका है, देखिए खोज विवरण (१७–११२) । शेष ग्रथ नए है । रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख नीचे किया जाता है —

(१) आनद लहरी—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १७८६ । विषय—आध्यात्मिक प्रेम का वर्णन और सयोग शृगारान्तर्गत अद्वैत भावना की विशेषता का वर्णन है ।

(२) कल्लोल केलि—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १७८६ ई० । विषय—अद्वैत भावना के रूप मे सयोग शृगार का माहात्म्य वर्णन ।

(३) मोहन हुलास—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १७८६ । विषय—सयोग और वियोग शृगार का वर्णन ।

प्रस्तुत ग्रथो द्वारा रचयिता के सबध मे कुछ पता नही चलता । परतु उपर्युक्त खोज-विवरण और अन्य खोज विवरण (३–४) मे इनके सबध मे इस प्रकार लिखा है —

"उपनाम सहज सनेही, मथुरा निवासी, शिरोमणि के पिता, बादशाह जहाँगीर के आश्रित और सवत् १६६७ के लगभग वर्तमान थे ।

३०८. मोहनदास—ये 'दत्तात्रेय लीला' के रचयिता हैं । ग्रथ मे श्रीकृष्ण द्वारा उद्धव को ज्ञानोपदेश और दत्तात्रेय की लीला का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८५३ है । ग्रथ की प्रस्तुत प्रति बहुत अशुद्ध लिखी गई है ।

रचयिता के विषय मे भी कोई विवरण नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

३०९. मोहनदास 'मिश्र'—ये 'भावचद्रिका' ग्रथ के रचयिता है । रचनाकाल १८५१ और लिपिकाल सवत् १९१५ है । ग्रथ प्रसिद्ध सस्कृत ग्रथ गीत गोविंद का हिंदी मे पद्यबद्ध अनुवाद है । रचयिता ने ग्रथ की प्राचीन भाषा टीका देखने के पश्चात् यह अनुवाद किया । काव्य की दृष्टि से अनुवाद सरस है । खोज विवरण (५–७२) मे इसका उल्लेख हो गया है । उक्त खोज विवरण के अनुसार रचयिता का परिचय इस प्रकार है —

"ब्राह्मण, उपनाम शिवराम, सभवत चदपुरी के समीप पत्तनपुर निवासी, कपूर मिश्र के पुत्र, सवत् १८५१ के लगभग वर्तमान और चरखारी नरेश महाराज मधुकरशाह के वशजो के कुल पुरोहित थे ।"

प्रस्तुत प्रति द्वारा इनके आश्रयदाता का नाम 'सिघनृप' था, जो उपर्युक्त महाराज मधुकर शाह के वशज ही थे ।

३१०. मोहनलाल—ये 'फूलमजरी' और 'रगमजरी' के रचयिता है । ग्रथो का विवरण इस प्रकार है —

(१) फूलमंजरी—रचनाकाल सवत् १८४५ । लिपिकाल अज्ञात । विषय—प्रत्येक दोहे मे एक फूल का नामोल्लेख कर श्रीकृष्ण प्रेम का वर्णन ।

(२) रंगमंजरी—रचनाकाल सवत् १८३७। लिपिकाल अज्ञात। विषय—शृंगार-विषयक कविता कर उनमे रगो का नामोल्लेख किया गया है।

रचयिता भरतपुर राज्य के अतर्गत कुम्हेर स्थान के निवासी थे। पिता का नाम केशव था। खोज विवरण (३८–६८) मे उल्लिखित 'सगुनावली' के रचयिता भी यही है।

३११. यशोधर (?)—ये 'भास्वति भाषा टीका' के रचयिता मान लिये गए हैं। ग्रथ के प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका मे यह नाम आता है। सभव है, ये मूल सस्कृत ग्रथ के रचयिता हो। अन्य सूत्र द्वारा कोई वृत्त नही मिलता। ग्रथ का विषय ज्योतिष है।

रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति भी खडित है। रचयिता खोज मे नवोपलब्ध हैं।

३१२. रघुनंदन—इन्होने 'द्रौपदी स्वयवर' की रचना महाभारत के आदिपर्व के आधार पर की है। रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १६८० वि० विदित होता है। ग्रथ की पुष्पिका के पश्चात् दो सोरठे दिए है, जो रचयिता के ही रचे हुए जान पडते है। पहले सोरठे मे छदो की सख्या दी गई है और दूसरे मे सवत् १६८० का उल्लेख है।

सभव है, ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मूल प्रति ही हो अथवा उसी काल की लिखी हो। रचयिता का कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३१३. रघुनाथ वंदीजन—इनके 'रसिकमोहन' ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे अलकारो का वर्णन है। रचनाकाल सवत् १७६६ वि० है। लिपिकाल दिया नही। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है।

रचयिता वदीजन थे और काशी मे निवास करते थे। काशीनरेश महाराज वरिबड सिंह इनके आश्रयदाता थे, उन्होंने प्रसन्न होकर इन्हें 'चौरा' नामक ग्राम दिया था। खोज विवरण (३–५६, २३–३२६ ई० एफ०) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है।

३१४. रघुनाथ कवि—इन्होने सस्कृत ग्रथ 'रसमजरी' का हिंदी पद्यानुवाद किया है। ग्रंथ मे रस और नायिका भेद का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचयिता का इसके द्वारा कोई विवरण नही मिलता। खोजविवरण (२६–३६७) मे इनका प्रस्तुत ग्रथ के साथ उल्लेख है। उसमे इनका वृत्त इस प्रकार है —

ब्राह्मण, संवत् १६६७ के लगभग वर्तमान और प्रसिद्ध कवि गग के शिष्य थे।

३१५. रघुनाथदास रामसनेही—इनका उल्लेख खोज विवरण (२६–३७०, २३–३२७, २६–२७८ और २०–१३६) मे हो चुका है। उनके अनुसार इनका वृत्त इस प्रकार है :—

"इन्हें लोग जन रघुनाथ और रामसनेही भी कहते थे। अयोध्या निवासी महत। देवदास के शिष्य। सीतापुर जिले मे जन्म। रामसनेही सप्रदाय के अनुयायी। सभवत १६वी शताब्दी के अत और वीसवी शताब्दी के आरभ मे वर्तमान।"

इस वार 'ज्ञान ककहरा' इनका नया ग्रथ मिला है। ग्रथ मे ज्ञानोपदेश और ईश्वरभक्ति का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६२० वि० है। रचयिता के सवध मे कोई नवीन वात प्रकट नही होती।

३१६. रघुवर—इनके नाम से 'ग्वाल पहेली' और 'द्रौपदी की स्तुति' नामक रचनाओ के विवरण लिए गए है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका उल्लेख इस प्रकार है —

(१) ग्वाल पहेली—रचनाकाल दिया नही। लिपिकाल सवत् १८६०। विषय—ग्वाल वालो के साथ श्रीकृष्ण लीला का वर्णन।

(२) द्रौपदी की स्तुति—रचनकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १८६०। विषय—द्रौपदी के चीरहरण का वर्णन।

इन ग्रंथो द्वारा रचयिता के संबध मे कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३१७. रज्जबजी—ये खोज विवरण (१७–१४२) और खोज विवरण १६०२ की परिशिष्ट एक की सख्या १६० मे आए रज्जब है, जो दादूदयाल जी के अनुयायी थे। उक्त खोज-विवरणो मे इनकी 'सर्वांगी' का उल्लेख है। इस वार इनके कुछ कवित्त मिले है, जिनमे मतमतानुनुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है। 'दादूजी' का उल्लेख इनमे भी पाया जाता है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

३१८. रणधीर सिंह राजा—इन्होने संवत् १८६४ वि० मे 'पिंगल नामार्णव' की रचना की जो संवत् १६२० मे बनारस मे छापी गई थी। छापनेवाले का और छापेखाने का नाम ग्रंथ मे इसप्रकार है—

"बनारस मे मुहल्ला बागहाडा बिस्वनाथ लाल के सुधा निवास छापेखाने मे छपी शिष्य सरदार कवि के नारायणदास कवि ने छपाई।"

ग्रंथ का विषय उसके नाम से ही स्पष्ट है। रचयिता शिरमौर वंशावतंस सिंगरामऊ (जौनपुर) के अधिपति थे। खोज विवरण (६–३१६ ए, २३–३५२ सी) मे प्रस्तुत ग्रंथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है।

३१९. रनजीत—इनका 'नासिकेतोपाख्यान' मिला है। ग्रंथ मे नासिकेत ऋषि की कथा का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। स्वामी चरणदास जी का भी मूलनाम रणजीत था तथा उन्होने भी 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। संभव है, वे और प्रस्तुत रचयिता एक ही हो। प्रस्तुत ग्रंथ की प्रति खंडित है जिसके कारण दोनो ग्रंथो का मिलान न हो सका।

३२०. रमताराम—इनका 'गंगाष्टक' मिला है, जिसमे गंगाजी की स्तुति है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

३२१. रमयोज—इनकी 'बाराखडी' मिली है, जिसमे 'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर ज्ञानोपदेश किया है। हस्तलेख अत्यंत अशुद्ध लिखा है।

रचनाकाल, लिपिकाल का पता नही चलता। रचयिता का नाम केवल पुष्पिका मे आता है। अन्य विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३२२. रसनिधि—इनका 'बलदेवषट्क' नामक ग्रंथ मिला है। ग्रंथ मे श्री बलराम जी का यश और महिमा वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है। संभवत ये दतिया वाले पृथ्वीसिंह उपनाम 'रसनिधि' है। इनके लिये देखिए, खोज विवरण (६–६५, ३–६४, २६–४०२, ५–७३) और (१२–१५३)।

३२३. रसरासि (रामनारायण)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या ४१।

३२४. रसरूप—इनका 'तुलसीभूषण' नामक ग्रंथ मिला है, जिसमे गोस्वामी तुलसीदास के ग्रंथो, विशेषत रामायण, से उदाहरण देकर अलंकारो (शब्दालंकार, अर्थालंकार और चित्रालंकारो) का वर्णन है। रचनाकाल संवत् १८११ वि० है, लिपिकाल दिया नही। ग्रंथ का उल्लेख खोज विवरण (४–११) मे भी है।

प्रस्तुत ग्रंथ द्वारा रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता, पर पिछले खोज विवरणो के आधार पर इनका जन्मकाल सवत् १७८८ है। इन्हें सुकवि की उपाधि मिली थी और ये सस्कृत और फारसी भाषाओ के विद्वान् थे। देखिए, खोज विवरण (६–२६१, २६–४०३, ५–७६)।

३२५. रससिंधु (श्रीकृष्ण लाला जी)—इनके 'षड्ऋतुमार्तंड' नाम से पदो का सग्रह मिला है। पदो का विषय भक्ति और श्रीकृष्णलीला है। रचनाकाल सवत् १६३० है। लिपिकाल का उल्लेख नही।

रचयिता का वास्तविक नाम 'श्रीकृष्ण लाला जी' था, 'रससिंधु' उपनाम था। ये काशीस्थ गोपाललाल जी के मंदिर के महाराज, गो० गिरिधरजी महाराज की पुत्री श्यामाबेटी के पुत्र थे। अन्य वृत्त अप्राप्य है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३२६. रसानंद—इनकी 'रासपचाध्यायी' और 'बारहमासी' नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। प्रथम ग्रथ का रचनाकाल सवत् १८८६ है। लिपिकाल दिया नही। विषय नाम से ही स्पष्ट है। दूसरे ग्रथ का विषय गोपियो का विरह शृगार है। इसमे रचनाकाल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नही।

रचयिता 'रासपचाध्यायी' के अनुसार स्वामी विट्ठलेश के शिष्य थे। खोज विवरण (६–२६०) और (४१–२१७ तथा प० २२–६५) मे आए रसानद भी यही है। उक्त विवरणो के आधार पर इनका वृत्त इस प्रकार है —

"वास्तविक नाम रसानद भट्ट, गोकुल निवासी, सवत् १८६६ के लगभग वर्तमान, भरतपुराधीश महाराज बलवत सिंह के आश्रित और वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे।"

३२७. रसिक—ये 'दानलीला' के रचयिता हैं। रचना मे श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन है। रचनाकाल अप्राप्त है। लिपिकाल 'मानमाधुरी' नामक अन्य ग्रथ के आधार पर सवत् १८८८ है। दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है और एक ही लिपिकर्त्ता के लिखे हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिता आए है, पर उनमे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

३२८. रसिकदास (वास्तविक नाम गोपिकालंकार या मट्टू जी महाराज)—इनके कीर्तनो के 'कीर्तन सग्रह' या 'कीर्तन समूह' नाम से दो सग्रह मिले हैं। सग्रहो मे श्री वल्लभ-सप्रदाय के सिद्धातानुसार भक्ति और लीलाओ का वर्णन है। रचनाकाल किसी मे नही है। लिपिकाल केवल कीर्तनसमूह मे सवत् १६१५ दिया है।

रचयिता, दूसरे सग्रह की पुष्पिका के आधार पर, गो० द्वारिकेश जी के पुत्र थे। इनका वास्तविक नाम गोपिकालकार या मट्टू जी महाराज था। खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

३२६. रसिकराय जी—इन्होने 'कलिचरित्र' की रचना की। ग्रथ मे कलियुग के प्रभाव द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रियो के विकृत सबध का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त ही है। पिछले खोजविवरणो मे इस नाम के दो रचयिताओ का उल्लेख है, पर उनमे से किसी एक के साथ इनका साम्य स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही मिलता।

३३०. रसिकलाल या रसिक सुजान—इन्होने सवत् १७२४ मे 'भाषा करुणानद' की रचना की, जो अनुवाद ग्रथ है, और जिसमे श्रीकृष्ण भक्ति का प्रतिपादन है। मूल ग्रथ श्रीकृष्णदास (सं० १५२०) रचित सस्कृत मे है :—

"राधावल्लभ चरन कमल तट वृंदावन जहाँ ।
सदा स्याम रस द्रवित कर्यौ हित कृष्णदास तहा ।
व्यौम जुगल इषुचंद १५२० जन सख्या गई वितीति ।
कृष्ण जन्म अष्टमी सुदिन भयौ ग्रथ शुभ रीति ॥
करुणानंद पूरण भयौ श्री कृष्णदास कृत चारु ।
अद्भुत अमल प्रवध यह रसिकनि कौ आधारु ॥१॥
:o: :o: :o: :o:
जैसी मोमति है कछू ताही के उनमान । भाषा करुणानंद की कीनी 'रसिकसुजान' ॥१॥"

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १८१७ मे किसी डूंगरसिंह के द्वारा लिखी गई । रचयिता वृ दावन मे रहते थे और राधावल्लभी सप्रदाय के गो० दामोदर हित के शिष्य थे। खोज विवरण (१२–१५७) मे ये इस ग्रथ के साथ उल्लिखित है ।

३३१. राघवदास या राघोदास—इनकी तीन रचनाओ—'कार्तिकमाहात्म्य', 'नागलीला' और 'रुक्मिणीमगल' के विवरण लिये गए है । 'रुक्मिणीमगल' का उल्लेख खोज विवरण (४१–२२१) मे हो चुका है, शेष ग्रथ नवीन है ।

(१) कार्तिकमाहात्म्य—रचनाकाल सवत् १८४८ । लिपिकाल दिया नही । विषय—पद्मपुराण के आधार पर कार्तिक माहात्म्य का वर्णन ।

(२) नागलीला—रचनाकाल अज्ञात । लिपिकाल सवत् १८५३ वि० । विषय—श्रीकृष्ण की नागलीला का वर्णन ।

(३) रुक्मिणीमंगल—रचनाकाल सवत् १८४६ । लिपिकाल दिया नही । विषय—श्रीकृष्ण और रुक्मिणी का विवाह वर्णन ।

रचयिता का नाम राघवदास के अतिरिक्त 'राघोदास' भी दिया है । ग्रथो के द्वारा इनका और कोई वृत्त नही मिलता । उपर्युक्त खोज विवरण मे इन्हे उपाध्याय लिखा है । ग्रथ स्वामी (प० महेशप्रसाद मिश्र, ग्राम, लेदहावरा, डाक, अटरामपुर, जिला, इलाहाबाद) से पता चला कि ये सभवत नवावगज (सोराव तहसील, इलाहाबाद) के रहनेवाले थे । इनके अतिम वशज रामगुलाम उपाध्याय थे जिनको गत हुए आठ-दस वर्ष हुए है ।

इनकी रचनाएँ साहित्यिक है, जिनसे जान पडता है कि ये अच्छे कवि रहे । प्रस्तुत ग्रथो की तीनो प्रतियाँ स्वय रचयिता के हाथ की लिखी विदित होती है । इनमें किसी लिपिकर्ता का उल्लेख नही पाया जाता । लिपिकाल केवल 'नागलीला' मे दिया है, जो अतिम रचना जान पडती है ।

३३२. राजमती (?)—इनके नाम से "छप्पैरामायण' का विवरण लिया गया है । पुस्तक मे अत्यत सक्षेप मे रामचरित्र का वर्णन है । रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल १२५६ फसली है ।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

३३३. राजसिंह (महाराजा)—इनके 'वाहुविलास' ग्रथ की एक प्रति विवृत हुई है । ग्रथ मे श्रीकृष्ण और जरासध का युद्ध अत्यत ओजपूर्ण भाषा मे वर्णित है । वीररस का यह उत्तम काव्य है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८२७ है ।

रचयिता रूपनगर, कृष्णगढ के राजा प्रसिद्ध है । पिछले खोज विवरण (२–७४) मे प्रस्तुत ग्रथ के साथ इनका उल्लेख हो गया है । उक्त खोज विवरण के आधार पर ये महाराज सावत सिंह (नागरीदास) और सुदरि कुअरि के पिता थे । वृ द कवि से इन्होंने कविता करनी सीखी । इनका सवत् १७६३ से १८०५ तक राज्यकाल था ।

३३४. राजाराम (गंगारामसुत) —इन्होने अपने रचे 'वल्लभकुलकल्पवृक्ष' मे गो० वल्लभाचार्य से लेकर सवत् १७७६ तक की उनकी वशावली दी है। जान पडता है, रचयिता स० १७७६ तक ही जीवित रहे। यदि उसके पश्चात् जीवित रहते तो आगे की वशावली भी देते।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति को देखने से पता चलता है कि यह स्वय रचयिता के हाथ की लिखी है। इसके अनुसार रचयिता गुजरात मे राजनगर प्रदेश के अतर्गत सारगपुर के निवासी थे। पिता का नाम गगादास था तथा वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे।

खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

३३५ राधाकृष्ण अथवा कृष्णकवि—इनका सगीत विपय पर रचा हुआ 'रागरत्नाकर' ग्रथ मिला है। ग्रथ खोज विवरण (६–२३३) मे आ चुका है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता जयपुर निवासी, गौड ब्राह्मण, सवत् १८५३ के लगभग वर्तमान और जयपुर के राव राजा भीमसिह के आश्रित थे। गान विद्या मे ये वडे निपुण थे।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता। रचयिता का दूसरा नाम 'कृष्ण कवि' था। इस वार विशेप इतना ही पता चला कि इनके आश्रयदाता जयपुर के अतर्गत उनियारौगढ के थे —

"देस सुनागर चाल मैं गढ़ उनियारौ नाम।
राजत राव नरेश जहि भीमस्यंघ गुनधाम॥"

३३६. राधाकृष्ण द्विवेदी—इनकी 'ओपधि सग्रह कल्पवल्ली' का विवरण लिया गया है। ग्रथ का विपय उसके नाम मे ही स्पप्ट है। रचनाकाल उल्लिखित नही। लिपिकाल सवत् १८९० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा है।

३३७. रामकवि या 'द्विजराम'—'पिंगल' और 'मगलशाखोच्चार' नाम से इनकी दो रचनाएँ मिली है। प्रथम ग्रथ का विपय स्पप्ट है। दूसरे मे शिव पार्वती विवाह और उनका शाखोच्चार वर्णित है। ग्रथो की प्रस्तुत प्रतियो मे न तो रचनाकाल का उल्लेख मिलता है, और न लिपिकाल का ही।

रचयिता का दूसरा नाम 'द्विजराम' था। ये जाति के ब्राह्मण और डीग (भरतपुर) के निवासी थे। अन्य वृत्त नही ज्ञात है। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

३३८. रामकृष्ण—इनकी 'ग्वारनी झगडा' का उल्लेख 'दानलीला' नाम से खोज विवरण (२६–३८२) मे हो चुका है।

पुस्तक की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८३६ है। रचयिता का अव तक कोई विवरण नही मिल सका।

३३९. रामकृष्ण—इनकी 'विनैपच्चीसी' रचना मे द्रौपदी चीरहरण का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९४३ दिया है।

रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता। सभवत ये पूर्ववर्ती रचयिता हैं।

३४०. रामकृष्ण—इनके नाम पर 'लक्ष्मी चरित्र' ग्रथ मिला है, जो खोज विवरण (४१–२२२) मे आ चुका है। रचयिता का नाम उक्त विवरण मे ही मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति पूर्ण होते हुए भी उसमे रचनाकाल और रचयिता के नाम तक का उल्लेख नही मिलता। लिपिकाल सन् १२६५ (फसली) है।

३४१. रामगरीव चौवे उपनाम 'गरीवजू'—इनके भक्ति, शृगार और सामाजिक विपयक कुछ 'कवित्त' मिले हैं। कवित्तो का रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९१७ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। ये कुछ सामाजिक सुधारों के पक्षपाती विदित होते हैं। इन्होंने मछली मांस खाकर वैष्णव कहलाने वालों और अन्य बुरे विचार फैलाने वाले व्यक्तियों की जो समाज को दूषित करते हैं, खूब निंदा की है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३४२. रामगुलाम—इन्होंने 'रामनैंतीमी' की रचना की। रचना मे 'अ' से लेकर 'ऐ' तक के और 'क' से लेकर 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर संक्षिप्त रामचरित्र वर्णित है।

पुस्तक की प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है, पर इसमे रचनाकाल का उल्लेख नहीं है। लिपिकाल संवत् १८८३ है। रचयिता का वृत्त नहीं मिलता। संभवत ये खोज विवरण (६–२४७) (६–२१३ और १७–१४७) मे आए रामगुलाम द्विवेदी है, जो मिर्जापुर निवासी, तुलसीकृत रामायण के विशेष मर्मज्ञ और लगभग संवत् १८७० से लेकर १६०१ तक वर्तमान थे।

३४३. रामचंद्र—इनके कुछ 'कवित्त' रामचंद्र जी के विरह संबंधी मिले हैं। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम वार लगा।

३४४. रामदया (दयाराम)—इनके दो ग्रंथ 'सभाजीत' और 'वेद सामुद्रिक' मिले हैं। ग्रंथो का उल्लेख खोज विवरण (२३–३४२) मे हो गया है। प्रस्तुत प्रतियों द्वारा इनके रचनाकाल औ लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता के संबंध मे अब तक कोई विवरण नहीं मिला।

३४५. रामदास—ये 'रुक्मिणीब्याह' के रचयिता हैं। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। रचयिता का विवरण अज्ञात है। संभवत ये खोज विवरण (६–२१२, २६–२५६) मे आए रामदास हैं, जो मलिनी (मालवा सिरोंज के निकट) निवासी और मनोहरदास के पुत्र थे। माता का नाम वीरावती था। प्रथम खोज विवरण मे स्थान का नाम 'मालती' लिखा है और दूसरे मे मालिनी। परंतु प्रथम खोज विवरण मे विवरण पत्र नहीं छपा है। दूसरे खोज विवरण मे विवरण पत्र छपा है, जिसमे वृत्त का अंश पूरा उद्धृत है इसलिये इसी के अनुसार वृत्त दिया है।

३४६. रामदास—इनका 'गंगा जी का ब्यावला' मिला है। जिसके साथ ये खोज विवरण (२६–३८१) मे उल्लिखित है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही हैं।

रचयिता का इस वार भी कोई वृत्त उपलब्ध नही हुआ।

३४७. रामदास वरसानिया—ये गोवर्धन लीला' और 'राधाविलास' ग्रंथों के रचयिता है। ग्रंथो का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है —

(१) गोवर्द्धन लीला—इसकी तीन प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल किसी मे नहीं। लिपिकाल एक प्रति मे संवत् १८२७ है। विषय—गोवर्धन लीला का वर्णन।

(२) राधाविलास—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—राधाकृष्ण की लीलाओं का वर्णन।

रचयिता वरसाना (मथुरा मे नंदगाँव के निकट) के रहनेवाले थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे नवोपलब्ध है।

३४८. रामनाथ प्रधान—इनकी 'रामहोरी रहस्य' नामक पुस्तक का इस वार भी विवरण लिया गया है। पुस्तक खोज विवरण (१–८) मे आ चुकी है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता का उपनाम 'प्रधान' था। ये संवत् १८८७–१६१२ के लगभग वर्तमान, रीवाँ राज्य के मंत्री घराने के वंशज और रीवाँ नरेश के आश्रित थे। प्रस्तुत ग्रंथ की रचना इन्होंने प्रयाग मे

की थी। ग्रंथ का रचनाकाल सवत् १६१२ है और इसकी प्रस्तुत प्रति का लिपिकाल सवत् १६१६ है।

३४६. रामप्रगाश गिरि—इनके निम्नलिखित तीन ग्रथो के विवरण लिए गए है —

(१) काशी वर्णन (?)—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—काशी और काशी स्थित शिवलिंग माहात्म्य वर्णन।

(२) नासकेत पुराण—रचनाकाल, लिपिकाल सवत् १८८३। इस दृष्टि से हस्तलेख मूल प्रति है। विपय—पुराणो के आधार पर नासकेत ऋपि की कथा का वर्णन।

(३) पदावली—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन। उक्त सभी ग्रथ काव्य की दृष्टि से उत्तम है।

रचयिता हुरहुरी ग्राम (जौनपुर) के रहनेवाले थे। जाति के गुसाई (अतीथ) थे। इनके वशज अभी तक उक्त ग्राम मे रहते है। इनके गुरु का नाम हरिहर था।

खोज मे ये नवोपलव्ध है।

३५०. रामप्रसाद—इन्होने सवत् १६१२ मे 'अर्जुन गीता' नामक मूल सस्कृत ग्रथ का हिंदी मे अनुवाद किया। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १६१३ की लिखी है।

रचयिता लखनऊ (लछनापुरी) के निकटस्थ जयसार (?) ग्राम के थे।

"लछनापुरी रुचिर अति विमला। प्रगट प्रभाव जहाँ पर कमला॥
तहाँ सुखद यह सुरस प्रकासा। 'रामप्रसाद' दास हरिदासा॥
सो जयसार ग्राम लो लावा। भावा तंह निज धाम सोहावा॥"

प्रस्तुत प्रति की लिपि फारसी है। जिसके कारण ग्राम का नाम ठीक ठीक पढा नही गया। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

३५१. रामफल—इन्होने सस्कृत ग्रथ 'तत्र सामुद्रिक' की हिंदी गद्य मे टीका की। पुस्तक सवत् १६१७ मे स्वय टीकाकार द्वारा वनारस मे गोपाल चौवे के छापेखाने मे छपवाई गई थी। टीका का समय ज्ञात नही, फिर भी उक्त सवत् के लगभग ही टीका हुई होगी।

टीकाकार का कोई वृत्त नही मिलता। खोज मे इनका पता प्रथम वार ही लगा।

३५२. रामवक्स—ये पिछले खोज विवरण (२६–२८७) मे आ चुके हैं, जहाँ इनके तीन ग्रथो का उल्लेख हुआ है। उक्त विवरण में इनका, केवल इतना ही परिचय है कि ये ब्राह्मण थे, अन्य वृत्त नही दिया है।

इस वार इनके 'रामाश्वमेध' ग्रथ का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३२ दिया है। ग्रथ साहित्यिक है।

३५३. रामवछ या कविवछ—'भागवत दशम स्कध' के ये रचयिता हैं। ग्रथ मे रचनाकाल और लिपिकाल का कोई निश्चित उल्लेख नही, पर जहाँ तहाँ १८६१ और १८७० का उल्लेख होने से पता चलता है कि इन्ही सवतो के लगभग यह लिखा गया होगा।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

३५४. रामरतन लघुदास—इनके निम्नलिखित दो ग्रथो के विवरण लिए गए है :—

(१) हनुमान जयति—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—हनुमान जी की विरुदावली का वर्णन।

(२) कृष्णध्यानाष्टक—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विपय—राधाकृष्ण की उपासना का वर्णन।

रचयिता हरियाणा (पजाव) के विधामी गाँव के रहने वाले भरद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे। पिता का नाम मनिराम और गुरु का नाम मयाराम था। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३५५. रामरसिक—इन्होने 'भागवत एकादश स्कध' का अनुवाद किया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८४० है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। सभवत ये खोज विवरण (६–२१५) मे आए रामरसिक हैं। जो विरक्त साधु थे और भूँसी (प्रयाग) मे रहते थे। गगागिरि उनके गुरु का नाम था।

३५६. राम रहस्यदास—इनका 'परम विलास' मिला है, जिसमे मत मतानुसार ज्ञानोपदेश है। रचनाकाल अज्ञात हैं, लिपिकाल सवत् १८७८ दिया है।

रचयिता का परिचय अप्राप्त है। इन्होने ग्रथ में जहाँ तहाँ कबीर की 'साखियाँ' उद्धृत की हैं, अत ये कोई कबीरपथी विदित होते हैं।

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३५७. रामसिंह राजा—इनके 'जुगलविलास' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की रचना पदो मे की गई है, जिनमें राधाकृष्ण की लीलाओं एव भक्ति का वर्णन है।

रचनाकाल सवत् १८३६ है, लिपिकाल दिया नहीं। काव्य की दृष्टि से कृति सरस है। पिछले खोज विवरण (१२–१४६ ए, २६–३६६ बी) मे इसका उल्लेख हो गया है।

रचयिता नरवर (ग्वालियर) के राजा प्रसिद्ध है। पिता का नाम छत्रसिह था। ये बडे काव्य रसिक और प्रतिभाशाली कवि थे। पिछले खोज विवरणो मे इनके कई ग्रथो का उल्लेख है, देखिए खोज विवरण (२६–३६६, १२–१४६, ६–२१७, ४१–२२०)।

३५८. रामहितसिंह (जन)—इनकी तीन रचनाएँ—(१) गनक आह्लादिका, (२) चानक और (३) भागवत विलासिका नाम से मिली है। प्रथम ग्रथ खोज विवरण (२६–२८४ ए, बी) मे उल्लिखित है। शेष दो ग्रथ नये मिले है। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण नीचे दिया जाता है :—

(१) गनक आह्लादिका—इसकी दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल सवत् १८८४। लिपिकाल एक प्रति में सवत् १८८७। विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन।

(२) चानक—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९१६। विषय—नीति और ज्ञानोपदेश के साथ साथ सामाजिक बुराइयो का वर्णन किया गया है।

(३) भागवत विलासिका—रचनाकाल सवत् १८८१। लिपिकाल सवत् १८८३। विषय—भागवत के अतर्गत खगोल विद्या का वर्णन। यह ग्रथ निमिच (मालवा प्रात) मे रचा गया।

रचयिता के सबध मे उपर्युक्त खोज विवरणो मे केवल इतना ही लिखा मिलता है कि वे सवत् १८८४ के लगभग वर्तमान थे। इस बार भागवत विलासिका मे इनका कुछ वृत्त मिला है। जिसके अनुसार ये जाति के सिंहेल क्षत्रिय और चित्तविसाँव (आजमगढ) ग्राम के निवासी थे। माता पिता का नाम क्रमश इदल और रामगति सिह था।

३५९. रामानुजदास—इन्होने सुप्रसिद्ध रामानुजाचार्य के भाष्य के आधार पर 'गीता' की टीका की। ग्रथ का रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १९३४ दिया है।

रचयिता का, केवल इतना ही कि वे रामानुज सप्रदाय के अनुयायी थे, और कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६०. रामावतार दास—इन्होने सवत् १९२५ मे 'मतविलास' नामक ग्रथ की रचना की। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १९२८ की लिखी हुई है। इसमे प्रार्थना, नीति, शिक्षा, शृगार और शाति रस आदि अनेक विषयो पर रचनाएँ की गई हैं।

रचयिता अयोध्या से बीस कोस दूर दोस्तपुर के रहनेवाले वैश्य थे। पीछे साधु हो गए। अन्य वृत्त नही मिलता। इनका प्रस्तुत ग्रथ साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३६१. रुद्रप्रताप सिंह (राजा)—इनका रचा हुआ 'सुसिद्धात्तोत्तमरामखड' नामक वृहद् ग्रथ का पता चला है। जिसमे प्राचीन आर्य ग्रथो के आधार पर रामचरित्र का विस्तारपूर्वक वर्णन है। यह चद्रप्रभा प्रेस बनारस से छपा हुआ है। सुप्रसिद्ध ज्योतिषी और विद्वान् स्व० प० सुधाकर द्विवेदी ने इसका सशोधन किया था। इसमे सदेह नही कि ग्रथ साहित्यिक दृष्टि से भी बडे महत्व का है। इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे किष्किधा काड और उत्तर काड ही बचे हैं। विषयानुक्रमणिका से पता चलता है कि इसमे सात काड सपूर्ण थे। सुदर काड मे तो कवि ने अपने कुल का भी वर्णन किया था।

रचयिता माडा (विंध्याचल के निकट जिला इलाहाबाद) के राजा थे, जहाँ ग्रथ की प्रस्तुत प्रति का विवरण लिया गया है। स्थानीय सूचनाओ के आधार पर ये स्वय बडे विद्वान् और प्रतिभाशाली कवि थे तथा गुणियो को आश्रय दिया करते थे। इनके पश्चात् माडा मे इन्ही के वश मे तीन राजा और हुए, जिनके नाम क्रमश इस प्रकार थे :—क्षेत्रपाल सिंह, रामप्रताप सिंह और रामगोपाल सिंह। अतिम राजा सतानहीन होकर तीन चार वर्ष पहले गत हो चुके है। अब गद्दी के लिये उत्तराधिकारियो मे झगडा चल रहा है।

इनका एक ग्रथ 'कौशलपथ' (अयोध्याकाड) जो प्रस्तुत ग्रथ का ही एक अश है, खोज-विवरण (३–२५) पर आ चुका है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये सवत् १८७७ मे वर्तमान थे।

३६२. रूप—इनके नाम से 'ज्ञानोपदेश' विषयक विना नाम की खडित रचना का विवरण लिया गया है। रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम निश्चित रूप से तो नही मिलता, पर दो कवियो मे 'रूप' का प्रयोग होने से वही रचयिता विदित होता है। रचना सतोचित विचारो से युक्त है। अत रचयिता सत मतानुयायी विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६३. रूप—इनका 'रूपमजरी' ग्रथ मिला है, जिसमे श्रीकृष्ण सबधी पद सगृहीत हैं। रचनाकाल मे कुछ गडबड़ है पर अनुमान से सवत् १९०८ ज्ञात होता है —

८ ० ९
"संवत विक्रम नृपति कौं वसु व्योमाक जुरूप।
पौस मास सित पक्ष तिथि षटी सूर अनूप॥

लिपिकाल १९२८ दिया है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३६४. रूपराम—ये "गिरिवरसमौ" के रचयिता है। ग्रथ मे श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही।

रचयिता का भी वृत्त अज्ञात है। खोज विवरण (३८–१३० और २९–२९९) मे क्रमश रूपराम सनाढ्य नाम के दो रचयिताओ का उल्लेख है, पर नही कहा जा सकता कि ये उनमे से कोई एक हैं या अथवा नही।

३६५. रूपसनातन—इन्होने ब्रजभाषा गद्य मे 'विदग्धमाधव' की रचना की, जिसमे गौडीय सप्रदाय के सिद्धातो के अनुसार राधाकृष्ण की क्रीडाओ का सरस वर्णन है। ग्रंथ अपूर्ण है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति से रचयिता का कोई पता नही चलता, पर ये खोज विवरण (६–२२३) में उल्लिखित रूप सनातन है। उक्त विवरण मे इनके सबध मे इस प्रकार लिखा है —

"वृ दावन निवासी, गौडीय सप्रदाय के वैष्णव। कहते है कि रूप और सनातन दो भाई थे। रूप राधाकुड पर और सनातन वृ दावन मे रहते थे।

३६६. रैदास—इनके नाम पर "कवीर रैदास सवाद" का विवरण लिया गया है। ग्रथ मे कवीर और रैदास का निर्गुण सवधी विवाद वर्णित है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का ग्रथ द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर ये काशी के प्रसिद्ध सत रैदास हैं, जो स्वामी रामानद जी के शिष्य थे। खोज विवरण (२–५५, २–६७, ६–२४०) और (२६–२७६) मे इनका उल्लेख हो गया है।

कवीर और रैदास का प्रस्तुत विवाद कहाँ तक सत्य है, नही कहा जा सकता। दोनो सत एक ही गुरु के चेले थे, अत दोनो मे इस प्रकार का विवाद छिड जाना युक्तिसगत नहीं जँचता। जान पडता है, पीछे से इनके अनुयायियो मे से ही किसी ने इसकी रचना की।

३६७. लक्ष्मीदास—इन्होने अपने 'पदगुटका' मे वखना, दादू, सुदरदास और सूरदास के भक्ति विषयक कुछ पदो का सग्रह किया है। गुटका के अत मे इनके भी दो पद है। इसका सग्रहकाल अन्य ग्रथ 'रामरक्षा कवच' के आधार पर सवत् १६०५ है। दोनो रचनाएँ एक ही हस्तलेख मे हैं और हस्तलेख एक ही कलम और एक ही स्याही से लिखा हुआ है।

सग्रहकर्ता का कोई परिचय नही मिलता। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

३६८. लखनसेनि—प्रस्तुत त्रिवर्षी मे इनकी 'वारहमासी' की एक प्रति का विवरण लिया गया है। पुस्तक पहले खोज विवरण (४१–२३६ क, ख) मे आ चुकी है। खेद है, इस वार भी इसके रचनाकाल और रचयिता के सवध मे कुछ पता न चल सका। प्रस्तुत प्रति सवत् १८६५ की लिखी हुई है।

३६९. लखनसेनि—इनकी 'लक्ष्मीचरित' रचना की दो प्रतियाँ मिली है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३४ और १६३५ है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलब्ध नही। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे ये भिन्न प्रतीत होते है। अत खोज मे नवोपलव्ध है।

३७०. लखनसेनि—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए भूमिका भाग मे सख्या, ४१।

३७१. लछिमनदास—इन्होंने सवत् १८६५ मे 'श्रीकृष्ण चरित्र' ग्रथ की रचना की। ग्रथ के अनुसार इनके गुरु का नाम हीरालाल था। अन्य वृत्त अज्ञात है। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे ये सर्वथा भिन्न हैं।

ग्रथ काव्य की दृष्टि से सरस है। इसकी प्रस्तुत प्रति सवत् १८७६ मे लिखी गई थी। रचयिता खोज मे नवोपलव्ध है।

३७२. ललित किसोरी—इनकी 'राजपोरिया लीला' नामक छोटी सी रचना मिली है। पुस्तक मे श्रीकृष्ण की वाललीला का वडा सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का विवरण नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम का एक रचयिता आया है, पर प्रमाणाभाव के कारण नही कहा जा सकता कि ये वही है, या उनसे भिन्न कोई और।

३७३. लाल कवि—"अगदपैंज" नाम से इनकी खडित रचना मिली है। रचना मे अगद के दौत्य-कर्म और उसकी निर्भीकता का ओजपूर्ण भाषा मे वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का ग्रथ द्वारा कोई परिचय नही मिलता। परतु ये खोज विवरण (२३–२४४) और (२६–२५९) मे उल्लिखित 'हनुमत-पैंज' के रचयिता लाल कवि है। उक्त विवरणो मे 'हनुमत पैंज' को 'सुदरकाड' के अतर्गत बतलाया है, जिससे पता चलता है कि इन्होने 'सपूर्ण रामचरित्र" की रचना की थी। उनमे इनके जिला सुलतानपुर निवासी और १९वी शताब्दी मे वर्तमान रहने का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत खोज मे इनकी 'हनुमत-पैंज' की भी खडित प्रति मिली है, पर रचनाकाल, लिपिकाल उसमे भी नही है।

३७४. लाल कवि—ये 'मान बत्तीसी' के रचयिता है और इस नाम के पूर्ववर्ती रचयिता से सर्वथा भिन्न है। पुस्तक मे श्रीराधा के मान का सरस वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का कोई वृत्त नही दिया है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३७५. द्विजलाल—इन्होने सस्कृत ग्रथ 'सौंदर्य लहरी' का हिंदी पद्यानुवाद किया है। अनुवाद कविता की दृष्टि से सरस है। परतु इसकी प्रस्तुत प्रति खडित है, जिसमे रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और परिचय अनुपलब्ध है। इन्होने जिस प्रकार अपना उल्लेख किया है उससे तो ये महाकवि विदित होते है —

"करुना करी तुमही दीया उर पीयो द्रविड द्विशिवाल।
वड़े कविन मे महाकवि भए एसे 'द्विजलाल' ॥७६॥"

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३७६. लालचंद या लब्धोदय—'पद्मिनी चरित्र (गोरा बादल रणजय)' के ये रचयिता हैं। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (३२–१३१) मे हो चुका है, जिसके अनुसार ये जैन धर्म के अनुयायी और उदयपुर के राजा हिंदूपति श्री जगतसिंह के समकालीन सवत् १७०२ (सभवत) के लगभग वर्तमान थे। इन्होने अपना नाम लक्षोदय भी दिया है—

प्रस्तुत ग्रथ का रचनाकाल सवत् १७०७ है —

"तसु श्रुत आग्रहकरि संवत सतरै सतोतरे चैनि पुनिम शनिवारि।
नवरस सहित सरस सबध नवो रच्यो रे निज वुधिने अनुसारि ॥१४॥

रचयिता ने अपनी गुरु परपरा भी दी है, पर वह अस्पष्ट हैं—

"श्री जिनमाणि कसूरि प्रगटा वाचक विनय समुद्र तासुसीस वरपव तीज गभै जाणी परे श्री हर्ष सील उठइ ॥१५॥ तामु विनय चवद विद्या सागसरे वाणी सरसविलास श्री जगनामी पाठक श्री ग्यान समुद्र जीरे प्ररगट तेज प्रकास ॥१६॥ साधु सिरोमणि सकल विद्या गुण शोभतारे वाचक श्री ग्यानदास तास प्रसादे सीलतरण गुण सथुव्यारे लब्धोदय हितकाज ॥१७॥ सामि-धरम ने सील तरण गुण साभल्यारे पुगै मन नी आस ॥ उछो अधिको कहिउ कवि चातुरी रे। मिछा दुकदतास ॥१८॥"

इसमे इनका नाम लब्दोदय है, पर सभवत लिपिकर्ता के हस्तदोष से ही लक्षोदय का लब्धोदय हो गया है या लब्धोदय ही नाम हो। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति सवत् १७५७ की लिखी है।

'राजस्थान के हिंदी के हस्तलिखित ग्रथो की खोज प्रथम भाग' पृष्ठ १७५ मे इनका नाम लब्धोदय दिया है। उसमे इनका उल्लेख निम्नलिखित प्रकार से है —

"ये खर तरगच्छीय जैनसाधु जिन माणिक्य सूरि की परम्परा मे ज्ञानराज गणि के शिष्य थे। इन्होने 'पद्मिनी चरित्र' नामक एक ग्रथ सवत् १७०७ मे मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह के

समय मे बनाया जिसकी भाषा गुजराती मिश्रित बोलचाल की राजस्थानी है। इसमें प्रसंगानुसार प्राय नवो रसो का समावेश हुआ है और कविता भी साधारणत अच्छी है।"

३७७. लालचदास या जन लालच—इन्होंने 'भागवत' का अनुवाद किया है। जिसकी दो प्रतियो के विवरण लिये गए है। खोज विवरण (२६–२६१) मे इसका उल्लेख हो चुका है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये हलुवाई थे और रायबरेली जिले मे टालमऊ के निवासी तथा सवत् १५८७ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत प्रतियो द्वारा इनका और कोई विशेष विवरण नही मिलता।

३७८. लालसाराम बाबा—इनके नाम से 'देवकी चरित्र' का विवरण लिया गया है, जिसमे श्रीकृष्ण और बलराम जी की माता देवकी का चरित्र वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का भी कोई परिचय नही मिलता। ग्रथदाता (नाम नही बताया, श्री पुजारी गोरखनाथ बाबा, दृगपुरा कुटी, पोस्ट, जिला गोरखपुर) के कथनानुसार इनका नाम बाबा लालसा राम था। ये डडैला ग्राम (गोरखपुर) के निवासी थे। जब बनारस से पढकर लौट रहे थे तो पचविसिया (विहार प्रात) स्थान पर कबीर पथ मे दीक्षित हो गए। इनके कुटुबी जन इन्हें दृगपुरा (डडैला ग्राम के समीप) ले आए, जहाँ ये अपनी स्त्री के साथ कुटी बनाकर रहने लगे। पैकौली (गोरखपुर) के पौहारी जी से इनका शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमे ये हार गए। फलत पौहारी जीके शिष्य हो गए और कबीर पथ छोड दिया।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

३७९. लालूभट्ट उपनाम 'प्रवीन'—प्रस्तुत खोज मे इनके भक्ति सबधी 'कवित्त, सवैयो' के एक सग्रह का पता लगा है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। प्रस्तुत सग्रह के विवरणकर्त्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, काँकरोली) के लेखानुसार ये तैलग ब्राह्मण थे और सवत् १३४० के लगभग वर्तमान थे।

सवत् मे भूल है। रचयिता ने गो० वल्लभाचार्य के सबध मे भी कवित्त रचे हैं, पर उक्त आचार्य का जन्मकाल सवत् १५३५ है। अत इसी के पश्चात् अधिक से अधिक १६वीं शताब्दी के अत की यह रचना मानी जा सकती है। सभवत यह संवत् १३४० न होकर सवत १६४० है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३८०. लोना (?)—इस बार 'बहुला कथा' नाम से छोटी सी रचना मिली है, जिसमे रचयिता के नाम का कोई निश्चित पता नही लगता। इसमे जहाँ तहाँ 'लोना' शब्द का प्रयोग हुआ है, इसलिये उसी को रचयिता का नाम मान लिया गया है।

रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १७०३ है। पुस्तक की भाषा से पता चलता है कि रचयिता विहार की ओर का था। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८१. लोहट (जैन)—इनकी जैनधर्म विषयक 'अठारा नातो को चौढाल्यो' नामक रचना मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नही मिलता। ग्रथ के विषय के आधार पर ये जैन धर्मावलवी थे। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३८२. वंशीधर—ये 'दानलीला' नामक ग्रथ के प्रणेता हैं। ग्रथ का विषय उसके नाम से स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता वल्लभ कुल के अनुयायी और द्वारिकेश जी के शिष्य थे :—

"द्वारिकेस पद कविल 'वंशीधर' धरि॰ यान ।
श्रीवल्लभ जिह हेत ते करौं भक्ति कौ दान ॥१॥"

श्री द्वारिकेश जी खोज विवरणो के आधार पर १६वी शताब्दी के मध्य मे वर्तमान थे अत इसी के लगभग इनका भी काल मानना उचित होगा ।

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

३८३. वत्साभट्ट—इनका 'अशौच विचार भाषा या मुडन नखच्छेद निर्णय' नाम से एक ग्रथ मिला है, जिसमे धर्मशास्त्रानुसार सूतक, मुडन और नखच्छेद आदि के निर्णय प्रतिपादित हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८७० दिया है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई विवरण नही मिलता । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

३८४. वाजिद—'विरह अग' नाम से इनकी रचना मिली है, जो इन्ही के रचे 'आरिल्लो' का एक अश है, देखिए खोज विवरण (२९–३२७ ए) । ग्रथ मे सतमतानुसार ज्ञानोपदेश का वर्णन है । रचनाकाल का पता नही । लिपिकाल सवत् १८५६ है ।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता । पिछले खोज विवरणो मे भी इनके सबध मे कोई निश्चित वात नही लिखी है । कही कवीरपथी और कही दादूपथी लिखा है । काल भी अनुमान से १६५७ माना है, देखिए खोज विवरण (२–७६, ३२–२२७, २९–३२७) ।

३८५. वासदेव शुक्ल—इनकी भक्ति तथा शृगार विषयक रचना 'कवितावली भक्ति विलास' मिली है । रचना की प्रस्तुत प्रति जुवली प्रेस सुलतानपुर मे छपी है । रचनाकाल अज्ञात है । मुद्रणकाल सवत् १९५२ है ।

रचयिता सुलतानपुर के अतर्गत मिठनेपुर स्थान के रहने वाले थे । अन्य परिचय नही मिलता । ग्रथ द्वारा ये प्रौढ कवि विदित होते हैं । खोज मे ये नवोपलब्ध हैं ।

३८६. विद्यारण्यतीर्थ 'देव'—इन्होने सवत् १८९८ मे 'युगलसुधा' या 'कृष्ण सुधा' नामक ग्रथ की रचना की । ग्रथ मे राधाकृष्ण की लीलाओ का सरस वर्णन है । इसकी प्रस्तुत प्रति प्राचीन पत्थर टाइप मे छपी हुई है और खडित है । यह पता नही चलता कि यह कहाँ छपी । छपने के लिये जो प्रति लिखी गई उसका भी सवत् १८९८ ही है ।

रचयिता का नाम केवल पुष्पिका मे मिला । ग्रथ मे जहाँ तहाँ 'देव' शब्द का प्रयोग है, अतएव विदित होता है कि यह उनका उपनाम रहा होगा । प्रस्तुत ग्रथ की रचना इन्होने काशीराज के प्रेमपात्र वावू रामप्रसन्न सिंह के निमित्त की ।

खोज विवरण (२६–४६५) मे ये इस ग्रथ के साथ आ गए है, पर उसमे इनका कोई विवरण नही दिया है ।

३८७. विश्वनाथ सिंह—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ४३ ।

३८८. विष्णकवि (विष्णुदास)—इनके 'महाभारत स्वर्गारोहण पर्व' की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है । रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही चलता । पिछले खोज विवरण (६–२४८) और (२९–३२८) मे इसका उल्लेख हो गया है । उक्त खोज विवरणो के आधार पर रचयिता सवत् १४९२ के लगभग वर्तमान और गोपाचलगढ (ग्वालियर) के राजा डोगर सिंह के आश्रित थे ।

रचयिता का पूरा नाम विष्णदास था । प्रस्तुत प्रति द्वारा इनका विशेष कोई वृत्त नही मिलता ।

३८९. विष्णुदत्त—इन्होंने 'तत्त्वमसि', 'अहं ब्रह्मास्मि' आदि वेदांत के चार वाक्यों पर 'भाषा महावाक्य विवरण' नाम से भाष्य किया है। ग्रंथ की प्रस्तुत प्रति खंडित है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं। विषय की दृष्टि से ग्रंथ महत्त्वपूर्ण है।

रचयिता का विवरण नहीं मिलता। संभवतः ये किसी मोहनलाल कायस्थ के आश्रय में रहते थे :—

"जाहिर तीन्यौ लोक मैं चित्रगुप्त को वंश।
ताहू में प्रविष्ट को बुधजन करत प्रसंश ॥४॥
दाता सुमति सुशील तँह प्रगट्यो मोहनलाल।
धर्म पथ मे प्रो पद यह श्रुति को मतसार ॥"

खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३९०. विष्णुदत्त महापात्र—इन्होंने संवत् १९१७ में 'दुर्गाशतक' की रचना की। ग्रंथ में दुर्गा की स्तुति के साथ साथ उनका माहात्म्य और चरित्र भी वर्णित है। वर्णन सरस और ओजपूर्ण भाषा में है। अतः काव्य की दृष्टि से यह उत्तम रचना है। प्रस्तुत प्रति में लिपिकाल भी संवत् १९१७ ही है, जिससे यह मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता का ग्रंथ से कोई परिचय नहीं मिलता। परंतु खोज विवरण (९–३०८, २३–४४३) में ये प्रस्तुत ग्रंथ के साथ आ चुके हैं। उक्त विवरणों के अनुसार ये महापात्र ब्राह्मण और विंध्याचल (मिरजापुर) निवासी थे।

३९१. विष्णुदास—इनके 'नव नागरी के पद' नाम से कुछ पद मिले हैं, जिनमें श्री राधा जी की कीर्ति और शृंगार का सरस वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। पिछले खोज विवरणों में इस नाम के कई रचयिता आए हैं, पर प्रमाणाभाव के कारण नहीं कहा जा सकता कि ये उनसे भिन्न हैं या अभिन्न।

३९२. विष्णुपुरी—इनकी भक्ति विषय पर लिखी हुई 'भक्ति रत्नावली' की 'भक्ति प्रकाशिका टीका' मिली है। टीका की प्रस्तुत प्रति में न तो रचनाकाल का उल्लेख है, और न लिपिकाल का ही।

रचयिता के संबंध में केवल इतना ही पता चलता है कि इनके एक मित्र माधवदास थे, जिन्होंने इनसे मणिमुक्तामाला की माँग की। इन्होंने कुछ दिन पश्चात् माला के बदले प्रस्तुत रचना पुरुषोत्तम क्षेत्र में उन्हें समर्पित की। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रंथ के टीकाकार कोई दूसरे व्यक्ति हैं। विष्णुपुरी मूलग्रंथ के रचयिता हैं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३९३. वीर भगत—'वृज की बाललीला' नाम से इनकी छोटी सी रचना मिली है। रचना में श्रीकृष्णलीलाओं का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १९४८ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त कोई विवरण नहीं मिलता। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

३९४. वीरभद्र—इनकी 'व्रजविलास, व्रजविहार और चंद्रावली' नाम से एक रचना की तीन प्रतियाँ मिली हैं। ग्रंथ में श्रीकृष्ण की व्रजलीलाओं का सरस वर्णन है। रचनाकाल और लिपिकाल किसी प्रति में नहीं है।

रचयिता का विवरण भी अप्राप्त है। खोज विवरण (१९–२६) में इनकी 'फागुन-लीला' का उल्लेख है, जो प्रस्तुत ग्रंथ से भिन्न है। उक्त खोज विवरण द्वारा भी इनका कोई वृत्त उपलब्ध नहीं होता। संभवतः खोज विवरण (३५–१०५) में उल्लिखित 'दूटियालीला' के रचयिता भी यही वीरभद्र हैं।

३९५. **वीरभान चौहान**---इन्होंने "अश्वमेध (भारत)" की रचना की, जो मूल 'जैमुनी अश्वमेध' (सस्कृत ग्रथ) का अनुवाद है। प्रस्तुत हस्तलेख बहुत जीर्ण शीर्ण और प्राचीन है। उससे रचनाकाल और लिपिकाल का पता नही चलता।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज विवरण (३८–१७) मे 'एकाक्षर मजरी' के रचयिता वीरभाण का उल्लेख है, पर यह नही कहा जा सकता कि प्रस्तुत रचयिता से उनका कोई साम्य है या नही।

३९६. **वृंदकवि**---रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ४४।

३९७. **वृजनाथ (त्रिविक्रमसुत)**---इनका नायिका भेद विपयक 'सरस रस' नाम से उत्तम ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित हे, जिससे रचनाकाल, लिपिकाल का कोई पता नही चलता।

रचयिता के विपय में केवल इतना ही मालूम हुआ कि ये किसी त्रिविक्रम के पुत्र थे। अन्य परिचय उपलब्ध नही होता। विवरणकर्त्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक विद्या विभाग, कॉंकरोली) ने इन्हें भरोच निवासी लिखा है, पर इसका आधार क्या है, पता नही। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

३९८. **वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'**---इनकी 'चित्रालकार' और 'चतुर्विधपत्री' नाम से दो रचनाएँ मिली हैं। प्रथम मे द्वयर्थक रचना करके प्रेम का वर्णन किया गया है। दूसरे मे गुरु, माता, पिता, मित्र, प्रेमपात्री और प्रेमपात्र को पत्र लिखने के प्रकार वर्णन किए गए हैं। रचनाकाल ज्ञात नही, पर विवरणकर्त्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, कॉंकरोली) ने सवत् १७५० के लगभग लिखा है। लिपिकाल सवत् १७९८ है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

३९९. **वैकुंठ जन**---इनके कुछ 'पद' मिले हैं, जिनमे रावण सबधी कथाएँ-जैसे, रावण का तपस्या करना, उसके बाद कुबेर का पराभव, पुष्पकयान का छीना जाना, कुभकर्ण के सोने के लिये विशाल भवन का निर्माण करना, कुशध्वज राजा की पुत्री वेदवती के साथ बलात्कार करना और वेदवती का श्राप देना तथा अग्नि मे भस्म होना आदि वर्णित हैं।

प्रस्तुत हस्तलेख खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नही। रचना काव्य की दृष्टि से सरस और उत्तम है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। इन्होने अपने नाम के साथ 'उपेंद्रसामी' (उपेंद्रस्वामी) का प्रयोग किया है, पर यह स्पष्ट नही होता कि वे कौन थे---

"जन वैकुंठ उपेंद्रसामि सुनो गुनि तव दूत कुबेरु पठाई"

रचना द्वारा ये प्रतिभाशाली कवि ज्ञात होते हैं। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४००. **व्यास जी**---'वृ दावन वर्णन' नाम से इनकी रचना मिली है। रचना मे रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सवत् १७८१ है। रचयिता का कोई वृत्त नही मिलता।

सभवत खोज विवरण (६–११८, ९–३३२, ४१–२५६) मे उल्लिखित व्यास जी यही हैं। उक्त खोज विवरणो के आधार पर ये सवत् १६१२ के लगभग वर्तमान, पहले ओडछा के निवासी पीछे वृ दावन मे साधु होकर रहने लगे।

४०१. **ब्रज दूलह**---इनकी दो रचनाएँ "विनय (करुणा) के पद' और 'बारहखडी (भक्त पत्रिका)" मिली हैं। जिनका विषय कृष्णभक्ति है। दूसरी रचना मे 'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के अक्षरो पर दोहे रचे गए है। रचनाकाल किसी मे नही। लिपिकाल बारह खडी मे सवत् १९२६ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नहीं मिलता। खोज विवरण (३८–१८) में आए व्रज दूल्हा यही विदित होते हैं, पर उसमें भी इनका कोई वृत्त नहीं दिया है।

४०२. गो० श्री व्रजभूषण जी—इनकी तीन रचनाएँ 'दान लीला', 'साँझी कीर्तन' और 'नीति विनोद भाषा' नाम से मिली हैं। रचनाकाल, लिपिकाल और विषय की दृष्टि से इनका विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) दानलीला—रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल संवत् १८४८। विषय—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन।

(२) साँझी कीर्तन—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल संवत् १९९०। विषय—राधाकृष्ण की साँझी लीला का वर्णन।

(३) नीति विनोद भाषा—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—ज्ञानोपदेश।

विवरण कर्त्ता (पं० कंठमणि शास्त्री, संचालक, विद्या विभाग, काँकरोली, मेवाड़) के लेखानुसार रचयिता काँकरोली के निवासी और संवत् १७६५ से १८३३ के लगभग वर्तमान थे। अन्य वृत्त नहीं दिया है। काँकरोली में वल्लभ संप्रदाय की गद्दी है, अतः रचयिता उक्त गद्दी के कोई गोस्वामी रहे, ऐसा जान पड़ता है। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४०३. गो० व्रजाभरण जी दीक्षित—प्रस्तुत विवर्णों में इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ मिली हैं —

(१) प्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन—रचनाकाल अप्राप्त। लिपिकाल संवत् १८३०। विषय—श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन।

(२) वल्लभाख्यान सटीक—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—आचार्य श्रीवल्लभाचार्य जी तथा श्री गुसाईं जी के चरित्र का वर्णन।

रचयिता का ग्रंथों द्वारा इतना ही पता चलता है कि ये दीक्षित ब्राह्मण, वल्लभ संप्रदाय के अनुयायी और कोई गोस्वामी थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४०४. गो० श्री व्रजराय जी—ये "नित्य सेवा विधि आह्निक" के रचयिता हैं। ग्रंथ में पुष्टिमार्गीय सिद्धांत के अनुसार प्रातःकाल से लेकर शयन पर्यंत के नित्य कर्मों का वर्णन है। प्राप्त हस्तलेख में रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है।

विवरण कर्त्ता (पं० कंठमणि शास्त्री, संचालक, विद्या विभाग, काँकरोली, मेवाड़) के लेखानुसार रचयिता अहमदाबाद (गुजरात) के रहनेवाले और संवत् १८५० के लगभग वर्तमान थे। अन्य विवरण अज्ञात है। खोज में इनका पता प्रथम बार लगा है।

४०५. शंकरदास (राव)—इनकी 'भाषा ज्योतिष' नामक रचना मिली है। रचना का उल्लेख खोज विवरण (६–३२८ ए) में है, पर उसमें इसका विवरण पत्र नहीं छपा है। उक्त खोज विवरण के अनुसार रचयिता वर्ण के ब्राह्मण, बिसवाँ (सीतापुर) निवासी और संवत् १८९१ में उत्पन्न हुए थे।

जन्मकाल के संबंध में विवरण में भूल है। प्रस्तुत प्रति संवत् १८६० की लिखी हुई है, अतः रचयिता का जन्मकाल स्वभावतः इससे पूर्व होना चाहिए। रचनाकाल अभी तक अज्ञात है।

४०६. शंकर द्विज—आयुर्वेद विषयक इनकी 'जोगरत्न' नाम की रचना मिली है। रचनाकाल संवत् १९०१ है। लिपिकाल दिया नहीं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नहीं मिलता। खोज में ये नए हैं।

४०७ शंकराचार्य—इनके नाम पर 'तत्त्वविवेक' और 'गंगा पुष्पांजलि' नामक रचनाओं के विवरण लिए गए हैं। प्रथम ग्रंथ इसी नाम के मूल ग्रंथ का अनुवाद है जो किसी दूसरे ने रचा है तथा जिसमें ब्रह्मज्ञान का वर्णन है। मूल रचनाएँ अद्वैतवादी सुप्रसिद्ध शंकराचार्य कृत हैं,

पर अनुवादकों के नामो के अभाव मे उन्ही के नाम से विवरण लिये गए है। ग्रथो मे भी उनका नाम आया है।

रचनाकाल, लिपिकाल ग्रथो की किसी भी प्रति मे उल्लिखित नही हैं।

४०८. शंभुनाथ त्रिपाठी—इस वार भी इनकी 'वैताल पच्चीसी' की एक प्रति का विवरण लिया गया है। ग्रथ पहले खोज विवरण (६–२३४ वी, २३–३७१ ई, एफ) और (२६–४२१ ए) मे आ गया है। उक्त खोज विवरणो के आधार पर ये टेटा (उन्नाव जिला) के निवासी, दौरियाखेडा (अवध) के राजा अचलसिह वैस के आश्रित और सवत् १८०३ के लगभग वर्तमान थे।

प्रस्तुत प्रति द्वारा ये वगसर (?) के राजा रघुनाथ के आश्रित थे। आश्रयदाता की वशावली इस प्रकार दी है —

तिलोकचद
|
पृथ्वीचद
|
अजयचद
|
देवराऊ
|
भैरवदास
|
ताराचद
|
सग्रामराऊ
|
कनक सिंह
|
पृथीराज
|
पुरदर राऊ
|
मरदन सिंह (रैयाराउ)
|
रघुनाथ

४०९. शंभूनाथ—इनकी 'शिवस्तुति' का विवरण लिया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९२६ वि० दिया है।

रचयिता अमेठी के राजा माधवप्रताप सिंह के आश्रय मे रहते थे और उनके पुत्र होने के निमित्त प्रस्तुत स्तोत्र द्वारा शिव की स्तुति किया करते थे। अन्य वृत्त नही दिया है।

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४१०. शारंगधर—इनके 'सगीत दीपिका' नामक ग्रथ की खडित प्रति मिली है। ग्रथ मे सगीत का शास्त्रीय पद्धति पर वडा विशद वर्णन किया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। विपय की दृष्टि से ग्रथ महत्वपूर्ण है।

रचयिता का, केवल इतना ही कि ये ब्राह्मण थे और कोई वृत्त नही मिलता :—

"भैरवीप्रथम तिय षोडश शीगार किये पैसी मध्यमाधि 'द्विज सारंग' बखानि है"।

खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४११. शारंगधर—इनकी एक रचना 'भावशतक' का विवरण लिया गया है। रचना मे प्रश्नोत्तर के रूप मे शृगार भाव लिये हुए दोहो का सग्रह है। साहित्यिक दृष्टि से रचना सरस और मनोरजक है।

रचनाकाल अज्ञात है, पर प्रस्तुत प्रति सवत् १६७२ की लिखी प्रति से नकल हुई है। ग्रत ग्रथ की प्राचीनता स्पष्ट है। प्रस्तुत प्रति की नकल सवत् १९९९ में राजस्थान के प्रसिद्ध साहित्यिक श्री अगरचद नाहटा ने की, जो हिंदी साहित्य सम्मेलन को भेजी गई।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। पूर्ववर्ती कवि से ये भिन्न है या अभिन्न, कुछ कहा नही जा सकता। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४१२. शिरोमणि—इनका अलकार और कोश विषयक ग्रथ, "उर्वशी नाममाला या नाममाला" नाम से मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है, ग्रत रचनाकाल का कोई पता न चल सका। लिपिकाल सवत् १८४६ है।

रचयिता का ग्रथ द्वारा कोई विवरण नही मिलता। खोज विवरण (६–२३५; २०–१७८) मे ये इस ग्रथ के साथ उल्लिखित हैं। उक्त विवरणो के अनुसार ये माथुर ब्राह्मण, सवत् १६९७ के लगभग वर्तमान और शाहजहाँ बादशाह के आश्रित थे। इनके पितामह परमानद (शतावधानी) और पिता मोहन क्रमश बादशाह अकबर और जहाँगीर के आश्रय में रहते थे।

४१३. शिवटहल सिंह ठाकुर (साधू सिंह)—'राधाकृष्ण' नाम से इनका ग्रथ मिला है। ग्रथ मे राधाकृष्ण का जनसाधारण मे प्रचलित वासनामय प्रेम का खडन है। यह बगाली भाषा मे रचित 'मुक्तालतावली' का हिंदी पद्यानुवाद है। इस दृष्टि से ग्रथ इधर का ही लिखा ज्ञात होता है। प्रति खडित है और एक मे रचनाकाल तथा लिपिकाल के उल्लेख नही है।

रचयिता को लोग साधूसिह भी कहते थे। उन्होंने अपने को गर्ग सुमत (महाराज दशरथ के मत्री) के पुत्र का वशज लिखा है। अन्य वृत्त नही मिलता। इनके दो मित्र विष्णु प्रसाद सिंह और ठाकुर भागीरथी सिंह थे, जिनके अनुरोध से प्रस्तुत रचना की गई। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४१४. शिवदत्त त्रिपाठी—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या २७।

४१५. शिवदास—इन्होने 'दुर्गासप्तशती' का अनुवाद किया है, जिसकी बिना नाम की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है। विषय के अनुसार ग्रथ का नाम 'देवी चरित्र' रख दिया गया है। अनुवाद पदो मे है। भाषा पच्छिमी राजस्थानी है, जिसमे गुजराती का भी मिश्रण है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही, पर ग्रथ की भाषा को देखने से ये पच्छिमी राजस्थान के रहनेवाले विदित होते हैं।

खोज मे इनका पता प्रथम बार लगा है।

४१६. शिवदास गदाधर—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, २८।

४१७. शिवबक्स सिंह सोमवंशी—इस त्रिवर्षी मे इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ मिली हैं :—

(१) कुंडलिया—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९०३। विषय—शृगार, उपदेश, भक्ति और नीति विषयक कुंडलियो का सग्रह।

(२) राधे हरि मिलन सतसई—रचनाकाल, लिपिकाल सवत् १८८० । विषय—राधाकृष्ण का विछोह और मिलन वर्णन । प्रस्तुत हस्तलेख मूल प्रति है ।

रचयिता सोमवशी क्षत्रिय और समोगरा (प्रयाग जिला) के निवासी थे । इनके वशज अभी तक उक्त ग्राम मे रहते है । पिता का नाम देवीवक्स सिंह था । खोज मे ये नवोपलव्ध हैं ।

४१८. शिवाराम वावा—ये 'भक्ति जयमाल' ग्रथ के रचयिता हैं और पिछले खोज विवरण (६–२६६, ४१–२६६) मे इस ग्रथ के साथ आ चुके हैं । ये जाति के कायस्थ और कारो (वलिया) के निवासी थे । जन्मकाल सवत् १७३७ था । वैष्णव सप्रदाय मे दीक्षित हो जाने पर ये वडे प्रसिद्ध महात्मा हुए । प्रसिद्ध औघडपथी कीनाराम के ये गुरु थे ।

इस वार 'भक्त जयमाल' की एक खडित प्रति और मिली है, जिसमे रचनाकाल सवत् १७८७ दिया है । लिपिकाल अज्ञात है । इसके द्वारा रचयिना के सवध मे नवीन वातें कुछ नही मिलती ।

४१९. शीतलदास—इनकी 'रामायण माहात्म्य' नामक रचना मिली है, जिसमे तुलसीकृत रामायण का माहात्म्य वर्णित है । रचनाकाल सवत् १९२९ और लिपिकाल सवत् १९३६ है । ग्रथ की विशेपता यह है कि इसमे रामचरितमानस के प्रत्येक कांड मे आए श्लोको, सोरठो, दोहो, छदो और चौपाइयो की सख्याएँ दी हैं । यदि ग्रथ और अधिक प्राचीन होता तो इसमे सदेह नही कि ये सख्याएँ वहुत कुछ विश्वसनीय होती । फिर भी आशा है, मानस प्रेमियो के लिये ये उपयोगी होगी । इसमे कर्म, उपासना, ज्ञान और दैन्य का वर्णन कर गो० तुलसीदास जी का कुछ सक्षिप्त वृत्त और जीवन-घटनाएँ भी दी हुई है । वृत्त और जीवन घटनाएँ वही है, जो सर्वत्र प्रचलित है ।

रचयिता ब्राह्मण थे और अयोध्या से नैऋत्य कोण की ओर छह योजन की दूरी पर निवास करते थे । इससे अधिक इनका और कोई वृत्त नही मिलता । ग्रथात मे एक नाम जगन्नाथ भी आया है गो इनका आदर से उल्लेख करते हैं

"श्रीवर सीतलदासकृत वनो महातम ज्ञान ।
जगन्नाथ रघुनाय यश मरम तत्व करि जान ॥"

इससे अनुमान होता है कि या तो ये प्रतिलिपिकर्त्ता थे अथवा शीतलदास जी के शिष्य एव लेखक । खोज मे रचयिता नवोपलव्ध है ।

४२०. शीतलदीन—इनका 'पदसग्रह' मिला है, जो खडित है । इसमे रचनाकाल लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता । पदो मे राधाकृष्ण की भक्ति और लीलाओ का वर्णन है ।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता । खोज मे ये नवोपलव्ध हैं ।

४२१ शेख अहमद—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, २९ ।

४२२. शेख निसार—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है । देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३० ।

४२३. शोभाचंद—इन्होने वल्लभकुल के श्री गोपीनाथ जी कृत सस्कृत ग्रथ 'साधन दीपिका' के आधार पर 'भक्ति विधान' ग्रथ की रचना की । ग्रथ मे पुष्टिमार्गीय सप्रदाय के सिद्धातानुसार मदिरो मे ठाकुर जी की सेवा सामग्री तथा उत्सव प्रकार का वर्णन है । रचनाकाल सवत १६८१ और लिपिकाल सवत् १७४८ है ।

रचयिता विवरणकर्ता (प० कठमाणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, कांकरोली, मेवाड) के लेखानुसार रचयिता किसी जयसिंह के सेवक, ब्रह्मभाट राय ताराचद के पुत्र थे। शेष विवरण अज्ञात है।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४२४. शोभाराम (महाराज)—इनकी 'गणितबोधिनी' (प्रथम भाग) मिली है। ग्रथ मे रचनाकाल, लिपिकाल नही दिए हैं। रचयिता भरतपुर के राजा जसवत सिंह के समसामयिक थे और कामवन मे रहते थे। वहाँ के किसी आनदलाल के लिये इन्होंने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। अन्य वृत्त अप्राप्त है। एक शोभाराम महाराज ('रसमाला' के रचयिता मनीराम के पिता) का उल्लेख खोज विवरण (१७–१६८) मे भी है, पर इनसे उनका साम्य स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नही मिलता। अत ये खोज मे नवीन हैं।

४२५. श्यामराम—इनकी ज्योतिष विषयक 'द्वादश राशिविचार' नामक छोटी सी रचना मिली है, जिसमे बारह राशियो का विचार और फल वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८६२ दिया है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। खोज विवरण (२–८०) मे उल्लिखित इस नाम के रचयिता से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

४२६. श्रीकृष्ण गंगाधर—इन्होंने सवत् १७१६ वि० मे "कुडनिर्माणवार्तिक" की रचना की, जिसमे यज्ञकुड विधान वर्णित है। वार्तिक राजस्थानी गद्य मे लिखा गया है, जो प्राचीनता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४२७. श्रीकृष्ण भट्ट—ये "दुर्गाभक्ति तरगिणी" के रचयिता है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नही है। रचयिता का भी कोई विवरण नही मिलता। खोज विवरण (१७–६३), (१२–१७६) और (३२–२०६) मे आए श्रीकृष्ण-कलानिधि से ये भिन्न हैं या अभिन्न, कुछ नही कहा जा सकता।

४२८. श्रीनिवास—इनकी 'सद्गुरु महिमा' नाम से रचना मिली है, जिसका विषय नाम से ही स्पष्ट है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई वृत्त उपलब्ध नही। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के रचयिता आए हैं, पर उनके साथ इनकी एकता स्थापित करने के लिये कोई प्रमाण नहीं।

४२९. श्रीनिवास—इनकी 'हनुमान पच्चीसी' का विवरण लिया गया है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति द्वारा रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं चलता।

रचयिता का विवरण भी उपलब्ध नही। पूर्ववर्ती रचयिता और पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ मे से ये कोई एक है या नही, ठीक ठीक नही कहा जा सकता।

४३०. श्रीपति—इन्होंने सवत् १७१६ मे 'महाभारत कर्ण पर्व' की रचना की। ग्रथ का उल्लेख खोज विवरण (२०–१८५ और २०–४१) मे भी हो चुका है। इसकी प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही दिया है।

रचयिता धर्मदास के पुत्र थे। देखिए, प्रस्तुत खोज विवरण मे सख्या, १७८। ये चार भाई थे—गग, खड्गसेन, दलपति और श्रीपति। सभी अच्छे कवि थे, जिनमे गग अधिक प्रसिद्ध हुए, देखिए प्रस्तुत खोज विवरण मे सख्या, ६५।

४३१. श्रीपति (काशीवासी)—इनके कुछ 'कवित्त' मिले हैं, जिनमे भक्ति और श्रृगार का वर्णन पाया जाता है। कविता की दृष्टि से कवित्त सरस और उत्तम है। रचनाकाल और लिपिकाल का उल्लेख नही मिलता।

रचयिता काशी के निवासी थे .—

"लखि ललचानो रूप करत बखानो जन्यो श्रीपति सुजान काशी नगर निवासी हैं।"

पूर्ववर्ती रचयिता से ये भिन्न हैं। परतु पिछले खोज विवरणो मे उल्लिखित इस नाम के अन्य रचयिता मे से भी ये कोई एक हैं या नही, कुछ कहा नही जा सकता।

४३२. श्रीलाल पंडित—इन्होंने निम्नलिखित दो ग्रथ रचे —

(१) भाषा चंद्रोदय—प्रस्तुत प्रपि छपी हुई है। रचनाकाल और मुद्रणकाल सवत् १६२२ है। विषय—व्याकरण।

(२) विद्यांकुर—इसकी प्रस्तुत प्रति छपी है। रचनाकाल और मुद्रणकाल सवत् १६१७ है। विषय—भूगोल। यह राजा शिवप्रसाद सितारे हिंद कृत भूगोल वृत्तात और मग्रलूमात के आधार पर रचा गया है।

रचयिता ने इन ग्रथो को पाठशालाओं मे पढाने के लिये पाठ्य पुस्तको के रूप मे प्रातीय (पश्चिम देश) गवर्नर तथा अवध देश के डाइरेक्टर आफ पब्लिक इन्स्ट्रक्शन, श्रीयुत विलियम हैण्डफोर्ड साहब बहादुर की आज्ञा से बनाया। इनका अन्य वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४३३. संज्यानाथ—इन्होने सस्कृत ग्रथ 'अवधूत गीता' का हिंदी पद्यबद्ध अनुवाद किया है। रचनाकाल अविदित है। लिपिकाल संवत् १८५६ दिया है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४३४. संतदास—इनकी 'साखी' का पता लगा है, जिसमे सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णित है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है। उसमे रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नही हैं।

रचयिता का भी कोई वृत्त उपलब्ध नही। ये प्रस्तुत रचना के साथ खोज विवरण (२३–३५७ ए, बी) मे उल्लिखित है। उक्त खोज विवरण के अनुसार ये सवत् १८३० के लगभग वर्तमान थे। सभवत खोज विवरण (६–२८१) (४१–२७४) मे आए सतदास भी यही हैं।

४३५. संतदास या संत रसिक—इन्होंने पदो मे "भ्रमरगीत" की रचना की। रचना मे उद्धव और गोपियो का सवाद वर्णित है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १६२३ दिया है।

रचयिता के अन्य नाम सतदास या सत रसिक भी हैं। अन्य वृत्त उपलब्ध नही। ये अच्छे कवि विदित होते है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४३६. सदानंद—इन्होंने अनाथदास (खोज विवरण ६–१२६, ६–७) कृत 'विचार-माल' ग्रंथ की टीका की। टीका के रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का परिचय भी अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४३७. सदाराम—इनके आध्यात्मिक ज्ञान विषयक 'अखड प्रकाश' की एक शुद्ध प्रति का विवरण लिया गया है। प्रति मे रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १६३० है।

रचयिता का प्रस्तुत प्रति द्वारा कोई विवरण नही मिलता, पर खोज विवरण (६–२७२) मे इनका यह ग्रथ आ चुका है। जिसके अनुसार ये १८वी शताब्दी मे वर्तमान और राज-गढ (मध्यभारत) के निवासी थे।

४३८. सबल श्याम—इनका वास्तविक नाम सबलसिंह चौहान था। पिछले खोज विवरणों मे इनके "महाभारत भाषा" और "भागवतभाषा" नामक ग्रथो का उल्लेख हो चुका है। देखिए खोज विवरण (४–६६) और (२३–३६३; प० २२–६७, ६–२२४, २६–४१२)। उक्त खोज विवरणों के अनुसार ये जाति के चौहान क्षत्रिय थे। जन्म सवत् १७०२ और सभवत. १७८१ तक वर्तमान थे। कदाचित् इटावा के निकट किसी गाँव के जमींदार रहे और राजा वीरसिंह के आश्रय मे रहते थे।

इस बार इनकी "बरवैषट्ऋतु" नाम से नई रचना और मिली है। इसमें बरवा छंदों में षट्ऋतु वर्णन के साथ साथ गोपियों के विरह का मार्मिक वर्णन है। काव्य की दृष्टि से रचना सुंदर, सरस और मनोरंजक है। खेद है, इसकी प्रस्तुत प्रति खंडित है। उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं लगता।

रचयिता के संबंध में भी नाम के अतिरिक्त और कुछ विदित नहीं होता।

४३९. समरसिंह महाराज—इन्होंने मूल संस्कृत ग्रंथ 'महिम्नस्तोत्र' की भाषा में पद्यबद्ध टीका की, जिसकी एक खंडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १८४० दिया है।

रचयिता कोई राजा थे, पर पता नहीं कि कहाँ के राजा थे। अन्य परिचय भी उपलब्ध नहीं। खोज में ये नवोपलब्ध हैं।

४४०. समाधान—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग में हो गया है। देखिए, भूमिका भाग में संख्या, ३१।

४४१. सरदार कवि—पिछले खोज विवरणों में इनके कुछ ग्रंथ आ चुके हैं, देखिए खोज विवरण (६–२८३), (४–५६, ४१–२७६, ३–९२ और २०–१७४)। उक्त विवरणों के आधार पर ये ललितपुर (झाँसी) निवासी, हरिजन के पुत्र, काशीनरेश महाराज ईश्वरीप्रसाद नारायण सिंह के आश्रित और संवत् १९०३–१९४० के लगभग वर्तमान थे।

इस त्रिवर्षी में इनकी निम्नलिखित दो रचनाएँ और मिली हैं —

(१) तर्कप्रकाश भाषा—रचनाकाल संवत् १९०९ है। विषय—न्यायग्रंथ तर्कसंग्रह का हिंदी अनुवाद। प्रस्तुत प्रति खंडित है।

(२) रामकथाकल्पद्रुम—रचनाकाल दिया नहीं। लिपिकाल संवत् १९६२ है। विषय—रामकथा वर्णन।

रचयिता ने दूसरे ग्रंथ (रामकथाकल्पद्रुम) में अपनी वंशावली इस प्रकार दी है —

राघोदास
|
भावसिंह
|
भवानी
|
जयसिंह
|
हरिजन
|
सरदार कवि

अन्य कोई नवीन बात नहीं प्रकट होती।

४४२. सरदार सिंह (सुलतानसिंह सुत)—इन्होंने संगीत पर 'सुरतरंग' नामक ग्रंथ की रचना की, जिसकी एक खंडित प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता के संबंध में केवल इतना ही पता चलता है कि ये किसी सुलतान सिंह के पुत्र थे। खोज में ये नवोपलब्ध हैं। (दे० (०२–२)।

४४३. सरमद—इनके नाम से 'बैत सरमद' मिला है, जिसका विवरण लिया गया है।

ग्रथ मे सब धर्मों की एकता के सदंध मे सतोचित विचार प्रकट किए गए है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का कोई विवरण नही मिलता। सभवत ये वही सरमद हैं जिनके उपदेशो का प्रभाव दारा (औरगजेब के बड़े भाई, जिसको उसने मरवा दिया था) पर पडा था। इनके सवध मे देखिए प्रस्तुत विवरणिका मे महमद औलिया का विवरण (सख्या २७६)।

४४४. सर्वेश्वरदास—इन्होने सवत् १८८७ मे "नैकाव्य कथा" की रचना की जिसमे सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश का वर्णन है। ग्रथ की दो प्रतियाँ मिली हैं, जिनमे लिपिकाल क्रमश सवत् १९०७ और सवत् १९१० दिए है।

रचयिता गाजीपुर के अतर्गत कुरथा ग्राम (स्थान) के समीप गगातट पर रहते थे। सभवत ये सतमतानुयायी थे। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

४४५. सहदेव—इनका ज्योतिप विपयक विना नाम का ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं हैं।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और विवरण नही मिलता। भड्डली के साथ भी सहदेव का नाम आता है, पर उस सहदेव से ये भिन्न ही जान पडते है। खोज मे नवोपलव्ध है।

४४६. सादिक—इनकी शालिहोत्र विपयक 'सालोत्री' नाम से रचना मिली है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८६६ है।

रचयिता घोडो का व्यापारी था। अन्य परिचय नही मिलता। नाम से और ग्रथ की शैली से ये मुसलमान विदित होते है। इनका पता प्रथम वार लगा है।

४४७. साधु जन—इनकी 'ध्रुवचरित्र' रचना का पता चला है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी विवरण उपलब्ध नही। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४४८. सिंधु कवि उपनाम 'आनंद'—इस कवि की 'दिनमणि वशावली गुण कथन' नामक रचना मिली है, जिसमे उदयपुर के महाराणाओ की वशावली और उनके यशस्वी कार्यो का वर्णन है। ऐतिहासिक दृप्टि से रचना महत्वपूर्ण है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का उपनाम 'आनद' है। इसके अतिरिक्त और कोई वृत्त नही मिलता। इन्होंने उदयपुर के राणाओं की वशावली, वप्पा रावल से लेकर जगतसिंह महाराज तक, का वर्णन किया है। इससे पता चलता है कि ये महाराज जगतसिह (राज्यकाल १८९८ के लगभग) के समसामयिक थे।

खोज मे ये नवोपलव्ध है।

४४९. सिकंदर फिरंगी—इन्होंने 'वाजनामा' की रचना शाह आलमगीर के आदेश से शाहजादा आजमशाह के लिये की थी। ग्रथ मे वाज पकडने और पालने की विधि तथा उसके गुण-दोप आदि के वर्णन किए गए है। रचनाकाल ज्ञात नही, लिपिकाल सवत् १८२० है।

रचयिता आलमगीर वादशाह के आश्रय मे रहते थे और हकीम थे। शेप वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

४५०. सियाराम—इन्होंने गोस्वामी तुलसीदास कृत 'वैराग्य सदीपनी' की टीका की है जिसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का विवरण नही मिलता। सभवत खोज विवरण (२६-४५३) मे आए सियाराम, जो सवत् १८१३ के लगभग वर्तमान थे, यही हैं।

४५१. सुंदरदास—ये दादूदयाल जी के सुप्रसिद्ध शिप्य सुदरदास हैं। खोज विवरणो मे इनकी वहुत सी रचनाओ का उल्लेख है, देखिए (२-२५ नौ०, ३-३४, ६-२४२, २३-

४१५) तथा (प० २२–१०७, ६–३११, ४१–२८७, १२–१८४, २६–४३०)। इनं खोज विवरणो के अनुसार ये खडेलवाल वैश्य, जन्म सवत् १६५३, मृत्यु सवत् १७४६, शाह परमानद के पुत्र और द्यौसा (जयपुर राज्य) निवासी थे।

इस वार इनकी दो रचनाएँ 'सुदर प्रवोध' और 'अद्भुत ग्रथ' नाम से और मिली हैं। पिछले खोज विवरणो मे इनका नामोल्लेख नही पाया जाता। रचनाकाल, लिपिकाल और विपयानुसार इनका विवरण इस प्रकार है —

(१) सुदरप्रवोध—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १८८३। विपय—ज्ञान, वैराग्य और निर्गुण भक्ति का वर्णन।

(२) अद्भुत ग्रथ—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विपय—मतमतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन।

रचयिता के सवध मे इन रचनाओ द्वारा कोई नवीन वात विदित नही होती।

४५२. सुदर कवि—इनकी "वारहमासी" मिली है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के रचयिताओ से ये नितात भिन्न हैं। इनकी प्रस्तुत रचना फारसी मिश्रित खडी वोली मे हैं, जिससे ये वीसवी सदी के जान पडते है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

४५३. सुदर कवि—इनकी "रामरहस्य" नामक रचना की एक खडित प्रति का विवरण लिया गया है, जिसमे श्रीरामचद्र जी का जनकपुर-विहार वर्णित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं। खोज विवरण (१–९८) मे इसका उल्लेख हो चुका है, जिसके अनुसार ये कृष्णगढ के महाराज राजसिंह की पुत्री थी। महाराज सावतसिंह (नागरीदास) और वहादुरसिंह इनके भाई थे। सवत् १८४५ के लगभग वर्तमान। श्री कृष्ण भगवान् की ये भक्त थी।

इनकी वहुत सी रचनाएँ पहले मिल चुकी है, देखिए खोज विवरण (१–९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०२, १०३ और १०४)।

४५४. सुखदेव (अनुमान से)—इनके नाम से 'गुरु महिमा' नामक छोटी सी रचना का विवरण लिया गया है। विपय पुस्तक के नाम से ही विदित है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात हैं।

रचयिता का वृत्त भी अप्राप्त है। इनके रचयिता होने मे भी सदेह है।

४५५. सुखानंदनाथ—इन्होने हरिहरानद कृत मूल सस्कृत ग्रथ 'पशुमर्दनाख्य' की भापा टीका की। ग्रथ मे शैवधर्म सवधी वातो का सग्रह है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८९७ है।

रचयिता हरिहरानद के शिष्य थे, और विवरण अप्राप्त है। खोज मे नवोपलव्ध हैं।

४५६. सुवंस कवि—इनकी 'नरसिंह पचासका' मिली है, जिसमे भगवान् नरसिंह की स्तुति वर्णित है। रचनाकाल सवत् १७१० है। लिपिकाल दिया नही।

रचयिता का पूरा नाम सुवसराय था। ग्रथ से और कुछ पता नही लगता। खोज विवरण (३५–९८) मे आए सुवसराय यही विदित होते है।

४५७. सुवरण—इनके ज्ञान, भक्ति और शृगार विपयक कुछ 'कवित्त' मिले है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का भी वृत्त उपलव्ध नही। ये अच्छे कवि विदित होते है। खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

४५८. सूरजदास—इनका एक ग्रथ "रामरहारी" नाम से मिला है जिसमे रामचरित्र के अतर्गत लवकुश कथा का वर्णन है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति खडित है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८१९ है।

रचनाकाल केवल 'रघुनाथ अलकार' मे स० १८४० उल्लिखित है। प्रस्तुत दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है, जिसका लिपिकाल सवत् १८४५ है।

ग्रथो के अनुसार रचयिता अलवेलेलाल जी के शिष्य थे और सवत् १८४० के लगभग वर्तमान थे।

४६९. सेवाराम—इनका "नलपुराण या नलदमयती चरित" ग्रथ मिला है। ग्रथ किसी पुराण के आधार पर लिखा गया है। रचनाकाल अज्ञात है, लिपिकाल सवत् १८५३ है।

रचयिता वेरी ग्राम (मथुरा के निकट) के निवासी, किसी राजा रामपाल के आश्रित थे। अन्य वृत्त नही मिलता। इनके कुछ ग्रथ 'गगा चरित्र' आदि पहले भी मिल चुके है, देखिए खोज विवरण (३८–१३९, ३२–१९८)। उक्त खोज विवरणो के अनुसार ये वर्ण के ब्राह्मण, अखैराम के वशज और सवत् १८४४ के लगभग वर्तमान थे।

४७०. सैयदपहाड़ (सैदपहाड)—इनके "रससागर" नामक ग्रथ का विवरण लिया गया है। ग्रथ का विषय रसायन है। खोज विवरण (६–३०५, ६–२७३) मे इसका उल्लेख हो गया है। उक्त खोज विवरणो के अनुसार रचयिता काशी निवासी और सैयद हमजा के पुत्र थे।

प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल का उल्लेख नही। लिपिकाल सवत् १९१२ है। इसमे रचयिता को सैयद अहमद सुत या सैयद अहमदजामुत लिखा है, जो सभवत सैयद हमजा का ही विकृत रूप है। अन्य वृत्त नही दिया है।

४७१. सोमनाथ या शशिनाथ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ४५।

४७२. स्यामीदास (? स्वामीदास)—इनकी छोटी सी रचना 'रामअक्षरी' नाम से मिली है। रचना मे रामकथा का अत्यत सक्षेप मे वर्णन है। रचनाकाल, लिपिकाल का उल्लेख नहीं मिलता।

रचयिता का भी कोई विवरण उपलब्ध नही होता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४७३. स्वामी कार्तिक (?)—ये 'रागमकीर्ण रागमाला' नामक सगीत विषयक ग्रथ के रचयिता हैं। ग्रथ का रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९२० है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और वृत्त नही मिलता। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४७४. हनुमंत कवि—इनका सवत् १९३५ मे रचा गया "पारासरी भाषा (उडदाय प्रदीप)" नामक ग्रथ मिला है। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे लिपिकाल नही है, पर यह मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के और किसी नग्रस्थान के निवासी थे। अन्य वृत्त अप्राप्त है। खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४७५. हनुमंत कवि और राम नारायण—इन दोनो व्यक्तियो ने "सनेह लीलामृत पच्चीसी" की रचना की है। रचना लावनी चाल मे लिखी गई है। विषय गोपी उद्धव सवाद है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिताओ का परिचय नही मिलता। रामनारायण के तीन उपनाम 'रामगुसाईं', 'गुसाईराम' और 'द्विजराम गुसाईं' थे। इसमे पता चलता है कि ये ब्राह्मण थे।

प्रस्तुत हस्तलेख याज्ञिक सग्रह (ना० प्र० सभा) मे है, जिसके ऊपर स्वर्गीय प० मयाशकर याज्ञिक ने लिखा है कि ये लोग व्रज मे राधाकुड पर रहते थे।

खोज मे ये नवोपलब्ध है।

४७६. हनुमान—इनके दो ग्रथो 'शिखनख' और 'द्रौपदी अष्टक' के विवरण लिए गए हैं। प्रथम ग्रथ मे राधा जी के शिख नख का और दूसरे मे द्रौपदी के चीरहरण का वर्णन है। दोनो उत्तम काव्य रचनाएँ है। इनकी प्रस्तुत प्रतियो मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है।

रचयिता का भी इनके द्वारा कोई विवरण नही मिलता। परतु 'शिखनख' का उल्लेख खोज विवरण (२३–१४७) मे हो चुका है, जिसमे इनके रीवाँ निवासी होने की सभावना की गई है। प्रस्तुत रचनाओ द्वारा ये प्रतिभाशाली कवि विदित होते है।

४७७. हरजू (सुकवि)—इन्होने "विहारी सतसई" का नायिका भेद के अनुसार नवीन क्रम लगाया, जिसकी एक प्रति का विवरण लिया गया है। रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १९४३ है। खोज विवरण (४१–३१२) मे ग्रथ का उल्लेख हो गया है। उक्त विवरण के अनुसार रचयिता जौनपुर निवासी, किसी रामदत्त के आश्रित और सवत् १७६१ मे वर्तमान थे। प्रस्तुत प्रति द्वारा और कोई परिचय नही मिलता।

४७८. हरदेव गिरि—इनका 'भगवद्गीता का अनुवाद' मिला है, जो पहले खोज विवरण (१७–६९) मे आ चुका है। उक्त विवरण मे इनका परिचय इस प्रकार है :—

"काशी के परमहस साधु, पश्चात् दलीपपुर गाँव मे रहने लगे। सवत् १९०१ के लगभग वर्तमान"

ग्रथ की प्रस्तुत प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १९०१ है। रचयिता ने किसी हनुमत नृपति का उल्लेख किया है, जिन्होने गगा के किनारे एक ग्राम वसाया था। इनके विश्रामदास नामक शिष्य ने प्रस्तुत प्रति लिखी।

४७९. हरि आनंद—इन्होने "देवीविलास (दुर्गासवाद)" की रचना की। ग्रथ मे भगवती की कीर्ति और कर्मो का वडा सुदर, भव्य और काव्योपयुक्त वर्णन है। रचनाकाल सवत् १८४९ और लिपिकाल सवत् १८७७ है। प्रस्तुत प्रति सवत् १८६२ मे रचयिता के हाथ की लिखी प्रति से नकल हुई है।

रचयिता गौड ब्राह्मण थे और गगा यमुना के वीच डिभाई नगर मे रहते थे। पिता का नाम दूलहराम था। इनके एक धनी मित्र सीताराम थे, जिनके कहने पर इन्होने प्रस्तुत ग्रथ की रचना की। अन्य वृत्त अज्ञात है। खोज मे ये नवोपलव्ध है।

४८०. हरिकृष्णदास या कृष्णदास—इन्होने सवत् १९०७ मे 'रसमहोदधि' की रचना की। ग्रथ मे वल्लभ कुल के गुसाई श्री गिरिधर लाल जी का चरित्र वर्णन किया गया है। इसकी प्रस्तुत प्रति सवत् १९४१ की लिखी है। जीवन वृत्त के अतिरिक्त काव्य की दृष्टि से भी रचना अच्छी है।

रचयिता का नाम हरिकृष्णदास या कृष्णदास दोनो मिलते है। ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। इससे अधिक इनका और कोई परिचय नही मिलता। प्रस्तुत ग्रथ के द्वारा ये अच्छे कवि जान पडते हैं। खोज मे नवोपलव्ध है।

४८१. हरिचरण (द्विज)—इनके कुछ 'फाग' मिले हैं, जिनमे वियोग शृगार का अच्छा वर्णन है। रचना की भाषा मे भोजपुरी का मिश्रण है।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का भी परिचय नही मिलता। भाषा के आधार पर जान पडता है, ये पश्चिमी विहार अथवा गोरखपुर, आजमगढ और वलिया जिलो मे से कही के रहने वाले थे।

खोज मे ये नवोपलव्ध हैं।

४८२. हरिदास—इनकी "व्रजलीला" नामक रचना मिली है, जिसमे श्रीकृष्ण की व्रज लीला का वर्णन है। काव्य की दृष्टि से रचना साधारण कोटि की है। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और परिचय नही मिलता। पिछले खोज विवरणो मे इस नाम के कई रचयिताओ का उल्लेख है, पर प्रमाणाभाव मे उनमे से किसी के साथ इनका साम्य नही ठहराया जा सकता।

४८३. हरिदास (संभवतः हरिराय)—इनकी दो रचनाएँ, "गोवर्द्धन लीला" और "श्री गुसाई जी विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा" नाम से, मिली हैं। इनके रचनाकाल, लिपिकाल और विषयादि का विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) **गोवर्धन लीला**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्धन लीला का वर्णन।

(२) **श्री गुसाई जी विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—श्री गो० विट्ठलनाथ जी की वनयात्रा का वर्णन।

ग्रथो द्वारा रचयिता का इतना ही पता चलता है कि ये वल्लभ सप्रदाय के अनुयायी थे। अन्य वृत्त अज्ञात है। विवरणकर्ता (प० कठमणि शास्त्री, सचालक, विद्या विभाग, काँकरोली) के लेखानुसार ये सुप्रसिद्ध हरिराय है, जो नाथ द्वारा (उदयपुर) मे श्री गोकुल नाथ मदिर के अधिष्ठाता थे। इनके सबध मे देखिए, प्रस्तुत विवरण मे हरिराय जी का विवरण सख्या (४८६)।

४८४. हरिदास (जन)—इनके कुछ 'पद' मिले है, जिनमे सतमतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णित है। पदो की प्रस्तुत प्रति खडित है। उसमे रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नही हैं।

रचयिता का भी नाम के अतिरिक्त और विवरण उपलब्ध नही। इनकी रचना बहुत सरस है। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४८५. हरिदेव—इनके दो ग्रथ, "गुरुसत" और "रामायण (रामवैभव)" नाम से मिले हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है —

(१) **गुरुसत**—रचनाकाल १८८९, लिपिकाल सवत् १८९० वि०। विषय—गुरु माहात्म्य। लिपिकाल की दृष्टि से प्रति रचयिता के काल की ही है, अत महत्वपूर्ण है।

(२) **रामायण (रामवैभव)**—रचनाकाल, लिपिकाल एक ही सवत् १८९४। विषय—रामचरित्र वर्णन। यह कवित्त, सवैया और छप्पय आदि छदो मे है। रचनाकाल, लिपिकाल एक होने से प्रस्तुत प्रति मूल प्रति विदित होती है।

रचयिता ब्राह्मण वर्ण के थे। अन्य परिचय उपलब्ध नही। खोज विवरण (३२–७९ ए) मे 'गुरुसत' का उल्लेख हो गया है, पर उसमे भी इनका कोई वृत्त नही मिलता। ये अच्छे कवि जान पडते है।

४८६ हरिराय (उपनाम रसिकदास, रसिकराय, रसिक प्रीतम आदि)—ये रसिक प्रीतम, रसिकदास, रसिकराय, रसिकचरण और रसिक शिरोमणि उपनामो से भी रचना करते थे। पिछले खोज विवरणो मे इनके कई ग्रथो के उल्लेख है, देखिए खोज विवरण (१७–७४, ३२–८३, ३५–३८, ४१–३२२– ००–३८, २३–१६०, ३८–५९)। इनके अनुसार ये गोकुल निवासी, वल्लभाचार्य के शिष्य व अनुयायी, सिंहागनाथद्वारा (मेवाड, उदयपुर) मे श्री गोकुलनाथ जी के मदिर के अधिष्ठाता और सवत् १६०७ के लगभग वर्तमान थे।

इस बार इनके निम्नलिखित ग्रथ और मिले हैं :—

(१) **मधुराष्टक की टीका**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार श्री ठाकुर जी के माधुर्य रस का वर्णन। मूल ग्रथ सस्कृत मे है।

(२) **चिंतन**—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। विषय—पुष्टिमार्गीय सिद्धातानुसार ज्ञानोपदेश। इसमे रचयिता का नाम 'रसिकदास' है।

(३) **अष्टाक्षर मंत्र की टीका**—इसकी दो प्रतियो के विवरण लिये गए हैं। रचनाकाल, लिपिकाल किसी मे नही दिए है। विषय—पुष्टिमार्गीय अष्टाक्षर मन्त्र की व्याख्या और माहात्म्य वर्णन।

(४) गोकुलाष्टक की टीका—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—गोकुल का माहात्म्य वर्णन।

(५) षट्खष्टि अपराधा—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवो के अपराध तथा उनसे निवृत्त होने के उपायो का वर्णन।

(६) नवरात्र के कीर्त्तन—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—नवरात्रों मे गाए जाने वाले पदो का सग्रह।

(७) नवग्रह आकार (नवग्रह पूजन प्रकार)—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति मे शाति लाभ के निमित्त नवग्रहो का जप और उनकी पूजा का विधान वर्णन।

(८) नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—गो० विट्ठलनाथ जी का यशवर्णन। मूलग्रथ सस्कृत मे है, जिसको गो० विट्ठलनाथ जी के पाँचवें पुत्र गो० रघुनाथ जी ने रचा।

(९) नित्यभावना (सेवा तथा स्वरूप की)—रचनाकाल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८५५ के पूर्व। विषय पुष्टिमार्गीय सेवा प्रकार का विवेचन।

(१०) पुष्टि दृढाव की वार्ता—रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त। विषय—पुष्टि सप्रदाय के वैष्णवो को ज्ञानोपदेश। इसकी दो प्रतियाँ मिली है। खोज विवरण (३२–८३) मे यह वार्ता आ गई है।

(११) श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न (सचित्र)—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—भगवान् के चरणो के षोडश चिह्नो का वर्णन।

(१२) वरसदिन के उत्सव को भाव—रचनाकाल अज्ञात। लिपिकाल सवत् १९५९। विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति का वर्णन।

(१३) वसंत होरी तथा डोल की भावना तथा तदात्म वर्णन—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सप्रदाय मे डोलोत्सव मनाने का वर्णन।

(१४) चतुःश्लोकी टीका—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—चतुःश्लोकी भागवत की भाषा टीका। मूल सस्कृत टीका आचार्य वल्लभाचार्य जी कृत है।

(१५) कुभनदास की वार्ता—चौरासी अपराध वर्णन—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात। विषय—पुष्टिमार्गीय सेवापद्धति और सिद्धातो का वर्णन।

(१६) कीर्त्तन सग्रह—रचनाकाल और लिपिकाल अविदित। विषय—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाये जाने वाले पदो का सग्रह।

इन ग्रथो द्वारा रचयिता का और कोई विशेष परिचय नही मिलता।

४८७. हरिवल्लभ—इनकी "राधानाम माधुरी" नामक रचना का विवरण लिया गया है, जिसमे श्री राधा जी के माधुर्य का वर्णन है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १८२४ है।

ग्रथ द्वारा न तो रचयिता के नाम का पता चलता है और न उसका अन्य कोई परिचय ही उपलब्ध होता है। खोज विवरण (२९–१४७ जी) मे यह हरिवल्लभ के नाम पर उल्लिखित है। इसी आधार पर यह इनकी रचना मान ली गई है। उक्त विवरण मे इनका इतना ही परिचय मिलता है कि ये वर्ण के ब्राह्मण और सवत् १७७१ के लगभग वर्तमान थे।

४८८. हरि विलास—"हरिविलासाख्य" नाम से इनकी उत्तम काव्यकृति उपलब्ध हुई है, जिसमे राम और कृष्ण चरित्र सक्षेप मे वर्णन किए गए है। रचना की प्रस्तुत प्रति खडित

है। उसमें रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नही मिलता । रचना दोहा, चौपाई, सवैया, कवित्त, छप्पय आदि अनेक छदो मे हुई है।

रचयिता का नाम के अतिरिक्त और कोई परिचय नही मिलता। सभवत ये खोज-विवरण (२६–१४६ और २६–१७७) मे आए हरिविलास है, जो दामोदर के पुत्र, गोमती तट पर लक्ष्मणपुर (लखनऊ) के निवासी और सवत् १६१६ के लगभग वर्तमान थे। उक्त खोज विवरणो मे इनके छह ग्रथो के उल्लेख है।

४८६. हसन अली खाँ—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३२।

४६०. हिम्मति सिंह—इनको "गगा प्रबोध गीता" सरस रचना है, जिसमे गगा माहात्म्य वर्णित है। रचनाकाल सवत् १८२५ है और लिपिकाल सवत् १८५८।

रचयिता ने नाम के अतिरिक्त अपना और कोई परिचय नही दिया। पिछले खोज विवरणो मे आए इस नाम के व्यक्तियो से ये नितात भिन्न विदित होते है। अत खोज मे नवोपलब्ध हैं।

४६१. हीरालाल (लाला)—इन्होंने वाणिज्य व्यवसाय और वस्तुओ के क्रय विक्रय के सबध मे "वनिकप्रिया" ग्रथ की रचना की। ग्रथ की प्रस्तुत प्रति से न तो रचनाकाल, लिपिकाल का पता चलता है और न इनके वृत्त का ही।

खोज मे ये नवोपलब्ध है ।

४६२. हुलास पाठक—इस त्रिवर्षी मे इनके "शालिहोत्र" की एक खडित प्रति और मिली है। खोज विवरण (२६–१८३) मे इस ग्रथ का उल्लेख हो गया है, पर उसमे रचयिता का कोई विवरण नही दिया है। प्रस्तुत प्रति द्वारा भी इनका वृत्त उपलब्ध नही होता। रचनाकाल, लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

४६३. हुलासदास—इनकी "गणेश कथा" का विवरण लिया गया है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८८७ दिया है। रचयिता का परिचय उपलब्ध नही। खोज मे ये नवोपलब्ध हैं।

४६४, हेमरतन—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है। देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३३।

४६५. हेमराज (मथेन)—रचयिता का विवेचन भूमिका भाग मे हो गया है, देखिए, भूमिका भाग मे सख्या, ३४।

संख्या १. गगामहात्म, रचयिता—अखैराम, कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—६ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४३४, पूर्ण। रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ वि०, लिपिकाल—स० १८४० वि०, प्राप्ति-स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस।

आदि—श्री गणाधिपतये नमः ॥ अथ गंगा महातम लिप्यते ॥

॥ चौपाई ॥

जय जय श्री सुषदेव गुसांई। ग्यान भान जग प्रगटे आंई ॥
जिनके चरनदास विप्याता। पारब्रह्म मे निस दिन राता ॥१॥
गुर छौना पर भये कृपाला। तिनकूं ग्यान दियो ततकाला ॥
गुर छौंना गुर पुरवे आसा। तिनको "अपैराम" है दासा ॥२॥

कीजै कृपा दीन जन जानी । गुर महिमां कछु कहु बपानी ॥
मम वुधि अलप कहन गम नाही । हिरदै वैठ प्रकासो आही ॥३॥

:o: :o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

ऐसें ही मन सोच करि सोय गयो ता वार ।
सुपने मे गुर छौंन गुर वचन कहे ततसार ॥२५॥
सकल सिरोमनि भक्ति है तासूं अधिकी गग ।
सिष सोई वरनन करो उपजै ज्ञान तरंग ॥२६॥

:o: :o: :o: :o:

अंत ॥ दोहा ॥

गंग महातम की कथा पढैं सुनें चित लाय ।
अषैराम सुष उपजै मुक्ति रूप होय जाय ॥३६॥
अषैराम वर्नन कियौ गग महातम सार ।
जो कोई नित प्रति पढै लहै पदारथ च्यार ॥३७॥

॥ चौपई ॥

संवत अठारह सै वत्तीसौ जानौं । माह सुदी पूनौं पहचानौ ॥
दीत वार वारकूं सोई । गग महातम पूरन होई ॥३८॥
गंग महातम वरन सुनायौ । जे तो मेरी वुध मैं आयौ ॥
सुरसरि की महिमा जु अपारा । सक्षेपन मैं करी उचारा ॥३९॥

॥ दोहा ॥

जटाशंकरी की कथा यौं वरनी अषैराम ।
जो कोई सीखैं सुनैं पावै हरिपुर धाम ॥४०॥

इति श्रीस्वामी अषैराम जी कृतं गगा महातम सपूर्ण प्रकर्ण बीसमौं ॥२०॥ इदं लिषतं केसोराम सवत् १८४० भादवा वदि ६ षष्टि चद्र वासरे ।

विषय—गगा माहात्म्य वर्णन । ग्रथ मे वीस प्रकरण है । रचनाकाल सवत् अठारह सै वत्तीसौ जानौ । माह सुदी पूनौ पहचानौं ॥३२॥

संख्या २. सिंघासनवत्तीसी, रचयिता—अखैराम, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—४६, आकार—८३/४ × ७१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५५, पूर्ण । रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१२ वि०, लिपिकाल—स० १९१० वि०, प्राप्तिस्थान—भारती भवन, पुस्तकालय, इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमो नमः ॥ अथ सिंहासन वत्तीसी छदवद्ध लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

गणपति सुमिरौ सारदा श्रीवल्लभ सिर नाय ।
राधामोहन ध्यान धरि विक्रम जसहि वनाय ॥१॥
श्री विक्रम नरनाह की सुजस कथा बत्तीस ।
भाषा करि वरनौ तिन्है कृष्ण चरण धरि सीस ॥२॥
जितयक मेरी वुद्धि है तिहि सम कही बनाय ।
छिमित होउ कविराज सब चूक्यौ लेहु सम्हारि ॥३॥

मथुरा मंडल देस में निज वृज मध्य सुथान ।
अतिही दीर्घ सुहावनौ अमरपुरी अनुमान ॥४॥
:o: :o: :o:

अथराजवंसवर्णन

॥ दोहा ॥

नारायण की नाभि ते चतुरानन अवरेषि ।
अत्रि भयौ ता दृगन तें ता दृग चन्द विसेषि ॥५१॥
:o: :o: :o:
ता वृजराज के सुत प्रगट भाव सिंह नरनाह ।
तिनके भए वदनेस सुत अनगुन गुनन अथाह ॥५६॥
:o: :o: :o:
ज्यौ दसरथ के सुत सकल भए राम अनुहार ।
त्यौं वदनेस पवित्र घर सूरज सिंघ कुमार ॥५७॥
:o: :o: :o:
प्रथम ताहि असीस करि उपज्यो हिये हुलास ।
सूरजमल्ल के नाम कौ रच्यौ "सुजान विलास" ॥६६॥
:o: :o: :o:

मध्य— ॥ दोहा ॥

और महूरत साधि कें चढन लग्यौ भुवपाल ।
विजया बोली पूतरी दूजे वचन रसाल ॥१॥
विक्रम नृपति समान जौ एकहुं करहु जु काज ।
तौ निसंक नरनाह तुम चढौ सिंघासन आज ॥२॥
विक्रम नृप केसौं भयौ कहौ पुत्रिका वात ।
कहन लगी वह पूतरी सुनत हियौ सरसात ॥३॥
:o: :o: :o:

हरिगीता

वदनेस श्री जदुवंस भूपति सकल गुनि निधि जानिये ।
तिहि अरिन के वल षंड कीने कृष्णभक्त वषानिये ।
जिहि सुवन लाल सुजान सिंघ विलास कीरति छाइयौ ।
"कवि अषैराम" सनेह सौं पुतरी सिंघासन गाइयौ ॥३३॥
इति श्री सिंघासन वत्तीसी कवि अषैराम कृते द्वितीयौ विलास ॥२२॥
:o: :o: :o:

अंत— देववधू फिरि भाषि कें सुनो भोज महाराज ।
जो यह चरित कहे सुनें ते विलसे सुषसाज ॥२८॥
कहि कें चली अकास कौं सहित सिंघासन साज ।
जाय मिली सुरराज कौं साजे सकल समाज ॥२९॥
अठारह से वारह गनौ संवतसर घर सूर ।
श्रांवण वदि की तीज कौ ग्रंथ कियौ परिपूर ॥१३०॥

हरिगीता

वदनेस श्री जदुवंस भूपति सकल गुननिधि जानिये ।
तिहि अरिनि के वल षड कीने कृष्ण भक्ति प्रमानिये ।

जिहि सुवन लाल सुजान सिंघ अनेक कीरति गाइयौ ।
कवि अर्थराम सनेह सौं पुतरी सिंघासन गाइयौ ॥१३१॥

इति श्री सिंघासनवत्तीसी कवि अर्थराम विरचिते नाम द्वात्रिंशमों विलास. ॥३२॥ समाप्तोय ग्रंथश्च ॥ संवत् १९१० मिति मार्गशिर कृष्ण ६ भृगौ लिषतं भोलानाथ ॥

विषय—सस्कृत ग्रथ सिंहासन बत्तीसी का हिंदी अनुवाद।

सख्या ३. गुरू अष्टक, रचयिता—अग्र स्वामी, कागज—देसी, पत्र—१, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० जगेसर दुबे, ग्राम—मदरिया, पोस्ट—तरकुलवा, जिला—गोरखपुर।

आदि—श्री रामाय नमः

आनद कद अलोल अचवत ब्रह्म वेद सनातनं ।
सकल मूनीजन चरन वदितं श्री गुरु चरन प्रणामीहं ॥१॥
आकास जोति प्रकास पूर्ण त्रीवेणी तीर्थ संगम ।
निरालव अस कोटि यग्यं श्री गुरु चरन प्रणामिहं ॥२॥
धर्म धिर गभिर धिरज ज्ञान गर्भ संपूर्ण ।
लाल लीला मदन मोहन श्री गुरु........॥३॥
ब्रंह्म अमृत नयन पूरन सोहं तिलकं विराजितं ।
श्रवन कुंडल अजाय रतक श्री गुरु चरण...॥४॥
मेरु डंड सुचित काया उनमुनी मुद्रा लीय ।
चारि स्नान नीत्यं श्री गुरु............॥५॥
सीध वुधि सीधतं वाणी आपदा भयमंजनं ।
कुमल पत्र यथायोधं श्री गुरु चरन......॥६॥

अंत— दिव्य रूप प्रधनु भानु सकल विघ्न विनासनं ।
निराधार आधार स्वामी श्री गुरु........॥७॥
श्री गुरु रामानद दयाला आतुर ध्यायसून समाधिनं ।
अक रूप तीहूं लोक गमता श्री गुरु चरन प्रणामीहं ॥८॥
श्री गुरु अष्टक पढत नीत दीन प्राप्यते फल दायकं ।
"अग्रस्वामी" चरनवंदित श्री गुरु चरन प्र....॥९॥
इति श्री गुरु अष्टक संपूर्ण समापतं ॥
कारतिक मासे सुकल पक्ष वार सुक्रवार ॥

श्री राम कृष्णाय नम.

विषय—गुरु (श्री रामानद जी) की स्तुति की गई है।

संख्या ४. अठारह नाते, रचयिता—अचल कीर्ति (स्थान—फिरोजाबाद वासी), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—६¾ × ४¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—अथ अठारह नाते लिप्यते। प्रथम जीनेस्वराय नम·

गानु एक पसावोजी अठारह नातै कहूं सुनहु भतिविक चीतलाय जी ॥१॥
करम महा फल वरदाउ जं वुद्धीय प्रसिद्ध है भरथ दोष सुपराम से जी
आरज षड मझार मथुरा सुष निवासो जी ॥२॥

कर्म विन्नांगद राजतहाँ जकौवंस उदारो जी
धनपति सेंव वसै तहा द्रव्यवंत अरोजी ॥३॥
कर्म मध सेन्या वेस्या तहो सवसे करै सनेह जी
कर्म एक समै सव वन कल्या क्रिडा करन वसतो जी
धनपति नै देषो तवै मधु सेना सुषवंती जी ॥४॥

मध्य—कर्म चल्यौ कल्यौ वौ हौत्यो तहा मथुरा नगर मझारी जी।
मधु सेन्या वेस्या जहा जाय पौहौच्यौ व जी ॥२६॥
करम दीयौ दरव सुष भोगवै गये कछु काल्यौ जी
पुत्र एक ताकै भयो पलना झूलौ ललौ जी करम ॥३०॥
एक समै आर्जिका पूछै श्री मुनि संतो जी
मोसो सव व्यौरो कहै कह हमारी कथो जी ॥३१॥
कर्म अवधिवंत मुनी वोलियो सुनी पुत्री एक वात जी
अपनो माता सौं कह्यौ जाय वतावो धाम जी ॥३२॥

अंत—कर्म यह संसार असार है हो
जिनवासी रस पिय दया धर्म चित मैं ही यहै मुकत की नीक ॥५७॥
भ कर्म धर्म कीयै धन होत है धर्म कीयै धन होय
अचल कीर्त्त कवी यौ कहै धर्म करो सव कोय ॥५८॥
कर्म सहर फीरोजावाद मै हौं नाते की चोवाल
उवारस वसौ कहौ सीषौ धर्म विचार ॥५९॥

इति श्री अठारह नाते संपूर्ण ॥ श्री ॥

विषय—इसमे जैन धर्म सवधी वातो का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—अचल कीर्ति के विषय मे केवल इतना ही विदित है कि इनका निवास-स्थान फिरोजावाद था। अन्य कुछ विदित नही होता।

संख्या ५. हरसूत्रह्म मुक्तावली, रचयिता—अजगरनाथ, (स्थान—अजगरा, वनारस), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—१० × ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०४ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री प० देवराज पाण्डेय, ग्राम–नोनरा, पो०–राजपुर, डि०–गाजीपुर।

आदि—.......................... (खंडित)
निम परच्यो सवारि ॥ जीन लगा मरी के वस...।
षन विविधि सुठारि ॥५॥ चौपाई ॥ गज सै तीनि वरनि नहिं जाई ॥
उत्तर दक्षिण देस सोहाई ॥
रय सत पाँच पचास विसेषा ॥ अगनित गो वृष करै को लेषा ॥
हीरा मनि मानिक वहु जाती ॥ स्वर्णरौप्य अगिनित वहुभाँती ॥
:o: :o: :o: :o:
सप्तम राज महल महिराजू ॥ मालिक सहित रहहिं तजि काजू ॥
वसै सदा नृप निज तिय संगा ॥ परम प्रेम करि प्रीति अभंगा ॥
सप्तम राज महल महि राजू ॥ मानिक सहित रहहिं तजि काजू ॥
वसै सदा नृप निज तिय संगा ॥ परम प्रेम करि पृति अभगा ॥

॥ दोहा ॥

ऐसहि अहनिसि सुख करत तासु काल नियरान॥
हरसू द्विज गृह द्वीप लखि भूप नारि बिलपान॥७॥

:o: :o: :o:

सुनहु नाथ जहँ वर यह दीपा॥ ते जानिये विसेष प्रतीपा॥

o o o.

यहि प्रकार नृप हिय हरषाई॥ हरसू वल वुधि तेज सुनाई॥
सुनतहिं परी मुरिछि महि कैसे॥ लागत वज्र गिरेव गिरि जैसे॥

॥ छद ॥

मानिकमती कह आपु रथ चढि सुभट लै तहँ जाइयै॥
दीपक वरै जेहि धाम ताकहुँ नाथ वेगि गिराइयै॥
नाहीत मैं मरि जाव जल महँ डूबि वर विष पाइयै॥
राउर सपथ यह किये विनु प्रभु जियत मोहि न पाइयै॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

मुक्तावलि मणिमाल सुचि अजगर द्विज करतार॥
पहिरायउ द्विज सेवकन्ह प्रेम सूत्र सजदार॥

:o: :o: :o:

संवत श्रुति नभ अंक महि पौष शुक्ल गुरुवार॥
योग लग्न भल चन्द्र वल शभु तियी तिथिकार॥
श्री मुक्तावली गृंथ यह विरच्यौ अजगर नाथ॥
श्री कालीचरणादि द्विज जो सुनि भयउ सनाथ॥४०॥

॥ अथ विसर्जन दोहा ॥

कहहिं सुनहिं जे ब्रह्म जस सहित विवेक विचारि।
तिनहिं चार फल देतु हैं श्री हरि हर गुरुचारि॥

:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

.... अपूर्ण।

विषय—हरसूब्रह्म की कथा का वर्णन।

विहार प्रात के शाहावाद जिले मे चैनपुर नामक स्थान है, जहाँ शालिवाहन नामक राजा राज्य करते थे। उनकी स्त्री का नाम "मानमती" या मानिकमती था। राजमहल से कुछ ही दूरी पर "हरसू पाण्डेय" ब्राह्मण का घर था। आप राज पुरोहित थे। बडे प्रसिद्ध एव वैभवशाली व्यक्ति थे। एक दिन 'मानमती' ने महाराज से पूछा, 'महाराज यह किस व्यक्ति का घर है, जहाँ दिन रात दीपक प्रज्वलित रहता है। राजा के बताने पर रानी ने कहा, 'यदि आप इस मकान को गिरवा नही देते तो मैं आत्महत्या कर लूंगी।' वहुत समझाने पर भी रानी ने न माना तो लाचार होकर राजा को "हरसू" का घर गिरवाना पडा।

"हरसू पाण्डेय" ने राजमहल के सामने 'अनशन' आरभ कर दिया। राजकन्या ने किसी प्रकार शर्वत पिलाकर उनकी प्राण रक्षा की। "हरसू के श्रापसे राजकुल का नाश हुआ, राजा वशहीन हो गया। केवल वह कन्या रह गई जिसने हरसू ब्रह्म को शर्वत पिलाया था। सवत् १४८५ वि० मे हरसू पाण्डेय का शरीरात हुआ।

उस समय सैयद वश के वादशाह मुवारक शाह दिल्ली के सिंहासन पर आरूढ थे। उनका दूसरा नाम आलम शाह भी था। जनश्रुतियो से ज्ञात हुआ कि हरसू पाण्डेय मर कर भी जीवित हो गए। पश्चात् दिल्लीपति से उन्होंने अनुरोध किया कि आप चैनपुर पर चढाई करे। जो हो, शालिवाहन के इस कुकृत्य मे प्रजा असतुष्ट थी, इसलिये आलमशाह ने सुअवसर जान चैनपुर पर अपना अधिकार जमा लिया।

ब्राह्मणमण्डली एव स्थानीय जनता "हरसू पाण्डेय" से सतुष्ट रही। राजवश नष्ट होने पर वही उनके स्मारक स्वरूप "ब्रह्म" की स्थापना हुई। आज भी लोग उस स्मारक को आदर की दृष्टि से देखते हैं और दूर दूर से आकर उस स्थान की पूजा करते हैं।

रचनाकाल

४ ० ९ १
संवत श्रुति नभ अंक महि पौष शुक्ल गुरुवार।
योग लग्न भल चंद्रवल शंभु तिथी तिथिसार॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण तथा खडित है। केवल अठारह पत्ने उपलव्ध है। रचयिता "अजगरनाथ" जी है। आप अजगरा ग्राम (काशी) के रहनेवाले थे। प० कालीचरण के आग्रह पर 'हरसूब्रह्म मुक्तावली' की रचना की। रचनाकाल स० १९०४ वि० है, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता के सवध मे और कुछ ज्ञात नही होता।

ग्रथ की लिपि नागरी है। अनेक प्रकार के छदो का प्रयोग किया गया है, जैसे—दोहा, चौपाई, छद आदि। पद सरस एवं भावपूर्ण है। भाषा भी ओजस्वी है।

संख्या ६. परचरी पीपा जी, रचयिता—अनतदास, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—९×५॥। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२४०, पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७०९, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० व०—८२, पु० स० १८ है।

आदि—॥श्री रामाय नमः॥ श्री सुरसतीये नमः॥ परचरी पीपा जु की लखीतं॥ सब संतन की आग्या पाऊ॥ तो पीपा जु की कथा सुनाऊं। गांगरूनपुर पाटण स्थानुं। कीयो दास अनंत वखानुं॥१॥ गागरूनपुर वरनु केसा। दीखे पाप धरम तोहा पेसा। वहो विधि बाड़ी काकु वानी वासु। ओर मंडी पसो ३ यको पासु॥२॥ तेह पुर पीपा पीची राऊ। परजा कु दुख देअन काऊ।

मध्य—पृ० २५

सेवा भक्त करे चित्त लाई। वहोर न मन मे दुवध्या आई।
पीपा करे राम की सेवा। ओर न कोई दूजा देवा।१६।
कली केवल नाम आधारा। ओर न कछू मनही वीचारा।
ताते हरजी सदा सहाई। तरण भर लेषे लोक वडाई।१७।
सीता सहित लाज सव खोई। ऐसी भगत्य कोन पें होई।
ऐसो रीत सदा निभाई। तजी वडाई राम गुन गाई॥१८॥

साखी। सवते प्यारी कामनी लाग्य मुयो संसार।
सो पीपे तर्ण भर गणी डारा सिर का भार॥१९॥ विश्राम॥२१॥

अंत— साखी—

दास अनंत कहा कहे सारदा लखे न ओर।
सेसनाग गावे सदा नौत्म गुण उठी भोर।३८।

नित्य नित्य गुण गावे सदा तोहू न पावे पार ।
दास अनंत कहा कहे हरि को जस अपार ।३६।
इति श्री पीपाजी की परचरी संपूर्ण ॥

समाप्त । विश्राम ३५ ॥ संवत् १७८९ वरष होरी रोपनी के दीन पून के दीन दीन ग्रंथ सपूर्ण ।

विषय—पीपाजी की जीवनी और भगवद्भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पन्नों में है और जीर्ण है । सरस्वती भंडार की छाप लगी हुई है ।

सख्या ७ एकादशी माहात्म्य, रचयिता—अमरदास (स्थान—लक्षमणपुरी), कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—९ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०९, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८१५ वि०, लिपिकाल—सं० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचंद्र सिंह, एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि............... ।

चरन कमल वंदौ गुरु केरें ॥ सीतल सुभग सुमंगल घेरे ॥ (पत्र २)
हृदे धरे अति मोह नसावें ॥ विमल विराग विवेक वढावें ॥
श्री गुर चरण रेनु मनु लावें ॥ मिटहिं अमंगल मंगल पावें ॥
हृदे मुकुर मल नेकु ना लागें ॥ गुरु पद रेनु जासु चित पागें ॥
:o: :o: :o:
संवत अष्टादस सत जहिया ॥ पंद्रह उपर राजत तहिया ॥ (पत्र ३ व ४)
श्रावणमास कृष्ण रविवारा ॥ विमल कथा कार कृत विरतारा ॥
जासु महातम सो तिथि जानी ॥ सकल सिद्धि प्रद मंगल खानी ॥

॥ दोहा ॥

लछिमन पुरी प्रसिद्धि जग षट कुल विप्रनेवास ॥
नदी गोमती तट वसत चारिउ वरन सुपास ॥

॥ चौपाई ॥

बिमल सलिल जो मंजन करही ॥ महा घोर संताप न जरही ॥
तीरथ कोटि वसैं तेहि माझा ॥ तेहि जल पान जनि दुष वाझा ॥
कामधेनु तनया के तीरा ॥ तजहिं प्रान नहिं वहुरि सरीरा ॥
महिमा अमित पार को लहई ॥ लघु मति "अमरदास" किमि कहई ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सुनहिं कथा विश्वास युत भगवत वचन प्रमान ॥ (पत्र १६)
अंगद ते नर पार भव सिंधु विना जलजान ॥
कहेउ सत्त इतिहास सुनि रिषि सौनक सुप मानि ॥
प्रेम नेम आनंद उर कथा प्रीति अधिकानि ॥

इति श्रीसूत सौनक संवादे ज्ञानदीपके मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षे उतपत्ये सुवोधिनी नाम एकादसी प्रथमोध्याय १

अंत— दोहा ॥ पत्र (११८)

सकल लोक आधार जेहि सक्ति मुक्ति सुष षानि ॥
ब्रह्मादिक सुरनमिते जेहि सो अंगद हित दानि ॥
मात पिता गोविंद गुर सुजन वंदि सिर नाई ॥
अंगद भाषा करिह यहु सुनि कलि कलुष नसाई ॥
१८१५ दोहा ॥ अष्टादस सरपंच दस संवत भे विमराज ॥
पौष कृष्ण सनि नवम तिथि कथा पुर्न सुभ साज ॥१६॥

इति श्री सूप्तज सौनक संवादे ग्यान दीपके कार्तिक मासे शुक्ल पक्षे प्रमोदिनि नाम एकादसी माहात्मे चतुर्विसमो अध्यायः ॥२४॥ सवत् १८६६—चैत्र सुक्ल पछे तिथौ दसम्यां रविवासरे ....:o: :o: :o:

विषय—एकादशी माहात्म्य वर्णन। इसमे चौवीस अध्याय हैं।

रचनाकाल

संवत् अष्टादस सत जहिया ॥ पंद्रह उपर राजत तहिया ॥
श्रावण मास कृष्ण रविवारा ॥ विमल कथा कर कृत विस्तारा ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। केवल प्रथम पत्र उपलब्ध नही। रचनाकाल स० १८१५ वि० और लिपिकाल स० १८६६ वि० हैं। रचयिता "अमरदास" है। आप लछिमनपुरी के रहने वाले थे। यथा—

"पट कुल विप्र नेवास" से प्रतीत होता है कि आप ब्राह्मण कुल के थे। अधिकाश स्थलो पर "अगद", "अगद दास" नाम मिलता है। केवल एक ही स्थान पर "अमर दास" मिलता है। कदाचित् "अगददास" का लिपिकार ने भूल से "अमर दास" कर दिया हो। शुद्ध नाम 'अगद दास' ही है। आप लछिमनपुरी (लखनऊ) निवासी थे।

संख्या ८. राधाकृष्ण रूपयुगल विलास सचित्र, रचयिता—अमरेश कुमार (निवास-स्थान—शाहपुरा), कागज—देशी, पत्र—१०३ (पृ० ८ से १११ तक), आकार—८ × ११½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९२३ वै०, प्राप्तिस्थान—श्रीसरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व०—१००, पु० स०१/२ है।

आदि—छद—

जय गणपति गणराय। विनै करू सिर नाय।
जय सारद सुखदाय। दीजै विपत वहाय।
जै कपिपति हनूमंत। जपत तुम्हें सुर संत।
पोहोंचे जाय निसंक। छिन मे जारी लंक।
जय गिरिजापति ईस। भक्ति करो वकसीस।
जय संकर त्रिपुरार। सेवत सदा मुरार।
जय जय दीन दयाल। कीनी वेगि निहाल ॥

मध्य—पृ० ५७

अथ क्षीर सागर सेस सैया की लीला लिख्यते ॥
दोहा—व्रज भक्तन ने वीनती प्रभु सौं करी सुनाय।
सेस सैया निजि रूप कौं इन नैननि दरसाय ॥८१॥
श्री ठाकुर वलदेव जी सेस सिरोमन रूप।
अनिगिन सेस अनन्त अति अद्भुत अजव अनूप ॥८२॥

संख चक्र आयुध सरस गदा पद्म निजि पान ।
घन घुमड घनघोर द्रुपुष्प वरस सुखवान ॥८३॥
देवन आदि सरूप लखि विनै कीन्ह करि जोरि ।
अब ये रूप दूराईये मारो कंस कठोर ॥८४॥
ब्रजगोपिकान कु ये रूप दिखायो देवता नें पुष्पन की वरषा करी है ॥८५॥
आगे क्षीर सागर है ।
सेष शाई को झाकी दीखाई है ।

चित्र शेष शाई भगवान् का :—

अंत—
॥चौपाई॥
धन्य नगरी धन्य देसा । सुव सोवे नृपत हमेसा ।
सदा सहाय गिररीसा । चिरजीवो कोर वरीसा ॥१६॥
साहपुर प्रगट भई श्री अमरेश कुमार ।
तिन लीला वरनन करी भक्ति रूप निसतार ॥२०॥
॥ दोहा ॥
सवत उगणीसह तेइस को माधव मास गुन ग्राम ।
शुक्ल पक्ष तिथि अष्टमी भानुरूप सुखधाम ॥२०॥

हस्ताक्षर तनसुख शर्मणो लिखितं सुभ ग्रथ सद्भूहम । इति श्री राधा कृष्ण रूप जुगल विलास समाप्त ग्रथ ।

विषय—श्री कृष्ण और वलदेव जी की ब्रजलीला का वर्णन । ग्रथ मे सुदर चित्र दिए हुए है ।

विशेष ज्ञातव्य—यह पुस्तक लाल, नीली, सुनहली और काली स्याहियो मे सुदर लिपि मे लिखी हुई है । चारो तरफ हाशिया छोडे गए हैं । कागज दूधिया रग का है । इसके आदि मे ब्रज चौरासी कोस के यात्रास्थलो के नाम लिखे हैं । पश्चात् यह ग्रथ पृ० स० ८ से लिखा है । प्रकरणो के अनुसार ८१ सुदर रगीन चित्र भी दिए गए हैं, जो दर्शनीय हैं ।

संख्या ६. पद (अनुमान से), रचयिता—अयोध्यागिरि, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१२ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० मुन्नी चौबे, ग्राम–हुरभुजपुर, पो०—सादात, गाजीपुर ।

आदि—
प्रात रमी दोउ रश लंपट शुरत जुद्द जै जुत अति फूल ।
श्रम वारिज घन विदु वदन पर भूषण अगहि अग विकूल ॥१॥
कछु रह्यो तिलक शिथिल अलकावलि वदन कमल मानो अलि भूल ।
"अजोध्या गिर" मदन रग रगि रहे नैंन वैंन कटि शिथिल दुकूल ॥२॥
आजु तो जुवति तेर्यो वहन आनंद भर्यो पिय शगम के शूचत शुष चैंन ।
आलश वलित वोल शुरगरगे कपोले वियकित अरुण ऊनीदोउ नैंन ॥

अंत—
अतिहि अरन तेरे नैंन नलिन री ।
आलश जुत ईत रात रगमगे भये निशि जागरम धिन री ।
शिथिल पलक मैं उठति गोलक गति विघयो मोह न मृग शकत चालि न री ।
अजोध्यागीर कलगामिनि शंभ्रम देत मवरज अलिन री ॥२॥

विषय—गोपी कृष्ण प्रेम वर्णन।

संख्या १०. रसधमार, रचयिता—अली मुहीब खाँ "प्रीतम", कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—५½ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, स० १७६७ (फागुन सुदि ६ वुधवार), लिपि-काल—स० १८०० पौष सुदि १२ शनि), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० व० ३५, पुस्तक स० ७ है।

आदि—"श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

दोहा—रंग गुलाल लपटे दोऊ पिय प्यारी सुख पाई।
रस धमार वरनन करो हूजौ सदा सहाई ॥१॥
"प्रीतम' वसत सु आगरें अली मुहव खाँ नाम।
सूरत कवि कौ सिष्य हे जानो कवि रसधाम ॥२॥
सर के मन इहि मास मों उपजत सरस तरंग॥
रस धमार वरनन करो फागुन पाइ प्रसग ॥३॥
सत्रह सै सत्तानवै संवत फागुन मास।
सुकल पक्ष वुधवार छठ रस धमार जगवास ॥४॥

मध्य—पृ० ५ कवित्त—

आजु प्यारी होरी को समाज करि घेरे लाल प्रेम सरसत मोद नैंननि भरतु है।
भोरी भरि न्यारी ह्वै निहारी फेंकी प्रीतम पैं जब प्रेम बढचो मन लालहि हरतु है।
आँनि गहि आचरु लडैती सौं कहन लागे हमहू को देहू गति अद्‌भुत धरतु है।
देख्यो न सुन्यो हे कहूं ऐसो है गुलाल यह तन पै परत लाल मन को करतु है॥

अंत—

इक उपमा तव प्रीतम परखी।
कहत सुरीझि प्रेम रस वरखी॥
नील कमल मनु सहित सुनाल।
प्रेम वेल पै दीनी डाल॥
प्यारी वाँह परी गर प्यारें।
ताको प्रीतम कहत जिचारे॥
प्रीति सुपास प्रेम लै ठगिया।
मनु सिंगार रस पकरन लगिया॥
इहि विधि दोऊ छवि सो रले।
मन रंजन मे जन हित चले॥
न्हाइ सरोवर करि जल केलि।
सज सिंगार पुनि अति रस झेलि॥
वैठे सिंघासन वर दंपति।
कही न परै सोभ सुख संपति॥
इहि छवि वृंदावन अति छायो।
प्रीतम निरखि महासुख पायो॥
इति श्री प्रातम कवि कृत रस धमार संपूर्णम्।
शुभंभूयात्। लेखक पाठकयो शुभं भवति॥
सं० १८०० पोस सुदी १२ शनिवासरे
लि० जानी भवानीशंकर वृद्धनाम कृपाराम

विषय—वसत ऋतु और होरी विपयक पद्य ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पन्नो मे है। ऊपर सरस्वती भडार की छाप है।

संख्या ११. रास पचाध्यायी, रचयिता—अली रगीली, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—८$\frac{1}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—

श्री कृष्णाय नम॰ ॥

राग गौरी छंद—राम पंचध्यायी

मन्मोहन लाल विहारी काम रूप मनुहारी ॥
मदन रूप मनुहार मनोहर सुदर नैन विमाला ॥
पुष्कल चद किरन जुत देष्यो ।
वन मनसिज मानो साला ॥
मोर मुकट कटि काछिनी काछै पीत पीतावर धारी ॥
मुरली धुनि वोलत प्यारी प्यारी मनमोहन लाल विहारी ॥१॥
वसी जवै वजाई लाल, शब्द सुनत हुलसी व्रजवाल ॥
हुलसी व्रजवाल सुनत वंशीरव लाज शृखला तोर ॥
हिय मद प्रगट प्रगट मद हिय मे प्रेमा सिंध सकोर ॥
अस्तव्यस्त शृंगार वस्त्र, तज ग्रह कारज व्रजवाल ॥
आई लोल कपोल कुंडल छवि वंसी जवै वजाई लाल ॥२॥

मध्य—

जमुना पुलिन पुनि वैठीं आई गोपिन उत्री दई विछाई ॥
दई विछाइ उत्री गोपिन वक वचन कल वोलीं ॥
कियो प्रश्न लाल सो मागे गृंथ हिये की पोलीं ॥
कह्यो लाल मै रिणी तिहारो जन्मन को मुसकाइ ॥
वचन न प्रेम मदन मद माती जमुना पुलिन जव वैठी आइ ॥११॥
सुनी सुनि वचन मनोहर लाल आई मडल सव वृजवदन ॥
सवै आईं वृजवाल सवै मंडल जुरि गृंथ हिये की पोलि ॥
रास रच्यो लाल गोपिन मिल गति मति अति हीं लोल ॥
वांहु परस्परि जोरि मंडिलत एक लाल इक वाल ॥
सरसे हिय रिस छाड्यो सवहिन सुनि सुनि वचन मनोहर लाल ॥१२॥

अंत— याते सवै वुद्धि विसराई रास अनूठी जुक्त वनाई ॥
जुगत अनूठी अति वन आई मानो मन हुलास ॥
पूरन चद सरद के निर्मल प्रगटन अद्‌भुत रास ॥
महारास हित गुनन प्रेछा सवहिन के मन आई ॥
लाल लडैती अली रंगीली मांतो सवै वुद्धि विसराई ॥२१॥

इति श्री रासपंचाध्यायी संपूर्ण ॥ ६ ॥

विषय—गोपियो के साथ श्रीकृष्ण के रास का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के रचयिता अली रगीली हैं, जिनके विषय मे ग्रथ से कुछ ज्ञात नही होता ।

संख्या १२. ज्ञान चेटक, रचयिता—अहलाद दास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८१⁄१६ × ६१⁄१६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७२८ वि०, लिपिकाल—सं० १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—अथ ज्ञान चेटक लिप्यते साहेब अहलाद दास जि कै॥

सत गुरनाम निरंतर रटै। करि परनाम ग्यान परगटै॥
कहौं विवेक ग्यान मत पूरा। सुनै करै कोइ बिरला सूरा॥
कीन्हे करै क्रम को जारा। नाम नाव चढि उतरै पारा॥
जन अहलाद विनै चित लाया। प्रभु जगजीवन करिये दाया॥१॥
ज्ञानी चेत महल नेहि डेरा। अगम दिष्टि लपि परचौ उजेरा॥
गैव गुफा तह निरगुन साँई। करै विचार वैठि तेहि ठाँई॥
मन की दुरमति मारि निकारै। येक भाउ सवु आपु निहारै॥
दिढ विस्वास नाम की सरना। जन अहलाद ग्यान कहि वरना॥२॥
मन आचारी करै अचारा। आनै सतम (त) तंतु विचारा॥
काया गाउ करै दिढ आसन। सुरति निरति धरि गगन सिगासन॥

अंत—

सत्य जतन कलि संतन्ह जानी। माषन औटि लीन्ह त्रित छानी॥
दुइ अंछर निरगुन यौसाना। राम अमी चाषा हरि जाना॥
प्रभु जगजीवन याद किया। जन अहलाद मते मह दिया॥१०९॥
तीनिउ सै तेतीस चौपइ। जेठ एकादसि का लिपि भई॥

॥ दोहा ॥

८ २ ७ १
वसु लोचन अहि ससि समै क्रिश्न दरस गुर जानु।
डंड भानु त्रित लोक मा तव सम्मपूरन मानु॥

संवत ॥ १९१६ ॥

वैसाष मासे पुरनवासी दिन येतवारे जानु।
संवत वनइस सै सोरह का लिषि संमपूरन जानु॥

॥ दोहा ॥

सव्द ग्रथ नाषुर सहित दोहा कवित प्रमान।
प्रभु दूलह की वाँकि यह लिषि संमपूर जान॥१॥

॥ सोरठा ॥

लिषि सपूरन जानु प्रभु सिध्या के दोहा।
कछूक सव्द परमान सुजन चूक सभारिये॥

॥ दोहा ॥

सव्द विदे येहि ग्रंथ मा प्रभु गिरवर के सोइ।
जो सुमिरै चित लाइ कै भक्त कहावै सोइ॥२॥

॥ सोरठ ॥

भक्त कहावै सोइ ग्रंथ ज्ञान चेटक पढै।
प्रभु अहलादक सोइ दसपत दास फकीर के॥
राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—निरगुन मतानुसार भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

८ २ ७ १
वसु लोचन अहि ससि समै त्रिशन दरस गुर ज्ञानु ।
डंड भानु स्रित लोक मा तव संमपूरन भानु ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १७२८ और लिपिकाल सवत् १९१६ है। रचयिता का नाम "अहलाद दास" है। इन्होने जगजीवन दास जी का आरभ मे आदर के साथ उल्लेख किया है, अत उनके ये शिष्य जान पडते हैं। इनका अन्य वृत्त नही मिलता। रचना सतमत की दृष्टि से उत्तम है। लिपिकर्त्ता फकीरदास जी के कथनानुसार हस्तलेख मे प्रस्तुत रचना के अतिरिक्त 'सिद्धो के दोहे' और कुछ 'शब्द' एव गिरिवर दास जी के 'शब्द' भी लिपिबद्ध थे, पर अब इसमे प्रस्तुत रचना पूर्ण और गिरिवरदास जी के 'शब्दों' का केवल एक ही पत्र विद्यमान है। पत्रो की सख्याओ से अवश्य यह स्पष्ट होता है कि इसमे उपर्युक्त रचनाएँ रही होंगी। हस्तलेख का जो अश प्राप्त है उसके प्रथम पत्र की सख्या १२६ तथा अत के पत्र की सख्या १३८ है। जगजीवनदास के शिष्य दूलनदास जी का भी उल्लेख हुआ है, पर यह पता नही चलता कि ऐसा किसलिये किया गया है। उद्धरण नीचे दिया जाता है —

सब्ब ग्रथ नाथुर सहित दोहा कवित प्रमान ।
प्रभु दूलह की वाँकि यह लिपि संनपूर जान ॥

सभवत इनके भी शब्द प्रस्तुत हस्तलेख मे रहे होगे, जैसा कि ऊपर की पक्ति से कुछ कुछ आभास मिलता है।

संख्या १३. आत्मप्रकाश, रचयिता—आत्माराम, कागज—देसी, पत्र—१८७, आकार—९½ × ५$\frac{९}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०१२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १९३५, प्राप्तिस्थान—ठा० जयराम सिंह, ग्राम—तिहिसा, पोस्ट—सेमरी महमूदपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—*श्री गणेशाय नमः अथ आत्मप्रकाशग्रथ लिख्यते ॥*

प्रथम मंगलाचरण

॥ दोहा ॥

परम निरंजन संत गुरु सारद गण के राज ।
इनको प्रथम ही वदऊं ग्रथ समापत काज ॥१॥
आयुर्वेद भाषा करूं अल्प बुद्धि नर जान ।
दोहा चौपाई के विषय औषधि ग्रंथ प्रमान ॥२॥

॥ अथ आयुर्वेद की प्रकटता ॥

॥ दोहा ॥

रोम ग्रसित जग देखि के ब्रह्मा कियो विचार ।
ब्रह्म सहिता एक लख रची पिता गुण सार ॥३॥
पिता संहिता दक्ष कूं दीनि आप पढाय ।
सो अश्विनी सुत हरष सूं पढो दक्ष पै आय ॥४॥

॥ अथ अश्विनी कुमार की प्रक्टता ॥

अश्विनी सुत पढि दक्ष पै देववंद्य भये आप ।
छई गमाई चंद की विपद हरी सुरताप ॥५॥

वृद्ध अवस्था के विषय च्यवन कियो ग्रह पानि ।
लोचन दीने वय भली अश्विनी जिनिको आनि ॥६॥
भगरवि को लोचन दिये पूषहि दीने दंत ।
भुजा उतारी इन्द्र की सो जस भयो अनन्त ॥७॥
:o: :o: :o:

अंत—अथ ग्रंथ कर्त्ता की वंशावली लिख्यते ॥

॥ छप्पय ॥

श्री दादू को शिष्य नाम माषू प्रकाश । जिनके प्रेम पुनीत भये सो वेणी दास ॥
वेणीदास के गगाराम भये अति अनुरागी । भय गंग के भगत राम परचै दे वड़भागी ॥
वरूज वारे ज्याके भाई भगतराम सिधवंत हैं । चामल तट गंगा यचै अचल भजै भगवंत हैं ॥४॥
श्रीभगतराम के शिष्य नारायणदास सो जाणू । तिनके दौलतिराम संत सोभए प्रमाणूं ॥
जिनके खान जाद शिष्य सो आतमराम । नगर जूनियां मध्य वास सु उत्तम ठाम ॥
आयुर्वेद भाषा कियो भिषक चतुर मन मानियो । न्यून अधिक त्वक अर्थ को कोप हृदय जिनि आनियो ॥४१॥

इति समाप्तः

इति श्री परम कृपालु महाराज श्री दौलतिराम जी तस्य शिष्य आत्माराम कृते आत्मप्रकाशे आयुर्वेद भाषायां वाजीकरण उपाय वल वीर्य क्षीण कूं उच्चटादिक मोदक विदारी कंद मोदक आकूत सप्त गुटी आदि वर्णन नाम द्विपंचाशतमो उच्छासः ॥५२॥

इति श्री आत्मप्रकाश नाम ग्रंथ समाप्तः
भादव कृष्णा त्रितीया संवत् विक्रमी १९३५ शुभं ॥

॥ श्लोक ॥

५ ३ ९ १
वाणाग्न्यङ्क निशाकरै विरहिते संवत्सरे वैक्रमे ।
मास्यूर्ज्जे प्रथमे दले हरितिथौ श्री भानुवारे शुभे ।
वैद्यानामुपकारकोयमधुना ग्रन्थः सतां प्रीतये ।
श्रीमत्केशव शर्म्मणाऽगलिपुरे संशोध्य मुद्राङ्कितः ॥१॥

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मुद्रित है, पर मुखपत्र और अत का पत्र, जिसमे यत्रालय आदि का पता रहता है, दोनो लुप्त हो गए हैं । रचनाकाल नही दिया है, मुद्रणकाल सवत् १९३५ वि० है ग्रथ प्राचीन टाइप मे छपा है ।

रचयिता का नाम आत्माराम है । ये दादू पथी थे । इनकी परपरा इस प्रकार है :—

दादू>मोख>प्रकाश> वेणीदास > गगाराय > भगतराम > नरायणदास> दौलतिराम>आत्माराम ।

संख्या १४. अर्जुनगीता रचयिता—आनद (गगाराम), (स्थान—काशी), कागज—देसी, पत्र—२९, आकार ७ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०९, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३५ के लगभग प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह २७४।५३ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—ॐ श्री वासुदेवाय नमः ॥ श्री आनदोवाच: ॥

॥ सोरठा ॥

आदि करु पर्णाम जगत गुरु जगदीश को ।
ईष्ट आनद के श्याम तिने निवाऊं सीस को ॥१॥

॥ चौपै ॥

शुद्ध ब्रह्म मोहन को ध्यावें । अतकाल जिम वीच समावें ॥ २ ॥
जोत रूप व्रजपति को जानो । सचिदानद अपद पछानो ॥ ३ ॥
जो है तीन लोक के माहीं । उनके रूप की हैं परछाई ॥ ४ ॥
घट घट मैं वा नट को वास । सकल जगत उनसा प्रकास ॥ ५ ॥
नित सत अव्यय अवनासी । कोट कोट ब्रह्मड निवासी ॥ ६ ॥
उनको जान अनादि अनत । सकल जगत के सो भगवत ॥ ७ ॥
:o: :o: :o.
ब्राह्मण सारस्यत मोय जानो । आदि जन्म दिल्ली को मानो ॥ ४ ॥
पुन श्री विंदावन मैं आयो । तिह ठा वस गोविंद गुण गायो ॥ ५ ॥
वहुरो प्रालवध वस जान । श्री काशी मैं वस्यो आन ॥
सवत ठारह सो पैंतीस ॥३५॥ काशी वास दीयो जगदीस ॥ ७ ॥
उत्तम महा कार्तिक मास । तव ते कीनो काशीवास ॥
:o: .o: :o:
गंगा राम आदि मम नाम । आनद नाम धरचो घनस्याम ॥
जवते भयो श्याम को चेरो । आनद नाम तव ते मेरो ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णानद मम नाम है कृष्ण आनद मोय दीन ॥
देह अभीमान त्याग के स्वामी मैं भयो लीन ॥

अंत—

जव लौं मनुष शरीर है पाप पुन्य कर सोय ।
अंत मिलत फल सवन को कर्म करत हैं जोय ॥
पुन वोले त्रिभुवन के साई । अर्जुन और सुनो चित माही ॥
सूर्य चद्र ग्रहन जव होई । अन्न जल इनमें पावे जोई ॥ २ ॥
अथवा कोई लघुशका करे । अथवा जल घट मैं भर धरे ॥ ३ ॥
विना भजन और काज जो करे । सो जन नर्क घोर मे पड़े ॥ ४ ॥
· जो जन भजन विना कछू करे । दुर असीस रवि शशि उचरे ॥ ५ ॥
:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ अर्जुन गीता का भाषानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अत से खडित है। केवल १३ पत्रे उपलब्ध हैं। रचना-काल, लिपिकाल उल्लिखित नही है। परतु रचयिता ने अपना काशी मे आने का समय स० १८३५ दिया है, अत इसी समय के लगभग उन्होने प्रस्तुत ग्रथ की टीका की होगी। टीका करते समय उनकी आयु वीस वर्ष की थी —
ये पहले दिल्ली के वासी थे, जहां से वृंदावन गये और कृष्ण भक्ति मे लीन हो गए। परतु आगे जैसा कि ये कहते हैं, प्रारव्धवश सवत् १८३५ मे काशी मे आकर वस गए। पहले इनका नाम

गगाराम था, परंतु पश्चात् श्री घनश्याम (श्रीकृष्ण भगवान्) ने 'आनद' नाम रखा। इनके गुरु का नाम सभवत विष्णुदास था। 'कृष्णानद' अपना अन्य नाम इन्होंने स्वय रखा।

संख्या १५क. आनदविलास, रचयिता—आनद कवि, कागज—देसी, पृष्ठ—१२, आकार—८३/४ × ६१/२ इच, पाक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ५२, पु० स० १ मे है।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ कवित्त ॥

गरजें जलद अति घटा गहरानी कारी चहुं ओर चचला चलाके वहु न्यारी हैं।
बरसें समूह घन लहरे पवन वहे गावत मलार तान गान छवि भारी हैं।
आनंद कहत तहा मोर पिक सोर करे दपति झरोखा मे सुरति सुखकारी हैं।
केरनि पै वेल उरझाय रहीं जेसे यहाँ लाज मे लिपटी जात सांवरे सो प्यारी हैं॥ १॥

मध्य—पृ० ६

ललिता विसाखा राधा औरहू सखीन लीयें क्रीडत कालिंदी मांझ कंज कर लीने हैं।
ता छिन चलत व्रज चंद तहां ठाढे आय पेखि व्रज स्यामां स्याम राच वस कीने हैं।
खेलत अनेक रंग नयन अनग भरे आनंद कहें पहिरें पट झीने हैं।
ईन्दु मुख ऊपर अलक छवि छाय रही वेसर ललित मोती केलि रस भीने हैं॥४४॥

अंत—

मालती कमल कुंज महल गुलाव बने, कुंद पारजात खंचे छज्जन चमेली हैं।
कदली कदंब चंपा थहर थहर करें सेवति तमाल स्याम लिपटि सुवेली हैं।
फूलन सजी हे सेज फूलन गिलास पंखा फूल मन मदन ते बाल रस रेली हैं।

विषय—श्री कृष्ण और राधा जी के चरित्र सबधी ५६ कवित्त।

विशेष ज्ञातव्य—लाल छीट के पुट्ठे मे आसमानी रग के कागजो पर लिखी हुई पुस्तक है। स० भ० की छाप लगी है।

संख्या १५ख. ककावली, रचयिता—आनद कवि, कागज—देसी, पृष्ठ—३ (१३ से १५), आकार—८३/४ × ६१/२ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व०—५२, पु० स० १।२ है।

आदि—अथ ककावली लिख्यते ॥

ककाा कालिंदी के कूल पर करत केल रस रास॥
कामिन सव जुरि के चली मनमोहन के पास॥ १॥
खखा खान पान तजि ग्रहन तें सुन वंसी धुन कान।
विह्वल तन कछु सुध नहीं आंई परम सुजान॥ २॥

मध्य—

ददा दसन जोत दामिन दमकि कटि केहर लचकंत।
गज गामिनि चंपक वरन कुच पर कच लटकंत॥१८॥
घघा धनि धनि ये वृज गोपिका हरि संग करत विहार॥
सुर नर मुनि मनसा करे ध्यान करत पचि हार॥१६॥
नना नवला अवला कमल मुख भई अमित्त अति जानि॥
कृष्ण मनोहर संग मिलि क्रीडत जल मांहि आनि॥२०॥

पपा पहर वसन तट आवहीं करत कमल की मार ॥
पोहोप वृष्टि सुरगन करें जै जै शब्द उचार ॥२१॥

अत—

क्षक्षा क्षण क्षण मे लीला सुमरि धरत हिये जे गाढ़ ।
वे भवसागर तर गये तिनको जग जस वाढ ॥३५॥
ज्ञज्ञा, ज्ञान गुरुन की कृपा ते भयो यथामति मोय ।
कवि आनद मन हुलसि कें रच्यो ग्रथ सब जोय ॥३६॥

इति श्री रास क्रीडा को ककावली सपूर्ण ।

विषय—रास क्रीडा विपयक दोहे हैं । बालकों को अक्षर ज्ञान कराने के लिये भगवान् कृष्ण की लीलाओ का अक्षर क्रम से वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—छीट के पुट्ठे मे पुस्तक रखी है । इसमे पहले 'आनद विलास' बाद मे प्रस्तुत 'ककावली' और तत्पश्चात् बारहमासी नामक ग्रथ है ।

सख्या १६क. कोकशास्त्र, रचयिता—आनद कवि, कागज—देसी, पत्र—१७ (२७ से ४३), आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०१, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७०५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब०—१०१, पु० स० ५/३ है ।

आदि—॥ सीध श्री गणेसाइ नम ॥ कोकशास्त्र लीखे दुहा ॥
ललित सुमन घन अली प्रवचतन छवी अन लोकीद ।
रती बिनोद सेइ घक रूची जेजे मदन अनद ॥ १ ॥
अनो काम अभो राम छवी भामिनी भोग ।
सकल कोक दधि मथन करि रचौ सार सजोग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ३४ दोहा ॥ रती आदि मुख जल मीटे ताली गले पसुकोजी । निज मन आनंद उपसे तरुनी के सुख दीज ॥८१॥ नारी द्रवन वीध । सोरठ । द्रवन जव लगी नार तब लग सुख पावे नही । लीजेहु चतुर विचार रती एक नर भामकी ॥८२॥

अंत—ता पाछे भये जु कवी अनेक तीही रचे कावोग्र । करी बावेक । कमो प्रदीप अरी पांच बान । फुनीर तीर हसुना नहीं सुजान । महान बीनोद आनद रग । रती राजन सपत मरती राग । पठी कसकल काव्य अती करी बीचार । बरनौ आनंद अती कोकसार ।१७६। दूहा ॥ षाड तांच दस अती सरस । रचे जवहु वीधी छंद । पढत चढत अती चोप चीत बटत आनंद ।१७७। इति श्री कोक सपुरन समापतो । संवत १७०५ वर्षे शाके १५७१ प्रवर्तमाने वैशाख सुदि १३ शुभ दिने माहाराणा श्री ५ श्री जगत सघ जी कुंवर श्री राज कुवार जो जियज राज्ये पंचोली अखेराज जी ऋसन दास जी समस्त पाठनार्थ चेला हीरा लिखतं । श्री उदेपुर मध्ये ।

विषय—कामशास्त्र विपयक ग्रथ है ।

संख्या १६ख. कोकसार, रचयिता—अनद, कागज—देसी, पत्र—२३, आकार—६ ६/१६ × ५ ५/१६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४६, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६३ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—

...नी के धरत वीस्ट पर पाइ ।
कोक पढ़ें...ता समै वीनु दीपक जीमी धाम ॥

संख्या १८क. कवित्त चतु शती, रचयिता—शेख आलम, पत्र—६४, आकार—७३/१ × ३६/४ इच, पक्ति(प्रतिपृष्ठ)—१८ परिमाण(अनुष्टुप्)—१५००, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७१२, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या-विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७३, पु० स० २८ है।

आदि—श्रो ॥ श्री राधा वल्लभो जयति ॥ अथ लीला लिख्यते ॥
आंगन मे खेलत नंद ललन छल नवल गोद लै लै ललन करत मोद गान है।
आलम सुकवि पलपल मैं या पावे सुख पोषन पदरख सुकरति पय पान है।
नंद सौं कहति नंदरानी हो महर सुत चंद की सी कलन बढ़त मेरे जान है।
आई देखि अनद सौं प्यारे कान्ह आखि आनद मैं गान दिन आनधन श्रा छवि आन है॥ १॥

मध्य—पृ० ७३ कान्ह पयान लिखित॥
धीरतें अधीर भई पीर नीर चीभीजै साचने कुंचन पर लोचन वहत है।
आलम अंदेसे कैसै इहि भैस जी जै ऐसें उसासनि प्राण कैसे कै रहत है।
कहा करौं माई मेरे प्राण मेरे हाथ नही प्राननाथ साथ प्रान चल्यौई चहत है।
पल न लगति पल कल न परति सुनि आलीरी ललन कालिह चलन कहत है॥७॥
सेवी सावधान देव चरितनि चेत राखै कहा भयौ कान्ह कलेऊ रूंगे खात है।
आलम एवं है जिनि वलि छलि वधिलि मारि रावन के कंध जारि वांधे सिंधु सात है।
कहत अक्रूर नद जू के दुख दूरि करै रातो पुनि पूरन पुरानें वेई पात है।
अंच भरे कंचनहि कोरा कहूं कोर है कंटक की कोर कहूं हीरा वेधे जात है॥६८॥

अंत—

पारासर लर खच्यो लहरि गार रूमे छोदरि।
शृंगी ऋषी संख रच्यो राजपुत्री सुमंत्र करि।
संकर सकि अनंग मूरि अरधंग रादिलिय॥
लगति विषम फुंकार करिग कंकर गौतम मतिय॥

वच्यो न होइ आलम सुमति इहि चंचल तें कौन सौं कहियै कौन पुरुष निर्विष मह. . .न भुव गम को उस्यो॥४००॥

इति शेष आलम के कवित्त संपूर्ण संवत् १७१२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्ल पक्षे ८ बुधवासरान्तायां लिखितं श्रीधर वैष्णव ब्रह्मचारी श्री मधुपुर्यां नम. पुस्तक स्वामी गोविन्द दास कौ।

विषय—शेख आलम कृत कविताओ का वडा सग्रह है। इसमे कवि की प्राय सभी विषयो पर की गई विविध रचनाओ का समावेश है। विशेषकर राधाकृष्ण सवधी लीलाओ का वर्णन है।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के विषय मे श्री भवानीशकर जी याज्ञिक ने पुस्तक के ऊपर ऐसा लिखा है —

१. चतु शती कल्पित नाम प्रतीत होता है। इस ग्रथ की कई प्रतियाँ हमारे देखने मे आई हैं। पर चतु शती नाम किसी मे भी नही दिया हुआ है।

२ यह प्रति स० १७१२ वि० की है। हमारे अनुमान मे समस्त प्राप्त प्रतियो मे यह सवसे प्राचीनतम है।

३ इस प्रति मे २०वाँ पत्र नही है। इस कारण जो भाग लुप्त हो गया है उसे एक अलग पत्र पर लिख दिया है।

संख्या १८ख. कवितासंग्रह, रचयिता—शेख आलम, पत्र—११, आकार—१० × ५॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८७, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि०, व० सं०—६२, पु० सं०—३।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥

श्री गोपाल रायो जयति ॥ कवित्त आलम के ॥

स्यामा साम सग जागे ताते प्रात आखें लागे निपट उनिंदे दोउ उपमा के बोज है ।
स्याम तन स्याम सारी पीतावर ओढे प्यारी छवी देउ हारी जाके भरता मनोज है ।
अधर बीराजे भारी पीके शरी लीकें न्यारी पीय नेना चुवें प्यारी बरनी के खोज है ॥ १ ॥
आलम बीहार छवी कहालो बरने कवी तीनहु को दूर जा के आसन सरोज है ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ११

जब के गोपाल मधु वन को सीधारे आली मधुबन भयो माहा दानव विदम सो ।
सेख भने स्यार मे सिखटी सुक खंजरीट पीयो है कतोस मिलि कालिंदि कदम सो ।
जामनी बरन यह जामिनी मे जाम जग्यो टेधि बेकु जुवती जुनाश्री कह्यो जम सो ।
देह भई करग करेजो काढो चाहत हे काग भई कोकिल कगायो कारे हमसो ॥५६॥

अंत—

मन मीन काढि कथ सागर के प्रेम डुतें तेरे कहि बारु के पहार परगसि दे ।
पूहपन की माल हम छुवती सकोच करि तिन नू कहत व्याल माल ही सँवारि दे ।
आलम सो कबी नदलाल के समीप हू ते न हां तु बीच मेरदेमे तक हारे ऊधो गारि दे ।
नेनन की धार उर बारन की बारि करे कान्ह छवी पर तेरो जोग बारि डारिदे ॥१२२॥

विषय—विविध विषयों पर रचे गए कवित्तों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—खुले पत्ते हैं । ऊपर कागज का पुट्ठा लगा है । उसके म० भ० की छाप लगी है ।

संख्या १८ग. अकार के कवित्त, रचयिता-आलम शेख पत्र—८४ आकार—९॥ × ५॥ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६११ पूर्ण। रूप—पुराना। पद्य। लिपि—नागरी। लिपिकाल—अनुमानत सं० १८२१ से १८५५ तक। प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग कांकरोली, हिंदी व० ७७ पु० सं० ५।

आदि—॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ कवि शेष आलम कृत कवित्त ॥

नाथ निरंजन निरविघन करुणामय निष्काम ॥
निस्तारण तारन सो रटो निरतर नाम ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ७८ अथ धकार के कवित्त—

धोरी कहे दौरी आवें धूमरि धूसरि धावें ऊंची कै कै पूछनि बुलावें हरि जहिनें ।
मैडी केरी काजरी पीरी भौरी चूरी चार बरई मजीठी बन वेला औरु गाहिनें ।
मध्य स्याम धूम धेन धूमरी सुभूरी भौहें दलि बलि सेउ उपमा में कहाँ काहि नें ।
गोविंद को मन अति गैयनि में रमि रह्यो आगें गाई पाछें गाई गाई बाए दाहिनें ॥१८॥

अंत—कवित्त—

आछे आछे खोर सेवें मदाकिनी नीर सेवें सुरति के सीखे सुख तीखे परहरे सें ।
किधौं नलिनीलनि की पाति काति चली जाति किधौं अरविंद तें भवर हरबरे सें ।

पखारे सेख आछे उनहारि मृग मीन परहरे सैं।
ऐसें नेंनांलियें स्याम आये सखि मेरे धाम दूति तनहूं तैं काम वान सन हरे सैं॥४३॥
इति अकार के कवित्त समाप्त॥ इति श्री कवित्त शेख आलम के समाप्त॥

विषय—भक्ति तथा अन्य विपयक कवित्त सग्रह। प्रस्तुत सग्रह मे शेख आलम कृत छदो को अकारादि क्रम से लिखा गया है। अत इसका कल्पित नाम 'अक्षर मालिका' प्रतीत होता है। आलम पर प० भवानी शकर जी याज्ञिक ने अन्वेपण किया है।

विशेप ज्ञातव्य—अक्षर क्रम से कवित्त है पर कही कही क्रम खडित भी हो गया है। शेख आलम कृत कवित्तो का यह सग्रह है। कुछ कवित्तो के एक एक अथवा दो दो चरण नही है। पुस्तक की सिलाई मे पन्ने उलट पुलट हो गए हैं। पुस्तक के ऊपर स० भ० की छाप लगी है। लिपि सुदर है।

संख्या १८घ. सुदामा चरित्र; रचयिता—कवि आलम, पत्र—५ आकार—६ × ८॥ इच। पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२। परिमाण—(अनुष्टुप्) १३०। अपूर्ण। रूप—साधारण। पद्य। लिपि—नागरी। प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, व० स० १७, पु० स० २।

आदि—अथ सुदामा चरित्र लिखते।

राम रमापति विसुनी सु केसो किसुन गोपाल गोवर्धन धारी॥
नादर सवके सीर पर कादर सुदर तन घनिस्याम मुरारी॥१॥
सूरती खूव अजायव मूरती आलम काम हे मोव विहारी॥
जगमग जगे जमाल जगत में हिलि मिलि दिल कीजें वलिहारी॥

मध्य—

जिनके कदमो जव नांवो तहां न होय तुमे वदनामी।
एक वार जाना जरूर है जैदिप हे वो आंतरजामी॥
जो तू कहे तिर हे ती हे तो जाना मोजे जरूर भया है।
परी दरगाह वडे साहिव की विना भेट को कोन गया है॥
क्या तो फालि जैईस घरते जहा तहां जगदिस दया है।
खाली हाथ नाथ सु मिलना ईसि सकुन का सोच वडा है॥

अंत—प्राप्त नहीं—

विषय—सुदामा चरित्र वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक मे पृष्ठ सख्याएँ नही हैं। पृ० स० २ मे पहले आचार्य जी श्री वल्लभाचार्य जी की वन यात्रा है, वाद मे यह सुदामा चरित्र लिखा है, जिसके ६ पृष्ठ यहाँ लिखे जाकर हस्तलेख के अन्त के ४ पत्रो मे और लिखा है। वाद मे श्री द्वारकेश जी कृत 'पद उत्सवो' के लिखे हुए है। अत मे सनेह लीला है और रुक्मिणी विवाह है। छीट के पुट्ठे मे रखी हुई पुस्तक है। सं० भ० की छाप पुटठे पर लगी है।

संख्या १८ ङ. माधवानल कामकदला, रचयिता—कवि आलम, कागज—देसी, पत्र—२०, आकार—६½ × ४½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६ परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—९६०२–३ वि० (सन् ९५१ ई०), प्राप्ति-स्थान—श्री प० वलदेव चौवे, ग्राम पो०—दुधौडा, जिला—जौनपुर।

आदि—अंग नेम वल महा वल मंत्री ॥ तहा राजा टोटरमल क्षत्री ॥

॥ दोहा ॥

जो मत्री विक्रम भोज के मद्द करहि अरथाइ ॥
सुनै वेद सुमित्र सदा पुन्य करत दिन जाइ ॥
सन नव सै जो यकावन आहि ॥ करी कथा अव वोलो ताहि ॥
कहीं कथा सुनै सव लोगा ॥ करौं कथा सिगार वियोगा ॥
कछु आपनी कछु प्रती चोरि ॥ कथा ससत्रित भाषा ओरि ॥
सव सींगार क्रम कीरति ॥ माधव काम वदला प्रीति ॥
कथा संसक्रित सुनि थोरि ॥ भाषा वाधि चौपाइ जोरि ॥

॥ दोहा ॥

माधव नल सब विधि चतुर काम कदला सब जोग ॥
करै कथा "कवि आलम" उतपति विरह वियोग ॥
नग्र पुहुपावती उतिम सपुना ॥ गोविंद चद राजा वहुगुना ॥
ध्रम पथ दिन प्रति पगु धरइ ॥ पुहुमि पान पनि पातप करइ ॥
ताप हरन सदा सुप त्यागी ॥ माधव नल विप्र यपुरागी ॥
:o: :o: .o:
सुनत नाद मोही पनिहारी ॥ सिसहु ते गागरि भुइ डारी ॥
नाद सुनै तेन्ह दिन्ह काना ॥ मिग्र जुथ थकित भये सुरग्याना ॥
सुनत नाद कल छुलीन सभारि ॥ भुमि अहार दिन्ह सव डारी ॥
:o: :o: .o:

अंत—
अवसो किजै उपचारा ॥ वाढै रैनि जो होइ अपारा ॥
तव माधव विना कर लिन्हा ॥ विधुरुप त्रिगा श्रवन मुनि लिन्हा ॥
सरस वजावै वेनु सुरगा ॥ रहो चद को रथ को कुरगा ॥
सर थर व कावा अकुलाना ॥ वाढि रैन न होइ विहाना ॥

॥ दोहा ॥

औहे उदास अधराति राहु जाहि चंदहि गहै ॥
चलन कहाते प्रात वेनि सकल कवरो विधो ॥
:o: ·o. :o·
रसना थाको सोइ चलन कहै जो मित को ॥
नयेन जोति मद होइ जो निरषै विछुरन पिउ को ॥
कर पोथी धोती कटि वांधे ॥ उठा विप्र विना धरि काधे ॥
गहि रहि कामकदला वाहा ॥ हो तोहि जानन देउ नरनाहा ॥
कहे विश्राए मित वटाऊ ॥ कै जो चला मोर चित लुटाऊ ॥
अहो सजन विप्र परदेसि ॥ विद्याधर मन मोहन भेसि ॥
मारहु कटा पेट महु दारु ॥ तेहि पाछे तुहु पर मुइ जाहु ॥

विषय—'माधवनल कामकदला' नामक प्रेमकथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है । समस्त तीन पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल सन् ६५१ हि० है । रचयिता "कविआलम" है । ग्रंथ देखने से प्राचीन ज्ञात होता है ।

संख्या १८ च. माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम, कागज—देसी, पत्र—८४, आकार—७½ × ४$\frac{४}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८२, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—सन ६५१ हि०, संवत् १६०२–३ वि०, प्राप्ति स्थान—म्युनिसिपल म्यूजियम, इलाहाबाद।

आदि—

:o: :o: :o:

देस देस के भूपति आवै। दवोरे भीर पार नहि पावै॥
कांपै बहुत त्रास जिय लेही। दंआ कोर घर जानव तेही॥
एकछत राज विधातै कीन्हा। कहु दुरजन कर रहा न चीन्हा॥
धर्म देस सब राज चलावा। हींदु तुरूक पथ दुइ लावा॥
आगे अनेक महावली मंत्री। राजधीर टोडरमल मंत्री॥
जे मति विक्रम भोज की सोए करत अरथाइ।
सुनत वेद सुमिरत सदा पुन्य करत दिनु जाइ॥
सनि नौसे इक्यावन आही। करौ कथा अब भाषौं ताही॥
कहौ जो बात सुनौ सब लोगा। करौ कथा शृंगार वियोगा॥

:o: :o: :o:

अंत—

सुनत कथा एह स्रवन सुहाई। अति रिसाल पंडित मन भाई॥
प्रीतिवंत जो होइहि कोई। वढ़ै प्रीति नैन सुख होई॥
कामी रसिक पुरुष जो सुनै। सो एह कथा रैनिदिन गुनै॥
...गुनवंता चतुर कविजन अछर टेक।
...निमिति डुछर धरै करि करि जतन अनेक॥

इति श्री पोथी माधौनल की समाप्त संपुरन। जो देषा सो लिष मम दोष न दिअते लिपिते भाऊ सिंघ रजपूत की मिति कातिक वदि १० दसमि भम वासरे सवत १७६६ सनी॥ जो एह पोथी वांचै औ सुनै............

र० का०

सनि नौ सै एक्यावन आही। करौ कथा अब भाषौ ताही॥

विषय—माधवानल और कामकदला की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। आरंभ के तीन पन्ने तथा ६, ७, ८, ६, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६६, ७०, ७१ और ८० संख्या के पन्ने नहीं है।

रचनाकाल सन् ६५१ हिजरी है। लिपिकाल संवत् १७६६ वि० है।

प्रस्तुत प्रति प्राचीन है तथा पाठभेद की दृष्टि से उपयोगी है।

यह श्री टंडन जी (श्री रामचंद्र टंडन, हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयाग) ने म्यु० म्यूजियम (प्रयाग) से कार्य के निमित्त ली है। अत इन्ही के यहाँ इसका विवरण लिया गया। पता म्यूजियम का ही है

संख्या १८ छ. माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम कवि, कागज—देसी, पत्र—४६, आकार—७ × ५$\frac{१}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् रामचंद्र जी टंडन एम० ए०, एल-एल० बी०, १० नं० साउथरोड, इलाहाबाद। दूसरा पता—अकबरपुर, फैजाबाद, जि० फैजाबाद।

आदि---ॐ श्री गणेशाय नम. श्री सरस्वत्यै नम. ॐ ॥

अथ माधवानल लिख्यते ॥

ॐ प्रथमे पारब्रह्म को परणा । पुनि कछु जगत रीत की वरणा ॥
पार ब्रह्म पूरण पतिस्वामी । घट घटि रमि रहे प्रभु अंतर जामी ॥
जल थल रहे सरब मैं सोई । ताकौ आद अंत लषै नहि कोई ॥
•०• •०• :०
गज पतिराज कोटि जुग कीजै । सार नराल छतपति दिर्जे ॥
दिल्लीपति अकबर सुलताना । सपत दीप महि जाकी आना ॥
:०: •० .०•
आगे रहे नृप मणि मत्री । नृपराजा टोडरमल छत्री ॥
:०• .० ०:
सुनो सोई इक नाम आहि । . . . . ॥
:०: .०. ०:

अंत---

पडित बुधियता सुनी कविजन आदर देत ।
नाम निमित्त आलम कहि मदिजन कथा अनेक ॥४०॥

इति श्री कवि आलम विरचिते माधवानल कथा समाप्तम् ॥ सपूर्ण शुभम् ॥

विषय---माधवानल कामकदला की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य---प्रस्तुत प्रति यद्यपि पूर्ण है तथापि बहुत अशुद्ध लिखी है । रचनाकाल लिखने मे प्रतिलिपिकार ने ठीक ठीक न समझ सकने के कारण रचनाकाल के स्थान पर अन्य निरर्थक शब्द लिख दिए । जैसे, म्यू० म्यूजियम (प्रयाग) की प्रति मे र० का० इस प्रकार है ---

९ ५१
"सनि नौसै एक्यावन आहि । करौ कथा अब भाषौ ताही" ॥
"सुनो सोई इक नाम आहि । . . . . ॥

प्रस्तुत प्रति मे इसके स्थान पर लिखी पक्ति दी जाती है ---

सनि का 'सु' रह गया । "नौ सै" का "नो सो" मे परिणत हो गया और साथ ही 'नो' 'सु' के साथ लगकर 'सुनो' बन गया । इसी प्रकार "इक्यावन" का "इक नाम" हो गया । इस उलट-फेर का यह परिणाम हुआ कि पाठक को मानना पडेगा कि रचनाकाल नहीं दिया है । प्रतिलिपिकारो के द्वारा पता नही कितने ग्रथ इस प्रकार लिखे गए है ।

संख्या १८ज. माधवानल कामकदला, रचयिता---आलम, कागज---देसी, पत्र---१०८, आकार---७ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---१४५८, अपूर्ण, रूप---पुराना, पद्य, लिपि---नागरी, लिपिकाल---स० १८१३ वि०, प्राप्तिस्थान---प० राजनाथ पाडेय, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, सेंट एड्रूज कालेज गोरखपुर (प० स्वामी हि० सा० सम्मेलन, प्रयाग को ग्रथ देने का वचन दे चुके हैं, अत ग्रथ को शीघ्र ही वहा भेजने का प्रबध हो रहा है) ।

आदि--- .०: :०• •०

धरम रूप अवतार लिए आय । आपन कृपा . . ज दीनो पाय ।
उनके नाम लेत जो रहिए । तत छीनि ताप जरा नहि गहीये ॥
च्यारि मत बैठे एक साथा । बोलै बैना जोरिकैं हाथा ॥११॥

॥ दोहा ॥

अंवावकर उसमा वयर चौथा अलिपु भानु ।
जो इनकी सेवा करे ताहि होई अति ग्यानु ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

वरनै च्यारो पीर अलम प्रगट ससार जस ।
ग्यान मुल मति धीर वस रसुल ही चीत धरि ॥१३॥

॥ चौपाई ॥

गोस कुतुव का देनी कहीया । जगमनि सोद महदी अहीया ॥
वस रसुल कीया परगासा । पुरव नाम लेत मन आसा ॥
जै कोई चित ताहि सौ लावै । निरभै रहिवो हौत सुष पावै ॥
अपनो जन को द्रिष्टि जव करै । रिधि सिधि वहु सपति भरै ॥
जन आलम निश्च(य) करि जाना । ताके चरन ध्यान मन माना ॥१४॥

॥ दोहा ॥

सैद मुहदी पीर सो जो मन लावै कोई ।
तिहु लोक की संपदा मन वंछित फल होई ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

आलम कहै वषानि जस प्रगट चहु षड मै ।
विद्या अरथ निधान साहि अकवर जगतगुरु ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

जगतपति राज कोटि जुग कीजे । साहि जलाल छत्रपति लीजे ।
दिल्लीपति अकवर सुलताना । सप्त द्वीप मै जाकी आना ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

पंडित वुधिवंता गुनि कविजन अछर टेक ।
नाम निर्मंति गुन उचरै कहि कहि कथा अनेक ॥५७७॥

इति माधवानल की कथा संपूर्णं ॥ संवत् १८१३ भाद वा सुदि १ वृहस्पतिवार ॥ लिष्यतं गोपीराम दीघ मध्ये पठनार्थं रामकृष्ण जी

विषय—माधवानल और कामकदला की प्रेमकथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे १, २, ४, ६ और ७ सख्या के पन्ने नही हैं। रचनाकाल भी ज्ञात नही है। लिपिकाल सवत् १८१३ है।

रचयिता आलम हैं, जो अकवर के समकालीन थे। ग्रथारभ मे अकवर का उल्लेख है।

संख्या १८ क. माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम कवि, कागज—देसी, पत्र—८३, आकार—६$\frac{६}{१०}$ × ४$\frac{६}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भीक", अध्यापक, फार्व्स हाईस्कूल, फैजावाद ।

आदि......................

चँ वेद पुरान नौ व्याकरन वषान है॥
जोतक आगम जान सामुद्रिक संगीत रस॥

॥ चौपाई ॥

रूपवंत हसकल गुन भरेयो॥ पुरमे आइ काम अवतरेयो॥
ताका रूप नार जो देषहि॥ सुध बुध भूल जाइ नविशेषहि॥
देषी रूप ते रीझ रहाहीं॥ श्रवन सुनें ते विष भर जाहीं॥
चितवहि तीया चतुर गति कोई॥ द्रवें मदन तन व्याकुल होई॥
जासो लोचन लागहि धाई॥ उरझ रहे मन सो नहीं जाई॥

॥ अडिल्ल ॥

मन लागें जिह धाइ सु मनहीं में वसें।
सोवत जागत नैंकु सु आपन में लसें॥
विनु देषहि अकुलांहि प्राण नहीं छोरहीं॥
निस दिन भीजहि चीर नैंन के नीरहीं॥

॥ चौपाई ॥

दिन इक प्रात भयो उजीयारा॥ माधवनल इसनान सिधारा॥
कर मज्जन पुन तिलक सवारे॥ नाम मधुर धुन मुख उधारे॥
सुनत नाद मोही पनहारी॥ सीसहुँ ते गगरी भुंइ डारी॥
सुनत नाद जिन दीने काना॥ जनु मृग जूथ थकत सुरग्याना॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ चौपाई ॥

काम कंदला माधव कथा॥ आलम कही यथा की तथा॥
कहुँ कहुँ वीच दोहरा परे॥ वहूं आन सोरठा धरे॥
सुनत कान यह कथा सुहाई॥ अति रसाल पडित मन भाई॥
प्रीतवत ह्वै सुनें जु कोई॥ वाढें प्रीत होयें सुख होई॥
कामी रसिक पुरुष जो सुनहीं॥ ते यह कथा रेंन दिन गुनहीं॥

॥ दोहरा ॥

पडित बुधवंता गुनी कविजन अछर टेक॥
नाम हेत गुन उच्चरहि आलम कथा अनेक॥

॥ गाहा ॥

इकु गुणा सो दो सो सज्जन जानत सौ गुणा इवको॥
खल जन इहै सुभाओ सौगुणा हत हुत्त हो मित्ता॥

इति आलमकृत माधवनल कामकंदला भाषा कथा सपूर्ण॥ शुभमस्तु सर्वेषाम्॥ संवत १८४०।

विषय—माधवानल कामकदला की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरभ के तीन पत्ते लुप्त है। रचयिता "आलम कवि" है। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल स० १८४० वि० है।

संख्या १८ ञा माधवानल कामकदला, रचयिता—आलम, कागज—देसी, पत्र—४२ आकार—७१/६ × ५२/६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८८, खंडित, रूप—पुराना, (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—पं० अक्षयवट तिवारी, ग्राम व पोस्ट–देवगाँव, जिला–आजमगढ़)।

आदि.................... .

.........यो उजयारो । माधवनल अस्नान सिधारो ॥
कर मजन और तिलक सवारै । नाद मधुर धुन मुष उचारै ॥
सुनत नाद मोही पनहारी । मीसहु ते गगरी भुम डारी ॥
नाद हेत जिन दीने प्राना । रीझ रही सब चतुर सुजाना ॥
करत नाद मोहन के देसा । मुरी ठन जौ करै प्रवेसा ॥

॥ सोरठा ॥

थकी कुरंगन जूह सुनत नाद विमभर गई ।
तव धाइ दै हूह काम कुवड चढाय कै ॥

॥ चौपाई ॥

एक तौ मोह मुरछ घर परहीं । एक वै कर जू अधर तर धरही ॥
एक नैनन सौ मैन मिलावै । नल सर एक निकट चल आवै ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

अपनो सुष तिनहु तजौ पर दुप पंडन जाय ।
और निवाहन दयानिधि धन धन विक्रम राय ॥

॥ चौपाई ॥

कथा चौपही आलम कीनी । पहलै जग कीरत सुन लीनी ॥
कहु कहु विच दोहरा धारा । चौपही साथि सोरठा पारा ॥
सुन कै कांन यह कथा सुनाई । अति रिसाल पंडित मन भाई ॥
प्रीतवंत हो सुनै जु कोई । बाढै प्रीतु अधिक सुष होई ॥
कामी पुरुष जु रस यह सुनई । तो दिनो न सदा गुन गनई ॥

॥ दोहा ॥

पंडित बुधवंता गुनी कव जन अछरि टेक ।
राम नाम गुन उ. ... . ॥

—अपूर्ण

:o: :o: :o:

विषय—माधवानल और कामकदला की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख जीर्णावस्था में है। सब पत्ते अलग अलग हो गए हैं। आरंभ के दो पत्ते तथा अंत में ४४वीं संख्या के पश्चात् के पत्ते नहीं हैं। अंत के संभवतः एक या दो ही पत्र नहीं हैं, क्योंकि ४४वें पत्र में रचयिता ने ग्रंथ समाप्ति की विज्ञप्ति कर दी है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १९. महामहोत्सव (अनकूट लीला), रचयिता—ईश कवि या कवि 'व्यंकटेश' (निवासस्थान—गोकुल), कागज—देसी, पत्र—३७, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८७९ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (रत्नाकर संग्रह—४२३।४६ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ महामहोत्सव लीला वरनन लिख्यते ॥

मोहनी छंद

कमल चरन श्री वल्लभ सीस नवाय। ईस सुकवि कह वंदत धरि द्रढ भाय ॥ १ ॥
नंदनदन के पद जुग तिहि धरि ध्यांन। भजहु निरतर नित प्रति करत कल्यान ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

गावत सारद फिरत रटत नारद सुक लहि सुप।
रसिक रमत मन भ्रमत रटत लंबोदर षटमुष ॥
गावत निगम अनादि शेष सनकादि सकल मुनि।
गावत रवि ससि सकति मुकति वेधा शिव गुनि गुनि ॥
कवि ईस जोरि कर सीस नमि सदन सदा आनद के।
निज वंदत जुगपद कंज सुभ श्री गिरधर नँदनंद के ॥ ३ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

विनती यह कवि ईस की भूल्यो लेहु सुधारि।
भूषन ही करि लीजियो दूषन दीजो टारि ॥२५२॥
अगहन सुदि तेरसि गुरु लीला पूरित कीन।
संवत् कुंडलिया कह्यो समुझै परम प्रवीन ॥२५३॥

॥ कुडलिया ॥

९ ७ ८ १
निधि वारिध सिधि ससि जहा संवत सुपद सलाग।
अन्नकोट उत्सव रच्यो श्री दाऊ बडभाग ॥
श्री दाऊ बड भाग आय करि सवन समाजे।
सातो निधि नट सहित लाल गिरधर सुविराजे ॥
वल्लभ कुल कहि 'ईस' रहै कर जोरि विबुध विधि।
संपति सकल सकेलि दिपति दुतिविधि सो नव निधि ॥२५४॥

॥ दोहा ॥

मांन में हत सत कविनु के बढे बढाये मित्र।
परमदांन सनमान करि पे हैं पुरष पवित्र ॥२५५॥

श्रीमद्गिरवर धरन चरन कमल चचरिक वागधीस वत्त मनि गोस्वामी श्री दामोदर महाराज हेतवे तंलग गोकुलस्थ वागरोदी मोहन भट्टात्मज विकटेश कवि ईस विरचितायां महा महोत्सव अन्नकोट लीला वरनन सम्पूर्ण ॥ श्री ॥ पुस्तक लिपि दीनी लाला वालमुकुंद के, लिखिया वंसीधर नें ॥ वांचें जाको जैसो कृष्ण जें गोपाल ॥

विषय—अन्नकूट महोत्सव का वर्णन।

२०

॥ संवत् ॥

६ ७ ८ १
निधि वारिध सिधि ससि जहां संवत् सुषद सलाग ।
अन्नकोट उत्सव रच्यो श्री दाऊ वड़भाग ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८७६ है। लिपिकाल नही दिया है।

रचयिता का नाम ईस कवि है। पुष्पिका के अनुसार इनका दूसरा नाम 'व्यकटेश' भी है। ये तैलग ब्राह्मण मोहन भट्ट के पुत्र थे और गोकुल मे रहते थे। प्रस्तुत रचना वल्लभ कुल के गोस्वामी श्री दामोदर महाराज के लिये रची गई। अतएव ये वल्लभ सप्रदाय के थे। रचना साप्रदायिक है।

संख्या २०. शिव अविका स्तोत्र, रचयिता—ईश, कागज—देसी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार ओझा व्याकरणाचार्य (मत्री धर्म सघ प्रचारक), ग्राम—ओझौली, पोस्ट—वरहलगज वाजार, जिला—गोरखपुर।

आदि—

इन्दु वाल भाल मो उरसि मुडमाल कर कंकन कोपीन करि वासुकी अनंद के ।
देवतरु पुष्पमाल आकुलित केश वेश तन दुति विद्युताभ के समान अंबिके ।
भूषित विभूति से प्रताप सत कोटि रवि वारो सत कोटि छवि रति ओ अनंग के ।
दिव्य पट धारिनि दिगंवर सदा सोहात पाहि शंभु ईश पाहि भूधरेस कन्यके ॥ १ ॥

उन्दुर गजारि वृष वाहन परसु असि सूलपानि तेज मानो कोटिन्ह दिनेस को ।
अरुन पराग भाल सोहत दुकूल लाल मुडमाल छार लपटाए उरगेश को ।
जगपूज्य जग की जननि वै जगत पितु अस्तुति करत देव आदि दे सुरेस को ।
मन वच काय कर जोरि के प्रनाम करे सहित गनेश गिरिजा को गिरिजेश को ॥ २ ॥

वरिवो विचारि अग्नि मेरु विकरालन मो दु.ख को समूह जहा केतिक कलेस हैं ।
सत्रुन को घेरि पट पार को अभेरि फेरि दुष्टन को फेरि जहां त्रुद्धित नरेश हैं ।
पूतना पिशाच भूत प्रेतन को दोष जहा विविधि प्रकार व्याधि ग्रह को गरेस हैं ।
संकट कठोर जहा जातना न जात कहो तहाँ दीन दास को सहायक महेश हैं ॥ ३ ॥

जाके गुनगन को विरचि विष्णु गावत हैं महिमा अपार पार पावत न सेस हैं ।
उतपति प्रलय सँघार के करैया सोई जाको दिव्य चक्षु इन्दु पावक दिनेश हैं ।
सोइ "ईश" के भरोसे जग की न आस करो तहाँ की न त्रास फेरि जहा महिशेष हैं ।
देस ओ विदेस स्वर्ग भूतल रसातल यो मोहि तो सहैआ एक सोई गिरिजेश हैं ॥ ४ ॥

आदि दै सुरेश सुर सकल समूह जुरि कज्जल वनावैं मेरु जहाँ ल जहान को ।
अतिसै विसाल वो अनूपम मनोहर विरचि मसिपात्र सप्त सिंधु के प्रमान को ।
लेषनी सवारि सुरतरु वर साषन की पत्र जो विचित्र वसुमति के समान को ।
सारदा लिपत एहि भाँति सर्व काल "ईश" तदपि न पावै पार तेरे गुन गान को ॥ ५ ॥

विषय—शिव पार्वती की स्तुति साथ साथ वर्णन की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खर्राकार पत्र मे है जिसमे केवल ५ कवित्त लिखे हैं। र० का० और लि० का० अज्ञात है। रचयिता का नाम "ईश" अनुमान से लिखा गया है, जो श्लेष से प्रत्येक कवित्त मे प्रयुक्त है। अन्य परिचय नही मिलता।

संख्या २१ क. भरतविलाप कथा, रचयिता—ईश्वरदास (इसरदास), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१३, आकार—८ ३/१० × ५ ७/१० इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथीमिश्रित नागरी, लिपिकाल—संवत् १८८० वि०, प्राप्तिस्थान—पं० गयाप्रसाद शास्त्री ग्राम—[illegible], पोस्ट—[illegible], जिला—सुलतानपुर। ,

आदि—राम जीव सहाए : गंगा जीव सहाए : हनुमान जीव सहाए,

भरथ वीलाप काथा

॥ दोहा ॥

सुरसरि चरन मनावो : मन मह बहुत उछाह :
राम कथा कछु गावो : जाके गुन अवगाह :

॥ चौपाई ॥

राम चदर बन कीन्ह पेग्राना । राजा दसरथ बहुत पछताना ॥
राम चदर छोडा असथाना । रोए नगर सकल परधाना ॥
रोए सीआ सती वर नारी । राम लषन वीनु अवध उजारी ॥
रची रची केकइ पत्र लीपावा । दुत हाथ दे नहीअर पठाया ॥
जाहु दूत भरथ के पासा । अवधपुरी कर भयो नीरासा ॥
चोखे दुत बीदा जब भएऊ । अतरयाम जोजन सत गएऊ ॥
जाहा भरथ चतुरगुन रहेउ । जाए दूत ताहा टटयत पौएऊ ॥
कहो दूत अवध कुसलाई । कस कौसीला दसरथ राई ॥
घर घर राजनेती ठकुराई । कैसे राम लषन दोउ भाई ॥
तीनके पुतर भए अनुरागी । बीधीकर लीपा भए वएरागी ॥
कीवहु भए छल कर भागा (भगा) । की दहु दसरथ पावल गगा ॥
अइसन मोर मन पतीआई । अब तब अवध देषो मे जाई ॥
चले दूत अवध धरो पाउ । अवधपुरी कर देषी सुभाउ ॥
आतुर चले ना वसतर समारा । आगे पीछे ना एको बीचारा ॥
चली चली आए अवध परवेसा । नाही समारी पगरी सीर केसा ॥
झपत कलपत रोअत जाई । पुनी कहु नगर लोग कुसलाई ॥
जबही दुत कही कुसलाई । इसट काज कछु अहे गोसाई ॥

:o: :o: :o.

अंत—

नही आए लछुमन रघुराई । तब पउआ सीर लीन्ह चढाई ॥
राम लषन सीआ वन सुष पाई । परनसाल मह सेज बनाई ॥
हमहु रवह पुर बाहर जाई । हमहु सेज्या बोवरी पनाई ॥
नदीगराम भुइ बोवरी पनाई । कुसपत्र तेन सेज पनाई ॥
वैठे आसन प्रभु मन लाई । आगे पउआ धरी सिर नाई ॥
नीस दीन पुजन ताको करई । अवध अधार प्रान तब धरई ॥

॥ दोहा ॥

भरत वीलाप कथा वीमल "इसरदास" कही गाय ।
जो नर सुनही जो गावही जनम जनम अघ जाइ ॥

इति श्री भरथ वीलाप कथा सपुरन परती देपा सो लीपा मम दोप न दीग्रते पंडीत जनसे वीनती मोरी टुटल ग्रपर लेव सव जोरी समत १८८० साल समे नाम माघ वदी ग्रमावस रोज वीहफे मोकाम मउ ॥

विषय—राम के वनवास पर भरत विलाप वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल ग्रज्ञात है, लिपिकाल मवत् १८८० वि० है। लिपिकार कहता है, 'प्रति देपा सो लीपा मम दोप न दीग्रते ' इससे स्पष्ट है कि प्रस्तुत प्रति किसी प्राचीन प्रति की नकल है। ग्रत रचनाकाल मवत् १८८० के पहले होगा। रचना ग्रवधी भापा मे है ग्रौर साहित्यिक है। वर्णनात्मक काव्य की दृष्टि से सुंदर है। खेद है, रचनाकाल तथा कविपरिचय के सवध मे कुछ पता नही चला। ग्रथ की एक खडित प्रति पहले भी मिली थी, पर उससे ग्रथ के विपय के सवध मे पूरा पता नही चला था।

संख्या २१ ख. भरत मिलाप, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—८, ग्राकार—८$\frac{३}{१६}$ × ६$\frac{३}{१६}$ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (ग्रनुप्टुप्)—१२० पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—सहिजादपुर, जिला—इलाहावाद।

ग्रादि—ग्रथ भरथ मिलाप लिपते ॥

॥ दोहा ॥

सुरसत चरन मनिवहु मन मैं वहुत उछाह।
राम कथा कछु भापहु जाके गुन ग्रौगाह ॥

॥ चौपाई ॥

रामचंद्र वन कीन्ह पयाना। राजा दसरथ वहुत पछताना ॥
रामचंद्र छांड़ा ग्रसथाना। दोरे नगर सकल परधाना ॥
रोवे सकल नगर नर नारी। रामचंद्र विन ग्रवधि उजारी ॥
वचि रचि कैकई पत्र लिपावा। दूत हाय नैहरिहि पठावा ॥

ग्रंत—

निसिदिन पुजन ताको करई।
ग्रवघ ग्रधार ग्रगोचर रहई ॥

॥ दोहा ॥

भरथ मिलाप कथा विमल "सरदासी" कवि गाई।
जो नर सुनहि जो गावहि जन्म जन्म ग्रघ जाय ॥

इति श्री भरत मिलाप कथा संपूर्ण समाप्तं ॥

विषय—रामचद्र के वन चले जाने पर भरत विलाप वर्णन।

संख्या २१ ग. भरत विलाप, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—१, ग्राकार—१०×६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (ग्रनुप्टुप्)—८, ग्रपूर्ण, रूप, —प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सन् १६६ (सदेहजनक), प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा।

आदि—

तव लागी जवही मन चीत लाइ
द.....रघ सत काह सुनाई
सदा भजहु श्री राम चीत लाइ राम जपत सदा सुख पाइ
एक आचार राम प्रन लोव लाइ सीता राम लछमन वन गयउ
अव तो आजो धानग्र घरो अर भएउ
............नं दं काना .. .. लाना
राम राम सव कोइ काहाइ भरथ विलाप काया वोलही
कहैं स्वीदास कापी गा ॥ ए
जो नरा सुनै भो सम्रतागई पाप छं जाय राम नाम सुमिरं सोइ
.... सपूराना ....

अत—एती श्री पोथी भरथ वीलाप काय सपूरन जो पाती देखा सो लीखा मम दोस न दीएते पंडित जन सो वीनती मोरी भुला हराफ लेए सम जोरी पोथी तंएरा भई दीन प्राता यए के रोजा सुभमस्तु...सुदी ४ सन १६६ दास खाती जानकी प्रास्द मीसीरा कं राम राम ॥

विषय—रामचंद्र के वन गमन के पश्चात् भरत का विलाप वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। केवल एक पन्ना उपलब्ध है। यह जिस हस्तलेख में है, उसमें रामायण, रामजनम और अर्जुनगीता नामक ग्रंथ भी लिपिबद्ध हैं। रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सन् १६६ दिया जो अस्पष्ट है। ग्रंथ कैथी लिपि में है। लिपि अत्यंत भ्रष्ट तथा अशुद्ध है।

संख्या २१ घ भरत मिलाप कथा, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—बाँसी, पत्र—८, आकार—८×५ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भरत मिलाप लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

शारद चरण मनावहु मन मे परम उछाह ॥
राम साखि कछु गायो जाके गुन अँगाह ॥

॥ चौपाई ॥

रामचंद्र वन कीन्ह पयाना ॥ राजा दसरथ मन पछताना ॥
रोवैं सिया सती वर नारी ॥ राम लषन विन औध उजारी ॥
रचि केकैई पत्र लिखावा ॥ दूत हाथ दै नैहर पठवावा ॥
आएहु दूत भरत के पासा ॥ अवधिपुरी तें भए निरासा ॥
चौथैं दूत विदा जव भएऊ ॥ अंतर वस जोजन सत गएऊ ॥
जहवा भरत चतुरगुन रहेऊ ॥ जाइ दूत दंडवत तह करेऊ ॥
कहहु दूत औध कुसलाई ॥ कस कौशल्य दसरथ राई ॥
घर घर राजनीत ठकुराई ॥ कैसे राम लषन दोउ भाई ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

दान द्रव्य भोजन द्विजनि पितु हितु श्रुति विधि कीन्ह ॥
वहुरि मातु पह जाइकै पुनि गो गोचर कीन्ह ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

जननी तैं अजोग अति कीना । सुत कह वहुत भाँति सुष दीना ॥
स्वामी हनेहु कवन यह ज्ञना । जेहि सुष लगि राखहु निज प्रना ॥
केहि मुख जाइ कहव अव वैना । लाज न लागत तुमरे नैना ॥
समुझि राम वासी वन सैला । रोवत भरत करेउ मन मैला ॥
गुरु वशिष्ठ वोले तव जाई । तव उठि भरत गुरहि सिर नाई ॥
दें आसिष तव गुर समुझाई । वेगि राम कहु आनु वोलाई ॥

॥ चौपाई ॥

चौदह वरष अवधि सुनि पाई ॥ तवही भरत परे पग आई ॥
वहुत भांति प्रभु तिन्हैं वुझई ॥ देश काल गति समुझहु भाई ॥
:o: :o: :o:
जोरि पानि वहु विनै सुनाई ॥ नहि आए लक्षमन रघुराई ॥
निसचैं वचन कहौ समुझाई ॥ चौदह व(ष राम नहि आई ॥
अस कहि लोगन वोध कराई ॥ कौशल्या पह गए दोउ भाई ॥
भरत देषि कौशल्या धाई ॥ परत भरत पद सो मुरझाई ॥
सुतहि उठाइ अंक मह लाई ॥ पा पकरि वहु विधि समुझाई ॥
नहि आए लछिमन रघुराई ॥ तव असीस लै सीस चढ़ाई ॥
राम लषन सिय वन सुष पाई ॥ परनशान्न मह सेज वनाई ॥
हमहु रहव पुर वाहिर जाई । महि राज्या मह उपर वनाई ॥
नदिया भूमि जावन वाई ॥ कुस पत्नन की सेज वनाई ॥
वैठे आसन प्रभु मन लाई ॥ सिंहासन पादुका धराई ॥
नित प्रति प्रन जनता को करई ॥ अवधि अधार प्रन तन धरई ॥

॥ दोहा ॥

भरत विलाप कथा विमल दास ईसुरहि गाई ॥
जे नर गावहि सुनहि यह जनम जनम अघ जाई ॥

इति श्री ईश्वरदास विरंचित भरत विलाप कथा संपूर्ण ॥

विषय—अयोध्या से राम के वन गमन के पश्चात् भरत का विलाप वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम 'ईश्वरदास' है; पर प्रस्तुत ग्रथ से इनका कोई वृत्त ज्ञात नही होता । विशेष के लिये देखिये 'अद्भुत विलास' का विवरण पत्र ।

संख्या २२. सत्यवती कथा (संभवत), रचयिता—इसरदास (ईश्वरदास), कागज—देसी, पत्र—३, आकार—७$\frac{3}{4}$×५$\frac{2}{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, प्राप्ति स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता—प० स्वामीनाथ दुवे, ग्राम—दुवौली, पोस्ट—खुखुदू, जिला—गोरखपुर)

आदि—..............................

रिषिअन्ह के राआ पुछत हव मौ तोहि ।
कैसे वाढे ही पाचौ पंडौ चोपे अरथ सुनावहु मोहि ॥
सुनु जनमें मै कहौ वुझाई ।
जैसे वाटे ही पाचो भाई ॥

कंद मूल फल करही अहारा ।
वरष एक जाहा रहे केदारा ॥
दोसरे जमुना अगम गभीरा ।
तीसरे नीरपति गगन गभीरा ॥
चौथे वरष गए जग्रनाथा ।
पचए केदली सीध न शाथा ॥
छठए वीथी दोग्रारीका गएउ ।
सतए सेत वाघ चली गएऊ ॥
अठए भारीषड चली गएऊ ।
मारकडे के दरशन पएउ ॥

॥ दोहा ॥

तेही देषी उठे रिषेसर पुछत हव मै तोही ।
कहवा से तुह पडो कहहु आपन मद माही ॥

:o: :o: :o:

अंत—

जौसती जाऊ अंधारा ।
भएउ वीहान सकल संवशारा ॥
हरषीत बंभा सभु मुरारी ।
"इशरदास कवी सरन तोहारी ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

तेतीस कोटि देवता सम सभके भैउ उछाह ।
अस शुनि लगन धराई जे दुनी वुकरी...... ॥
बंभा देउ तव षभ गडावा ।
आम डारी ताहा आनी थैशावा ॥
वालु के ताहा चौक पुरावा ।
धोतीन्ह पोथीन्ह माडो छावा ॥
सुरज दीआ धरावा आना ।
कलस कवंडल भरो धनु पाना ॥
कुंअरी कुंअरी के चंदन लगावा ।
पारवती उठी मंगल गावा ॥

:o: :o: :o: —अपूर्ण

विषय—इद्रपति राजा के पुत्र ऋतुपर्ण और मथुरा के राजा उदयचन्द्र की पुत्री मालवती की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के केवल तीन पत्रे, संख्या ४, १८ और १६ के उपलब्ध हैं। ग्रंथ का नाम अज्ञात है। रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं।

रचयिता का नाम इशरदास कवि लिखा मिलता है, जो १६वें पत्रे में दिया है। संभवतः इनका नाम परिष्कृत रूप में 'ईश्वरदास' रहा होगा। शेष विवरण नहीं मिलता।

संख्या २३. अगद पैंज, रचयिता—ईश्वरदास, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—९×६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, खडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १८०६ वि० (जिस प्रति की नकल है उसका लि० काल सं० १७०९ है)। प्राप्तिस्थान—प० रामअनद जी त्रिपाठी, ग्राम—दरवेशपुर, पो०—भरवारी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—..............................

दोहु वीसम करहु तव ना।
नेपुर वैठि करहु मनग्येना।
तुम सुवंस कुल क सिगर। धनी जगजीवन अम तुम्हर।
असे भार न अगवै कोई। इन वपुरेन्ह सोक जन होई।
सुनु स्वोमी जग की स्वौर : कहेक जु नसइ।
वलि पुत्रा हे अंगद : तेही अनींह करइ।
कैसे हही धौं अंगद वीरा। तेजवंता धौं अलप सरीरा।
तेही अनीकै मोहि देख लवहु। वर वर क मोही सुनवहु।
इ सव वनेंग कदर झरी। कैसे करव खेत मह मरी।
गढे इनक्र कौन भरोसा। रहही की जही धौं अपने देसा।
मोरी दो हुई मंत्री : चोखे पठवहु एक दुता।
वेगी जइ लै अवही : वलि रइ क पुत्रा॥

॥ जामवंता वच ॥

जामवंत एक दुत वोलवा। केकु मल उठी अगेही अव।
तसीवत कहे समुझइ। चोखे अंगद अनु वोलइ।
सुनी कै दुता कटक मुंह धव। अंगद अंगद कै गोहरव॥
अंगद नम लख दुइ चरी। वलीक अंगद अनुहं करी।
संघ लेवइ लइ अए : जहवं दुनो भाइ।
राम लाछिमन के अगे : वैठे वीर सीर नइ॥

॥ राम चंद वच ॥

छत्रीन मह तुमही वलवीरा। तुम सुवंस गुन ग्येन गंभीरा।
क्रोध रीस कवनो जनी मनहूं। वीर ठरी लंक पुर गौनहुं।
.... । .... ।

:o: :o: :o:

अंत—

रघुनदन अस वोले, अंगद को नही जान।
राम राम जग तरतः "इसरदास" कवी मान॥

इती श्री 'अंगद पैंज' संपूरन समपती सुभमस्तु कथ लीखी अंगद पैंज संवत् १७०९ साल मिती कुआर सुदी सतीमीक कथ उत ववइनी हजरीनी पडित जनसो विनती सोसइनक्र जोरी अछर अंथ सव लेहु वीनती सुनु चीत मोरी पडित जनसो विनती मोरी जह टूट होइ अछर तह पढहु तुम जोरी पद ही महमद सही की।

संवत् १८०६ मीती माघ वदी............."अक्षर उड़ गए हैं।

विषय—रामदूत अगद का रावण के दरवार मे जाना और अपनी वीरता दिखाना। रचनाकाल सवत् १७०९ वि०।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ मे कुल पद्रह पत्रे है। प्रथम पत्र लुप्त है। लिपि सुन्दर है, पर अत्यन्त अस्पष्ट और अशुद्ध है। ग्रंथ के रचयिता 'ईश्वरदास' है। लिपिकाल सन् १८०६ है। जिस प्रति से नकल हुई है उसमे लिपिकाल स० १८०६ है, इन के कुछ अंश मिट गए है। ग्रंथ की भाषा अवधी है।

संख्या २४. अलकार ग्रथ, रचयिता—ईश्वर, कागज—आधुनिक मशीन, पत्र—११, आकार—८३/४×५३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० चद्रभान ओझा, एम० ए०, एल० टी०, मोहल्ला-जगनाथपुर, प्र० अध्यापक, ब्राह्मण हाईस्कूल, गोरखपुर।

आदि—राम १ श्री राम जू सहाय ॥ महावीर जू सहाय ॥

श्री गणेशायनमः

॥ दोहा ॥

एकरदन करिवर वदन सिधि सदन मुद दानि।
मदन कदन नंदन जपहु जगवदन जिय जानि॥ २॥
परसु धरन संपति भरन अवढर ढरन गनेस।
विघ्न हरन मंगल करन रापहु सरन हमेस॥ १॥
सिंधुर सहिं सिंधुर बदन रदन विसद दुति भाति।
इरवर कवि कवि वो निरपि रवि पनि छवि दवि जाति॥
श्री गणेशायनमः अथ अर्थालकार॥

जाको वरनय सो उपमेय जाको उपमा देई सो उपमान समता वाचक वाचक धर्म दुनो मो जो रहे चारो होय तहाँ पूरण उपमा यथा

तरुण अरुण अबुज सम चरना।
अरु एके छं तीनो लुप्त ते आठ भेद॥

:o: :o: :o:

अंत—व : जगे सर देयाल मी : कार्तिक शुक्ल ५ सवत १६१६ ॥ राम

विषय—तुलसीकृत रामायण मे आये प्रसिद्ध प्रसिद्ध अर्थालकारो और शब्दालकारो का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। बीच बीच मे इनके कुछ प्राचीन पत्रे भी है, जो एक दूसरे से इस प्रकार चिपक गए है कि उनको अलग करना बड़ा कठिन हो गया है। दीमक ने भी इनमे अगणित छेद कर दिए है। इससे यह पता चलता है कि जिस प्रति के ये पत्रे है उस प्रति से प्रस्तुत प्रति लिपिबद्ध हुई है। रचनाकाल उल्लिखित नही है। लिपिकाल सवत १६१६ है। रचयिता का नाम ईश्वर कवि है। अन्य परिचय नही मिलता। प्रति बहुत अशुद्ध लिखी है।

संख्या २५. दामोदर लीला, रचयिता—उदयराम, कागज—देसी, पत्र—१६, आकार—७३/४×५३/४, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गणपति गिरा गवरि गंगाधर गिरधरि गुर गोपाला ।
सुमिरहु सिद्ध वृद्ध विद्याधरहू जै देव दयाला ॥
लीला ललित लाल गिरधर की बाल ब्याल सुष सोहै ।
नैन बैन मुष श्रवन प्रान मन सुरनर मुनि जन मोहै ॥
वसत अहीर भीर गोकुल में गोपराज रजधानी ।
घर घर वृंद सकल सुरहिन के दही दूध रुचि मानी ॥
तिनमैं नद महरि वड़भागी भाग विभौ को वरनै ।
कृपा करी तिनके ऊपर अति तीन लोक ईश्वर नै ॥
जग्य जोग जप तप तीरथ व्रत दान मौन मन धरिकैं ।
षोजत फिरत न पावत कोई कोटि जतन करि करिकैं ॥

:o: :o: :o:

अंत—

कंठ कपोल भुजा गजवर दुज कमलनाल कर सोहै ।
उर वर उदर नाभि कटि कौं लषि कोटि काम मन मोहै ॥
करिवर सुडि काम कदली जुग जंघन पर वारौ ।
चरन सरोज अरुन के आगे नष मनि मोती हारे ॥
अति सुकुमार स्याम तन सुदर पति वसन मन मोहै ।
नव घन मनहु दामिनी दुरि दवि देषि देषि छवि छोहै ॥
कोटि काम लावन्य स्याम तन सोभा अमित अमानौ ।
सो छवि वसौ "उदै" उर अंतर गिरधर रूप रमानौ ॥
यह लीला गिरधर गुपाल की वाल विनोद बिलासी ।
सो या सुनें गुनें अरु सीषै सो साचौ वृजवासी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

संवत् अठारह वामना सुदि कार्त्तिक सुदि वुधवार ।
भयौ "उदै" उर तै •जवै यह लीला अवतार ॥

इति श्री उदैराम कृतौ दामोदर लीला सपूर्ण ॥ १ ॥

रचनाकाल

संवत् अठारह वामना सुदि कातिक सुधि वुधवार ।
भयौ "उदै" उर तै जवै यह लीला अवतार ॥

विषय—श्रीकृष्ण की दधि माखन लीला तथा गोवर्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८५२ है। लिपिकाल नही दिया है। रचयिता का नाम उदै या उदयराम है। ये वही प्रसिद्ध उदय हैं जिनके विषय मे स्व० श्री मायाशकर जी याज्ञिक कहा करते थे —

'नददास जड़िया तो उदै पालसिया' ॥

इनके ग्रन्थ कई ग्रथ मिले हैं, जिनमे 'जोग लीला' बहुत उत्तम है। प्रस्तुत रचना भी उत्तम है। खेद है, इनका निवासस्थान आदि का अभी कोई पता नही लग सका। प्रस्तुत ग्रथ मोहन लाल कृत 'रगमजरी' के साथ एक हस्तलेख मे है।

संख्या २६. राम रघुनाथ स्तोत्र, रचयिता—उदय, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—६½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८१ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री रामाय नम.

॥ छर्प ॥

जै जै जै श्री राम मीन होय वेद उधारयो।
जै वराह जै कमठ असुर हति पुह्मी धारयो।
जै नरहरि वल पुंज प्रवल हरिनाछस मारयो।
अति वालक प्रहलाद असुर ते वधत उवारयो।
जो वावन वलि छरन हरि सहस नयन रछया करन।
श्री रामचंद रघुनाथ प्रभु दीनवंधु असरन सरन॥ १॥

:o: :o: o:

अंत—

राम गरीवनेवाज कहत सव जग परतछक।
सबही के प्रतिपाल दीन दुखियनि के रछक।
इह सुनि चरननि वोट लयो मैं राम तुम्हारो।
मोहि कहा है लाज नाथ तुमको सव भारो।
वार वार विनती करैं अधम "उदै" कह इह वचन।
श्रीराम चंद रघुनाथ प्रभु दीनवंधु असरन सरन॥५१॥

इति श्री रामरघुनाथ अस्तोत्र संपुरन सुभ मस्तु सुभ भवतु।

विषय—राम की स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात।

रचयिता का नाम ग्रंथात में 'उदै' दिया है। अन्य वृत्त अप्राप्त है।
संभवत ये "जोग लीला" ग्रंथ के रचयिता उदय हैं, जो व्रज के रहनेवाले थे।

संख्या २७ नवरत्न कवित्त, रचयिता—उमादास (?), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—११½ × ६ इंच, पंक्ति (प्रपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी।

आदि—अथ नवरत्न कवित्त लिप्यते॥

दोहा—धन्वंतर क्षपनक अमर घटकर्पर वैताल॥
वररुचि शंकु वराहमिह कालिदास नव लाल॥ १॥
विमल चित याचक शिपल मूढ तपस्वी गत॥
कृपण वुद्धि तिय नरपती ज्ञानवंत नव वात॥ २॥

छप्पय—विमल चित्त करि मित्त सदुज्वल वलि वसि किज्जय॥
प्रभु सेवा वसि करिय लोभयतह धन दिज्जय॥
जुवति प्रेम वसि करिय साध आदर दस मानिय॥
महाराज गुन कथन वधु सम रस सनमानिय॥

गुरु नमत सीस रस सौं रसक विद्या वल वुध मान हरिय ॥
मूरख विनोद विकेथा वचन सुभ सुभाउ जगवसि करिय ॥ ३ ॥

छप्पय—याचक लघु पद लहै काम आतुर कलक पद ॥
लोभी दुरजसु लहैं असन लालची लहै गद ॥
उन्नत लहै निपात दुष्ट परदोष लहै तकि ॥
कुमन विकलता लहै लहैं संसै जु रहै चकि ॥
अपमान लहै निरधन पुरष द्वारी वहु सकट सहै ॥
जो कहै सहज करकस वचन सो जग अप्रियता लहै ॥ ४ ॥

मध्य—कृपन वुद्धि जस जाइ ॥ कोप दृढ़ प्रीति विछोरइ ॥
दभ विधसइ सिफत ॥ छदा मर्यादा तोरइं ॥
कुविसन धन छय करैं विपति पिरतापद ढारैं ॥
मोह मरोरैं ज्ञान विषय शुभ ध्यान विडारैं ॥
अभिमान विनेदं विनय गुनपि सुन कर्म ॥ गुरुता गिलैं ॥
कुकला अभ्यास नासैं सुपथ दारिद सौ आदर टलैं ॥ ८ ॥

अंत—ग्यानवत हठ गहे निरधन परिवार वढ़ावैं ॥
विधुवा करैं गुमान धनी सेवक होइ धावइ ॥
वृध न समुझै नारि भरता अपमानैं ॥
पंडित किरियाहीन राज दुरवुद्धि प्रवानैं ॥
कुलवत पुरुप कुल वित्त जे वधु न मानैं वंधु हिउ ॥
सन्यास धार धन संचरैं ये जमैं मुरख विधत्त ॥

इति श्री नवरत्न कवित्त सपूर्ण ॥ मिति असाढ़ शुक्ला ॥१२॥ संवत् १८८८ ॥

विषय—विभिन्न उदाहरणो द्वारा ज्ञानोपदेश किया गया है।

विशेप ज्ञातव्य—ग्रथ से तो रचयिता के विपय में कुछ प्रकट नहीं होता। परतु उमादास-कृत "नवरत्न" नामक नीति ग्रथ है। वहुत सभव हे, प्रस्तुव रचना उन्ही की हो। लिपिकाल स० १९८८ है।

संख्या २८. स्वरोदय (पट्प्रकास), रचयिता—ऋपीकेश, (स्थान—आगरा), कागज—देसी, पत्र—३१, आकार—५$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुप्टुप्)—३४१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० अम्बिकादत्त शुक्ल, कविराज, ग्राम—शेरगढ, पो०, मूरतगज, जिला—इलाहावाद।

आदि—. . . . . .जुहे
तुमते वहोते काल न्यारो जुहो।
वेगि दया सिंधु दया कीजियैं ॥
चाहत हौं वेगि दरस आई दीजियैं ॥
देख्यौ नहीं और कोऊ मैं हरन ॥
याते पर्यो आइ तिहारी सरन ॥

॥ सोरठा ॥

ज्ञान दीप सुपरासि "जीवनराम" सनेह सौं ॥
जैसे कियो प्रकास सो सुनियैं सव कहत हौं ॥

॥ नगर वर्नन ॥

जमुना के तीर मित्र आगरौ वसै जेते हैं नगर आगरौ नय गो गोर्ड हम ॥
जानौ निवास सदा ऋषकेश कौ दहौ ॥
गुरु के प्रसाद कछु ज्ञान राति मे लहौ ॥
.... ॥
अष्य दस सत अष्ट तु सवत जानिये ॥
चैत्र शुक्ल तिथि तीज वार शशि मानिये ॥
:o. :o. c

अत—इति तृतिय काल ॥

उठैं प्रात ही को सुवन दू निधावैं ॥
उदैं होई तब भानु उपर कू आवैं ॥
तहा होई वा ठौर विहि पीवि दं जू ॥
तहा एक सींव्र हलै ना चलै जू ॥
दोऊ हाथ नीचे तबै छाड़ि देई ॥
कहूँ नेकूँ चिता नहीं चित्त लेई ॥
करै वृष्टि ऊँची सु भ्रू को निहारें ॥
तहा छाह अपनी वडी जो दिचारैं ॥
सबै चिच पेषै बडी आयु तावी ॥
न देषै जुनैना पटै मास वावी ॥
जु पानैं न पर्षं सु छै वर्ष मानो ॥
पगै न देषै जुरा कै य मानो ॥
:o: .o: .o

—अपूर्ण

विषय—स्वरोदय शास्त्र के अतर्गत नाडी भेद आदि का वर्नन ।

१८ ८
अष्टादस सत अष्ट तु सवत जानिये ।
चैत शुक्ल तिथि तीज वार शशि मानिये ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । केवल ३१ पत्रे हैं । रचनाकाल स० १८०८ वि० है । रचयिता का नाम ऋषिकेश है । ये आगरा के निवासी थे ।

सख्या २९. ऋतुराज मजरी, रचयिता—ऋषिकेश (स्थान—वृन्दावन) कागज—देसी, पत्र—२५, आकार—६½ × ६¼ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—याज्ञिक पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ रितुराज मंजरी लिख्यते ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

रसिक सिरोमनि स्याम घन गुननिधि आनद पद ।
कवल नैन केशव सुपद "ऋषीकेश" दुखदद ॥ १ ॥
सौंदर्ज सुधानिधि निति नुदित उपमा दीजे ताहि ।
गौरी भौरी मानिनी भई चकोरी चाह ॥ २ ॥

केलि कथा रस माधुरी सुनहु रसिक दै चित्त ।
विविध विनोद विलास सौं विपन विहारी नित्त॥ ३ ॥
नट नागर विहरत सदा सुषसागर रसमेलि ।
षट रितु निपट नवेलि विधि करत अनूपम केलि ॥ ४ ॥

॥ चौपई ॥

रसिक करी रितुराज मंजुरी । प्रेम सुवास सरस रस भरी ॥
मधु माधुर्जिज रचित रतनारी । ललित लहलही चित हितकारी ॥
वरन वरन पल्लव कवनीय । सुमन मनोहर नित नवनीय ॥

अंत—प्रिया जूंकतु वचन सखी सौ

॥ कवित्त ॥

होरी धरी जवतै चहौंरी चित चैन वेली नवरंग नवेली हैं लील लेति लहलही ।
सुधा रस सींची मनमोहन रसिकमनि आनंद पुहप हित महक महमही ।
मिलिबौ सफल स्वादु रस नैन जानै रसना वषानै रुचि गाहक गहगही ।
तरुन तमाल लाल मृदुल तन लपटानी छवि वरसानी रहो दिन दिन डहडही ॥३४॥

:o: :o: :o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सुष विलसत हुलसत हियें रहसि प्रिया घनस्याम ।
"ऋषीकेश" वर्नन कीयें सिसिर सकल रसधाम ॥३६॥
रितुराजु मंजरी मोदमय भरी प्रेम रस रंग ।
"रिषीकेस" चित चाइ सौं चाहत रसिक सुभंग ॥३७॥
षट रितु निपट विशाल सौं विलसत स्यांमां स्याम ।
रिसीकेस आनंद सौं वृंदावन निजु धाम ॥३८॥

इति श्री राधा कृष्ण विलासायां रिषीकेस विरचितायां रितुराज मजरी वर्णनं नाम षष्टम् कलिका समाप्त ॥

विषय—षट् ऋतुओ मे राधाकृष्ण की क्रीडाओ का वर्णन । ग्रथ मे 'कलिका' नाम से ६ अध्याय है :—

१.	प्रथम कलिका	वसत विलास वर्णन	पत्र १ से १६ तक
२	द्वितीय कलिका	ग्रीष्म विलास	पत्र १६ से २१ तक
३	तृतीय कलिका	पावस विलास वर्णन	पत्र २१ से २६ तक
४.	चतुर्थ कलिका	शरत् विलास वर्णन	पत्र २६ से ३१ तक
५	पचम कलिका	हेमत विलास वर्णन	पत्र ३१ से ३३ तक
६.	पष्ठ (पष्ट) कलिका	शिशिर विलास वर्णन	पत्र ३३ से ३८ तक

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात हैं। हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ भी है :—

१ लाल जू को रूप—इसमे अनेक कवियो के छद हैं।
२–३. प्रिया जू को रूप तथा पूर्वराग अनुराग ।
४. नखशिख (सग्रह)—अनेक कवियो के छद है ।
५ स्फुट सग्रह—अनेक कवि ।

रचयिता वृंदावन के निवासी थे। अन्य वृत्त नही दिया है। इनकी प्रस्तुत रचना काव्य की दृष्टि से सरस है।

संख्या ३०. अजुल पुराण (वैद्यक), रचयिता—कनाय साहब, कागज—देशी, पत्र—१३५, आकार—६३⁄४ × ६३⁄४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री प० रामप्रसाद पाठक, ग्राम-मर्ड, पो०-किराकत, जौनपुर।

आदि—॥ ओं श्री गणेशायनमः ॥ अथ वैद्य सारले हकीम फरासीस नाम रुग भया निर्णय प्रथम सरीर भेद लिख्यते सरीर नै च्यारी कोठा है पेट कोठा मैं अग्नि है तहा क्षुधा होत है दूसरे कोठा में अन्न रहत है तीसरे मैं जाय कै भस्म होत है चौथे में जाय कै मल पचन है प्रथम मल को कोण ताकी दो रंग है।

:o: :o: :o: :o: :o:

अथ रितु विचार

आदमी के शरीर मे दोष बारह मास मैं होत है। चैत्र वैसाष ज्येष्ठ तीन तो आदमी के पेट मैं रहतै वाय जो मगज की मींगी मैं रहत है १ आसाढ सावन भादौं वाय जो आदमी के पेट मैं रहत है जुर है जो मास चरबी मैं रहत है २ क्वार कातिक अगहन पित्त जो है सो आदमी के पेट मैं रहत है जुर मगज की मींगी मैं रहत है वाय त्वचा मे रहत है त सीतनाम चरबी मैं रहत है ३ पौस माह फागुन जुर जोहै सो पेट मै रहत है सीत त्वचा मैं रहत है इति सरीर दोष रितुविचार।

:o: :o: :o: :o: :o:

स्त्री का रोग च्यारि प्रकार कौ वाय तैं पित्त तैं कफ तैं सनिपातैं यालय रोग च्यारि प्रकार कौ असे ही सर्व रोग च्यारि च्यारि प्रकार के जान लेना ? इति श्री अजुल पुराणे वेदे शास्त्रे हकीम फरासीस मतीससुत कनाय साहेब विरचितायां रोग उत्पत्ति नाम प्रथमोध्याय १

:o: :o: :o: :o: :o:

अंत—१४ गुंन हुचकी जाय उवा की पेट सूल येते रोग नासै चूरन पाषान भेद टंक ५ पठानी लोध टंक ५ समुद्र सोष टक ५ सीभल को गुद टंक ५ चोना गुन टंक ५ वैंचव के बीज टक २० सौंफ भूज ले टंक २० आबरे टंक २० इद्रजव टक १० बील गिरी टक २० सुपारी चिकनी टक ५ सुपा राव राग टंक...............अपूर्ण... ..... ।

:o: :o: :o: :o: :o:

विषय—वैद्यक ग्रथ। रोग, उनके लक्षण एव औषधो का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण तथा खडित है। समस्त एक सौ पैंतीस पन्ने उपलब्ध है। खडित होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है। परन्तु देखने से ग्रंथ प्राचीन जान पडता है। रचयिता "कनाय साहब" है। आप हकीम "फरासीस" के पुत्र थे। और कोई परिचय नही मिलता।

ग्रथ आद्योपात गद्य मे है। कदाचित् यूनानी भाषा मे किसी वैद्यक ग्रंथ का अनुवाद है। रोग उनके लक्षण एव औषधो का वर्णन ग्रथ का विषय है।

संख्या ३१. श्लेषार्थ विंशति, रचयिता—कन्हैयालाल भट्ट (गोकुल), पत्र—२, आकार—७॥ × ६॥ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली हिं० ब० ६०, पु० स० ६।

आदि—श्री द्वारिकेशो जयति॥ अथ श्लेषार्थ विंशति प्रचित लिख्यते दोहा॥

गुरु गोविंद पद बंदि के गंगाधर सुत मान।
श्लेषारथ विंशति रचैं जसवंत चित हित मान॥

कवित्त—

पूरण अवतार भू भार के उतारवे कूं सूरवस अवतंस रूप सरसाऐ हैं।
ईष धनुषंड नृप मडल प्रभाव हारि हिय मंड जनक नरेश मन भाये हैं।
अग्रजवराम......तहरष बढाय रहे ताकि पलंका नर रछ जग चाऐ हैं।
मानत समुद्र के सुदुज सूनु जीव नंद ऐसे रघुनंद जदुनंद कान गाये हैं ॥१॥

मध्य—पृ० ३ ईन्द्र वन्हि यम नैऋत वरुण वायु कुवेर ईश शिरदा सिंह राहोर रविवंश वेण चंद सतयुग पक्षे ॥ चतुर्दशार्थ कवित्त ॥

सुवरन कर सोभी हे अछरन लोभी हैं छंद के प्रबन्ध तें होत हिय तर तर॥
धर्मयति यमक विचारि मित्रिगनहु को विरसन मुंच वध जलमल फर फर॥
विरजल सक्त मतुमानहु विरंग गति अग राज नंदन फर जस रूप धर धर।
कवियत्विकंज कुंज प्रभाल भालोक लोक कोक सरवर कान मान रमा उमा हरि हर॥१४॥

अंत—॥ दोहा ॥

श्लेपार्थ कीने कवित वहुत विचार विचार।
श्री सिरदार नरेस कौ सकल मंत्र सिरताज ॥
जग जाहर जसरा के हित यह रचि न समाज ।
श्री जैपुर वासी सु कवि मथुरास्थ बुजराज ॥
"कान भट्ट" कीने कवित विंशति श्लेष समाज ॥

इति श्री कन्हैलाल भट्ट विरचितं श्लेपार्थ विंशति सपूर्ण ॥
यादृशं पुस्तक दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया ॥
यदी शुद्ध मशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥
शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥ दीर्घायु भूयात् ॥

विषय—श्लेप काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—स० भ० की छाप लगी है।

संख्या ३२ क. कवीर सागर, रचयिता—कवीर, कागज—देसी, पत्र—२१, आकार—६$\frac{1}{2}$ × ४$\frac{1}{4}$$\frac{1}{6}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुप्टुप्)—५०८, खडित, रूप—पुराना (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १७२३ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री महत मगलदास जी, मठिया, रामकोला, पोस्ट–टीकमपार, जिला–गोरखपुर।

आदि—सत्य नाँम सहेवधनि लीषितँग कविर सागर कथा ॥

प्रथमहि सत सुकीत गुन गाँवौं । तुमरे चरन सरन मन लाँवौं ॥
सतरि युग जव गए सिराइ । तव सतनाँम जेइ प्रगटउ राई ॥
अव सतगुन देषी संसारा । वहुतक ममिता अहँकारा ॥
येहि तें सव जग गए सीराई । जोगि यति पवरि नहि पाये ॥
चीन्हें नहीं रीषि सहस अठासि । नदै नाँथ सीध चौरासी ॥
नीगम खोज केहु नहीं कीयेउ । ऐसेंह बीति सकल युग गएऊ ॥
गए मुये जीव ठौर न जाई । भ्रमत फिरै सकल दूनी आइ ॥
दूनिआँ वूडि जो माँझे धधारा । कोउ कोउ षवरि न पावा ।
कहहि कविर सतानाँम विनू मीर्था जनमू गवाया ॥
अगम अगोचर समझहु जाई । येहि ते आवागौन न होई ॥
आवा गौंन अभि अमृत वासा । जो जाँनैं सो करै नेवासा ॥

ज्यों पै हँस उबारेहु भाई। येक नाम राण्हु हृिश्र साई॥
देहि भीतर देव येक अहई। तापर भेद न कोई न गहई॥
मुढ मुग्ध नर चेतह छाड़ु मन का भाय।
केवल नाम घटहि ले रहु तजहि प्रेम पदपाव॥

:o: :o: .o:

अंत—ब्रह्मा कहा धौ मैं पूछो तोहि। आपन वात कहहु तुम मोही॥
कहहु सागर कौने बीसहारो। कहाँ तें आये तुम्ह पनिहारो॥
का कर पूर येह कौने वसाई। का यह भरों नीर तुम्ह भाई॥
तौ असि कहाँ धनि की पनिहारी। नांम अन चलिहहि घनमह मारि॥
मानीक पूर नगर येक किन्हाँ। पचन द्वारि नगर मा लीन्हा॥
सेतिपोल अति उजल ताँहा बसै जे नगर हमार।
कौन भूलै तुम्हहि चलि आयेउ कहहु न नाम तुम्हार॥

:o: .o· :o:

येक गिरि ताँहाँ लागुटा आइ जाँहा उतिम जरा हुल नीर।
तौं न नीर मह पाप कटि सभे सोभीत नवल सरीर॥
बिहसि भवाँनी वात असि कहिश्रा। तुम्हार प्रीति तेन्ह रहिआ॥
अपने आदि न देखहु तुम्ह जाइ। तौ हमार वात पतिआयेहु॥
करहु गुमान पोअ बहुत घनदा। उन्ह के लेखे जस कीट पतंगा॥
सीव ब्रह्मा कीछु मर्म न पाइ। तुम्ह मोहहि सब जीउ लेव उबारि॥

कविर सागर कथा संपुन पाउ..... मोदी मुकुति पावेंता सतनाम सतगुर की दाये चाहिए सदा श्रा चारि भुजा के सुमीरन.....करहि सातसंत कबीर जीव॥ तासों सुमीरिश्रा जाके भुज आनत कविर सागर कथा संपूरन कबीर आइ अधिग्यान को गिरिसमं की भीति भाग्रा ढाठि उडि गइ रहि राम सो प्रीति॥

संवत् १७२३ समै नांम जेठ वदि तिज लीο तुरसि रांम कायेन्थ सुत छेदा पाडे घमल रहा व अलह वरिषियो का राजा राजा रुद्रसींघ मुकाम गोन्डपूर लीο कथा कबिर सागर सपुर्न आगे जैसी प्रति पाइ तैसी लिपि गुनी ग्यानी भेराउ पढनां लीखा गचुक होता है. ...दोस मोर जनि देवं कोई लीखों सोइ जो पुस्तक होइ॥ आगे कथा कबीर सागर समाप्ता:॥

विषय—ससार सागर को पार करने के लिये ज्ञानोपदेश दिया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के बीच मे जितने ही पन्ने नष्ट हो गए हैं। पर पत्राकार रूप में है। रचनाकाल का कोई पता नही। लिपिकाल सवत् १७२३ दिया है जो पहले सवत् १८२३ लिखा गया था। पर पीछे श्रत के दो को ३ बनाया गया है। पुष्पिका व लिपि से तो यह स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत प्रति किसी प्राचीन प्रति की नकल है।

रचयिता का नाम कही स्पष्ट तो नही है, पर यत्रतत्र 'कबीर' नाम प्रयुक्त होने से कबीर को ही रचयिता मान लिया गया है।

वर्णन शैली कुछ कथा का रूप लिए हुए है। जिसमें ब्रह्मा, विष्णु, माया, धर्मराज तथा एक उत्तर दिशा का राजा पात्र के रूप मे आए है। कबीर ने ससार में माया मद ग्रस्त जीवो को जग जजाल मे फँसा देखा, जिनमें उन्हें स्वर्ग, नरक और पृथ्वी में वारबार आना जाना पडता था। अत उससे यह दुख न देखा गया इसलिये ब्रह्मा को ज्ञानोपदेश कर उन्हें मोक्ष का मार्ग बताया।

संख्या ३२ ख. कवीर, निरजन ज्ञान गुष्टि और शब्द मंगल, रेखता देहला, रचयिता—कवीर, कागज—देसी, पत्र—१०, ग्राकार—१४१२/१६ × ६५/१६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गणेशधर दुवे, ग्राम–वीरपुर, पोस्ट–हडिया, जिला–इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवीर और नीरंजन ज्ञानगुप्ट लीष्यते ॥१॥ श्री गुरुम्यो नमः ॥ शत सुक्रीत अदल अदली अजर अचित पुर्स मुनिंद्र करुनामै कविर सुर्ति जोग संत एधनी धर्मदाश ॥ चूरामनि नाम सुदरसन नाम कुल वाभन नाम ॥ . . .वोध गुरू वाला पार का मल नाम अमोल नाम सुरत सनेही नाम ॥ हाक नाम साहेव की दया चारि गुरू की दया ॥ वंश व्यालीश की दया सो लीषतं ग्रंथ कविर और नीरजन ज्ञान गुप्टि वीचार ॥

काल नीरंजन नीरगुण राई । तीनि लोक मे परी दोहाई ॥
सात दीप प्रीथीवी नौ षंड । सप्त पताल येकईस व्रंह्मांड ॥
सहज सुन्य मैं कीन्ह ठेकाना । काल निरंजन सव परधाना ॥
पुर्स नाम को चीन्हे मीटावै । . . . . ॥
सत जुग ऐसै चली गेउ । पुरूस वीवाद येक चित मेटेउ ॥

:o: :o: :o:

धर्मदाश उवचन

येह सुनी धर्मदास हर्षाने । धन्य भागि हम दरसन दीने ॥
काल चरीत्र सकल हम जाना । पुरूस लीला सभै पहिचाना ॥
अव तुम प्रगट भयो मोहि आई । हंशन काज कीहे उत आई ॥

इति श्री ग्रंथ सम्पूर्ण कव्विर साहेव और निरंजन ग्यान गुप्टि सम्पूर्णम् ॥ जो प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते ॥

:o: :o: :o:

अथ आगे भजन निर्गुन वांनी ।
करू चलने का साज या दम नांहि भरोसा है ।
येहि जग मे कोइ रहन न पावै एहि निश्चै करि मानो ॥ १ ॥

अंत—

तव पींजरा से निकली जायगा पल में पछी पवन ॥ २ ॥
उठत वैठत सोवत जागत करु सतगुरू को ध्यान ॥ ३ ॥
व्रह्म अखंडित सम घट पूरन जीवन कास समान ॥ ४ ॥
कहै "कव्वीर" सुनौ भाई साधौ पायो पद नीर्वान ॥ ५ ॥

:o: :o: :o:

॥ सव्द ॥

सव्द रग झीना झीना है ॥टेक॥ कोई जानै सन्त परवीना ॥
उठत लहरी रंग राग उपजत वहुरे वाउ वहु वीना ।
उलटघाट टकसार परषी ले समर सव्द लीष लीन्हा हो ॥ २ ॥
चलत पपील विहगम मारग सहज सुन्य लषि लीन्हा ।
चौदह तवक अकह कै आगे वैठा पुर्श परवीना हो ॥ ३ ॥
पूर्श वीदेंह देंह धरि प्रगटे नटवर कान्हैन चीन्हा हो ।
कही "कव्विर" सुनो भाई साधौ हंश वीमल सुष लीन्हा हो ॥

इति श्री कव्विर नीरंजन ग्यान गुष्टि श्री [illegible] मगल [illegible] देहला सम्पूर्ण जो प्रति देषा सो लीषा मम दोष न दीयते ॥ सम्वत् [illegible] नाम १९०८ मिति माघ सुदि ८ गुरु वासरे [illegible] प्रयागदत्त सन्त वीरपुर ग्रामे सुभ अस्थाने शुभम् ॥

विषय—निर्गुण सिद्धांत और भक्ति विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में कबीर निरंजन गोष्टी और [illegible], [illegible], मगल तथा देहला नामक रचनाएँ निपिबद्ध हैं । 'शब्द और [illegible]' आदि में [illegible] रचनाएँ मिली हैं, जो बहुत थोड़ी हैं ।

प्रथम, ग्रंथ के रचयिता के संबंध में ठीक ठीक पता नहीं चलता । [illegible] गोष्टी एव धर्मदास कबीर गोष्टी आदि रचनाओं को देखते हुए इनका रचयिता भी कबीर ही मान लिया गया है । परंतु इसमें संदेह नहीं कि इस प्रकार की रचनाएँ कबीर की नहीं हैं । कबीर परंपरा में से ही किसी ने इनकी रचना की है ।

रचनाकाल किसी में नहीं है । लिपिकाल संवत् १९०८ वि० दिया है ।

संख्या ३२ ग. ज्ञान सागर, रचयिता—कबीरदास, कागज—देशी, पत्र—१०३, आकार—११$\frac{5}{16}$ × ४$\frac{9}{16}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४०, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], ग्राम–[illegible], पोस्ट–हंडिया, जिला–इलाहाबाद ।

आदि—कबीर साहब धनी धरम दास ॥

॥ गरथ ग्यान सागर ॥

॥ सोरठा ॥

सती नाम न सार बुझोहु सत बीबेक करी ।
जेही ते उतरहु भव जलपार सतगुर को उपदेस है ॥
संत गुरु दीनदयाल सुमीरहु मन चीत एक करी ।
छोरनि सर्क काल अगम सब्द परवान इमी ॥
वंदी गुरपद कंज वंदी छोर देआल प्रभु ।
तु चरन कमल रज देत सार जो मुकुती फल ॥

॥ चौपाई ॥

मुकुती भेद मैं कहौं बीचारा । जाकहु नाही जानै संसारा ॥
बहुत आनंद होत तेही ठाउ । सर्त रहति अमरपुर गाउ ॥
जहवा रोग सोग नही होइ । तहवा के गए अटल से होइ ॥
नहीं संसार देषै फिरी सोई । जहवा जुरा मरन नही होई ॥

:o: :o: :o:

अंत—

॥ दोहा ॥

ता मधे चतुरा जो होवे पहीले करै उपाए ।
दुसमन सो मीली रहै अंतह बदी बीहाए ॥

॥ चौपाई ॥

सुसमन मीलन को इहै उपाई ।
प्रीही भाव रहै जस भाई ॥

—अपूर्ण

विषय—निरगुन सिद्धांत का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत से खंडित है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । ग्रंथ कबीर और धर्मदास के प्रश्नोत्तर के रूप में लिखा गया है । इसलिये कबीर को रचयिता मान लिया ।

संख्या ३२ घ. चिंतामनि, रचयिता—कबीर, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—$८\frac{६}{१०} \times ४\frac{३}{१०}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८८४, प्राप्ति स्थान—पंडित रामचरित्र दुबे, ग्राम—अमदेवा, पोस्ट—सेमरी महमूदपुर, जिला—सुलतानपुर ।

आदि—.................. वान । मोहे उलट कसक मान ॥
परवत छिपे दरिया जान । करले त्रिवेनी असनान ॥
सहजय परस पद निर्वान । तेरे मिटे आवा जान ॥
जामे जेव के बाजार । सरवर होइ दो पाहार ॥
जामे वडा कुदरत झार । वाकि जोति अग्र अपार ॥
लागेनो लाप तार फूल । करनि कूट जरिया मूल ॥ ३ ॥
जाका देष ना न भूल ।
माया भरम की कांची । अंतर देष ना सांची ॥
निपजे निरवन मोती । चन्दा सूर्ज की जोती ॥
झलके झलमलाट न्यारी । जाकी अलपै है कारी ॥
है गुंजार की क्यारी । मानो प्रेम ते डारि ॥
गंगुरा अरसते डारा ।
ताला भ्रम का षोला । दिपक नाम का जोहा ॥
योगी जुगत सो जीवे । प्याला प्रेम का पीवै ॥
मोहो पिलाव को दीजे । तनमन वारना कीजै ॥
परिहै प्रेम की फासी । मनवा गगन का वासी ॥
नरमन वारना की जै ।
पारिमता हंस हे राजा । सहज पल कहि कीजे ॥
अंदर राम को दीजे ।
भोरा सगुन का प्यासा । किआ हे कमल मे वासा ॥
वाका चोल ताहे ताल । उनमुन भरे जरद मताल ॥
तन मन सोभी दिया सीस । साहव वसे नेनो वीच ॥
उतर श्याम घन आए । वादर गगन मे छाए ॥
इमर्त वुंदं झरी लाए । जहा दोउ नेन ललिचाए ॥
अजव दीदार को पाए । दरिआव सहज मे न्हाये ॥
दरियाउ उलट उमगा नीर । जा विधि चलै चौसठ तिर ॥
हंसा जाय वैठा तिर । निस दिन चुगे मोहवत हिर ॥
पिया है प्रेम का प्याला । नहि है नेम से न्यारा ॥
कीया है सुरत विन सनेह । विना वादर वरसे मेह ॥
वृध मृत तहि काल । त्रिकुटि सहित पलकें लाल ॥
तन मन पिउ से लागा । संसा भ्रम का भागा ॥

अंत—तन मन लागा चरनो पागा । जो लगि घटा पिंजर पास ॥
चितामनि चितवन वास । जा विधि लिपेगे को उदास ॥
कहत "कविर" उन्हद का पेल । जहा अलप घर का मेल ॥
राम नैन मे रमि रहे मरम न जाने कोइ ।
जाको सतगुरु भेटिया जाको मोहीरम होइ ॥
जोति अषड भलमले विन वाति विन तेन ।
साध पेहेचाने सव्द उलट पथ का पेन ॥
झडा रोप्या सेव का दोउ परवत के सध ।
साधु पेले नट कला वृत वध ॥

इति श्री कविर जी की चितामनि सपुर्ण ॥ सुभमसतु ॥ लिखत श्री अयोध्या जिन
ा द्वार मधे श्री बड़े विदेहि जिके स्थान मे ॥ सवत् १८८४ ॥

—खंडित

विषय—ज्ञानापदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के केवल तीन पत्रे थे जिनमें से दो पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८८४ वि० है ।
रचयिता का नाम कवीर है ।

संख्या ३२ ड. वसीस्ट वोध, रचयिता—कवीर (?), कागज—देशी, पत्र—६६, आकार—८$\frac{५}{१०}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२१, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण) । पद्य । लिपि—कैथी । प्राप्तिस्थान—राजा नागरीप्रचारिणी सभा (दाता—श्री जेवनारायण राय, ग्राम-अवथही, पो०-कुडसर, जि०-गाजीपुर)

आदि— सतनाम

सत सुकीरीत अदी अदली अजर अचीत पुरुस मुनी दरवर नामे कवीर सुरती जोग ाएन धनी धरमध दास दुरामनी नाम परमोध नाम गुरवाला परिनाम पेचल नाम अमोल ा सुरती सने वेहे ने हा नाम हका नाम पका नाम परगट नाम साहेव चारो गुरु वस कोलीन को ा सो लीखते श्री गरथ श्री गुरु कवीर सतनाम साहेव अस्टवस्टी मुनी को दोहा अरभ

अजर अमर अभे पुरुख अवगिती अगम अपार
कहे कवीरवक जाना मनोभक्त मतीरवर :
जग मूल वो आना के सो जगमुल लखे ना कोइ
कहे कवीर भे काल को वरनी पहे पुनी सोए

—चौपाई—

राव वं के ज सुने उपदेशा करमो जीव काल को भेसा
गुरु वसीष्ट जो राम के नेहा उसे वुझे सवद सनेहा
तुम वसीस्ट जो रीक्षीन के राउ मो से ना दोलहु ततवा भाउ
मोसे भेद धरो जनी गोई कैसे मुकुती जीवन के होइ
:o: :o: :o:

—दोहा—(पत्र २)

ा मुकुती मन मे करे रावन मलवा लीन्ह सो वसीस्ट तुम भाखहु वात दगा हम कीन्ह
:o: :o: :o:

(पत्र ३)

नीरप हरीचंद सत जुग में राजा वोह नीत करत सत के काजा
ताके छले काल कीमी आवा कहु केही अँगुन सत छोड़ावा

:o: :o: :o:

(पत्र १०)

न्ही उतपती नहीं परले न्ही आवें न्हो जान नहीं साचा सँवसार कीन्ही जीवन के खान
सुनु वसीस्ट अब ततु पसारा तीनी गुनन को भेद नीनारा
अकास ततु जो सुनावा सरूपा ताके देहु निरंजन रूपा

:o: :o: :o:

(पत्र ११)

धोखे जाऊं धोखे जाऊँ धरम राए दरवार
नीरगुन खोज वस्टी अव मानो वचन हमार

—चौपाई—

ए साहेब तुम सत बखानी कहे वचन तु अकथ कहानी
ए कवीर तु अपरपारा तुम्हरे भेद सभन ते न्यारा

:o: :o: :o:

नीरगुन कथा मोही समुझावा को नीरगुन जग मे पुर्नी आवा
को नीरगुन जो लोक रहावा को नीरगुन सरगुन मे आवा
अव तुम कहो पुरूख को चीन्हा केही वीधी जीत नीरंजन कीन्हा
कैसे रचा काल असथूला ताको भेद कहो नीज मूला

:o: :o: :o:

अंत—उठ वसीष्ट कर जोरी के। राहे चरन लपटाव
नीरगुन अजर अमर कथा। मो प्र कवि ना जाव

कवीर उवचन—चौपाई

सुनु वसीस्ट मदमती हाना अवहु न्ही मुकुती पद चीन्हा
तेज हीन काग आपके रीती केहि वं.धी होए संहंसा संग प्रीती
जो कहु पुत हंसा गती पावा तव खोजी वाना फसी लावा

—दोहा—

एतनी कथा जनाव, के फोरी भे अन्तर्ध्यान
गे कवीर सतलोक के तव वसीप्ट पछीतान

—चौपाई—

..............................(अपाठ्य)

आ पत्र देखा तय उतारी भुक्ता चुका संमारी वाचो लेनी साधु संत सो विनती

—दोहा—

दुआदस पथ चलाइ के गढ़वाचो असथान
कवीरहं पथ है कल के कहेहो कवीर वखान
गुरू साहेव को दंडवती पहुँचे सकल साधु को दंडवती
.................................।

:o: :o: :o:

विषय—कबीर तथा वशिष्ट का वादविवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। इसमें कुल उनहत्तर पत्रे हैं। इसके साथ ही हस्तलेख मे "सुक्रीत ध्यान" तथा "मुलग्यान" दो ग्रथ और है। कहीं कहीं बीच के पत्रे भी टूट गए हैं और बहुत से स्थलो पर अक्षर भी मिट गए है।

रचयिता का नाम भी स्पष्ट नही है। परन्तु अनेक स्थानो पर कबीर शब्द के रूप मे आते हैं। इस आधार पर "कबीर" को ही रचयिता माना है। रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही। परतु इसी के साथ लिपिबद्ध "सुक्रीतध्यान" मे "समत पदरहसै बोनइस १५१९" स्पष्ट लिखा है। सभव है, यही रचनाकाल हो।

प्रस्तुत ग्रथ मे कबीरदास ने गुरु वशिष्ट से बहुत से प्रश्न किए, जैसे—यदि रामचन्द्र ईश्वर थे तो उन्हें वनवास क्यो हुआ? राजा हरिश्चन्द्र जैसे सत्यवादी को कष्ट क्यो दिया गया? आदि। इस प्रकार कबीर ने सगुण को मिथ्या बतलाया और निर्गुण की उपासना ही से मोक्ष की प्राप्ति बतलाई। साथ ही "नाम" "सबद" को अमृत का घूंट बताया। अत मे कबीर अतर्ध्यान हो गए और वशिष्ट जी पश्चात्ताप करते रह गए।

ग्रथ की भाषा सरल तथा सुबोध है। सपूर्ण ग्रथ पद्य मे है। लिपि अस्पष्ट सी है। पढने मे बडी कठिनाई होती है। देखने मे ग्रथ की प्रति बहुत प्राचीन विदित होती है।

संख्या ३२ च. मूलग्यान, रचयिता—कबीर (?), कागज—देशी, पत्र—२४, आकार—८६/१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा (दाता—श्री जेवनारायण राय, ग्राम-अवथही, पो०-कुटेसर, जि०-गाजीपुर।

आदि— सतनाम

सत सुक्रीत आदी अदली ॥ अजर अचीत ॥ पुरुस मुनीदर करुना मे कबीर ॥ सुरती संराएन संजोग धनी धरम दास ॥ चुरामनी नाम ॥ सुदरसन नाम ॥ कुलपती नाम ॥ गुरबाला तीरनाम ॥ परमोध नाम ॥ कवल नाम ॥ अमोल नाम ॥ सुरती सनेही नाम ॥ हका नाम ॥ पंका नाम ॥ परगट नाम ॥ धीरीजानाम ॥ साहेब गुर बस मध्योलोग को दया सो लीते अ गरंथ मुलग्यान ॥

॥ चौपाई ॥

मुलमंत्र धरमनी साचा जेहीते जीवकाल सो बाचा
आदी नाम बुझे जो कोइ जरा मरन रही तापर मोइ
नी अछरवोह अक्षर के अपारा अछर सारा छद है भाइ
जंभु राजा तेही देखो डेराइ
जब लगी सारा स्वद नहीं पावं काल फास फंसे मुकुतावं
:o: :o: :o:

—साखी—

(पत्र २) केतीक पंडित लीखी मुए। अवरी मुए पुनी गाए
कहे कबीर अछर बीना। जीव परले तरी जाए

—चौपाई—

धरमदास मैं तुम्हें बुझावो सारा स्वद नीज भेद बतावो
मुलही राही पुनी रोक संधि.वं ८८ड करे पुनी मुल म दावं

—साखी—

(पत्र ३) धनी भाग जो जीवका । जो पावे टकसार
कहे कवीर जो अछर पावे । सो पुनी जीव हमार

—चौपाई—

धरम दास कहे सुनो गोसाइ अछर मुल सवद केही ठाइ
तुम तो दआवंत है गोसाइ कहो आगम कछु अंत्र जाइ

—सत कवीर वचन—

धरम दास मैं तुम्हें वुझावो स्ता स्वाद के भेद वतावो
तवन्ही होत जग कर भाउ तव नहीं पुहुप दीप नीरमाउ
:o: :o: :o:
खोजी वं होए स्वद का । जन कहावो सोइ
कहे कवीर जो अच्छर पावै अटल हीरा व होइ
सारा स्वद का एही वड़ाइ । जंमु राजा तेहीं देखी डेराइ
जव लगी सारा स्वद ना होइ । जंमु सो वाचे कैसे सोइ
:o: :o: :o:

अंत—

—साखी—

सख मासु जो खाही ॥ जल का कीन्ह नीरास
जंमु घ्र पार ना पावा । सतगुरू कहे कवीर

—छाप—

मोरे जीव के एहमता देउ सीख क सीख राह चलाउ
साधु संत का सेवा ठाने सत सुमति जाके घंट आवा
सेवा साधु मुकुती तो पावा

—साखी —

सेवा करे साधु का ॥ आपनी अंग वचाए
लेखा लेइ मुलका ॥ कहे कवीर समुझाए

—छाप—

आएती मुलग्यान गरथ संमपुरन हुआ सम पत्र जो देखा सो लीखा।....।
:o: :o: :o: :o:

विषय—सत मतानुमार "शब्द" का महत्व वर्णन । "कबीरदास" का धर्मदास को उप-देश करना ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। इसमे कुल चौबीस पन्ने हैं। रचयिता कबीरदास विदित होते हैं। रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है। इस ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे "वशिष्ठ बोध" तथा "सुक्रीत ध्यान" दो ग्रथ और है। "सुक्रीत ध्यान" मे एक स्थान पर सवत् पन्द्रह सै वोनइस १५१९ स्पष्ट लिखा है। पता नही, यह रचनाकाल है या लिपिकाल। प्रस्तुत ग्रथ की प्रति मे रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नही है।

ग्रथ मे कबीरदास जी ने धरमदास को "अक्कर" तथा "शब्द" की महत्ता वतलायी है। यह भी कहा है कि विना "शब्द" ज्ञान के भवसागर पार करना दुष्कर है। धरमदास की अनेक शकाओ का समाधान किया है।

संख्या ३२ छ. मूलबानी, रचयिता—कबीर, भाषा—देशी, पत्र—११, आकार—७१/२ × ५ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री गंगा० रामगण राय जी, मुर्दा-मठयांव, डाक०—जहांनागंज, गोठ, जिला—आजमगढ़।

आदि—सतनाम साहेव कबीरधरमदास की दाया ते चरनगुरु देवव्यास की दाया ते कथा मुलावानी प्रथम ही पुरुष घं अहीऊ।

तदीन वोल वनी नही व्यहरहेऊ। नीरालम्हा पुरुष एक रहेऊ॥
ताते पुरुस होते नाहि छाग्रा। तव कछु वोल वायव नही रोमाया॥
तव नाही 'लोक दोया को वानी। तव नाही ग्रान होन वोढ़ ग्यानी॥
तव नही मामतो कछुव को छूरा। तव नाही वेगा वन्ने पारा॥
तव नाही अत्र पुरुस वोवेपा। तव नाही हरिंद मा वठ वलेपा॥
तव नाही आमी आगा की पानी। तव नाही सहजा गुता अवग्यानी॥

:o: :o: .o:

अंत—पुनी सो पदाका कहो वपाना। जहा पुरुस जाइ जे माना॥
आपन जाइ गुपत होइ रहाइ। होइया मवल नीरमाइ॥
एहा वैठीग्रा ग्रंथ मो कहाइ। तव पंथी रहे न्यारा॥

इति कथा मूलावानी स्मपुरन साधु संतना को वदगी दंडवता भुल चूक लेव सव जोरी दासपत लीषाहे हरीदास कै॥

विषय—कबीर का धर्मदास को उपदेश करना।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है। प्रस्तुत रचना भी कबीर पंथी रचनाओं के ही सदृश है। इसमें कबीर द्वारा धर्मदास को उपदेश दिया गया है। इसलिये यह कबीर की रचना मानी गई है।

प्रस्तुत रचना "आतम अग्रातम" तथा 'हनुमत बोध' के साथ एक हस्तलेख में है।

संख्या ३२ ज. मुक्त ध्यान, रचयिता—कबीर (?), भाषा—देशी, पत्र—६१, आकार—८३/४ × ६ इञ्च, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—श्री जेवनारायण राय, ग्राम-अवथही, पो०—दूल्हपुर, जिला—गाजीपुर)।

आदि— सतनाम

..............................।

लीखते थी गरव मुक्रीत ध्यान

—चौपाई—

वहुत देवस सुन चली गेउ तवही पुरुस ग्यानीह बराउ
अंग सो वानी पुहुप नोघीमा वो ही जानी पुनी ग्यानी उठी धाए तवही
दुनो कर जोरी के मीनती लाया पीनो कारने मोही पुरस वोलाया
तवही पुरुस वोले अंसे वानी वोही सव रार जाए तुम ग्यानी
कीहो कारन वोही सुधी विसारा जीव दुखीत है वोही सव मारा
तव ग्यानी उठी मीनती कीन्हा पुरुस वचन सीर उपर लीन्हा

भवसागर में काल है राजा वो ही सब सार मोर नाही काजा
ब्राम्हा वीसुन महेसर देवा सभ जग करत तासु की सेवा
:o: :o: :o:
वोही मी रीत लोक पगु ठलहु जाइ वाला रूप होहु देहु देखाइ
घर घर सबसे भाखो ग्याना चीन्ही रे नरन पुरुख पुराना
:o: :o: :o:

(पत्र ४) —साखी—

कहे पुरुस सुक्रीत सुनो ॥ तुमरे सरि न रखवार
जीवन पार उपारहु ॥ तुम नीजु वंश हमार
करी प्रनाम पुरुष को ॥ मोही प्र सदा सहाए
पलह कोन्ही लागे ॥ भवमे पहुचे आए

—चौपाई—

सुक्रीत घंट मे कीन्हा वीचारा अव हम के करेगी पगुढारा
चारो वरन मैं खोजेउ जाइ करे भगति सभ कपट चतुराइ
घर मे वात करे जोलहा माइ एक देवस ताहा राहा हम जाइ
एक देवस ताहा कीएउ वासा एहु घंट नही स्वद बीसवासा
:o: :o: :o:

(पत्र ७) जो तो देखी सभ वीवरन भाखा नाम जुवा वन वीधी सो राखा
समत् पदरह सै वोनइस १५१९ कातीक सुकुल पछी दुतीआ सांतु रुप नीअर सुदर तन होइ
वाल पुरुख सो मरदे सोइ पाच मास ले सुधी रहाइ पुरुस ध्यान मे रहा समाइ
दीछा पाए छठए मासा तवही काल तन कीन्ह आसा

अंत— —साखी—

सत लोक के हंसा सुनो । वीखी कटहारी मती खाहु ॥
सीघ के वाना वाधी के ॥ कछ दीप जनी जाहु ॥

कछदीप जाइके फेरी पाछे पछिताए ॥ आपन पुजीहारी के अंत चले वीगोइ ॥ अंग गही नहीं जात हैं दरपन मेरे मुल पुजावो ॥

तव दीपक दो जाइके ॥ उलटी जो आप को गही आवो ॥
अतमोहे अक्रीत सदा ॥ दीह की आवहु रूप ॥
जैसे दीप परगास होए ॥ वोले जुआरी अनुप ॥
क्रीअकुत जो वहु वीधी ॥ ग्यान दीरीस्टी जेही नाही ॥
अथ चला मघु जात है ॥ परे कुप के माही ॥
जेया आधा के कंध परे ॥ वाघ होत असवार ॥
ग्यान कीरीआ दोउ मीलै ॥ तवही होए नसतार ॥
कीरीआ भगती गुरु भगती है ॥ अवरी क्रीया भरम जाल ॥
ग्यानी दीरीस्टी देखो भला ॥ सत गुरु पद पर मील ॥
सभ जग कली ततु अरु क्रीवीखी ॥ राजा तेजी तप जो जान ॥
अनंह वंदा परमानंद तंतु ॥ वोधे रूप वीना ग्यान ॥
अत्ते वो गौवे वीखी वैराग एह ॥ जाथल वीखी से नेह ॥
एही सव ग्रथ को मान है ॥ मन माने सो करीहे ॥

विपय—संत मतानुसार ध्यान एव ज्ञान की आवश्यकता तथा उसकी महत्ता ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है। कुछ [illegible] है। [illegible] है। रचयिता कबीरदास प्रतीत होते हैं। [illegible] एक स्थान पर संवत् १५१९ आता है। यह स्पष्ट नहीं होता [illegible]।

प्रस्तुत ग्रंथ में ध्यान एवं ज्ञान की महत्ता [illegible] कि बिना क्रिया के ज्ञान कठिन है। क्रियाशक्ति गुरुभक्ति है। [illegible] संसार सागर पार करने के लिये ज्ञान एवं क्रिया दोनों का योग आवश्यक है। [illegible] संसार के कल्याणार्थ प्रथम ज्ञान और पीछे मुक्ति [illegible] में [illegible]। ज्ञान [illegible] लोक से इसलिए भाग चला कि यहाँ के निवासी ब्रह्मा, विष्णु एवं [illegible] नाना प्रकार के धोखा संसार में हैं। पश्चात् मुक्ति आए। [illegible] कर देखा। अंत में एक भक्त के यहाँ बालक रूप में प्रगट हुए आदि।

ग्रंथ की लिपि अस्पष्ट कैथी है। संत साहित्य की दृष्टि से रचना उत्तम है। प्राचीनता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

संख्या ३२ क. हनुमत बोध, रचयिता—कबीर, कागज—[illegible], पत्र—३४, आकार—$7\frac{3}{4} \times 5$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], रूप—जीर्णशीर्ण, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible], कुआ-सठयाँव, डाक०—जहाँनागंज, जिला—आजमगढ़।

आदि—सत सकीत आदि अदली.. पुरुषमुनींद्र करनामैं कबीर मुनिंद्र जोग सतएन ......ग्रंथ हनुमान बोध धरमदास वचन

धरमदास विनवैं करजोरी। तुम समरथ हो बंदी छोरी॥
जुगन जुगन से तुम चलि आए। आदि अंत की खबर लगाए॥
एक दया तुम करो गुसाईं। हनुमता की कथ मिलहु ..॥
हनुमत केर ऐहि अभिमाना। कैसे लीन्ह सहज . ..॥
:o: :o: :o:

अंत—प्रभु जी या चरन लागे धाए वीर हनुमतो बोधि के। लंऐ दीए पन परसाद। संवसार बीदुरायो नारदा नही पया आदी हो॥

॥ साषी ॥

नहीं पया आदि सो सीव ब्रभा नही नारदा।
तुम्हारे बदान नीहोरो के धरमदास बदना करे॥

इति हनुमान बोध ग्रंथ संपुरन = भुल चुका सधु न सतार [illegible] सब जोरी = हरीदास कौ लिषा है दासपत ग्रंथा हारीदास [illegible]

विषय—कबीरदास जी द्वारा हनुमान को ज्ञानोपदेश दिया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल भी [illegible] है। [illegible] जीर्णावस्था में है।

रचयिता का नाम कहीं नहीं दिया है। [illegible] लिखा गया है। जिससे कबीर को ही रचयिता मान लिया गया है। [illegible] रूप को देखकर यह कबीर का ग्रंथ नहीं जँचता। कबीर के नाम से [illegible] किसी ने यह ग्रंथ रचा होगा, ऐसा जान पड़ता है।

यह आश्चर्य की बात है कि कबीर द्वारा हनुमान को उपदेश दिया गया [illegible]। [illegible] समय का अंतर दो युगों का है। हो सकता है कि हनुमान को अमर [illegible]

उनकी भेंट हो जाने की कल्पना कर ली गई हो। परतु यदि हनुमान का अर्थ आध्यात्मिक हो तो असभव नहीं।

प्रस्तुत ग्रथ निम्नलिखित ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है —

१. अनुराग सागर	कबीर
२ आतम प्रआतम	,,
३. मूल वानी	,,
४. चारो जुग के आरवल	,,

संख्या ३३. दधि लीला, रचयिता—करताराम, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—६$\frac{३}{१०}$ × ४$\frac{१}{१०}$, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, स्थान—ददन सदन, पोस्ट–अमेठी (ई० आइ० आर०), जिला–सुलतानपुर (अवध)

आदि— श्री गणेशाय नम.

प्रात क्रिया करि मज्जन कै द्रिग अंजन पजन रूप बनैए।
आजु चले दधि विकन (?) री सगरी बृज मडल माह जनैए।
मोद करै सुनि गोपवधू आजु होत विनोद माह सुष पैए।
साजहु अग सवारहु भूषन वेगि चलो मथुरा पुर जैए॥

:o: :o: :o:

वेशरियो झुलनी झमके झहराति वुलाक जवै सिर डोलै।
तामह मोती ढुरै अधरोपर सुक्र मही सुत होत कलोलै।
दंतन मो तडिता चम (१ के) जव भाग भरी हसि भामिनि बोलै॥
ईहेरी की धरता करता कवि कान्ह विना कवन घुघुट षोलै॥५॥

:o: :o: :o:

काहू तो वतीसा चौवीसा माल दही पेधे जिसमो कीदारी लगी हीरन की झालरी।
काहू तास वादलो की सारी सार सापु पेध्यौ जगमगात जरतारा मोतीन्ह की मालरी।
काहू तो पितांवरी पवित्र जानि पधि लीन्हो तापर जरित है जवाहिर की जालरी।
"करत राम" झम झमकति चली झनक मनक झंपति झरोषे लागि सुरपाल बालरी॥१०॥

:o: :o: :o:

अंत—

एक एक बानन्ह सहस्र वान तानि मारयो मोहे पंचवान बैठे झषै निज माथ धुनि।
जगत को लाज छुटो काहू को न मन पीर धीरकुल कानि सुनि।
मन मोहे पान मो न तान की तनि सुधि वसनन सभारं परै चरन जो चहत मुनि।
"करता राम" स्याम जी के सरन समानि सर्व वावरी भई है गोपी स्यावरे की वंसी सुनि॥४२॥

:o: :o: :o: :o:

कहु कदम की डार झुकि झुकि रहिहै।
मनो मेघ संदेस मोहे सोक कहिहै।
कहु तरु तमाले वनै विमल छवि छाही।
जहा तरुन को ताप तनिको न जाही॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—श्री कृष्ण और गोपियो की दधिलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। केवल आरंभ के १५ पत्र उपलब्ध हैं। [illegible] गए हैं।

रचनाकाल और लिपिकाल का भी कोई पता न चल सका।

रचयिता का नाम करताराम है जो जहाँ तहाँ कविता में दिया गया है।

रचना का नाम भी अविदित ही है, पर अनुमान से तथा विषय की दृष्टि से [illegible] नाम रख दिया गया है।

कविता की दृष्टि से रचना अच्छी है। परन्तु छंदों की मात्राओं में [illegible]।

संख्या ३५ शालिहोत्र, रचयिता—करताराम (निवासस्थान—[illegible]पुर), कागज—देसी, पत्र—१७, आकार—१० × ८, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—२८७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८५४ वि० (सन् १२०५), लिपिकाल—सं० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० [illegible] पाण्डेय, ग्राम—डहम, पो०—सैदपुर, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गणेशाय नम. ॥ कवित्त सवैया ॥

सिद्धि सदा निकटं प्रगटंन घटं नित ही दुख दारिद्र दहन
दुर्मति मोह महातम केर विवुद्धि प्रकाश के आनन वदन ॥
मगल मूल रहे अनुकुल सो शूल हरं हर गौरि के नदन
करता कवि जो करे ध्यान हिये त गणेश सहाय कलेश निकदन ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

सरकार गोरखपुरनो सिधुआ विमल दिग्यान
पावन पडरवना जानिये ज्यों निर मे जलजान
कवि चचरीक चतुर अनेक रमत पोषत लोग
सेवत सदा सुखो जह जग मह जानि भारी भोग

:o: :o :o

दय दान करि सन्मान हरि गुन मान को [illegible]
दुई मये धर्म सहाय तिनहु राय प्रताप नरेश

॥ दोहा ॥

सुख समेत सेवत तिन्हे कहिज कवि करताराम
बुद्धि विवेक अनेक लखि पावत मन विश्राम

:o: :o: :o:

राम विवेक वुद्धि सागर, दान विधान वुद्धि के आगर
वेद पान वसु भू सहित है सवत शुभ साज
कार्तिक वदि बुध षष्ठि पे [illegible] [illegible] के काज

:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

रावरजाय शीस पर राखो। सालिहोत्र भाषा कर भाखो
क्रिया सिन्धु सतन हितकारी। [illegible] दान दमन [illegible] भवहारी

:o: :o: :o:

अंत—

दोहा

डारपातफल सोस्युत अमित [illegible] [illegible]॥
पिंड बाधिये कारिके पोपरि हरदो सानि॥

वन भांटावरि आइ केरै दीजै मूर मिलाय ॥
त्रिफला तामह मेलि कै दीजै वोरी षियाय ॥७५॥
तामर ॥ ईश्वर कृपा जव कौ तव कुरकुरी कंह हरं ॥
धर वाजि का हयह व्याधि । जो सनपात असाधि ॥
यह काहीं सारग पानि ॥ कमला के रुचि पहिचानि ॥
यह पठत सहित विवेक ॥ तेहि होत वुद्धि अनेक ॥
गुन दोष हम जो कहै ॥ तव भूप के मन चहै ॥
पुस्तक रहै जेहि गेहि ॥ श्री वसत सहित सनेह ॥

इति श्री शालहोत्र भाषा संपूर्ण ॥ सवत—१९२३ फागुन

:o: :o: :o:

विषय—अश्वो की पहचान, उनके गुण दोषो का वर्णन। उनके रोग, निदान, औषधो का वर्णन। कमला के आग्रह पर हरि ने इसका वर्णन किया था।

रचनाकाल

४ ५ ८ १
वेद बान वसु भू सहित हे संवत् शुभ साच।
१२ ५
कार्तिक वदि वुध षष्टि के सन वारह सै पांच ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। समस्त सत्रह पत्रे है। रचयिता "द्विज कर्त्ताराम हैं"। इनका वासस्थान, सिधुआ ग्राम, तहसील—पडरौना, जिला—गोरखपुर मे था। राय प्रवल नरेश से इन्हें सनमान भी प्राप्त था। हो सकता है, राय प्रवल नरेश पडरौना नरेश ही हो, जो पहले "राय पद" से विभूषित थे। रचनाकाल स० १८५४ वि० (सन् १२०५ हि० ?) है। लिपिकाल स० १९२३ वि० दिया है।

ग्रथ मे घोडो का वर्णन हैं। उनके लक्षणो पर पूर्ण रूप से विवेचन किया गया है। साथ ही रोग और औषध आदि का भी वर्णन है।

समस्त ग्रथ दोहे चौपाइयो मे लिखा गया है। लिपि नागरी एव भाषा पूर्वी अवधी है।

संख्या ३६. सुदामा जी के सवैया, रचयिता—कल्याणदास, कागज—देसी, पत्र—८, आकार—$6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी ॥ अथि सुदामा जी की सवाईया लिषते ॥
राहिमहि राम रटै न घटै कदिहू मन माहि जू सोचि वहोरी ॥
साथ समापि विरंजन वैठी कै ॥ जिगहू दान तौ नाहि कियो जु ॥
मानस देह दीये की सोयम है ॥ सोउ, पीया हमते भये जु ॥
बोलि किलाए सुदामा की वाम्हनी ॥ कोन करी हरि की हम चोरी ॥ १ ॥
चोरी हू मोथे भई हरि की वड़ी ॥ जाय प्रतापते असेही डोलु ॥
इनहि जानत ऐगुन है ॥ लघु चूक परी दूष देवो मे कोलु ॥
भुलि गये तवही ते सवं सुधि ॥ काये जाय काहा कहै वोलु ॥
ताते कि लाए सुदामां यो सोचत ॥ पुटि परीक दुबा की है ओरू ॥ २ ॥

मध्य—

काहे कुकोम दियो महादेवन ।। काहे कुमर जैन बारो कन्हाई ।।
लाप के मदर भी वन नुषी कै ।। पावर वारन है तुग बागे ।।
लंका हूँ दगधि करी हनुमान नैं ।। सागर बुद्धो रिनीनि गुनाधी ।।
देखो तो ग्रंसे चली युग माहो भये ।। पनी पाय दन दूगान हैं जान्यो ।। ८ ।।

ग्रत—

सास फु वापि ग्रंमे सोचत है भारी दुज ।। द्वारिका पौहिंचे जाय ।।
देपे महेल नदलाल के ।। ग्रावन सुदामा देखो ।।
उठे हरि ग्रातुर सु ।। हरि कं मीले हैं ग्रन्न भागी नदलाल को ।।
भेट कं गवार दीनो हरि ग्रामन मूं ।। सुदगी कं पाय लागं मिगृ नाथ ।।
हरत सुदामा जी के पद प्रीति ।। पाई ग्राय पदत दिनाग प्रभु दर्शन गो
निहारयो ।।२०।।

विषय—सुदामा चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता, कल्याण दास का कोई वृत्त ज्ञात नहीं ।

संख्या ३६. बहुला लीला, रचयिता—कल्यानदास, कागज—देशी, पत्र—२, ग्राकार—८¾ × ५¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (ग्रनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—पुरातन, पद्य, लिपि,—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४८, प्राप्तिस्थान—ग्रार्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

ग्रादि—श्री गणेशाय नमः ।। ग्रथ गउ बहुला लीला लिख्यते ।।

कन कन भछिया जोरि विप्र एक सुरभी पारी ।
बछा वाको ग्रनाथ बहोत पाटे ग्रधिकारी ।
दूध दही घृत ग्रागरी बहुला वाको नाव ।
उठो नाथ भोजन करो दधि मापन वलि जाउ ।।
सुनो चित ध्यान दे ।। १ ।।
एक दीना एक धेन जाय गोमनी गोधारी ।
चरो कुज वन जाय जहा चारो ग्रधिकारी ।।
चरत न कोउ, बरजि है हिग है सीतल नीर ।
जेंर कछू दुष पाइहो तो हमकू दीज्यो गारि ।।
सुनो चित ध्यान दे ।। २ ।।

:o: :o: :o:

ग्रंत—मातासुत दोन्यो चले धनधंद कु धाये ।
वावन रामी गाय जहा केहरि मग ग्राये ।।
ग्ररीघेम कपि नासनो तुमेरो गुर होय ।
ग्राजि के वचन जु पार उतारे होन सपोगो सोहि ।।
सुनो चित ध्यान दे ।। ६ ।।
इतनो सत्य जु देखि कें पटये तुरत दिमार ।
सिघन छाडी बनी धेन विप्र नहीं छाडे ।
विप्रन्ही छांडे पुरी पुरी लिया लोक सिधाय ।
इतनी कथा सुनत ही ग्रावे सो भगवान ।
गऊ लीला बोहुला कथा गावे दास कल्यान ।।
सुनो चित ध्यान दे ।।१०।।

इति श्री बोहुला गउ की लीला संपूर्ण भरतपूर माधे लिषी सदा शिव भट्ट ।।

विषय—ग्रंथ मे वहुला नामक एक गाय और एक सिह की कथा वर्णित है। कथा इस-प्रकार है —

एक ब्राह्मण की वहुला नामक गाय थी। वह एक दिन गोमती के किनारे, जहाँ एक सिंह रहता था, चरने गई। सिंह ने गाय को देख लिया और मारने के लिये उसकी ओर झपटा। गाय ने सिंह से एक दिन का अवकाश माँगा ताकि वह अपने वछडे को जिसने, उस दिन दूध नही पिया था, दूध पिला आए। सिंह पहले तो सहमत नही हुआ, परतु गाय के वचन देने पर उसे जाने दिया।

वहुला अपने स्थान पर पहुँची और वछड़े को दूध पिलाया तथा उसे अच्छी तरह प्यार किया। पश्चात् सिंह के साथ हुई वार्ता सुनाई। यह सुनकर वछडा भी गाय के साथ सिंह के पास गया। सिंह ने माता पुत्र का प्रेम और गाय की सत्यप्रियता देख दोनो को प्राणदान दिया। इस घटना पर भगवान् भी प्रकट हुए और सवको मनोवाछित फल प्रदान किया।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है। लिपिकाल वीर भगत कृत "वृज की वाल-लीला" के आधार पर सवत् १८४८ है। दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे हैं और एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखे हुए हैं। रचयिता का नाम कल्यानदास है। और वृत्त नही मिलता।

संख्या ३७. रामविवाह (?), रचयिता—काकराम, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—९×४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१७६९ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दाता—प० सीताराम तिवारी, ग्राम–सिवौना, पो०–रामपुर, जि०–गाजीपुर)

आदि—सी राम ज

चलु सषि देषण सितराम कि चलु सखि॥
नराह विभुपित सुखमा धाम लोचन लाभ लहु लघु दाम॥
सुदरि सिता सुदर राम सुंदर राजा दसरथ वाम॥
सुदर जन गण देषन आय लुटहि लोभ ललित फल पाय॥ २॥
वालक नारू तरुण अति वुढ कौतुक करन कोविद मुढ॥
कणक थम्म रुचि सुभग वनायु कनक पत्र मणि मंडप आय॥ ३॥
हाटक वेदि हाटक भुमि कनक कलस कह साव रू घुमि॥
सदा पदा विधि कइल वनाय निगम संतव पहल सुनाय॥ ४॥
विविध विहित विधि राघुवर कीन्ह मुनि वसिप्ट तव आसिप दिन्ह॥
कौतुक मदिल दुलह राम दुलहिनि सिता सङ्ग जगाम॥ ५॥
आनन्द शागर मङ्गल मुल सेवक साधु सदा अनुकुल॥
देव नाग नर किन्नर नारि होहि कृतारथ निरषि खरारि॥ ६॥
कोस लेस कुल कमल निनेस मैथिलेस कुल कुमुद निसेस॥
सविता वंस सदंवुज सुर सीता सिद्धि मनोरथ पुर॥ ७॥

:o: :o: :o:

अंत— अधम उधारन रघुवर निति
पाइय ताकर परम पिरिति
गावहि सुंदरि सुद रू रि गिति
श्री रघुनन्दन मानस प्रिति॥
जो जण गावहि राम दिआह उत्तरहि संस्व सिंधे अथाह॥ ८॥

राम राम रघु राम गुनाम। पावन [illegible] ॥
कुटिल कुमति अति [illegible] । [illegible] ॥
"काक राम" एक ब्राह्मन अघ । [illegible] ॥

संवत् १७६६ मर्म अग्रहणबदि तृतीयाया चन्द्र वासरे

विषय—राग विचार वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। [illegible] । [illegible] । रचयिता "काक राम" हैं। आप एक अघ ब्राह्मण थे। [illegible] । रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सं० १७६६ वि० है। [illegible] मडपादि का वर्णन है। ग्रंथ की लिपि अशुद्ध है।

संख्या ३८. हरिनाथ विनोद, रचयिता—[illegible] (निवासस्थान—[illegible]), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०, खंडित, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १९१६ वि०, लिपिकाल—सं० १९१६ वि० (?), प्राप्ति स्थान—श्री पं० [illegible] पाठक, ग्राम—[illegible], डा०—केराकत, जिला—जौनपुर

आदि—श्री गणेशा......हरिनाथ...... । जयति [illegible] भूतेश्वर ॥ जयति सकल सुरवृंद जयति वरदायक सुरगुर ॥ कान्ह ध्यान [illegible] आनंदकरन ॥ पाठक श्री हरिनाथ को मगल अत मगल करन ॥ ......[illegible] जहाँ पाली सहर जरूर ॥ ४ ॥

मनीराम के वश मे कान्ह सुजान ॥
मनीराम के वश मे कान्ह सुजान । कीन्ही रचना ग्रंथ की [illegible] ॥ श्री विनेश भूपति भयो भू पर भान समान ॥ जिनकी कीरति [illegible] ॥ तिन करि कृपा कटाक्ष ये राखे छं गुनवत ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ दूजे कवि हरिनाथ को सब भूषण मन मानि ॥ . . .. ।

:o: :o: :o:

तिन्ह के हित यह कान्ह कवि रचो ग्रंथ सुखदाइ ॥
जो बाचै सीखै सुनै ताको मन [illegible] ॥ १२ ॥

:o: :o: :o:

१९ १६
संवत् उन्नीसे बहुरि ऊपर जुवति सिंगार ॥
कातिक सुदि एकादशी भयो ग्रंथ अवतार ॥ १७ ॥

:o: :o: :o:

नायक लक्षन ॥ मोतीदाम छंद ॥
कही पहिले सुचि सील सुभाइ ॥ उदार [illegible] ॥
जुवा सब केलि कलान प्रवीन ॥ [illegible] ॥

:o: :o: :o:

अंत—इति श्री सकल गुन [illegible] भवद जो तम स्वयंवर सुवन [illegible] परमार्थ स्वारथानुरक्त [illegible] हरिनाथ विनोदे [illegible] नाम द्वितीयोध्याय ॥ ॥ २ परकीया दोहा ॥

गुप्त प्रीति जो तिय करै पर पुरुषहि अनुमानि ॥
सो परकीया जानियै कवि कुल करत वषान ॥

:o: :o: :o:

रितु वर्नन तथा वर्षा ॥ कवित ॥ सवैया ॥
वरसै सम जात घरी पलहू न वियोग विथा सरसै ॥
सरसै अषियान ते नीर प्रवाह कराहि कराहि हिये करसै ॥
करसै न वसात कछू वसरी कवि "कान्ह" सुजान विना परसै ॥
परसै तन सौं तनहाय दई घन घोर घमंड घने वरसै ॥१८॥

पुनः
मन मे मनमोहन रुप वस्यौं धरियै किमि धीर जुवापन मैं ॥
पन मैं कवि कान्ह जू................ ।

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥
भेद महित विस्तार ह्यां ग्रंथ वढ़न के काज ॥
कहे लघु कान्ह जू लषि लीजौं कविराज ॥१५
प्राची दिशि प्राची नगर अलवर गढ़ सुभ स्थान ॥

:o: :o: :o:

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल
संवत् उन्नीसे वहुरि ऊपर जुवति सिंगार ॥
कातिक सुदि एकादशी भयो ग्रंथ अवतार ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है। समस्त सोलह पत्ने हैं। रचनाकाल स० १६१६ वि० है। लिपिकाल अज्ञात है। परतु लिपिकाल भी उसी के समकाल है। प० हरिनाथ जी के वशजो के ही यहाँ यह प्रति प्राप्त हुई है। रचयिता "कवि कान्ह" हैं। आप "पाली सहर" वासी, "मनीराम" के वश मे थे। आप अलवर नरेश के दरवार मे रहा करते थे। नरेश के छह गुणी व्यक्तियो मे से एक आप ही थे। और कोई परिचय नही मिलता।

प्रस्तुत ग्रथ आद्योपात पद्य मे लिखा गया है। नायिका भेद वर्णन इसका प्रधान विषय है।

संख्या ३६ विहारी सतसई (गोवर्धन सतसैया को सार), रचयिता—कान्ह और व्यास, कागज—देसी, पत्न—८५, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—८७७, रुप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७८७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—ॐ स्वस्ति ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वि...तसई लिप्यते ॥ गोवर्द्धन सत सै(या) कौ सारि कीया ॥ कवि श्री राधिका जी को...(? अस्तुति क)रतु है।

मेरीभव वाधा हरो राधा नागरी...(सोय)... ।
जा तन की झांइ परै स्याम हरित्त दुति...(होय) ॥

प्रभु की पिता की स्तुति
प्रगट भए द्विजराज कुल सुवस वसे वृज आय ।
मेरे हरो कलेस सव केसौ केसोराय ॥ २ ॥

अथ [illegible]

॥ अकारादि [illegible] ॥

अपने अंग के जानि कै [illegible] ।
स्तन मन नैन नितंब कौ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] नायक प्रति ॥

अर तैं टरत न बर परे [illegible] ।
होटा होटी बढ़ि [illegible] ॥ [illegible] ॥

:०: :०: [illegible]

अंत—नाइक नाइका मञ्या उपरि बैठि अथन [illegible] सु सपी सौ कहति है ॥

हँसि ओठनु बिच कर उचै [illegible] नैन ।
परे अरे पिय कैं पिया [illegible] ॥[illegible]॥

॥ अथ [illegible] कवि वचन ॥

हुकम पाइ जयसाहि [illegible] ।
करी बिहारी सतसया भरी [illegible] ॥[illegible]॥

॥ अथ पूरब पीठिका प्रबंध अकारादि [illegible] ॥

सरस [illegible] सतसया [illegible] ।
तिनका पूरब पीठि पन कीन्ही "[illegible]" ॥[illegible]॥
प्रथम अकारादि आदि दै अघर [illegible] ।
मसकत कर एकत्र कीये [illegible] ॥[illegible]॥
जाको जासौ वचन है [illegible] ।
जहा होइ [illegible] सुधारि सुजान ॥[illegible]॥

इति बिहारीदास सतसया सपूरन समाप्त ॥
संवत् १७८७ ॥ शुभ शुभ ॥
विषय—बिहारी सतसई का अकारादि क्रम से संपादन ।
विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है । [illegible]

सपादनकर्त्ताओं के नाम कान्ह और व्यास हैं । [illegible] वाले तथा कब वर्तमान थे । उन्होंने 'बिहारी सतसई' [illegible] गद्य मे दोहो का मर्म भी अत्यंत संक्षेप मे [illegible] दोहे है, जो अंत मे दिए है और जिनमे प्रस्तुत प्रमाण [illegible] ।

संख्या ४० क. वनतराज [illegible]—[illegible] ६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण ([illegible])—[illegible] प्राचीन, गद्य—पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति [illegible] ।

आदि—सिधि । श्री गणेशाय नमः ॥ श्री [illegible] ॥

श्री "[illegible]" [illegible] ॥

अथ [illegible] ॥

अस्वनी पस्त पहिरै [illegible] ॥
भरनी पस्त्र पहिरै [illegible] ॥

:०: :०: :०:

॥ अथ सगनौती का विचार ॥

तिनि कौडी डारै पासा की जुगुतिनि दाइ जै परै तै लिपति जाइ ॥
तेहि का परल देषि लेइ..................... ।

:o: :o: :o:

॥ अथ छोटा सगनौती का विचार ॥
छ कोठा वनाइकै जंत्र लियौ पुनि सोइ ॥
जौ की चाउर धरै औ ताको फल गनि लेइ ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ अथ सरवंग का विचार ॥

जात्रा करि होई नर जवही ॥ एते सगुन विचारै तवही ॥
वाए देखै जोगी जवही ॥ एकउ काज होइ ना तवही ॥

:o: :o: :o:

पीछे जोगी कारज हानि ॥ "कालदास भाषै मन जानि ॥"

:o: :o: :o:

विधवा नारी रोदन जो करै ॥ ताको सवदु कान मे परै ॥
एहि विधि ताको असगुन होइ ॥ जतन करै कछु काम न होइ ॥
"कालदास" भाषै पुनि सोइ ॥ एह सव खक कहाने गुन गाइ ॥

इति सरवंग का विचार समाप्तं । इति श्री कालदास विरचिते पोथी वसंतराज समाप्तं ॥

:o: :o: :o:

॥ अथ डुघरिया का विचार ॥

वारह महीना सात वार ॥
राति दिन का विचार ॥
.... (अपूर्ण)

:o: :o: :o:

विषय—सगुनादि का विचार वर्णन ।

वस्त्र पहनने का विचार, छोटी सगनौती का विचार, छीक का विचार, सात वार, आठो दिशाओ का विकार, यात्रा विचार, यात्रा औपध, कौआ विचार, छिपकली का विचार, गणिका विचार, स्त्री गर्भ विचार, श्यामा, सारस, महरि, कुरकुल, गरुड पक्षी आदि का विचार, निउला विचार, पडैया विचार, सरवग का विचार ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । समस्त तेरह पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है । ग्रथ देखने से प्राचीन प्रतीत होता है । रचयिता "कालिदास" हैं । परिचय नही मिलता ।

संख्या ४० ख. वसतराज, रचयिता—कालिदास, कागज—देसी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—३२" × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० रामदयाल जी तिवारी, ग्राम—संडवापर, पो०—करारी, जिला—इलाहावाद ।

आदि—...................

श्यामा पक्षी का विचार

जत्रा करी होइ नर जबही श्यामा बोले सुने पुनि [illegible] ॥
सन्मुख बोलें द्रव्य मिलावें । पीछे बोलें [illegible] [illegible] ॥
बाये बोलें कारजहानि । दहिने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
आगे बोलें छय होइ । "कालिदास" भाषा पुनि [illegible] ॥

इति श्यामा की विचार ॥

अथ [illegible] विचार

जात्रा करि नर होइ निदान । [illegible] [illegible] सुनें [illegible] [illegible] ॥
सन्मुख बोलें मित्र मिलावें । पीछे बोलें [illegible] [illegible] ॥
दहिने बोलें हानि करावें । बायें बोलें [illegible] मिलाव ।
आगें बोलें क्षय होई । "कालिदास" भाषा पुनि गाई ॥

:o: :o: :o:

अंत—अथ सर्प का विचार

जात्रा करि नर होइ निदान । पन्नग दृष्टि [illegible] [illegible] ॥
सन्मुख देखें मित्र मिलावें । दहिने देखें [illegible] [illegible] ॥
बाए देखें कारज हान । पीछे देखें अशुभ [illegible] ॥
उचे ते नीचे चलु सोई । जतन करें [illegible] [illegible] [illegible] ॥
माथ उठं पुनि देखें जबही । महा [illegible] पावें तबहीं ॥
"कालिदास" भाषा पुनिसोई । यह विचार पन्नग [illegible] [illegible] ॥

:o: :o: :o:

—सम्पूर्ण

विषय—पशु, पक्षी एवं सर्प आदि देखने से यात्रा में जो शुभाशुभ [illegible] [illegible] [illegible] वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। रचयिता का नाम कालिदास है। पता नहीं ये कौन कालिदास हैं। [illegible] [illegible] [illegible] मिलता।

संख्या ४१. भगवत् गीता, रचयिता—[illegible], [illegible], [illegible] आकार—६ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२ परिमाण (अनुष्टुप)—[illegible] रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ वि० प्राप्तिस्थान—पं० शिवदुलारे मिश्र, ग्राम- व पोस्ट-दारा नगर, जि०-इलाहाबाद

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भगवद्गीता लिख्यते ॥

॥ दोहरा ॥

धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत में मिले जुध के [illegible] ।
संजय कहे करते भए कुरु पाण्डवा [illegible] ॥ १ ॥
पाण्डव सेना व्यूह लखि दुर्जोधन [illegible] जाई ।
निज आचारज द्रोन सों बोल्यो [illegible] भाई ॥ २ ॥
पांडव सेना अति बडी [illegible] [illegible] [illegible] ।
धृष्टद्युम्न बुध शिष्य ने व्यूह रच्यो [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥

सूर धनुष धारी वड़े अर्जुन भीम समान ।
द्रुपद महारथ और पुनि है वैराट प्रधान ॥ ४ ॥
:०: :०: :०:

अंत—भक्ति वस्य श्रीकृष्ण जू यहै कियौ निरधार ।
करै भक्ति इक्ष्या सवै यहै वेद कौ सार ॥८२॥

इति श्री तत्सादिति श्री महाभारते सत सहस्त्र संहितायां वैयासिक्यायां भीषम पर्वनि श्री भगवद्गीता सूपनित्सु ब्रह्मविद्याया जोग सास्त्रे श्री कृष्ण अर्जुन सवादे मोक्षि संन्यास जोगो नाम अष्टदसो अध्याय ॥१८॥ सपूर्ण सम्मापता श्रवन करे पाठ करे मोक्षिफल दाता ॥ सुभं भवतु मंगलं भूयात् ॥ कार्तिक मासे कृस्ने पक्षे तिथौ ॥७॥ चंद्र वासरे तद्दिने संपूर्णम् ॥ सवत् ॥ १८६३ ॥ शाके १७२६ भद्रावती पुर्य्या ॥ श्री राम ॥

भारत कथायं समाप्ता ॥ अथा फल अस्तुति ॥
भगवत गीता संसकृत भवन ग्यान कौ आइ ।
कासी गिरि भाषा करचौ गुर प्रसाद ते आइ ॥ ५ ॥
छमीयौ दोष विचारि चित लघु दीरघ कौ सोधि ।
जथा वुद्धि प्रकृति करचौ जीव हेत करि मोधि ॥ ६ ॥
इति फल अस्तुति संपूर्न ॥

वांचने वारे घासीराम गूजर श्री श्री

विषय—भगवत् गीता का हिंदी मे पद्यानुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल सवत् १८६३ है । रचयिता का नाम कासीगिरि है । ग्रथात मे फल स्तुति के पश्चात् यह नाम दिया है । अन्य वृत्त नही मिलता ।

संख्या ४२. वियोग मालती, रचयिता—किसनलाल, कागज—देसी, पत्र—१०, आकार—११$\frac{3}{4}$ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—

मूरख छोटो गूरग बड़ो वूद्धीह मोय नाहि ॥
चाहत पहाड़ उडावन कोउ फूकन नू माहि ॥
॥ नृप महिमा ॥
राजा राजत नीत युत । राम सिह महाराज ।
प्रजा सुखारी राखते । करते सवके काज ॥
राखत राज प्राण सम । ममे जानता लोग ॥
सिरदारन सिरदार नृप हनत रिपन के लोग ॥ १ ॥
राज काज निज कर करत । माली करत जवाल ॥
दुष्टन को भेदन करै । कोउ न राखत...... ॥
तेजवंत रणवीर अति । सुभट सूर रणधी(र) ॥
ऐक २ रण मे हने । प्रजा नाह........ ॥

मध्य—

दुख देवे के कारणो । निर्मोही के लार ॥
व्याह विधारा कराकर । दीये दुख अपार ॥४८॥

जनमति ही विष ना दियो । ऐसी माता प्याय ॥
ऐसे दुख कारन ते । जननी मोरी धाय ॥४६॥
भाल कांति को देखि के । एका मान कलंक ॥
हिमकर बदलो नैन अब । यादिनि शरन निसंक ॥४८॥
प्रीति करी तो का भयो । रह्यो न मन की चैन ।
जो मैं ऐसी जानती । दुख देवैंगे नैन ॥५१॥

अंत—प्रेम कृष्ण मन तो बस्यो देखत है तो प्रोग ॥
नित२ उठ दरशन किये । निसि२ प्रेम बढ़ाय ॥
अब बौरेन के कहन ते । दिये कानन छिटिकाय ॥
वह दिन भूले ए सखी । बिन दरशन नहीं चैन ॥
पी दरशन देते नहीं । तरसत हैं ये नैन ॥
अब तुम काहू नहिं खातिहो । घूंघट मे न नैन ॥
भूख गई प्यासो गई । गई बात सब भूल ॥
तेरो ही मन है सदा । मेरो जीवन मूल ॥
मो मन प्यारो मोय को । यो मन प्यारो तोय ॥

विषय—वियोग प्रधान प्रेम कहानी का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ मे पहले नृप महिमा का वर्णन है । [illegible] है कि यह ग्रंथ भरतपुर नरेश, राजाराम सिंह के समय मे रचा गया था । रचयिता का नाम किशनलाल है जो जैन धर्मावलंबी थे । अन्य वृत्त ज्ञात नहीं होता ।

संख्या ३४. गीता भाषा टीका, रचयिता—किशोर दास, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—८½ × ५ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१० [illegible] रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय ([illegible]), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥

॥ दोहरा ॥

ॐ नमो कृष्ण केशव विष्णु वासुदेव [illegible] ।
आद पुरुष अक्षर पुरुष [illegible] पुरुष [illegible] ॥ १ ॥
जगत बन्धु जोति स्वरूप जियको जानन [illegible] ।
हरि जसु जाचन आइयो दास प्रभु के द्वार ॥ २ ॥
जा अर्जुन जन को दियो भगवद्गीता ज्ञान ।
भाष्य में शिष्या [illegible] सब सज्जन [illegible] ॥ ३ ॥
"किसोर दास" जाचे प्रभू गीता ज्ञान उदार ।
जिंहि समझें पहिचानिये पूर्ण ब्रह्म अपार ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अब गीता का कथा प्रसंग चल्याध्याय प्रथम का जब [illegible] युद्ध को कुरु क्षेत्र को चले । तब राजा धृतराष्ट्र [illegible] चल्यो हों ।

:o: :o: :o: :o: :o:

हे सजे धर्म का क्षेत्र जो है कुरक्षेत्र । तिन विर्षे [illegible] के पुत्र तिह्नो क्या किया । सो सुनवो कह । राजा के वचन सुनि [illegible] ।

:o: :o: :o: :o: :o:

मध्य—इसु प्रकार जो मेरा भजनु करै है। सो मेरे मति विषै सभनो जोगीयहुँ ते वह जोगी श्रेष्टु है ॥४७॥

इति श्री भगवद्गीता सूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन सवादे आत्म-संजमि जोगो नाम षष्टोध्याय समाप्तं श्री राम कृष्णार्पण शुभमस्तु गीता का चला सतवा ॥ श्री भगवानोवाच ॥

चितु राषहु चरणाविंदु भीतर भगवत की पाई।
येक येक डोलत नहीं इहि विधि जोग टिकाई॥ १॥

अवि अर्जुन औरु सुणु। जो गनिका निहचलु चेता मेरे विषै राषि करि मेरे साथि जोग जोडते हैं सो मेरे ही आसरे मुक्ति सा......ण जो ढूडते हैं। मेरे आसरे क्या कहीये कि हे महा प्र................

:o: :o: :o: :o: :o:

विषय—गीता की गद्य टीका।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। केवल छह अध्याय प्राप्त है। टीका का रचनाकाल तथा लिपिकाल भी अज्ञात हैं। टीका ब्रजभाषा गद्य मे है, जिसमे पजाबी ध्वनि लिये हुए खडी बोली का भी मिश्रण है। ऐसी भाषा हरियाना क्षेत्र की ओर अधिक प्रचलित थी इसमे लिये गए कई ग्रथ खोज मे मिल चुके हैं।

रचयिता का नाम किशोरदास है। अन्य वृत्त नही मिलता। ग्रथारभ मे इन्होंने मंगलाचरण के रूप मे आठ दोहे रचे है जिनमे इनका नाम आया है।

संख्या ४४ क. दानलीला, रचयिता—कुभनदास, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—५३/४ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१८, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय न्मः श्री कृष्णायन्मः अथ दान लीला लीषते
ब्रज जुवतिन के जूथ चली ब्रज नागरी।
गोकुल वृजनारि दह्यो नित वेचन आवै।
भूषण वसन सिंगार वनी अती परम सुहावै।
एक एकतें आगरी सोभा वरन न जाए।
वन्यो कुंज फुल्यो सखी रमरंग घरचो हें वनाय॥ १॥
प्रात समै नंदलाल सखा सव तुरत वुलाये।
सुनत दान की वात सवै आतुर उठि धाये॥ २॥
पेंडो रोक्यो जाय के कालिंदी के तीर।
नवनि कुंज सुख सदन में हो वैठें है वनवीर॥ ३॥
कहत नंद लाडलो॥ ३॥

:o: :o: :o:

अंत—मुदित भई ब्रज नार दह्यो लै आग राख्यों।
ग्वालनु दीनु वाँटि कछू इक आपुन चाख्यो।
प्रीत पुरानी जानकें मिली व्रखुभांन कुमारि।
तनमन अर्प्यो स्याम कों हो वसि कीने गिरिधारि॥
कहें ब्रजवासनी॥३०॥

तुम त्रिभुवन पतिराय रिझै मोहि मन भावें ।
मेरे नहन्तर मुख गौने श्याम घर [illegible] ।
हम अहीर ब्रज वासिनी हो क्यों करि पावें दान ।
गहे [illegible] ॥३१॥
राधा कृष्ण विवाद परस्पर गाय सुनावें ।
मन वांछित फल होय हृदै के तार लगावें ।
श्यामा श्याम विराजहीं व्रजजन [illegible] ।
गिरिधर बांन पहिरैं बसौ हौ [illegible] "कुंभनदास" ॥३२॥

इति वटी दानलीला संपूर्ण : ली० कोटा मध्ये मा० [illegible] श्रीकृष्ण मीती प्रथम आश्वन शुक्ल ५ सोमे वासरे स० १९१८ ॥

विषय—श्रीकृष्ण और गोपियों की दानलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अप्राप्त है। लिपिकाल सं० १९१८ दिया है।

रचयिता का नाम कुंभनदास है जो अंत में आया है। शेष परिचय नहीं मिलता। संभवत ये अष्टछाप के कुंभनदास हैं। इनकी प्रस्तुत रचना नंददास जी के [illegible] पर निर्मित हुई है।

यह अन्य दो ग्रंथ "नामोदर की टीका" और [illegible] "[illegible] वार्ता" के साथ एक हस्तलेख में है।

संख्या ४४ ख. दानलीला, रचयिता—कुंभनदास जी (निवास स्थान—[illegible]) कागज—देसी, पत्र—६, आकार—६½ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible] भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, बं० सं० [illegible] पु० सं० १२

आदि—राग बिलावल ॥
गोकुल ते ब्रजनारी चली नित बेचन आवें ॥
सुखन नव विध सिंगार बनी अति [illegible] सुहावे ॥ १
एक तें एक विराजहीं सोभा बरनी न जाइ ॥
चल्यो पुंज कुल्यो सरो हो रंग रस [illegible] है उदार ॥ १ ॥

मध्य—
हम हैं जात अहीर कह्यो नीर बेचन आवें ॥
सुन्यो न दधी को दान कहा अब नई चलावें ॥
तुम बन बैठे सांवरे रोकत हो बन मांही ॥
या मुख सो दधि मांगने सो देंहि बदन की छांही ॥
कहति ब्रज नागरी ॥१६॥

अंत—
श्री राधा कृष्ण विवाद परस्पर गाय सुनावें ॥
मन वांछित फल होइहै सो सार लगावें ॥
स्यामां स्याम विराजहीं ब्रजलोकें [illegible] ॥
यह बानिक मेरे रहे बसो हो दास बली कुंभनदास ॥
कह्यो नंद लाडीलो ॥३१॥

विषय—गोपियो से श्रीकृष्ण ने दधि दान लिया। उसका वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक कत्थे की स्याही से लिखी गई है। हाशिया इसी स्याही से दोनो तरफ छोडे हुए है। स० भ० की छाप लगी हुई है।

संख्या ४५ क. रामायण (सभवत) रचयिता—कुदरतीदास (सभवत), स्थान—वरोंह ग्राम (गोरखपुर जिला के गोला बाजार के निकट), कागज—देसी, पत्र—१२३, आकार—६३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६३७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री गुसाईं राम स्वरूपदास, कुटी–सँठयाँव डाक०–जहानागज रोड, जिला–आजमगढ।

आदि—

इद्र आदी सकलो सुर देवा। परम तंतु को सुमीरन सेवा॥
सेवही चांद सुरज वो तारा। सेवही पाय कवन अका....
सेवही धरती गगन अकासा। सेवही जल थल जीव प्रगासा॥
प्रभु को जोती दीसै सभ माही। व्यापी रहा छवी अंतर नाही॥
परम जोती ताके रहु संगा। कोटी कला छवि व्यापीत अंगा॥

॥ साषी ॥

पांच ततु तेही भीतर परम जोती परगास।
नारी पुरुष काके कही अवीनासी नाही नास॥

चौपाई

अजर अडोल आचींत सरीरा। सो निरगुन गुन सहीत मधीरा॥
निरगुन ब्रंभ ताहा ते आवा। सगुन रूप सोए दास कहावा॥

:o: :o: :o:

एक समै नीद्रा मोही आवा। करगही साम्रथ मोही जगावा॥
तुम सीर छत्र मुकुती रसाला। आए तुम्ह लीवन्ह के काला॥
करहु मती संसै भ्रम त्यागी। सुनत वचन वीरहीनी छन भागी॥
सत साम्रथ प्रभू वोले वानी। सुनहु वचन तुम कुदरती ग्यानी॥
तुम तो आहे जो अंस हमारा। तुमरे काज इहा पगु ढारा॥

:o: :o: :o:

मध्य—

॥ साषी ॥

सात दीप नवषंड भरी महीमा तीनो लोक।
जनक विदेही प्रन कीयो जो वीधी करही सोक॥

अंत—

॥ चौपाई ॥

कपी नीस्चर दल होत लराई। चढी वेवान देषही सुर आई॥
होही घाव कपी वीर न वाना। ए चरीत्र महीमा भगवाना॥
सुग्रीव आंगद अव हनुमंता। नव अवनील क्रोध जामवंता॥

:o: :o: :o:

धरती पास गए हनीवंता। वसुधा मारग दीन्ह तुरंता॥
पैंठी पताल रोरा कपीजा। ....

:o: :o: :o:

विषय—रामायण की कथा वर्णन की गई [illegible]।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ में आर [illegible] रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात [illegible] रचना "विश्वसागर" भी [illegible] कथनानुसार ये जिला गाजीपुर के [illegible] वर्ण के ब्राह्मण थे। [illegible] बहुत से ग्रंथों की रचनाएँ कीं। [illegible] हो गए और कुछ इधर उधर चले गए। [illegible] रचना काव्य की दृष्टि से उत्तम है। [illegible] परंतु कथावस्तु में जहाँ तहाँ परिवर्तन किया गया [illegible]। [illegible] की गई हैं और कितनी ही कथाएँ छोड़ दी गई हैं। [illegible] और न याज्ञवल्क्य भरद्वाज के संवाद हैं। [illegible] नहीं है। और न अध्याय या सर्ग हैं। [illegible] का पूरा आनंद आता है। [illegible] जिसको स्वयं भगवान् रामचंद्र वर्णन करते हैं। [illegible] दर्शन हुआ था, उनसे उन्हें भक्ति का प्रसाद मिला था। [illegible] निरगुन और सगुन दोनों प्रकार की भक्तियाँ [illegible] झेलना ये वांछनीय नहीं समझते थे। [illegible] परंतु सत्य विश्वास अवश्य रहना चाहिए, ऐसा [illegible] की गई है। ग्रंथ का नाम नहीं दिया है। [illegible] दिया गया है। कथा कुंभकरण की लड़ाई के पश्चात् [illegible]।

संख्या ४५ ग. विश्वसागर ([illegible]), रचयिता—[illegible] साहब, स्थान—[illegible] गाँव (गोला बाजार, गाजीपुर) [illegible] ६¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि०, [illegible] स्वरूप दास जी, कुटी—गठ्याँव, डाकखाना—[illegible]।

आदि—सती गुरदेव सीतरम [illegible] श्री पोथी बीसवासागर ([illegible]) [illegible] भाषाः गोसाइ गुरदेव जी सहाए :

॥ दोहा ॥

नमो नमो परमात्मा सती सती [illegible]।
जीन्ह जग उतपती नीरमयो [illegible]॥
पानी पवन आगीनी [illegible]।
ब्रम्हा बीस्नु महेस भो तीनो [illegible]॥
रजगुन सतगुन तामसा [illegible]।
ताते बीसवासा [illegible]॥
सभ [illegible] ब्रम्हा [illegible]।
छोदसा नामी [illegible]॥

:०. :० :०:

अंत—

दोहा

बार बार [illegible]।
तब गीरीजही समुझाए [illegible] प्रभु [illegible]॥

हरी चरीत्र गुन वरनत महीमा वारहीवार ।
आगम अगोचर आपु हरी गुन अजीत वैपार ॥

चौपाई

हरी महीमा नीती भाषु महेसा । सुनही स्त्रवन दे गौरी गनेसा ॥

इति श्री पोथी वीस्वकारन कुदरती साहैव कीत सपुरन ॥ संवतः ॥ १६०८ सन् १२५६ साल मीती कुआर पुरनवासी ॥

विषय—जगत् उत्पत्ति का कारन तथा भस्मासुर की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल संवत् १६०८ है । रचयिता का नाम कुदरती साहव है । इनके विषय मे देखिए इनकी "रामायण" का विवरण पत्र ।

संख्या ४६. भागवत, रचयिता—कृपाराम, कागज—देसी, पत्र—२४६, आकार—१० × ६३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८६६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० वालमोहन, ग्राम—विक्रमपुर, डाकघर—गाजीपुर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ स्त्री ॥ सरसत्यै नमह ॥ स्त्रीराम क्रीस्नाय नमह ॥

॥ सोरठा ॥

वंदौ स्त्री रघुवीर ॥ क्रीपा सींधु संतन सुखद ॥
प्रनत पाल रन धीर ॥ दुख हरन दारीद दहन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हरन मोहतम द्वंद सव । स्त्री गुरुपद करी ध्यान ॥
क्रीस्न कथा वरनौ विमल । अघहर कर कल्यान ॥ २ ॥

:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

स्त्री भागवत पयोधीवर ॥ को सक तेही अवगाही ॥
याते कछु भाखा रची नीज सामुझि चित चाही ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

मुक्ती एकादस माहि ॥ वरनी स्त्री सुक वहुत वीधी ॥
संत चाहना चाहि ॥ ताही क्रीपा भाखा रच्यौ ॥ ७ ॥
एकतीस अध्याय सुभ तिनकौ कहत वीभाग ॥
प्रथम हीं जदुकुल नास कही सुनी उपजै वैराग ॥

—चौपाई—

तीनी जोगेस्वर सुभग प्रसंगा ॥ चारीध्याय वरने वहु अंगा ॥
छठऐ वीधी वीनती प्रभु पासा ॥ सोई नारद वसुदेव प्रकासा ॥

:o: - :o: :o:

अंत— ॥ दोहा ॥

सुनै सुनावै पुनी कहै ॥ क्रीस्न कथा सुख कंद ॥
उपजै भक्ती अनंत तेही ॥ मिटै जगत दुख द्वंद ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

ध्यान जोग तप ध्यान मखु पूजा ... नेम ॥
सकल सोधी फल होइ तेहि ... ॥३४॥

ईती श्री भागवते महा पुराणे एकादश ... ... नाम एकतीसो अध्याय ॥३१॥

श्री श्रीस्नाय नम. श्री रामचद्राय नम सम्वत् १८६६ ... ।

:o: °o. °c.

विषय—भागवत पुराण ... ।

सख्या ४७ कृष्ण विलास (भागवत ...) ... कागज—देसी, पत्र—३७, आकार—... (अनुष्टुप्)—१०६८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन (...) ... रचनाकाल—स० १९६८ वि० (?), लिपिकाल—स० १८०८ ... रामलोचन पाडेय, ग्राम– व पो०–दयरनी, जिला–गाजीपुर

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नम ॥ श्री कृष्ण विलास ... नाम ॥ ... चरन निहारि ॥

वानि जाको वदन विराजे होंय ... ॥१॥
श्री भागोत दसम भाषा किय ... अनुसारि ॥
द्वारकेस गुरदेव कृपा तें मोहि भरासो है ... ॥२॥
प्रसन परीछन सुकसों ... ॥
कोह विधि सप्तम गर्भ देवकी गर्भ रोहनी ... ॥१॥
वालक येक दुहुन के उदरे विन देह धरे ... ॥
देह धरें न मन पलटें अचरज बडो ... ॥२॥
तातें कहो श्री कृष्ण जनन की लीला सर्व ... ॥
जो होइ मेरे जोग सुनन के सो कहिये ... ॥३॥

:o: °o° .c

येक समे अती प्रबल असुर नृप प्रगटे भूपर ... ॥
सह न सकी भार अवनी तब ... विधनापे जाइ ॥

:o: :o. :c

तब कह्यो विध देवन सो ... ।
भुभार हरन हित कारन प्रगटेंगे हरिरुप ... ॥

:o: :c. :c°

अंत—जदु वंसिन के लरकन को को कहि सके पारावार ॥
सहसन चेल पढें ... गुर ... ॥१७॥
अैसे सुने जो लोकत जादो तिन ... ॥
जिनके पदसो प्रगटोते भई ... ॥१८॥
जा जस त्रिभुवन देवत जातो ... .
.... (खंडित)

इति श्री भागवते महापुराणे दसमस्कध लीला भाषाई ॥१०॥ ... ॥ ... माघ सुदी १० गुर वासरे ।........ ....
इस काय सवत १७६४ पसजद ११ बुध वासरे कृष्ण ... ...

द्वारका नाथ वलमकुल के गोसाइ के सेवक ने जयामति श्री गुरईस्वर की क्रिपा तें बरनन कीये सुम ॥

विषय—श्री कृष्ण चरित्र वर्णन। भागवत के दशम स्कध का पद्यानुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण तथा खडित है। केवल सैंतीस पत्रे उपलब्ध है। लिपिकाल स० १८०४ वि० है। पुष्पिका (ग्रथात) मे जैसा लिखा गया है, उसके आधार पर रचनाकाल स० १७९४ है। रचयिता कृष्णचन्द्र अग्रवाल ने इस कथा का वर्णन किया था।

सख्या ४८. जैमुनिकथा, रचयिता—कृष्णदास, निवासस्थान—तिवई जदुनदनपुर (गोरखपुर), कागज—देसो, पत्र—९०, आकार—११¾ × ८$_{\frac{6}{15}}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७२२, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२८ वि०, लिपिकाल—स० १८९७ वि०, प्राप्ति स्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी। (ग्रथदाता—श्री रामलोचन साहू बरनवाल, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला—आजमगढ)

आदि—

:o: :o: :o:

कवल नाल जल अंत निहारा। देवी मूल पुर्ष विस्तारा॥
कटि तल आदि पताल विसेषा। सात भुअन नाभी पर देषा॥

:o: :o: :o:

एक अनंत भौसागर तरना। "कृष्णदास" प्रभु प्रनवै चरना॥
कविन मांह हम कवित आना। पुन्य भूमि गोरषपुर थाना॥
इत सरजु उत गंडक सीला। कलेस्वर मध्य मनोरम मीला॥
"उदैसिंह" तह भयो नरेसा। पीता हमार जन्म तेही देसा॥
पीतु परान पीतामह धानो। राज उपद्रौ अगमन जानो॥
सकुल सहित लै तुरित सीधाए। तीवइ जदुनंदन पुर आये॥
विन्ह ये पुन्य दया सत धर्मा। चारि पुत्र मती मानस कर्मा॥
प्रथम मंकुद महामतिमाना। प्रम भक्त मनी ध्रुप सुजाना॥
तीसर पुत्र केदार सुग्याता। चौथे कृष्णदास विष्याता॥

:o: :o: :o:

संवतसर जो गयो सतंसा। सोरह सौ जो उपर अठंसा॥
जेठ मास जे पछ उजीआरा। तिथि सातै ता दिन गुरवारा॥
कीन्ह अरंभ तव कथा समाजा। "अकवर साह छत्रपति राजा"॥

:o: :o: :o:

अंत—

पुर्न्य जाय हस्तिनापुर भए। चौदह वर्ष वीती तह गए॥
जग्य कीन्ह सव रिषयन जाना। ध्रम दुदीस्ठील सत्य समाना॥
कुती सहित रहे पुर चौदह वर्ष भुआर।
श्रीपति अग्या मानी नृप पहुचे जाइ हेवार॥

इति श्री जैमुनि कथा समाप्त सुभमस्तु कृष्णदास कवि कृत संवत् १८९७ अगहन सुदी सुदी १४ वार मंगर।

विषय—पाडवो के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन।

र० का०

संवतसर जो गयो सतंसा । सोरह सौ जो उपर अठंसा ॥
जेठ मास जे पछ उजिआरा । तिथि मातं ता दिन गुरवारा ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण है। प्रथम दो पत्रे तथा चार और पांच सख्या के पत्रे नही हैं। रचनाकाल सवत् १६२८ है और लिपिकाल सवत् १८६७।

रचयिता का नाम कृष्णदास है। इन्होंने यह ग्रंथ गोरखपुर मे रचा। इनके पिता का नाम परान और पितामह का नाम धाना था। पिता का जन्म गडक और सरजू के सगम पर वसे कलेस्वर स्थान मे हुआ था। उस समय वहाँ का राजा उदय सिंह था। राज उपद्रव के समय इनके पिता और पितामह कुटुंव समेत तीवई जदुनदनपुर (गोरखपुर) चले आए। उस समय अकवर वादशाह का राज्य था। ये चार भाई थे। पहले का नाम मकुद, दूसरे का भगवनी (?), तीसरे का केदार और चौथे का नाम कृष्णदास (स्वय कवि) था।

संख्या ४६. विरुदावली (अनुमान से), रचयिता—कृष्णदास, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—७ × ३$\frac{१५}{१६}$ इंच, पंक्ति(प्रतिपृष्ठ—)१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४१, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित सीताराम जी मिश्र, ग्राम—अहरौली,
रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पडित सीताराम जी मिश्र, ग्राम—अहरौली,
पोस्ट—सलेमपुर, जिला—गोरखपुर।

आदि—..............................

चहेरोदास कृसुन की सुध प्रभु लीजे काहे लागी करत हव अवेरो ॥ ५ ॥
दास मलुक को पार उतारो सुर कुप परत सो उवारो।
सेना ध्रव मकरद चतुरभुज कुवे कान्ह चरन को चेरो।
तुलसीदास वो मीराबाइ जाके प्रसाद लेत हव सवेरो।
दास कृसुन को सुधी प्रभु लीजे काहे लाग करहव अवेरो ॥ ६ ॥
दास तीलोचन की दुषमोचन रंचा वंका सौं प्रेम वढाइ।
सुपच कोल कीराति निपाद दरस देत व धाम पठाइ।
गनीका गीध अजामील सदना हरिगुन गाये के लोक सीधाई।
दास कृसुन की वोर द्रवु तुम कारन कवन धरो निठुराइ ॥ ७ ॥
:o: :o: :o:

मध्य—

दुषरन भगत को सुत लक्षमन रहे सो येक दीन बर गग नहाई।
मारन वुडकी अगम जल वहे उडे वस वति नाही उतराई।
दास तुम्हार कीयो तव स्तुति कर दे मुरली तीर लगाई।
दास कृसुन की सुधी प्रभु लीजे नाहि त जग मे होत हनाई ॥२४॥
राम प्रसाद सं..............................
:o: :o: :o:

—अपूर्ण.

विषय—भगवद् स्तुति।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है। रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं। रचयिता का नाम प्रत्येक छद के चौथे चरण मे आया है।

संख्या ५०. कृष्णसागर तथा फुटकर कीर्तन, रचयिता—कृष्णदास (तथा अन्य), कागज—देसी, पत्र—४२, आकार—९।×७।।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—११९६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सं० १६४० के पूर्व (अनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हिं० ब० ५१, पु० सं० ४।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ कृष्णदास के कीर्त्तन :: राग ललित । रूपक ताल ।

अधिक नीके लागत रगमगे लाल ।
अधी आधी बतियाँ कहत मेरे प्यारे ।
खेलत प्रान प्यारी सो कुंचित अलक छूटि निसि जागरन नयनन रतनारे । १ ॥
मृग ज्यो मृगमद तिलकु माथे ऊपर कछुक जंभात अधर मसिकारे ।
श्रमजल भरे कपोल मंडल बरसें दुररंग राते भोह अनियारे । २ ॥
अभरन बसन पलटि पहरे अंग नूपुरकु नित चरण सोहें भारे ।
सुनि कृष्णदास रसिक गिरिधर पाए अब तन तें न करिहूं न्यारे ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० २६

एरी कान्ह बुलावत चलो मृगनैंनीए राधा व्रज भामिनि ।
सुनि मन मुगधि विफल जात हे रितु कुसुमाकर जामिनि । १ ॥
कामरतन अरु नागर तूँ अनुरूपा कामिनी ।
ले मिलि भेंट उरस्थल को फलराज हंस गजगामिनि । २ ॥
कृष्णदास स्वामी गिरधर पिय तू जगती की स्वामिनि ॥ २ ॥ १५ ॥

अंत— अधरामृत लालन पीवेगो ।

पारवती पति जार्यो मदन अब नव निकुंज मे जीवेगो । १ ॥
राधे तुव बदन इंदु देखि ससिधर कि मन में हीं चेगो ।
कहे कृष्णदास रसिक गिरिधर अलकावलि कर जनि छीवेगो ॥ २ ॥

श्री कृष्णः शरणं मम ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री कृष्णो विजयतेतराम् ॥ श्रीकृष्णः ॥

विषय—प्रारंभ मे पदो की सूची है। बाद मे कृष्णदास के बनाए हुए कीर्तन पृ० ५९ तक हैं, जो पुष्टिमार्गीय मंदिरो मे गाये जाते है। फिर फुटकर कीर्तन (पृ० २५) दिए गए हैं। अष्टछाप के इस कवि का इतना बडा पदो का एकत्र संग्रह अन्यत्र अनुपलब्ध है। कृष्णदास के पदो का शुद्धाद्वैत संप्रदाय के कीर्तनो मे विशेष स्थान है। भाषा और भाव की दृष्टि से ये पद उच्चकोटि के है।

विशेष ज्ञातव्य—सफेद छीट के पुट्ठे मे रखी हुई पुस्तक है। अक्षर सुवाच्य हैं। सरस्वती भवन की छाप लगी है।

संख्या ५१. विद्रुम देस (रुक्मिनी विवाह), रचयिता—कृष्ण दास जाडा (श्री विट्ठलनाथ जी के सेवक), निवासस्थान—व्रज, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—६×११ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० वि० ब० १७, पु० सं० ७।

आदि—अथ विद्रुमदेस लिख्यते ॥

विद्रुम देस कुंदनपुर नगरी भीषम नृपति, जाके नवनिध सगरी ॥

पांच पुत्र जाके कन्या एक रुक्मिणी, तीनो लोक तरुण मिन्रंगेनी ॥
॥ टेक ॥ रंगिनी ते त्रिभुवन तरुन लायक नहुक ब्रह्मा पचि रची ॥ २ ॥
रग मुरत रमा मरदर एकहु अंग नाहिन वची ॥
युगल खोर सुलच्छन ललना भनत पिंगल पारखू ॥
सोले से आभूपन अग विराजे दिन दिन दोउ नया लखु ॥

मध्य—राग ॥ टेक ॥

चोरी चडे हे गोपाल मुरारी ॥ बेठी दक्षिण रुक्मिणी नारी ॥
लीनो हथलेवो सकुवारी ॥ दुलह दुलहनी सुदर भारी ॥
जहां परनत कृष्ण नरेशा ॥ आये ब्रह्मा इन्द्र महेसा ॥
आये सुक सनकादिक सेसा ॥ आये नारद मुनी उपदेसा ॥
आये छप्पन कोटि तेतीसा ॥ आये गौरी पुत्र गनेशा ॥

अंत—

रुकमिनी जाबुवती सतभामा, सत्या भद्रा नारी ॥
लक्षमणा कालिन्दी मित्रविंदा ये आठो पटरानी ॥
दस दस पुत्र एक एक कन्या तरुनी तरनी प्रतिदीनी ॥
नवलकिसोर मुरलीधर सुदर ये माया रस भीनी ॥
रुकमिणी व्याह कह्यो जन कृष्णा सीखे सुने ग्रोर गावे ॥
धर्म अर्थ कामना मुक्त फल चार पदारथ पावे ॥
भक्त हेत अवतार लियो हरि भूतल लीला धारी ॥
श्री गिरिधर राधावर ऊपर जन जाडो बलिहारी ॥
॥ विद्रुमदेस संपूर्ण ॥

विषय—श्री कृष्ण का रुक्मिणी के साथ विवाह वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के पत्रों मे संख्याएँ दी हुई है । पृ० नं० १६ से २३ तक यह ग्रथ लिखा गया है ।

आदि मे 'कीर्तन' दिए गए है । वाद मे 'स्याम सगाई' और 'पुटकर कीर्तन' हैं । खाली पन्ने भी छोडे गए है । सरस्वती भडार की छाप तथा छपा नेविल लगा हुआ है ।

संख्या ५२. रासपचाध्यायी, रचयिता—कृष्णदास कायस्थ, स्थान—रामपुर गमगावाद, कागज—देसी, पत्र—३८, आकार—१० × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ट)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, पूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—फारसी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपाल चद्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

हरिजन हरिहर सुमिरन करहू हरि चरनारविन्द उर धरहू
कोट जगत जप तप विधि नाना प्रमित जोग व्रत सजम नाना
प्राग आदिक तीरथ पुनि जेती नाम तुरय होइ सके न तेती
वन को अनल तिमिर को भानू त्यो अघ को हरिनाम प्रधानू
मूल मनतर हरिनाम जानो मोछ दुआर दुजी पहचानो
है हरिनाम पाप को अरनो मोह नहो कहे सुदर तरनो
सुखदायक कलि कलिख भंजन है हरिनाम चित्तमन रंजन
जग धंधा तजि धंध विचारो हर उसास हरि नाम सम्हारो

छन्द ॥ हरिनाम हरजन हर उसासन मुखादि पर हर भाखहू
अघ हरन हरि चरनारविंदन मन मधुप कर राखहू
हरिनाम ब्रह्मा अपार न पार सुन जन लह सके
सारद सुरेस गनेस महेस ताह न कह सके

:o: :o: , :o:

सोरठा ॥ "कृष्णदास" मम नाम हरिजन चरन सरोज रज
रहत रामपुर ग्राम शमशावाद प्रसिद्ध जो
करी कृपा पूंछो वरन वरन सुनावो तोंहि
एक सुन्यो कायस्थ कुल जान दूसरो मोह

:o: :o: :o:

सुक वोली सुन राज वद भाको कलियान मे
लीला रुचिर समाज "पंच अध्याई" अघहरन
दोहरा ॥ सुकुल पछ तिथि पूरना असुन मास पुनीत
वन छायो फूलन विविध अरुन लील सित पीत

:o: :o: :o:

अंत—कहूं मीत अव चीतदई वडी वात यह भनत दूरकी
सवको अदया जोग न होई वहुरि भाग....... ।
श्रद्धा सहित प्रेम निधि जानो गुप्त वात...... ।
प्रभु पद प्रीति विमुख नर जोई ताढिग कहो..... ।
रास केलि अदभुत कथा कही यथामति गाइ
प्रभु पद पंकज पर सदा "कृष्णदास" वलि जाइ

:o: :o: :o:

विषय—श्री कृष्ण भगवान् की रास केलि का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ पूर्ण है, परंतु वीच और अंत के कुछ पन्ने फट गए है । उपलब्ध अंश मे समस्त अडतीस पन्ने हैं । रचयिता रामपुर, शमशावाद निवासी कृष्णदास कायस्थ है । अन्य कोई परिचय नही मिलता । रचनाकाल और लिपिकाल नही दिया गया है ।

संख्या ५३. ववुरवाहन कथा, रचयिता—कृष्णदेव, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६७, शाके १७३१, प्राप्तिस्थान—पं० विंध्येश्वरी तिवारी, ग्राम—वडगहन, पोस्ट—वरहद; जि०—आजमगढ ।

आदि........................... .

राय वासुकी वीनवही हमसे मनि तुम लेउ ।
काहे के नागन्ह मारहु जीवदान कै देहु ॥

॥ चौपाई ॥

ववुर वाहना तवही मनि पाई । तजि पताल ग्रीतलोकहि आई ॥
मनि जव पावा सुप भा तवही । अर्जुन केर माथ तव नाही ॥
ब्रह्मलोक तव जीव वीचारा । पोजेउ प्रीयी नाग पताला ॥

दोहा

केशव के मन चिंता सवके परा षभार ।
अर्जुन के माथ तव न पाइव करव कवन उपचार ॥

:o: :o: :o:

अंत—

नातो भेंटु तव कुंती रानी । नैन ढरे जल जनुग्न पानी ॥
अब तुम अपने गृह कहं चलहु । भैया राय जुधिष्ठिर कहहु ॥
नातो देखि जोय गहवारा । द्रौपदीहु पाय लेइ परा ॥

॥ दोहा ॥

ववुरवाहना कै कथा जो कहै मन लाइ ।
कृष्णदेव तब भाषा सब कर पातक जाइ ॥

इति श्री महाजुधे ववुल वाहना कांडे जुधीष्ठीर अस्ववधने ववुर वाहना कथा समाप्त ॥ सुभमस्तु सवत् ६७ साके १७३१ मासोतमे मासे पोष मासे सुक्ल पक्षे अष्टम्या तिथौ ८ वुध वासरे ॥ लोखीत घरहु त्रोपाठी तस्य ग्राम वडगहन ॥

विषय—महाभारत के आधार पर बभ्रुवाहन की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खंडित है । १३ पत्रों में से केवल अंत के दो पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल ज्ञात नही । लिपिकाल सं० १८६७ वि० (शकाब्द १७३१) है ।

रचयिता का नाम कृष्णदेव है जो ग्रथांत में दिया है । अन्य परिचय नहीं मिलता ।

संख्या ५४. गीता भाषा टीका, रचयिता—कृष्णराम गताविया बनारसी, कागज—देसी, पत्र—१६८, आकार—१० × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०३ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री कृष्णाय नम. ॥ अथ भगवद्गीता लिख्यते ॥

ॐ अस्य श्री भगवद्गीता माला मत्रस्य भगवान वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप छद ॥

:o: :o: o:

त्रिलोकी वदित चरण. लोक हित निमित धृतावतार. परम कारुणिक भगवान देवकीनदन तें अज्ञान वर्द्धित शोक मोह नष्ट विवेक निज धर्म त्यागी पर धर्मग्राही जो अर्जुन तायं धर्म ओर ज्ञान रहस्य को उपदेश रूप जहाज पर चढाय शोक मोह रूप समुद्र ते उद्धार करत भये ।

:o: :o: o:

या रीति या गीता शास्त्र की सगति ओर संक्षेप अर्थ कह्यो ॥ अब प्रत्येक श्लोकार्थ श्रीधर के अनुसार लिखियत हैं ॥

धृतराष्ट्र उवाच

धर्म क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सव. ।
मामका पाडवाश्चैव किमकुर्वत सजय ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

हे संजय धर्म भूमि जो कुरुक्षेत्र तामो युद्ध कि इच्छा करिकैं परस्पर एकत्र भये मेरे पुत्र दुर्योधनादिक ओर पाडव युधिष्ठिरादिक वा ठौर गये पाछें कहा करत हैं.

:o: .o: o:

अंत— ॥ श्लोक ॥

यत्र योगेश्वर. कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धर ।
तत्र श्री विजयो भूति ध्रुवा नीति र्मतिर्मम ॥७८॥

टीका

हे धृतराष्ट्र जिन पाडव को सात्तात योगेश्वर कृष्ण सहाय हैं जिनके ओर अर्जुन सो धनुर्धारी हैं तहा लक्ष्मी जय ऐश्वर्य नीति ए सब पदार्थ हैं एसें मेरी मति है तातें दुष्ट बुद्धि दुर्योधन के कहें सर्वथा पाडवन सो तू वैर मति करे ॥७८॥

इति श्री भगवद्गीतोपनिषद्ब्रह्म विद्या कृष्णार्जुन संवाद योग शास्त्रटीकायां श्री मच्च-क्रवर्ति परमोदार कृष्णराम संतोषिण्या मोक्ष संन्यास योगो नामाष्टदशोध्यायः ॥१८॥ संपूर्ण-श्चायं ग्रंथं ॥ यदृष्टचभावान्मति विभ्रमाच्च यद्दोप्ययुक्तं लिपितं मया च विद्वद्भि राद्यैः परि-शोधिनीयं प्रायेण दृग्मुह्यति लेखकानां ॥१॥ यह पुस्तक सपूर्ण भई श्री गोकुल मध्ये मिति सांम कृष्णा ११ संवत १९२३ वाह्मण सनाढच सालिग्रामेन लिपी जो वांचे तांकू भगवत्स्मर्ण ॥

विषय—गीता की हिंदी गद्य मे टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—टीका का रचनाकाल नहीं दिया है। लिपिकाल स० १९२३ है। टीका ब्रजभाषा गद्य मे है। टीकाकार का नाम कृष्णराम सतोषिणा चक्रवर्ती है। अन्य परिचय ज्ञात नही।

संख्या ५५. शरदनिसा, रचयिता—कृष्णा बाई या कृष्णा दासि, (श्री आचार्य जी के सेवक), निवासस्थान—अडेल, कागज—देसी, पृष्ठ—३½ (२५ से २८), आकार—९¾ × ५¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०० के पूर्व। प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० स० ३५, पु० स० १७।

आदि—॥ अथ सरद निसां लिख्येते ॥ राग सोरठ ॥

श्री वृंदावन नव कुंज मे त्रिभुवनपति आनंद ॥
वेन वजाई विचित्र सुर तानमान गति छद ॥ १ ॥
सुरनर पसु खग पवन तरु व्रज वनिता अकुलाय ॥
श्रवन सुनत आतुर चली सरद निसा परम सुहाय ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २६ दोहा ॥

बोलखि वचन वनिता कहे, सव अंग पीडत मेन ॥
प्रान तज्यो पन ना तज्यो सुनि गोंविद मुख वेंन ॥ १ ॥ चाल ॥
व्रज नारी सवे जुरि आई ॥ देखत पति जादोराई ॥
सुंदर त्रभोवन नहीं रासो। हरि कोटि मदन सम जेसो ॥
जाके मस्तक मुकट विराजे ॥ दीपक अंधियारो भाज्जे ॥
दोऊ कुंडल झलके कांना ॥ जाके कठ वनी वनमाला ॥

अंत—

एक भई हैं गोपाल लला री ॥
जिन दृष्टि पुतना मारी ॥
एक भेख मुकंद सो कीनो ।
जिन त्रनावर्त हरि लीनो ॥
एक भेख दामोदर धारी ॥
जिन जमुला अर्जुन तारी ॥
॥ दोहा ॥
प्रेम प्रीति हरि जानिके आये तिनके पासि ॥
मुदित भई सव मानिनी गुन गावें कृष्णदासि ॥

विषय—श्रीकृष्ण की सुप्रसिद्ध रासलीला का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—खुले पत्ते हैं। रैपर लगा है। उस पर सरस्वती भडार की छाप तथा छपा लेबिल है।

संख्या ५६ कवित्त, रचयिता—द्विज केवल लीन, कागज—आधुनिक, पत्र—खर्राकार—१, आकार—१७ ३/८ × ६ ५/१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा बनारस। (दाता—श्री महंत ईश्वरशरण भारती, ग्राम—बारी, पोस्ट—भाटपार जिला—गोरखपुर)।

आदि—राम

॥ कवित्व ॥

प्रभु दीन को दानी दआ करिके चीतवो एक बार तु नैन की कोरे ।
जैशे कीयो प्रहलाद शो कीरती शोर भए चहु वोर की वोरे।
शाम शरुप तु शकट मोचन श्री रघुवीर वशो मन मोरे ।
जानकी नाथ कीपा करीके करुनानिधी हों विनवो कर जोरे ॥
मोर के पछ धरो शीर उपर काछनी काछी पीतामर पेरे।
कुंडल लोल कपोल की राजीत शारंग हाथ लीए शर जोरे।
शंभु पीनाक तोरे तीनुका सम नृप जगत के मान मरोरे ।
शीय शुअंमर जीती लीयो मीथीलापुर के शभ शकट वोरे।
केश गहो द्रोपती के दुशासन ऐंचत चीर शरीरहू पेरे ।
अरजुन भीम जुधीस्टील देषत भीषम द्रोनन त्रान करो रे॥
:o: :o: :o:

अंत—

केली कियो सम ग्वालीनी के सग रीतु वशंत मे राश बनाइ ।
कुवरी के कुवर शीध कीयो अपने कर लेकं रुप वनाई॥
एेशो गरीब नेवाज के राज मे कोटीन्ह शंत को शोक मेटाई ।
दीज केवल लीन भजो भगवतन कव मोरी वार वीलंव लगाई॥
काटहु सकट श्री रघुवीर शरीर के पीर मेटें गीरधारी ।
घेरी के राषत हैं घर मे जहवा भकशी प्रती हैं अधीप्रारी॥
पवनो के गम्व ना तहवा पुनी तापर देत दुआरे केवारी ।
शो दुष काशो कहो करुनानिधि मोरें त एक अलव तोहारी॥
काटहु शकट वेगी महा प्रभु शंत सदा तुम हो उपकारी ।
जो जन है एह शकट मे प्रभु वधन काटो के दुरी पधारी॥
"दीज केवल लीन" भजो भगवतत शीताम्र जी का नाम पुकारी ।

विषय—भगवद् स्तुति ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत कवित्त खर्राकार कागज मे लिखे हुए हैं। रचनाकाल एवं लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम "द्विज केवल लीन" है जो जहां तहां कवित्तों मे प्रयुक्त है। अन्य परिचय नही मिलता। गोपियों और कृष्ण के रास का समय वसंत ऋतु लिखा है। अनुस्वारों एवं शब्दो मे जहाँ तहाँ अशुद्धियां है।

प्रस्तुत खर्राकार पद्य के दूसरी ओर हनुमान जी की स्तुति है जो दूसरे द्वारा लिखी गई है। अत उसका विवरण लेना आवश्यक नही समझा गया। प्रथम पंक्ति दी जाती है —

बाल समै तुम भक्ष कियो रवि तीनहो लोक भयो अंधियारो॥

संख्या ५७. श्री आचार्य जी की वशावली, रचयिता—केवलकिशोर, कागज—देसी, पत्र—१३ (२२ से ३५), अकार—५।।। × ५।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, विद्या विभाग काकरोली से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०० से १६८० के भीतर (अनुमान से), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० व० स० ४३, पु० स० १६।३।

आदि—श्री हरिः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम. ॥ श्री आचार्य जी की वंसावली लिखत हैं।

श्री वल्लभ चरन प्रताप वल मुग्धहू कूँ होय ज्ञान ॥
गूंगे हू गुन गनि कहें चरन कमल धरि ध्यान ॥ १ ॥
लीला अगम अगाध हैं ताको वार न पार ॥
कछुक कहत हूँ चरण गहि अपनें मत अनुसार ॥

मध्य— संवत् १५७२ नोमी पौस वदि प्रात।
शुक्रवार सुभ लगन वृख हे सव हीन को थाप ॥११०॥
हस्त नछित्र वैतल करन गृह सव नीकी ठाव ॥
देखि मुदित वल्लभ भए धर्यो श्री विट्ठल नाव ॥१११॥
कन्या चद्र सु मिथुन गुरु करक राहु रह्यो आनि ॥
उसना मगल रवि वुध सुदस वखांनि ॥११२॥

अंत—द्रावड भक्त उत्पन्न हैं गूजर पुर लोभाय।
प्रगटे विट्ठल नाथ जी दोनी वेलि वढाय।१८५।
सास कही कहि वोलता ये जानत हैं सिव पूजि।
अवतें भरा अनन्य सव रहतरास रस गुजि।१८६।
पालत जे जम किंकरें लाग नहीं कहू घाते।
चित्र गुप्त कागद तज्यो पूछत नहि कोई वात।१८७।
यह लीला प्रतिदिन पढे उठे मगन व्हे जाय।
ताकूँ श्री गोपाल जी राखें चरन लपटाय।१८८।
इते नाम गुन रूप हैं भए हमारी दारि।
आगे भक्ति हू वरनिये श्री वल्लभ कुल विस्तारि।१८९
श्री द्वारिकेस जी कृपा करी लीनो हूं अपनाय।
श्री वल्लभ कुल को केलि पर केसो किसोर वलि जाय।१९०

इति श्री आचार्य जी की वंसावली संपूर्ण समाप्त ॥

विषय—श्री आचार्य महाप्रभुजी और श्री गुसाई जी के चरित्रों का वर्णन किया गया है तथा उनके वश का भी कुछ विवरण है। ग्रथ उक्त सप्रदाय के इतिहास ज्ञान मे सहायक एव प्रामाणिक है। यह अभी तक प्रकाशित नही हुआ था, अव विद्या विभाग द्वारा प्रकाशित किया गया है। इसकी रचना दोहा छदो मे है।

संख्या ५८. वैराग्य शतक (विवेक दीपिका), रचयिता—केशवदास जी, कागज—देसी, पत्र—७९, आकार—८½ × ७½ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्),—१७३८, अपूर्ण, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७४७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—.....................
......ज्वतु है ॥ मोमों यह कहै देत है कि महर्षि पुगयोंदं ॥
व......पुन्यं न करि चिरपरि गृहीतादच विग्रया ॥
सग्रहिज.........विपयते ॥ महातोयन् ॥
यातते आतंही डुक्टत है ..विपयिणा विमने ॥ अन्यातु ॥
विपईनि कहु ॥ प्रम दुप दे......कहु ॥ पहिलै तो परिग्रह करतु है ॥
सुवहु दुपनि करि स ..व्यों परिगृहु ॥ जब विनसतु है ॥
तब मयो दुप परतु है ॥ यह (द)त्तात्रय मुंनि ॥ राजा जदसों ॥
एकादशहू स्कंधहू मध्य कही........ ॥ श्लोक ॥
परिगृहोति दु.खाय यद्यत्प्रियतम नृणा ॥
अनत सुखमाप्नोति तद्विद्वान्यरत्व किंचन ॥ १ ॥

अर्थु ॥ देपहु यदु एक पंक्षी हतौ ॥ तिहि कहू अनेक दुपन्य करि माग पायो ॥ तो ताको सगृह करि राष्यो ॥ तव और कुरच पक्षीनियहु कुरच मारि डारचौ ॥ माग छुड़ाय लीयौ ॥ सुयत...व ॥ जुजुवस्तु ॥ नृणा पृ्यतम ॥

मध्य—
श्लोक ॥ विस्तीर्णे सर्वस्वेतरुणा करुणा पूर्वं हृदये ॥
स्मरंतः संसारे विगुण परिणामावधि गति ॥
कदा पुण्यारये परिणत सर चद्र किरणो या ॥
मान्नेष्यामोहहर चरणं चितैक सरणय ॥४३॥

टीका ॥ भर्तृहरि मनोर्यु कर्त्तु है ॥ विस्तीर्ण ॥ सर्वस्वे ॥ सर्वस्वेदेंषयि तरुण ॥ कहैं तें जुक्षण क्षण नवीन ॥ जु करुणा ॥ ताकरिपूर्ण जुकरुणामपहृदय ॥ अरु समारे ॥ या संसार विष ॥ विगुणपरिणा ॥ मवधि गति ॥ दोप सवधीनो जु दुर्गति ॥ ताहि स्मरति. सुमिरि ॥ पुन्याख्ये ॥ पवित्र वन विषै ॥ परिणत शरच्चद्र किरणं निसय ॥ हूर धरनौंहै चित्त केहमुण्य सरनु जिनके हम ॥ असे रात्रि दिनका वगवाइ है गाद ॥

अंत—अब भर्त्तृहरि कहै तुहै ॥ कि देपहु ॥ यासंसार मध्य ॥ नृम्य पदू नाही ॥ भोगे रोग भय ॥ जो भोग वहुत करि कीजें तो ॥ रोग को भय ॥ अरु कुले ॥ कुपनि विषै छय को भय ॥ अरु वित्तेग्निभू भृद्भूय ॥ चित्त विषै जरि जाय ॥ अरु भूमृत जु है राजा ॥ ते छिपाइ लैहि यह भयु ॥ अरुदा से ॥ सेवकाई ॥ स्वामी को भयु ॥ अरु ॥ रूपे ॥ योपिद्भूय ॥ नीको रूप देषि ॥ स्त्री को भय ॥ काहू की स्त्री आप गिरि परै ॥ अरु माने म्लाय निसय ॥ भाई हमारो ॥ जो यहि सन्मानं न करिहै ॥ तो हमारे गलानि हो है, मूर गुंणाई खल भय ·· गुणोन विषै ॥ दुष्टोन को भयं ॥ अरु देहे ॥ शरीर विषै ॥ कृताता भय ॥ दात को भय ॥ तातें सर्वनाम भय ॥ सर्वभय प्रस्ति है ॥ हे मखे ॥ अरे मदा ॥ वैराग्यमेव ॥ वैराग्य अकेलो ॥ अभयखः ॥ जनभजः ॥ चित्त एकाग्रहे करि ॥ निर्भै पदाप वैराग्यहि मांमजुगत ॥ ईति श्री मत्सकलनृपति मौलि मडन मति श्री मधुपरि नृपति तनुंज श्री मदिद्र विरचिताया दिदेष दीपिकायां भर्तृहरि विरचितायां वैराग्य सतसपूर्ण भवति ॥ समत १७४७ वर्षे मास षासो जं कृष्ण पषे तिथि ६ वार सुक्रवारे नग्र पोटरा मध्ये लिपतं च स्वामी जी श्री उधवदास जी की पोता सिषि ॥ वावा जी श्री लालदास जी को वालक तुरसी दास बांचै जिस कूं राम राम ॥ श्री श्री राम ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ भर्तृहरि कृत वैराग शतक का हिंदी अनुवाद है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे आदि के दो पत्रे नही है। प्रथम श्लोक की टीका नहीं है। ग्रथ सुप्रसिद्ध कवि केशवदास जी का रचा हुआ ज्ञात होता है। पुष्पिका मे इन्होंने

"मधुकर नृपति तनुज श्री मदिंद्र विरचिताया" लिखा है। इन्होने अपने ग्रथो की इसी प्रकार पुष्पिकाएँ दी हैं। अतएव इसी आधार पर इन्हें रचयिता माना है।

ग्रथ का लिपिकाल स० १७४७ है। इसकी प्रस्तुत प्रति वडी ही जीर्णशीर्ण दशा मे है।

संख्या ५६. विवाह खेल, रचयिता—केशवदास नारायण, कागज—सफेद, पत्र—७ (६ से १२ तक), आकार—५॥। × ७। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्—८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, विद्यो विभाग काकरोली, हिं० वध १६, पु० स० ८।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ व्याह खेल ॥ राग मारू ॥

व्रज वेद वदित वरसानो, व्रखभान गोप ताहां रानो ॥ १ ॥
ताकें राधा रुचिर कुमारी ॥ पिता मातहि प्राण पियारी ॥ २
गुण रूप राशि विधु वदनी, रति रमा उमा मद कदनी ॥ ३
भई वरष सात की वाला, लागी खेलन खेल रसाला ॥ ४
ताहि सखी वृंद रही घेरी, मानु हें सब याकी चेरी ॥ ५ ॥
वृष भान भवन निति आवें । ६

मध्य—पृ० ६ मे—

स्यामां दई स्याम मुख वीरी, तब गावति गारि अहीरी ॥६३
यह ग्वाल छाछि को भोगी, कहा जानें वीरी अरोगी ॥६४
मेरी राधा जू आज सिखायो, तुम पुन्य परमफल पायो ॥६५
हरि निज करि वीरी लीनी, प्रिया मुख मेलन मति कीनी ॥६६
जब अरुण अधर तन हेरयो, तब स्यामां जी श्री मुख फेरयो ॥६७

अंत—तब वोलि व्रषभान कुमारी, अति तुम तिहो ए कारी ॥११६
मेरो व्याह करेंगी मैया, ससुरो श्री गोकुल को रैया ॥११७
वाढ्यो मोद विनोद अपारा, कविवर ने कोन प्रकारा ॥११८
जहां शेष सारदा हारे ॥ तहां कवीजन कोन विचारे ॥११९
ताको पार कोउ नही पावे ॥ केशोराम नारायण गावे ॥१२०
॥ इति व्याह खेल संपूर्णम् ॥

विषय—श्री राधा जी वन मे सहेलियो के साथ खेलने को गईं सो वहाँ श्रीकृष्ण का मिलाप हुआ। वाद मे श्रीकृष्ण और राधा जी वर वधू वनकर खेल खेलने लगे। वही वर्णन किया गया है।

सख्या ६०. केशव विनोद भापा निघटु, रचयिता—केशवप्रसाद शर्मा, स्थान—जैराजमऊ (वैंसवार, अयोध्या), कागज—आधुनिक, पत्र—२२०, आकार—८४/१० × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६७, लिपिकाल—स० १६४३० वि०, सन् १८७३ ई०, प्राप्तिस्थान—प० ईश्वरदत्त तिवारी, ग्राम—लेहरा तिवारीपुरा, पा०—मलाक हरहर, जिला—इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः अथ केशव विनोद नामा भाषा निघुंटुर्ल्लिख्यते ॥

शकरसुत गिरिजा तनय गणपति चरण मनाय।
श्री धन्वंतरिहि पुनि वार वार शिर नाय ॥ १ ॥

:o: :o: :o:

वर्ण क्रम सो ग्रंथ यह संस्कृत मांहि समोद।
प्रथम रच्यौ ता नाम यह केशव पूर्व विनोद ॥ ३ ॥

पुनि देख्यो जग मे सकल संस्कृत जानत नाहिं ।
ताते रच्यो निघंटु यह निज भाषा के माहिं ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
प्रथम खंड सब औषधी दूजे व्यंजनरीति ।
तीजे मास प्रकार सब लिखे सकल करि प्रीति ॥ ६ ॥

॥ ग्रंथकर्ता का वर्णन ॥

अवधपुरी सुंदर सुखद बसत जु सरजू तीर ।
जहँ जन्मे रघुवंश मणि राम हरण भवभीर ॥ ७ ॥
ताके सुभग प्रदेश मे बैसवार इक देश ।
सुख सो बस जामे प्रजा तनक न जानत क्लेश ॥ ८ ॥
जैराज मऊ है नाम जिहिं बसत ग्राम तहँ एक ।
जाके नाम सो ख्यात कुल वे ब्राह्मन नेक ॥ ९ ॥
:o: :o: :o:
अद्रि नंद वसु चंद्र मिति विक्रम संवत जान ।
ज्येष्ट मास मे आइ किय नेलनगज सु थान ॥२१॥
:o: :o: :o:

अंत--

हरीत--(पु०) एक प्रकार का पक्षी है जिसको हरियल कहते हैं ॥

इसका लक्षण ॥ हरियाइ लिए रंग पीला कंठ मे काला होता है ॥ गुण ॥ रूखा गरम रक्त पित्त कफ का नाशक प्रस्वेद तथा स्वर का करनेवाला और कुछ वातकर है । इति श्रीमत्पण्डित परमसुख तनय केशवप्रसाद शर्म्म द्विवेदिना विरचिते [illegible] द्वितीयो भागः खण्डस्तृतीयस्समाप्तः ॥ ३ ॥ पूर्णता मितोऽय ग्रंथ व्योमाङ्कु निशाकरैस्समुदिते वर्षे शुभदं-क्रमे चैत्रे मासि परे दले हरि तिथौ श्री चन्द्रमो वासरे । [illegible] श्री मत्केशव शर्म्मणाग्गोलपुरे मुद्राङ्कितान्थापिता ॥ १ ॥

विषय--ओषधियो, व्यजनो और अनेक प्रकार के मासों का गुण दोष वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य--रचनाकाल संवत् १८९९ वि० और प्रकाशनकाल सन् १८-३ ई० है । रचयिता का नाम केशवप्रसाद द्विवेदी है । इनके पिता का नाम परमसुख और [illegible] नाम बलदेव था । इनके पूर्वज भवानीदत्त द्विवेदी थे जो अयोध्या के समीप [illegible] जैराजमऊ ग्राम मे रहते थे । यहाँ से ये बिठूर के पास [illegible] मे जा रहे । [illegible] परमसुख, रचयिता समेत आगरा चले गए और तब से वहीं अध्यापन कार्य [illegible] करने लगे । रचयिता आगरा कालेज मे संस्कृत के प्रथम अध्यापक हुए । प्रस्तुत ग्रंथ [illegible] गया और लोकोपचार की दृष्टि से हिंदी भाषा मे अनुवाद करके [illegible] मे मुद्रित किया गया । ग्रंथ पत्थर टाइप मे छपा है और छापे की प्राचीनता की दृष्टि से [illegible] का है ।

संख्या ६१. कवित्त, रचयिता--[illegible], कागज--देशी, पत्र--१ (एकांगार), आकार--$१०\frac{३}{४} \times ४\frac{१}{२}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)--१६, परिमाण (अनुष्टुप)--८ पूर्ण, रूप--पुराना, पद्य, लिपि--नागरी, प्राप्तिस्थान--पं० दिग्गु देवमणि त्रिपाठी, [illegible]-पार, पोस्ट--रामपुर कारखाना, जिला--गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

सीषो चारु वेद अठारहो पुराण शीषो जोग जोतिश को जीतो तरवार में ।
कोक अगम शीषो व्याकरण न्याय शीषो अस शो वईदाई शीषो वक्ता हजार मे ।
गावन बजावन शीषो पारशी पुराण शीषो शकुन को झपट शीषो जितो रण माह मे ।
पढत कवि "केशोराम" एतौ शभ शीषौ आरो एक चातुरी न शीषो तव शीषो परो भार मे ॥ १ ॥
जानत हो पंडिताइ योग जोतिश अव पुराण वाचो अछरो के जोरि जोरि कवित नीके उचरो ।
राग धरि गवाइवरा वो घोडा वीना राग नदी नार पवरी परि वाहुवल उतरो ।
वैठे जानो सभा मे रीझाई डारो राजन को पागवाही से रनमाह हो लरो ।
देश वो विदेश फिरी आवो "कवि केशोराम" कर्म तई आरो इत ताके मे काकरो ॥ २ ॥

विषय—जो मनुष्य चतुर नही और जो चतुराई से अपने कार्य नही करते, उन पर कविता की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। कवित्त केवल दो है, जो खर्राकार पत्र के एक ही ओर लिखे है। दूसरी ओर सस्कृत के फुटकर श्लोक हैं। रचयिता का नाम केशोराम है। अन्य वृत्त अज्ञात है।

संख्या ६२. महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व), रचयिता—केसोदास, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—$६\frac{१}{१०} \times ६\frac{१}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३८, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १८३२ वि० (सभवत), प्राप्तिस्थान—राम अनद जी तिवारी, ग्राम—दरवेशपुर, पोस्ट—भरवारी, जिला—इलाहाबाद।

आदि—.... ....
रमवरी ज कीछु व्रनौ श्री ग्रुग होहु सहइ ।
...अलग महीजनी ग्यान धीअन गहनी करु ॥
:o: :o: :o:

व...ग्रु ब्रह्मन के पउ । जीन्ह मोही नीरमल ग्येन सीषउ ॥
सहर जगमोहनी मत । सवरौ रम होइ उदघट ॥
......वुधी के वनी । स्रंगरोहीनी (? स्वर्गारोहण) कहउ वषानी ॥
:o: :o: :o:

अंत—पवभगृी दुदीम्टील भइन सहीत नेवस ।
केसौदस (?केसौदास) सोभषौ पंडव गए सषवस ॥
त्रीय सोवन्नी भोग हैं कोउ संकै न रष ।
मरत वार कीछु नही मुडी दुइ सीर पाक ॥
जो नर कथ कहे चीत लइ । जनम जनम के पतष जाइ ॥
जस देवन्ह म नारायन भोगी । तस ग्यानीन्ह म गोरष जोगी ॥
काया म जस ब्रह्म वोले । पुरुष म्ह तस गोवींद डोलै ॥
केसौ कहै विचारी के जो कोउ ग्यान भुलइ ।
राम नाम सवमे भल कहत सुनत तार जइ ॥

संग्र रोहीनी कै पोथी संपुरन समपंती भै ॥ जो देष सो लीष मम दोष न दीजे ॥ पंडित जन सो वीनती मोरी टुट अछ्छर खरेहु जोरी ॥त्ती पोथी संग रोहीनी कै पोथी ॥ जो सुनै जनम जनम वैकुंठ तरै ॥ अशतरी सुनै पुत्रक फल कलीव जनम जनम कंसो गछपवै ॥ पुरुष सुनै तो सव जस पव पोथी उतरी भोज गुअल पोथी शीष गंग वनी भगवन कनती मीती वैसाष सुदी १४ संवत ८३२ ॥ मलीष संपुरन ॥ ३४७६४७

विषय—महाभारत स्वर्गारोहण पर्व का हिंदी अनुवाद।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। केवल १३ पत्रे उपलब्ध हैं। जो [illegible] ही जीर्णावस्था में है। रचनाकाल ज्ञात नहीं। लिपिकाल दिया तो .. पर अस्पष्ट है। [illegible] संवत् ८३२ जो संभवत १८३२ वि० है।

रचयिता का नाम ग्रंथांत में केसौदास दिया है। अन्य परिचय अज्ञात है।

ग्रंथ की लिपि कैथी है और बहुत ही सदोष है। पढ़ने में अत्यंत कठिनाई होती है। भाषा अवधी है।

प्रस्तुत रचना के साथ "भैनमत के उत्तर" नामक रचना भी लिपिबद्ध है।

संख्या ६३ श्री रामगीतमाला, रचयिता—क्षेमकरण, कागज—[illegible], पत्र—[illegible], आकार—$१०\frac{१}{४} \times ५\frac{३}{८}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, [illegible]।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ श्री राम गीत माला लिख्यते ॥

आजु अजोध्यहि मा सब आयो कुज रूपति जस भूमि सनाई ॥
पुरुष पुरान चारि तनु धरिकै प्रगट भयो नृप तनय कहाई।
कीन्ह चहत प्रभु चरित सुहावन पावन परम सबहि सुखदाई ॥ १ ॥
आए गुरु वशिष्ट विप्रन्ह युत उचित कर्म श्रुति विहित कराई ॥
निज अभिलाष पाइ द्विज हरषे भूपहि आशिष वचन सुनाई ॥ २ ॥
पुर परिवार देशवासी सब मुदित मनहि मन अभिमत पाई।
सुमन वृष्टि नभ ते सुर छोरत जय जय शब्द चहू दिसि छाई ॥ ३ ॥
राम भरत अरु लछन शत्रुहन गुन प्रताप युत नाम धराई।
"क्षेम करण" दशरथ कौशिल्या सुकृत पुंज फल नाथहि पाई ॥ ४ ॥

अंत—

राम विदेहदुलारी जागेउ राम विदेहदुलारी।
कोइ सखि मुख मजन के कारण पात्र लिहे भरि वारी ॥ १ ॥
कोई दातुनि कोइ मुख पोछन पट कोइ सखि लेपनधारी।
कोइ अनुकूल दुकूल विभूषण धूप दीप कोइ न्यारी ॥ २ ॥
कोइ कोइ लै नैवेद्य विविध विधि कोइ सखि पान सुपारी।
कोइ आरती बजावत गावत छत्र चमर कोइ ढारी ॥ ३ ॥
या विधि कोटिन सखिन सयानी निज अधिकार सभारी।
"क्षेम करण" सियरामवदन लखि तन मन धन सब वारी ॥ ४ ॥

इति श्री क्षेमकरण मिश्र कृत श्री रामगीतमाला समाप्ता ॥६६॥

॥ चंचरीक ॥

सोहत सर चाप हाथ लीन्हे सब बन्धु साथ माथ नाथ मातु पाय आए प्रभु द्वारे।
विप्रन्ह के व्रात वदि और वरण सकल वदि लोक नयन चयन अयन वदिगन निहारे ॥ १ ॥
दिनकर कुल कंज भानु भवजलनिधि अदु जानु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
मंद मंद धरत पाव रापत सवही को भाव [illegible] [illegible] [illegible] मदन को निहारे ॥ २ ॥
मौलि मुकुट तिलक भाल भृकुटि वक विसाल कुंडल .. ..

विषय—बालकांड के अंतर्गत राम कथा (जन्म, बाल क्रीडा, विवाह [illegible] [illegible] क्रीडाओं) का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम क्षेमकरण है। अन्य परिचय नही मिलता। सक्षिप्त मे एक क्षेमकरण 'कृष्ण चरितामृत' के रचयिता के रूप मे उल्लिखित है। पर कहा नही जा सकता कि वे प्रस्तुत रचयिता से भिन्न है या नही।

रचना साहित्यिक है। कही कही आल्हा की सी शैली अपनाई गई है, यथा —

आजु अयोध्यहि मा सब आयो सुख सपंति जस भूति भलाई।

संख्या ६४. पेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र), रचयिता—खेम कवि, कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—५¾×४¾ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी सति ॥

॥ कवित्त ॥ पेमपचीसी

प्रथम पयानौ कीनू राम की रजा कू पाय सीता जू की सुधि कू सिधारे हनूमान जू ॥
जलनिधि उतरि उतरि तास तीर गये देपि दरवाजे जाई द्रुगम भयानू जू ॥
च्यारि कोस तै उठाई कंचन के कोट खेम चकृत ह्वै रह्यो सोचि असो वड़ो थानू जू ॥
सूक्षम सरूप धरि धस्यौ जाई लंका माहि सुधि न परत कित जानू जू ॥ १ ॥
नगर निहार्‌यौ रनवास देष्यौ ठौर ठौर गयो अकुलाई कहू नजर न आई जू ॥
रावन विलोक्यौ और रानी देषी सोवती जी जाकू आयो ताहि कव पायो रघुराई जू ॥
ढूढ़ि फिर्‌यौ और और आयो तव ताही ठौर त्रजटी जहा ही जहाँ सीता आनि पाई जू ॥
रूम रूम हरख्यौ जनम धनि मेरो आज अपियाँ सिराय फूल्यौ अंग न समाई जू ॥ २ ॥

मध्य—

तव वोल्यौ राजा रावन मरन हार भयो रै तू मरिवो विचार्‌यौ ताहि वोलिवे की डर रे ॥
वुधि वोछी वल वोछो वोछन के गुन यही सौ पचास मारि फूल्यौ येह तो मै वलु है ॥
अव तो पूरी परी कटक सव देष्यौ सुन्यौ आगे लरिवे कू गढ़ लंका सो नगर है ॥
आग्याकारी वादरो तू राम तेरो तपसी हे त्यू परी विलाधि होई वहे तेरो सव घर है ॥१३॥

अंत—

अनी अय्यार धार उरमार सूठी सवै जलहू न वूड़त मेरी मीचन पवेरो है ॥
तुम कूहू जतन वताउ जो पत्याहु मोहि मेरे मारिवे को जो उपाय एक नेरो है ॥
तेल घृत रूई लेह लपेटि मेरी पूछ सेती फूक देहु तौ मै मरुं वहा जीव मेरो है ॥
मन मारि हासी मुप उपरि उदासी देहै हनूमान वार वार लंक तै हेरो है ॥२३॥

विषय—हनूमान जी की लका यात्रा और वहाँ किए गए उनके वीर कार्यो का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम पेम है। अन्य वृत्त अज्ञात है।

प्रस्तुत ग्रथ जिस हस्तलेख मे है उसमे निम्नलिखित रचनाएँ भी सगृहीत हैं :—

१ व्रह्म जिज्ञासा—उपनिषद् भापा—शकराचार्य कृत
२. खेम पच्चीसी (हनुमान चरित्र)—खेम कवि कृत
३. जगन वत्तीसी—जगन कवि कृत
४ अगद रावण सवाद
५ ध्यान कृष्ण शकर
अर्धांगी नाममाला—रघुनाथ कृत

संख्या ६५. महाभारत (शल्यपर्व), रचयिता—गंग कवि, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—[illegible] इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—[illegible], वाराणसी।

आदि—............... ...

सएना सौपि कीहेउ सएनानी। अपनी बुद्धी महाबल जानी॥
मोहि भरोस रविनदन केरा। दिन उठाइ तेन्ह पन्ह घनेरा॥
रन समार्थ देषउ नहि कोई। अब सएनापति सोइ होई॥
अमर अजीत समर गुनसारा। भारथ मह सब तुम्हहीं सभारा॥
दारुन दार्य द्रोन कर जैसा। ओन्ह ते प्राधय अबहि तुम तैसा॥
समय समूद्र उतार कि पुनि पुनि करौ निहोर।
काटहु बधव सकठ स्वामि काम यह मोर॥
राजही बहुरी कहे अस्थाना। सुनहु नृपति कन्देउ तुम दामा॥
जो छल बल गुन पीतई सीपाई। सो नहि रघवेउ धाप लगाई॥
सूरन्ह कर होवेउ बल हार्ता। रन मह ऐठी प्रलए कर बार्ता॥
सर्व भार सहवेउ एहि देही। तुम्ह ही लागि जिम्र प्रान सनेही॥
जो सर्स तुम्ह मोसउ काहा। तासर उत्तर सुनह नरनाहा॥
सल्य महा नृप बल कइ रासो। विद्या निपुन अत्र आख्यानी॥
लीन्हे काल बाज्र कर जैसे। सब्रुहीवत सल्य नृप तैसे॥
·o· o: o.

अंत—बदन बदन कीन्हेउ बीजए भीराम की कोन्ह।
"गंगाराम" कह सल्य ही नृप सएनापति कीन्ह॥
जौ सब साज बामि कइ कहऊ। पारन पहुचउ अवर्य रहऊ॥
तेहि सग्राम विपम मह ऐसे। चल जतुन्ह तारापति जैसे॥
चीत मन चार्न व्यास कर गहऊ। रन बहु रग तमासा यहऊ॥
समर भयानक बार्नउ ताही। महा गाह जनु लोलधी माही॥
हाथी घोर सब जूझि सीरानी। कादप मानु रकत तहा पानी॥
:o: :o: ·o.
आगे काल ठाढ रह कोह न कांपत अंग।
भाषा बानि प्रेम सउ कहेउ सत्य वध "गंग"॥
इती श्री महाभारथे सल्य पार्व बार्नन गदा जुध्य सल्य बधनो नाम प्रथमो
:o: .o: :o:
चौदह चारि अधिक दिन गएली विधि बीति।
कह "कवि गंग" जुधिष्ठिर दंठे सबुहि जीति॥
:o: :o· .o
बधौ देस पचाल ही एक द्रोनी गर्व।
सीधी अकासक विरचा पहेसि गजि बहु गर्व॥
कृत ब्रह्मइ अस्थामइ ताहा। अब पौरष तोहार नरनाहा॥
:o: .o: ·o:
—अपूर्ण

विषय—महाभारत शल्य पर्व की कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञात नही। ग्रथ आदि और अंत मे खडित है। केवल पत्र सख्या ३ से पत्र सख्या ४२ तक के पत्रे उपलब्ध हैं। रचयिता का नाम गगाराम "गग" है। एक स्थान पर "गगाराम" एव दूसरे स्थान मे 'गग' दिया है। अन्य परिचय नही मिलता। धर्मदास और श्रीपति कृत महभारत के कुछ पर्वो मे "गग" का भी उल्लेख है। धर्मदास के पुत्र कहकर उल्लेख किया है और श्रीपति ने भाई कहकर। सभवत उनके अनुसार उल्लिखित 'गग' प्रस्तुत गग ही है। एक बात का सदेह अवश्य होता हैं, वह यह कि गग की कविता के सबध मे जा प्रशसा उन लोगो ने की हैं, प्रस्तुत ग्रथ को देखकर उस सबध मे निराशा होती है। हो सकता हैं कि प्रस्तुत रचना उनकी आरभिक रचनाओ मे से हो। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत ग्रथ को लिपि इतनी भ्रष्ट है कि उसके लिये लिपिकर्ता को ही दोप दिया जा सकता है। यदि सावधानीपूर्वक कविता का सशोधन करते हुए ग्रथ को पढ़ा जाय तो गग की कविता की सार्थकता सिद्ध हो सकती है।

उदाहरणार्थ

सएना सौंपि कीहेउ सएनानी। अपनी वुद्धि महावल जानी॥
मोहि भरोस रविनंदन केरा। दिन अढाइ तेन्ह कीन्ह अगेरा॥
रन समार्थ देषउ नहि कोइ। अव सएनापति रोरेही होई॥
:o: :o: :o:
दारून दार्प कर जैसा। ओन्ह ते अधिक अर्वाहि तुम तैसा॥
:o: :o: :o:

शुद्ध पाठ

सैना सौंपि किएउ सैनानी। अपनी वुद्धि महावल जानी॥
मोहि भरोस रविनदन केरा। दिन अढाइ तिन्ह कीन्ह अंगेरा।
रन समर्थ देपउ नहि कोई। अव सेनापति रौरेही होई॥
:o: :o: :o:

प्रस्तुत ग्रथ सभा के लिये प्राप्त कर लिया गया है। यह समोगरा गाँव से ही प्राप्त हुआ है, जहाँ धर्मदास और श्रीपति के महाभारत मिले हैं।

संख्या ६८. गोदोहन लीला, रचयिता—कवि गग, पत्र—२ (५४ से ५६), आकार—४।×६॥ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७, अपूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, थी विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० व०, पु० स० ३।

आदि—श्री कृष्ण श्री गोपी जन वल्लभाय नमः॥ गोदोहन लीला गंगकृत॥
श्री हरि गुरु की आज्ञा पाउ। कछु कोतुहल गोकुल को गाउं॥ १॥
नंद महर नदी सुर राजा, जिनके जसु के बाजे बाजा॥ २॥
धन्य सुधन्य जसोमति रानी। सोई संमृत वेद पुरान वखानी॥ ३॥
मध्य—
कहत गोपाल नंद सो धाय, वावा जु हमे दोहन सिखाय॥१०॥
नान्ही सी नोई करवाउ। छोटी सी दोहनी मगाउ॥१०॥
सुधि गाय मेलि कर दोहुं। सुनि वावा होके वरि कहुं॥१२॥
विपय—श्रीकृप्ण की गोदोहन लीला का वर्णन है।

संख्या ६७. चौर्य लीला, रचयिता—गग सरन, पत्र—६ (प० ११ से २२ तक), आकार—४।×६॥ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—२२, परिमाण (अनुप्टुप्)—६८, पूर्ण, रूप—पुराना, वद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७, पु० स०—३।

आदि—श्री कृष्ण गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ चौर्य लीला ॥
श्री गोकुल महिमा परथम रची । तनुरज लछमी चित्रोधा वटी ॥ १ ॥
घर घर घोष घमर के एमे । मादो वादर गरजें जैमे ॥ १ ॥
गोकुल महिमा कह्यो न जाय । मूरतवत रहे सुख छाय ॥ २ ॥
अचरज एक मेरे मन होय । यो व्योरो समुझावो सोय ॥ ३ ॥

मध्य—
गोपी एक स्यान जु कीनो, छींके दधी को मथना धर्यो ॥५२
परा अलोखल आनि वनायो । वा उपर ले मगरा चढायो ।५३
ता उपर चढे नंदकुमार । करन पोहोचे कियो विचार ॥५४
वाको छेद लकुटी सो करे । दोले श्रीवदन कर धरे ॥५५

अंत—
जो इह लीला रुचि के गावे । व्रज वासी मे वासो पावे ।१०७।
सोधि सोधि देख्यो सब ठोर । व्रज सो व्रज पटतर नही श्रोर ।१०८।
सहज होय व्रज को जो उपासी । ताको कृपा करे व्रजवासी ॥१०९॥
श्री गुरु चरन कृपा ते कहे । 'गंगसरन' भक्तनि के रहे ।११०।

विषय—श्रीकृष्ण की दधि, माखन चोरी लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य ग्रंथ भी लिखे हुए है ।

संख्या ६८ क. ज्ञानकथा रहस्य, रचयिता—गगा गिरि, कागज—आधुनिक, पत्र—१६, आकार—५३/४ × ३३/४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ वि०, प्राप्तिस्थान—प० जगदीश शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

मयाध्यक्षेण प्रकृति सूयते सचराचर ।
हेतुनानेन कौंतेय जगद्विपरिवर्तते ॥
इतिस्मृते ॥

अनादि अनिर्वचनीय त्रिगुणात्मिकामाया ॥ अनादि नाम उत्पत्ति रहित अनिर्वचनीय नाम किसी प्रकार कही न जाय त्रिगुणात्मिका नाम सत रज तम गुरी है स्वरूप जिसका माया आत्मस्वरूप के अज्ञान का नाम है यह माया चिरकाल से ब्रह्म के एक अंश मे प्रगट पडी रही एक समय ब्रह्म साक्षी माया की ओर दृष्टि करते भये यथा समान मे माया को जानता भया निर विकार विषे सूर्य के प्रतिबिंव की नाई जैसे जल मे प्रतिबिंव पडता है तैसे ही ब्रह्म साक्षी माया मे प्रवेश करता भया यथा लोहे और अग्नि की नाई अथवा चुम्बक पत्थर और लोहे और अग्नि की नाई इत्यादि चुम्बक पत्थर और लोहे की नाई सत्ता स्फूर्ति सामान से माया मे देते भये तब माया चैतन्य की नाई होकर इस्त्रवित ब्रह्म के सन्मुख खडी होती भई ।

अंत—और आप स्वयं प्रकाश होवे और दृष्टा होवे आनद उनको कहते है जो निरुपाधिक व निरतिशय सुख रूप होवे सो सत चित आनंद लक्षण आत्मा है मेरे मे घटते है मै आत्मा हूं ऐसे निश्चय करने से मुक्ति होता है ॥

इति स्वामी गगा गिरि विरचितं ज्ञान कथा रहस्य संपूर्ण ॥

विषय—ब्रह्म ज्ञान का उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नही दिया है । लिपिकाल सवत १९३४ है जो प्रस्तुत रचना के आगे "ज्ञान कथा" की पुष्पिका मे दिया है । ये ग्रंथ एक ही हस्तलेख मे है ।

रचयिता का नाम गंगागिरि है। अन्य परिचय नही मिलता।
रचना गद्य मे होने से महत्वपूर्ण है।

संख्या ६८ ख. ज्ञानकथा कर्म निर्णय, रचयिता—गगागिरि, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—६६, आकार—५½ × ३७⁄१६ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—पडित जगदीशप्रसाद शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला–इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

गीता भारत को मता आचारज की जुक्ति।
अष्टावक्र वसिप्ट मुनि नहीं आपनी उक्ति॥ १॥
शिव गीता अरु श्रुति को दीना वहु परमान।
ज्ञान कंथ की इस्थिती एतने मे व्याख्यान॥ २॥
ओ तत्सत् ॥ नमो नमो उस देवि को जि ब्रह्म विद्या व्याख्यान।
सुगम जिसके प्रशाद से हैाइ होत पुज्ञान॥ ३॥
नमो नमो श्री देवियो ब्रह्म विद्या व्याख्यान।
केन उपनिपद मे निश्चैं है मुमां है भवती जाना॥ ४॥
यथा तथा उपदेश से मुक्त होय शुद्ध वुद्ध।
सर्वायुः जिज्ञास कर जाय नर्क दुर्वुद्ध॥ ५॥

अत—सपूप्ती आनंद भोग को प्राज्ञ भोगता नित्य।
आत्मा साक्षी सर्व का निश्चैं जानो मित्त॥१५॥

इति श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यस्य किंकरेण गङ्गागिरिणा संग्रह क्रियता ज्ञान कंथयां कर्म निर्णय नाम प्रकरण प्रकरण समाप्ताम् शुभमूयात॥७ दोह १३

विषय—ब्रह्म ज्ञान का उपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६३४ वि० है।
रचयिता का नाम गगा गिरि है। उनका अन्य परिचय नही मिलता।

संख्या ६६. शव्द या वाणी, रचयिता—गगा दास, कागज—आधुनिक, पत्र—१५६, आकार—६⅓ × ६½ इच, पक्ति (प्रति पृप्ट)—२१७, परिमाण (अनुप्टुप्)—२६५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६४३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० जगदीश प्रसाद जी शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट–फूलपुर, जिला—इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सतगुरु चरन कमलेभ्यो नमः ॥ अथ शव्दा वाणी लिख्यते। अथ मंगलाचरण ॥ जमख ॥

जैं जैं जैं जैं जैं जैं जैं जैं जैं जैं गुरु गोंविंद।
जैं जैं व्यक्ता व्यक्त अनामैं नाम अनतऽनभौ वरद॥
जैं नरहरि जैं मीन वराहं जैं नर सिंह अरि छिन्न।
कच्छ रूप हरि जैं जैं वावन परसराम जैं रघुनंद॥ २॥
जैं वलराम राम जैं कृष्ण जगन्नाथं परमानंद।
जैं गिरधर कुलगोप उधरन सुरपति गर्व कियो मंद॥

:o: :o: :o:

जै जै अगुण सगुण गुरु रूपं मोह विनाशन रवि वृंदं ।
"गंगादास" दास पन्हि प्रभु श्री कासी पदकंज वंद ॥ ६ ॥

मध्य—प्रेम छके हरिजन मतवारे ।
भूलि गई कुल कांनि बडाइ लोक लाज परीहारे ॥ १ ॥
लागो नेह नेम सब छूटयो सुधि न रहि तीथि वारे ॥ २ ॥
दुषन सुपन अस्तुति निंदा फूकि दियो भ्रम सारे ॥ ३ ॥
पद पंकज मन मधुप लोभांनों जन गंगा विधि टारे ॥ ४ ॥ १६४ ॥

अंत—बीगरी सबै बनि जाए : जो पै सब तजि सरनै श्री हरि ॥ १ ॥
नर तन दुर्लभ दीयो कृपानिधि तासो नहि विसरैये ।
लोक लाज कुल कानि मान तजि हरि चरनन चित लैये ॥ २ ॥
जोग जग्य तप साधन नाना ताकी आस मिटैये ।
काम क्रोध मद लोभ मोह बस तिन्ह सग कबहू न रहीये ॥ ३ ॥
लष चौरासी भ्रमि भ्रमि आये अब नाही भरमैये ।
गुरु गोविंद पद सेव निरंतर मिलि संतन गुन गइये ॥ ४ ॥
विषये वासना परिहरु मनु यो सहज विरति मन गहिये ।
कासीराम कहै सुनु गगा बहुरी न भौजल अईये ॥ ५ ॥ ४६६ ॥

श्री सम्वत १६४३ ॥ दोहा ॥ अगहन मास चतुर्दसी कृष्ण पक्ष गोधूर ।
रामेश्वर दास लिखत भयो गगा सब्द भरपूर ॥

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सं० १६४३ दूसरी रचना से लिया गया है, पर ग्रंथ का ही लेखन काल विदित होता है । रचयिता का नाम गंगा दास है । इनके गुरु कोई कासीराम थे और वृत्त अप्राप्य है । इतना स्पष्ट है कि ये संतमार्गी थे और हिंदू मुसलमानो की एकता के समर्थक थे । प्रस्तुत हस्तलेख के अंत में रामकृष्ण दास रचित पदावली भी लिपिबद्ध है ।

संख्या ७० क. तिथि प्रबंध, रचयिता—गंगादास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१० × ४$\frac{५}{६}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—४८, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री परमातमने नमः ॥ श्री सत गुरु चर्ण कमलभ्यो नमः ॥ अथ तिथिप्रबंध लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

वंदि सच्चिदानंद घन सर्वातीत अनाम ।
नेति नेति श्रुति कहि थक्यो तासो करौ प्रनाम ॥
श्री सतगुरु पद उदार पतरज बंदौ धरि सीस ।
जेहि प्रसाद अनुभौ विमल दरसै उर जगदीस ॥
संतन पद बंदन करौ तन मन अर्पौ तेह ।
दीन जानि जन करि कृपा दीजे हरिपद नेह ॥
सर्वभूत हरिरूप मय पद बंदौ सतभाय ।
करौ मंगलाचर्ण को बार बार सिरनाय ॥

सोरह तिथि वर्णन करौ ज.नै विमल विचार ।
सुनि समुझै जन मुदित मन निगमागम मत सार ॥

अंत—
॥ दोहा ॥
जिन पाचौ को वसि कियो धन्य धन्य सोइ संत ।
सुषसागर विलसत सदा गंगा रहत सुतंत्र ॥

॥ कुंडलिया ॥

षष्टी षट सास्त्रन वर्णन कियो अष्टादस श्रुतिचार ।
एक ब्रह्म दूजा नही यह कीन्हो निरधार ॥
यह कीन्हो निरधार जक्त भ्रम भूत नेवासा ।
तासो कियो सनेह वृथा मन वाध्यो आसा ॥
उलटि लषौ निज रूप मा रत न छूटै कपि मुश्टी ।
"जनगंगा" मन अमन तव कह रहि षष्टी ॥
—अपूर्ण

विषय—पद्रह तिथियो का दार्शनिक वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । केवल आरभ के तीन पन्ने उपलब्ध है । रचनाकाल लिपिकाल अज्ञात हैं । रचयिता का नाम गगादास है । 'दोहावली' भी इन्ही का रचना है ।

संख्या ७० ख. दोहावली, रचयिता—गगादास, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१० × ४$\frac{५}{६}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४२, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री परमातमणे नमः ॥ श्री सतगुरु चर्णकमलेभ्यो नमः ॥ मगलाचर्ण दोहावली लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

पराब्रह्म परमातमा सव्व परा कहै वेद ।
अनेक वार वंदन करौ गंगा छूटै भेद ॥ १ ॥
गुरु पद रज अंजन करौ तिमिर नसै भ्रम जार ।
वरनौ विमल दोहावली अनुभौ श्रुति को सार ॥ २ ॥
सव संतन वंदन करौ हरिजन हरि के रूप ।
जेहि प्रसाद अति विमल मति दरसै रूप अनूप ॥ ३ ॥
अषिल लोक है ब्रह्म मे कंचन भूष्ण न्याय ।
वार वार वंदन करौ गंगा सीस नवाय ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

मंगल मोद निधान हरि गुर संत न अपर कोउ ।
गंगा धरि उर ध्यान सकल सुमंगल सिद्धि सव ॥

अंत—॥ जीवरूप वर्णनं ॥
घन वरसत अति विमल जल समल भूमि संग होय ।
त्यौ आतम अति सुद्धि सुचि माया रंग रंज्यौ सोय ॥६०॥
ईसु अंस है आतमा सत चित आनंद रूप ।
देह मान भ्रम द्रिढ कियो आनि परचौ भौ कूप ॥६१॥

देह मान भी बीज है परमान भ्रम जान।
कर्म मान वचन परची भयो बिन धन दान॥६०॥
कर्म मान छूटव कठिन अधिक अधिक अज्ञान।
पुहु पिक बान बेद की सुनि सुनि का ज्ञान॥६३॥
देहमान मनगढ किधो मोह प्रबल दल ठौर।
कामादिक भट संग लै आसा त्रिष्णा दौर॥६३४॥
फंस गई.......................

—अपूर्ण

विषय—ब्रह्मज्ञानोपदेश वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खंडित है। [illegible]। रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या ७१. पोथी मैंनसत कै उतर, रचयिता—[illegible] (?), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११६, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १८३६ वि० (?), प्राप्तिस्थान—पं० राम आनंद जी तिवारी, ग्राम—[illegible], पोस्ट—[illegible], जिला—[illegible]।

आदि—पोथी मैंन सत कै उतर

॥ दोहर ॥

जेही कली वेलसीए भ्रम दलगज नधन भए॥
सीपेह॥ प्रीयीमी चौन हातनर हैवह [illegible]॥ १॥
देउ पाव इह सनसर कली गउ तुम्ह धन्हे पाअर॥
पनी जैसे बुल बुल होइ। जो अब लो रह न दोइ॥
पहीले दौ जा रएउपन। अवत देषउ जपन तन॥
एक दुतरजनी रजन कीन्ह। प्रीयीमी हन तीन [illegible]॥
अपुन एक दिन चलु चलु फ। भुप अपर नमुनी न फर॥
भुअ फेर भौरहर कीइन [illegible]।
सभन रोइ लउ परोरीए जौन हीत गनार॥
कौडी कौडी कै जोरी भुए फ [illegible] पचुरे।
गए गडे तदारोरी मन पटतने पधाए॥
सतन कुवर नम्र पे दुत। कपट रुप [illegible] पुत॥
बैर तन मलीनी पह् हकारइ। सत सौं मैंने ही देह [illegible]॥
दुत वचन जौ मनही पउ। तोही मलीनी सोन मा [illegible]॥
मलीन (?व) चनदुत कर लीन्हा। कपट रुप नव छन मे दीन्हा॥
जोहन मोहन लीन्ह सभरी। टोनहर पहीरेसी मरी॥
कपट रुप चलु दुतो मैं मैंन दे [illegible]।
जेही वीथो रुपं मत सौं [illegible]॥
जेहीरुपे करतरत को [illegible]।
जो लगं सनसर नधन दुरह च पीत॥
मलीनी जइ मदील मो पैठी। नमं जह [illegible] बैठी॥
चप को फूल चौनर हर। दीन भेट भो [illegible]॥
हसी कै पुछु मैंन रनी। पह गदन [illegible] [illegible]॥

कह मलीनी सुनु चलती मैंन । अनचीन्ह कस वोलसी वैन ॥
तोरे पीतै धइ मोही कीन्हा । मैं तोही धरै असथन दीन्ह ॥
मन न रहे चीत गहवरे अगी उठी तन मोही ।
सवरीन्ह चीत उपजे भेटल अइउ तोही ॥
तसौ कीजे नेह जसौ और नीवहीए ।
वोसौ कौन सनेही टुट कंच सुत जेउ ॥ २८

:o: :o: :o:

अंत—

मैंन रतनी नीअर वोलए । धरी झोटी कुटनी नीहुरइ ॥
मुड मुड कैसे दुरदीन्ह । कल पीअर दुइ टीक दीन्ह ॥
गदह अनी कै धइ चढइ । हट हट सव नगर फीरइ ॥
जो जस करै सो पवे तैस । इन कतन करमपन ऐस ॥
लइमकोह तौलवे वन । पोदउ तोइ लोनीएधन ॥
सत मैंन कथीर रह सघन रवफुर ।
कुटनी मरी नीकरी कै कीन्ह "गंग" केवर ॥

पोथी उतर मैंन सत कैइ गंगराम वनीसो लीष वनी सो लीष मम दोष न दीजिए पडति सो वीनती मोरी तुक अछर मे रएउ मम दोप न दीजिए ॥ संवत् ८३२ मीती जेठ सुदी छठ क लषि ।

विषय—सतन कुवर के दूत के कहने पर रतन मालिनी ने लोर की पत्नी मैंनके सत को डिगाने की वहुत चेष्टा की, पर असफल रही । विरह के अवसर पर वारह मास के कष्टो का वर्णन कर पर पुरुप से प्रेम करने के लिये उसने मैंन को उत्साहित करना चाहा, पर मैंन तिल भर भी अपने सत्य से विचलित नही हुई । अत मे मालिनी की पापयुक्त वातें जब सहन न हो सकी तो उसने उसके केश मुडा करके सेंदुर से सिर रगा दिया, माथे पर काले पीले टीके लगा दिये और गदहे पर विटलाकर उसको हाट हाट फिराया । इस प्रकार दुर्गति कर उसको निकाल दिया ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता और इस कृति के विपय मे देखिए विवरण अश मे गगाराम (स० ६) और उसकी पाद टिप्पणी ।

ग्रथ भीम कृत 'महाभारत स्वर्गारोहण पर्व' के साथ एक हस्तलेख मे है । रचना प्रेम कथात्मक काव्य की दृष्टि से उत्तम है तथा सग्रह करने योग्य है ।

संख्या ७२. शालिहोत्र प्रकाश, रचयिता—गजन सिंह कायस्थ, कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—$६\frac{६}{१६}$ × ५ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—...............सो कहिये सिसु हंत ।
अमरीक महिपाल को कीन्ह्यो पुत्र निहंत ॥१६॥
॥ तोटक छंद ॥
जेहि वाजि की आंपि अहै कवरी । कहि दोपु सोहै अकल्यान करी ॥
मानधाता महीप के सोई रह्यो । विन कारण को सम अग्नि दह्यौ ॥१७॥
कयेर जुगलोचन होइ जहां । यह चक्र कहावत दोषु महा ॥
रहिशो हय पांडव भूपति के । वणमाहि फिरो जितांडव के ॥१८॥

अटुवा परि भावरि जंत्र लसै । तेहि मनुजदोन गुन्यौ प्रत्मै ॥
इमि दोष को वाजि जहा रहई । तह दूसर वाजि नहीं रहई ॥१६॥

॥ सोरठ ॥

जेहि वाजि के केश दूह वोर ठम्वन नहे ।
वहु लोचण दोपेश राज चग्र पो घानिये ॥२०॥
ठौर नैर जेहि ठट जेहि वाजो घोटी मुला ।
सोवह न्याही उट नाग कियो महिपाल नृप ॥२१।

॥ पयगमछद ॥

नौन तुरग के टीक महि मधिमावगी ।
अरप वीनि कामसो चित्त ना धरी ।
जासु नजीक रहै तासु पुत्र जीवै नही ।
सग्रामै मं फौज लै भजै सु यहा यहा ॥२२॥

:o. :o: :o:

॥ सोरठा ॥

सालिहोत्र प्रकाश दोपादिक जे जानियौ ।
इते हय दोषो त्राश ग्यानमाण शव जानिहौ ॥४०॥

इति श्री सालिहोत्र मुनि समाप्त विरचिते गजनमिध मायन्ये वाजि दूषनो नाम प्रथमो प्रकास ॥ १ ॥

अत—अथ करन रुज लछनोपचार

जोतौ कर्ण कार्जा वहै पघकारी ।
सो पांचे लवर्ण वचै कौर थारी ॥
वलै चचु मत्र समै स नवं लीजे ।
चुरै कै सुतो कर्ण मे कीजि पीवै ॥२८७॥

॥ अथ जगस्कलछन ॥

॥ दोहा ॥

जो घोरै ठाढौ रहै लोटै नये............

—अपूर्ण

विषय—शालिहोत्र विषय का वर्णन ।

ग्रथ अध्यायो (प्रकाशो) मे लिखा गया है । प्रस्तुत ग्रथ मे छट् प्रकाश [illegible] हैं—

१ प्रथम प्रकाश—घोडा के दूषणो के नाम और वर्णन—पत्र १ से ५ [illegible]
२ द्वितीय प्रकाश—घोडा के भूषणो के (सद्‌गुणो) के नाम—पत्र ५ से ६ [illegible]
३ तृतीय प्रकाश—घोडो के मूल रोग का वर्णन और उपचार—पत्र ६ से १६ [illegible]
४. चतुर्थ प्रकाश—घोडा के ज्वरादि रोगो का वर्णन और उपचार—पत्र १६ से १८ [illegible]
५ पचम प्रकाश—षट् समय प्रकाश वर्णन (षट् ऋतुओ मे [illegible]) पत्र १७ से २४ तक
६. षष्ट्म प्रकाश—विष तथा वातादि रोगो का वर्णन पत्र [illegible]

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आदि के दो पत्रे एव अत मे [illegible]

है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम गजनसिंह कायस्थ है। प्रत्येक अध्याय के अंत मे एव पुष्पिका मे इस नाम का उल्लेख है। ग्रथ नकुल प्रबध के आधार पर लिखा गया है।

पित्त अधिक कुवरनण इनसो जीवै दशमाश।
नकुल प्रबध विलोकिकै गंजन करत प्रकाश॥१३८॥

संख्या ७३. सुवहृत्तहार (? सुवृत्तहार), रचयिता—गजराज (बनारस), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—१० × ५ $\frac{३}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८३६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रमाकान्त उपाध्याय, ग्राम–महरेव, पो०–गुतवन, जिला–जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥ अथ सुवृत्तहार लिख्यते॥ दोहा॥
सिद्धि करनि जग जननिको या मै नाम सनाथ॥
राजति वृत्त मुकुतानि मैं मनि सरोज सित गाथ॥१

॥ सवैया॥

गोइ लिए गिरिजा गननायक है अपने जन की प्रन पाली॥
छूटी लसै आम कै सुकपोल मैं मानो विधुं हुइ की परनाली॥
पान के हेतु वितुंड भयो "गजराज" पयोधर मैं मति साली॥
कंचन कुंभ अमी सों भरे मनो रक्षक बैठो है तक्षक ताली॥२॥

॥ सोरठा॥

गना धियै १६०३ गति वान वरस माघ सुदि पंचमी॥
गुरुवासर अभिराम पूर्व भाद्र उडुपरिछ जुति॥३॥

॥ दोहा॥

सेस महेस अगसि पुनिसै तव भाम उदार॥
इन्ह के पद पंकज प्रनै रच्यौ सुवृत्त कोहार॥४॥

॥ सोरठा॥

तिहि मैं कहि सरि चारि गल विचारि प्रत्यै सहित॥
विय कल वृत्त निहारि तीजी वरन चतुर्थितुक॥५॥

॥ दोहा॥

लघु गुरु पुनि प्रस्तार कहि सूची और पताल॥
नप्ट उदिप्टरु मेरु पुनि सध्वज मकटी चाल॥६॥
उभै छद अरु भेद तुक कहे जे पन्नग राव॥
तिहि सवहों वरनन करों कवि चित कों प्रद चाव॥७॥
लघु वोलिवो अनुधस्वर दीर्घ वोल गंभीर॥
सरल असरल सरूप हैं इक दै कल क्रम धीर॥८॥
लघु दीरघहि पसारिए कला वरन जै होए॥
ताही सों प्रस्तार करह अहिनायक मुद मोय॥९॥
जहा गलादि गलांत को निर्नै है मतिमानु॥
ताही कों सूची कहैं कविकुल कैरव भानु॥१०॥
गल संख्या को ज्ञान जहँ होय सुकवि सिरमौर॥
तिहि को नाम पताल धरि अहिप गयो निज ठौर॥११॥

बिनु देखे हीं भेद की रुप प्रगट करि देय॥
नष्ट ताहि को जानियो पत्रगेन मन मेय॥१७८॥

अंत—॥ १७९ ॥ वार्त्ता ॥ यहाँ कथिनपद नामिप्राय नाहीं ताते नाटानुप्रास के अभाव सों पुनरुक्त ही है याको सर्व मतिमान छंदोविद आचार्जन की आग्या करि केवल कुंडलिया में साधरन "जमक" कहत हैं सो जानियो इति ॥ दोहा ॥

दै दोहा गज ८ अहि ८ भुजग कलपं विन्नि बपानि॥
जलधर छद फनिद्र कह कुंडलिया गति आनि॥१८०॥

॥ दोहा ॥

सत्ताइस कल अत लहु सोरह रुद्र विराम॥
अपा छंद कवि चद................

—अपूर्ण

विषय—पिंगल ग्रथ।

रचनाकाल

गनाधिपं १९०३ गति बाम बरस माघ सुदि पचमी॥
गुरु वासर अभिराम पूर्व भाद्र उडुपरिघजुति॥ ३॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। समस्त चौतीस पत्रे उपलब्ध हैं। रचयिता "गज-राज" हैं। आप बनारस के रहने वाले थे। अन्य कोई परिचय नहीं मिलता। रचनाकाल सं० १९०३ वि० है। लिपिकाल अज्ञात है। ग्रथ देखने से प्राचीन प्रतीत होता है। अनुमानतः वर्ष दो वर्ष पश्चात् की लिपि होगी। ग्रथ मे काव्य नियम एव अलकार आदि का भी वर्णन है।

संख्या ७४ कोकशास्त्र, रचयिता—नगेंद्र (?), कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—$९\frac{१}{२} \times ४\frac{३}{४}$ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६४, पूर्ण रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री अमरनाथ मिश्र, अनवरपुर, पा०—सोइंगा, जि०—जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुचरण कमलोभ्योनमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ लिख्यते कोकशास्त्र ॥

चित्र रुप सम चित्रिनी अति विचित्र रस रीति॥
चित लायेती सब काम तेलि निरपि गीत सगीत॥ १॥

॥ छपै छद ॥

अमल कमल दल बरण कछु लछन पजन वर॥
मधुर मधुर मुष बचन स्याम कंचुको सुदर॥
लघु दीरघ नहिं अंग अवत नागय जनावत॥
मायावत अति होति पुहुप परिमल मन भावत॥
ग्रीवं कपोल घुंघुट तुरीया गति गति गएंद आनंद जेहि॥
बिवि कुच नितव कर पीन कटि केदली पम जिमि जघ तेहि॥ २॥

अंत—॥ अथ थंभन विधि ॥

अजया दूध सेहुंड लजाहु जरी पाइ कर पद नाभी जो लेपिए ॥ थभन लेइ छपिदाइ ॥ अथ दन प्रकास चूरन ॥ तालमपन मूसलि सोटि भगिरा पाटर के बाधु बीज समनंध मिर्च सम मिलाइ वास सतावरी मोचरस औमे लेहसम पाउ जानि सीत दूध सो पीजिए दा हुलसो रसं जो जानि ॥

इती श्री कोकशास्त्रं संपूर्ण लिति...... ।

विषय—कोकशास्त्र वर्णन।

संख्या ७५. सगुनौटी (अंकार वल), रचयिता—ऋपि गणराम, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—७$\frac{१}{१०}$ × ३$\frac{४}{१०}$ इच, पक्ति (प्रति पष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०, पूर्ण, रुप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२०, प्रवि०, प्राप्तिस्थान—प० हनुमतदत्त विपाठी, सनातन धर्मोपदेशक, ग्राम व पोस्ट—इस्माइल गज, जिला—इलाहावाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॐ नमः ॐ नम० अंकाल वल लिष्यते ॥ ॐ नमो भगवती कूष्य मांडनी सर्व कार्य प्रसादनी सर्व कार्य साधनी सर्व मित्र प्रकाशनी एह्येहिस्वश्वरे दर्शहि लिभतागिनी सत्प्रतं ब्रूहिश्वहा ॥

:o: :o: :o:

२१११ मुण हो पृछक तेरे एक एक एक ऐसा पासा आया ते ते आसापास है जो तेरे शत्रुकै नास होयगा और रोजगार मे भी धान भी पावैगा ॥ ११२ सुण हो पृछक तेरे एक एक अरु दोय ओसा ओसापासह आया ॥ ताते विषै आसापा आया तिससे यह काम छोड और काम कर ॥ और तेरे दिल मे पाप है ॥ ताते कार्ज सिद्ध ना होगा ॥

अंत—४४४ सुनिहो प्रस्न तेरेऽध्यारऽध्यार ऐसा पासा आया ताते जो विचारता है सब सिद्धि होयगा सीता वीसेती परदेशोशी मिलापु होयगा ठिकाने लाभ होयगा धनी गम पुत्र प्राप्ति राज्य सनमान मनो वांछित सिद्धि होयगा वहुत अच्छा फल आया इति श्री सगुनौटी ऋषिगणराम की भली मिलै है ७ जो प्रति देषा शो लिषा मम दोश न दीयते दशषत दुरगादत्त दुवे मिती कार्तिक वदी ७ संमतु १६२० पठवीं राम शहायतेवारी ॥

विषय—शुभाशुभ फल वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल ज्ञात नही, लिपिकाल सवत् १६२० वि० है। रचयिता का नाम ऋपिगणराम है। अन्य परिचय अज्ञात है। ग्रथ की भापा पुरानी खड़ी वोली है। अत इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

संख्या ७६. शकुनावती, रचयिता—गिरिधर, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—८$\frac{२}{१०}$ × ४$\frac{५}{१०}$ इच पक्ति (प्रति पष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भोलानाथ (भोरेलाल), ज्योतिषी, ग्राम—धाता, पो०—धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ शकुनावती लिख्यते ॥
गुरु गणपति गौरी गिरा गगा गकु गोपाल। गायत्री गिरिधर सुमिरि भाषत सगुन रसाल।
राति जो तीति रख करै फेकरै दिवस सियारि। मरै भूप दुरभिक्ष परि होवै देस उजारि।
सूर उदय जो प्रथम ही स्वान समिटि यक ठोर। उभे सिर लषि गेंगन दिसि रोवै करि रव घोर।
तौ जानो षट मास ही सोन होइ वह गाँउ। की ताको ठाकुर मरै विघन होइ तेहि ठाउ।
की कौनो अनयास ते चिता उपजै आय। निश्चै जानी अग्नि भय की कछु अवर नसाय।

। सोरठा।

जात्र समय जो पानि वरषै कछू अकाल मैं ॥
शात दिवस लौ मानि तव चलि एकै तीन दिन ॥
गहन सूर शशि भूमि चल औरो उलका पात ॥
इन्हान्ह काजे मानिए मरजाता दिन सात ॥

॥ चौपाई ॥

टूटं विटप गाज जो परं । मान दिवस याहू सों टरं ।
अठए दिन फिरि जात्रा कीजं । गुरु गणपति प्रनाम करि लीजं ॥

॥ छद ॥

तीतिर षजन हस सदा बाएँ चलं । स्यान स्याम मृग मोर बाम शनमुख भले ।
याँ बोलं कँहू चहु चलत दाहिने आयवं । एक बाज को जाय मिलै दल धायवं ।

॥ दोहा ॥

ससा साँप सेही सुयर इनके नाम निषिद्धि ।
वचन सुनें ते जानियो दरसन मे है सिद्धि ।

अत—

ब्राह्मण तिलक लिलार लगाए साधू हट समेत ।
छीपा रजक वसन धोए लटचारन आसिष देत ।
ए सब गुन सामुहे नीके सुनिए और बताऊँ ।
दरपन भरे थार सिहासन मधु घृत कांचन नाऊ ।
हरित साक गोमय माटी भीजी अरु कमल बधाई ।
पुरुष कध मे बाल वेद ध्वनि सोन रूप रे भाई ।
भारी सगुन छत्र चामर निरखं लिप मे जय जानौ ।
चना जुवारि धान गोहू अरु मूँग महा सुभ मानौ ।
पडिया भैंसिय पाल वारि की लादो भैंसा आवत ।
बैल चढी .. .. ।

—अपूर्ण

विषय—शकुन विचार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । अत के कुछ पत्रे लुप्त हैं । केवल मध्य के पत्रे प्राप्त हैं । देखने मे ग्रथ प्राचीन प्रतीत होता है । पत्रे लुप्त होने के कारण रचनाकाल, लिपिकाल, रचयिता और लिपिकर्ता आदि का कोई पता नहीं है । प्रारभ मे एक स्थान पर 'गिरिधर' आया है । इसी के आधार पर रचयिता को 'गिरिधर' मान लिया गया है ।

सख्या ७७. नहुष नाटक, रचयिता—गिरिधरदास, पत्र—४०, आकार—. × ४॥ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२० (?), लिपिकाल—स० १९२३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरौली, दि० बं० ७३, पु० स० २४ ।

आदि—॥ श्री गोपी जन वल्लभो विजयते ॥ दोहा ॥
नागर नट पट पीत धर जिमि घन विज्जु विलास ।
भव आतप को भय हरत होत सुखी सब दास ॥ १ ॥ मगलाचरण नाटक मादी ॥
कवित्त ॥ मेचक बरन वर जीवन निवास वर बधुजनि बोल नति मद मन्दहास ॥
सहित सहाय पर भजन की गति धरे अदर विराजे प्रगट लिये निवास ॥
हिय हरषित महा सारग धनुस धरे बरसत सरस पूरे रस अभिराम ॥
गिरिधरदास देखि नीलकठ नृत्य करे ऐसो हरो ताप देरे मन घेरे घनश्याम ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ४६ मातलि की ओर देखिकै ॥ नहुस ॥ सानंद ॥ दोहा ॥

देखनीय कमनीय अति उपवन यह रमनीय ॥
अहै कौन को सो कहहु लग्यो मोहि अति प्रीय ॥७३॥

मातलि ॥ दोहा ॥

यह सव रितु सोभा भरचो सुखमय पूरन काम ।
महाराज को विप्नि है नंदन याको नाम ॥७४॥

नहुस ॥ सानंद ॥ सीघ्र चलहु सीघ्र चलहु ॥ तव मातलि रथ चढ़ाय नंदन वन मैं गयो ॥ तहाँ की सोभा देखिकै नहुस ॥ सानंद ॥

अत—जयंत ॥ दोहा ॥ विधि विधुधर आदिक सवै सेवत प्रभु पद पद्म ॥ तासों गुनि अपनो भलो चलो चतुरभुज सद्म ॥७५॥ इद्र ॥ सानंद ॥ सत्य सत्य इमि कहि कै सव निकरे ॥ इति नहुस नाटके षष्टोङ्कः ॥ ६ ॥ दोहा ॥ श्री गिरिधर पद पदुम रज सिर धरि सहित हुलान ॥ रच्यो नहुस नाटक नवल लघुमति गिरिधरदास ॥ १ ॥ इति श्री गिरिधरदास विरचितं नहुस नाटक समाप्त ॥ श्री सवत् १९२३ आषाढ शुक्ल २ शुभमस्तु सिद्धिरस्तु ।

विषय—नाटक के रूप मे नहुष राजा का चरित्र वर्णन ।

संख्या ७८. समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका रचयिता—श्री गिरिधर जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देशी, पत्र—३ (१५२ से १५४ तक), आकार—१२॥। X ७। इव पक्ति (प्रति पृष्ट)—५२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८० से १७१६ के भीतर, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, काँकरौली, हि० वं० १००, पु० स० $\frac{३०}{१}$ ।

आदि—अथ समर्पण को श्लोक गद्यार्थ ताकी टीका भाषा सहस्त्रेति । या पद को अर्थ लिखत हैं सहस्त्र कहिए । अपरमित कहिये इतनो काल व्यतीत भयो हे कृष्ण वियोग कहिये पुरुषोत्तम ते भगवद इच्छा करि के न्यारे भये हैं । ताते जनित ताप क्लेशानंद तिरोभावोह । भगवद्वियोग ते । भगवत मिलनार्थ ताप क्लेश भयो चहिए सो न भयो । और आनंद को अभाव भयो ।

मध्य—पृ० १५३-१५४

रासे जो नंननदन सो सदा व्रज मे ही विराजे हे सो पुरुषोत्तम वाहिर ओर व्यूह भीतर । एसे जे पुरुषोत्तम तिनकूं अर्पन करत हूँ । और मथुरा जो पधारे वा स्वरूप की व्यावृत्ति करिवे के अर्थ श्री गोपी जन वल्लभ'ये पद धरचो है । रासे जे श्री कृष्ण हैं तिनकूं पृथ्वी अप तेज वायु आकास सों पांच महाभूत को सरीर भौतिक अव ईन्द्रिय कहत हें—कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, प्राण इन कू ज्ञानेन्द्रिय कहिये ।

अंत—जो कछु पदार्थ हें सो सव श्री भगवान को है । तव ममता निवृति भई । ओर श्री भगवान् अंतःकरन मे प्रेरना करत हें तेसे मे करत हूं । तव अहंकार की निवृति भई तव भगवदीयत्व करिकें परिसमाप्तं सव पदार्थ भये । जव ये मुख्य स्वरुप सेवा को अधिकारी भयो—तातें इन दोऊ मंत्रन को मिलाइ के जप करनो । इति श्री गिरिधर जी कृत गद्यार्थ की टीका संपूर्णम् ।

विषय—पुष्टिमार्गीय दीक्षा प्रकार मे अष्टाक्षर के अनतर योग्यतानुसार 'ब्रह्म' सवध की दीक्षा दी जाती है । उसका मत्र गद्य मत्र कहलाता है । प्रस्तुत ग्रथ मे उसी गद्य मत्र की भाषा टीका की गई है जो किसी सस्कृत टीका के आधार पर है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य ग्रथ भी लिखे हुए है ।

गिरिधर जी कांकरोली मे वर्तमान तृतीय पीठ के ... । इनका समय स० १६६२ से १७१० तक ... ।

संख्या ७६क. श्री द्वारकानाथजी के ... ० गिरिधर लाल जी, स्थान —कांकरोली, कागज—... इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५०, ... लिपि—नागरी, रचनाकाल स० १६३० के लगभग, प्राप्ति ... विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० न० ६ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम ॥ अथ श्री द्वारिकानाथ ... लिख्यते ॥ अथ जन्माष्टमी की विधि लिख्यते ॥

जन्माष्टमी के दिन बाल भोग मे नित्य ते दूनो ... मलाई माखन बूरा सधानो सीरा कोठवग भोग धरे पाछे ... रचाई की धोती उपरना पहरावनो आभरन मे ... कडी इतने आभरन पहरावने पाछें पचामृत स्नान ... टा बाजे स्नान के ठिकाने कोरी हरदी को ... डिकें ताके भीतर पीठा बिछाइ ता ऊपर ... धरावनो ।

मध्य—पृ० २७

मार्गशिर वदि ८ श्री गिरिधर लाल जी को उत्सव ६० तथा ... दूसरी । अभ्यग वागा नयो पाट को गोपी वल्लभ मे मेव राजभोग मे ... तेती की आरती श्री जी के सामग्री पहोचे, राज भोग धरिये श्री गिरिधर लाल जी ... हरि स्नान करे कीर्तन होत नई सुपेदी ओढनी केसरी ।

अत—भाद्रपद कृष्ण ३ को पाग पिछोरा साडी ... रानो पडे तब नयो होइ । राज भोग आरती मोतो की सेन भोग मे पुरी ... तीन मिलाइ घी बूरा साक दे फीके खाजा दूध लॅन सधानो भोग धरे ... उत्सव हैं ॥ इति श्री गिरिधर लाल जी विरचित उत्सव मालिका ... ॥ ... प्रकरण लिखिया के जे श्री कृष्ण वैष्णव मडली मे ।

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा शृगार प्रणाली मे श्री ... के उत्सव तथा नित्य सेवा का क्रम वर्णित ।

संख्या ७६ख श्री गिरिधर लाल जी के वचनामृत ... रचयिता—श्री गिरिधर ... जी, निवासस्थान—कांकरोली, कागज—देशी, पत्र—..., आकार—१० × ... पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, प्रकाशित—कांकरोली से, परिमाण ... रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६... लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग कांकरोली, ... पु० स० २ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नम ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम ॥ श्री ... भ्यो नम. ॥ श्री विट्ठलेश्वराय नम ॥ अथ श्री महाप्रभुजी के ... श्री गिरिधर लाल जी महाराज के एक सं बीस वचनामृत भाषा मे प्रारभ ॥

॥ श्लोक ॥

चिता सन्तानहंतारो यत्पादाबुजरेणव ॥ स्वीयानां तान् निजाचार्यान् प्रणमामि

मुहुर्मुहुः । यदनुग्रहतो जंतुः सर्व दुःखातिगो भवेत् ।। तमहं सर्वदावदे श्रीमदवल्लभनंदनम् ।।२।। श्री कृष्णाय नमः ।। एक समय श्री मद्गोस्वामी श्री पुरुषोत्तमात्मज श्री गिरिधर लाल जी महाराज आपु प्रसन्न होय के संवत् १६३३ के पोष शुक्ला १०भौमवार कूँ सखेडा वारे दासानु-दास अनुचर अमया खुशालदास को वेटा—

मध्य—पृ० ३६

अव तंतालीस मो वचनामृत कहेत हें जो जीव को स्वाधिकार जो अलौकिक प्रश्न करनो सो तापर आपुने आज्ञाकारी जो अनन्य भक्त श्रोता सो राजा परीक्षित बालपने मे सेवा रूपी श्री ठाकुर जी के स्वरूप रूपी खिलौनान सो खेले हे और लौकिक खिलोनन सो खेले नहीं और वक्ता श्री शुकदेव जी सरीखे निश्चय ही परम हस सो दशमस्कध मे रास पंचाध्यायी पर्यंत कथा वर्नन भई । और राजा की दिसा सुनत ही और होय गई सो प्रश्न कर्‍यो । संस्थापनाय धर्मस्य ।।जे श्री भगवान् तो धर्म स्थापनार्थ प्रगट भये हें सो ऐसी लीला क्यो करी सो ऐसो प्रश्न राजा ने कर्‍यो ।

अंत—सो तब मुखिया द्वारकादास बोले जो आपु के तो परदेस मे जगे जगे मंदिर हें सो जहाँ आपु पधारो तहां आपु को सेवा के सुख हें । तव आपु आज्ञा करे जो यह वात तो और मदिरन मे कहा सो आवे जो यह सुख यहाई है और उहां तो केवल वैष्णव को दर्शन देवे को विराजे हें सो दर्शन देय हैं सो उहा के रहेवे वारेन को मनोरथ पूरन करें हें । जो सुख तो यहाई विराजे हें और भक्तन के मनोरथ सीध करिवे को अनेंक रूप सों परदेस मे विराजत हें सो ताते हमको तो सर्वथा यहांई सुहाय हैं । सो तव मुखिया जी ने फेर क्ही सो उहाउ यहा की सेवा निमित्त सुख जानि कें यहा पधारनो होवे हें सोई वित्त जा सेवा हें सो आपु तो सेवा ही मे सदा सर्वदा रहेत हें । इति श्री गिरधर लाल जी महाराज के वासट मो वचनामृत संपूर्ण ।।६२।।

विषय—यह ग्रथ गुरु शिष्य सवादात्मक है । इसमे श्री गिरिधर लाल जी से उनके शिष्य ने सम्प्रदाय के सवध मे प्रश्न किए है जिनका उत्तर दिया गया है ।

सख्या ८०. सर्वोत्तम स्तोत्र की सस्कृत टीका का हिन्दी पद्यानुवाद, रचयिता—गो० श्री गिरिधर लाल जी, कागज—देसी, पत्र —३ (६६ से ६८), आकार—८ × ४।। इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ४७, पु० स० ७ ।

आदि—श्री हरिः ।। श्री गुसांई जी कृत सर्वोत्तम अष्टोत्तर शत नाम ता मध्य हे श्री आचार्य जी के ता टीका दृष्टि पथ श्री गोकुलनाथ जी की करी संस्कृत मे है । ता स्तोत्र को सटीक को अर्थ कीर्त्तन पूर्वक भाषा मे श्री व्रजभूषण जी सुत श्री गिरधर लाल जी ने वांध्यो हें । श्रवण कीर्त्तनं या श्लोक को तात्पर्य जानत होयगो सो दैनंदिन प्रभु आगे यह गावेगो ।। राग देव गांधार तथा सारंग तथा नट ।।

जो पें श्री वल्लभ रूप न जानें ।
तो केसें या लीला को नित संबंधी करि माने ।१

मध्य—

आनंद भरि परिपूरन अंवुज नैन देखि ललचाने ।
कृपा दृष्टि आनंदित दासी दास प्रिय पति जाने ।१७।।
रोस दृष्टि के पात भए ते भक्त वृंद रिपुहांने ।
याही ते भक्तन॰ करि सेवित यह निरधारित ठाने ।।१८।।

अंत—

इहि विधि द्विजकुल पति के गिरिधर नाम [illegible] ।
श्री वल्लभ श्री विट्ठल प्रभु को निज अनुचर [illegible] ॥८०॥ [illegible] ॥

विषय—सर्वोत्तम स्तोत्र की संस्कृत टीका का हिंदी अनुवाद । [illegible] श्री विट्ठलेश्वर गुसाईं जी ने अपने पिता श्री वल्लभाचार्य जी के १०८ नामों [illegible] मे किया है। उसमें साम्प्रदायिक सिद्धान्तों का भी प्रतिपादन हुआ है।

संख्या ८१. शब्द, रचयिता—गिरिवरदास, कागज—[illegible], पत्र—१, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, [illegible], पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—....... .. . .

...उदु दू कर जोरि चरन सिर धरऊ ।
अघविनास प्रभु नाम तुम्हारा । निरमल जोति [illegible] ॥ १ ॥
सत सिरोमनि लावहि ध्याना । पावहि अचल भक्ति [illegible] ॥ २ ॥
जेहि पर क्रिपा किहो जन जानी । जीवन मुक्ति भयो [illegible] ॥
गिरवर जन जग जीवन साँई । सदा [illegible] ॥ ४ ॥ १० ॥

शब्द आरती

आरति सागर सब्द तुम्हारी । [illegible] ॥ १ ॥
पर प्रथ श्री ग्यान प्रगासा । [illegible] पाप [illegible] ॥ २ ॥
चरन वदगी कहरानामा । [illegible] ॥ ३ ॥
बुद्धि विरित्ति विनवौ दिढ ध्याना । [illegible] ॥ ४ ॥
विनवौ सकल जोरि जुग पानी । [illegible] विनास [illegible] ॥ ५ ॥
दोहावली अव सत वानी । प्रभु जगजीवन [illegible] ॥ ६ ॥

मध्य—

तेहि सपतह नेम करै जो कोई । [illegible] ॥ ४ ॥ ७ ॥
मन पूरना पढै सब पढि कै । [illegible] ॥ ८ ॥
सुनै मनोरथ करै जो कोई । राम [illegible] ॥ ६ ॥
गिरवर जन जग जीवन साँई । सदा [illegible] गोसाँई ॥१०॥ १० ॥

ग्रथ साहेब गिरवर दास जी के सब्द सपूरन जो प्रति देपा सो लिपा [illegible] ॥

विषय—सिद्धातानुसार भक्ति एव ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। इसके अन्तिम पत्र [illegible] १२६ है। [illegible] प्रकट होता है कि ग्रथ बडा था। इसके आगे एक ही हस्तलेख में [illegible] ग्रथ भी लिपिवद्ध हैं।

ग्रथ का रचनाकाल एव लिपिकाल नहीं दिया है। [illegible] सार लिपिकाल सवत् १६१६ माना जा सकता है।

रचयिता का नाम गिरवरदास है। [illegible] —

गिरवर जन जग जीवन साँई । सदा [illegible] गोसाँई ॥

संख्या ८२. रुक्मणीमगल, रचयिता—[illegible], कागज—[illegible] —२७ × ४$\frac{1}{2}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय [illegible] (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—

रथ गजराज वाज सकल समाज साज
राज महाराज सिरताज वड़ तोष के ।।
गिलम गलीचा लरमली मप डुलीचा
चादनी चदोवा पहुचो वाकर्य जोष के ।।
तर पस पंछी जल थल परजत हू कें
नाग नर किनर देववामी सुरलोक के ।।
जरकस जवाहिर अरु अम्मर पटवर
सजाइ दुजराज देखे द्वार दमघोप के ।। १ ।।
हय हहनान लागे घंटा ठनान लागे,
वाजे वजन लागे अनेक अलवाढ के ।।
निसान फहरान लागे रथ गज सजन लागे,
हौदा धरन लागे चिकारत दाढ के ।।
भूप सव सजन लागे भाट जस कहन लागे
ढाढ़ी पढन लागे सूर रन गाढ के ।।
दोह दल सजन लागे विरही दहलान लागे,
उठन लागे वादल ज्वा अगिन अनाढ के ।। २ ।।

मध्य—नाग नर किन्नर देव कीट पसु पछिन मैं,
जल थल अकाश जोति ब्रह्म को पसारो है ।।
असरन के सरन दुष दीनन के हरनहार,
करन निधान कान विरध तुम्हारो है ।।
कहत गुमान मन मानी न सोच कछू
सकल कौन चाल जो गुपाल रषवारो है ।।
वाह गहि रुकिमिनि की रथ पै चढ़ाइ लयौ,
जैसे गजराज सिंधु बूडत उवारचो है ।।२७।।

अंत—मौहन की मनमौहन मूरति,
सुंदर पीत पीतावर राजे ।।
राजत सेज सुहागिल पै
रस रूप कलानिधि के मद भाजै ।।
दूल्हा स्याम नई दुलहिन रति
कोटिन कामिनि की छवि लाजै ।।
को वरनै उपमा कविता की
सु मनो घन मैं दुति दामिन साजै ।।४६।।
दपति हास विलास परे
अति जागत हू सव रैन विहानी ।।
मौहन की उर मैं धरि मूरति
आवति है उठि सेज सयानी ।।
निखारत हार सुधारत वारन
देखि अलीन ललो मुसक्यांनी ।।
आनन इंदु समान ऊग्री
अव लाज भरी अपीया असयानी ।।४७।।

।। समाप्त ।।

विषय—श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह का वर्णन । रचना कवित्त सवैयो मे है ।

संख्या ८३. ब्रह्मांड लीला, रचयिता—गुरु गोविंद, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—९६⁄₁₀ × ३६⁄₁₀ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप)—१॥, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १५५६ वि० प्राप्तिस्थान—पं० ... पाण्डेय, ग्राम—रामपुर, पो०—अर्दलिहान, जिला—... ।

आदि—ॐ राम गुर गोवीद श्री गणेशाय नमः ॐ अथ ... लिलया. . . । ब्रह्म वदि वा विष्णु सिवो वाएण जो जथा १ ... उत्पन्य तेयते ब्रह्म उत्पन्य पानिमध्ये ... मध्ये विष्णु रहे है विष्णु के नाभी कवल ब्रह्मा रहे है ... जोजण पृथ्वी प्रमान है । पृथ्वी मध्ये सुमेरु पर्वत है ।

० .०. .०

एते शप्तदि प्रिथ्वि प्रमाण है । अथ सात समुद्र है ...

.०. ० .०

अथ सातहु दिप क वेवरा है एक लक्ष जोजण यह दिप का ... है. . . . . . ।

:०: .०: ०.

एते बात विवर्ण गुरु गोवीद है सम १५५६ ।

:०: :०: :०:

वीस कोटि जोजण कुसादिय है ।

:०: :०: .०:

अंत—सोम पर व शार पति इषुरणे ... मेव वेनुवद्य राय एतेराय प्रवर्तते एवम द्वापर समाप्त अथ ... वरिसप्रवाण रुप भए त फलकि सुर्य पर्धंत एव ... व्यता लए कहा थसाटे तिनी ... विर्दभि सतधर्म यिस्या चारि ... । (अपूर्ण)

विषय—सृष्टि का वर्णन । सप्त द्वीप, नवखण्ड, ... पुरुषो का सक्षिप्त वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ की प्रति अपूर्ण है । केवल आठ पत्रे ... अत्यत प्राचीन प्रतीत होती है । एक स्थल पर "गुरु गोविंद" सम १५५६ ... पर रचयिता "गुरु गोविंद" और रचनाकाल सवत् १५५६ मान लिया गया ... अज्ञात है । रचयिता के सबध मे कुछ पता नही चलता ।

गद्य नागरी लिपि मे लिखा गया है । ... की उत्पत्ति और जल थल आदि का सविस्तर वर्णन है । ... पढना कठिन है ।

संख्या ८४क शालिहोत्र, रचयिता—पाडे ... कागज—देशी ... आकार—१०६⁄₁₀ × ४३⁄₄ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—३, परिमाण (अनुष्टुप)— ... रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—पं० ... सुदीकपुर (टिडिहा ताराडीह) पोस्ट—... जिला—... ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

गज आनन सुमिरन करो ... ।
शाल्होत्र गुरदीन पवि देत ... ॥ १ ॥

ग्रंथोत्पत्ति मालिनी छंदः

प्रथम तुरगमारी पद्मधारी सुपारी । गगन गति विहारी इंद्र के लोक चारी ।
तव गुनि मघवा नें शालहोत्रै विनायो । पग गहि मुनि पति के अश्व पखा छिनायो ।। २।।

मोतीदाम छन्दः

भये जव पंखन हीन तुरग । नये मुनि पायन आठौ अग ।।
विनय सुनि भै मुनिराज कृपाल । दियो वरदान तिन्है तत्काल ।। ३ ।।
तुम्है चढि कै रण जूझत वेदि । लहै गति ते रवि मडल भेदि ।।
तुम्है खलपायन मे गति गौन । दुपी महिपाल न मानत यौन ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत— दारू जीरा सेंधव संग जो षाय ।
सव गूलन को नाशै भूप वढ़ाय ।।१७२।।
गऊ मूत्र से षाये रोग ककादि ।
हरै पेट की पीरा दवा विवादि ।।१७२।।

।। चौपाई ।।

घृत संग पाइ पाचक करै । रक्त पाजु वातादिक हरै ।।
दारू सेंधव के सँग योग । अतीसार सर नागर रोग ।।१८०।।

इति श्री पांडे कवि गुरुदीन कृत शालहोत्र सम्पूर्णम्
शुभमस्तु ।।

विषय—घोड़े की उत्पत्ति, उसके गुण और अवगुणो का वर्णन तथा रोगो की औषधि ।

संख्या ८४ ख शालिहोत्र, रचयिता—गुरुदीन कवि, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१५, आकार—१२ × ८½ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५६, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम—ठटा, पो०—वीवीपुर, जिला—इलाहावाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।।

।। दोहा ।।

गज आनन सुमिरण करो सुलभो वरणन वाजि ।
शालहोत्र गुरुदीन कवि देत सुछंदन साजि ।। १ ।।

।। ग्रथोत्पत्ति ।।

।। मालिनी छदः ।।

प्रथम तुरग मारी पंख धारी सुपारी । गगन गति विहारी इद्र के लोक चारी ।
तव गुनि मघवा ने शालहोत्रै विनायो । पग गहि मुनिपति के अश्व पंषा छिनायो ।।

।। मोतीदाम छदः ।।

भये जव पंखन हीन तुरग । नये मुनि पायन आठौ अङ्ग ।।
ए सुनि भए मुनि राज कृपाल । दियो वरदान तीन्है ततकाल ।। ३ ।।
तुम्हें चढि के रण जूझत वेदि । लहे गति ते रवि मण्डल भेदि ।।
तुम्हें पल पायन मे गति पौन । दुपी महिपालन मानत जौन ।।
करौ अत्र भूतल मध्य विहार । रहै नदहै पशु जन निहार ।।
दियो वरदान अनेकन आन । कियो तव ग्रंथ तुरङ्ग वपान ।।

:o: :o: :o:

अंत—

तज वदाम जवाइन दूनो अजमोदा दोऊ [illegible] ।
पित्तपापरा [illegible] पानि [illegible] [illegible] [illegible] ॥
॥ वर्ष ८८ ॥
भोजन तीनि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
अनूपान मुनि लीजै पाने [illegible] ॥ १ ॥
दारु जीरा मे घो...... .....

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—शालिहोत्र विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अंत मे खंडित है । [illegible] १५ [illegible] [illegible] । [illegible] और लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं ।

रचयिता का नाम गुन्दीन है । ये अपने को [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

संख्या ८५. प्रेम रसाल, रचयिता—गुलाम मुहम्मद, कागज—[illegible], पत्र—[illegible], आकार—१० × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], खंडित, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि— सोरठा

नमो नमो भगवान जो सबको [illegible] है ॥
सपति प्रघटि वहि जानि ठौर ठौर मे रमि रह्यो ॥

कवित्त

कोउ राम जानो बखानो रहीम कोउ
नाम हैं अनेक एक वाही करतार के ॥
रही श्रो रंच हौं रघु दीरघ नाद वेद
सबही देखो बनाए परवरदिगार के ॥
वाही सेते आवैं फिर वाही मे समावें अति
जीव जति जल थल या सकल संसार के ॥
हिति करि चिति लाश्रो सदा गीता पारायन
सुनि हे मुनि गुन गाश्रो नारायन श्रीतार के ॥ २

चौपाई

सुमिरु प्रथम राम को नाम ॥ जानो पूरनि [illegible] [illegible] ॥
वही विष्णु तुम निश्चै जानों ॥ वाही को ब्रह्मा पहिचानो ॥
वहि शिव रूप शेश है गग ॥ तीन्यो देव [illegible] [illegible] [illegible] ॥
शशि अरु सूरज देव सरूप ॥ नारायन को जानो [illegible] ॥
भूम्मि समीर अग्नि आकासा ॥ जल नारायन को है बासा ॥

मध्य— सोरठा

नैन हमारे चोरि चोरी करि [illegible] [illegible] ॥
तकै पराई श्रोरि फिर [illegible] सूनै [illegible] ॥१२॥

कवित्त

भरि नैननि नैन लपे तव ते
जवते नहि चैन कहा करियै ॥
सुप वैन महादुप दैन भए
दिन रैन चवावनि सो डरियै ॥
निसि मै अव जोहनि जांव कहाँ,
मन मारि यहाँ मरिहै भरिहै ॥
हित की चित चाटि उछाटि लगी,
उरफाटि निराटि नहीं मरियै ॥१३८॥

अत—
चौपाई

ऊन ऊजीर की वात सुनौ अव ॥ वहुरि पधारचौ ..नै गेह जव ॥
अस्त्री सौ यह मतौ सुनायौ ॥ जो कछु पातसाह फुरमायो ॥
आपस मैं वतरानै दोऊ ॥ ऊच नीच कौम स ..दोऊ ॥
पातसाहि नै अैसै कह्यौ ॥ मेरौ तेरौ नात्यौ भयौ ॥
जावौ वेग व्याह कर दीजै ॥ अौर सोच मन मै जिन कीजै ॥
पर मेरे चित मे नहि आवै ॥ नृप सो मेरी कहा वसावै ॥
अस्त्री कह्यौ सुनौ पति मेरे ॥ करौ व्याहि कौ साजि सवेरे ॥
नृप को जानौ महा गयानौ ॥ भलौ होयगौ जो उन ठानौ ॥
भई वहुत वतरावन गहरी ॥ तव निजु एक व्याह की ठहरी ॥
जव यौ (हु) कम कियौ परधान ॥ करौ व्याह कौ अव सामान ॥
विप्रन जू. ....(खडित)

विषय—इसमे शृगारपूर्ण कथा का वर्णन है, पर ग्रथ के खडित हो जाने के कारण इसका पता नही लगता कि यह कौन सी कथा है। ग्रथ के बीच बीच मे राधा कृष्ण की प्रेम कथाएँ भी दी गई हैं।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के कर्त्ता का नाम गुलाम मुहम्मद है। ग्रथ के अत के दो तीन पन्ने खडित मालूम होते हैं। वहुत सभव है कि प्रारभ के भी कुछ पन्ने खडित हो।

रचयिता का भी वृत्त ज्ञात नही होता। हस्तलेख की लिपि को पढ सकना उसके अक्षरो की स्याही उड जाने के कारण दुरूह हो गया है।

संख्या ८६. नखशिख, रचयिता—गोकुल कवि, कागज—देसी, पृष्ठ—५, आकार—८ × ६⅞ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, अपूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० २१, पु० म० १।

आदि—श्री हरि. ॥ नख सिख ॥

श्री नद नदन आनद कद गोपीजन वल्लभ रासविहारी ॥
लाला गोपाल मनोज विमोहन राधारवन महासुखकारी ॥
अंग चरित्र विचित्र प्रभा वसु चित्त यथामति वानि उचारी ॥
श्री मद्वल्लभ राज कृपा वल गाइए रंग भरचो गिरधारी ॥ १ ॥

दोहा—नखतें सिखलो अमित छवि गुन प्रभाव गोपाल ॥
गोकुल वुधि अनुसार करि............ ॥ क ॥

मध्य—जे श्रुति सुंदर कुंडल रंजित गाजन है नव पंज छबै पुनि।
जे मृदु कर्ण प्रकर्ण मनोहर भानि रहै मुर गाय गुना गुनि।
जे नव कानन कानन मे सब बाजि नि गाजि धरी धुनि दा धुनि।
ते शब्दालय गोकुल की विनती सुनि हो कन हो ब्रज आंगन॥१६॥

अंत—प्राप्त नहीं।

विषय—श्री कृष्ण के स्वरूप का वर्णन।

संख्या ८७क. शक्ति प्रभाकर या अद्भुत रामायण, रचयिता—गोकुल कायस्थ, निवासस्थान—बलरामपुर, कागज—देशी, पत्र—१००, आकार—१०॥ × ६॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, जंग बहादुर यंत्रालय, बलरामपुर से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८३८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६१८ वि०, लिपिकाल—सं० १६३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

आदि—श्री गणेशाय नमः॥

॥ दोहा ॥ शिव संपति प्रद शिव सुवन शिव . ॥
नाम नाम रूप लीला ललित गतिमति प्रद . . ॥
॥ १ ॥ गणपति दोहा ॥ . . . . . खंडित . . . . ।

:o: ·o o

॥ सवैया ॥

जै भगिवत्त गोपाल गोविंद मुरारि मुकुंद चराचर स्वामी॥
जै मधुसूदन केशी निषूदन दीन दयाल दया अनुगामी॥
जै वनमालिय केशव कृष्ण दमोदर विष्णु हैं अंतरजामी॥
जै रघुनंदन जै भृगुनंदन जै नंदनंदन नाम नमामी॥

॥ सूर्य दोहा ॥

व्याधि उपाधिक तोय तम भवरज शोषण भानु॥
दिनमनि दिन प्रति पोषही जोहे जन हिमि भानु॥

·o: .o: ·o

अंत—

१ ६ १
तीनि काल नव चंद्र जस विक्रम तो नृप भूप॥
त्यहि सासन ते पूर करि सज्जनि मान स्वरूप॥
शक्ति प्रभाकर ग्रंथ यह हरि के चरित मयूप॥
समन सोक संताप तम लहि श्रुति मंद पियूष॥१६॥

इत्यार्षे रामायने वालमीकिए अदभुत्तोत्तर काण्डे श्री रामदित्यो नाम भाषा कवि गोकुल कायस्थ विरचिते शक्ति प्रभाकर ग्रंथ सम्पूर्णमो ध्यायाः॥२८॥

इति श्री अदभुत रामायन समाप्तम लिखित नाथूराम तिवारी स्वत १६३६ मिति पौष शुक्ल १५ ·o–· :o: o.

विषय—जानकी जी द्वारा रावणवध वर्णन।

रचना काल

३ १ ९ १
तीनि काल नव चद्र जस विक्रम सो करि भूप ॥
त्यहि सासन ते पूर करि अश्वनि मास अनूप ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। आरभ और बीच के पत्ते यत्रतत्र फट गए है। समस्त सौ पत्ते हैं। रचयिता दिग्विजय सिंह के आश्रित बलरामपुरवासी "गोकुल कायस्थ" है। रचनाकाल स० १९१३ वि० तथा मुद्रणकाल स० १९३६ वि० है।

सख्या ८७ख. शोकविनाश, रचयिता—गोकुल कायस्थ, निवासस्थान—बलरामपुर (गोडा), कागज—देसी, पत्र—९६, आकार—१० × ६॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, जगबहादुरी यत्रालय बलिरामपुर से प्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९१२ वि०, मुद्रणकाल—स० १९३३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल, बलरामपुर, गोंडा।

आदि—श्री परमेश्वर की कृपा से

सोकविनास—यह अपूर्व ग्रथ मोह माया नाशक देदांत सिद्धांत लोक मे चैतन्य जीव को ज्ञानप्रद श्री ७ महाराजाधिराज भूप शिरताज-हिज हाइनेम दि आररेबुल श्री मन्महाराज सर दिग्विजय सिंह साहब बहादुर के सी यस आई की आज्ञानुसार गोकुल कायस्थ विरचिते सज्जनो के मनोरंजन के हेतु प्रकासा बलिरामपूर जग बहादुरी जत्रालय मे नुसी प्रिया लाल गुन नगर के यहितिमाम मे मुद्रित किया लिखत नाथूराम तिवारी सवडुप्रेस मेन ने छापा सम्वत् १९३३ अगहन सुदी १५ शुभम्।

श्री गणेशाय नमः

अथ ग्रंथ शोक विनाश लिख्यते ॥ दोहा ॥
शिव सततिप्रद शिव तनै शिव प्रिय शिव के नाम
कमल मित्र कमला रमन बदौं पद अभिराम ॥ १

॥ गणपति ॥ दोहा ॥
सिद्धि सदन करिवर वदन दाया करि वर देहि ॥
समन शोक कंटक विपिनि दुख संकट हरि लेहि ॥
:o: :o: :o:

अंत— ॥ सवैया ॥
जग जीवन मैं नर जीवन थोर निसा वचि भोर न औध है कोई
तन कागद को कलवूत वनो थम्हिहैं नहि पाप लदाउ ते सोई
नरकी जनि ह्वै नर कीजै कृपा जग कर्म सुभासुभ ताहि ते होई
वृज राम को नाम है नित्य सदाँ प्रिय मित्र कलत्र अनित्य है सोई
:o: :o: :o:

२ ९ १०
उभयराम गृह चंद्रमा सम्वत.........अपूर्ण
:o: :o: :o:

विषय—मोह, माया के नाशक वेदात सिद्धान्तो का प्रतिपादन।

रचनादान
उभय राम गृह चद्रमा नम्रन. ..... ।

सख्या ८८क. त्रिविध भावना भाषा, रचयिता—श्री ... गोकुल, कागज—देशी, पत्र—२३, आकार—८ × ... माण (अनुष्टुप्)—२१५, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—... १९२८ से १९९७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार श्री विद्या विभाग ... हि० व० ६३, पु० म० ८।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम ॥ ... अथ त्रिविध ... वल्लभ पद कमल वर कोमल वर मकरन्द । जो ... वर नाथ के चरन कमल की रेनु । रहे रजहे व्रज नाथ की ... ॥

अथ श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रकटित शुद्ध पुष्टिमार्ग की भावना ... भावना तीन प्रकार की ।

मध्य—या प्रकारतें स्वरूप भावना जाननी । अब ... हैं । जो स्वरूप वर प्राप्त अनेक कल्पने पर्यन्त हरि प्रगट भयो ... साक्षा आद द्वादस लीला सहित हृदय मे प्रविष्ट ... ते प्रथम ... को अनुराग कि वहुना । और दृष्टि हीन परे ... आये ।

अंत—श्री मदाचार्य चरणाश्रित ... मगल निधान रस स्वरूप ही को भाव भावना सिद्ध होय । ... फल रूप । रसिक त्रिभगी लाल के सुललित भाव मकरंद । इति श्री ... भावना सपूर्ण ।

विषय—पुष्टि मार्ग मे सेवा और ध्यान ... जाते है । इसी उद्देश्य को लेकर वैष्णवो के ... अनुसार आचरण तथा मनन करने से भगवल्लीला ... ।

सख्या ८८ख. महाप्रभु जी श्री गुसाई जी के स्वरूप विचार ... गोकुलनाथ जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देशी, पत्र—... इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, अप्रकाशित, परिमाण (अनुष्टुप्)—... पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२४ से १९६... प्राप्तिस्थान—... भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६६, पु० ... ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ श्री वल्लभदेव चरण ... महाप्रभु को स्वरूप विचार लिखियत हैं । तहा भावना या ... स्वरूप दो प्रकार को । एक सयोगात्मक । एक वियोगात्मक । ... सत्व अक्षर ब्रह्मरूप जे वासुदेव व्यूह । तिनके आधार ते ... आनन्द मात्र कर पाद मुखोदरादि रपेण ... विहार ... हैं । और

मध्य—पृ० २ अब श्रीमत्प्रभु श्री गुसाई जी के स्वरूप को विचार ... । ... विचार यह करनो जो साक्षात्स्वरूप श्री स्वामिनी जी विषे ... रमण विषे केवल स्त्री भाव । अरु विपरीति रमण विषे ... जो केवल स्त्री भाव । अरु ठाकुर के सग रमण करिवे ... तातें ... ।

सो श्री गुसांई जी को स्वरूप हैं । तातें श्री स्वामिनी जू तथा समग्र व्रज भक्तन को ठाकुर के संग परस्पर मिलन अरु प्रति कुज निर्भर क्रीडा करन के सिद्धि होइवे के कारण सो श्री गुसाई जी को जाननो ।

अत—जो कोई निरंतर भावना करे अरु इनही के चरणारविंद को परिशीलन करे तो भगवल्लीलानुभव सिद्धि के प्राप्ति मे कहा विलंब है । १ ॥ श्लोक । व्रजपति नव केलीभाव सर्व स्वरूप सुललित गति राधा राधनासक्त चित्त. । तदुभय रस लीलानद सदोहपूर्णः स भवतु मम सर्व विठ्ठलेश. सुवेशः ॥१॥ इति श्री आचार्य जी को तथा श्री गुसाई जी के स्वरूप को विचार सपूर्ण ॥ श्री गोकुल नाथ जी कृत ॥ मोहन दास सुत गोवर्द्धन दासस्य पुस्तक ।

विषय—पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के मूल आचार्य श्री वल्लभाचार्य तथा उनके पुत्र श्री विट्ठलनाथ जी के स्वरूप का आध्यात्मिक दृष्टि से वर्णन किया गया है ।

सख्या ८८ग. श्री आचार्य जी महाप्रभु जी की (प्राकट्य) वार्ता द्वादश कुज भावना, रचयिता—श्री गोकुल नाथ जी (?), निवासस्थान—गोकुल, कागज—देसी, पत्र—११५, आकार—७॥ × ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१२, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—(स० १६२४ से १६६७), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कॉकरोली, हि० व० ६४, पु० स० ३ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ श्री आचार्य जी महाप्रभु जी की वार्ता जन्म प्रकरण संवधि लिखे है । कृष्णदास अधिकारी ने श्री गुसाई जी को श्री नाथ जी के मदिर मे बरजे हे । जो तुम श्री नाथ जी के मदिर मे मत आवो । श्री नाथ जी की सेवा को अधिकार श्री महाप्रभू जी ने मोको सोप्यो हे सो मे अधिकारी हुँ ।

मध्य—पृ० ५८ अथ फल कुज । पाछे ता सखि के सग आगे फल कुंज कुं जात हैं । सो ऊहा के द्वार पा सब सखीन सो बात । यह पुष्प कुज की सखी सो सब बात समाचार कहत हे । और कहत हैं जो तुम अपने कुंजपति श्रीनाथ जी तथा श्री स्वामिनी जी सो जाइ के कहो जू । जो एक सखि श्री आचार्य जी सबधि सेवक सो इहा लो श्री आचार्य जी के दूत वुहाँ पोचाई सोप गये हैं । याते तुम आइके इनके समाचार सब निरूपण करि कें कहोगे ।

अंत—परि एसें ना विचारनो जो अब तो श्री आचार्य जी के ग्रंथ देखे हैं समुझें हे । एसे विचारि के अवकाश करि के मनको बिगारे नाहीं काहें तें जो [illegible] को स्वरूप रस रूपी घृत कोहे सो घृत पात्र के आधार विनु ना रहे मनको कछु ना कछुक आधार तो चाहिए याते मनहू अविद्या के रस मोह लागे । तो फिरि हाथ आवनो कठिन हे पाछें थमे नाहीं यातें पहेले ही सावधानी सो रहनो एसे वचन हे । इति दामोदरदास हरसानी श्री गुसांई जी को सवाद सपूर्णम् ॥

विषय—श्री गुसाईं विट्ठल नाथ जी अपने सम्प्रदाय पुष्टिमार्ग का रहस्य श्री वल्लभाचार्य के प्रिय शिष्य दामोदर दास हरसानी से विदित किया था । इसमे श्री वल्लभाचार्य के प्राकट्य सबधी आध्यात्मिक आदि दैनिक रहस्य तथा भगवल्लीलाओ का वर्णन है । यह सवाद गुसाई जी के पुत्र गोकुल नाथ जी ने सुनकर वैष्णवो के प्रति प्रकट किया था ।

सख्या ८८घ. जप को प्रकार, रचयिता—गो० गोकुलनाथ, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—१२३/४ × ८३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८६४, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—अथ जप को प्रकार ॥

उठत ही माला जनेऊ समारनो ॥ जनेऊ वारे को माला अवश्य चाहियें ॥ मालावारे को जनेऊ की अपेक्षा नाही ॥ काहे ते जनेऊ देह सम्बन्धी ॥ माला आत्म संबंधी ॥ जनेऊ

ब्राह्मण तें और जन्म मे हीन जाति होय तो न पहेरो ॥ देह पर्यंत माना ... मे ... (=) को अधिकार ॥ याही ते जनेऊ टूट्यो काम नाही आवें ॥ ... लीजियें तो चिंता नाही ॥ जैसे ... ते न्यारो ... ॥

:o: .o .o.

मध्य—मंदिर मे सांचो दा आदि करें ताकी चिंता नाहीं जहा श्री यमुना जी ... हे ॥ वैष्णव के इहा विचार मंदिर की अनसर वठो नाम पायो है ॥ ... हाथ को लेत हैं ॥ भगवान पचाध्याई मे कहे हैं ॥ न पार ... विलुधा मुखापिच या प्रकार मुख तें कहें ताते श्री मुख को अवतार श्री आचार्य जी ... ॥ ... भाव की सेवा कीये ॥

इति श्री जप को प्रकार श्री गोकुल नाथ जी कृत संपूर्णम ॥

विषय—वल्लभ कुल की भावना के अनुसार भगवान् ... वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १९६ ... ।

रचयिता गुसाई गोकुलनाथ जी हैं ।

इनकी प्रस्तुत रचना 'चरण चिह्न' के साथ एक ही हस्तलेख मे ... । ... ब्रजभाषा गद्य मे है ।

संख्या ८८ड चौरासी वैष्णव की वार्ता, रचयिता—गो० श्री गोकुल नाथ जी, कागज—देसी पत्र—१६०, आकार—१० × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३ परिमाण (अनुष्टुप)—५४६२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह २८५।४६ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री कृष्णाय नम ॥ अथ श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक चौरासी तिनकी वार्ता लिख्यते ।

श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक दामोदर दास हरसानी क्षत्री तिनकी वार्ता ॥

दामोदर सो श्री आचार्य जी महाप्रभू दमला कहते । और कहते जो दमला यह मार्ग तेरे लिए प्रगट कीयो हैं । श्री आचार्य जी महाप्रभू आप यासों ऐसें कहते । और श्री आचार्य जी महाप्रभु अहर्निश श्री भागवत देखते ॥ श्री आचार्य जी महाप्रभु दामोदर के आगे कथा कहते और श्री आचार्य जी महाप्रभु दामोदर दास सों कहते । जो दमला ... भई । श्री ठाकुर जी की वार्ता नाही कीनी सो कहिये । सो एकांत रहस्य वार्ता कहते ॥

·o: o .o

मध्य—ऐसे विरह के पद गाइ गाइ सूतक के दिन ... कीये । ... के कुंभन दास जी भगवद सेवा मे पाये ॥ सो जैसे सदा कीर्तन की सेवा करत हते ... ॥ एसी जिनको दर्शन की आर्ति । एसी कुंभनदास जी की अनेक बात हैं । सो कहा ताई लिखिये ॥

॥ चोरासी वार्ता संपूर्ण ॥

विषय—महाप्रभु वल्लभाचार्य के चौरासी सेवकों (वैष्णवों) की वार्ता । ... के नाम दिए जाते हैं —

१ दामोदर दास हरसानी
२ कृष्ण दास मेघ नक्षत्र
३ दामोदर दास संभरवारे क्षत्री कनौजिया
४ पद्मनाभ दास कनौजीया
५ पद्मनाभ दास की बेटी ...
६ पद्मनाभ दास की बेटा ...
७ ... दास (...)
८ ... (...)

९. पुरुषोत्तम दास क्षत्री (बनारस के)
१०. रुक्मिणी (से० पुरुषोत्तम की बेटी)
११ गोपालदास सेठ (से० पुरुषोत्तम का बेटा)
१२ रामदास जी सारस्वत
१३ गजाधर दास कपिल सारस्वत (कूडा निवासी)
१४ वेणीदास माधवदास क्षत्री
१५ हरिवंश पाठक सारस्वत (बनारस)
१६. गोविंददास भल्ला (थानेश्वर के वासी)
१७ अम्मा क्षत्राणी (कडा निवासी)
१८ गजनधावन क्षत्री (आगरा के)
१९ नारायण दास ब्रह्मचारी सारस्वत (महावन के)
२०. एक क्षत्राणी (महावन में रहती)
२१ जीयदास सूरी क्षत्री
२२ देवा कपूर क्षत्री (कमडा)
२३ दिनकर सेठ
२४ दिनकरदास मुकुददास सकसेना कायस्थ
२५ प्रभुदास जलोटा क्षत्री
२६ प्रभूदास सिंह (नद के वासी)
२७ पुरुषोत्तम दास (आगरा)
२८ त्रिपुरदास कायस्थ (सेरगढ)
२९ पूरणमल्ल गवल क्षत्री (अवाला)
३० जादवेंद्रदास कुम्हार
३१ गुसाईदास सारस्वत
३२ माधव दास भट्ट (काश्मीरी)
३३ गोपालदास (वासवाडे)
३४ पद्मारावल साचोरा ब्राह्मण (उज्जैन)
३५ पुरषोत्तम जोसी साचोरा (गुजरात)
३६ जगन्नाथ जोसी
३७ जगन्नाथ जोसी की माता
३८ नरहर जोसी
३९ राणा व्यास
४० एक राजपूतनी
४१ रामदास साचोरा
४२ गोविंद दुबे
४३ राजा दुबे माधो दुबे (भाई)
४४ उत्तम श्लोकदास
४५ वासुदेव दास छकडासिंह
४६ नादोदास वणिया
४७ जगती नद
४८ एक ब्राह्मणी
४९. आनददास विसभरदास क्षत्री
५० एक क्षत्राणी
५१ रामदास मीरावाई के प्रोहित
५२ वूला मिश्र
५३ रामानद ब्राह्मण
५४ विष्णु दास छीपा
५५ जीवनदास कपूर क्षत्री सिंह
५६ भगवानदास सारस्वत

५७ भगवानदास जी भीतरिया श्री नाथ जी के
५८ अच्युतदास सनोढिया
५९ अच्युत दास गौड ब्रा०
६०, अच्युत दास सारस्वत
६१ नारायण दास
६२ नारायण दास भाट

६३. नारायण दास
६४. क्षत्राणी (सास वहू)
६५ एक सुनार
६६ एक वैष्णव
६७. दामोदर दास की माता (शेरगढ)
६८. लघु पुरुषोत्तम दास
६९ कविराज भाट
७० गोपाल दास
७१ गडू स्वामी
७२ कनही साल्य क्षत्री
७३ नरहर दास
७४ रामदास चौहान
७५ माणिक चन्द
७६ नरहरन्यासी
७७ गोपालदास (व्रजवासी)
७८ कृष्णा दासी
७९ कृष्णदास
८० सतदास चोपडा (आगरा)
८१ सुदर दास
८२ मावजी पटेल
८३ गोपाल नराडा के निवासी
८४ वादरायणदास
८५ सूरदास
८६ परमानद दास
८७ कृष्णदास अधिकारी क्षुद्र
८८ कुभनदास

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में प्रस्तुत वार्ता के अतिरिक्त १ अष्टछाप वैष्णव की वार्ता, २ निज वार्ता घरू, ३ द्वादश वार्ता और घर की वार्तायें भी हैं।

रचनाकाल, लिपिकाल नहीं दिए हैं।

प्रस्तुत 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' श्री महाप्रभु जी वल्लभाचार्य के अनुसार गो० श्री गोकुलनाथ जी ने अपने मुख से कही थी और श्री हरिराय भट्ट ने हैं लिपिबद्ध किया था।

संख्या ८८च. चरण चिह्न की भावना, रचयिता—गो० गोकुलनाथ, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१२३ × ८३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१६६४, प्राप्तिस्थान—याज्ञिक पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥ अथ श्री हरिराम जी कृत भाव भावना लिख्यते. ॥

सो पुष्टि मार्ग में जितनी क्रिया हैं ॥ सो सब श्री स्वामिनी जी के भाव ते हैं। ताते मंगलाचरण गावें ॥ प्रथम श्री स्वामिनी जी के चरण कमल को नमस्कार करत हैं ॥ जिनकी उपमा देवें को मन दसो दिसा दोरयो ॥ परंतु कहूं पायो नाहीं ॥ पाछे श्री स्वामिनी जू के चरण कमल को आश्रय कीयो है तब उपमा देवे यूं हृदय में स्फुर्ति भई ॥ जैसें श्री ठाकुर जी को अधर बिंब आरक्त हैं रस रूप ॥

:o: :o: :o:

अंत—जो कोई भावसहित पुष्टि मार्गीये वैष्णव चिंतन करत हैं ॥ तिनकूं सर्व फल की सिद्धि होयगी ॥ सो या प्रकार दोऊ चरण के चिह्नभाव सहित वर्णन कीए ॥ दोऊ चरण में पंद्रह चिह्न हैं ॥ सो ताको अभिप्राय यह हैं ॥ जो तिथि तो पंद्र हैं ताते सबके महीना वर्ष आय गए ॥ ताते जो वैष्णव पंद्रह चिह्न को चिन्तन करे। अनिवध न परे ॥सदा सब रस रसरूपात्मक को अनुभव करें ॥ सो या प्रकार चरण चिह्न के भाव हैं यह रूप अपनी बुद्धि के अनुमान दर्शन कीये ॥ इति श्री गोकुल नाथ जी कृत चरण चिह्न की भावना संपूर्णम ॥

विषय—श्री राधाजी चरण चिह्नों का ध्यान करने और उनकी भावना से पूजन करने का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १६६४ जो हरिराम कृत "भावभावना की पुष्पिका" में दिया है।

रचयिता गुसाई गोकुलनाथ जी हैं। आरंभ में "हरिराम" की कृत "भाव भावना" लिखी है, परंतु पुष्पिका में गोकुल नाथ जी रचयिता कहे गए हैं।

हस्तलेख बड़ा है जिसमें—१ चरणचिह्न और २ रूप की भावना प्रस्तुत रचयिता की है। "भाव भावना" हरिराम कृत है। ये सब ब्रजभाषा की गद्य रचनाएँ हैं।

संख्या ८८छ गोवर्द्धननाथ जी की वार्ता प्राग(ट्य) की, रचयिता—गुसाईं गोकुलनाथ जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देशी, पत्र—६१, आकार—९३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२००, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल सं० १६४ संभवत १६०४, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible] अजमतगढ इस्टेट, जिला—आजमगढ़।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ श्री गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता प्राग(ट्य) लिख्यते ॥

अथ श्री गोवर्द्धन नाथ जी के प्रगट को प्रकार तथा प्रगट होइ के जो जो चरित्र कीये

भूमि लोक मे सो श्री गोकुलनाथ जी के वचनामृत के समूह ने ते उर्द्ध (? उद्धृत) करि के न्यारे न्यारे लिखत हे ।। अव नित्य लीला मे श्री गोवर्द्धननाथ जी श्री गिरीराज की कंदरा मे अनेक भक्तन सहित अपड विराजमान हैं । तहां श्री आचार्य जी महाप्रभू सर्वदा सेवा करत हैं ।। जव दैवी जीवन के उद्धारार्थ आग्या ते जव धरती मडल मे प्रादुर्भाव भये ।। तव आप सर्वस्व सेवा श्री गोवर्द्धन नाथ जी हू अपिल लीला सामग्री सहित व्रज मे प्रादुर्भाव भये ।। सम्वत १४६६ ।। श्रावण वदी तृतीया आदित्यवार सूर्य उदय के काल समे श्रवण नक्षत्र मे श्री गोवर्द्धननाथ जी की उर्द्ध भुजा को दरसन भयो ।।

:o: :o: :o:

अंत—ता समे श्री जी श्री दाउ जी महाराज सो स्वप्न मे यह आग्या किए जो यह गहना को वटा आयो है ।। सो नप ते लगाई के सिष ताई स्त्री के पहिरवे के वामें आभरन हे ।। सो गगा वाई को पहिरावो ।। सो सव गहना पहराई के मेरे भोग के दर्शन को आइयो ।। तव गगा वाई ने एस ही कियो ।। एक दिन दिन दर्शन किये ।। जैस ही गहना राख्यो ।। तव श्री जी ले दरसन दीनो तव यह आग्या किये ।। यह कहना सव सज्या मदिर मे मूढा, पर स्थापन करो ।। तव एस ही भयो ।। एसे श्री गोवर्द्धन नाथ जी के अनेक चरित्र हे । सो कहां ताई लिषवे मे आये ।। श्री श्री आचार्य जी महाप्रभून की कृपा ते स्वकीयन कूं अनुभव मे आवे ।।

इती श्री गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता संपूर्णम् सुभं भूयात ।। सम्वत् १९४ ।। कार्तिक कृष्ण ८ रविवासरे ।। प्रातकाले लिषित घनस्याम शुकुल आत्मार्थं परार्थवा ।। श्री श्री श्री ।।

:o: :o: :o:

विषय—श्री गोवर्द्धननाथ जी के प्रकट होने की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल सवत् १९४ दिया है जो अशुद्ध है । सभवत १९०४ है ।

संख्या ८८ज. श्री गुसाईं जी की व्रज चौरासी कोस की वन यात्रा स० १६०० की, रचयिता—गो० श्री गोकुलनाथ जी, निवासस्थान—गोकुल, कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—५।× ६।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२४ से १६९७ (अनुमान), लिपिकाल—स० १८१३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० व० ९२, पु० स० १ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ।। श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ।। अथ वनयात्रा परिक्रमा लिख्यते ।। प्रथम श्री गुसाई जी करी सो श्री गोकुलनाथ जी अपने सेवकन सो कहेंत हैं । संवत् १६०० भाद्रपद वदि द्वादसी १२ सेन शर्पात्त करी पाछें श्री गुसांई जी श्री मथुरा पधारे । व्रज की परिक्रमा करिवें कुं तहां श्री मथुरा जी मे श्रीकृष्ण को प्रागटच भयो हे तहां कारागृह की ढोर है तहां विश्रांत घाट हे । तहां कंस को मारि कें श्री ठाकुर जी विश्राम कीयो हें । तहां स्नान करि श्रम निवारन कीये हें ।

मध्य—पृ० २९

तहां श्री नंद राम जी की वगीची हें । तहां श्री नंदराम जी स्नान करिके सालिग्राम की पूजा करने, सो नैवेद्य धरिकें श्री नंदराय जी ने नेत्र मुंदे । सो श्री ठाकुर जी हरे हरे आईके अपने मुख मे मेले । पाछे श्री नंद राम जी नेत्र खोलें तो सालिग्राम तहां नहीं । तव श्री यसोदा जी सो कहे । जो मेरो देवता कहां गया । तव श्री ठाकुर जी हसे । तव श्री यसोदा जी नें श्री ठाकुर जी के मुखारविंद मे सो सालिग्राम काढि के श्री नद राय जी को दीयें । तव श्री नंद यसोदा मिलि के सालिग्राम को केसर सो स्नान कराईके वहुत भांति सो विनती कीनी जो या वालिक को दोप मति देखो । ओर या वालक पर कीपा करो । ओर मेरो अपराध क्षमा करो ।

अंत—वलभ घाट पर सीगपुरी दही [illegible] । [illegible] दुध दही रोटी करणं वेध के कूप पर [illegible] । [illegible] दूध की सामग्री । ऊपर की बैठक मे मुख्य [illegible] । [illegible] घाट पर श्री महारानी जी को शृगार । शृगार [illegible] सामग्री हैं । इति व्रज चोरासी कोस की परिक्रमा वनयात्रा [illegible] । [illegible] ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—व्रज का वर्णन किया गया है । स० १६०० मे [illegible] ८४ कोस की यात्रा की उनका नागोनाग वर्णन है । [illegible] श्री कृष्ण लीला के स्थलो का वर्णन किया गया है । [illegible] तात्कालिक चरित्र पर अच्छा प्रकाश पड़ता है । [illegible] यात्राएँ क्रमश की जाती है ।

विशेष ज्ञातव्य—काले रग के कपडे मे [illegible] वनयात्रा, भागवत अनुक्रम के पद, बत्तीस लक्षण [illegible] मधुराष्टक, चतु श्लोकी, गोकुलाष्टक, शरणाष्टक और [illegible] । [illegible] १८१३ मूल आख्यान के आधार पर है ।

संख्या ८८क. "वैष्णव लक्षण ग्रथ", रचयिता—[illegible] जी को सवाद, निवासस्थान—गोकुल, कागज—माधोपुरा, पृष्ठ—११, आकार—१०।।।× १०। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६७, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६८२ से १६८८ [illegible], प्राप्तिस्थान—[illegible] विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व०, स० १४, पु० न० १ ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नम ॥ श्री वैष्णव लक्षण ॥ श्री महाप्रभु जी सो कल्याण भट ने प्रार्थना करी । जो भगवदीय के लक्षण कहो ॥ तब आप प्रसन्न होय के कहे ॥ प्रथम तो अन्याश्रय न करे ॥ सर्व प्राणी मात्र ऊपर दया रखें, सदा प्रसन्न रहे । । क्रोध न करनो । यातें क्रोध है सो महादुष्ट चाडाल है । ताते जहा क्रोध रहे ताहा धर्मादिक [illegible] न रहें ।

मध्य—जहा बहिर्मुख सर्वलोक बेठे होय ताहा मौन्य करी रहेनो । प्रयंतराय की [illegible] करनो । श्री भगवान भगवदीय विषे मन समान्य राखनो । [illegible]—

अत—॥ श्री वल्लभ वचनामृत श्री महाप्रभु जी कृत चोरासी सीक्षा चोरासी वैष्णवो लक्षण हिते सपूर्णम् ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवों को पालन [illegible] । श्री वल्लभाचार्य के पौत्र, श्री विट्ठल नाथ जी के पुत्र श्री गोकुल नाथ [illegible] दास जी के साथ वार्तालाप—साम्प्रदायिक-सिद्धान्तानुसार ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रथ के साथ [illegible] तथा अन्य ग्रथ भी है जिनका विवरण अलग अलग दिया गया है ।

संख्या ८८ख. नित्यसेवा शृगार की भावना, रचयिता—[illegible] गोकुल, कागज— देसी, पत्र —२४, आकार—१३।× [illegible] परिमाण (अनुष्टुप्)—८७५, पूर्ण रूप—पुराना [illegible] १६२६ से १६६७ तक, लिपिकाल—स० १६५८ प्राप्तिस्थान—[illegible] विभाग, कांकरोली, हि० व० ६८, पु० स० ४११ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नम. ॥ श्री मद् गुरु चरण-कमलेभ्यो नमः ॥ अथ श्री गोकुल नाथ जी कृत भाव भावना लिख्यते ॥ अब प्रथम नित्य की भावना लिख्यते ॥ वैष्णव को प्रात-काल होत ही भगवत् सेवा को चितन करनो । रात्र को वियोग विचारनो । दर्शन की आस राखनी । उठत ही अपने कंठ की माला को दरसन करनो ।

मध्य—पृ० १३

राजभोग को भाव ।

ताको भाव यह है सिंघासन आगें भोग आवें । तहा प्रभू के भक्त आवत है । तहां प्रभू आधीन लीला हे । तहा भक्त आइकें भगवद रस को अनुभव करत हें । रीति को रमन यह भाव विचारनो । तहां रसोई घर मे प्रभू आप पधारि राज भोग आरोगत हें तहां भक्ताधीन लीला है । तहा भक्तन के रस को अनुभव करत स्हें । तहा वितरीत रमन को भाव विचारनो । राज भोग मे प्रथम धूप करनो धूप को भाव ॥

अंत—सो सारस्वत कल्पमे गोड देस मे कन्या होत भई ।

सो श्री नदराय जी कंस के देन अर्थ मोल ले आए । सो प्रभू के अर्थ कात्यायनी देवी के मिस श्री यमुना जी को पूजन हरन लीयो । सो तव प्रभुचीर लीला करि वरदान दीये । हम तुम को रास मे अगीकार करेंगे । या प्रकार अग्नि कुमारिकान को अगीकार भयो, यह पुष्टिमार्गीय अतरगीभक्त के अर्थ नित्य सेवा को प्रकार प्रात सध्या लों वर्णन कीयो । इति श्री गोकुल नाथ जी कृत नित्य सेवा श्रृंगार की भावना सपूर्णम् ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा के प्रकार मे भगवद् विषयक मानसिक भावों की लीलाओ का अनुभव वतलाना इस ग्रथ का उद्देश्य हैं । सेवा स्वरूप की सेवा श्रृंगार और प्रकार मे कौन कौन सी भावना किस प्रकार करनी चाहिए यह क्रम वर्णित हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के पृष्ठ २४ के वाद श्री हरिराय जी कृत "वरस दिन के उत्सव को भाव" नामक रचना हैं, और अन्त में विषय सूची दी गयी है ।

संख्या ८८८. वत्तीस लक्षण (भगवदीय वैष्णवों के लक्षण), रचयिता—गोकुल-नाथ जी, स्थान—गोकुल, कागज—देसी, पत्र—२५ (८४ से १०९), आकार—५।×६।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६२४ से १६६७ (अनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभाय नम. । श्री महाप्रभू जी सो कल्यान भट नें प्रार्थना करी जो महाराज भगवदीय वैष्णव के लक्षण कहो । तव महाप्रभु जी प्रसन्न होय कें कहें सो लक्षण कहेत हें । जीव की वुद्धि निमित्त प्रथम तो अन्याश्रय न करनो । आश्रय एक श्री जी को करनो । तातें सकल कामना होत हें । यह लौकिक अरु परलौकिक हु यह जानिकें आश्रय एक श्री जी विन कहु को न करे । यह अन्याश्रय का हेतु हे ।

मध्य—पृ० ६७

पाछें उत्सव कोई आवे तो यथा सामर्थ भेंट करीये । श्री जी के दर्शन को आलस न करीये । जो आलस करे तो आसुरि वुद्धि होई । आसुरि वुद्धि करिकें ज्ञान मंद होई । ज्ञान मद होई तो भावना जात हें ।

भावना गए ते सेवा को महात्म्य मुले । महात्म्य भूलेते श्री ठाकुर जी ने वहिर मुख होत हें । फिरि अधम गति कों प्राप्त होत हे । आलस करने को यहे फल होत हें । ताते वैष्णव कों आलस न करनो ।

अंत—

अहर्निश श्री जी को सुमरन करनो। श्री जी की [illegible] के को नाम वारंवार उचारन करनो। वृथा न बोलनो। [illegible] करनो। ए सब ग्रन्थोत्तर हैं। वैष्णव को योग्य है जो मन मे राखे [illegible] जो या सिक्षा चित्त मे राखें तो वैष्णवता सिद्ध होई। [illegible] पाठ करे। [illegible] रात्रिके ये लक्षण सब आचरण करे। तो सब स्फुरत होई। श्री आचार्य जी [illegible] आवे। ओर सब सिद्धान्त हृदे मे आवे। स्फुरत होई। इति श्री [illegible] सम्पूर्णम्।

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के पालन [illegible] मे लिखे गए हैं।

ये लक्षण गोकुल नाथ जी ने अपने पितृ चरण श्री [illegible] वैष्णवों के हितार्थ उन्होंने अपने शिष्य [illegible] के लक्षण गुणों का वर्णन है।

संख्या ८६ भागवत, रचयिता—जनगोपाल, [illegible] ६$\frac{1}{8}$ × ६$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible] पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—संवत् १६०७ [illegible] प० बद्री नारायण पाडेय, ग्राम—आगरापट्टी पोस्ट—[illegible], जिला—[illegible]।

आदि—............ ....

श्री जदुनाथ अनुग्रह कीन्हा। भुवन चतुरदस [illegible]॥
सबद रुप होइ कहा गोसाईं। मत [illegible]॥
मैं वसुधाकर भार उतारौं। सतन्ह [illegible]॥
मैं दानों कुल मारब [illegible]।
सतन्ह सुष दुष्टन दुष बीज [illegible]॥
जस कछु प्रभु के आएसु पावा। सोई मत [illegible]॥
सब कार ससं दीन्ह एकाइ। कोगी [illegible]॥
जेही जेही कह प्रभु अएसु दीन्हा। गोकुल [illegible]॥
महा पुरुष मोहनी पठाई। देवकी गर्भ [illegible]॥
:o. :o° °

अंत—

कसक वधन सुनै मन लाई। कोटि जन्म कर पातप जाई॥
कोटि जनम कर पातप नाता। जन्म जन्म पावे [illegible]॥
भगती भगवन कथा जो होइ। सब पुरुष सो [illegible]॥
पढै गुनै जो हरष मन ते [illegible]।
सदा नहाइ गंग तट होइ [illegible]॥

इती श्री हरी चरीत्रे दसम सकधे महापुरान श्री भागवते [illegible] ध्याय॥ ४५

समत १६०७ सन १२५७ मीती वैसाष वदी [illegible] भगवत भीषराम पटे इठेरी।

विषय—कंस वध तक भागवत पुराण का [illegible]।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आरंभ के ५ पत्रे लुप्त हो [illegible]। लिपिकाल संवत् १६०७ है।

रचयिता का नाम जनगोपाल है। वे सभवत दादू पथी और सवत् १६५६ मे वर्तमान थे।

सख्या ६०. १ विजयाप्टक, २ हनुमताप्टक, रचयिता—गोपाल "जन", कागज—देसी, पत्र—५, ३, आकार—६३/४ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७, २८, १ पूर्ण, २ खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री मुरारी लाल जी पाठक, स्थान व पोस्ट सिरसा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—विजयाप्टक

श्री गणेशाय नमः ॥

दोहा

सिद्धि वृद्धि दायक सुमिरि करो मगला चर्न।
विघुन विनासन हेत हरि प्रगटे मगल भर्न ॥ १ ॥
विजया अप्टक को कहे गणनायक सिर नाय।
ग्यान महाबल दीजिये सिवसुत होउ सहाय ॥ २ ॥

॥ दडव ॥

कूडी मे मसाला सग डार देत सवजी को मार सोटन मिरिच को तोर डारे घट्ट से।
हरि को वल्लभा कैसो रूप जब नजर परै सभु को चढाइ के उतार जाय घट्ट से।
चरन कर धोई के कुल्ला करे शुद्ध होइ आसन पर बैठ तीन तारी मारै फट्ट से।
नयेन को मूदि मन लगाइ देइ रामपद विलम न लागै मन लाग जाय झट्ट से ॥

:o: :o: :o:

मेरे हिय ते जु कही शिव ने सु करैगे सत्य जथा मम भाषी।
सावर मंत्र समान फुरै सब ईस प्रताप कहो यह साषी।
धारन हारन के उर माहि गुन थामै होइ सु दीजिये राषी।
सज्जन को अति प्रिय "गोपाल" सुने उपहास कलै षल माषी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

विजया अप्टक को पढै तबै लगावै भोग।
विजय होइ रन सभा मे अरु नारी संजोग ॥ ५ ॥

इति श्री विजयाष्टक समाप्तं ॥ चैत्रे शुक्ले २ भौमे सवत् १८६५ ॥

॥ हनुमताप्टक ॥

श्री गणेशाय नमः ॥

यस्य स्मरणमात्रेण सर्वदा सुषकारकम्। इति वदति गोपाल सद्गुरु स्तन्नमाम्यहम् ॥ १ ॥
नत्वा कपीषा चरणारविंद कायेन वाचा मनसा तथैव। मे रामदूत कृपया करोसि वात व्यथारोग दूरि कुरुष्व ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सुमिरो सीताराम पद अरु लछमन बलधाम।
वार वार कर जोर के तिनको करो प्रनाम ॥ १ ॥
वदो श्री कपिधीर पद पवनतनै बलपुज।
सीय सहित रघुवसमनि बसत जासु उर कज ॥ १ ॥ऽ
करो मगलाचरन को वार वार सिर नाइ।
"जनगुपाल" इहि हेत ते वात रोग मिटि जाय ॥ २ ॥
जो तुव आनन मानिहै वात रोग की पीर।
तौ हो काहि पुकारिहौ सुनहु महाबल वीर ॥ ३ ॥

॥ दंडक ॥

केसरी किसोर को प्रताप भूरि प्रगट जग नेकहू न डरत जो लपत पल भीर को।
राम नाम हिये राषि अतिही गभीरु आप रन मे विसारद कही कपि समान धीर को।
गावत ब्रह्मादि देव नारद सारद समेत आवत जो सरन तासु हर्ता तन पीर को।
वार वार आरत पुकारत है "जनगोपाल" एक मेरे तो भरोमो जान हनुमान वीर को॥
॥ १ ॥

वात विथा तव घेरि लियो नहि सूझत नेकहु काहि निहारै।
जत्रहु मंत्र अनेक किये अरु भेषज ते नहि मानत हारे।
लक उही छन एक मे नाथ दसानन को तुम वाग उजारे।
श्री रघुवंश कुमार के दूत राषहु पीर के राषनहारे॥ २॥
भूरि प्रताप विराजत है गुन गावत नारद सारद वानी।
लंकिनि मारि निवारी सिया दुष वाग उजारे सो सव जानी।
मान मथ्यौ दससीसहि को अरु अच्छै छय कियो ई सव पानी।
"दासगोपाल" पुकारत आरत वात व्यथा तन काहे न हानी॥ ३॥

अंत—सीस कवो कर आइ गहै पुनि पीठ मै कील सी देत ठठाई।
घीच कवो मुख कोष हृदै अरु पेट मैं सूर उठै वहुताई।
आइ गहै कटि जंघ कवो पद गाठहु गाठ अधिक्क पिराई।
श्री रघुवंस किसोर के दूत जू नाससु वात विथा तन छाई॥ ४॥

॥ दंडक ॥

कीधौ कलिकाल पाइ अतिहो प्रचड भई कीधौं पूर्व कर्मन ते व्यथा आइ लसी है।
कीधौं कोऊ दुष्ट ने कियो कछू यत्न मंत्र कीधौं कछू पास आइ पीर होइ वसी है।
कीधौं कोउ देव कौ कोप होइ छायो तन नेकहू न जानी जात अंग अग कसी है।
रावरे कपीस गोपाल अति विहाल देषि तेरो दास पालै कष्ट वडी या हसी है॥ ५॥

:o: :o: :o:

.................निवाही प्रीति परकासी।
श्री हनुमंत विनै सुनिये "गोपाल भनै" जग होइ न हासी॥२६॥

इति श्री हनुमताष्टक संपूर्ण॥ चैत्रे मासे शुक्ले पक्षे तिथौ ४ गुरु वासरान्वितायं समत १८६५॥

विषय— विजयाष्टक

विजया (भंग) का गुणगान किया गया है।

हनुमताष्टक

वातरोग हरने के सवध मे हनुमान जी की स्तुति की गई है।

विशेष ज्ञातव्य—"विजयाष्टक" और "हनुमताष्टक" इन दो रचनाओ का एक ही विवरण लिया गया है। रचनाकाल किसी मे भी नही दिया है। लिपिकाल दोनो का सवत् १८६५ है। रचयिता का नाम 'जन गोपाल' या 'दास गोपाल' है। इनकी रचनाओ से पता चलता है कि ये भग के सेवी तथा हनुमान जी के भक्त थे। इन्हे सभवत वातरोग की व्याधि थी जिसके निराकरण के लिये इन्होंने 'हनुमताष्टक' रचा। शेष परिचय अज्ञात है। ग्रथ स्वामी से रचयिता के सवध मे निम्नलिखित वातें ज्ञात हुई —

"रचयिता विरोही स्टेशन (जि० मिरजापुर मे विध्याचल से एक स्टेशन पश्चिम) से आकर ग्रथस्वामी के वावा प० हरिहर जी के पास रहने लगे थे। उनके कोई न था। वे हनुमान

के वडे भक्त थे। एक दिन विना पूजा किए कचहरी चले गए तो हनुमान जी वडे रुष्ट हुए और उन्हें वात रोगी वना दिया।"

संख्या ६१. गोवर्द्धन चरित्र, रचयिता—गोपाल दास (स्वर्णकार), कागज—देसी, पत्र—३६, आकार—७$\frac{3}{16}$ × ४$\frac{3}{8}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९६, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पं० कमलनयन जी हरानिया गौड, मोहल्ला—अहैयापुर (म० नं० ७६१), पो०—इलाहावाद, जिला—इलाहावाद।

आदि—...............................

...लित भाल विसाल सोहत तिलक केसर के दिये।
जास कुंडल कान राजे नैन षजन कढिये।
:o: :o: :o:

हमहि कौन सुरपति ते काजा। लही छीर की षग दुहु राजा।
जाको चीन कर्म सुनु देवा। लहहि सद्य फल करि तसु सेवा॥
सुनहु तात पुनि औरहु वाता। रचे विचारि तीन गुन धाता॥
रजगुन ते जग उतपन करही। सतगुन ते पालन मन धरही॥
प्रलै तमोगुन ते पितु होही। जगत विदित यह वात न गोई॥

॥ दोहा ॥

सर्व रजोगुन मूल ये अंवर जलद समाज।
जल वरषत जग जिअतु सव कहा करतु सुरराज॥
मघवा लषहि पयोजन काहा। धेनु विप्र पूजहु नरनाहा॥
जो पितु मो मत नीका जानहु। तौ गिरराज हेतु मष ठानहु॥
नंद आदि व्रज गोप सयाने। सुनि प्रभु वचन सर्व हरषाने॥
जानि भाग निज नृप तन धारी। उपदेसत लषि दसा विसारी॥
:o: :o: :o:

अंत—

गोवर्द्धन मष सुरपति क्रोधा।
कहेउ वरनि जस मति परवोधा॥
यह लीला जो सुनी सुनाई।
सव सुष लहि जल भीति न पाई॥
ललन लडेती चरित अनूपा।
सर्व काल निर्वान सरूपा॥
जो गैहै करि दृढ विस्वासा।
सो पैहै वृंदावन वासा॥

॥ दोहा ॥

वकता श्रोता सवन को करै सप्रेम प्रनाम।
जथा उचित "गोपाल" जन है किंकर विनु दाम॥

इति श्री स्वामी गंगा विष्णु गोसांई चरनावुज चंचरीक गोपाल दास सोनेकार विरचिते गोवर्द्धन चरित्रे भाषा टीकायं संपुरनं॥ समाप्तं॥ सुभमस्तु॥ दोहा॥ जो न अचलता लहहि मन जन गोपाल दे जान। ऐसे थल कहु कौन सो जहाँ न स्याम सुजान॥

सहज सयाने संत जे राख्यो नैन वसाय।
सवै लषत गोपालमै जहाँ तहाँ मन जाय॥ २॥

हिदै गगन रवि प्रेम सुचि उदै होइ जब आय ।
तब गोपाल कहु कौन विधि नेम तिमिर ठहराय ॥३॥
बडे बडाई ना लहै गुन विनु जनगोपाल ।
मान सरोवर काग रहि होत कि कतहुँ मराल ॥ ४ ॥

विषय—भागवत पुराण के अतर्गत गोवर्द्धन चरित्र का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के प्रारभ का पत्र खडित है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । पुष्पिका के पढने से पता चलता है कि पुस्तक ग्रथकार के हाथ की लिखी है क्योंकि अन्य लिपिकर्त्ता का उसमे नाम नही आता ।

रचयिता गोपालदास हैं । ये जाति के स्वर्णकार थे । गगा विष्णु गोसाईं के ये शिष्य थे । अन्य परिचय नही मिलता ।

संख्या ९२क. गुरुहरि भक्ति प्रकाश, रचयिता—गोपालदास, निवासस्थान—देवगढ (मेवाड), कागज—देसी, पत्र—१९ (१४ से ३२ तक), आकार—८॥ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६३, पृ० स० ३ ।

आदि—श्री द्वारिकाधीशो जयति ॥ दोहा ॥
रंचक पालन अरु हरन विधि हरि हर दसराइ ।
पै न काज कछु करि सकै विन गनेस के नांइ ॥ १ ॥

छप्पै ॥ एक दंत दसँत सर्व सुख संत लहावन ।
बुद्धिवत बलवंत जनहि गुनवत कहावन ।
सिंदुर भाल विसाल वाल ससि की छवि छाजै ॥
मुक्त माल गर पेषि जाल उडगन द्युति लाजै ।
गोपाल दास कह लों कहें गुन अनंत वर अत्ति के ।
भवहरन महा मगल करन चरन चारु गन पत्ति के ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २३ छप्पै ॥
यह भव सिंधु अपार पाप पानिप सौं पूरै
तृष्णा ता सुत रग चलै उत्तग अतूरै ।
मोहादिक तहं भौर भ्रमहि भूमि कहिन भूमावै ।
राग दोष जहाँ ग्राह राह तिनसौं को पावै ।
दिन आउ चालु ठग काल डर घाट गोपालन दुस्तरो ।
गुरु भक्ति भाव बेवा सुहरि नाम नाव चढि उत्तरौ ॥५२॥

अंत—कवित्त—
छप्पन हूँ भोजन न राजी भे सुजोधन के विदुल की भाजी खाई राजी ह्वै संवारे की । कहत गोपाल ध्यान आवै न मुनिदन कों अहिर विचारे की । करै रसख्याल ह्वै दयाल कूवरी सो वाल देखवे कों रहै जुरपाल के अखारे की क्यो करि रिझावै उपजावै उर प्रीति ऐसी सुनिए सुनीति स्याम साहिव हमारे की ॥१००॥ दोहा ॥ मति माफिक गुर हरि सुजस गायो दास गुपाल । लेहि सोधि साधू सुजन जिनकी सुमति विसाल ॥१०१॥ इति श्री गोपाल दास जी विरचित श्री गुरु हरि भक्ति प्रकाश सपूर्ण ॥ २ ॥

शुभमस्तु

विषय—गुरु भक्ति विपयक वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमे पहले "गुरु भक्ति चन्द्रिका" बाद मे प्रस्तुत पुस्तक, और अंत मे २१ पद्य फुटकर विषयक लिखे हैं।

संख्या ६२ख गुरु भक्ति चद्रिका, रचयिता—गोपालदास, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—८॥।×६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० ब० ८३, पु० स० ३।

आदि—श्री द्वारिकाधीशोजयति ॥ दोहा ॥

जय जय जय मंगल करन सदा द्वारिकाधीस।
ब्रह्मादिकहिये बोलहि जिन्हैं नवागत सीस ॥ १ ॥ कवित्त—
कोटि अरविंद छवि पुज सौं मुखारविंद कुंडल कलोल सह सुदर करन मैं।
महा बड भाल मोर चंद्रिका रसाल छवि जाल छहरत हाल सुखद धरन मैं।
नासिका बनक बनमाल की झलक अलिमाल से अलक पलक बरन मैं।
एक ही सरन भव पास उद्धरन महा मो मन अटकि द्वारिकेस के चरन मैं। २॥

मध्य—पृ० ८

छप्पै। श्री गुरु हरि के रूप सदा हमरै सु सहायक।
श्री गुरु परम रसाल भक्ति नवधा सुखदायक।
श्री गुरु आनंद कंद वचन अमृत जिमि बरषत।
श्री गुरु दरसन पाय हिये गोपाल सु हरखत।
गुरु देव देव सवतै बडे निरखि महा करुना करन।
भव जलधि अनंत अपार श्री व्रज भूषन तारन तरन।६७।

अंत—जय सव जरप विचार शिल्प मद्रा सव राजहु।
प्रादक्षिन गति सबल भुक्ति आहुति सुभ साजहु।
सयन सु सुभग प्रनाम ध्यान करि नयन विषय सब।
आतम सुख सब अर्पि करहु आनंद अधिक जब।
गोपाल मानि बड भाल तँह बिलसेत सुभ विधि विधि धरहु।
व्रज भूषनेस गुरु कौ सु करि नाम नाम अर्प्पन करहु।१११।

इति श्री गोपाल दास विरचितायां गुरु भक्ति चंद्रका समाप्ता ॥ १ ॥

विषय—गो० श्री व्रजभूषण जी गोपालदास जी के गुरु थे इसलिये इन्होने उनका वर्णन किया है।

संख्या ६३. श्री नाथ जी की सेवा विधि, रचयिता—गो० श्री गोपिकालङ्कार जी, कागज—देसी, पत्र—८३. आकार—६।×७॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०१६, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हिं० ब० ६१, पु० स० ६।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री मद्गोस्वामी द्वारिकेसो जयति ॥

श्री नाथ जी के यहां सेवा शृंगार सामग्री की रीति लिखे हैं। चैत्र शुक्ल १ कूं नये संवत्सर को उत्सव हैं ता दिन शैया की सुपेती छींट की बिछेवंटा भी तरह वार बिछै सुजनी छींट की शैया पे बीछे। छापा के सेला सैया पे पीठक मे ओढे। वस्त्र लाल छापा सुनेरी कुलह कसूंभी ताके भीतर चित्र सुनेरी वाग खुले बंद को तनिया कसूंभी अभ्यंग जोडी हीरा की आभरण सब उत्सव के

मध्य—पृ० ४६ ।।

धनतेरस कूं वस्त्र हरी जरी के चारु चोरा छजेदार ठाढे वस्त्र लाल चन्द्र का सादा बिछवाई टाट वद की गोकुल दास पटाऊ वाली लाल जोडी लाल उत्सव की जो लाल आभरण उत्सव के होय सो तो उत्सव मे सूधरावने सिर पेच दूसरे हिंडोरा कू धरें ता प्रमाण और ३ थागदार माला तथा और हूं दोय तीन मोती की माला उत्सव के सूधरावनी साटो वालकन की माला कली जूही आदि नित मे सू धरावने शृंगार वरन माला ही करनो चुवक वेंसरनख नूपण तिलक ये उत्सव के आरसी काका श्री वल्लभ जी वारी, वेणुवेत्र हीराकी दूसरो पन्ना को भोग सव सोने के वासनन मे आवें। चन्द्र का सादा पाटया वडे टूक के, फेनी दूध का कटोरा खीर सब्याव को खारि चोवठा हीरा को। साझ कूं सब साज जदावको निकासनो खडरूपों कें दोय रूप चतुरदासी कूं तिलक होर्याक अभ्यग होय।

अंत—पिछवाई हाडी पाटीया वडे टूक ग्वाल नहीं होय सवेरे को सध्या भोग भलो आवें, कसूंभी कुल्हे हीरा कठी ऐंही धरें हीरा पोढते समे बडो करनो रितु अनुसार उथावनो पहेरावनो। इति श्री नाथ के इहा की सेवा को विधि समाप्त भई सब वडेन की कृपा सूं ६ ।। श्री ६ श्री गिरिधर जी महाराज के चरणारविंद मे साष्टाग दडवत् सदा-मूखिया जी सूं जें श्रीकृष्ण साचोरा बलदेवजी ने बताई ता प्रमाण श्री वल्लभाचार्य जी के वश मे प्रगट भए काका श्री वल्लभ जी तिनके मुख्य वस मे प्रगट भए श्री मथुरानाथ जी सुत श्री द्वारिकेस जी महासय सुत श्री गोपिकालङ्कार जी ने कृत शुभमस्तु ।।

विषय—श्री नाथ द्वारा मे विराजमान श्री नाथ जी की वारह मास की सेवा विधि वर्णित है।

सख्या ६४. कवित्त, रचयिता—श्री गोविंद या गोविंद, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—$१०\frac{७}{१६} \times ४\frac{४}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहाँपुर, पो०—मिडारा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—।। श्री. पातु ।।

वारे हैं महेश के दुलारे जगदम्व जू के योग युगति वारे गजराज सो दतारे हैं।
तारे हैं अनेक को सुधारे वुद्धिमंत कै के केतिक सघारे अघकारे महि भारे हैं।
भारे हैं सिंदूर सो सुढारे शिर सुडयारे सत सुखकारे दोऊ नैन रतनारे हैं।
न्यारे हैं लोक हूं तें विपति विदारं सही दास "श्री गोविन्द" हू की पति के रखवारे हैं ।। १ ।।

लाल गिरि लली जू के भाल शशि वाल सोहै माल मुकुताल गले हाल हलकतु हैं।
कुंडल विशाल लाल लोचन कृपाल जू के शोभित सुसुड सिद्धि झुड झलकतु हैं।
बाहु संतपाल चारु चरण प्रवाल मानो कीरति मराल "श्री गोविंद" दरसतु हैं।
काल ते कराल कलिकाल जाल काटवें को धवल मृडाल शभु गोद किलकतु है ।। २ ।।

कृपासिंधु ते न छानी भालचन्द्र ते न ध्यानी सुरराज ते न मानी प्रजापति तें न ज्ञानी है।
धनद तें न मानी कोऊ दूसरो धनेश और जलद तें न मानी भूमि वरसन को पानी है।
एते गुन खानी जाहि वेदहू वषानी सो तेऊ उर आनी शभुरानी अनुमानी है।
जानी नहीं जात श्री गोविन्द गति मातु केरी विन्ध्याचल रानी तें न दूजी महारानी है ।। ३ ।।

दान ते न दूजो जग आन अरथ साधन को ध्यान न दूजो पद पकज पहिचानी है।
मान तें न दूजो सुख आन भूमि मडल मो ज्ञान तें न दूजो कछू मुक्ति को निसानी है।
दूजो तौ कुवेर तें धनेश तिहूं लोक नाहि ऐसो तो विचारि श्री गोविन्द हिये आनी है।
राम तें न दूजो कोऊ भयो महाराजन मो विन्ध्याचल रानी तें न दूजी महारानी है ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—

जैसे पछि पक्षहीन जननि वोर सोर करै धाय दवरि माय जाय ताहि लीजिए ।
जैसे वछ दूध को वुभुछ कुक्ष पोयिवें को चकित चरति लु मातु तापै श्रुति दीजिये ।
जैसे व्युषित कंत को पतिव्रता विचेत होत आवन की पाती पति धावन सो भेजिये ।
वैसे चारु चरनन को चाहत गोविंद मद रामचंद्र चद तूं चकोर मोहि कीजिये ।।४६।।

:o: :o: :o:

मैं मुरलीधर की मुरली लई तव मेरो लयो मुरलीधर माला ।
मैं मुरली अधरा लौं धरी तव ग्रीव धरेउ मुरलीधर माला ।
मैं मुरलीधर की मुरली धरि तव मेरो दयो मुरलीधर माला ।
मैं मुरलीधर की मुरली भई तव मेरो भयो मुरलीधर माला ।।५०।।

विषय—भक्ति विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात है । रचयिता का नाम श्री गोविंद या गोविंद है । इनका अन्य वृत्त अप्राप्त है । परतु स्थानीय पूछताछ से विदित हुआ कि ये ग्रथ स्वामी के पूर्वजो मे से थे ।

संख्या ६५. १ गोवर्द्धन लीला, २ उत्सव के प्रकार, ३ वैष्णवो के नित्यकर्म, ४ गोवर्द्धन लीला, रचयिता—गोविद, कागज—देसी, पत्र—२७, आकार—८।×६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—सरस्वती भडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हिंदी, व० ६, पु० स० २ ।

आदि—गोपी जन वल्लभाय नमः ।। अन्नकूट उछव । राग विलावल
व्रज मे एक वडो हे गाव । श्री गोकुल जाको कहिये नाव ।। १
नद महरि जाहां कही राजा । मिलि वेठे सव गोप समाजा ।। २ ।।

मध्य—पृ० १

श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। अथ उत्सवन के प्रकार लिखियत हे ।। तहा प्रथम जन्माष्टमी प्रकार ।। जन्माष्टमी सूर्योदय वेधरहित करनी जो सप्तमी सतावन घडी उपरात अठावन घडी के समीप होइ तो सूर्योदय वेध जाननो । ता दिन व्रत उत्सव न करनो ।

पृ० १४ (वैष्णव नित्यकर्म)

।।श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।। श्री गोकुलनाथ जी वचन सो जो वैष्णव को जो करनो सो लिखियतु हे ।। चार घरि रात्रि रहे तव उठनो भगवत नाम को स्मरण करे । पाछे शुभ वस्त्र पेहरि आछमन करि चरणामृत लेईये ।

अंत—गोवर्द्धन लीला सूरदास जी के—पृ० ६५
सव सामग्री अर्पि गोप गोपिन कर जोरे ।
अगनित कीने स्वाद दास वरनें मति थोरे ।
इहि विधि पूजा कीजिये कह्यो सवनि समुझाय ।।
स्याम कह्यो सूरदास सों मेरी लीला सरस वनाय ।।१५।। कह० ।।

विषय—इसमें—१ गोवर्द्धन लीला, २ गोचारन के पद, ३ विविध कीर्तन, ४ उत्सवन के प्रकार, ५ वैष्णव नित्यकर्म, ६ उत्सव के पद और ७ गोवर्द्धन लीला नामक ग्रथ है।

गोवर्धन लीला मे—अन्नकूट सवधी वर्णन है ।

उत्सव प्रकार मे—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे उत्सवो का प्रकार वर्णन है ।

वैष्णव नित्यकर्म मे—वैष्णवो को प्रात. से सायकाल तक करने योग्य कर्मो का वर्णन है ।

संख्या ९६. "शब्द विष्णु पद", रचयिता—गोविंददास, कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८$\frac{3}{10}$ × ५$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० सुदामा पाण्डेय, ग्राम—चतुरापुर, पो०—भीमापार बाजार, जिला—गाजीपुर।

आदि—सीताराम १

श्री गनेशाये नम ॥

शवदः वीसुनपद. ॥

सीव सम सनकादी आदी-ब्रह्मादीक शुमिरी सुमिरी भए पाराएन ॥
सीव शारद नारद चतुरानन शुमरी शुमिरी भए पाराऐन ॥
राम प्रसाद अजोध्या वासी भजन करत भए पाराऐन ॥

:o: :o. .o

जौ मन प्रीति गोवींद जी से लावहु छुतमन की चिंता
"गोवीन्दश" म रोम रोमतन मन वच क्रम सेवा री
देहु ज्ञान दीया "गोवीन्दाश" ग्ज्ञान की वती वरन उर लागी
नेत्रन से सव शुझा "गोवीन्दाश" महीत अनहीत कोउ जग नाही एह दोउ मेरो मींता
सतगुरु दास आस चरनन्ह कीं मरन जीवन दोउ शुझा ॥ २ ॥

:o: :o: .o.

अंत—

अैठा बान्हे पत्र शवारे तेल लगए जुलुफन मे
एक घरी आवहींगे वदे कागा वीलो कहां तन मे
कौड़ि कौडी मग्रा वटोरेन्ह जोरि धरेन्ह वरतन मे
हरी के नाम भुली गै शाधो मन मुलाववोधन मे

:o· :o: .o·

आइ वुढाइ तन शरदी गरमी शीती कफ भइ तन मे
आएे वेवान प्रान लै भागा हुकुम भऐ है छन मे
डुवे शें उतीराऐ न पावही डड लगे शीरनन्ह मे
कहे "गोविंदास" शुनो भाइ शतो लवी धोती जे नर ढीलही ते का जुझव रन मे ॥

:o: ·o: :o·

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन।

संख्या ९७ मुमोक्षशास्त्र, रचयिता—गोविंद पंडित (काश्मीरी), कागज—देसी, पत्र—२९६, आकार—६॥ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—२९९७, खंडित, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामसुंदर पाण्डेय, ग्राम—पाडेपुर, पो०—लेवरुआ, जिला०जौनपुर।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ वैराग्य प्रकरण श्रवण स्मृतभाषालिख्यते ॥ सत चित आनद रूप जो आत्मा है तिसको नमस्कार है ॥ कैसा है सतच्चित आनद रूप आत्मा सो कहत है ॥ जिसते इह सर्व भासते हैं। अरु जिस विषै सर्व लीन होते हैं। अर जिस विषे सब इस्थित है। तिस सत आत्मा को नमस्कार है ॥ ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ॥ अरु द्रष्टा दर्शन हृदृश्य अरु करता करण क्रिया जिस कर सिद्ध होते हैं ॥ अैसा जो ज्ञा रूप आत्मा है ॥ तिसको नमस्कार है ॥ जिस आनंद समुद्र के......खंडित...।

:o: :o: :o:

......नत कुमार जो हैं निहकाम ।। सो ब्रह्म पुरी बिषे बैठे थे । अरु त्रिलोकी के पति जो है विष्णु भगवान सो वैकुंठ तें उतरे ।। ब्रह्मपुरी विषे आत ।। तब ब्रह्मा जी सहित सर्व सभा उठ षडे हुए ।। अरु पूजन कीया ।। अरु सनत कुमार कछु पूजन न कीया ।। तब तिसको देष करि विष्णु भगवान बोलत भए ।। हे सनत कुमार तुझको निहकामता का अभिमान है ।। तातें तू काम कर आतुर होवैगा ।। अरु मास कतिक तेरा नाम होवैगा ।। जब विस्नु भगवान अैसे कहा ।। तब सनत कुमार बोले ।। हे विस्नु तुझको सर्वज्ञता का अभमान है ।। तेरी सर्वज्ञता कोऊ काल निवर्त होवैगी ।। अरु अज्ञानी होवैगा ।। हे राजन एकतो इह श्राप हुआ और भी सुन ।। एक काल मों भृगवी भार्जा जाती रही थी ।। तिसके वियोग करि कै उहत पाइमान था ।। तिसको देखकर विस्नु जी हसे थे ।। हे विस्नु मेरे ताई देख करि तुझ हासी करी है ।। मेरी न्याई तू भी इस्त्री के वियोग करि आतुर होवैगा ।। अरु एक देवसर्मा ब्राह्मण श्राप दीआ था ।।

:o: :o: :o:

वालमीकोवाच ।। दिवि जो हैं देवलोक अरु भूम जो है पृथिवी लोक ।। अरु आकास लोक त्रिलोकी को प्रकाशता है ।। अरु अंतर वाहर आतमज करि पूर्ण है ।।

:o: :o: :o:

अंत–हे राम जी ज्ञानवान पुरुष कों शम आदिक गुण स्वभावक आन प्राप्त होते हैं । अरु अज्ञानी को अभ्यास करिके समादिक प्राप्त होते हैं ।। तिसतें अननर आत्मज्ञान की प्राप्त होती है ।। जैसे छाजो को पालना इसत्री कर्त्ती है । अरु ऊवे शबद भी कर्त्ती है तिस करिक पछियो को उड़ावती है ।। जब इस प्रकार पालना कर्त्ती है ।। -

हे राम इस मोक्ष उपाइ शास्त्र को आदि तें ले करि अंत परजत विचारै ।। तब भ्रात विकर्त हो जावैगी ।। अरु धर्म अर्थ, काम, मोक्ष सर्व पुरुषार्थ की सिधता होती है ।। अरु जस होता है इह मोक्ष उपाइ शास्त्र वोध का परम कारण है ।। जो शुध बुधवान पुरुष इसको श्रद्धा संजुगत विचारैगा ।। तिसको सिघ्र हीं आतमपद की प्राप्त होवैगी ।। तातें इस मोक्ष उपाइ का भली प्रकार अभ्यास करो ।। इति मुमोक्ष प्रकरणे समापतम् ।।

इस मुमोक्षशास्त्र भाषा फते सिंग के मापे वास्ते गोविंद पडित काश्मीरे ने किया है ।। संवत् १६२२––.....................

विषय––सामारिक माया से छूटकर मोक्ष प्राप्त करने के उपायो का वर्णन ।

संख्या ६८क. पद, रचयिता––गोविंद स्वामी (अष्टछाप) कागज––आधुनिक रूलदार, पत्र––२५३, आकार––१०३/४ × ८३/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)––८, परिमाण (अनुष्टुप्)––१७१५, खंडित रूप––प्राचीन, पद्य, लिपि––नागरी, प्राप्तिस्थान––आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ८१५।४२ बस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि––राग विभास

मदन मोहन पिय भयो न भोर ।
प्राची दिसि नहिं अरुण देखियत और सुनियत नहिं खगन रोर ।।
ग्रहिन केउ परस्पर देखिवे पन पिय वि ..का नार अनि ।। मो ।
"गोविंदप्रभु" रस मन परस्पर प्यारी के वचन लीनो चोर ।।
तू आजु देखि री मदन मोहन ए वलवीर राजें मदनमोहन मोहन पिय मनि मदिर ने वैठे निकसि आइ छाजें ।

लटपटी पाग उरमाल परगजी पटलयत नत मधुप मधु काजें ।
"गोविंद प्रभु" के जु सिथिल अरुन दृग देख को कोटि मदन लाजें ।। २ ।।

:o: :o: :o:

अंत—रागमलार

कब की कहत प्यारी ।
अजहू रिस गई मोहन मोन धरि कहत कछू नरी ।
कानिन कछुक रति सनमुख ही लरति ज्यो ज्यो वजी त्यों त्यो भई अति दुनरी ।।
वावरी भई री प्यारी मेरी जान पिय कह्यौ कहू कौन कह्यो माने तुव हृदं सुंनरी ।
"गोविंद प्रभु" पीय चरन परसि के अको भरि मिले रंग रह्यो जैसे हरद चूनरी ।।२५२।।

इति श्री गोविंद स्वामी के पद सम्पूर्णं ।।

शुभम्

विषय—श्रीकृष्ण की भक्ति तथा व्रज क्रीडाओ का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख आधुनिक रूलदार कागज के एक ही ओर लिखा गया है । समस्त २५२ पद हैं । एक पत्र मे एक पद है ।

संख्या ६८ख. गोविंद स्वामी के पद, (२५२), रचयिता—गोविंद स्वामी, कागज—देसी, पत्र—५१, आकार—६।× ८।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, रचनाकाल—स० १६४० के पूर्व (अनुमान), प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या श्री विभाग, कांकरोली, पह० व० ४६, पु० स० २ ।

आदि—

।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ श्री गोविंद स्वामी के पद लिख्यते ।। राग विभास
मदन मोहन पिय भयो न भोर ।
प्राची दिसतें अरुन देखियत और सुनीयत नही खगवन रोर ।। १ ।।
ग्रहित कठ परस्पर देखियत पिय विश्लेस कातर अति जोर ।
गोविंद प्रभू रस मत्त परस्पर प्यारी के बचन लीनो चित चोर ।। २ ।।

मध्य—पृ० २२ राग गौरी ।।

आवत वन तें चारें धेनु । सरग संग श्रुति वदेत मधुप गन मुदित बजावत वेनु ।। १ ।। अमृत मधुर धुनि पूरत श्रवनन उठि धाई सकल तजि ऐन ।। हृदें लगाई व्रजेश्वर अचल पट पोछत मुख नेंन ।। २ ।।

उन मर्दन मंजन करवावत भूखन पीत वसेंन ।
गोविंद प्रभू खटरस भोजन करि विमल सेज सुख सेंन ।। ३ ।।

अंत—राग वसंत—

वहरत वन सरस वसंत स्याम संग जूवती जूथ गावें लीला मिराम ।। १ ।।
मुकलित नूत सघन तमाल जाई जूही चपक गुलाल ।
पारिजात मंदार माल लपटात मत्त मधुप करनि ज्वाल ।। २ ।।
कुटज कदंब सुदेवश ताल । देखि मन रीझें मोहन लाल ।
अति कोमल नूतन प्रवाल । कोकिल कूजत अति रसाल ।। ३ ।।
ललित लवंग लता सुवास । केतुकी तरुनी मानो करत हास ।
इहि विधि लालन करो विलास । वारनें जाय जन गोविंद दास ।। ४ ।।२५२।।

इति गोविंद स्वामी के पद संपूर्ण ।। पद २५२ ।।

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मदिरो में गाए जाने वाले भक्तिविषयक कीर्तन ।

संख्या ६८ग. कीर्तन संग्रह, रचयिता—गोविंद स्वामी, निवास स्थान—गिरिराज, कागज—घोमुआ, पत्र—१०५, आकार—६ × ४।। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६४० के पूर्व, लिपिकाल—सं० १८६३, प्राप्ति स्थान—सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० सं० १६, पु० सं० ३ ।

आदि—।। श्री कृष्णाय नमः ।। अथ श्री गोविंद स्वामी के कीर्त्तन लिख्यते :: राज विभास :।। तज चपक ।।

मदन मोहन पीय भयो न भोर ।।
प्राची दिस नहीं अरुन देखियत ओर सुनीयत नही खग वन रोर ।। १ ।।
ग्रहित कंठ परस्पर दंपति पीय विश्लेस कातर अतिजोर ।।
गोविन्द प्रभू रस मत्त परस्पर प्यारी के वचनन लीयो चित चोर ।। २ ।।

मध्य—राग गोरी ।।
अथैया वैठे हैं व्रजराज ।।
मागद सूत पुरोहित ओर सब बड़े बडे गोप समाज ।। १ ।।
राम कृष्ण निकसे मंदिर तें पीछें लागी माजु ।।
हसि मुख चूँवि उछंग लीये गोविंद पूरन भये काजु ।। २ ।।

अंत—राग वीहा गरो ।।
आवत जात हो हारि परीरी ।।
ज्यो ज्यो प्यारो वनिती करि पठवत त्यो त्यो तू गढ़मान चढ़ी री ।। १ ।।
तिहारे विच परे सो वावरी हो चोगान की गेंद भई री ।।
गोविन्द प्रभू सो मिले क्यो न भामिनि सुखद जामिनि जात वहिरी ।। २ ।।

इति श्री गोविंद स्वामी के कीर्त्तन संपूर्ण ।।
दसकत जीवन दास के मिती महासुद १ सं० १८६३ के.

विषय—पुष्टिमार्गीय मंदिरों मे समय समय पर गाये जाने वाले कीर्त्तनो का संग्रह ।

संख्या ६८घ श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रन के नोरग, रचयिता—गोविंद स्वामी, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—३।।। × ६। इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६४० के पूर्व (अनुमान से), लिपिकाल—सं० १६३५, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ४३, पु० सं० ३४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः । अथ रंग लिख्यते ।
हा हो लालै लाल के लालै लोचन लालै के मुख लालै वीरा ।
लाल वनी कटि काछनी लाल के लालै सीस मुकेशि चीरा ।
हा हो लालै पाग सोहे अति सुंदर लाल खडे जमुना तट तीरा ।
गोविंद प्रभु की लीला दरसन लाल के कंठ विराजत हीरा ।। १ ।।

मध्य—
हां हप धोरे मोहन धोरे सोहन धोरे चंदन खोर दुसाला ।
धोरे कडाकर हातन सोहे धोरी मोहे गल मोतिन माला ।
हां हो धोरो दधि वेचन जात ग्वालनी जाय लुटावे नंद को लाला ।
हा हो गोविंद प्रभु की लीला वरनी धोरी सोहे गलफूलन माला ।। ७ ।।
जमुना किनारे किनारे प्यारो स्यामा धेन चरावे जमुना किनारे किनारे ।

अंत—

हा हो वांके आसन वाके सिंघासन वाके तकियन की छवि न्यारी ।
वाके रास विलास वने ओर वाकी वनी श्री. राधिका प्यारी ।
हां हो वांके मदिर कचन के ओर वांकी वनी व्रज की व्रजनारी ।
देखत नेंनन ताक रही झुक झाक झरोकन वाक विहारी ।
जमुना किनारे किनारे स्यामा प्यारो धन चरावे जमुना किनारे किनारे ॥ ६ ॥

इति श्री श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रन के नो रंग समाप्त. मिति जेठ वदी १४ सवत् १६३५ ई।

विषय—श्री नाथ जी के शृगार के नौ रग वर्णित हैं। ये पद शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय की सेवा पद्धति मे विशेष समय पर गाए जाते हैं।

संख्या ६६. कलिजुग के "कवित्त", रचयिता—गोविंद लाल (?), कागज—देसी, पत्र—१, आकार—२७ इच लम्बाई, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी, कलिजुग के कवित्त

राजन की नीति गई मिलन की प्रीति गई
नारी की प्रतीत गई जार जीय भायो है ॥
पंचन के न्याव गयौ सांचम प्रभाव गयो
ससित को भाव गयौ झूठ हो सुहायो है ॥
ईद्रन की वृष्टि गई भूमि सो अनिप्ट भई
सकल सृष्टि मे विप्रीति दरसायौ है ॥
कीजियै सहाय जू कृपाल गोविंद लाल
कठिन कराल कलि काल चलि आयौ है ॥
हमने ही जे दरद्री भये संग्रही सन्यासी भये
जोगी सजोगी मन माया मे भुलायौ है ॥
तपी दुज भारी विभचारी व्रह्मचारी भये
कपट को साजु कैसु लोगन वनायो है ॥
ग्यानी जनमानी पुनि दंभी आरभी भये
विरक्त जिन राग द्वेष आनि उपजायो है ॥
कीजिए सहांइ जू कृपाल गोविंद लाल
कठिन कराल कलिकाल चलि आयो है ॥

मध्य—

सूम भये स्वामी पुनि सेवक हरामी भये
कामी भये पडित तिन तन मन ठैहेरायो है ॥
छीन भये धर्मी अधर्मी ते प्रवीन भये
चाकर कुलीन अकुलीन धन पायो है ॥
वौहरे भिखारी भये व्योपारी लगरी भये,
मारि जमा ओर की दिवाला दिषरायो है ॥
पूसु घर सिपाही सूरवीर कहैत
चाकरी को छोडि देउ मान च्यो घटायो है ॥

अंत—
भैनि भतीजी भानजी कू न षवावै
कुटिनी कू रीझि दाम देत न अघायौ है।।
माय सौ लरत पाय सास के परत
निज नारी कै कहै में अनुसरत न सिहायौ है।।
भैया किये न्यारे जमाई किये प्यारे
घर सारे रखवारे कुछ नैक न पुरायौ है।।
कीजिए सहाइ जू कृपाल श्री गोविंद लाल,
कठिन कराल कलिकाल चलि आयौ है।। ८।।

विषय—इसमे कलियुग की महिमा और जन साधारण पर उसके प्रभाव का वर्णन है।

संख्या १००क. वेद गोरखनाथ का, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—५६, आकार—४$\frac{3}{4}$ × ३$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान—प० वेचनराम जी मिश्र, ग्राम—पडित का पुरा, पोस्ट—जघई, जिला—जौनपुर।

आदि—वेद श्री गोरषनाथ जी का लिषते ।।
वसती मह सुंन सुन मह वसती तह अगम अगोचर ऐसा।
गगन सिषर इक बालक षेलै वाका वपु वरन कुल कैसा।। १ ।।

अदेष देषवा देषि चडवा अद्रिष्ट चडिवा ।। पापाल की गंगा ब्रह्मांड चडिवा ।। ताहा विमल जलु पीइवा ।।२।। अलेष वरनि दोज दीपक जारीअले तीन भवन कर जोती। तिह प्रसाद त्रिभुवन सूकीअले चुण ले मांणीक मोती ।।३।। वेद नही सासत्र कतेव नही ।। कुरान पुस्तक नही वचिआ जाई ।। इस पद को कोई विरला चीनै ।। अउर सभ धंधे लाई ।। ४ ।।

:o: :o: :o:

अंत—एका एकी सिधा नमु दोए सिधु साधका।
तीन चीर कटु वानां दस वीस लसकरः।।१५३।।
मनुमुष जाता गुर मुषि लेहु लोहु मासु अगनि मुप देहु ।।
मात पिता मेटे दाति ऐसा होइ वलोवै नाथ।।१५४।।
इति श्री गोरषनाथ विरचिते श्री सहंश्रवेद संपूर्ण ।।

विषय—तत्त्व ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल महिम्नस्तोत्र के आधार पर सवत् १८५६ है, देखिए गीतासार का विवरण पत्र। ये ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है। रचयिता गोरखनाथ हैं।

संख्या १००ख. गोरख ग्रथ (?) रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ३$\frac{9}{10}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४१३ (?), प्राप्तिस्थान—श्रीमती वच्ची मिश्राइन, ग्राम—रामपुर पडिताइन, पो०—रामदयालगज, जिला—जौनपुर।

पत्र १

आदि—।। श्री गणेशाय नमः श्री गोर्षो वाचें अवधूं कोन हे नगरी कोन हे अस्थानः कोन

राजा कोन परधानः श्री गुरदत्तात्रे वाचे स्वामी. १। काया नगरी हेर्द अस्थान मन हे राजा पवन हे परधान. श्री गोर्षा वाचे अ० कोन मुल कान वेला कोन हे गुरु कोन हे चेला कोन तत्व ले करो अकेला. श्री गोर्षो कोन मंगल तें आए सोधा कोन मगल ग्रह वासा कोन निवाने पानी पीवो काहा तुम्हारा वास श्री गुरु सून मगल ते आएं साधी गगन मगल चीर वाम। नदी नीवाने पानी पीए रुषे व्रछ वासाः श्री गोर्षा कोन तुम्हारी धुणी बोलीऐ कोन फावमी आसन धारि. कुवार। गोवरी धुनी दीनी कोन अगन पर जाली. ४ : श्री गुरु० गगन मगल मे धुणी हमारी वीवेकपा . . ।

:o: :o: :o:

पत्र २

श्री गोर्षोः कोन दरिआव कोन दरिवेसः कोन गुरु ने मुन्के केस.
मागे भीक्षा भामो गाव कोन पूर्स का समरो नाव
श्री गुरु० दिल दरिआव एवन दरवेस ग्यान गुरु ने मुंडे केस
मागे भिक्षा तारे गाव अलष पुरस का समरें नावः
श्री गोर्षो. कोन दिसाते आए सीधा काहा राषो तुमारा भाव
धरती तुम्हारी वेहन भानजी काहा रषोरो पाव
श्री गुरुः पूर्व दिसाते जाएँ सीधा पछम दिसा रखो हमारा भाव
धरती हमारी वेहन भानजी पापी के सिर पाव
श्री गोर्षोः कोन तुम जोगी जोग जुगता कोन तुम जोगी हे अवधूता
माके पस्म के माके पूता न सन वान कारोन. राजा किस कारण भएँ जोगी अवधूता
श्री गुरुः हमही जोगी जोग जुगता हमहो जोगी हे अवधूता
पेठत पसम नीकलते पूता. नीलनवान कारी उराजा इस कार्णे भए जोगी अवधूता.
श्री गोर्षो. कहो तुम जोगी जोग जुगता कहो तुम जोगी मावर भूता
जव तुम्हारी माता कुवारी जव काहा रहते पूता
श्री गुरुः हमही जोगी जोग जुगता जव हमारी माता कुवारी जव हम रहते इहलोक

:o: .o: :o:

अंत—

श्री गोर्षोः कोने दीए मम कमल कोने दीनि झारि
कोने दीए भगवा वस्त्र कोने कीए ब्रह्मचारी
श्री गुरुः ब्रह्मा ने दीए मम कममंल सिव ने दीने झारी
वीस्न ने दीया भगवा वस्त्र सतगुर ने कीने ब्रह्मचारी
श्री गोर्षोः कहो तुम ब्रह्मा ब्रह्मचारी कहो तुम हात पुस्तका होएँ
फरोममधारी कहो तुम पोथी कलावो कोन हस की पुजा करो
श्री गुरु. हमही ब्रह्मा ब्रह्मचारी हमही हात पुस्तक लेइ फरें मम धारी
नाद विंद की पोथी चलावें परमहस की पुजा करे जिसतें आतम बोध ब्रह्म कहावें
श्री गो०...
....अपूर्ण... ।
१४१३

विषय—श्री गोरख और दत्तात्रेय गुरु का सवाद।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के दो ही पत्रे है। जिनकी आद्योपात नकल कर दी गई है। एक स्थान पर १४१३ लिखा गया है। पता नही यह सख्या क्या सकेत करती है। लिपिकाल तो यह हो नही सकता क्योकि प्रस्तुत प्रति इतनी प्राचीन नहीं है। रचनाकाल हो तो हो।

संख्या १००ग. गोरखबोध, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—४६, आकार—४¾ × ३¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ वि० (लगभग), प्राप्तिस्थान—प० वेचनराम जी मिश्र, ग्राम–पडितपुरा, पोस्ट–जघई, जिला–जौनपुर।

आदि—ॐ० स्वस्ति श्री गणेशाय नम. ॥ अथ गोरष वोध लिपते ॥

॥ गोरष उवाच ॥

स्वामी जी तुमतो गुरु हमु तो सीष।
सवद इक पुछवा दया करी कहवा मनहु न करवा रीस।
आरभे चेला कसिवदरह। सतगुरु होय सो पुछ कह॥

॥ मछद्रोवाच ॥

अवधू रहवा. वाट घाट रुप व्रछ कि छाया।
तजिवा कामु क्रोध लोव मोह ससार की माया॥
आया सुगुप्ट अनत वीचारवा षडत नदिरा। अलग अहार।
आरंभे चेला अस वद रह। गोरप पूछ मछद्र कह॥

अंत—अषेट चक्र का जाणे भेव। आप ही करता आपही देव।
पन पवन साधते जोगेसरा॥ जरा पलट काग्रा होये न रोगी॥ ये मछद्र गोरप सवादा॥ पठंते हरत पापा॥ पापन लियते॥ पुंन ना हरते॥ ॐ नमो सोउ गुरु मछद्र नाथ॥

इति श्री मछद्र नाथ पादका नमोस्तुते॥

इति श्री मछद्र गोरप गोप्टे व्रह्म गोष्टे॥ व्रह्मग्यान गोयप वोध योग शासत्र सपूरण॥ शुभमस्तू॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १८५६ वि० है जो महिम्न-स्तोत्र के आधार पर दिया है, देखिए 'गीता सार' का विवरण पत्र।

संख्या १००घ. गोरख कुडली, रचयिता—गोरखनाथ, कागज—देसी, पत्र—५, आकार—११॥ × ५। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुरारा, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८५५ के नर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० १०७, पु० स० १७।

आदि—॥ ॐ० श्री गणेशाय नमः॥ अथ गोरख कुंडलि लिख्यते॥ नाभि विषे कुंडली सर्प के आकारि स्थित है। तिस विषे दस नाडी उर्ध गमनी है। अरु दसो नाडी अधोगमती है। पहिले चतुर्विंश नाडी है स्थूल ही निति न हो रहिनि सत्तसइ सप्ताधिक है तिना विषे दस नाड़ी श्रेष्ठ सभन तें वडी है।

मध्य—पृ० ३ श्लोक॥ राग द्वेष तथा लजा भय मोह स्तथैवच। नम पंच गुणाप्रोक्ता ज्ञातव्या वर वरणीन॥ टीका—

रागु द्वेष लजा, भय मोह इतने आकास के गुण। पंच प्रकार प्रकृति है। शुक्ल पक्ष विषे आदि चन्द्रमा, कृष्ण पक्ष विषे आदि सूर्य। एक मतें आदि लेसरि आदि त्रे त्रे का उदे है। चन्द्रमा के दिन उदे विषे। जे सूर्य नाडी चले। अथवा सूर्य के दिन उदे विषें कन्द्रमा नाडी चले तो असुभु होइ उदेग होइ। शुक्रवार वुधवार सोमवार इतने वारे चन्द्रमा नाडी चले।

अंत—जीवे उ प्रीति मोदिन १६।२३।२६ चले तो महित १। जीवे उपराति मरे दिन ३१। रात्र ३१। चले तो दिन ५ जीवे उपराति मरे दिन ३३ रात्र ३३ चले तो उसी दिन मरे। इसि वात को जरिग योगी पुरुष है। चारममक, पच्च रदि-परमाग ससि सूर्य गोरख वोले योगी योहि। जोतिक घटि मैं मूलु। इति श्री गोरख कुडली सपूर्ण समापत सुभ भवतु कल्याणमस्तु भगवान गाट...

विषय—प्रस्तुत ग्रथ मे योग की दृष्टि से शारीरिक स्थिति का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—खुले पत्ते हैं। ऊपर "गोस्वामी श्री गोकुलनाथम्येद" लिखा है। इनका समय सवत् १८११ से १८५५ तक है।

सख्या १००ड सूक्ष्मवेद, रचयिता—नाथगुर (? गोरखनाथ), कागज—देसी, पत्र—२२, आकार—६ × ३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८३७ वि०, प्राप्तिस्थान—प० दमिरठ उपाध्याय, पोस्टमास्टर, ग्राम व पोस्ट–चिरियाकोट, जिला–आजमगढ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वतीये नम ॥ श्री गुरुभ्यो नम. ॥ श्री पीता-मातायै नमः ॥

ॐ वस्ती मे सुंन्य मे वस्ती तहा अगम अगोचर ऐसा।
गगन मडल मे वालक वोले तिसका नव धरोगे कैसा (? नाम धरोगे कैसा) ॥ १ ॥
अदेख देखवा देख खवा चारिवा दृष्टराखेवा चीया।
तापाल की गजा ब्रह्माउ चढीयवा तहा वल वींवल जल पीया ॥ २ ॥
तो यांही इ आछे याही आलोप याही रचले भीने त्रीलोक ॥
आछे सग बसे जीव ईस कारण ईनूंतरा जा योगेसर हुवा ॥ ३ ॥
वेदेन सास्त्रे कतेवेन पुराणे पुस्तक न वचा जाई।
ते पद जानत कोई कले योगेस्वर और सभ धधे लाये ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अत—तिसरा खटपटी उपाचा दस पाच तहावा वाद। येका देकी सीधान दोन सिध साद्ध का। चार पांच कुटुंवान' ॥ दस वीस तहा लस्कूरा मन मुख जाता गुरु मुंख ले। लोहू मास अग्न मुख दे ॥१०॥

मात पींता की भेटे आससा होये वोलावे नाथ ॥१६१॥
नाद नाद सभ कोई कहे नाद ले कोई वीला रहे।
नाद वींद है फिकी सीला जो साधे सो सिधो मीला ॥१६२॥

इति श्री नाम गुरु का सूक्ष्मवेद ॥ समापत सपुरण ॥ सुभ भवतु ॥ स० १८३७। अश्वन् सुदी १४ ॥ गुरु लरवींत ब्राह्मण उदीच्य ज्ञाती टोल कीया गुजरातना पडा मगल जिसु तुमोहं जियेण लखित शुभभवतु कल्याण मस्तु ॥ जोगीतीर्थ नाथ पाठनार्थ परोपकार्थ तीर्थ नाथ नीं पोथी छे काशी मधे लखीछे ॥

विषय—तत्व ज्ञानोपदेश वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल ज्ञात नही। लिपिकाल सवत् १८३७ है। रचयिता का नाम नाथ गुरु लिखा है, पर ग्रथ को पढने से गोरखनाथ विदित होता है। अब तक गोरख-नाथ के ग्रथो की प्रतियाँ सवत् १८५६ तक की लिखी मिली है। प्रस्तुत प्रति उनसे प्राचीन स० १८३७ की लिखी है। लिपि वहुत अशुद्ध है ठीक-ठीक पढने मे नही आती। प्रस्तुत रचना के साथ एक ही हस्तलेख मे निम्नलिखित अन्य सस्कृत ग्रथ भी लिपिवद्ध हैं —

१—महिम्न स्तोत्र—पुष्पदताचार्य (अपूर्ण)
२—गोरख शत—गोरख नाथ
३—पचमुखी हनुमान स्तोत्र—
४—दुर्गा कवच—
५—दुर्गा सप्तशती—
६—केदार कल्प—
७—गोरख वोध (हिन्दी)—गोरखनाथ
८—गणेश पचरत्न—
९—विना नाम का सस्कृत ग्रथ—

सख्या १०१. नवलनेह, रचयिता—घनदेव वैष्णव कान्यकुब्ज, निवास स्थान—बनारस कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—५॥ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप)—३१२, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्यलिपि—नागरी रचना काल—स० १८५४, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० १२०, पु स० ६।

आदि—अथ नवलनेह ॥ छप्प ॥ दोहा ॥
एक समय व्रज नागरी गई जमुंन जल लेन।
देख रूप नँद नँद को गई सुध नेह ।१॥
घर आई वेवस भई वेठी अगन माभ।
खान पान मागत नहीं भई भोर ते साभ ।२॥

मध्य—पृ० ३३ दोहा ॥
सोक मोह मद आद दे तिनके उर अग्यान।
जो नद नदन रूप को कियो न अमृत पान ।४६॥

दोहा ॥ प्रीत करी नद सो मे सुन सखी मान।
मोहन सुभत ओर कछु बिन व्रजचंद सुजान ।४७॥

सवैया ॥ चंद समान भये वृज चँद जो हो जो चकोर को रूप धरोगी।
श्रुरस मान कहे हरी सो जुपे कँज मे कँज को रूप रोगी।
जो रस रास कहे उनसो वृज नार ह्वे पाई न जाय परोगी।
वा नदनँद सो नित मीलो सखी रूप शुधा अँखीयान भरोगी ।४८॥

अंत—सँमत अष्टादस सुसत चोपन ही परमान।
माघ मास दसमी सुकल वार भानुसुत जानि॥ ९॥
कहे ग्रंथ घनदेव कवी विप्र बनारस वास।
कान्यकुब्ज दुबें सही जेसी बुध प्रकास॥१०॥
पछिम धरि द्वारावती देस कुसस्थल जानि।
पुरी सुदामा वसत तहा महा मुक्ति को दानि॥११॥
ताहा भूमिपति जानिये हे राणा श्री सुरतान।
दाता ईस मानि पुनि वार यथा हनुमान ।१२॥
दरस द्वारिकानाथ को आय करे घनदेव।
पुनि पुरव हरमे तहा कीनो ग्रंथ सुमेव ।१३।

इति श्री घनदेव कवी विरचितं नवलनेह संपूर्ण ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ मे कवि ने भगवत्लीला के अतर्गत सयोग और वियोग शृगार का वर्णन किया है।

संख्या १०८ राग माला, रचयिता—घनश्याम (चतुर्भुज मिश्रात्मज) निवास स्थान—आगरा, कागज—देसी, पत्र—३, आकार—६॥ × ४॥ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप)—१२०, पूर्ण, रूप—साधराण, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १७००, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८२, पु० सं० ३।

आदि—॥ श्री गणेशाय नम. ॥

जाके रूप न रेख कछु नेंनन देखे सव ।
निर्मल नाम अपार गुन आदि अंत अव तव ॥ १ ॥

अरिल छंद—

प्रथम सरसुती देवी गणेस मनाई के । मिश्र शिरोमनि जान सुबुध गुरु पाई का ।
कासिम जानि सुजान कृपा कवि पर करी । रागमाला भाषा करिवे कों चित धरी ॥

अथरतनाकर मत—

खरज रिश्वभ गधार कहि मध्यम पचम नाम ।
धैंवत ओर निखाद ये सुर सातो घनस्याम ॥ १ ॥

मध्य—पृ० २

अथ गोरी लछनं ।

गोरी स्याम वरन तन जानो । कोकिल केसो कंठ वखानो ॥
अतिहीं सूछम नाद जो करई । कांनन कोंप आंव धरई ॥
स्वेत वास ससि वदनी वारी । रचि पचिकें करतार सवारी ।

दोहरा—पीत कंचुकी उर विषें मालकोस को प्रान ।
गोरी ग्रह सुर खरज हे ओडव जात वखान ॥

अंत—अथ देसकार ॥ चोपंया छंद ।

कनक वरन तन नेन विसाल । वदन खोरि मुकत अरु माल ।
कुच कठोर मुख ससि उनहारी । सदा रहे नाइक सग नारी ।
केलि को रस रंग उपजावे । यह तिय नायक को सुठि भावे । दोहा ।

देसकार सुरगृह खरज सपूरन सुविचार । वरखा रितु निसि अत ये गावहु नाचो नारि ॥ दोहा ॥ रागध्याय सुनि ससक्रत भाषा करी जु जोरि । पडित पढी है वनाइकें मूरिख लावेंहि खोरि । स्यामु आगरे नगर को राजघाट हे ठोर । पुन्न चतुरभुज मिश्र घट वापिनि की पोरि । संवत् सत्रह से वरस तापर वीते होई । फागुन सुदि तिथि त्रोदसी सुनहु जुगुन जन लोइ ॥ इति श्री रागमाला घनस्याम कृत समाप्ता ॥ हनवत मत करी । शुभ भूयात् ॥

विषय—राग रागिनियो का वर्णन । रागो की उत्पत्ति, उनका स्वरूप, और गायन का समय, आदि का वर्णन उदाहरण सहित किया गया है।

संख्या १०३ वैद्य जीवन, रचयिता—घनश्याम "द्विज" निवास स्थान—आजमगढ़, कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—६$\frac{1}{10}$ × ५$\frac{2}{10}$ इंच, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—सं० १९१४ वि०, लिपि काल—सं० १९१७ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री वावू शंकरप्रसाद सिंह, खडहर, पो०—मुफ्तीगंज, जौनपुर।

आदि—श्रीगणेशायनम. श्रीमते रामानुजाय नम

अथ वैद्य जीवन भाषा लीष्यते ॥दोहा०॥

श्रीगुरु चरण कमल रज सिर धरि करो प्रणाम
जाकी कृपा कटाछ ते पूर होत सब काम ॥ सोरठा

पुनि कर जोरि प्रनाम रामानुज के चरण को
करि भुसुर घनस्याम वरणत वैद्यक ग्रथ ऐह
वैद्यक ग्रथ अनेक हैं अधिक एक ते एक
तामे लोलिमराज ने कीन्हो कठिन विवेक

॥ दोहा ॥

ताकी मैं भाषा करी छामयो कवि अपराध
निज निज बल पक्षी उडै जैसे गगन अगाध

॥ कवित्त ॥

प्रगट है क्षीर अंभोधि ते आयु हरि हाथ पीयुष की कुभ लीन्हे
रतन मो रतन सुरनारि के हेत प्रभु रूप धरि ताहि को काज कीन्हे
वहुरि ससार के लोग दुष नासवे हेत करि ग्रथ आराम दीन्हे
भनै "घनस्याम" जो प्रनत जन ताहि को तुरत दुपदोष सब लेत छीने

॥ दोहा ॥

जनक दिवाकर को सुमिरि ताकी कृपामनाय
सहितनिदानक ग्रंथ ऐह लोलिमराज वनाय

॥ सोरठा ॥

वैद्य जीवनो नाम विस्तरते रचना किए
सो वरणत घनस्याम ॥ करि भाषा निज बुद्धि सम०

॥ कवित्त ॥

चित नाहि लगे ललना जिनको कवितारस वारिध मो न तरे
ऐह छंद प्रवध को ग्रथ परिश्रम सो मन मो केहि भाति धरे
जिमि नैन विहीन ते वार वधू वहु भातिन कोटि कटाछ करै
"घनस्याम" भनै कर जोरि तिन्है जिमि वानर मोतिन हार गरै

॥ चौ० ॥

अंत—

ग्रंथ ऐ लोलिमराज वषानो वैद्य शास्त्र धन्वन्तरि जानो
कवि कोविद रसिआ जग कोई ताके भूषण सम यह होई

॥ दोहा ॥

जनक दिवाकर क्षीरनिधि ससि सम प्रगटे आइ
निज भामिनि ते ग्रंथ ऐह लोलिमराज वनाय०

दो०-लोलिम नारी ते कहे वैद्य जीवनो नाम
करि भाषा तेहि ग्रंथ को वर्नै घन द्विज घनस्याम
मनुग्रह ससिवत्सर कहे तपस कृष्ण गुरुवार
षष्टी तिथ घनस्याम द्विज कीन्हो ग्रथ उदार

॥ सोरठा ॥

आजमगढ स्थान गौरी संकर के निकट
कीन्ह ग्रंथ निर्मान पडित जन सो जानिहै

॥ दोहा ॥

वाजीकर्ण रसायन विस्व ताप हर जानि
रस पुनि विविधि प्रकार के यामे कहे वपानि

इति श्री वैद्य जीवन भापा कृत घनस्याम रामानुज दास वाजीकर्णादि प्रस्तरो नाम पंचमो विलास : ५ मिति आश्विन वदी १० वार अतवार के संवत् १६१७

रचना काल

मनु ग्रह ससि वत्सर कहे तपस कृष्ण गुरुवार
षष्टी तिथ घनस्याम 'दिज' कीन्हो ग्रथ उदार

विषय—आयुर्वेद के अतर्गत वाजीकरण और रसायन आदि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है। समस्त छव्वीम पन्ने हैं। रचना काल स० १६१४ वि० और लिपि काल स० १६१७ वि० है। रचयिता "द्विज घनश्याम" हैं। ये गौरीशकर के निकट आजमगढ के रहने वाले थे। अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या १०४. प्रह् लाद लीला, रचयिता—घनस्याम या स्यामदास, कागज—देसी, पत्र—३४, आकार—६½ × ४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० ८०२, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

आदि—श्री गनेस जू आनिम श्री सरस्वती जू गुरभेन्म. लिप्ते पैंहैलाद चरित्र ॥

भाषा करौ प्रगासु गुर गनेस प्रसाद ।
साधुन सीर नाइए ॥
तन मन वुधि विचार राम गन गाइए ॥
एक समए निजूधाम चले सनीकादिक चारौ ।
इजैं विजैं छरिदार छौर लैं गुरन सम्हारौ ॥
कैसहु वान न पाइए फीनौ वहुत विचार ।
जव रिपि जुइ अग्या करो तुभ ठोऊ अवुर ससार ॥

अंत—

गोद लिए पहलाद जू भेटैं अंकु लगाइ ।
ऐसे है रघुनाथ जू स्यामदास वलि जाइ ॥
राम गुन गाइए ।
प्रभु पहूचे निज धाम इंद्रपदवी पहीराई ।
धनि धनि पैंहिलाद जूभली तूम भगति दीठाई ॥
जौ जह लीला कहै अरु सुनै सूफल सोइ ।
धाम सूर नर मूनी आरती करे ..घनस्याम ।
राम गुन गाइए ॥

इति श्री पहिलाद लिला संपूरसमापता श्रीनररौय जू सदा सहाई भादौं सुदि १॥ सं० १८०२ भूलौ चूकौ माफ जू कोउ वाचे अरु वाचि सूनावै मानि वैकुठ जाई ॥

विषय—प्रह् लाद कथा वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पत्रो के एक ही ओर लिखा गया है। रचना काल अज्ञात है। लिपि काल सवत् १८०२ है।

रचयिता का नाम घनस्याम है, पर कही कही "स्यामदास' भी प्रयुक्त हुआ है :—
"ऐसे रघुनाथ जू स्यामदास बलि जाइ"।
अन्य वृत्त नही मिलता।

सख्या १०५, यमुना लहरी, रचयिता—घनश्याम दास, निवास स्थान—भरतपुर (?), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ × ६, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री राम जी दोहा

विघन विनासन सुख करन गवरि पुत्र गणपत्ति ॥
रस आनद करि जोरि कै सदा करै प्रणपत्ति ॥

॥ कवित्त ॥

ब्रह्मा के कमंडल ते मण्डित तिहारी जोति पडित अनेकन के घट मे समानी तूं॥
सेस औ सुरेस मुन नारद हमेस रहै पारवती गाई कहूं शकर बखानी तूं॥
भनै घनस्याम धाम सुक नै सुनी है जहा युक्त सौं परक्षित की मुक्त मनमानी तूं॥
वेदन बखानी सुख संपति की खानी जलरूप सो दिखानी श्रीसारदा भवानी तूं॥१॥
प्रथम सुभस्थल मे गऊ लोक राजत ही दूजौ रविमडल की किरण सुहाई ही॥
तीजै घनस्याम भनै जामन के वृक्ष बीच चौथे डार डारन मे फूलफल आई ही॥
पंचमे प्रवेश हेमगिरि में धसी ही धाय खष्टमैं विहाय अग भूम छवि छाई ही॥
सप्तमे चली ही जलरूप सो अपार धार राधिका कमार कुमार ढिग आई ही॥२॥

मध्य—
कैसी है सुधाकर में सुधा की सुधाई घरी,
जैसी है सुधाई च्यार ब्रह्मावेद वानी की॥
कैसी है सुधाई च्यार ब्रह्मावेद वानी बीच
जैसी है सुधाई खल दलन भमानी की॥
कैसी है सुधाई खल दलन भमानी बीच
जैसी है सुधाई जग कृष्ण सुखदानी की॥
कैसी है सुधाई जग कृष्ण सुखदानी बीच,
जैसी है सुधाई जमुना जी राजरानी की॥१६॥

अंत—

॥ सवैया ॥

च्यारि असी व्रज कोस के बीच मे ध्यान धरै गुन गामैं प्रसंगा॥
रामधनी श्री शोभा कौ सागर मुक्त पदारथ देत अभंगा॥
दान करै उरपान करै असनान करै प्रिय होत त्रभंगा॥
आनसी पाप निवारण कौ गिरिराज मे राजती मानसी गंगा॥४१॥

विषय—इसमे यमुना की प्रशसा मे दोहा, कवित्त और सवैया हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के रचयिता का नाम लाला घनश्याम दास है। ये भरतपुर के रहने वाले थे। परिचय अज्ञात है।

संख्या १०६. अरिल्ल, रचयिता—चद गुसाई, कागज—देसी, पत्र—१५, आकार—८ × ५½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२०६, पूर्ण, रुप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८१८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह) काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

आदि— ॥ अरिल्ल छद ॥

श्री राधा कृष्णो जयति. ॥ अथ चद कृत छद पलवग लिष्यते ॥
बनि ठनि कै इत आइ कन्हाई। मुरली मधुर बजाइ सबै हम मोई॥
सषि वाके दृग हौ धौं को कहै। चद रसिक नदनद पढ्यौ जिहि के ..
किय पैंडौ इत आइ ढठौंना नद कै। निध .... इ सकोचन नद कै॥

० ० ०

तब मेरी सुधि लेत सुपानी पियतकी। करि कुबिजा सौं हेत सु अब तौं पियतकी॥
उधौ उर कौ तापु सु चाहत जे हरै। जोगहि के मिस आपु सुच हत जे हरै॥५४॥
तब सौ मन हरि लेत सुपाइनि सांकरै। अबतो रहन न देत सुपाइनि साकरै॥

अत—

हरि आवन कब होइ सगुन हैं देषती। निगुन लपै नहि कोइ सगुन है देषती॥
कठिन सुसमा थुर लोग न जानत पीर सही। तिन्हें सिषावत जोगु जानत पीर सही॥२२०॥
तब चितु लीनौं चोरि सुहित करि सोच है। अब सु वढावत हियै अहित करि सोचहै॥
कब आवै व्रजचंद कहौ नहि मुद्दई। ऊधौ तजि छल छद कहौ नहि मुद्दई॥१११॥

इति श्री गुसाई चंद कृत अरिल्ल सपूर्ण॥

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियो का विरह वर्णन तथा उद्धव-गोपी सवाद।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल मतिराम कृत रसराज के आधार पर सवत् १८१८ है। ये दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे है। प्रस्तुत रचना हस्तलेख के आरभ मे है। इसके ७ पत्रो के किनारो के तिहाई भाग नष्ट हो गए हैं। इसके साथ एक ही जिल्द मे निम्नलिखित ग्रथ और हैं —

१—वियोग वेलि- —घनानद
२—वधू विनोद—कालिदास
३—मान मजरी (नाममाला)—नददास
४—अनेकार्थ मजरी— "
५—रसमजरी "
६—विरह मजरी "
७—भाषाभूषण—महराज जसवत सिंह
८—अष्टयाम—देवकवि
९—नखशिख—बलभद्र
१०—रसराज—मतिराम।

संख्या १०७. बूढारासो रचयिता—चदपरतिप, कागज—देशी, पत्र—१४ आकार—३½ × ४ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, खडित (केवल प्रथम पत्र नही है) रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३२ वि०, लिपिकाल—स० १९१४ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि— लसी थांरो काम रसां०

मोल मोटरा रए दीसैं वाप जी मरोड रापैं पिता ।
रूपीया रो लाल वहोवैं अति घणे ।
तो परदेशा क्युं नी जाय सो० ३ अं
मोटी उवैं ए माता डावडी अरनान डीषो भरतार
उणरो तो जीव डोर है दरषसु मोटो अप जायसी दिन च्यार ४
सां० वारैं वरसांरी माता जावजी अरसाच वर सरो गलैं फास
उणरो तो जीव जो आवैं सोच मैं निहचैं रंजा पारी आस सा. ५ अं०

मध्य—रूपीपा मिचाक देय न जाए जी जी जैसी सोमल जहर इण भव
डुवुंता हरी जी करी जी । काढ्यौ पुरवलो वैर ३ पू० रोढ्यो
पावो दिन दस गल गली जी माथैं वाधी मुजरी पाध
म्हे माहरैं पूचा सिधावस्था जीमत धरो मन मांहीं राग ३ पू०
॥ढालैं. ॥ महिला मैं वैठी रासी कमलावती । देसीः ॥

वाप कहै वेटी सुणो वोलोनी वोल वीचार दोरी तोपाल मोटी करी उपदेप्या तिणवार ?

अंत—॥ढालैः॥ जतनीरी । देशीः ॥ वेटी थारैं मायारो मोडो तोनें इशा वितर्कि
सडीर वोडो इण सुहागण पणैं सुंघाई सामा इक करस्युं सदाइ माई
नव तत्व हिरदैं धरसुं तपस्यानैं पोसो करयुं घर सारूं दान जदेसुं
मन मान्या कारज करेस्युं । सवत अठारैं वतीसैं आंणी मृगसर मास एजाणी
एजांणी चंदपरतिप वपाणी सुनो कलजुगणी सारगी १॥ ईती वुढ़ा रासोः॥ ॥
सपूर्णः॥ सवत् १९१४ वर्षे लिपत ॥ वीर वैंताल ॥
आशोज वदी १३ कलकत्ताः ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ डिंगल भापा मे है। इसमे वृद्ध विवाह के दोप वर्णन किए गए है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ डिंगल भापा मे है। इसका प्रथम पत्र लुप्त है। सख्या २ से १५ तक के पत्रे उपलव्ध है। रचयिता का ग्रथ से कुछ परिचय नही मिलता। रचनाकाल स० १८३२ वि० और लिपिकाल स० १९१४ है।

संख्या १०८. भापा लीलावती, रचयिता—चक्रपाणि, कागज—देशी, पत्र—२२, आकार—१२×६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण—(अनुप्टुप्)—२८४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभापा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्रीशः पातु श्रीनक्षात्र विद्यायैं नमः॥ भाषा लीलावती लिष्यते॥

छप्पैं—

........................नमो नमो असरन सरन॥
....॥
वंदित पद सुर नर नरिंद..........................॥
चतुर नर नाँह..........कल अलप.........जह॥
कोमल क...॥
(नि) त्य पदन लीलावती दैं सरस सुभा...........॥
..............णनि पुनि नमो नमो असरन सरण ॥

॥ छंद मोतीदास परिभाषा ॥

राटक विसति काकनिशोइ ॥ . . . . ॥
. . . . पोडश इम्म वपानि ॥ सोलहइम्मा . . . . ॥
. . . . ज वहत ॥ मिला इन्नि गुजनि. . . . . ॥
. . . . ॥

मध्य— उदाहर चौपाई

रुपइया चौराणवै मगाय ॥ दिए तिनकी व्याज धराइ ॥
कितेकि तिन मैं ते धन काज ॥ दीन सही पिचोत्तरा व्याज ॥
मास सात वंते घर आए ॥ फुनि हूजे कीहूते विवाए ॥
दसवै माति डोतर पाए ॥ मास पाँचवं तापर लाये ॥
व्याज तिहूं को भयौ समान ॥ तौ किते किते पाए परमान ॥
अथवा वह सब व्याज बराबरि ॥ क्यों क्यों कौनरव एडाधरि ॥
कियै गणित हूंते पै कैसें ॥ कहि विचारि लीलावति तैसें ॥

अंत— उदाहरण सवैया

पहले दिन च्यारि दए कइया दिन हस हैर मैन वरीक दिवाये ॥
यौं वढतै दिन इन्न लैंहि उन पच हिलाव सवै कृरि पाये ॥
ते सब जोरि विचारी सबैं कहौ कितेनैं रुपैया उनके घर आये ॥
जो चय गछ प्रवीन तिप तैं ई लखें जु तुम्हारे वताये ॥

न्यास ॥ आदि च्यारि ४ चय ५ । गछ १५ । गछमैं १ । एक घटावै तव १४ ॥ चय पच ५ ॥ पचगुण हुआ ७० ॥ आदि धन ४ ॥ जो हुवा सो हुवा ७४ ॥ एता सु पाछिले दिन दिया फेरि ॥ आदि धन जो उचा हुवा ७८ ॥ इहकों आधौं ॥३६॥ इह गछ १५ ॥ गणाया ५८५ ॥ हुवा यह धन ॥

विषय—संस्कृत ग्रंथ लीलावती का अनुवाद ।

संख्या १०६. गढ पथैना रासा (पथैना रासो), रचयिता—चतुरराय, कागज—देशी पत्र—८, आकार—१०×७ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—

. . . . छंद दोहा ॥
पोता सफतर जंग कौ आयौ देत निसान तोप तीर तुपग कौ दल मैं नहीं समार ॥
सारदुल के वश मैं । वोटी लीयौ सीरभार दया धरम जाके सदा ॥
औौर कृश्न कौं नाम ॥ लाषन कौ दाता भयौ । सारदुल सरनाम ॥
थरथराई भूमिया सवै । को गहै सकै श्वान ।
कोपि पथैने पै चढ़ौ अली सहादत षान ॥

॥ छद भुजगी प्रयात ॥

चढे षान सुलतान लागी न वार ॥
सजै मीर उमरांव नाना प्रकार ॥
चढ़े षाय के षान दै दै दरेरें ॥
वल देज धाए फिरै नहीं फेरे ॥

इरानी तुरानी पुरासीस धाए॥
तिलगी फिरगी फरासीस आए॥
चढ़ैं सेप सावूत लोदीन वातैं॥
दुरनी मढनी वटनी बयानैं॥
चढ़ैं स्याह सीदी वसीदी विलारी।
करैंवा कपट वडे सव पीलारी॥
कुमंता विलोरी दुवाजैं समदे।
चढ़े पीठ तिनके सिपाही चुनदे॥

मध्य—

॥ छद ॥

दीनौ हला चलाय दल कौ॥ परी जाकी हल है यह जग जील मलरैं ईक लौसा दिलीपुर॥ लहै तापु सत स्यघ सुजान॥ ठाकुर आपौ गल गाजि कैं॥ को सन्न सनमुख घरे॥ जाकी गई सेना भाजि कै॥ मौसि पतिता की क्या वड॥ मौसि पतिता की वया पड़॥ जनि करि गाढि जुरति है॥ जहा दान स्यघ पौहौंच पास ताके तुरत है॥ एक पदम स्यघ कुमार आयौ पौहौंप स्यघ प्रमान को॥ काहुना टारीन काहुपै करै॥ आनैं सदा घनस्याम कौ॥ जिन निकट नाहर स्यघ आयौ॥ अंग मैं अति छोई है॥ मन छ्हो न उपर भार वीतैं॥ ठडैं भारी लोह है॥ नहीं शीली रारिन वा उपर भार॥ आनि विह्यौ भार है॥ चलि गई पलटन पेत सैं वाजो कठीन तरवारि है॥ करि जोर जंग नवाव थावयौ गई नाहि पेस है कमारि हारि उसारि पलटन की यौ जीव कलेस है॥

॥ दोहा ॥

धौकह तोकाराम अरु॥ साहिव स्यघ सुजान॥
वरना वारे मोर छे॥ कीयै पुवध मस्यानः॥
पदम स्यघ नाहर वली॥ दान स्यंघ दल पेलि॥
अली सहादत पान कौ॥ लीयौ उठै या केली॥

अंत—

॥कवित्त॥

जैसे गज ग्राह तै छुड़ायौ वृजराज लाज
रापी द्रोपता की ताकौ अंबर वढ़ायौ जु॥
जैसे प्रेहलाद कु छुडायौ हरनाकुस सौ
च्यारो जुग गायौ च्यारो वेदन वतायौ जु॥
अघासुर उदर तैं काढे गोप ग्वाल
तैसीही पथैनो मलेछ तैं वचायौ जु॥
ता समै हकारे सार्दुल के सपुत पुत
ताही समै चक्र लै उमडि हरि आयौ जु॥
इति श्री घठि पथैने कौ रासौ सपूरन॥

विषय—पथैना भरतपुर राज्य के एक कस्बे का नाम है। वहाँ के जाटो तथा आगरे के अली सहादत खाँ के युद्ध का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे आदि के ४० पन्ने नही है। ४१वे पन्ने से लेकर ४७वें पन्न तक है।

संख्या ११०. मधुमालती कथा सचित्र, रचयिता—चतुर्भुज, पत्र—१३२, आकार—६॥×६॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४००० लगभग, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८४, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ४८, पु० स० १।

आदि—श्री गणेशाय नम.॥ श्री राधा कृष्णाभ्या नम। श्री गुरुभ्यो नम। श्री परम गुरुभ्यो नम.। श्री परमेष्टीगुरुभ्यो नम.। श्री इष्टदेवताभ्यो नम। अथ मधुमालती कथा लिख्यते ॥१॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म बीज ब्रह्मादिक गाउ। सकर सुत गनपति कु मनाउ।
चातुर हित सो सहित रिझाउ। रसिक मालती मनोहर गाउ ।१।
लीलावती ललित यक देसा। चद्रसेन तहा सुघर नरेसा।

मध्य—पृ० १३३ ॥ दोहा ॥

नैन तपत हैं दरस कु श्रवन तपत हें चैन॥
कर जो तपत कुच गहन कु अधर तपत रस लैन ॥६७७॥

॥ चौपाई ॥

माललि एक डोकरी रहई। वासुं चद कुवर यम कहई।
कुज कोटरि करि यहा नीकी। फूली लता जाय झईकी। ६७८।
नीकी ठौर निरखि सूख पाउ। मालनि तोहि सिरोपाव पहराउ।
यह वचन कहि मदिर आयौ। कहत मालनि वेग वनायौ ॥६७६

अंत— ॥ दोहा ॥

कामी काम विलास रस जोग पढे तो सिद्धि।
सपूरन मधुमालती कलस भयो सपूर।
सुरता कविता सवन कु सुखदायक दुख दूर ॥८५६॥

इति श्री मधुमालती कथा सपूर्णम्। शुभम्भवतु। कल्याणमस्तु। स० १८८४ चैत्र शुक्ला तृतीयाया भृगुवासरे ॥१॥ श्री राधा कृष्ण सहाय ॥१॥

विषय—प्रेम कथानक काव्य है, जिसमे मधुमालती की कथा वर्णित है। इसमे १२८ रगीन चित्र भी है जो कथा के अनुसार स्थान-स्थान पर बने है।

सख्या १११. भाषा सग्रह, रचयिता—चतुर्भुज मिश्र, पत्र—८६, आकार—८॥×५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५२०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि-नागरी, रचनाकाल—स०१७०२ वि०, लिपिकाल—स०१८५७ से १६०३ के भीतर (अनुमानत) प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७२, पु० स० १।

आदि— ॥ श्री गणेशायनम ॥

॥ सोरठा ॥

इक नाही इक पीर हिय रहीम होतं रहे।
कबहू न भई सरीर रीती वेदन एक सी ॥१॥ दोहरा ॥
जौ रहीम करिवे हुतो व्रज को यहै हवाल॥
तौ क्यो गातहि दुख दियो गिरवर धर गोपाल ॥२॥

मध्य—चतुर्भुज मिश्रस्य अथ अभिसारिका वर्णनं ॥
सोने से अग सरोजमुखी चली स्यामयेको ससि के सटकें ।
पग नूपुर घुघुरु खोलि धरे सकुचे अति जेहरि के खटकें ।
गुरु गुन ओरु छटी सी कटी न चली रही छुद्र घटी अटकें ।
बिनु ही अटकें हटकी सी चले लटकी सी परे लटकें लटकें ॥८०॥

सुकविराई—
फूलनि सो गूंदि माँग चंदन चढाइ आंग उमडी है मानों गाँग सरद के नीर की ।
सोहत हैं सब तन मौतिनि के आभूषन मौतिनि की जोति सों मिलि हे जोति चीर की ।
मुसिकात आछी अति दातनि की देखें दुति तेंसिये गुराई कही सुदर सरीर की ।
चाँदिनी सी वाल मिलि चाँदिनी मै एसें चली जेसे छीर सिन्धु मे चलें तरंग छीर की ॥८१॥

अंत—सवतु सत्रह सै बरष बीती द्वै अधिकाइ ॥
अस्विनि सुदि दशमी शनी ग्रथ भयौ सरसाइ ॥१८६॥

इति श्री चतुर्भुज मिश्र विरचिते भाषा संग्रहे शात रस वर्णन संपूर्ण ॥ समाप्तोयं भाषा सग्रह ग्रथ ॥

विषय—नव रसो (शृगार, वीर, करुण, अद्भुत, हास्य, भय, बीभत्स, रौद्र और शात) का वर्णन है। जिनके उदाहरण दिए हैं उन कवियो के नाम और पद सख्या —गग, केसोदास, अनत, सुदर, प्रसिद्ध, सुकविराइ, वीरवर, रामकृष्ण, गोपीनाथ मिश्र, प्रेमनाथ मिश्र, सकर मिश्र, नरोत्तम मिश्र, चतुर्भुज मिश्र, गोवर्धन मिश्र, सूरदास सूरदास मदनमोहन, नददास, गुसाई तुलसीदास, परमानद, कवीर, ईश्वरदास, दयादेव, शिरोमनि, माधो, जगदीस, अभिमन्यु, हरिवंश, रूपनारायन, शकर, स्याम, मडुन, परवट मधुसूदन, विद्यापति, कासीराम, ब्रह्म, दामोदर, नेन, वान, जगजीवन, वलभद्र, नारायण, जदुनाथ, सज्जन, लघुगग, विश्वभर, असद, राजा जगतमनि, छीत, मल्ल, मकुट, पुरुषोत्तम, राम आदि अनेक कवि। समस्त छदो की सख्या १२०० है। चतुर्भुज मिश्र के स्वरचित छद १६० हैं।

विशेष ज्ञातव्य—अत के दो पत्रो मे कवियो के नाम दिए हुए है और उनके नीचे उनके छदो की सख्याएँ हैं। ग्रथ के ऊपर "गोस्वामी श्रीगोकुलनाथात्मज श्री पुरोषोत्तमस्य" ऐसा लिखा है। अत इसका लिपिकाल इनके समय स० १८४७ से १९०३ के भीतर होना चाहिए।

सख्या ११२क. मृग कपोत की लीला, रचयिता—चत्रभुज दास, कागज—देशी, पत्र—२०, आकार—$५\frac{१}{२} \times ३\frac{१}{४}$, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण—(अनुष्टुप्)—११४, अपूर्ण (खडित), रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८८८, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

आदि—अथ मृग कपोत की लीला लिख्यते ॥
श्री वल्लभ गुन गाऊँ। निर्मल वुद्धि भजन तें पाऊँ ॥१॥
कमलासेन कवरि विद्या वर हे। कलियुग मे जु चराचर हे ॥२॥
एक गणेश सरस्वती दूजी। सुर नर आदि सकल में पूंजी ॥३॥
वेद पुराण ग्रथ के साखी। हरि विन रसना कवि जन भाखी ॥४॥
जाके सुमरे ते सुख पैयें। दुख दालिदर दूर नसैये ॥५॥
वंदन व्याध न रहे न कवहूं। हरि सहाय होय जवहू ॥६॥
जा रस को ब्रह्मादिक धावें। जोगेस्वर के ध्यान न आवें ॥७॥
:०: :०: :०:

त्रिवैनी के निकट ही आरन खरी उदास ।
मृग कपोत वासो वसे कहे "चत्रभुज दास" ॥२४॥
झांसी के ढिग खरी उदासी। जहां रहत एक मृग वनवासी ॥२५॥
दोव चरे त्रन चर जीवें। निर्मल जल जमुना को पीवे ॥२६॥
:o: :o: :o:

मध्य—

मृग कपोत की कथा पठन करे नर जेह ।
सुख सपत आनंद सदा सकट लहे न देह ॥
वेरी वदन व्याध ते टरे दुख देस के न कोय ।
मृग कपोत जे सुख लए सुख पावे सोय ॥
औरन देस विदेस मे नर नाहर डर नाहि ।
सर्प जल थल अगिन कहू सवही विघन नसाय ॥
सुमरे ते सकट हरे हरिफल भजले आज ॥
चत्रभुज प्रभु जे जन जपे एक पंथ दोय काज ॥

इति श्री मृग कपोत की वार्ता संपूर्ण ॥ श्री स्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

विषय—मृग कपोत विपयक एक पौराणिक आख्यान का वर्णन। मृग को एक व्याधा ने घेर कर मारना चाहा, परतु कपोत के उपदेश से मृग हरि स्मरण करने से बच गया। व्याधा को एक साप ने काट खाया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। कथा का तात्पर्य हरिस्मरण का माहात्म्य वर्णन करना है।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे एक पत्र (सख्या ३० का) नही है। पत्र संख्या २५ पत्र सख्या २६ के पश्चात् लगा हुआ है। अत प्रकट होता है कि हस्तलेख की एक वार मरम्मत हुई है जिससे क्रम मे त्रुटि हो गई।

रचना काल नही दिया हे, लिपिकाल सवत् १८८८ है जो "मानमाधुरी" मे दिया है। दोनो ग्रथ एक ही हस्तलेख मे हैं।

रचयिता का नाम चत्रभुज दास है। विशेप वृत्त ज्ञात नही।

प्रस्तुत ग्रथ कुछ अन्य ग्रथो के साथ एक हस्तलेख मे है। ग्रथो के नाम नीचे दिए जाते हैं —

१—स्याम सगाई	नददास
२—यमुनाष्टक	श्री वल्लभाचार्य
३—सनेह लीला	रसिक राम
४—भ्रमर गीत	नददास
५—ऊपा चरित्र	मुरलीदास
६—दान लीला	रसिक (हरिराय जी उपनाम रसिक राय)
७—श्याम सगाई	नददास
८—दान माधुरी	माधुरी दास
९—मान माधुरी	,,

संख्या ११२ख कीर्तन सग्रह, रचयिता—चतुर्भुज दास, स्थान—गिरिराज, पत्र—३२ आकार—६ × ३॥। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—९३०, अपूर्ण रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व० स०—१६, पु० स—५।

आदि—श्री गोपी जन वल्लभाय नमः ।। राग विभास ।। अठताल ।।
आलस उनीदे घूमत आवत मूँदे अधिक नीके लागत अरुन वरुन ।।
जनि हो सुंदर स्याम रजनी के चारयो नेकहूं न पाए मानो पलक परन ।।
अधर निरग रेख उरह चिन्ह विसेष सिथिल अंग डगमगत चरन ।।
चतुभुज प्रभु कहाँ बसन पलटि आए साचिये कहो गिरिराजधरन ।।१।।

मध्य—पृ० ४० जतिताल ।।
स्याम नियरो आयो मेहु
भीजैंगी मेरी सुरंग चूनरी ओट पीतपट देहु ।।
दामिनि तें डरपति हो मोहन निकट आपने लेहु ।।
दास चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सो वाढ्यो हे अधिक सनेहु ।।५ ।।

अंत—अप्राप्त ।

विषय—पुष्टिमार्गीय मदिरों मे गाये जाने वाले भक्ति विषयक कीर्तनो का सग्रह है ।

संख्या ११२ग कीर्तन सग्रह, रचयिता—चतुरभुज दास, स्थान—जमनावता गाव, (व्रज), पत्र—२१ आकार—६ × ८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५६६ से १६४२ के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, विद्या विभाग काँकरोली, बध स० २, पुस्तक स० १ ।

आदि—आदि का भाग उपलब्ध नहीं हुआ ।

मध्य—पृष्ठ १७ पर—राग गौरी
वात हिलग की कासो कहिये ।
सुनि री सखी विवच्छा तन की समुझि मनही मन चुप करि रहिये ।
मरमी विना मरमु को जाने इह वातें सव जिय ही सहिये ।
चतुभुज प्रभु गिरिधरन मिलें जव सव सुख संपति तवही लहिये ।।१।।

अंत—अंत का भाग उपलब्ध नहीं है ।

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति कीर्तनविषयक पद ।

संख्या ११३क चरपटिका पत्रिका, रचयिता—चरपटनाथ, कागज—आधुनिक रूलदार, पत्र—३२, आकार—८ × ६ इच, पक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—१६, लिपिकाल सवत्—१६८२, प्राप्तिस्थान—प० सरजू कुमार ओझा, ग्राम व पोस्ट—सिरसा, जिला—इलाहावाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।। श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ।। अथ सून्य विराज रोग प्रतिकाल रस सर्व अष्टादश कुष्ट दादु आदि प्रेत ब्रह्मदोष पूर्वहत्या सिद्धि दोषादि को नाशक रस ।।

दवा

संखिया की डली आक छीर मो सात दिन तक सोधिए गेहूँ आटा छीर गूंदो बीच डला धरु गुड अँधौन आंटा लै अर्ध पाव छीर लेहु खप्रदाभ येते सिद्ध खप्पर दावा भौरी सेकु कच्चा न रहै एकशत इकइस भौरी मे सखा भये सिद्ध सून्य कुष्ट नासै प्रवल सव कष्टे मारू गिधि रति ।।१।।

।। दोहा ।।

नित्य घृत सन भक्षै मंडल दुइ की टेक ।
वातझार वहुतै करै मर्दिना को कै लेक ।।

व्याधि फुलै पानी झरै जला तना झरि जाय ।
दुइ मडल के भझनै सून्य असाधि नसाय ॥
पगु तर बन काटा गडै सोस विथा की बात ।
यह लक्षन सव साधि है "चरपट" की ए घात ॥

:o: o :o.

अंत— ॥अथ भैरोरस सून्य कुष्ठ असाधि सर्व राजरोग दमा छइ कठोदरादि की ॥ ईगुरऽ॥ पतिफूल के वदाल का रस ऽ४ मदार के पात का रस ऽ४ कागदीनीवू का रस ऽ४ भट-कटाइ का रस ऽ४ ये ही चारो रस से ईगुर पल करै सोरह दिन तव टिकिया वनाई झुरवावै तव दस हाथ कपड़ा लइके सरफोका के रस ते रगि लेइ तव इही कपडा फारि२ टिकिया लपेटै ७ कपरौटी करि झुरवाइ लेइ तव कोहार के आँवा मे धरि आँच एक देई तव काढि यहि तरह कसेरे के भाथीक एक आँच देइ तव फेरि काढि के अपने घर गजपुटक एक आँच दइ देइ—एकै दफे के कपरौटी किहै मे तीनि आँच देइ वार वार दूसर तीसरि कपरौटी न किहा करै और गजपुटक मे कडाक आँच और भाथीवाला आठ२ पहरक देइ ज्यादा नाहीं आँवा क आँवा के जुडाने तक क वाद मे जुडाइ टिकिया पीत की स्वेत होइ रहत है सो लेइ के चाउर २ भरि सर्व राजरोग के देइ छीन छई नपुसकता दमा अष्टादश कुष्ट असाधि-सून्य-व्हरि-नासिका-वैठेके-फूटे देह के-विनसे-विनसे चूअते के-नस विमुचे के-घी के साथ एक रत्ती एक रोज देइ। ६३ दिन तक घी भात वा चना गेहूँ की रोटी औ घी पथ्य खियावै नीक होइ-सौ वर्ष की आयु वढै सही—यह रस ३ दिन खियावै रत्ती२ आठो ज्वर नीक होइ। औ प्रेतज्वर कालज्वर दि क यह अनभूत रस है—सत्य है—करि देखो सही ॥ ॥ १७६ ॥ ॥

इति गोरख चरपटिका पत्रिका समाप्त शुभप्रद शुभम् ॥ ॥

हाटक हरदी औ रतनार तामै आनि भुअगम मारि ।
उलटि भुअगम बेधै सुवा गोरख कहै तव हाटक हुआ ॥१८०॥
पारा गधक औ हरत.र तामे डारै कचन खार ॥
वधक जल सोध करै सारा पर्वत कचन करै ॥१८१॥ ॥ ॥

॥ इति शुभम् ॥

विषय—राजरोग तथा अठारह कुष्ठों का रसोपचार वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल अज्ञात है, प्रस्तुत प्रति ग्रथ स्वामी द्वारा लिखी गई है, अत उनके कथनानुसार लि० का० स० १९८२ है ।

ग्रथकार का नाम चरपट है । अनेक स्थानो मे गोरखनाथ का भी नाम आता है जो चरपट को उपदेश करते हुए दिखाई देते हैं । अत यह प्रकट होता है कि ये सिद्ध और नाथो वाले प्राचीन चिरपट नाथ हैं ।

सख्या ११३ख सवदी, रचयिता—चर्पट, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—१०$\frac{9}{16}$ × ४$\frac{15}{16}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण—(अनुष्टुप्)—५६, खडित, रुप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी । ग्रथदाता—रातर के महाराज, स्थान व पोस्ट—माडा, जिला—इलाहावाद ।

आदि—

.... मान वोले चर्पट तत्वज्ञान ॥३८॥
धींगा धीगी मुस्ता मुस्ती वुध चोर वाजारी ।
आप गुरु वदे पर गुर निदे लौवड वडिया लपचारी ॥३९॥
झोली पाई पत्र पाया पाया पतर का भेदा ।
रीता जाव भरया आंव कहा करौं गुरदेव ॥४०॥

सहज स्वभाव भिक्ष्या मागिवा संजम भोजन करणं ।
आसण दिढ करि वैठिवा अवधू मनमुष भटकि नहीं मरण ॥४१॥
वंठें राजा वैठें परजा वैठें जगली हिरणी ।
हम क्यो वैठें रावल बावल सब नगरी फिरणी ॥४२॥
वायें हाथ कमडल दाहिने दड मानौं चकर पूजौं हो भंडा ।
चरपट कहें ए सव पाषाडा ॥४३॥
भेष लिया पर भेद न पाया घर छाड्या पर तजी न माया ।
नाथ विसारि निडर जग जोया स्वाग बनाइ सुपी है सोया ॥४४॥
ना घरि त्रिये न पर त्रियरता न घरि धन न जोवति मता ।
ना घरि पूत न धीय कुंमारी ताते चर्पट निंद पियारी ॥४५॥
दिन उठि घरि घरि दीन्हीं फेरी। अतरि उटि न आवत म्हेरी ॥
पत्र पूरया पेट फूलीया ॥४६॥
टूका पाया मकर मचाया जैसा सहर का कुता ।
जोग जुगति की षबरि न जाणी कान फडाय विगूता ॥४७॥
आई छोडो लेन न जाऊ ताते मेरा "चर्पट" नाम ।
आई भी छोडिये लेन भि जाइयें कहे गोरषनाथ पूता विचा विचारि पाइये ॥४६॥

:०: :०: :०:

अंत—

कथनी वदनी वलि कर जाव। वंधीस कौनौ वंधी नाव ॥
चरपट कहे पवन की डोर। भूंकत गदहा ले गया चोर ॥६७॥
नादे डोडे षाडे धर्म। ऊचा मदिर कूडा कर्म ॥
चर्पट कहें सुणो रे लोक। रतन पदारथ गमाया फोक ॥६८॥
एक गूडा उपरि पांव। दूजा गोडा उपर भाव ॥
तीजा आगें वाजें तूरा। चरपट कहें विगोवा पूरा ॥६६॥
एकं पाव ऊपर पांव। दूजा पांव ऊपर भाव ॥
चर्पट कहें दुनिया का भेव। यह क्यो पाप अर इहु क्यो देव ॥७०॥
पूजि पूजि देव सव जग घाटा। निज तत्व रहि गया नियारा ॥
जोति स्वरूपी संग ही है आछे ताका करहु विचार ॥७१॥
पूजवा तौ आत्मा देव पूजिवा स्वस्वरूपं ।
चढ़ायवा तौ अनादि पाती चर्पट कहें कहू भटकि न मरना घट ही तीर्था जाती ॥७१॥
॥ चर्पट की सवदी ॥

विशेष—पाखडी और धूर्त जोगियो, सन्यासियो, ज्ञानियो एव गृहस्थो को फटकार वतलाई गई है।

संख्या ११४. नागलीला, रचयिता—चूडामणि, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—$6\frac{1}{2} \times 4\frac{3}{8}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल सवत्—१८६०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—

॥ दोहा ॥

जमुना जी के नीकट पैं ठाडे है श्री गोपाल ।
काली नाग ज नाथिकें हरि कीयो गैंद को ष्याल ॥ १ ॥

॥ छंद भुजंगी ॥

नमो वाल रूपं नमो वृछ तारे ।
नमो आदि नाथ उपावन उधारे ।
नमो नदलाला नमो ब्रह्म वाल ।
नमो कृष्ण दुल्है सहि नदलाला ।'
सोहैं पीत पटु विराजै दुसाला ।
चद धौरे मुकट विराजै ।
सहि वाल नद भूजा च्यारि राजै ॥
सोहैं कठमाला सोहैं कान कुडल ।
जरी अग जामा गलै माल गुजै ॥

:o: :o· ०

अत—

सदा नाग सौ गरड फेरी मिलायौ ।
कहै लाल जी नाग आगै जु आयौ ।
उठौ नाग जी सेतरा दिप जावौ ।
जवै नाग जी सेतराद्विप मेल्या ।
चुरामनि कहै जिते दत हठे घटिकस
की जौम जव नाग नाथे ॥

॥ दोहा ॥

कालो नाग ज नाथि कै वैठे कृष्ण गोपाल ।
चुरामणि कहै चित्त धारि कै प्रगटे नदकवरि ॥
इति श्री चुरामनि कृत नाग लीला सपूर्ण ॥
मीती चैत्र शुक्ला ६ वुद्ध वासरे सवत् १८६०

विषय—काली नाग लीला वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ का एक पत्र, सख्या २७ का नही है । रचना काल अज्ञात है । लिपिकाल सवत् १८६० दिया है जो दूसरी कलम मे लिखा गया है तथा जिसकी स्याही ग्रथ की स्याही से कुछ भिन्न भी हे । इस ग्रथ के साथ नददास की 'स्याम सगाई' रचना भी लिपिबद्ध है । आरभ के पत्र मे 'सनेह लीला' की पुष्पिका दी हुई है जिसमे लिपिकाल स० १८८६ दिया है । ग्रथ का अन्तिम "वाह सौं पगे रहत अनुराग" भी है ।

हस्तलेख पत्र सख्या १६ से आरभ होता है । इससे स्पष्ट है कि इसमे 'सनेह लीला' भी थी ।

सख्या ११५. माधव सुयश प्रकाश, रचयिता—छविनाथ कवि (कन्नौजिया), स्थान—बूंदी, पत्र—३५, (पृ० स०—३४ से ३६ तक नही है), आकार—१०×५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६६, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२५ के लगभग (कांकरोली का इतिहास), लिपिकाल—बहुधान्य नाम सवत्सरे फा० कृ०—११ गुरौ, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व०—८२, पु० स०—२१ ।

आदि—"श्री गणेशाय नम. ॥ छंद मात्रा वृत्त ॥ मात्रा ॥ १३।११।१३।११। चरणर । इति दोहा की रीति । दोहा ॥ त्रिकल नाम ॥ अक्षर ३६ । गुरु ६ । लघु ३० । यथा सिंधुर मुख के चरण जुग नंदित कमल समान । जिनको ध्यावत विबुधगण पावत बुद्धि

निदान ॥१॥ दोहा वारण ॥ अक्षर ३८। गुरु १० । लघु २८ । यथा ॥ तिन पदकजनि को सुमिरि कवि छविनाथ विलास । माधव सिंघ नरिंद को वरन्यो सुजस प्रकास ॥१॥ इति जुग्म ॥

मध्य—पृष्ठ ३५ । छंद लीलावती । गुरु लघु अक्षर नियम । रहित मात्रा । पद मे ३२ जति विकु १ ऐसे २ चरण ४ यथा । । भुज दल उदंड कटि खंड खड भटगण प्रचड जमपुरहि लहँ । फूटि विकट कुभ गज गिरत भु मि इमि प्रवल सुकवि छविनाथ कहँ । थलथल सिंदुर जल वहत दिघ्घ सत कोटि कटितमनु अचल ढहँ । दुरधर ग्ररिघ माधव नृसिंघ जनसमर मध्य कर खग्गहँ ॥ ५७ ॥

छद । सुही २ । टगण ३ अंत रगन १ ऐसे २ चरण ४ यथा ॥

माधव नृप वीर भिरत दिघ्घ धनुप सज्जिकँ । छावत सर तिख्ख सघंन पारथ सम गज्जिकँ । विक्रम करि जिति लहत शत्रुदल निखडि कँ ॥ सोभत समरथ्थ पुहुमि शुभ्र सुजस मंडिकँ ॥ ५८ ॥

अंत—॥कवित्त घनाछरी ॥ गंगा जू के निकट सहर वगिसर सोहँ जाकँ एक ओर चडी दूजी घा महेश है । जामे चारिवर्ण हूँ को पालँ मरजाद हां सो सुख सो भवानीसिंघ प्रवल नरेश है । तामे गोविंददास उपमन्य वशी आवस्थिक्ता को पुत छवि नाथ सेयि द्वारकेश है । तिंहि शिरताज महाराज माधवेश जू को सुजश प्रकाश करि दानो ग्रंथ वेश है ॥२५ ॥ इति श्री महाराजाधिराज माधव सिंघस्य सुजश प्रकाश ग्रन्थे छविनाथ कृतौ राज्य श्री वर्णनाख्य सप्तम प्रकाश. ॥ शोभते । वहुधान्य संवत्सरे उत्तरायणे शिशिर ऋतौ फाल्गुनेमासि कृष्णपक्षे एकादश्या गुरुवासरे समाप्त ॥

विषय—पिंगल विषय वर्णन । छदो के उदाहरणो मे जयपुर नरेश, महाराज माधव सिंह का यश वर्णित हैं ।

संख्या ११६. नखशिख, रचयिता—छितिपाल, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—५½ × ८½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री राम जी सरनान्हः वरनन
कोमल कलित कचमेचक सुगध सने
देप हेरि सोभा करत सेवार की ।
कवहु कुहुकी रँन पर पर परपँ नभ पतुल
घन कोप वारी किरिन कुतारकी ॥
छितपाल कवहु सिंगार को चवर चरु वार वार
डारँ साज सव हार हार की मरकत तारकी ॥
मनोज स्रग हार की सु मोर पपना की
जमुना जलधार की ॥ १ ॥
राहु सनि साल पँ असाल के सदन औ
वह न वालतम तँ विरोधि वर नमः ॥
कोप की किरन अहा ओप जव लाके अंग
तंतु नाम नाल तात चाहिए चरन मैं ॥
याते छितिपाल के विचार माह ऐसो नाग
रहन न पाये केहु घुम के घरन मैं ॥
प्रवल परीछित महीप नद त्रास परे
संक मान सिगरे ससंक की सरन मैं ॥ २॥

मध्य—
कोकनद कारे से तिहारे कजरारे नैंन
मीन म्रग मदन तुरग हिय हारे हैं ॥
दीरघ विसाल छितिपाल छवि जाल
भरे वरवाल रेष पजन सँवारे हैं ॥
कीधो कंज कोस तें कढे हैं अलि वाल व्रद,
कैंधो गहे पजन रोस अहि कारे हैं ॥
तरनितनूजा मन मानि अपमान किधौं
उलटि करत वास वारिधि किनारे हैं ॥ ६ ॥
गंग अग मध्य मैं जमुन की उदोत कैंधो
जोति छीरनिधि मध्य स्याम मनि वारी है ॥
सोभा के सदन माहि मदन महीप राषी
आरसी अनूप कैंधौं सुघर सुघारी है ॥
कैंधौ छितिपाल नदलाल के सरूप दोई
वर उर राषी भई परम पियारी है ॥
उतरी तिहारी जाति उपमा अनेक नैंन
पुतरी तिहारी राधे सुथरी सिहारी है ॥१०॥

अंत—
कैंधौं लंक भूपत की बैठक के मजु बीच,
मदन फरस धरे मुदे मौजदारी के ॥
कैह घनस्याम किधौं कचन के षंभ गंग
आइने अनूप गोल राजें शोभ भारी के ॥
कैंधौ मन मॅथवे कौ तुलेटी मथान जात
ढारे विध चक्र सुदरसन सुधारी के ॥
उपमा अनंत कौन वरन वषानन लिय
चीकनाई ये नितंव प्रानप्यारी के ॥२५॥

विषय—शिखनख वर्णन ।

संख्या ११७ कवित्त, रचयिता—छैल, (स्थान—जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—३½ × ३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११, अपूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथदाता—प० दूधनाथ पाठक, ग्राम—नेवादा, पोस्ट—मुहौली, जि० आजमगढ) ।

आदि—श्री गणेशायनम
सहसधारा धारा वियरीगो विमल कीत्ति नित्ति नित्ति नइ रुचि पुहमी विसेषिये।
कायथ मयक महिमडल मे मडलीक पड पड सुषद प्रचड तेज पेषिये ।
गोवरद्धन तनै को पूरन प्रताप राजै क्वयाहिये राजाराम राजाराम लेपीये ।
करन करतूति रीति प्रीति धर्मोद्धार जाके जौनपुर माह "छैल" छहु रितु देषियं ॥१॥
सागर सो सील सरबग्य गुन आगर उजागर पुहमि माह सरद ।
सुभान दिओ जेहि जीती लियो अरो घेरी अनी के ।
"छैल भनै" कुरसै जौ कुरै सीगडी गढटुटत ष्याल सु नीके ।
श्री सेष फतेमहमद को जस फैलि चल्यौ मुष माह गुनी के ॥२॥

विषय—राजाराम कायस्थ (जौनपुर) और सेखमहम्मद (?) यश का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है। केवल दो पन्ने उपलब्ध हैं। इनमें एक कवित्त और एक सवैया है। रचना काल और लिपिकाल अज्ञात है।

रचयिता का नाम छैल है। जौनपुर के एक कायस्थ राजाराम के यश का इन्होंने वर्णन किया है, अत विदित होता है कि ये जौनपुर के ही रहने वाले थे। राजाराम के अतिरिक्त इनके एक और आश्रयदाता थे, जिनका नाम शेख महम्मद था तथा जिन्होंने सिगडी के किले को जीता था। पता नहीं उक्त सिगडी का किला कहाँ है। अन्य परिचय नहीं मिलता।

संख्या ११८क महाप्रलै, रचयिता—जगजीवन दास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—७$\frac{१५}{१६}$ × ६$\frac{३}{१६}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी (उपनाम भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट, धाता, जिला—फतेहपुर।

आदि—श्री गनेसय नम. ॥ श्री पोथी महाप्रलै प्रथम आरंभ सती नम ॥

अजया जाप अहै दुइ अछर। घट मे जा मय नहीं दोलय हुर ॥
दे उपदेस मत्र यह सच सोइ मन मह ग्यहु रे ॥
साधो समुझ वीचार गहो मन। और सवै वीसरहु रे।
रहहु सुचीत मंत्र योही जानहु दुवीधा दुरी वहावहु रे ॥
परी दुवीधा दुइ दीस से जइहहु एक ही से मन लावहु रे।
लाइ रहो कही प्रगट न भाषहु तवही सो सुष पावहु रे ॥
जनम पाइ लीन समुझे सुष है समुझे से दुष होइ रे।
सुष परी सुधे गए जहते आयउ चलउ सरवस सो षोइ रे ॥
:o: :o: :o:

अंत—

"जगजीवन दास" के सतगुर साहेव दीयो चरनतर माथरे।
अपनी सरन रषी मोही लीन्हो कीन्ह मोही सनाथ रे ॥
मन दीढ़ होइ सुमीरत रहै अनत चीत न चलाउ।
"जगजीवनदास" तव भगत होइ तेन्ह कर अलष लपाउ ॥

इति श्री पोथी महाप्रलै संपुरन सुभमस्तु १६२३ मीती भदो सुदी दुवदसी मुकम रजनपुर छावनी मलिषा नंदकुमार लाल रहाने वाला देहता महादेव जीलगोद सकीन गउदवी लीपस अवधपुरी से उतर कोस सात प्रनन कोइतर मल रहै त प्रवसती जनरवा परदान ॥

विषय—निरगुन मतानुसार ज्ञानोपदेश।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल अज्ञात है। लिपिकाल संवत् १८२३ वि० है।

रचयिता का नाम जगजीवन दास है। देखिए वोधदास कृत (भक्ति विनोद' का) विवरण पत्र।

संख्या ११८ख ज्ञान प्रगास, रचयिता—जगजीवन दास, कागज—देसी, पत्र—१३, आकार—७$\frac{१५}{१६}$ × ६$\frac{३}{१६}$ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सं० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् भोलानाथ जी (उपनाम भोरेलाल) ज्योतिषी, ग्राम व पोस्ट—धाता, फतेहपुर।

आदि—श्री गनेसहए नमह ॥ श्री हनोमनजी सहए नम ॥ श्री जगजीवन सहेव क्रीत गंयन प्रगास लीषते ॥

॥ दोहा ॥

सतगुर समरथ तुम देव जव तव होए ।
जीन कह ग्यान होए जव कही भाषो तव सोए ॥

॥ चौपाइ ॥

सतगुर अहै सीधी के दाता । आपुही करता आपुही वीधाता ॥
आपुही सत्य के भजन करैया । आपुही सत मत गवइया ॥
आपुही सत जेत अवतारा । आपही आप रहत है न्यारा ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ सोरठा ॥

अमर भए जन सोए ततसार मन मे भजे ।
एही ते मंत्र न कोए कहत है प्रगट पुकार वै ॥
जगजीवनदास गुरमुष भए सतगुर कै परसग ।
सती नाम धुनी लगी रहै चरन कंवल अनुराग ॥

इति श्री गरंथ ग्यानप्रगास समपुरन सुभ सवत १९२३ साल महीना कुआर सुदी तेरसी दीन सुक के दीन तएरहु उहे वषतावर दास वैरागी के मकान पर मोकाम रजनपुर गरंथ के मालीक रूपनदास महंत ॥

विषय—निरगुन मत के अनुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना वोधदास कृत 'भक्ति विनोद' और दूलनदास कृत 'नहछुर' तथा अन्य रचनाओ के साथ एक हस्तलेख मे है । विशेष के लिए वोधदास कृत 'भक्ति विनोद' का विवरण पत्र द्रष्टव्य है ।

सख्या ११९क. उपखाने सहित दशम की लीला, रचयिता—जगतानद, पत्र—३०, आकार—४। × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, पूर्ण, रुप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७८१ के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कॉंकरोली, हि० व०—१०६, पु० स० १ ।

आदि—श्री द्वारिकेसो जयति ॥ श्री कृष्णाय नम. ॥ उपखाने लिखतग ॥ सो वातन की वात भजो सी विठल नाथे । सी गोकुल नाथ सुनाथ राय विठल मं माथे । सी गोवर्धन इस गुरन के चरन मनाउ । उपखाने सहत दसम की लीला गाऊ । गाउ गुन गोपाल के जगत नद विख्यात ॥ भजीले कृष्ण चलो तक सो वातन की वात ॥ १ ॥

मध्य—तोही वीरानी कहा परी तु आपुनी न वेर ॥ तु आपुनी न वेरी हेरी मुस्टक चानुंरो । कृष्णदेव वलदेव लरती कोतीक भयो पुरो । मुस्टक कहे पुकारो सुनो चानु रचोत घरी । आडा गोडी लाय वाह गहीदे पटक्यो हरि । हरि मारी चानुर कहे हुं अव लीयो घेरी । तोही वीरानी कहा परी तु आपुनी न वेरी ॥५२॥

अत—जगत नद वरनन कीयो सोनो ओर सुगंध । कृष्ण लीला यह गाइ दसम चरित अपार कहा लो कहु सुनाइ । उपखाने हो घने जीतेक मेरे मन आए । कोतीक जीय मे जानी अवे मे वरनी सुनाए । सुनी के भक्त कृपा करो वाचो वन्यो प्रवध । जगत नद वरनन कीयो सोनो ओर सुगंध ॥

उपखाने दसम लीला संपूर्ण समाप्त ॥

विषय—जगतानद कवि ने लोकोक्तियो पर भगवान् कृष्ण की लीलाओ का वर्णन किया है, जो उनकी एक विशेषता है।

विशेष ज्ञातव्य—लिपि अशुद्ध है। सम्प्रति यह ग्रथ "जगतानन्द" नाम से उक्त कवि की सपूर्ण रचनाओ के साथ शुद्धाद्वैत एकेडमी विद्या विभाग, कांकरोली से प्रकाशित हो रहा है।

संख्या ११६ख दोहा साखी, रचयिता—जगता नद, पत्र—६ (४२ से ४८), आकार—७॥। × ४। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७० के लगभग, लिपिकाल—स०१६१४, प्राप्ति-स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० ३७, पु० स० १।

आदि—अथ जगतानंद कृत दोहोरा साखि लीखेते ॥

श्री वल्लभ पद वंद के सरस होत सो ज्ञान । अधम रहत आनंद करत अमि रस पान ॥ १ ॥
ओर कछु जानु नहीं विना श्री वलभ एक । कर ग्रहे छांडे नहीं जिनकी ऐसी टेक ॥ २ ॥
एसे प्रभु क्यो विसारिए जिनकी कृपा अपार । पल पल मे रटत रहु श्रीवलभ नाम उचार॥३॥

मध्य—

श्री वलभ वलभ जो कहे वल से हजारो कोस ॥ ताको पातक यो जरे जौ सुरज ते ओष॥३१॥
श्री वलभवर को छांड के भजे जो भैरव भूत ॥
ताको जनमा यो गयो ज्यो वेसा को पूत ॥३२॥
श्री वलभवर निरख्या नहीं नेनहि वैष्णव सो नेह ॥
ताको जनम यो गयो जौ फागुन के मेह ॥३३॥
भगवदी भगवद एक हे तासो राखो नेह ॥
भवसागर के तरन की नाउका कही एह ॥३४॥

अंत— नंद नंदन सीरराजही वर्सांने भृषभान ।
दोउ मिली क्रीडा करि उत गोपी उन कान ।६१॥
मनपंक्षी तन मन करो उड जाउ वाई देषा ॥
श्री गोकुल गाम सुहावनो जहाँ श्री गोकुल चंद नरेश ॥६२॥
मनपंछी तत लग उडे वसे वासना मांझ ॥
प्रेम वांझ की झपट में जव लग आयो नाही ॥६३॥

इति संपुर्ण ॥ यादृशं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लीखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्ध वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ इति नित समे के पद सो तथा साषियो जक्तानंद जी कृत समाप्तं ॥ संवत् १६१४ ना कार्तिग वदि ३ लः ब्राह्मण वैष्णव जे कृष्णदास लीखायतं वहुजी माराज ॥

विषय—श्री वल्लभाचार्य जी के प्रति भक्ति वर्णित है।

संख्या ११६ग. श्री वल्लभाचार्य जी की वशावली तथा स्वरूप वर्णन, रचयिता—जगतानद, निवास स्थान—गोकुल, पृष्ठ—११ (पृ०—२० से ३१), आकार—६ × ६½ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—लिपि—नागरी, रचनाकाल—१७८१, लिपिकाल—स० १७८१, प्राप्ति स्थान—श्री विद्या-विभाग कांकरोली, श्री सरस्वती भडार, हि० व० ५१, पु० स० १।

आदि—श्री गोपीजन वल्लभो जयति ॥ श्री मद्वल्लभाचार्य जी की वंशावली लिख्यते ॥

दोहा—

श्री वल्लभ वंशावली जो सुनिहैं चित लाई ।
ताको वंश विशाल अति ह्वै है नित सुखदाई ॥ १ ॥
श्री गोवर्द्धन ईस प्रभु हृदे करो रहो कार धाम ।
जिनको पद जुग कमल को करि जगनंद प्रनाम ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २७

अब कहिहों सुत तीसरे बालकृष्ण जी बंस। इनके देखो पुत्र छह इक कन्या अवतंस ॥ १३ ॥
द्वारिकेश व्रजनाथ जी व्रजभूषण जी लाल। पीतांबर जी काम तन अलंकार जी बाल ॥ १४॥
पुरुषोत्तम जी षट् भए द्वारिकेश के दोय। जे श्रीगिरिधर लालजी श्री अनिरुद्ध सु होय ॥१५॥

अंत—

सुने सुनावे नित्ति प्रति पढे पढावे नाम ।
भुक्ति मुक्ति धन पुत्र बहु ह्वैहे पूरन काम ॥ ७६ ॥
पढिहे सुनिहे चित्त दे ताके मंगल गेहु ।
श्रीवल्लभ वंशावली जगतनंद सुनि लेहु ॥ ७७ ॥
श्रीवल्लभ विट्ठल प्रभू गोकुलेश जी आस ।
श्रीगोवर्द्धन ईस को जगतनंद है दास ॥७८॥

इति श्री मज्जगनंद विरचिता श्रीमद्वल्लभाचार्याणा वंशावली समाप्त ।

संवत् सत्रह से बन्यो इक्यासी बदि माह ।
द्वेज चंद पोथी लिखी जगतनंद करि चाह ।

विषय—श्री आचार्य जी श्री वल्लभाचार्य जी के वंश की वंशावली सं० १६८१ तक की वर्णित है तथा श्री ठाकुर जी के सात स्वरूपों का वर्णन ।

संख्या १२०. एकादसि कथा, रचयिता—(जन) जगदीश, कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—८ × ४½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८४६ वि०, प्राप्ति स्थान—पं० राम अकबाल उपाध्याय, ग्राम—सेलहरा पट्टी, पो० अतरौलिया, जिला—आजमगढ ।

आदि—श्री गणेशायनमः अथ एकादशी कथा लीषते ॥

गुरु गोविंद गनेश मनाई । हरि बासर की कथा बनाई ॥
द्वादसकंध भागवत माही । कह सुखदेव परिछीत पाही ॥
कथा कृष्ण सो पूछी पारथ । बरनो प्रभु विष्यात जथारथ ॥
सो चरित्र भाषा कृत गावों । सतसंगति मिलि मन विसरावो ॥
एक समैं करनामैं स्वामी । भगतबछल उर अंतरजामी ॥
पुरि द्वारिका सहित समाजा । बैठे हुते त्रिभुवन के राजा ॥
महा महा मुनि कहहि पुराना । कहुँ संगीत नृत्य गुन गाना ॥
तेहीं समाज मह पडों पाँचों । मिले हरिहि जेन्ह को व्रत साचो ॥

॥ दोहा ॥

ता दिन एकादसि व्रत उपवासे नर नारी ।
पूछे पारथ कृष्ण सो कथा समैं अनुहारी ॥

अंत—

सुर मुनि संत समागम रहऊ । ए सब विषय कछु नहि चहऊ ॥
अपनो जानि कृतारथ कीजै । पद पयोज भगति निज दीजै ॥

एउमस्तु बोले नारायन । ते मम कृत सुकृति पारायन ॥
मम व्रत एकादसि तुम होहु । सत सकोच सतत सोहू ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

जो फल कष्ट अनेक करि साधन विविध विवेक ।
"जन जगदीश" सकल फल फल हरि वासर व्रत एक ॥

इति श्री............. महापुराणे श्री भागवते द्वादसकंधे श्री कृष्णार्जुन सवादे एकादसी माहात्म्ये संपूर्ण सुभमस्तु संवत् १८४६ को फागुण...........

विषय—एकादशी व्रत की कथा का वर्णन ।

संख्या १२१. जगत रस रजन, रचयिता—जगदीश कवि स्थान—जयपुर, कागज—देसी, पत्र—७२, आकार—६ × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरा, रचनाकाल—१८६१, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० ब० १३४, पु० स० ४ ।

आदि—॥श्री महा गणपतये नमः ॥ श्री हयग्रीव देवाय नमः ॥ अविघ्नमस्तु ॥ अथ जगदीसकृत जगतरसरजन नाम ग्रंथ लिख्यते ॥ मंगलाचरन ।

॥ मगलाचरन कवित्त ॥

होत सब लाइक विनाइक बखानि केते गनपति भाखिके ते धनपति धाए हैं ।
कवि जगदीस के ते सुमुख मनावत ही विमुख पदारथनि सुमुख सुहाए हैं ।
विघन विनासी कहि विघन विनासें किते इकरद वारो बोलि सदसुख छाए हैं ।
नांवन की महिमा बतावन मे पार को है पारवती सुत के अपार गुन गाए हैं ॥ १ ॥

मध्य पृ० ३० परकीया खंडिता यथा सवैया ॥

और गुवालिनि कें रस मानिकें और गुवालिकें आए कन्हाई ।
सूरज की अरुनें किरनें परि रातिके जागर की छवि छाई ।
राजति ही गुरु लोगनि भामिनि कौल के चूक की बात जताई ।
टीकी सुधारन कौ मिस कै अगुठा करि सूधौ लिलार लगाई ॥३० ॥

सामान्य खंडिता यथा ॥ सवैया—

औरहीकें रति रंजित भोरही आए हैं वार वधू कें अगारें ।

अंत— ॥ दोहा ॥

जगत रस रंजन यहै मे किय निज वुधि वोधि ।
भूल चूक जो होइ सो सुकवि लीजियौ सोधि ॥ ४२ ॥
अट्ठारें सैं वासठा सवत् फागुन मास ।
ग्यारसि कवि दिन कृष्ण पछ भयौ ग्रंथ परकास ॥ ४३ ॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज राजेन्द्र श्री सवाई जगत सिंह जी देव रस रंजनार्थ देवर्षि कलानिधि श्रीकृष्ण भट्ट सुत जगदीस कृत जगत रस रंजन नाम ग्रंथे हास्यादि रस निरूपण नाम अष्टमास्वादः ॥

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

संख्या १२२. जगन बत्तीसी, रचयिता—जगन कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—५$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—— रामजी सति

सरसुति सुमरु हुआ रस वुधि दीजे मोहि नमो पाई गनपति गुनहि गभीर के ॥
एक चित्त ह्वै कै गुर छल की प्रनाम करूं जाके गुन ऐसे जैसे गुन दधि छीर के ॥
जिते कवि कलि मैं कलोले करैं कविता की वचन रचन जा पवित्र गंगनीर के ॥
जनकै प्रसाद की जे जगन भगत होति सवैया वती सराज राम रघुवीर के ॥ १ ॥
अनकछि सागर सेन हुतो छोटो छील रसो चतुर ब्रह्मा के आगे वेद वयो वखानिए ॥
मान सरवर माझि फूलत सरोज वहु हुतो फूलत्ववी कहा फून परवानिए ॥
आन नव वधू ग्राम लीज्यै गह लोहू जो तो भूल्यो जगन तो अवश्वि सुधि लीजिए ॥
मोमे इतनो न वुधि सूह्मगुन की न सुधि मोसो निगुनी कू गुनी वुरो जिन मानिए ॥ २ ॥

मध्य——

दोऊ कर मीड़त कहैत ऐसे मदोदरि,
एहो पीय कोऊ परत्रीय को हरत है ॥
जयति जगन कवि अधरे असुर सवैं,
पानी पानी कहि धाइ पानी में परत है ॥
दौरी दौरी डोलत राजा जू तिहारी नारि,
देषि देषि दावानल मन में डरत है ॥
प्रगटे पाईक कोट प्रजरयो कश्रन कोट,
लाप लाप के महल लाप ज्यो जरत हैं ॥ १८ ॥

अंत——

असुर सैना सघारे महा रावन से मारे,
कुभकरन जैसे अव गहि कै पछार्यो है ॥
कचन को कोट पर रावन कू मारि आयो,
महाराजा भभीछन कूं दै आयो है ॥
रैंन वरषत आयो चवर ढुरत आयो,
सव कछू स्वामी भुव दीपति सुहायो है ॥
सभन के मरभपे आनद भयो,
जगत, जगन मगल गायो है ॥ ३३ ॥

जगन वत्तीसी संपूर्ण ।

विषय——राम चरित्र वर्णित है ।

संख्या १२३. सुदर काड, रचयिता——जगन्नाथ, कागज——देशी, पत्र——११०, आकार——८ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)——१८, परिमाण——(अनुष्टुप)——१९८०, अपूर्ण (खंडित), रूप——प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि——नागरी, प्राप्तिस्थान——काशी नागरी प्रचारिणी सभा, श्री राम सुदीप्ट मिश्र, ग्राम——सोनाडी, पो०——कुँडेसर, गाजीपुर ।

आदि——(पत्र ४)

॥ लछुमन जोरे हाथ नाए कै माथ कहै रघुनाथ वीचारी ॥
॥ धरहु धीर रघुवीर......... .. . देव दुखन हरी ॥
:o: :o: :o:
तव जाए धाए मारौ सुभट कह :· अव सोच करत प्रभुजो ध्र मह ::
:o: :o: :o:

॥ दोहरा ॥

॥ दरवानी सौ लछुमन कहा : जाए कहहु सुग्रीव सैते ॥
॥ चौमासा वरखा गएेउ सो : वोला ही रघुवीर तुरंत ते ॥
:o: :o: :o:
॥दूत जाए कहा महाराज जाहा : रघुवर साहेव वोलावते है ॥
॥ लछुमन खरेहही आप..............सीता वोलावते हैं ॥
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

सुनी वोख वात अनुज रघुनाथ ॥गहैउ धनुख सर दोनौ हाथा ॥
गुन अकरन स्त्रवन लै टकोरा ॥ चकीत भैउ......जारा ॥
सुनी अस वचन गए प्रभु पाही ॥
जारो जीम्या कहसी अस वाला ॥ तुम्ह प्रभु आदी जुगधी वीधाता ॥
हुकुम होऐ मारो प्रभु वाना ॥ लेउ अवही अव सुग्रीव को प्राना ॥

दोहरा

वन वन फीरत कर्म वस दुखीत हरत मतीमद ॥
राज पाऐ उद्ध........परेउ रघुकुल कद ॥

अंत—(पत्र १५८)
दीन दश्राल क्रीपाल प्रभुः क्रीपा करहु रघुनाथ
"जग्रनाथ" के मती तुछ्य हैः ठाढ़े प्रभु कह नावो माथ
:o: :o: :o:
हनुमान मोही पर भएउ दश्राला
सुन्द्र कान्ड काथा सव गाश्रा
"जग्रनाथ" दासन के दासा
श्री राम क्रीपा ते कथा प्रगासा

दोहरा

सतगुरु दीन्ह भग्री हरी॰ अग्या दीन्हा जग्रनाथ ॥
मारयेउ सीता वर सुजसः जग्रनाथ जी कहेउ प्रवान
:o :o :o:

झुलना

कहे कौन सकै रघुनाथ के गुनकोः सोती सेस गनेस महेस भुले ।
ब्रह्मा जदकी नर नारंन्द सारन्दः नही पावते है कोइ आर पारः ॥
आद वुन्द अथाह असुझ परैः गुनसात समुन्दकां जल धाराः
कहा राम का क्रीपा उन्हका हैः जै जै दीन दश्राल क्रीपाल न्यारा

चौपाइ

सुन्द्रकान्ड जो पड़ी सुनावै
दीनदीन भवन मैं लछीमी आवै
:o: :o: :o: (अपूर्ण)

विषय—सुदर काड की राम कथा का वर्णन। (सुदर काड)
विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण तथा खडित है। एक सौ दस पत्रे उपलब्ध है। प्रति
इतनी प्राचीन है कि पन्ने बीच-बीच से टूट कर गिर पड़ते हैं। रचयिता "जगन्नाथ" हैं। रचन

का कारण ये यो वतलाते हैं :—एक रात को सोते मे इन्होने देखा कि हनुमान आए हैं और 'राम-चरित्र' वनाने को कहते हैं, इसी प्रेरणा से इन्होने 'सुंदर कांड' की रचना की। ग्रंथ पढ़ने से ज्ञात होता है कि इसके पश्चात इन्होने लंका कांड भी लिखा। सम्पूर्ण ग्रंथ दोहा, चौपाई, छंद, कवित्त, अरील, झूलना आदि पदो मे है।

संख्या १२४. प्रेम विलास, प्रेम लता कथा, रचयिता—कवि जटमल नाहर, निवास-स्थान—लाहौर, कागज—कालपी का हाथ का वना हुआ आधुनिक, पत्र—२०, आकार—$११\frac{३}{४} \times ८\frac{५}{६}$ इंच, पंक्ति(प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—स० १६९३, लिपिकाल—स० १९९९ वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

आदि—प्रेमविलास प्रेमलता कथा ॥
श्री जैनाय नम. ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम प्रणमि पय सरसती गणपति गुण भंडार।
जगु स्वरण अमोज नमि करूं कथा विस्तार ॥ १ ॥
योतनपुर नामा नगर इंद्रपुरी अवतार।
कोट नदी उतंग गृह वनवारी सुखकार ॥ २ ॥
लोक पीठ अर धर्मगुण दान माल दरवार।
बारह जोयण लाव पाण नव जोजन विस्तार ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अठतालीस कोस लंबाई। वसै वरन चारी लोकाई ॥
राम समान सुधरमी राजा। प्रेम विजै चिहु खण्ड अवाजा ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:
प्रेमवती ताकी प्रिया पति भगती गुनवंत।
रूप रंग रति सम रच्यो विधना धरि मनिपति ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम लता पुत्री तसु सोहै। रूपवंत सुरनर मन मोहै ॥
चंद्रमुखी मनुहर मृग नयनी। सुक नासा चंचल पिक वयनी ॥ ७ ॥

अंत—
॥ चौपाई ॥

प्रेम लता की वरनी प्रीता। जटमल जुगत सकल रस रीता ॥
सुमति सरसती सद्गुरु दीनी। सवरस लता कथा मुहि कीनी ॥७६॥

॥ सो० ॥

सवरस लता सुनाउ मधि सिंगार अरु प्रेम रस।
विरह अधिक फुनि ताम सुनति अधिक सुख उपजै ॥७७॥

॥ चौ० ॥

संवत सोलह सै त्रैयानुं। भादु मास सुकल पख जानुं ॥
पचमि चौथ तिथैं सलगना। दिन रविवार परम रस मगना ॥७८SS॥

॥ दो० ॥

सिंध नदी कै कंठ पइ मेवासी वो फेर।
राजा वली पराक्रमी कोऊन सवकं घेर ॥७९॥

॥ चौ० ॥

पूरा कोट कटक पुनि पूरा । परसिरदार गाउ का सूरा ॥
मसलत मंत्र वहुत सुजाने । मिले खान सुलताण पिछाने ॥८०॥

॥ दो० ॥

सइदा कौ सहिवाज खां वइरी सिर कलवन्न ।
जानत नाही जेहली सव अवान की छत्र ॥८१॥

॥ चौ० ॥

रइयत वहुत रहत सुंराजी । मुसलमान सु खास निमाजी ॥
चोर जार देख्या न सुहावै । वहुत दिलासा लोक वसावै ॥८२।

॥ दो० ॥

वसै अडोल जलालपुर राजा थिरु सहिवाज ।
रइयत सकल वसै सुखी जव लगि थिरहू राज ॥८३॥

॥ चौ० ॥

तहां वसै जटमल लाहोरी । वरनै कथा सुमति तसु द्दोरी ।
नाहर वंस न कुछ सो जानै । जो सरसती कहै सो आनै ॥

॥ सोरठा ॥

चतुर पढ़ो चित लाय सभ रस लता कथा रसिक ।
सुनत परम सुख दाय श्रोता सुन इह श्रवण दे ॥८५॥

॥ दो० ॥

सुनहि कथा दुर्जन सजन दुर्जन अवगुन लेह ।
सूकर पाग्स छार कै मुख विष्ठा कु देहि ॥८६॥

इति श्री प्रेम विलास प्रेम लता की सव रस लता नाम कथा नाहर जटमल कृता संपूर्ण संवत् १८०६ रा वर्षे मिती वैसाख वदि ७ दिने गुरुवासरे श्री मरोट नगर मध्ये चतुर्मासी कृत । प० प्र० श्री १०५ श्री सुख हेम जी गणिवरान शिष्य सरूप चद्रेण लिपी चक्रे शुभं भवतु ॥ अथ कवित्त ॥ सेत तलै ससि दिठ, दिठ ससि तलि दुइ धनुहर । धनुहर तलि मृग दिठ, दिट मृगतल सुक मनुहर । सुकतल गोल्ह अनार, तासु तल दिठो अवा । अवा हेठ कपोत, तासु तल भवर अचभा । तसु तलै सुगिरि सरवर विमल सरतल सदा रहत हर । तसु हेठ नाग पंगज जुगल जटमल वूझो चतुर नर ॥ १ ॥

विषय—यौतन पुर नगर मे राजा प्रेमविजै राज्य करता था । उसकी रानी का नाम प्रेमवती तथा पुत्री का नाम प्रेमलता था । राजा के मंत्री मदन विलास का एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रेम विलास रखा गया । प्रेम लता और प्रेम विलास दोनो एक ही गुरु के पास पढने लगे । दोनो अति रूपवान थे । गुरु ने इस आशका से कि दोनो रूपवान है, अत उनमे कोई अनुचित प्रेम न हो जाय, दोनो को एक दूसरे के झूठ-मूठ दोष वताए । राजकुमारी से कहा कि प्रेम विलास कोढी है और प्रेम विलास को राजकुमारी का अधी होना वतलाया । दोनो साथ ही पढते थे, पर जव उनमे से प्रत्येक एक दूसरे को घृणित दोष से युक्त समझता था तो एक दूसरे को देखना भी पाप समझते थे । एक दिन जव गुरु जी किसी कार्य से वाहर चले गए थे, राजकुमारी को पढने मे कुछ अशुद्धि हो गई जिस पर प्रेम विलास ने उसको अधी कह दिया । राजकुमारी को वडा क्रोध आया और उसने भी प्रेम विलास को कुष्टी कहकर सबोधित किया । प्रेम विलास ने कहा, गुरु ने तुम्हे अधी वतलाया था, अत यह सोचकर कि दर्शो दोप से तुमने अशुद्ध पढ़ा, मैंने तुमको अधी कहा, परतु तुमने मुझे कुष्टी क्यो कहा ? राजकुमारी ने भी

सत्य वात वतला दी। इस पर दोनो एक दूसरे को ध्यानपूर्वक देखने लगे। दोनो रूपवान तो थे ही, अत शीघ्र ही एक दूसरे पर अनुरक्त हो गए। इतने मे गुरु जी आ गए। उन्होने देखा कि उनकी चतुरता का परदा खुल गया। उन्होने दोनो को डाँटा और समझाया पर कुछ फल न निकला। दोनो नु गुरु से अपनी अपनी हृदय की बातें कह दी। दुष्परिणाम की आशंका से गुरु ने दोनो को अपने अपने घर विदा कर दिया। परतु दोनो प्रेमियो को शाति कहाँ थी। एक दिन उन्होने निश्चय किया कि महाकाल के सामने विवाह कर भाग जायँ। आगे की अमावस्या का दिन इसके लिए निश्चित हुआ। इस बीच नगर में एक जोगिन आई, जो वीणा बजाना और गाना बहुत अच्छा जानती थी। लोग उसके गायन-वादन पर मुग्ध हो गए। राजा भी उससे मिल कर प्रसन्न हुआ। उसने जोगिन से राजकुमारी को भी वीणा बजाना और गाना सिखाने की प्रार्थना की। जोगिन ने स्वीकृति दे दी। राजकुमारी नित्य जोगिन के पास सगीत के लिए जाने लगी। प्रेम विलास भी अवसर पाकर राजकुमारी से कुटिया पर मिल लिया करता। दोनो एक दूसरे को देखकर व्याकुल हो जाते। ऐसे ही अवसर पर एक दिन राजकुमारी की आँखो से आँसू गिर पडे जिससे जोगिन को बडा आश्चर्य हुआ। मूल कारण ज्ञात हो जाने पर उसने राजकुमारी को आँखो का अजन देकर उडने तथा रूप पलटने की विद्या सिखाई। कुछ दिन पश्चात् राजकुमारी को शिक्षा देकर जोगिन चली गई। इधर पूर्व निश्चित अनुसार दोनो प्रेमी चपक माला सखी के साथ महाकाल के सामने विवाह कृत्य सपन्न कर और देवता का आशीर्वाद लेकर आकाश मार्ग से उड भागे। तीनो रतनपुर नगर पहुँचे, जहाँ का राजा उसी दिन मर चुका था। राजा के कोई पुत्र न होने से यह तय हुआ था कि हाथी जिसको राजतिलक कर देगा वही राजा बनाया जायगा। सयोगवश हाथी ने प्रेमविलास को ही राजतिलक कर दिया। अत वह और प्रेमलता उस राज्य के राजा रानी बने। कुछ दिनोपरात प्रेम विलास का चद्रपुरी पाटण के राजा चद्रचूड से घोर युद्ध हुआ जिसमे वह विजयी होकर घर लौटा। इस प्रकार अनेक कठिनाइयो पर विजय प्राप्त कर प्रेमलता और प्रेमविलास अपने दिन सुखपूर्वक विताने लगे। एक दिन उन्होने अपने माता पिता के पास एक दूत भेजा। उधर राजा और मत्री उनके लिए अत्यत व्याकुल रहते थे, पर महाकाल की उपासना द्वारा उन्हें पता लगा कि ये रतनपुरी मे राज करते हैं तो सतोष कर चुप हो गए। इधर जब दूत उनके पास पहुँचा तब ये बहुत प्रसन्न हुए और उसको मुँह माँगी सौगात दी, तथा प्रेमविलास और प्रेमलता को यौतनपुरी आने का सदेश भेजा। दोनो प्रेमी अपने घर आए और माता पिता से मिल कर आनदित हुए। दोनो का पुन नियमित रूप से विवाह किया गया। इस प्रकार कुछ दिन माता पिता के पास रह कर ये दोनो फिर रतन पुरी चले गए।

॥ रचना काल ॥

संवत् सोलह सै छैयानुं। भाद्र मास सुकल पछ जानुं ॥
पंचमि चौथ तिथै संलगना। दिन रविवार परम रस मगना ॥

संख्या १२५. व्यजन प्रकार (पहला भाग), रचयिता—जयशकर सहल अवदीच, स्थान—आगरा, कागज—आधुनिक, पृष्ठ—३२, आकार—८$\frac{३}{६}$ × ५$\frac{३}{६}$ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६८ ई० (सवत् १९२५ वि०), मुद्रणकाल—सन् १८६८ ई० प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीर जहापुर, पोस्ट—सिडारा, जिला—इलाहाबाद।

आदि—

॥ व्यंजन प्रकार ॥

इस पुस्तक के बनाने से प्रयोजन यह है कि गाव या शहर की रहने वाली जो स्त्रियां

इसे पढेंगी वे व्यंजन प्रकार अर्थात रसोई की त्रिया को भली भांति से जानेंगी ।। और इसी की सहायता से उन्हें यह वड़ा लाभ होगा कि अनेक प्रकार के व्यंजन वनाने या वनवाने मे कुशलता हो जायगी ।। और जव मनुष्य इस पुस्तक के आशय को भली भाति से समझेंगे तो वे अवश्य अपनी लड़कियो को रसोई करने मे चतुर होने के लिये पढावेंगे क्योकि लडकियो को या वड़ी स्त्रियो को रसोई का जितना अधिक अभ्यास हो उतनी ही उनकी प्रशसा होती है ।

अंत—   ।। दोहा ।।

भूल चूक जो होय तो मत करियो काउ खीस ।
जयशंकर यो कहत हैं सब के पद धर सीस ।।
जैसी मेरो वुद्धि थी वैसी दई वनाय ।
अस्त व्यस्त जो होय तो क्षमा करो कविराय ।।

इति श्री जयशकर कृते व्यजन प्रकारे प्रथमो भागः सम्पूर्णः

विषय—पाक विद्या का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक सन् १८६८ मे प्रकाशित हुई, अत इसी के लगभग इसका रचना-काल समझना चाहिए । रचयिता जयशकर सहस्र अवदीच आगरे के निवासी थे । प्रातीय गवर्नर की आज्ञा से और एम० केमसन साहव डैरेक्टर आफ पव्लिक इस्ट्रक्शन की इच्छा से उन्होने प्रस्तुत पुस्तक की रचना की । प० वशीधर ने रचयिता को पुस्तक रचने के लिए उत्साहित किया ।

संख्या १२६क. रत्नावली, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतहपुर (राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२८, आकार—$८\frac{६}{६} \times ६\frac{१}{४}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण अनुष्टुप्)—१०५०, खडित, रूप—प्राचीन, (जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६९१ वि० हि० सन् १०४४, लिपिकाल—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, उत्तर प्रदेश, इलाहावाद ।

आदि..............................

भाग हो हिं तो लागहिं तीर ।।
दरिया पार नइन की राज । जो पहुँचै तौ सुधरै काज ।।
जो जल मांहि वूडि हम जांहि । चित्त न मर्न मित मग माहि ।।

।। दोहा ।।

वैठि चले तर मूर पर सुंमिरत सिरजंनहार ।
वीस द्योस पाछैं चली लहरैं वारा पार ।।
कुंवर नें पांनीं में पंछी ऐसी भाति वोलत सुंनें जांन्यो साज वाजत हैं

।। चौपाई ४५ ।।

जरत लहरंनि मैं लहराइ । कवहूं इत कवहूं उत जाइ ।।
कुंवर और सगी विल लावहिं । गुर पीरंनं कौ नावं मनावंहि ।।
दस दिनं लौं भटक्यो सव साथ । जीवनं मूरनं छाडी हाथ ।।
लहर गइं मिटि दस दिनं पाछैं । रवि ससि डिस्ट परत हैं आछै ।।
चलत मांस द्वै गये विहाई । तव रेती पर पहुंचे जाई ।।
लै चकमक सौं आग जराई । वनसि मीन पकरि करि खाई ।।
सुंनें औचका वाजत साज । भाति भांति के रहे विराज ।।
सगरी निस इहिं भांति विहानी । भोर होत वतियां प्रगटानी ।।

मानस नाहिं वजावत माज । वहु पंछिन को हुतो अवाज ॥
ऊँचो शब्द करत परकास । तब जल में प्रगटतहु बान ॥

॥ दोहा ॥

रैन सबै इह विधि रहैं द्यौस नीर छपि जाहिं ।
रीझ्यो कुवर निहारि यौं उपज्यो जिय माहिं ॥

मध्य— ॥चौपाई ॥ १२६ ॥

पद्मनी कह्यो सुनहु जिय प्यारी । प्रथम रीझि अब कहा विचारी ॥
कछू रीझि कछु पद्मनी कानि । रत्न कुवर टिग बैठी आनि ॥
भरि अकवार मिले रति मैन । मन उमग पै उमटत नैन ॥
रतनवति जब रीझि जनाई । प्रीति कुवर की भई सवाई ॥
पद्मनि अपने धाम सिधारी । रहे वाग मे ये नर नारी ॥
विथा पाछली मोहन भाषै । वरजि वरजि रतनावति राषै ॥
यहै कहै सुनि पर्म पियारे । सुरति न कर दुष दई निवारे ॥
बीरी वानि कुवर दै रतन । रतन कुवर कौ दै करि जतन ॥
सगरी निस बीती सुष माही । तब रस करे सुरति इक नाहीं ॥
राष्यौ सीस दहुनि मिलि भारी । कठिन अगिन सुष राष न पारी ॥

॥ दोहा ॥

आनदंन मोहन रतन सब निस गई विहाइ ।
घरी घरी सुष रसु किये रही घरी द्वै आइ ॥

:o: :o: :o.

अंत—सार कथ्यो मैं मति अनुसार । जहा षोर सो लेहु सुधार ॥
भूलन को मानस व्योहार । है अभूलि आपुन करतार ॥
यहै वीनती सुनियहु मित्त । दोष हमारो धरहु न चित्त ॥
जैसी वधि तैसी मैं कही । नाव तऊ लै वंची वही ॥
सोरह सै इक्यानुवै वरप । रतनावती वाधी मैं हरष ॥
अगहन वदि सातै कहि जान । कथा सपूरन कर्यो वषान ॥
कथा पुरातन कीनी नई । नौ दिन मैं सपूरन भई ॥
संनं सहंस चार चालीस । जान वषानौं विसवाबीस ॥

॥ दोहा ॥

सुलप कथा यहु मैं कथी नौ दिन मैं कहि जान ।
कविता पढहु सुधार कै भाषी वुधि परवान ॥

इति कथा रतनावली की कवि जान क्रित संपूरन भई सवत सतरह सै १७८४ मिती फागंनं सुदी नौंमी ६ वुधेवार लिषतूं फतेहचंद तारा चद का डोंडवानिया पोथी बहुत सही लिषी है। श्री श्री..................

विषय—ग्रंथ के आरंभ के नौ पत्ने खंडित हो गए हैं जिससे कथा का आरंभिक भाग अज्ञात रह गया। शेष अंश इस प्रकार है —

पृथ्वी पर अमृत पुरी के राजा जगतराइ के मनमोहन नाम का पुत्र था। उसने एक दिन अप्सराओं के राजा सूरजमल की पुत्री रत्नावली का चित्र देखा जिस पर वह मोहित हो गया। रत्नावली को पाने के लिए वह कुछ मित्रों के साथ अपने देश से चल पड़ा। अप्सराओं के देश मे जाना कुछ सरल कार्य न था, अत उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

एक समुद्र पार करने पर उन्हें ऐसे पक्षी मिले जिनके बोल वाद्य यन्त्रों के स्वरो के समान थे। ये पक्षी दिन को जल मे छिप जाते और रात को वाहर आ जाते। पश्चात् उन्होंने केशर वारी, लवग, विरवा और श्वानानन जीव (धड मनुष्य का और सिर श्वान का) देखे। श्वानाननो का राजा राजकुमार के ही नगर का था जो उधर जा पड़ा था। जिस दिन वह उनके (श्वाननो के) देश मे पहुँचा उस दिन वहाँ का राजा मर गया था। अत वहा की रीति के अनुसार वहाँ के लोगो ने विदशी को राजा वना दिया और राजा की पुत्री उसको विवाह दी। राजकुमार कुछ दिन उसके पास रहा। पश्चात् वहाँ से आगे चला। समुद्र पार करते समय पाँच साथी मगर के ग्रास हो गए। शेप राजकुमार सहित तीन वचे। आगे मार्ग मे चदन के वृक्ष दिखाई पडे, जिनमे श्वान के समान वडी-वडी चीटियाँ थी। उनसे प्राण वचाकर एक शिला पर वैठे तो वह शिला उनको लेकर उड चली। किसी प्रकार एक पक्षी के पैर पकड कर आकाश से धरती पर आए तो परियो ने पकड लिया। वहाँ से भी निकले तो एक प्रेत ठग कर ले गया। प्रेत से छुटकारा पाकर असुरो के पाले पडे। असुरो से छूट कर फिर परियो के फदे मे जा पडे। एक महात्मा की दया से यह विपत्ति भी टली, परतु शीघ्र ही और विपत्ति आई। वह अप्सराओ के अन्य राजा के कोट मे गया जहाँ सिहल द्वीप की पद्मिनी वदी के रूप मे थी। राजकुमार ने पद्मिनी की सहायता से राजा को मार दिया और पद्मिनी को लेकर सिहल द्वीप पहुँचा। सिहल के राजा ने राजकुमार का पुत्री के रक्षक के रूप मे वडा सत्कार किया। पद्मिनी ने भी रत्नावती से राजकुमार की भेट एक फुलवारी मे कराकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। पीछे यद्यपि राजकुमार को एक और विपत्ति का सामना करना पडा (इस वार वह अप्सर राजा के भाई का वदी हुआ जिसको उसने पद्मिनी छुडाते समय मारा था), पर रत्नावली के पिता सूरजमल की सहायता से वच गया। अत मे रत्नावली से राजकुमार का विवाह हो जाता है और उसके साथ वह आनदपूर्वक रहने लगता है। उधर साथियो मे केवल एक साथी, उत्तम नाम का वच रह गया था जो पद्मिनी के यहाँ उसके आग्रह पर टिक गया था। उसका भी प्रेम पद्मिनी से हो गया। जव राजकुमार रत्नावली समेत अपने देश को चला तो सिहलद्वीप मे आकर पद्मिनी से उसका भी विवाह कर दिया। इस तरह राजकुमार रत्नावली, उत्तम और पद्मिनी सहित अपने देश को चला आया। राजकुमार और रत्नावती से विवाह हो जाने पर उनके आनद विनोद के सवध मे षड्ऋतु वर्णन भी है। कथा मे अनेक प्रकार के आश्चर्यचकित करने वाले जीवो एव देशो के वर्णन, घटना वैचित्र्य तो पद पद पर है। रचयिता इस कथा को वहुत पुरातन वतलाता है। अत हो सकता है प्राचीन भारतीय साहित्य इसका स्रोत हो।

ग्रथ मे निम्नलिखित प्रकार से आठ खड है .—

१—पहला खड —खडित।

२—दूसरा ,, —कुछ खडित। कुवर न पानी मे पछी ऐसी वोलत सुनें जान्यो साज वाजत है, केशर वारी विर्छ और मानस कज देखे, लवग विरवा, श्वानानन जीव एव पाँच साथी मगर ने ली–, चदन के वृक्ष देखे।

३—तीसरा ,, —कुवर सिलाने उडायो, प्रेत ठग ले गयो, पछी ने उडायो तथा अनेक कौतिक देखे .... ११—१५ तक

४—चौथा ,, —पद्मनि - अप्सरराजा को मारि पद्मिनी को सिंहल द्वीप ले आयो.. .... १५–२० तक

५—पाँचवाँ ,, —कुँवर ने उत्तम पायो . ... २०–२६ तक

छठा ,, —रत्नावती – कुँवर रत्नावती से मिल्यो.......... २६–३१ तक

७—सातवाँ ,, —कुँवर रत्नावती कौ व्याहु भयौ........... ३१–३६ तक

८—आठवाँ ,, —पद्मिनी उत्तम का व्याहु भयौ तथा कुँवर रत्नावती
और उत्तम पद्मिनी ले अमृत पुर आइ माता पिता
से मिल्यो . .. . ३६-३८ क,ख

रचनाकाल

सोरह सै इक्यानुवै वरप । रतनावती वाघी मै हरप ॥
अगहन वदी सातै कहि जान । कथा सपुरन कह्यो वपान ॥
कथा पुरातन कीनी नई । नौ दिन मै संपूरन भई ॥
सन सहस चार चालीस । जान वपानी दिसवार्वीस ॥

विशेष ज्ञातव्य—विशेष के लिए देखिए परिशिष्ट १ मे संख्या, १८६ ।

संख्या १२६ख लैलै मजनू, कवि जान, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०३१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६९१ वि० लिपिकाल—सं० १७८४, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—ग्रंथ लैलै मजनू कवि जान कृते

॥ दोहा ॥

प्रथम चित्त सौ लीजिये अलप अवगोचर नाम ।
सुमिरत हौं कवि जान कहि पूजै मनसा काम ॥
चिंता को तारौ जरयो इछ्यामिरट न आइ ।
तारी करता नाव है लेत तत पुलि जाय ॥ ३ ॥
एक सब्द मे जान कहि सिरज्यो सब ससार ।
जो चाह्यो सोई भयौ होत न लागी वार ॥ ४ ॥
:o: .o: .o.
साहिजहा जुग जुग जियो जिह हजरत सौ हेत ।
जोइ इछ्या जीउ की सोई करता देत ॥ ८ ॥
कहत जान अब वरनि हौ लैलै मजनू प्रीति ।
सोई विध प्रगट करौ जो ग्रथनि मै रीत ॥ ९ ॥
लैलै मजनू की कथा अधिक सुहावै कान ।
विरही विरहु वढाईहै आहि पै सुघरसान ॥१०॥
:o: :o: .o:

मध्य—

सवइया

काल वसु भये जव लैलै मजनू सुपने मै काहू देपै नीको भाति पाये है ।
उत्तिम आराम तामै धाम अभिराम केल करै नर दान नीके रुपत दिखाये है ।
हसि हसि कहै वात वीतै सुप दिन रात गाति मधि अंवर पटवर पिन्हाये है ।
सलिता सलिल सोहैं वोलि वोलि पछी मोहै दरस भिषारी भेद दरस दिषाये है ।

अंत—

॥ दोहा ॥

प्रेम नेम जान्यो नही ते निहचे पसु आहि ।
सो मानस कवि जान कहि जिह करता की चाहि ॥ २ ॥
लैलै मजनूं वाचि कै पैम् वढ्यो मन जान ।
थोरे दिन मै ग्रंथ यहु वाध्यो वुधि प्रवान ॥ ३ ॥

सोरह सै इक्यांनुवैं कीनो ग्रथ वषान ।
भइ मकर सकरात तव माह लग्यो कहि जान ॥
ग्रंथ लैलै मजनू संपूरन भयौ सं० १७८४ फागुन सुदी १५

विषय—लैला मजनू की कथा वर्णित है ।

रचना काल

सोरह सै इक्यानुवैं कीनौं ग्रंथ वषान ।
भई मकर सकरात तव माह लग्यौ कहि 'जान' ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६१ तथा लिपि काल सवत् १७८४ है । रचयिता का नाम कवि जान है । इनके सवध मे तथा अन्य विशेष वातो के लिए देखिए रतनावती का विवरण पत्र ।

सख्या १२६ग. रतनमजरी, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—८¼ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११४८, खडित, रूप—प्राचीन (जी.र्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१०४० हिजरी सन्, सवत् १७८७ वि०, लिपिकाल—१७७८ वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहावाद ।

आदि—

.. ..को देखत अटक्यौ चित्त ।
इक टक झांषत हीं रह्यौ डिठ न फिरै इत उत्त ॥

॥ चौपई ॥

ऐसें लागत भौंहनि वंक । दोइ न उत नउ ये ससंक ॥
अचिरज देषि भयौ आनद । रैंन वरन निकसेव द्वै चंद ॥
तिय दृग उज्जल मनहुं तराव । भौहैं आवनूस की नाव ॥
मन वैठ्यौ जिह भीतर जाइ । भौंर त्यौं रमैं वूडिक षाइ ॥
हारी धनुष देषि भुवभाव । दै विन वानं करेजे घाव ॥

॥ दोहा ॥

वांकौ ससिहूं षदिये लेंहि न सूधै नांवं ।
वंक भौंह कौं देषि दृग सिर पर दीनी ठाव ॥

॥ चौपाई ॥

अव नैंनंनि की सुनहु निकाई । षंजन वरन मीन चपलाई ॥
कै संग भूलि परयौ म्रिग छौंना । कै कछु इनमैं टामन टौना ॥

अंत— प्रेमु ग्रथ कौ जान कहि अरथ महा अतिगूढ़ ।
सो कैसैं कै समुझि है मेरो जियरा मूढ ॥

॥ चौपई ॥

सुनि सुनि लेहु कहै कवि जान । कथा कथी मैं वुधि परवान ।
कवि ताकौ चित्त वाढ्यौ जात । उकतिन मै डोलत भरमात ॥
जौ भूलैं तौ अचिरज नांहि । दूषंन जिन करहु मन माहि ॥
पडितन कौ है यहै विचार । जहा षोर सो लेंहि सुधार ॥
यामैं उकति पुरातन वानी । और नउतन हूं वहुवा आनी ॥

॥ दोहा ॥

उकति जुकति भाषा सहत बहु मति ग्रंथ मिलाइ ।
रतन मजरी जान कवि भाषी वान बनाइ ॥ ७ ॥
रतन मंजरी जान कवि भाषी विसवावीस ।
तवही सन्न यों कहत हे येक सहस चालीस ॥
जे कवि ता आगें भये रचि पचि भाषी येक ।
बुधि कै वर तें जान कवि वाधी कथा अनेक ॥

इति कथा रतनमजरी की सपूरन भई मिति पोह वदी १ विसपतवार समत् १७८८ दसषत फतेहचद ताराचंद का डीडवानीया अग्रवाल गोत गोइला सन् ११३४ माह सफर ता० १५ पोथी फतेह चंद की घर की चौपाई २६४ दोहा २६६ ॥

विषय—चद्रपुरी के राजा अजयचद के मधुसूदन नाम का पुत्र था। एक दिन स्वप्न मे राजकुमार मधुसूदन को रतनमजरी नाम की परम रूपवती राजकुमारी से प्रेम-परिचय हुआ। स्वप्न का राजकुमार के चित्त पर इतना प्रभाव पडा कि जागने पर भी वह राजकुमारी को पाने के लिए अधीर हो उठा। भूख-प्यास जाती रही। न दिन को सानि, न रात को नीद। राजा, रानी एव राज्य के लोगो ने बहुत कुछ समझाया, पर कुछ फल न हुआ। एक दिन राजकुमार आखेट खेलने के निमित्त वन मे गया। एक सिंह को मारने के पश्चात् विश्राम करने के लिए पेड के नीचे बैठा। उसी समय एक सुदर परतु अद्भुत पक्षी उस पेड पर आकर बैठा। राजकुमार की इच्छा उसे पकडने की हुई। अत चुप-चाप धीरे-धीरे पेड मे चढा और पक्षी के दोनो पैर पकड लिए। परतु दैव इच्छा कि पक्षी उड चला और राजकुमार का बल कुछ न कर सका। वह पक्षी के पैरो पर लटकता हुआ आकाश मे चलने लगा। पक्षी उडता-उडता एक घोर कातार वन मे पहुँचा, जहाँ राजकुमार ने अवसर पाकर अपने को मुक्त कर लिया। उस विस्तृत निर्जन वन मे राजकुमार को भय लगने लगा। उसे जीवन की आशका होने लगी। पर चलते-चलते ऐसे स्थान पर आया जिसने उसे चकित कर दिया। एक सुदर सुशोभित भवन दृष्टिगत हुआ जिसके चारो ओर ऐसे रमणीय उपवन थे जिनमे भाँति-भाँति के पुष्प और फलयुक्त वृक्ष एव अनेक मनोहर सरोवर थे तथा नाना प्रकार के पशु-पक्षी क्रीडा कर रहे थे। राजकुमार का कौतूहल बढ चला। उसने स्वप्न मे ठीक ऐसा ही दृश्य देखा था। कमी थी तो केवल राजकुमारी रतनमजरी और उसकी सखियो की। उसे स्वप्न सार्थक होता हुआ दिखाई देने लगा। भवन मे जाकर उसको एक स्त्री के द्वारा पता चला कि राजकुमारी प्रत्येक एकादशी को उपवन मे आती है और वन मे जो पुरुष मिलता है उसे मार डालती है। उस अवसर पर जो पुरुष उस उपवन मे दिखाई देता है उसको उसकी सखियाँ तुरत ही मार देती है। राजकुमार ने मृत्यु से अपने को निर्भय कर दिया। प्रेम के आगे मृत्यु को तुच्छ समझने लगा। अत राजकुमारी की प्रतीक्षा मे वह उपवन मे टहलने लगा। निश्चित समय पर राजकुमारी सखियो के साथ उपवन मे पहुँची। वह भी प्रेम विरह से व्यथित थी। राजकुमार के स्वप्न की तरह उसको भी स्वप्न हुआ था और उसी राजकुमार से उसका प्रेम हो गया था। अत उपवन मे राजकुमार से भेट हो जाने पर उसको प्रसन्नता हुई। लोक-लज्जा एव मर्यादा पालन के निमित्त यद्यपि उसने राजकुमार के साथ उस समय कठोर व्यवहार किया तथापि सखियो द्वारा अपने माता पिता से कहला दिया कि उसका प्रेमी राजकुमार उनके देश मे पहुँच गया है। राजा उदयभान और रानी चद्रकला यह समाचार पाकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होने रतनमजरी का विवाह राजकुमार मधुसूदन से कर दिया। कुछ दिन तक आनदपूर्वक रहने के पश्चात् राजकुमार राजकुमारी से बिछुड गया। एक दिन उपवन मे राजकुमारी ने पूर्वोक्त प्रकार का पक्षी देखा, जिसको पकडने के लिए उसने राजकुमार से कहा। राजकुमार पक्षी को पकडने के लिए गया, पर उलटा पक्षी ही उसको लेकर उड चला। उधर

पक्षी ने राजकुमार को छोडा तब राजकुमार ने स्वय को अपने देश मे पाया। वह रतनमजरी के विना बहुत विकल था और उसको पाए विना अपने देश मे वापिस नही आना चाहता था। अत. फिर रतनमजरी के देश को चला। मार्ग मे एक देव मिला जो रतनमजरी के ही वियोग मे घुल रहा था। उसने राजकुमार के साथ दुर्व्यवहार किया। एक सिद्ध की कृपा से राजकुमार को अग्निबाण और वायुवाण नाम के दो अस्त्र प्राप्त हुए जिनकी सहायता से उसने देव को मारा और आगे चला। मार्ग मे उसे अनेक विघ्न बाधाओ का सामना करना पडा, पर उक्त दो अस्त्रो की सहायता से सब पर विजय प्राप्त करता हुआ आगे बढता गया। एक रूपवती तरुण स्त्री को दानव ले जा रहा था। उसने दानव को मारकर स्त्री की रक्षा की। तत्पश्चात् स्त्री के पिता से भी भेंट हुई जो दानव का पीछा कर रहे थे। परिचय होने पर ज्ञात हुआ कि ये रतनमजरी के पिता उदयभान राजा के भाई थे। फिर तो राजकुमार की प्रसन्नता का का ठिकाना न रहा। शीघ्र ही उसकी भेंट उदयभान से हो गई। फलत वह रतन मजरी से मिला। कुछ दिन पश्चात् रतनमजरी को लेकर अपने देश को वापस आ गया।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के आरभ के सात पन्ने लुप्त हो गए है। रचना काल हिजरी सन् मे १०४० है। लिपिकाल सवत् १७७८ वि० दिया है। रचयिता का नाम कवि जान है। इनके सबध मे कृपया देखिए 'रत्नावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६घ. कथा नल दमयती की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३०, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—११२१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०७२ हिजरी, लिपिकाल—१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि— कथा नल दमयंती की कवि जान क्रित ॥

॥ चौपाई ॥

अलष अगोचर सुम्रिरन कीजै। कहत जान कवि जौलौं जीजै ॥
जौ सुमिरन जै निसदिन होइ। मनुप अपावन पावन होइ ॥
हैं करता के भेद अनेक। कहा कहैं जिंहि रसना येक ॥
सेस सहस दोइ रचन विचार। सुमिरत होइ रह्यौ थकिहार ॥
सुप दुप दैंन समत्थ गुसाईं। करिहै अपनैं ही मन भाईं ॥
करहि प्रभु हैंहै सहज सुभाई। राजा भिछुक भिछ कराई ॥
विनसैं अवि अवस्था परैं। बहुरौं अलष आपदा हरैं ॥

॥ दोहा ॥

करता चाहत सो करत होत न लागत वार।
कहत जांन या वात कौं जानत सब संसार ॥
:o: :o: :o:
अब हौं करौं पीर परनाम। सेष महंमद जाकौ नाम ॥
हाली मैं जिनकौ विस्राम। संतत अबूह नीक इमाम ॥
:o: :o: :o:
दारा सुजा पेत विचराये। पुनि मुराद ग्वारेर चढाये ॥
को अरि रह्यौ लरिन को नांहि। इक छत राज करैं जग मांहि ॥
दीनदार बरबड डौ जूझार। औरंग जेब साहिमूछार ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

दमयंती पतिहेत तें जरत न मोरचो अंग ।
सारस की जोरी जिमं मरे येक ही संग ॥५०॥

॥ सवइया ॥

जान न देत अकेलो पुरी जम नाहु कं मोह महा चितु भीनों ॥
आव घन्तौ कू पीरन आवत जीय दं पीय कों आदुर दीनों ॥
छांडि विभूत विभूत यो तन पूत सुताहू को नाव न लीनों ॥
जीवन पोच भयो है सती तव सोच··· पैठत मोच न कीनो ॥१४६॥

॥ चौपई ॥

उपज्यौ सोर मरे नल राइ । स..ग आसू मुप में हाइ ॥
राग ठौर रोवहि वहु सग । छाती वाजहि ठौर म्रिदग ॥
केकल द्यौस ऊजीन जु नगरी । अतिही दुषित रही है नगरी ॥
नल सु..क्रिया जनाई परी । लोग वुलाइ दिलासा करी ॥
लोगनि कों जु देत नलराइ । सवकों दीनों त्रिपा जनाइ ॥
सव काहू के सारे काज । इद्रसेन वनि आयौ राज ॥
ऐसे सुपत लोग सव भए । नल राजा को भूले गये ॥
हुतौ जम..विल अचलमास । पूरी भई कथा रसुराम ॥

॥ दोहा ॥

सन हजार वहत्तरी..दिन आदित यार ।
करी जान तेईस दिन मं जव पाइ वार ॥
कथा नल दमयती की सपूरन भई समत ॥ १७७८ मा......

विषय—नल दमयती की कथा का वर्णन ।

र० का०

सन हजार वहत्तरी..दिन आदितवार ।
करी जान तेईस दिन में जव पाई वार ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल हिजरी सन् मे १०७२ है । लि० का० संवत् १८९८ है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए 'रत्नावती' का विवरण-पत्र ।

इस कवि की समस्त रचनाएँ अधिकतर दोहा चौपाइयों मे है । उनका क्रम सर्वत्र समान नही । किसी रचना मे चौपाई की पांच अर्द्धालियो के पश्चात्, किसी मे छः अर्द्धालियों के पश्चात् एव किसी मे सात या आठ अर्द्धालियो के पश्चात् दोहा आता है ।

प्रस्तुत रचना मे आठ चौपाइयों (अर्द्धालियों) के पश्चात् दोहा है ।

इसमे औरगजेव वादशाह का भ्रातृहता के रूप मे उल्लेख है ।

संख्या १२६ड. कथा पुहुप वरिषा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८¾ × ६¼ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६५, पूर्ण, रूप—पुराना, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०३७ हिजरी, सवत् १६८५ वि०, लिपिकाल—१९७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहावाद ।

आदि—कथा पुहुप वरिषा वर्णन जान कृत ॥

॥ चौपई ॥ १ ॥

सुमिरौं अलख निरंजन आद। मुप रसना कौ यहै सवाद ॥
तौलौं जपिए जौलौं जीजै। नाव अलप अम्रित सौ पीजै ॥

:o: :o: :o:

दूजै नाव मुहमद गांऊ। ताकी दया परमपद पाऊं ॥
नवी नवी निस वासुर करिहैं। ताकौ अंग नरक ना जरिहैं ॥

:o: :o: :o:

साहि जहां साहिन की साह। जहाँगीर सुत जगत पनाह ॥

:o: :o: :o:

बड़े बड़े जाकै उमराव। नीके नीके करहिं उपाव ॥
आसिफषा थभनिपति साहि। ऐसे दीनो ग्यांन इलाही ॥

:o: :o: :o:

और महावतषां वलिवंत। जाकै संग बहुत सांवत ॥

॥ दोहा ॥

आसिफ खा सरदास है दूजौ पांननिषांन ।
साहिजहां करिहै मया भावत दोऊ प्रान ॥ ७ ॥
जहांगीर प्रिथी के पाल। साहिनसाहि भए बस काल ॥
उपज्यौ सारे मेदनी माँहि। काहू कै मन कौं कल नाँहि ॥
कियौ अचानक साहि पयानौ। सकल जगत पल मै थहरानौं ॥
जेहे बड्डे राजे राने। घर आगजे सब तजि तजि थाने ॥
तिहिं छिन दौलतषा चहुवान। रोये पाव मेर परवान ॥

॥ दोहा ॥

नीकै राख्यौ कांगरौ स्वामधर्म ज्यो माँहि ।
अलिफषान जाकौ पिता तातैं अचिरज नाँहि ॥

॥ चौपाई ॥

एक वार सव मिले पहारी। घेरौ कियौ भयौ जुध भारी ॥
कीचक धान परयौ घमासान। दौलत षांन लगाए पांनि ॥
छूटे पाइ पहारी लाजे। अपने अपने घर कौ भाजे ॥

:o: :o: :o:

साहिजहां सुनि येहु भाष्यै। गाढे पाइ भलै गढ राष्यै ॥

॥ दोहा ॥

इनकौ दादौ क्यामषां मार्‌यौ पेरो साहि ।
दौलतषां कौं वावनी दै करिहौं समताहि ॥

:o: :o: :o:

संमत् सोलह सै पच्यासी। मन सागर ते रंभा निकासी ॥
प्रथम पंचमी सावन मास। कीन वरिया पुहुप हुलास ॥

अंत— ॥ चौपाई ॥

करनहार समरथ गुसाईं। कैसी कैसी जोर मिलाई ॥
सुपिया किए महा दुखियारे। आस निरास पुजावत हारे ॥

काहू सों करिहैं उपगार। जग में जीतव ताहि विचार॥
जातें कछु उपगार न नये। यहू आय येहू गये॥
इछ्या तिह पुरवै करतार। जातें ह्वै आवै उपगार॥

॥ दोहा ॥

कोऊ थिर नाहिन रहै जो उपज्यों संसार।
अमर रहत हैं जगत मे "जान" सुजन उपगार॥
नाव धर्यौ वरिषा पुहुप सुनि रीझत अलि प्रान।
सन सहस सैंतीस म कथा कथी यह जान॥
:o: :o: :o.

॥ दोहा ॥

सतरहि सै जु अठहंतरै कातग सतमी जान।
फतेहचद सुदि मैं लिपी ताराचद सुत मान॥

कथा पुहुप वरिपा सपूरन भई दसतपत फतेहचद पा ताराचद सुत ढोटयानीय॥ १७७८ मिती कातग सुदी ७ सोमवार॥ चापाई॥ १७२॥ दोहा॥ १७४॥ श्री श्री श्री

विषय—श्रीनगर (काश्मीर) का राजा भोपाल चहुवान बडा वीर और प्रतापशाली था। बहुत यत्नो के पश्चात् उसका पुरुषोत्तम नाम का पुत्र प्राप्त हुआ, जो सर्वगुण-सपन्न एव परोपकारी भावनाओ से युक्त था। एक दिन राजकुमार ने एक विचित्र प्रकार के पक्षी को देखा जिसके पर फडफडाने से अनेक प्रकार के पुष्पो का सुगध फैल रही थी। उसने अन्न का दाना दिखाकर पक्षी को पकडना चाहा, पर विफल रहा। पक्षी ने भी राजकुमार से कहा कि वह अन्न द्वारा नही पकडा जा सकता। परतु पश्चात् किसी प्रकार वह पीजरे म आ गया। वह पक्षी खिन्न और उदास रहा करता था। जिससे राजकुमार को भी अति चिंता रहने लगी। राजकुमार उससे बातचीत करना चाहता पर वह अधिक नही बोला करता। अत मे राजकुमार के प्रेम एव शील और सौजन्य से प्रसन्न होकर पक्षी ने अपनी कथा इस प्रकार आरभ की —

'राजकुमार! प्रेमपुरी नगरी का राजा जगमन है। उसकी पाँच रानियाँ हैं जिनमें रूपनिधि अद्वितीय सुदरी है। यही मेरे माता पिता है। मेरा नाम सुकेसी है। रतनपुरी का राजा उदय सिंह नाम से विदित है जिसकी रानी का नाम दुर्गावती और पुत्र का सुरपति है। राजकुमार सुरपति का प्रेम किसी प्रकार मुझसे हो गया। मेरा पाना असभव देखकर यद्यपि माता पिता एव मित्रो ने बहुत कुछ समझाया कि वह प्रेम हठ छोड दे तथापि वह नहीं माना। उसने खाना पीना छोड दिया और चौसठ घडी आठों पहर मेरे ही ध्यान मे लीन रहने लगा। एक दिन पँवार जाति के अपने घनिष्ठ मित्र को लेकर मेरी खोज मे निकल पडा। चलते-चलते मार्ग मे बडा विस्तृत समुद्र पडा जिसको पार करने मे दोनो मित्र एक दूसरे से बिछुड गए। राजकुमार को इससे बडी वेदना हुई। किसी प्रकार समुद्र पार किया तो बडे-बडे पर्वताच्छादित और विस्तृत कातार वनो से युक्त देश मे जा पहुँचा। आगे चलने पर क्या देखता है कि सुसज्जित शय्या पर एक अत्यत रूपवती तरुणी सो रही है। उसने समझा कि वह सुकेसी है। अत वह शय्या पर आकर बैठ गया और उसके घूघट को खोलने लगा। स्त्री जग उठी और शय्या पर पुरुष को बैठे देखकर बहुत रुष्ट हुई। उसने राजकुमार को डाटा और भाग जाने के लिए कहा। पर राजकुमार स्थिर भाव से बैठा ही रहा। उसने उसका नाम पूछा। तरुणी ने उत्तर दिया कि उसका नाम निर्मलदे है। राजकुमार सुनते ही उठ खडा हुआ और आगे चलने लगा। तरुणी राजकुमार के इस व्यवहार से चकित हो गई और उसने परिचय पूछने लगी। राजकुमार ने यह सोच कर कि सभवत सुकेसी के सबध मे कुछ पता चल जाय, अपना परिचय दिया और फिर उसका भी परिचय पूछा। निर्मलदे ने कहा, 'मधुपुर

नगर के राजा चतुरभुज मेरे पिता हैं। माता का नाम गिरिजा है। हम दो वहिनें हैं। मेरा नाम निर्मलदे है और दूसरी का, जो मुझसे छोटी है, परिमलदे है। मुझे यहाँ एक दानव उठा लाया है, जो मुझे किसी प्रकार नहीं छोड़ता।" राजकुमार का प्रेम के लिए घोर संकट उठाते देख उसको बड़ी दया आई। उसने मेरा पता दिया और कहा कि परिमलदे, जो उसकी वहिन है, आपको उससे मिलने में सहायता करेगी। राजकुमार मेरा पता पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने दानव को मार कर निर्मलदे को विपत्ति से छुड़ा दिया और उसे वहिन के सदृश मानने लगा। निर्मलदे भी मुझसे भेंट कराने का वचन देकर राजकुमार को अपने घर ले गई। उसके माता पिता ने राजकुमार का वहुत सत्कार किया और उसके कृतज्ञ हुए। निर्मलदे की सहायता से उपवन में राजकुमार और मेरे मिलन का प्रबंध किया गया। उपवन को जाते समय राजकुमार का विछुड़ा हुआ मित्र भी मिल गया। दोनों वहुत प्रसन्न हुए। कुछ देर पश्चात् मुझसे भेंट हुई। हम दोनों प्रेमी रात भर उपवन में ही सोते रहे। प्रातःकाल मेरी माता मुझे खोजती-खोजती उपवन में पहुँची। एक मनुष्य के साथ मुझे सोती हुई पाकर वहुत क्रुद्ध हुई। उसने राजकुमार को उसके देश में पहुँचा दिया और मुझे मंत्र द्वारा पक्षी वना दिया। राजकुमार की जब नींद खुली तो मुझे न पाकर वहुत व्याकुल हुआ। उधर राजा ने उस पर कड़ा पहरा विठा दिया जिससे वह फिर न भाग सके। परंतु रात को खिड़की द्वारा नदी में कूद कर राजकुमार मेरी खोज में घर से भाग निकला। मैं भी माता के दुर्व्यवहार से घर से निकल पड़ी और राजकुमार सुरपति को खोजने लगी। खोजते खोजते दस वर्ष हो गए पर राजकुमार का कोई पता न चला। अतः निराश होकर तथा आपके शील, सौजन्य और गुणों को देखकर इस आशा से कि कुछ शांति मिल जाय आपके पास आई।

राजकुमार पुरुषोत्तम पक्षी की बात सुनकर अत्यंत दुखी हुआ। उसने उसको वहिन तुल्य माना और वचन दिया कि जब तक उसका मिलन राजकुमार सुरपति से न हो जायगा, वह शांति से न बैठेगा। कुछ दिन विचार करने के उपरांत वह पक्षी को पींजरे में लेकर राजकुमार सुरपति की खोज में निकला। अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करता हुआ दो वर्षों में निर्मलदे के पास पहुँचा। उसके द्वारा रूपनिधि को सुकेशी का पता दिया गया। वह पुत्री को पाकर अत्यंत प्रसन्न हुई और उसे फिर वास्तविक रूप में कर दिया। पश्चात् राजकुमार, निर्मलदे और उसके माता पिता के कहने पर सुकेशी का विवाह राजकुमार सुरपति से करना निश्चित किया गया। परंतु राजकुमार सुरपति का तो कोई पता न था। सौभाग्यवश वह भी एक दिन निर्मलदे के घर आ गया। सबको प्रसन्नता हुई और सुकेशी से उसका विवाह कर दिया गया। वह राजकुमार पुरुषोत्तम का उपकृत हुआ और अपने को उसका चिर सेवक माना। कुछ दिन वीतने पर सुरपति की सहायता से राजकुमार पुरुषोत्तम का निर्मलदे से और महानंद सुरपति के मित्र, का परिमलदे से विवाह हो गया। इस प्रकार सब आनंद से रहने लगे। अंत में दोनों राजकुमार और मित्र महानंद स्त्रियों सहित अपने देश को वापस आ जाते हैं। यह कथा मझन की 'मधुमालती' से मिलती है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६८५ एवं हि० सन् १०३७ है। लिपिकाल संवत् १७७८ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए 'रत्नावती' का विवरण-पत्र।

प्रस्तुत ग्रंथ में इन्होंने दौलत खाँ चौहान का वर्णन किया है, जो इस प्रकार है —

"शाह के अचानक पयान करने से वडे-वडे राजे महाराजे अपने अपने थाने छोड़कर घर आ गए। उस समय दौलत खाँ चौहान ने ही मेरु सदृश अडिग होकर संग्राम में पाँव रोपा। उसने काँगरो को वचा दिया। आलिफ खाँ जिसका पिता है उसके लिए यह आश्चर्य की वात नहीं।

"इस दौलत खाँ पर एक बार नव पहाड़ी राजाओं ने मिलकर आक्रमण किया। बड़ा घोर संग्राम हुआ। खून की नदियाँ बह गईं, पर दौलत खाँ पराजित न हुआ। उल्टे पहाड़ी राजाओं के पाँव उखड़ गए और वे भाग खड़े हुए। इस पर जहाँगीर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और उसने कहा "इनका (दौलत खाँ का) दादा बयाम खाँ था जिसने शेर नाहर को मारा था। अत इसको बावनी देकर उसके तुल्य करूँगा।"

ग्रंथ के ये ऐतिहासिक अंश विवरण पत्र में दे दिए गए हैं।

संख्या १२६च कथा कवलावती की, रचयिता—जान कवि, स्थान फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति प्रतिपृष्ठ—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०२३, संवत् १६७० वि०, लिपिकाल—सं० १८०८, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा कवलावती की कवि जान कृत।

॥ चौपाई ॥ १ ॥

पर्थम निमसकार अविनासी। जिन विरही औ रचे विलासी॥
रचे दोइ दीया उजियारे। ते विन तेल न होहि अंध्यारे॥
.०. ० ०.
अवहि साहि की असतुति करिहू। रसन धाग जन मुक्ता भरिहू॥
जहांगीर जानहु तिह नाव। आन फिरी जाकी सब ठाव॥
वावर वंस अंस अकवर को। उतर्यो सीम रूप धर नर को॥
:०: .०. ०.
पीर सेष महमद है चिसती। वदन नूरी भाषतु हौं दिसती॥
रहन ठाव जानहु तिह हासी। देषत दरद चित की नासी॥
नाव धर्यो याही तें हासी। ददन हरन दाता सुष रासी॥
रिध सिध नौ निध संपूरन। दुष हरवे को उन समपूरन॥
पीर हरन को वंसै पीरन। पीरहि देहि न सेवग पीरन॥
क्यों न होइ पाछें जिहि कुतव। चहू कूट प्रगट जिन रुतव॥

॥ दोहा ॥

पहिलें कुतव जमाल है दूसर है बुरहान।
नाव जाहि औषद परम लये चित दुर रान॥
तीसर जानहु नूरदी चतुर मनवर हेर।
सभ जग मैं जिनकी फिरी कुतुवपनै की रेर॥
:०: :०: .०.

मध्य—

उकति विसेष ताचु कै जानहु। भापा जो आवै सो मानहु॥
उकति भली भाषा मैं आवै। तौ यह सौना सुगंध बढ़ावै॥
देषि देषि मैं दरव परायौ। बहुत बहुत मन ना ललचायौ॥
पै जहा मारग नयो न पायौ। तहा पुरातन ही मग धायौ॥
मथन ग्रंथ करिहैं जो कोई। याकी उकति न कहिये सोई॥

॥ दोहा ॥

चूर सासतर काढि जो करै सु उकतिन ताहि।
और काविहू फिरि कहै तऊ न दूषनं आहि॥

ससंकृत ग्वारेर मिलायी । मघ विलाप कै साज वजायी ॥
यहु कूवलवामैं कठिनाई । तातैं कहियहु जुगति जनाइ ॥

अत—

॥ सवइया ॥ ७ ॥

करता की रचना न रसना कहि सकै ॥ कोऊ कैसे भेदु पावै को दिखावै पौन गहि कोऊ कहै जल मूठि वांधु तौ अरथै वकै ॥ सपने के चीन्ह काहू कै न प्रगट होहिं नींद मद पीयें कोऊ कहो जागि क्यौं छकै ॥ कहै कवि जान वाकी अविगति कैसे लहै गहरी जमनका है आउ नैन क्यौं तकै ॥ जे तौ पचि पचि रचि रचि कोऊ कह्यौ चाहै ॥

॥ दोहा ॥

सव कविन सौं वीनती करी जान सतभाइ ।
सुमिल अमल तैं जिनि सलहु लीजहु अमिल मिलाइ ॥

॥ दोहा ॥

द्वादस दिन मैं जान कवि करी सुमिर जगदीश ॥
तवहि संम्र यौं कहत है येक सहस तेईस ॥

इति कथा कवलावती की सपूरन भइ सवत् सतरह सौ ॥ १७७८ मिती असाढ वदी १४॥ दसतपत फतेहचंद की ॥

विषय—रूप नगरी के राजा का नाम रूपराई था। उसकी एक सहस्र स्त्रियाँ थी जिनमे रूपरेख अधिक सुदरी होने के कारण पटरानी हुई। राजकुमार इदवदन उनका पुत्र था। सर्वगुण सपन्न होने के साथ ही साथ वह अप्रतिम सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध था। जव तरुण हुआ तो राजा ने उसके विवाह करने की इच्छा से ब्राह्मणो को योग्य कन्या ढूंढने के निमित्त देश, देशातरो मे भेजा। इसका पता लगने पर राजकुमार ने ब्राह्मणो को वुलाकर कहा कि वह उसी राजकुमारी से विवाह करेगा जो उसके समान रूपवती होगी। इसलिए जो ऐसी रूपवती निकले उसका चित्र आना चाहिए। ब्राह्मण राजा के पास गए और उनसे राजकुमार की इच्छा प्रकट की। राजा ने सहमत होकर ब्राह्मणो को वैसी ही आज्ञा दी। ब्राह्मणो के साथ चित्रकार भेजे गए जो अपने साथ हजारो चित्र लेकर राजकुमार के पास लौटे। परतु राजकुमार को उन चित्रो मे से कोई भी न जँचा। अत विवाह की चर्चा वद हो गई। एक दिन राजकुमार के हाथ पर एक तोता अकस्मात् आकर वैठा। राजकुमार को वडा आश्चर्य हुआ। उसने तोते से कारण पूछा। तोते ने कारण वताने के लिए अपनी कथा इस प्रकार वर्णन की :—

मदनपुरी नगरी मे मदनराई राजा अपनी रानी मदनकला के साथ सुखपूर्वक राज्य करता है। उसके एक ही पुत्री है जो कवलावत नाम से प्रसिद्ध है। ससार मे उसके समान सुदर स्त्री और कोई नहीं। उसके तरुण हो जाने पर राजा-रानी ने उसके विवाह का प्रवध करना चाहा, पर उसने यह इच्छा प्रकट की कि वह उसी राजकुमार के साथ विवाह करेगी जो रूप मे उसके ही तुल्य हो। अत पहले चित्र मगवाए जायँ, जिसका चित्र उसको रुचे उसी के साथ उसका विवाह किया जाय। राजा ने ऐसा ही करने को कहा। चित्रकारो द्वारा सहस्रो चित्र राजकुमारी के पास लाए गए, पर उसको एक भी न जँचा। अत मे उसने मुझसे राजकुमार ढूंढने को कहा। मैं एक वार पहले सारे ससार का भ्रमण कर चुका पर उसके अनुरूप किसी को न पाया। उसने मुझसे फिर अन्य देशो मे जाने की प्रार्थना की। अत इस वार जव मैं इस नगर के ऊपर उड रहा था तो मेरी दृष्टि यकायक आपके ऊपर पड़ी। आपके

रूप सौंदर्य ने मुझे स्तंभित कर दिया। ऐसा सुंदर पुरुष संसार में मुझे कहीं देखने को नहीं मिला। बहुत देर तक एकटक होकर देखता रहा और जब आपके रूप, शील, सौन्दर्य एवं भोले स्वभाव के प्रति मुझे पूर्ण विश्वास हुआ तो आकर आपके हाथ पर बैठ गया। अतः हे राजकुमार, तुम निस्संदेह उस राजकुमारी के पति होने योग्य हो। उसको पाकर तुम अपने को धन्य समझोगे और वह भी तुम्हें पति रूप में पाकर अपने जन्म को सफल समझेगी। अब देर न कीजिए और अपनी सम्मति देकर मुझे विदा कीजिए। राजकुमार का हृदय कमल खिल उठा। उसे अपनी मनोवाञ्छित इच्छा पूर्ण होती हुई दिखाई देने लगी। वह कवलावत के प्रेम में लीन रहने लगा। फिर भी संदेह की पूर्ण निवृत्ति के लिए उसने तोते से कवलावत का चित्र दिखलाने के लिए कहा। अतः एक चित्रकार तोते के साथ कवलावत का चित्र लाने के लिए भेजा गया। कवलावत राजकुमारी भी राजकुमार इंदवदन के संबंध में सुनकर बहुत प्रसन्न हुई। उसने अपना चित्र राजकुमार के पास भिजवाया और उसका चित्र अपने पास मँगवाया। दोनों एक-दूसरे के चित्र देखकर बहुत प्रसन्न हुए। दोनों ने अपने-अपने माता-पिताओं द्वारा विवाह का आयोजन कराया। अतः शीघ्र ही राजकुमार इंदवदन और राजकुमारी कवलावत का विवाह हो गया। एक रात जब वे दोनों सो रहे थे तो इंद्र देवता को [illegible] को देखने की इच्छा हुई। अतः एक देव इंदवदन और कवलावत को ही श्रेष्ठ जान [illegible] कर ले गया। इंद्र की सारी सभा प्रसन्न हो गई। दूसरे दिन दोनों को जहाँ का तहाँ पहुँचाना गया। परंतु जो देव उन्हें पहुँचा गया था। वह कवलावत को ले भागा। राजकुमार कवलावत के वियोग में जलने लगा। विवाह का उत्सव फीका हो गया और सब लोग विलाप करते हुए अपने अपने घर चले गए। इंदवदन राजकुमारी की खोज में निकल पड़ा। अनेक कठिनाइयाँ पार करके एक गरुड की सहायता द्वारा गुरु गोरख नाथ से गुटिका प्राप्त की। उस गुटिका के प्रभाव से उसने देव को मारा और कवलावत को लेकर मदनपुरी गया। वहाँ कुछ दिन सुखपूर्वक रहने के पश्चात् राजकुमार कवलावत को लेकर [illegible] के लिए रवाना हुआ। मार्ग में बलसागर नाम के राजा से युद्ध हुआ जो कवलावत को लेना चाहता था परंतु वह युद्ध में मारा गया। वहाँ से आगे बढ़ने पर विशाल समुद्र मिला जिसे पार करने में दोनों बिछुड़ गए। राजकुमारी तो किसी प्रकार रूपनगर अपने पतिगृह पहुँच गई पर राजकुमार ऐसे विकट देश में पहुँचा जहाँ बडे बडे गगन चुंबी पर्वत घोर निर्जन वनों से आच्छादित थे। चलते-चलते कुछ परियों से भेंट हुई जो उस पर आसक्त हो गईं। राजकुमार के विरोध करने पर उन्हें बडा क्षोभ हुआ। और उसको पर्वतों के ऐसे खोह में डाल दिया जहाँ से वह कभी भी बाहर नहीं निकल सकता था। भाग्यवश कवलावत का तोता राजकुमार को ढूंढता हुआ वहाँ पहुँचा। उसकी सहायता से उस गरुड पक्षी का पता लगा जिसने गोरखनाथ से गुटिका प्राप्त करने में राजकुमार की सहायता की थी। राजकुमार से वह गुटिका समुद्र पार करते समय खो गई थी। वह किसी प्रकार फिर गरुड के पास पहुँचा जिसने राजकुमार को अपने देश में पहुँचा दिया। इस प्रकार सत्य प्रेम की विजय हुई। दोनों प्रेमी मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और आनंदपूर्वक रहने लगे। राजा और रानी यह समाचार पाकर फूले न समाए।

रचनाकाल

द्वादस दिन मे जान कवि करी सुमिर जगदीन।
तबही संन्न थी कहत है येक सहस तेईन॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल हिजरी सन् में [illegible] है। लि० काल [illegible] दिया है। रचना कुल बारह दिन में रची गई।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विशेष वृत्त के लिए देखिए 'जानकवि' का विवरण पत्र।

संख्या १२६छ. १—बारहमासा, २—सवैया या झूलना, ३—बरवा, ४—षट् ऋतु बरवा वर्णन, ५—ग्रंथ पवगम, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—५, आकार—८३/४ × ६१/४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७६, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७८, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—अथ बारह मासा कवि जान की सवइया ॥

प्रथम निमसकार अविनासी निराकर जगदीस निरंजन।
जो चाहै सो करै अगोचर है समरथ गढ़नै औ भजन।
दूजै नंवी मुंहमद सुमिरूं अरिदल मलन अगजन गंजन।
जान कहै तिह सव जग सूझै जिहि चषि नवीपीत को अंजन।

:o: :o: :o:

लागि अषाढ़ आढ की कीनी दाढ़न पावहि हाटिन फेरैं।
छीन करी घन दादुर चातिग पिक केकी को था अति नेरैं।
द्वादस मास नहातो कीनी विरह वियोग मदन रहे घेरैं।
जान भनै गोपी कहैं ऊधो अवहि भलै जीवहि हरि हेरैं॥ १४॥
द्वादस मास नंद को नदन विसरूपी को विरद निवाह्यौ।
पाछै नाव दयाल कहावत ताको ओर नैंन भरि चाह्यौ।
नैंक सुमिस्ट नीर सौं कीनौ सीतल अंग अनंग जु दाह्यौ।
जान भनै हरि भेंटै गोपी दुप वहुधै विसाह्यौ॥

बारहमासा संपूरन भयौ संमत् १७७८ असुदी ३

सवइया या झूलनाहू कवि जान कृते

कानि करो कलग्यान सषी द्रिग देख्यौ चहैं मन लाज मरैं।
जौ हौं देषने जाऊं लजाऊं नहा जौन जांव तौ नाहिनैं नीद परैं।
दुचिताइ भई सुधि वुधि गई नई प्रीती तेरी मेरो अग जरैं।
कोउ मित को है जुदुराइ लावैं काहू ना लषावैं मेरी चित हरैं॥
वांसुरी कान्ह वजाइ उठ्यौ काहू कानि धरी काहु कानि धरी।
जिन कानि करी नही कानिकरी जिन कानिकरी नही कानि करी।
जिन चाह्यौ नही तिन चाह्यौ नही जिन चाह्यौ सुचाहि कै जार परी।
डीठ नाहि लगी तौ न डीठ लगी डीठ लागि गये टिठि लागी परी॥ १॥

मध्य— ॥ ग्रंथ वरवा कवि जान कृते ॥

अलह महंमद नाम जपहु दिन रात।
कहत जान ज्यौ सुधरैं सिगरी वात॥
अरे मोरे वालम कहा निठुरई कीन।
सुपने मैं हूं कवहूं दरस न दीन॥
हौं तो तुम पर देहौं वलि वलि प्रान।
तुम कस करत जु देत न दरसन दान॥ ३॥
वात मटपटी चली अटपटी लाल।
पग लटपटी भई चटपटी वाल॥ ४॥
वलिमा कै संग पल मैं रैंन विहाइ।
पेलत हंसत जाति न जानी जाइ॥ ५॥

:o: :o: :o:

गाज गगनुवा घनुआ पिय पै जाइ ।
बूंदं आंसू टारि मुरति हम घाइ ॥ ६६ ॥
पलकं पलक नींद रही द्रिग छाइ ।
नैसक पौढहु लाल पलौटौं पाइ ॥ ७० ॥

॥ ग्रंथ वरवा सपूरन भयौ ॥

॥ ग्रथ षटरितु वरवा वध ॥

पिय विनु सावन भादौं लागे आइ ।
घन वरसै अरु दामिनि चमक टराइ ॥ २ ॥
रैन पपीहा दादुर फोरहि कान ।
दई दई करि मोकौं होत विहान ॥ ३ ॥

:o: .o: :o:

मानति हौं अपनें वलिमा सौं भोग ।
औषध पाये रह्यौ न एदकं रोग ॥ २५ ॥
मेरीये सुवास पर लुवध्यौ आइ ।
हौ केतुक पिय मधुकर छाडि न जाइ ॥

॥ इति षटरित वरवा वध सपूरन ॥

अत— ॥ग्रंथ पवगम तामै वरवा हू निकसै षटरित वर्नन ॥

षट रितु वरनी ज्ञान पवगम छद मैं ।
नयौ वनायौ भेदु सुनौ आनद मैं ॥ १ ॥
अत पदै कौ एक वरन जौ उारिये ।
तौ वरवा सव ह्वै हैं भलो विचारिये ॥ २२ ॥
पावसु की रितु कठिनि सही नहिं जाति री ।
घन गरजै अरु वरसै सिगरी राति री ॥ ३ ॥

:o: .o: :o.

ग्रीषम की लू ताती जारति गात है ।
सीरौ कियें उपाइ न अग सिरात है ॥
जौ वियोगनी घर उसीर कै आइहै ।
लागेउ उस्न उसास तंत जरि जाइहै ॥ १० ॥

॥ ग्रथ पवगम सपूरन ॥

विषय—विरह शृगार का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत छोटी छोटी रचनाओं मे रचना काल का उल्लेख नहीं है । लिपिकाल केवल वारह मासा मे सवत् १७७८ दिया है । रचयिता का नाम 'जान' है । विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

साहित्यिक दृष्टि से प्रस्तुत रचनाएँ उच्च कोटि की हैं । "पवगम छद' रचना पवगम छद मे रची गई है । यह छद वरवा के प्रत्येक पद के अत मे दो मात्राएँ (एक गुरु वर्ण) जोड़कर वनाया गया है । कवि कहता है कि यदि यह दो मात्रा निकाल दी जावें तो वरवा छद ज्यो का त्यो वना रहता है । और उसका भी रसास्वादन कर सकते हैं ।

१—वारह मासा मे १५ सवइया हैं ।
२—सवइया या झूलना मे २ सवइया हैं ।

३—वरवा मे ७० वरवे हैं।
४—षट्ऋतु वरवा वध मे २१ वरवे हैं।
५—पवगम छद मे १० पवगम हैं।

संख्या १२६ज. कथा छविसागर की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०६ वि०, लिपिकाल—स०१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा छविसागर की ॥ १ चौपाई ॥
सुमिरूं आदि नाम करतार। इछ्या सकल पुजावंनहार।
जो हित सौं इक चित सौं धावै। जो जिय चाहे सोई पावै॥

॥ चौपाई ॥

राजा एक नाम तिहि राम। रामपुरी ताकौ विस्राम॥
ताकै येक सुता अभिराम। छवि सागर है ताकौ नाम॥
अद्भुत रूप दयौ करतार। पुनि गुन पारावार अपार॥
जो देषत वा मुष की जोति। यहै कहत मानस ना होति॥
कै यहु चंद्र परति को जाई। कै यहु रवि ससि मिलि प्रगटाई॥
इंद्र पुरी की अछरा आई। धार्‌यौ मानस रूप निकाई॥
सेत बसन मै तन की काति। पानी मैं वडवानल भाति॥
गहनौ पहरति करत सिंगार। मानहु अगनि निकारति झार॥
याकौ रूप देषि ललिचाइ। ताकौ डारै काति जराइ॥
वाकी वोर तकै इक घरी। गरिजै ज्यो वोरे की डरी॥

॥ दोहा ॥

बौरानो ह्वै आइहै जो छवि सागर संग॥
सो ऐसें जरि जातु है जैसें दीप पतंग॥ ३॥

अत—
तव घरमै आयो गुन आगर। व्याह दई वाकौं छविसागर॥
मन की इछ्या पूरी भई। काम कलोल करत निस गई॥
वहुरौं लै आपनै घर आयौ। मात तात कौं सुष उपजायौ॥
सुलप कथा यहु "जान" वषांनी। छविसागर की आहि कहानी॥

॥ दोहा ॥

संवत सत्रह सै भयौ पुनि तापर षट और।
करी कहानी जान कवि सुनहु रिसिक सिरमौर॥

इति कथा छविसागर की संपूरन भई॥ संवत्॥ १७७८ कातिग सुदी ९ बुधवार॥

विषय—रामपुरी के राजा राम की पुत्री का नाम छविसागर था। वह अद्वितीय सुदरी थी। उसने अपने विवाह के सवध मे प्रतिज्ञा की कि जो पुरुष उसके चार प्रश्नो को ठीक ठीक हल कर देगा उसी के साथ वह विवाह करेगी। जो न कर सकेगा, उसका मस्तक काटकर कोट के उपर टाँग दिया जाएगा। उसके चार प्रश्न इस प्रकार थे :—

१—सुजात हो तो नाम से ही प्रकट हो जाय ।
२—असम लाह की मूर्ति गिरा दे ।
३—ऐसी दौड लगावे जो गढ की पार प्रकट हो जाय ।
४—इस प्रश्न में उसके विवेक परीक्षा के प्रश्न थे ।

बहुत से राजकुमार आए, पर कोई उन प्रश्नों का उत्तर न दे सका । अत सबके सिर काट लिए गए । एक बार जैतपुरी के राजा जैन का पुत्र गुनसागर छविसागर के देश की सीमा पर आखेट करता हुआ पहुंचा । उसने लोगों से छविसागर के विषय में सुना तो वह भी उसे पाने की इच्छा करने लगा । जब छविसागर को देखा तो सब सुध-बुध भूल गया । परन्तु राजकुमार कुछ बुद्धिमान था, अत उसने चतुराई से काम किया । उसको विश्वास हो गया कि छविसागर कोई अप्सरा है और तन्त्र मन्त्र जानती है । अत उसने भी तन्त्र मन्त्र सीखने का प्रयत्न किया । बहुत से व्यक्ति तन्त्र मन्त्र जानने वालो को ढूंढ लाने के लिए भेजे गए । बहुत दिनों के पश्चात् इस विद्या मे पारगत एक विद्वान मिल गया । उसने राजकुमार को तन्त्र मन्त्र विद्या के सब रहस्य बतला दिए । पश्चात् राजकुमार छविसागर के पास गया और उसकी आज्ञा से तीन प्रश्न शीघ्र ही हल कर दिए । चौथे प्रश्न का उत्तर राजा के सामने सभा मे उपस्थित होकर दिया गया । छविसागर बहुत प्रसन्न हुई और उसने राजकुमार से विवाह कर लिया । दोनों सुख-पूर्वक रहने लगे ।

रचनाकाल

सवत सत्रह सै भयो पुनि तापर षट और ।
करी कहानी जान कवि सुनहु रसिक सिरमौर ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७०६ है । लिपिकाल सवत् १७७८ दिया है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

सख्या १२६. ज कथा कामलता की, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देशी, पत्र—५, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६७८ वि०, लिपिकाल—स० १७७८ वि०, प्राप्ति-स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि— ॥ कथा कामलता की चौपाई ॥ ॥१॥

पर्थम सुमिरत हों करतार । जिन चितरचो यह सब संसार ॥
कैसे कैसे चित्र बनाये । देषत चित्र चितेरा पाये ॥
अनगन चित्रे चित्र अपार । देषो चित्रकार अधिकार ॥
:o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

सो विचित्र "कवि जान" कहि नबी नाव जिहि चाह ।
चित्र मुहमद आरसी चित्रकार परसाह ॥ २ ॥

॥ चौपई ॥

कहत जान चित मै यो आई । चित्री कथा सुलप यह पाई ॥
चित्रकार चित बुधि हो जैसी । मै यह चित्र दिषाई तैसी ॥
यह लघु चित्र कियो है जान । चितत नाहि लटे ज्यो पान ॥
:o: :o: :o:

राजा एक सुन्यौ हम कानन । रसना लागी ताहि वषानन ॥
कहित ताकौ नाव रसाल । सेव करहि निस दिन भोपाल ॥
आपु न रहत राव जिहि ठाव । हंसपुरी है ताकौ नाव ॥
सेवत चेरी चेर अनेक । वनिता सरस येक ते येक ॥

:o: :o: :o:

अंत— ॥ चौपाई ॥

काम कलोल करत दिन रैंन । पल पल छिन छिन बीतत चैंन ॥
नेकु न रही विरह की व्याध । औषध पायौ भई समाध ॥
हसपुरी पुनि सुदर गाव । राइ दुहाइ दोनौं ठाव ॥
जौ लौं जिये मेदनी माहि । पलक लगन हूँ बिछुरे नाहि ॥
सावधान है कै जे धावे । प्रेम प्रसाद साच फल पावे ॥

॥ दोहा ॥

सोलह सै अठहंतर कथा कथी कवि जान ।
घोर विघोर भूलि जिन अनवन वाचहु वान ॥

इत कामलता की कथा सपूरन भई सवत १७७८ मिती कातग सुदी ६ विसपति बार बसतपत फतेहचंद ताराचद का डीडवानिया ॥

पोथी फतेह चद कै घर की ॥

विषय—हस पुरी के राजा का नाम रसाल था । उसका प्रधान वुधिवत सव मन्त्रियो मे श्रेष्ठ, अनेक विद्याओ मे पारगत और चित्रकारी मे भी प्रवीण था । मत्री एक दिन क्या देखता है कि इधर राजा सो रहा है, महल के ऊपर वच्चे खेल रहे है और सूर्य अस्त हो रहा, उधर महल के ऊपरी भाग मे आग लग रही है । उसको वडी चिता हुई कि राजा को किस प्रकार जगाया जाय । जव कुछ उपाय न सूझा तो स्वय जाकर जगाने लगा । परतु ज्योही राजा जगा वह मत्री को अपशब्द कहने लगा और मारने के लिए उसके पीछे तलवार लेकर दौड़ पडा । मत्री प्राण वचाकर भागा । कुटुवीजनो ने देखा कि राजा मत्री को मारना चाहता है तो वीच मे आकर खडे हो गए और उससे कारण पूछने लगे । राजा ने कहा, जव मैं सुख निद्रा मे सो रहा था तव स्वप्न मे एक अनिंद्य सुदरी के साथ मेरा साक्षात्कार हुआ । वह मुझसे प्रेम करना चाहती थी और उससे मिलन सन्निकट था कि इसने मुझे जगा दिया । आह ! मुझसे एक ऐसा रत्न छीन लिया गया जो कही भी दुष्प्राप्य है । इस मत्री ने मेरा सुख भग किया, अत. यह जीवित रखने योग्य नही । मत्री यह सव सुन रहा था । उसने राजा से कहा कि यदि उसको प्राण भिक्षा मिल जाय तो वह उस सुदरी का चित्र राजा को वनाकर देगा । राजा इस पर सहमत हो गया और मत्री को क्षमा कर दिया । मत्री ने राजा को चिह्न वताने के अनुसार सुदरी का सुदर चित्र बनाकर दे दिया । चित्र देखकर राजा वहुत प्रसन्न हुआ । परतु अव उसको वियोग सताने लगा और चित्र को देख-देखकर रोने लगा । उसे विश्वास हो गया था कि उस प्रकार की स्त्री कही है । अत चौराहो पर मदिर वनवाया गया और चित्र को वहाँ रखा गया । मार्ग से आने-जाने वाले राजा को चित्र के लिए रोते देखने लगे । एक व्यक्ति ने जव चित्र देखा तो राजा से कहा कि इस चित्र के अनुरूप एक स्त्री है । वह सुंदरी पुरी की रानी है । उसके माता पिता मर गए है । उसने विवाह करना तो दूर रहा पुरुष का मुंह देखना भी छोड दिया । इसका कारण यह है कि एक दिन उसने महल की खिडकी से वाहर देखा कि उपवन मे आग लगी है और वच्चा सहित एक मोर का जोडा अग्नि मे फँस गया है । मोर मोरनी और वच्चे को छोड देता है और अपनी जान वचाकर भाग जाता है । इससे रानी को पुरुषो से वडी घृणा हो गई ।

राजा मन्त्री के साथ सुदरी पुरी गया । मन्त्री राजा को एक स्थान पर [illegible] और अपने को सर्वोत्कृष्ट चित्रकार के रूप मे घोषित कर रानी के पास गया । रानी ने [illegible] उत्तम चित्र बनाने के लिए कहा । मन्त्री बुद्धिमान तो था ही, चित्र बनाने के लिए [illegible] उसने यह दर्शाया कि हिरन और हिरनी अपने एक बच्चे के साथ नदी पार कर रहे है । [illegible] आगे है, तब बच्चा है और पीछे हिरन । हिरनी के थोडा आगे बढ जाने पर बच्चा और [illegible] बाढ मे फँस जाते है । हिरनी प्राण बचाकर भाग जाती है और हिरन बच्चा [illegible] है । राजा इस दृश्य को देखता रहता है । अत वह स्त्री जाति से घृणा करने लगता है । मन्त्री ने जब इस प्रकार चित्र का अर्थ बतलाया तो रानी को बडा आश्चर्य हुआ । [illegible] को अपने ही विचारो का पाया । साथ ही राजा के रूप पर भी आसक्त हो गई । [illegible] बुद्धिमान समझ कर उससे अपना भेद कह दिया । मन्त्री ने क्या चाहिए था [illegible] राजा से उसकी भेंट करा दी । राजा और रानी मिलकर बडे प्रसन्न होते है [illegible] प्रतिज्ञाओ को भग कर देते है । अत मे दोनो का विवाह हो जाता है । और वे सुखपूर्वक [illegible] लगते है ।

रचनाकाल

सोलह सै अठहत्तर कथा कथी कवि जान ।
पोर विपोर भूलि जिन अनवन दाचहु बान ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत्—१६७८ तथा लिपिकाल सवत् १[illegible] है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । इनके विषय मे देखिए "रतनावली" का विवरण-पत्र ।

सख्या १२६ञा कथा छीता की, रचयिता—जान कवि निवास स्थान—[illegible], (जयपुर, राजस्थान), कागज—पुराना देशी, पत्र—८, आकार—[illegible] × [illegible] इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८८, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जर्ज) [illegible] लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६९३, वि०, लिपिकाल—१८८४ वि० प्राप्तिस्थान—हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—

पर्थम सुमिरौं सिरजन हार । अगम अरूप अलप करतार ।।
रचत जगत कछु भयौ न षेदु । पल मे कियौ सकल यह भेदु ।।
:o: :o: .o
सेष महंमद पीर हमारौ । अलहु पियारौ जग उजियारौ ।।
हासी मंह उनकौ बिस्राम । ज्यारत किये सरै मन काम ।।

।। दोहा ।।

ज्या कुतव जिनकै भये आजम षड़ौ पैनाम ।
तिनकौ सतति जान कहि क्यो न होइ अभिराम ।।

।। चौपाई ।।

साहिजहां सतत संसार । अमर अजर [illegible] करतार ।।
दुनिया दीन दिये विधि दोउ । यह कुल ऐसौ भयौ न कोउ ।।
दे सुभाव मैम्ह छिनिताव । उरपै राजा [illegible] राव ।।
:o: .o .o
कहि कवि जान कथा अभिराम । छीता कहियत ताकौ नाम ।।

कीनी साहिजहां कै राज । है मन मोहन कुसल समाज ॥
साहिजहां वलु कहा वषानौ । महावली सम को को आनौ ॥
अंत—
तनु मै आयौ नयौ मनोज । रचक रचक उठे उरोज ॥
नव जुवन दीनी दिपराई । भई निकाई माहि निकाई ॥
दिन दिन जोवन वाढत जात । छिन छिन होति और ही वात ॥
जोवन नौतन रूप निकास्यौ । ज्यो तिल तेल फूल को वास्यौ ॥
अति अद्भुत छवि छीता वाम । पुरे पुंननि पाई वाम ॥
छीता लगत जीय तें प्यारी । उर तें नेंकु न रापत न्यारी ॥
करहि रैन दिनु काम कलोल । गहरी प्रीति भई रंग चोल ॥
यहु रंग कवहू दूरि न होइ । येक्कै भये कहन को दोइ ॥
पातिसाहि करि है वहु प्यार । अपनै मग आने नरनार ॥

॥ दोहा ॥

पातसाहि मनसव दयौ पुनि कचन के धाम ।
कोला केल अनंद सा वीतत छीताराम ॥

॥ दोहा ॥

सोरह सै जु तिरानुवें कथा कथी यहु जांन ।
कातिग सुद छठ पूरन छीताराम वषान ॥

इति छीता की कथा सपूरन भई ॥ सवत् सतरह सै १७८४ मिति चैत वदी ५ लिपतं फतेहचद ताराचद का डीडवानाया अगरवाला । श्री

विषय—देवगिरि के राजा की पुत्री छीता परम रूपवती थी। उसके रूप की प्रशसा पच्छिम देश के राजकुमार राम तक पहुंची। राजकुमार भी वडा रूपवान था। उसका मन छीता के रूप पर उलझ गया। वह उसको प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा, पर कोई यत्न नही वन पडता था। दिन प्रतिदिन वियोग मे घुलने लगा। एक दिन कुछ साथियो के साथ ब्राह्मण का भेप वनाकर देवगिरि की ओर चल पडा। वहाँ पहुँच कर राज पुरोहित के यहां डेरा डाला। पुरोहित ने ब्राह्मण के नाते राजकुमार का आदर सत्कार किया। परतु कुछ दिन पश्चात् वात उघड गई और राजकुमार पहचान लिया गया। राजकुमार और पुरोहित के वीच मित्रता हो गई और पुरोहित राजकुमार को छीता से मिलाने का प्रयत्न करने लगा। एक दिन मदिर मे पूजा के अवसर पर राजकुमार ने छीता को देख लिया। छीता उस समय वालिका थी, अतः प्रेम की वातो से नितात अनभिज्ञ थी। राम को देख लेने पर भी उसके मन मे कोई विकार उत्पन्न नही हुआ। परतु राम दुगुने वेग से छीता की ओर आकर्षित हुआ। उसने अपने साथियो को घर भेजा और आखेट के वहाने सेना सहित आने को कहा। कुछ दिन पश्चात् सेना भी आ गई। देवगिरि के राजा को जव पता चला कि राजकुमार राम आखेट करता हुआ उसके नगर तक आया है तो उसने उसका स्वागत किया। इस अवसर पर उसको भोज दिया गया। राजकुमार को राजा-रानी दोनो ने देखा और उसके रूप की सराहना की। पश्चात् राजकुमार की और छीता के साथ विवाह की चर्चा चल पडी। राजा ने पुरोहित को वुलाकर सम्मति पूछी। पुरोहित तो पहले से ही राजकुमार राम से मिला हुआ था। उसने राजकुमार की जन्मपत्री छीता की जन्मपत्री से मिलाई। यद्यपि पुरोहित राजकुमार का मित्र था, पर जन्म पत्रियाँ स्वाभाविक रूप से मिल गईं। चिह्नो से ऐसा प्रतीत हुआ कि उनका मिलन कराने मे ईश्वर का ही हाथ था। राजा ने जव यह सुना तो उसी समय लग्नदान कर दिया। तीन वर्ष पश्चात् विवाह का मुहूर्त रखा गया, जिसका कारण छीता की

वाल्यावस्था थी।` विवाह का समय निकट आने पर देवगिरि के राजा ने महलों की सजावट करने के लिए दिल्ली मे कुछ चित्रकार बुलाए। दिल्ली का [illegible] अलाउद्दीन उसका मित्र था, जिसने राजा को चित्रकार भेज दिए। चित्रकारों ने [illegible] भवनो की चित्र द्वारा सजावट कर दी। एक दिन उन्होंने छीता को देखा और उसका चित्र बना लिया। दिल्ली लौटकर बादशाह को वह चित्र दिखाया। अलाउद्दीन छीता पर आसक्त हो गया। वह सदल बल देवगिरि गया और उस पर धावा बोल दिया। राजा से छीता को देने के लिए कहा, पर राजा ने नही माना। अत मे लडाई होने लगी। अलाउद्दीन जीत न सका। पश्चात् राघो मत्री के षड्यन्त्र से उसने छीता को देख लिया। छीता ने बादशाह को पहचान लिया। उसने उसकी खूब खबर ली और उसे भाग जाने को कहा। अलाउद्दीन भाग तो गया, पर जब सुना कि राजा ने उसके खेमे लूट लिए तो वह लौट पड़ा और छल द्वारा छीता को पकड कर दिल्ली ले गया। परन्तु छीता बादशाह के [illegible]। [illegible] राम के लिए दिन प्रतिदिन व्याकुल होने लगी। राम ने जब यह सुना तो [illegible] तथा हाथ मे वीणा लेकर दिल्ली चला। किसी तरह छीता के महल तक पहुँचा और वीणा पर प्रेम गीत गाने लगा। छीता को ज्ञात हो गया कि राजकुमार राम फकीर के भेष मे [illegible] है और वीणा पर गीत गा रहा है। वह आँसू बहाने लगी। अलाउद्दीन ने [illegible] लिया। असहाय अवस्था मे भी उन दोनो के उत्कृष्ट प्रेम को देख कर वह [illegible]। उसने छीता और राम का विवाह कर दिया और मनसबदार का पद देकर राम की प्रतिष्ठा [illegible]।

रचना काल

सोरह सै जु तिरानुवै कथा कथी यह जान।
कातीग सुद छट पूरन छीताराम बखान॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६९३ और लि० [illegible]।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे [illegible] पत्र।

सख्या १२६८ कथा कलावती की, रचयिता—जान कवि, स्थान—[illegible] ([illegible], राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—८, आकार—८¾ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—[illegible] १६७० वि०, लिपिकाल—स० १८०८ वि० प्राप्तिस्थान—[illegible] प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा कलावती की यचि जान कृत॥

॥ चौपाई॥

पर्थम सुमिरौ अलख निरजन। नाव लेत [illegible]॥
जो चाहै सो करिहै करता। आनद सुष [illegible]॥
जासौ जैसी इछ्या होइ। हरि दिपरावै तैसो [illegible]॥
काहू के तन कुवम लावै। [illegible] मन [illegible]॥
:o:
कहत जान यह कथा पुरानी। मै सुनि बांधी [illegible]॥
जोरत अति मन चिता दीनो। [illegible] मै पूरी कीनो॥
भाषा तुक जो कुप तै आई। [illegible]॥
सुलप कथा मै कही जु गाई। जितही [illegible]॥

॥ चौपाई ॥

सुनहु कांन दै चातुर गुनी। कथा पुरातंन ऐसे सुनी ॥
हसतीमल राजा की नांव। हथनापुरी रहन कौ ठाव ॥
तिह राजा अनगन तिय आनी। परभावती पाट की रानी ॥

अंत— चौपई

जौं लौं जीये चंन रसु कीये। येक संग अम्रित हित पीये ॥
काम कलोल वैस मदमाते। येक घरी हू होत न हाते ॥
ऐसौ चैंन दयौ करतार। कहत जान आवत न विचार ॥
करनहार विनु कौन निवाजै। वैसौ चित कौन ते भाजै ॥
सव वातनि समरथ है करता। आनद को भरता दुषहरता ॥

॥ दोहा ॥

सुलिप कथा यहु जान कहि रूपमंजरी नाम।
स्रवन सुनी सुप उच्चरी लगे तीन ही जाम ॥

कथा रूपमंजरी की संपूरन भई। लिषते फतेहचंद ताराचन्द की डीडवानींया संवत सतरह सै १७८४ मिती चेत वदी ७ मगलवार पोथी पूरी करी सन् ११४० ॥ श्री श्री श्री

विषय—हस्तिनापुरी का राजा हस्तीमल था। उसकी पटरानी का नाम प्रभावती और पुत्र का नाम ज्ञान सिंधु था। ज्ञाना सिंधु सर्वगुण-सप न्न था। सौदर्य मे तो वह पृथ्वी के सव राजकुमारो से वढकर था। शीघ्र ही सव विद्याए पढ कर वडा विद्वान् भी हो गया। उसका केवल न्याना सिंह नामक मित्र था जो उसके समान ही विद्वान् था। दोनो विद्वत्तापूर्ण विवादो मे समय विताते थे। एक दिन जव दोनो आखेट करने गए तो वहाँ सोते समय राजकुमार ने स्वप्न देखा जिसमे अत्यत सौदर्यवती एक राजकुमारी ने अपनी ओर आकर्पित किया। जागने पर राजकुमार को उसका वियोग सताने लगा। मित्र से कहा, पर मित्र ने स्वप्न की वातो पर ध्यान न देने का उपदेश दिया। राजकुमार को शाति न हुई। फिर स्वप्न हुआ जिसमे उसके पूछने पर राजकुमारी ने अपने देश के नाम लिए "ककन", पहिचानने के सकेत के लिए "हाथ", पिता के नाम के लिए "कान", माता के नाम के लिए "हसकर दौडना" और अपने नाम के लिए "दर्पन मे मुख देखना" आदि मकेत वताए। जागने पर राजकुमार ने फिर मित्र से स्वप्न की वातें कही। इम पर मित्र को विश्वास हुआ और उसने सव सकेतो के अर्थ भी राजकुमार को वतला दिए, यथा—'ककन' से कंकनपुर देश, 'करन' से राजा का नाम करन, 'हस कर दौडने से' रानी का नाम 'हसगवनि' और 'दर्पन' मे रूप देखने से' राजकुमारी का नाम रूपमजरी आदि ज्ञात हुए। दोनो इन मकेतो के वल पर ककनपुर की ओर चल पडे। मार्ग मे राजकुमार को तीमरा स्वप्न हुआ जिममे उसके यह कहने पर कि हम तुम्हें मिलने के लिए आ रहे है, राजकुमारी घूंघट पट देकर विलीन हो गई। न्यान सिंह ने इसका अर्थ लगाया कि पहले पाटनपुर जाना चाहिए। अत दोनो पाटनपुर पहुँचे। वहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि वह नगर राजकुमारी की ननसाल है। इस पर दोनो को निराशा हुई, पर पूछने पर पता लगा कि राजमहल मे राजकुमारी का चित्र है। वडा प्रयत्न करने पर चित्र को देखा गया जो स्वप्न के रूप मे पूर्णतया मिलता था। दोनो को इससे वडी प्रमन्नता हुई। अत वहाँ से ककनपुर गए और मालिन के यहाँ ठहरे। मालिन को अपने पक्ष मे मिला लिया और एक दिन उसे स्याम रग की माडी पहिना कर राजकुमारी के पाम भेजा। राजकुमारी सकेत समझ गई। उसने मालिन के गले मे फूल माला डालकर उपवन मे भेट होने की वात जनाई। पश्चात् उपवन मे राजकुमार और राजकुमारी का मिलन हुआ। एक तापसी के द्वारा दोनो का विवाह कार्य भी

संपन्न कर दिया गया। दोनो प्रेमी रात भर उपवन में ही रह गए। प्रात राजा ने राजकुमारी की खोज कराई।

जब बात उघडी तो राजा सेना सजाकर राजकुमार को मारने के लिए चला। इस अवसर पर तापसी ने सहायता की और राजकुमार तथा राजकुमारी के भेष बदल कर उन्हे जोगी जोगिन के रूप मे कर दिया। राजा निराश होकर वापस चला आया। उसने समझा कि राजकुमार को कोई गधर्व भगा ले गया। अत अच्छा हुआ उसके प्राण बच गए। उधर राजकुमारी और राजकुमारी न्यान सिंह के साथ कुशलपूर्वक हस्तिनापुर पहुँच गए तथा आनद-पूर्वक जीवन यापन करने लगे। राजकुमार के माता पिता भी बड़े प्रसन्न हुए।

रचना काल

सवत सोरह सै पच्यासी। अगहन मास पथा पच्यासी॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६८५ और लिपि काल सवत् १८८४ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए 'रत्नावली' का विवरण-पत्र।

संख्या १२६.ड. कथा मोहनी की, रचयिता—जान कवि, निवासस्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन—देशी, पत्र—८, आकार—८½ × ६¼ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६, पूर्ण रूप—पुराना (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—स० १६६८ वि०, लिपिकाल—स० १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहाबाद।

आदि—कथा मोहनी की कविजान कृते॥

॥ दोहा ॥

आदि अगोचर अलप प्रभु निराकार करतार।
दैनहार ज्यो सकल तन रमनहार ससार॥ २॥
रवि ससि उडिन अकास सव पल मैं करे परकास।
देव हुलास उदास कौ पुजवन आस निरास॥३॥
नाम महमद लीजिये तनमन ह्वै आनद।
पूजै मन की इछ सव दूरि होंहि दुषदद॥ ४॥
अवहि वषानौ जान कहि सुलप कथा चितु लाइ।
पढत न हारै रस्नजिह लिपत न कर अरिसाइ॥ ५॥
जगमडन पटन पलिन पच्छिम दिस को राइ।
हय गय दलवल लछिमी गनत लेषै आइ॥ ६॥
ताकै तनया मोहनी रुप कांति अभिराम।
वुधि कौ वुधिदा जान कहि छदि यौ नाम निराम॥ ७॥
जिह मदिर मैं रैन कौ रहत मोहनी नार।
विनु दीपग विन रतन होत तहा उजियार॥ ८॥
जौ वाकै ढिग आनिये यहि पवि जान चकोर।
तौ वहु धोषै चद कै सव निस भावै वोर॥ ६॥

मध्य—

मोहनी वाकि

फलजुग या संसार मे यहु ऐसो को आहि।
येक वात जौ सौपिहै दै दसगुन करि ताहि॥६३॥

मोहन उत्तर

सुनहु अरथ मन मोहनी है यहु धरा सुभाइ ।
वये येक ही वीज कँ दैं दसगुन उपजाइ ॥६४॥

मोहनी वाकि

ऐसे वहु भुष कौन है भषत जु नाहि अघाय ।
पात घात भोजन घटैं तव आपुन मरि जाइ ॥६५॥

मोहन उत्तर

वहु भुष ज्वाला जानियो तिन लकरी वहु षाइ ।
जव भोजन घट जाति हैं तव सीरो ह्वै जाइ ॥६६॥

अंत—जगमडन सुनि सुष भयौ जीत्यौ प्राचीराइ ।
याकौ व्याहत मोहनी मोकौं लाज न आइ ॥
विद्यावर कौ नीच जौ जीति मोहनी लेत ।
तौ मोकौं सव गोति मिलि डारि पात ते देत ॥११४॥
व्याह रचायौ चौप सौं जगमडन आनद ।
व्याह दई रति मैंन कौं किधौं रोहनी चंद ॥११५॥
मोहन अंग न माइहैं लही मोहनी वांम ।
काम कलोल अमोल सुष करिहै आठौं जाम ॥११६॥
दयौ अमित तव दाइजौ कीनौं विदा नरेस ।
मोहन लैकैं मोहनी गयौ आपुनै देस ॥११७॥
आनंद उपज्यो चितु अमित फूल्यो अंग न माइ ।
अरुन उदैं प्राची वरन त्यो मुष प्राचीराइ ॥११८॥
राइ कह्यौ सोध्यो जगत जिहि प्रीतम कैं काज ।
सो करतार दयाल ह्वै आनि मिलायौ आज ॥११९॥
रूपी कंचन नगर तन जिह भावत सो लेत ।
राजा रानी कुंवर पर नौछावरि करि देत ॥१२०॥
जौ लौं मोहन मोहनी जीये इह संसार ।
येक अंग सँगही रहे रंचक घटचौ न प्यार ॥१२१॥
सोरह सै चौरानुवं ही अगहन सुदि चार ।
पहर तीन मैं यहु कथा कीनीं जान विचार ॥१२२॥

कथा मोहनी की संपूरनं भई १७८४ चैत वदी ८ लि फतेहचंद ॥

विषय—पच्छिम दिशा के राजा जगमडन की पुत्री मोहनी जगत भर मे अद्वितीय सुंदरी थी। जव वह तरुणावस्था मे पहुँची तव ससार भर के राजकुमार उसके सौंदर्य के विषय में सुनकर एव उसे देखकर मुग्ध हो गए। उनमे से प्रत्येक उससे विवाह करने की इच्छा करने लगा। पर राजकुमारी की प्रतिज्ञा कठोर थी। रूप-सौंदर्य के साथ-साथ उसकी विद्वत्ता भी प्रसिद्ध थी। दृष्टकूट, प्रहेलिका और गूढार्थ समझने मे तो वडी प्रवीण थी। उसके दस प्रश्न थे जिनका उत्तर विवाह की इच्छा रखने वालों को देना आवश्यक था। उत्तर न देने पर मस्तक काट लेने का आदेश था जिसे कोट के ऊपर टाँग दिया जाता था। अनेक साहसी राजकुमार आए पर सफल न हो सके। उनके मस्तक काट-काट कर कोट के ऊपर रख दिए गए।

प्राची राजा का पुत्र मोहन भी अपने सौंदर्य, शील, सौजन्य और विद्वत्ता के लिए प्रसिद्ध था। वह भी मोहिनी के प्रेम मे पागल था। उसकी प्रतिज्ञा को उसने सुन लिया था। एक दिन वह इतना अधीर हो उठा कि अकेला ही घर से चल पड़ा और राजकुमारी के नगर मे पहुँचा।

महल मे एक दासी से अपने आने का समाचार कहलाया। राजकुमारी को [illegible] विदित हुआ तो उसने राजकुमार मोहन को कहलाया कि वह पहले उन राजकुमारों के [illegible] जो उससे विवाह करने की इच्छा रखते थे। राजकुमार ने उत्तर दिया कि [illegible] चुका है। राजकुमारी की प्रतिज्ञा उसे स्वीकार है और वह उसके [illegible] देने को तैयार है। पश्चात् राजकुमार भीतर बुलाया गया और दोनों मे निम्नलिखित प्रकार से प्रश्नोत्तर होने लगे —

प्रश्न १—कलजुग या संसार मे कहु ऐसो को आहि।
येक बात जो सौंपि है दे दसगुन करि ताहि॥६३॥
उत्तर १—सुनहु अरथ मनमोहनी है यह धरा सुभाइ।
बये एकही बीजके दे दसगुन उपजाइ॥६४॥
प्रश्न २—ऐसो वह भुप कौन है भपत जु नाहि अघाय।
पात-पात भोजन घटै तब आपुन मरि जाय॥६५॥
उत्तर २—वहु भुप ज्वाला जानियो तिन लकरी यह पाइ।
जब भोजन घटि जाति है तब सारी ह्व जाइ॥६६॥
प्रश्न ३—दृग मूंदे सब देपिये कौन मुकर मो ईठ।
जो चपि पोल निहारिये कछू न आवै डीठ॥६६॥
उत्तर ३—वह सुपन को मुकर है सोवत सब दिठ आइ।
जागे कछु सूझै नहीं जब दृग जुग पुलि जाइ॥६७॥
प्रश्न ४—रहै आकसी मैं सदा चिंता कछु न जनाइ।
रुदन करै जब छूटि है ताको नाव बताइ॥६८॥
उत्तर ४—वालक याको नाव है गर्भ आपसी जानि।
जब निकसै तब रोइ है याको यहै बषानि॥६९॥
प्रश्न ५—न्यारे न्यारे पुरुष हैं सकल होहि इक ठाय।
तब सब कोऊ कहत है उनि को नारी नाव॥७०॥
उत्तर ५—मनके तौलौं पुरुष है न्यारे न्यारे आहि।
धागे मैं जब पोइये माला कहिये ताहि॥७१॥
प्रश्न ६—न्यारी न्यारी नारि हैं मिलि जै पुरुषनि माहि।
तब सबको नर भाषिहै नारी कहियत नाहि॥७२॥
उत्तर ६—असुनि असू इक सग हैं जबहि पर दल होइ।
कहे इते घोरा जुरे घोरी कहै न कोइ॥७३॥
प्रश्न ७—तिय विगार नर सिर परै नर विगार सिर तीय।
ये चारों धौं कौन है यही सोचि कै जीय॥७४॥
उत्तर ७—जौ स्वाननि उजारिहै नाव स्वान जनु लेत।
हानि करै मजार जो दोस मजारी देत॥७५॥
प्रश्न ८—नारी पूरन पिय रसन तिय रसना पिय नारि।
कहि धौं कैसे कै बनी जोर दहनि कै माहि॥७६॥
उत्तर ८—नारी रसना को सबद पिय रसना को नारि।
चूमत है पिय नाम को रापत अधरनि माहि॥७७॥
प्रश्न ९—ना निस कबहू सोइहै ना सोवत है भोर।
कबहू साथी एकहो कबहू होहि बटोर॥७८॥
उत्तर ९—निस के साथी उडिन वह दिव साथो इक भान।
चले जात सोवत नहीं हैं सो रैन बिहान॥७९॥

प्रश्न १०—विनु ज्यो विनु चरननि चलै चवै रसन विनु वैन ।
बिनुही मुप हसि हसि परत रुदन करत विनु नैन ॥८०॥
उत्तर १०—वादर ज्यो पग विनु चलै गरज रसन विनु वैन ।
वीज छटा विन मुप हसन स्रवत रुदन बिनु नैन ॥८१॥

राजकुमारी अपने प्रश्नों का उत्तर पाकर लज्जित हो गई । उसने राजकुमार से दूसरे दिन आन और अपनी ओर से प्रश्न करने को कहा । यदि वह उत्तर न दे सकेगी तो निश्चय ही उसकी स्त्री हो जाएगी । राजकुमार चला गया । राजकुमारी को चिंता हुई कि न जाने राजकुमार कल कौन सा प्रश्न करे । उसने कूटनीति मे राजकुमार के मन की वात जानने के लिए प्रयत्न किया । कुछ स्वादिष्ट भोजन और मदिरा लेकर साधारण वेश मे उसके पास गई । राजकुमार को भोजन खिलाकर मदिरा पिलाई और तन मन से उसकी सेवा करने लगी । राजकुमार जव मद मे चूर हो गया तो उसने प्रश्न के सबंध मे पूछा । राजकुमार को संदेह हुआ और उसने वात टाल दी । राजकुमारी निराश होकर घर लौट जाने लगी । राजकुमार ने राजकुमारी को पहचान लिया । उसने उसको पकडकर वाहुपाश मे बाँध लिया, परंतु राजकुमारी ने राजकुमार के हाथ काट लिए और अपने को छुडाकर भाग चली । दूसरे दिन राजकुमार ने इस प्रकार प्रश्न किया —

को पछी मजा भवै को नैना भषि जाइ । कोउ करेजा षात है कोऊ सव तन षाइ ॥
विना हाथ कछु ना भवै जाकौ यहै सुभाइ । सो पछी धौं कौन है मोहि कहौ समुझाइ॥१०६॥

प्रश्न सुनकर मोहिनी को रात की वात याद आ गई । यदि वह प्रश्न का उत्तर देती है तो चोर ठहरती है । और जो नही देती तो हारती है । अत मे वह चुप रह गई और राजकुमार को आत्मसमर्पण कर दिया । दोनो का शीघ्र ही विवाह हुआ और राजकुमार राजकुमारी मोहनी को लेकर अपने देश आ पहुँचा ।

रचना काल

सोरह सै चौरानुवै हो अगहन सुदि चार ।
पहर तनि में यहु कथा कीनी जान विचार ॥१२२॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६४ वि० है और लिपिकाल सवत् १७८४ । विशेप के लिए देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र ।

सख्या १२६ढ. कथा चद्र सैन राजा सीलनिधान, जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देसी, पत्र—४, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुप्टुप्)—१५६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६१ वि०, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग, इलाहावाद ।

आदि—चंद्रसैन राजा सील निधान की कथा चौपई १॥
प्रथम करता नांव उचारौ । पलक माहि जिन जगत संवारचौ ॥
सव वातिन समरथ करतार । करहि सु करत न लागै वार ॥
भले वुरे कीने ससार । येक नहीं सवकौ व्यौहार ॥
काहू तन मैं सील निवास । विथुरै जगमैं ताहि सुवास ॥
:o. :o: :o:
चंद्र सैन राजा कौ नाव । चंदपुरी रहिवे की ठाव ॥
वडे वडे जाकै गढ कोट । सेवा करिहै रावत कोट ॥

बहुत सुफल ताकै आराम । नीके धाम मनहि आराम ॥
हाथी माते घोरा ताते । वहु द्रव्य [illegible] न [illegible] ॥
पूजे है सव मनसा काम । पै राजा [illegible] ॥
यहै परी राजा कै जीय । काहू [illegible] नीय ॥
भली नाहि मिहरी की जात । [illegible] ते पानि पुजान ॥
सील माहि तिय रहै न केहू । आपहि [illegible] न दिसोवै [illegible] ॥
आगै भयो भरथरी राव । तीय दुष जोग गह्यौ [illegible] ॥
वनिता सेती करिकै चाव । वहुत [illegible] ॥
राजा करचो जीप मैं नेमु । नारी मेनी [illegible] न देम ॥
:o: :o:

अत—
काची गागर पर वैठारी । तीजी यौ जल [illegible] ॥
तीनौं उनके मारे मित । तव राजा [illegible] भयो न [illegible] ॥
राइ सुता विनु और न रापी । [illegible] सौं मनना [illegible] ॥
रूप काति जिन गनिहौं ग्यान । अत सील जीतै वहि "[illegible]" ॥
सीलवति सो उत्तिम नारी । रूपवत [illegible] है [illegible] ॥
चेरी चाव करहु जिन कोइ । चेरी को चेरो को होइ ॥

॥ दोहा ॥

जैसो जाको होइ कुल तैसी तापी रीति ।
निरकुल सौं कविजान कहि कोइ [illegible] प्रीति ॥
वात सुनत भई वहुत टील लगाई नाहि ।
कथा करी यहु जान कवि पहर [illegible] माहि ॥
सोरह सै इक्यानुवा हुती दूज [illegible] पून ॥
सुक्रवार कवि जान यह वाधी कथा [illegible] ॥

कथा सीलनिधान सपूरन भई सवत सतरह सै १७८४ मिती [illegible] वदि ६ लिपत [illegible] ताराचद का ॥

विषय—चदपुरी का राजा चद्रसेन रूपवान् [illegible] था । इतना होते हुए भी उसको स्त्रियो से स्वाभाविक [illegible] थी । [illegible] को जव सुनता तो चौक उठता । उसने निश्चय किया वह विवाह न [illegible] । [illegible] पश्चात् राज्य की क्या दशा होगी और कौन राजा होगा ? [illegible] मन्त्रियो ने राजा से उक्त निश्चय परित्याग करने के निमित्त प्रार्थना की । [illegible] वुझाने पर राजा तैयार हो गया । परतु वैसे ही वह विवाह [illegible] काम के वशीभूत हो गया । गोप्रागिरि के राजा को पत्र भेजा कि [illegible] विवाह दे । वह राजा सहमत हो गया और वडे साजवाज [illegible] निधान को चदपुरी भेज दिया । राजकुमारी को पहुँचने मे [illegible] हुआ । एक दिन उपवन मे टहलते हुए एक सौदागर की [illegible] देखा । ज्ञात हुआ कि वे स्त्रियां व्यापार के लिए थी । [illegible] ने अपने घर से तीन परम रूपवती तरुण स्त्रियो को राजा से विवाह [illegible] । [illegible] कुमारी वताया । राजा वडा प्रसन्न हुआ । रूप की [illegible] दिया । रात दिन उनके साथ क्रीडाकेलि करने लगा । [illegible] तो उसको रूपवती न पाकर महल मे उपेक्षिता [illegible] । [illegible] उद्विग्न भाव से रहने लगी ।

उस नगर मे एक विद्वान ब्राह्मण रहता था। उसने ऐसी मूर्ति तैयार की जो झूठी वात सुनने पर हँसती थी और सत्य वात पर मौन रहती थी। राजा ने विद्वान् को वहुत सा पुरस्कार देकर मूर्ति ले ली। उस मूर्ति के द्वारा वह तीनो रूपवती स्त्रियो की परीक्षा करने लगा। पहली के पास गया और उसको फूल से मारा। वह मूर्छित हो गई। जब चैतन्य हुई तो अपनी कोमलता का वखान करने लगी। इस पर मूर्ति हँसने लगी। राजा को सत्य का ज्ञान हुआ और वह उदास होकर वहाँ से चल दिया। दूसरे दिन दूसरी के यहाँ गया तो उसके पोस्ती नरी गढ गया। इस पर उसने भी अपने को कोमलागी वताया, जिस पर मूर्ति हँस पडी। तीसरे दिन तीसरी के पास गया और उसको लेकर उपवन मे आया। वहाँ स्त्री ने तालाव मे मछलियो को तैरते देखा तो घूंघट काढ लिया। इस पर मूर्ति हँस पडी। अब राजा ने अन्य रीति से परीक्षा लेने की ठानी। पहली को उसने हवशी से व्यभिचार करते देखा, दूसरी को साखान से और तीसरी को नदी पार जाकर अपने मित्र से व्यभिचार करती थी। अत मे राजा ने राजकुमारी शीलनिधान की भी परीक्षा ली। रात को चुपके से जाकर उसकी चारपाई पर सो गया। शीलनिधान ने आधी रात तक राजा की अच्छी तरह सेवा की। तत्पश्चात् पास के मदिर मे जाकर भगवान् से प्रार्थना करने लगी कि उसका प्रेम सदैव अपने पति पर वना रहे। यद्यपि उसका पति उस पर कितना ही निष्ठुर रहे तथापि वह अपने प्रेम से कभी विचलित न हो। फिर प्रार्थना की कि उसका पति उस पर सदय हो। राजा जो छिपकर सुन रहा था दौडकर उसके पास गया और उसे गले लगा लिया। उसने अपने कृत्यो के लिए क्षमा माँगी और उसे पटरानी वनाया। दूसरे दिन तीनो रूपवतियो को उनके प्रेमियो सहित मरवा डाला।

रचना काल

सोरह सै इक्यानुवाँ हुतीदूज वदिपूस।
सुक्रवार कवि जान यह वांधी कथा अदूस॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६९१ और लिपिकाल स० १७८४ है। रचना अढाई पहर मे समाप्त हुई। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६ण कथा अरदसेर पातिसाह की, रचयिता जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान)— कागज—प्राचीन देसी, पत्र—४, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९० वि०, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी प्रयाग, इलाहावाद।

आदि—अथ कथा अरद सेर पातिसाह की कविजान क्रित॥

॥ चौपई ॥

पर्थम नांव निरंजन लीजै। सव सुधरै पाछै जो कीजै॥
वान नाव लेवे की करी। ताकै आगै है वुधि परी॥
नांव प्रसाद करै जो चाहै। जो पकरै सो वोर निवाहै॥
ग्रंथ आदि विनु नाव न होइ। ताकौं हाथ छुवो जिन कोइ॥

॥ दोहा ॥

अरद सेर पतिसाह की सुलप कथा कहि जान।
जैसी विधि ग्रंथन पढ़ी सो हौं करौं वषान॥

॥ चौपई ॥

अरद सेर को करूं वखान । जाको पिता साह सासान ॥
ली ईरान और तूरान । बहुरि भरि [illegible] मयगान ॥
बहुत विलाइत लीनी मार । परगट भयो सकल संसार ॥
दल बल की कछु लेखौ नाहि । चढन जाइ रवि छपि रज माहि ॥
लरिवे कौं आवै सो मरै । काल रूप धंदे सो करै ॥
जब याकी कीरत विसतरी । अरदुवान कै [illegible] परी ॥
अरदुवान बडेरौ पातिसाहि । ताको उपमा दीजै काहि ॥
अरदसेर कौं चितहि न आनत । आप समान न काहू मानत ॥

अंत—
॥ चौपाई ॥

ताको नाव धरयो सा पूर । एक पलक हू करहि न दूर ।
सुत माता हू मारी नाही । आनि विठाई मंदिर माहि ॥
अमर भयौ मत्री परगाद । मत्री की दीनी बहु दाद ॥
सब मत्रिन कै ऊपर कीनौं । जो मांग्यो मायो सो दीनौं ॥
बीच न रह्यौ साहि परधान । है घट दोइ एक ही प्रान ॥
सुलप कथा गाई कवि जान । दोइ पहर मै करयौ बखान ॥
ही वारस वदि माह कुवार । सुकरवार जानहु हौ वार ॥
सोरह सै नावा तब आहि । जान कवि वाधी चित चाहि ॥

॥ दोहा ॥

बहुत उतावर मै करी छद लघरो कै माहि ।
भूल्यो लेहु सुधारि कै याहि दिपोरहु नाहि ॥

कथा अरदसेर की सपूरन भई ॥ १७८४ मिती चैत वदी १० ।

विषय—अरदसेर वादशाह बडा गुणी और वीर था। प्रजा का [illegible] करता था। उसका यश दूर-दूर तक फैल गया और शीघ्र ही सब [illegible] गया। केवल बादशाह अरदुवान ही ऐसा था जिसने उसका [illegible] किया, प्रत्युत उससे वैर रखने लगा। अपने बडे पुत्र बहमन को बडी सेना [illegible] भेजा। परतु बहमन हार गया और भाग कर घर आया। [illegible] उसके नगर तक पहुँचा। सारा नगर घेर लिया गया। अरदुवान [illegible] हुआ जिसमे वह मारा गया। बहमन भागा और मत्रियो [illegible]। [illegible] ने अरदुवान की पुत्री से, जो रूपवान थी, विवाह कर लिया और [illegible] लगा। उधर बहमन बादशाह के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगा। [illegible] को विष के साथ अपनी बहिन के पास भेजा और कहा कि वह [illegible] दे। उसकी बहिन पहले तो हिचकी पर जब [illegible] उसने एक दिन बादशाह को जब वह आखेट से लौटा, पेय पदार्थ [illegible] से पीते समय विष का प्याला बादशाह के हाथ से छूट पडा। [illegible] पेय द्रव्य मुर्गियो को पिलाया जिनसे वे तुरन्त ही मर गई। [illegible] मारने का आदेश दे दिया गया। विश्वासपात्र मत्री को [illegible]। शाहजादी ने मत्री को अपने गर्भ रहने की बात बताई। [illegible] की पर बादशाह का निश्चय दृढ था। मत्री [illegible] कोई सतान भी न थी। अत उसने शाहजादी को अपने घर [illegible]

पर उसका पुत्र हुआ जो रूप और शील मे वादशाह के समान ही था। एक दिन वादशाह आखेट करने गया और एक मृग के पीछे घोडा दौडा दिया। वह उस पर वाण छोडने को ही था कि वीच मे मृगी और वच्चा आ गए। उसने वाण रख दिया और रोने लगा। मत्री के प्रार्थना करने पर कारण वताया कि मृग के वच्चे ने उसे सतान की याद दिला दी। मेरी कोई सतान नही और आगे भी आशा नही कि सतान होगी, क्योकि मैं अव वावन वर्ष का हो गया। मत्री ने कहा, 'यदि मुझे जीवन दान दिया जाय तो मैं इस सवध मे उपाय करने की कोशिश करूँ। वादशाह ने स्वीकार कर लिया। पश्चात् मत्री ने सारा गुप्त रहस्य प्रकट कर दिया। वादशाह पुत्र पाकर वहुत प्रसन्न हुआ और शाहजादी को भी, जो अत्यत क्षीणकाय हो गई थी, क्षमा कर घर मे रख लिया।

रचनाकाल

ही वारस वदि माह कुवार। सुकरवार जांनहु हौ वार।
सोरह सै नावा तव आहि। जान कवि वाधी चित चाहि॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल लिपिकाल क्रमश. सवत् १६९० और १७८४ है। रचना दोपहर भर मे समाप्त की गई।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके परिचय के लिए देखिए "रत्नावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६त. कथा कामरानी व पीतमदास की, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर (राजस्थान, जयपुर), कागज—देसी, पत्र—५, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९७, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९१ वि०, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा कामरानी व पीतमदास की॥

॥ दोहा ॥

पर्थम सोई सुमिरिए जिन सिरज्यो संसार।
पलक मांहि सव कुछ भयौ होत न लागी वार॥
नभि धरि ससि रवि उडिन गिर पवन नीर वन भेद।
रचे अकेले आपही रचक भयो न षेद॥ ३॥
को चातुर कोऊ मुगध धर्मी को पापिस्ट।
नांहि करी करतार सव एक भांति की सिस्ट॥ ४॥
दोष महमद सुमिरिहु उनते दूजी ठौर।
नवी रसूल जिते भए है सव मैं सिरमौर॥ ५॥
अवहि वषानूं जान कहि यंक वात अभिराम।
पंच सजन कौ भेदु है मित्र कथा इहं नाम॥ ६॥

॥ चौपाई ॥

पंच मित्त वसिहे मुलतांन। अव हौं तिनकी करौं वषांन॥
राजकुंवर इक छवि की रास। नाव ताहि कौ प्रीतमदास॥
इक सौदागर सुत धनवंत। जाकै लछी आहि अनंत॥
एक सुरंगया देत सुरंग। तिह पहुंचै जित होत उमंग॥

इक बढई सुत पूरन ग्यान। कोऊ ना जग याहि समान॥
इक काछी सुत आछी भांति। हार बनावन है वह भांति॥
येकर्क संग रहें ये पंच। बिछुरत नाहीं पलहू रंच॥

अंत—

पीतमदास भयौ उत राइ। निस बासुर आनंद में जाइ॥
चारौं मित करे परधान। दीनी है कन्या नृप आन॥

॥ दोहा ॥

सेवा करि है स्याम की ज्यों की हित चित लाइ।
ताकौ निहचै जानियौ ह्वै करतार सहाय॥ २॥
इक राजा कवि जान कहि और चार परधान।
ना बिछुरे आनद कीये जीलों जीये जहान॥ ३॥
सोरह सै इक्यानुवै कथा करी यह जान।
पूस दसै बदिही तबहि वार बुद्धि पहिचान॥ ४॥
कहत जान याको करत ढील लगी कछु नाहि।
सपूरन नीके भई पहर सवा ह्वै माहि॥

इति कथा प्रीतमदास काम रानी की सपूरन भई सवत् सतरह सै १७८४ मिती चैत्र बदी १० दसतषत फतेहचद ताराचद का टौंटवानीया॥ श्री श्री॥

विषय—मुलतान नगर में पाच मित्र रहते थे। उनमें एक राजकुमार था जिसका नाम प्रीतमदास था, दूसरा धनी वैश्य का पुत्र था, तीसरा सुरग देने वाले का पुत्र, चौथा बढ़ई का पुत्र, और पाँचवाँ काछी का पुत्र था। राजकुमार ने अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की थी। औरों ने भी उसका अनुकरण किया। परतु उनकी प्रतिज्ञा बहुत दिन तक टिक न सकी। राजकुमार को काम ने सताया। उसने मित्रों से कहा कि कामरूप देश की स्त्रियाँ अधिक सुंदर बतलाई जाती है, अतएव वहाँ जाकर मनोनुकूल विवाह करना चाहिए। सब एकमत हुए और व्यापारियों का वेश धारण कर कामरूप देश की ओर चले। कई दिनों के पश्चात् कामरूप देश पहुँचे जहाँ एक नगर में डेरा डाल दिया। तत्पश्चात् [illegible] मंदिर में दर्शन के लिए गए। वहाँ एक स्त्री की मूर्ति थी जो देखने में अति सुंदर थी। राजकुमार उसको देखकर मुग्ध हो गया। उसने अपनी सुध-बुध खो दी और मूर्ति से प्रेम करने लगा। मित्रों ने बहुत समझाया, पर न माना। उसे विश्वास हुआ कि इस रूप की स्त्री संसार में कहीं है। अत मित्रों को कहा कि वे पता लगावें कि वह कहाँ है। मित्र विवश थे। राजकुमार के आदेशानुसार प्रयत्न कर लेना उन्होंने अच्छा समझा। चारों ओर खोज करने लगे। सौभाग्यवश उन्हें ऐसा व्यक्ति मिला जो मूर्ति के विषय में जानता था। उसने बतलाया कि यह मूर्ति हरिदास राजा की पुत्री कामरानी की है पर उसका देश बहुत दूर है। इस नगर के राजा राम ने जब कामरानी के सौन्दर्य की बात सुनी तो चित्रकार के द्वारा गुप्त रीति से उसका चित्र मँगा लिया। उसी चित्र के आधार पर उक्त मूर्ति गढ़ी गयी है। राजा उसपर मुग्ध होने लगा। उसने राजा हरिदास से उसके साथ कामरानी का विवाह करने की इच्छा प्रकट की पर सजातीय न होने के कारण विवाह न हो सका। राजा राम चुप न बैठा। [illegible] द्वारा षड्यत्र रचकर कामरानी को भगा लाया। राजा हरिदास ने [illegible] पर पुत्री का उद्धार न कर सका और निराश होकर लौट गया। कामरानी यद्यपि [illegible] के अधिकार में आ गई तथापि उसने विवाह करने के लिए सम्मत न हुई। राजा ने [illegible] किया, परतु सफल न हो सका। अत में एक भवन बनाया गया और उसमें कामरानी [illegible] पहरे मे रख दिया गया। इतनी बात कहकर वह व्यक्ति चला गया। मित्र बड़े प्रसन्न हु[illegible]

और राजकुमार मे सब समाचार कहा। राजकुमार को भी वडी प्रसन्नता हुई। पश्चात् राजकुमारी को पाने के निमित्त मत्रणा की गई। काछी के पुत्र ने मालिन से मैत्री कर ली और कुछ सुदर मालाएँ अपने हाथ से तैयार कर राजकुमारी के पास भिजवा दिए। राजकुमारी वड़ी प्रसन्न हुई। धीरे-धीरे परिचय वढता गया ता वढई के पुत्र द्वारा तैयार की गई राजकुमार की काठ की मूर्ति मालिन के हाथ राजकुमारी के पास पहुँचाई गई। मूर्त्ति देखकर राजकुमारी मूर्छित हो गई। जव चैतन्य हुई तो मालिन ने विस्तारपूर्वक सव वाते कह दी। राजकुमारी सुनकर वहुत प्रसन्न हुई। उसने मालिन द्वारा राजकुमार को अपनी आकाक्षा जतला दी। पश्चात् व्यापारी पुत्र ने राजा को वहुत सी भेंटे देकर राजकुमारी के निवास स्थान के पास ही रहने के लिए उससे स्थान माँग लिया। कुछ दिन वीतन पर सुरगिया के पुत्र ने अपने टिकने के स्थान से राजकुमारी के भवन तक सुरग तैयार कर दी। राजकुमार को सुरग द्वारा राजकुमारी के पास भेज कर दोनो का मिलन करा दिया। राजकुमारी ने राजकुमार का प्रेम द्वारा सम्मान तो किया, पर विवाह नही किया। उसने राजकुमार को अपनी इच्छा वतलाई कि वह उसे पितृगृह पहुँचा दे और उसके पिता से विवाह के लिए स्वीकृति ले। राजकुमार ने मित्रो की सहायता से राजकुमारी की इच्छा पूरी की। राजा हरिदास पुत्री को वापस पाकर वहुत प्रसन्न हुआ और राजकुमार प्रीतमदास से उसका विवाह कर दिया। उधर राजा राम को जव ज्ञात हुआ कि कामरानी भाग गई तो आत्महत्या कर ली। कुछ दिन पश्चात् राजकुमार ने राजा से कह कर उसके कुटुवियो की पुत्रियो के साथ अपने मित्रो का भी विवाह करा दिया। थोडे दिन पश्चात् राजा हरिदास ने अपना राज्य भी राजकुमार को सौंप दिया और वन मे जाकर तपस्या करने लगा। राजकुमार ने मित्रो को मत्रियो का कार्य सौंपा और आनदपूर्वक राज्य करने लगा।

रचनाकाल

सोरह सै इक्यानुवै कथा करी यहु जान।
पूस दसै वदि ही तवहि वार बुद्धि पहिचान॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६१ और लिपिकाल सवत् १७८४ है।

रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रत्नावती" का विवरण पत्र।

संख्या १२६थ. पाहन परिछ्या, जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—३, आकार—८½ × ६¾ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ पाहन परिछ्या दोहा।

करता सुमिरन कीजिए निस वासुर यहु तथ्य।
निसतारन तारन जगत पोषन भरन समुथ्य॥ २॥
नवी महंमद मुसतफा रची हेत जिह सिस्ट।
ताको चाहत आस रव धरमी पुनि पापिस्ट॥ ३॥
पाहन की परिषा कहूं जैसे ग्रंथ वषानं।
को मुहरी किह काम को प्रगट करत कवि जान॥ ४॥
हिंद की तुरकी मति मथी कथी षंड द्वै वानि।
कहत जांन जानत नहीं सोउ लैहै जानि॥ ५॥

पर्थम षंड हिंद की नर सिध मुहरे को वरनं।

॥ चौपाई ॥

सिघमुखी मधु कैसे रग। बाहर भीतर निरमल अग।
नाभि चक्र तर कचन काति। तीन रेष नरसिंघ इह भाति॥

॥ अथ गुन दोहा ॥

इछ पुजावत अरिदलन दै सुहाग सतोष।
धोइ पिवाये जान कहि हरत रोग को दोष॥

अत—अवरी पाहन गुन

॥ चौपाई ॥

अवर वरन होइ पाषान। सुनि लै ताको करौ बखान॥
तीन भाति बिंदुका अभिराम। तापर सेत पीति पुनि स्याम॥
वाको भाजन करिकै पाइ। बात सन की रोग घटाइ॥

कपूर गुन

रषत कपूर जु अपनै पास। फवल बात दुष देत न तास॥
गूंद नारियर को यहु आहि। तिनकौं उठि लागत है ताहि॥
पाहन परिषा भाषी जान। जैसी विधि ग्रथनि परमान॥

अथ पाहन परिछ्या सपूरन १७८४ चैत वदी २।

विषय—मूल्यवान् पत्थरों (रत्नों) की परीक्षा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल नही है। लिपिकाल सवत् १७८४ दिया है।

रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रत्नावली" का विवरण-पत्र।

सख्या १२६८ शृगार सत, भावसत, विरहसत रचयिता—जान कवि स्थान—फतेहसु फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—८ आकार—८६ × ६३ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५१, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य लिपि—नागरी रचनाकाल—स० १६७१ वि०, लिपिकाल — स० १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—अथ सिंगार सति कवि जान का किया।

परथम सुजान कहि अलष जु अपरपार।
भेद अभीघन येध है जो पचि है ससार॥ २॥
कहा ग्यान कोऊ करै काधी करै विचार।
जेम बिलूला नीर को सो वुधि को विस्तार॥ ३॥
कौन कौन करतार जू कीने जग ब्यौहार।
विरह पेम रस रीति हित औ अनेक परकार॥ ४॥
नवी मुहमद सेव कौ कीनौ यहा सिगार।
जाकी छबि पर जान कहि रीझि रह्यौ करतार॥ ५॥
अब हौं कहौं सिगार सत उकत पुरातन आनि।
नौतनहू अति सोधिहू जो आवहि यहि जान॥ ६॥

अंत— मैं यहु करयौ सिगार सत साचो वचन मान।
कान कसौटी कविन की कसे पुरन यहि जान॥ १०१॥

सोलह सै ईकहतरै जहागीर कै राज ।
साज्यौ जान सिगार सत तीन द्यौस मै साज ॥

ग्रंथ सिगार सति संदूरन भयौ समत १७७७ मिती पोह् वदी ६ वार मंगलवार लिषत फतेह्चंद ताराचद का ॥

मध्य ॥ ग्रंथ भाव सति कवि जान का कीया ॥

अविनासी कौ सुमिरि हौ परथम कहि कवि जान ।
तौ मन इछा पूजहे सुष पावत तन प्रान ॥ २ ॥
रैनो करता नाव की जो रसना दे रग ।
कवहू फीकौ है नही चटक होइ अग अग ॥ ३ ॥

:०. :०: :०:

अधरनि अंजन लीक है पानन की रग फीक
नैन पीक उरसी कहै चलत परत पग झोक ॥ १०१ ॥
अछिर सर येमं करे पै घौटे काहु जान ।
पैने ह्वै हैं जो चढै कान गुनी परसान ॥ १०२ ॥
सोरह सै इकहतरै जहागीर जगसाह ।
दोइ द्यौस मैं जान कवि कियौ भाव अवगाह ॥

इति ग्रंथ भावसति सपूरन भयौ समत ॥ १७७७ मिती पोह वदी १०॥ दसत.षत फतेह्चंद ॥

अंत— ॥ विरहसत जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

निमसकार हू करत हू आदि अगोचर नांव ।
जिन वनिजन लाहो लहौ सो कैसै विसराव ।
जेतक गुन विध गाइये गावन चौप न जाइ ।
लहै जो वचनं चुच नित देषत ससि न अघाइ ॥ २ ॥

:०: :०: :०:

अवहि बषानूं विरहसत यह उपज्यो चित चाव ।
कहत जान कवि लेहु सुनि नेहु विरह के भाव ॥ ८ ॥
पीय चलें-जीय ना चल्यो जानत कौन सुभाइ ।
विह्वल ह्वै कै परि रह्यौ पैड भरी नहि जाइ ॥
जौ परि परि केहूं चलत अवध जान नहि देतु ।
घेरि घेरि तन राषिहै घोरि लगावत हेतु ॥ १० ॥

:०: :०: :०:

मैं जु कह्यो यहु विरह सत लोहा लैहै कहि जान ।
कान गुनी पारस लगे कुंदन बारह बान ॥ १०० ॥
सोलह सै इकहत्तरै जहागीर जगपत्ति ।
दोइ द्यौस मैं जान कवि करयो विरह सत सत्ति ॥ १०१ ॥

॥ विरह सत सपूरन ॥

विषय—शृंगारमत ।

नायिका भेद के अतर्गत वालापन, वय.सधि एव तरुणावस्था का वर्णन । इसमे सं दोहे हैं ।

रचनाकाल

सोरह सै इकहत्तरै जहांगीर के राज ।
साज्यौ जान सिंगार मन तीन द्यौस मैं साज ॥

भावसत

भावात्मक सौ दोहो का संग्रह ।

रचनाकाल

सोरह सै इकहत्तरै जहांगीर जगनाह ।
दोइ द्यौंस मैं जान कवि कियौ भाव श्रवगाह ॥

विरहसत

सौ दोहो में विरह शृंगार का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रत्येक शतक मे तीन-तीन पत्रे हैं। रचनाकाल प्रथम दो शतको मे संवत् १६७१ है। लिपिकाल संवत् १७८७ है, यह भी उक्त दो शतको मे ही है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, "रतनावली" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ध. वलूकिया विरही की कथा, रचयिता—कवि जान, निवास स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—प्राचीन देशी पत्र—६, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—पुराना पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १०४० हिजरी, लिपिकाल—सं० १७७९ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—वलूकिया विरहो की कथा ॥

॥ चौपई ॥

परथम सुमिरौ सिरजनहार । सिरज्यौ आदि महंमद यार ॥
पीति महमद जगत उपायौ । कोन्ही वहै जु हजरत भायौ ॥ २ ॥
नवी सिस्ट कौ मूल वषानहु । सव कछु नवी वाति ते जानहु ॥
रवि ससि उडिन पवन अरु मेहु । वन जलधर गन तेज रतनेहु ॥ ३ ॥
सलिता सागर मेरु पहार । मनुष देवता रचे अपार ॥
वैकुठ ग्रौर फिर सते हूर । सवै भए हजरत के नूर ॥ ४ ॥
नवी पीति ते सव प्रगटाये । लै लै नाम र जाति . ये ॥
जेते नवी जगत ह्वै गये । हेत महंमद ही के भये ॥ ५ ॥
सव मिलि जप्यौ महंमद नाम । तौ वैकुठ पायौ निजधाम ॥
नवी नूर आदिम प्रगटायौ । तव आदम लै तषत दिठायौ ॥ ६ ॥
तवहि फिरस्तनि कौ फुरमायौ । आदम कौं सजदौ करवायौ ॥
वह सजदा आदम कौं नाही । नवी नूर देखौ या माही ॥ ७ ॥

अंत—

वात सुनी यह स्तरै गांव । आप परै विरही कै पांव ॥
विरही धरम साचु करि जान्यौ । सवहीं कलमा नवी वखान्यौ ॥ १२६ ॥
जान कहै हौं वलि वलि ताहि । जापौ नवी महंमद चाहि ॥
या जगमै नीकै सो आयौ । जिन हजरत सौं नेहु लगायौ ॥ १२७ ॥

केते वली भये जगु माहि । हजरत जिनहुं बिसारचौ नाहिं ।।
जाकों लागत है रटनाम । ताके सगरे सुधरं काम ।। १२८ ।।
सन हजार चालीस । कथा वषानी विसवाबीस ।।
अठाईस इक सौ चौपई । येक द्यौस मैं पूरन भई ।।

इति वलूकिया विरही की कथा सपूरन १७७७ फागन सुदी ७ ।

विषय---वलूकिया इसरायल जाति का था । वह बडा गुणवान और विज्ञाता था । पुराण और तौरेत पढता था । मुहम्मद साहव के विषय मे जब पढा तो उनका प्रेमी हो गया । नवी को देखे विना अशात रहने लगा । माता से कहा कि नवी को खोजने के लिए जाता हूँ, पर माता ने हँसी समझ कर आज्ञा न दी । परतु जब देखा कि वलूकिया विना अपनी इच्छा पूर्ति किए जीवित नही रह सकता तब उसने जाने की आज्ञा दे दी । नवी के प्रेम मे लीन होने के कारण लोग उसको विरही कहने लगे । आगे वह इसी नाम से प्रसिद्ध हो भी गया । चलते-चलते एक पडित से मिला जो अत्यत लोभी था । उससे अपने सवध मे सब बाते कही और सहायता करने की प्रार्थना की । पडित लोभवश उसके साथ हो लिया । दोनो चलते-चलते एक पर्वत पर पहुँचे जहाँ सुलेमा तखत पर सोई हुई थी । उसके हाथ मे मुद्रिका थी, जिसका गुण यह था कि यदि किसी को मिल जाय तो वह ससार का बादशाह हो जाय । पडित ने लोभवश मुद्रिका उतारनी चाही, पर तुरत ही एक सर्प के काट लेने पर जलकर राख हो गया । इस पर जवरील प्रकट हुआ और उसने विरही से आगे जाने को कहा । साथ ही चेतावनी दी कि यदि वह नवी का प्रेमी न होता तो वच न सकता । विरही आगे बढकर क्या देखता है कि कचन भूमि है और कतार के कतार विविध फलो के वृक्ष खडे हैं । उसने फल तोडने चाहे, पर वृक्षो ने मनुष्य की आवाज मे फल न तोडने के लिए कहा । उसको बडा आश्चर्य हुआ और कारण पूछा । उन्होने उत्तर दिया कि वे अप्सर हैं और हिंदू अप्सरो से लडने के लिए आए हैं । यह सुनकर विरही आगे चला । जहाँ उसको सुधर्मी अप्सर मिला । उसकी सहायता से वह घोडे पर चढकर नवी की खोज मे निकला । निश्चित स्थान पर जाकर घोडा सुधर्मी के भृत्यो को दे दिया और पैदल आगे बढा । मार्ग मे एक फरिश्ता मिला, जिसके एक हाथ मे उजियाला और दूसरे मे अँधेरा था । पश्चात् दूसरा मिला, जिसके एक हाथ मे जल और दूसरे मे अग्नि थी । और आगे बढने पर चार फरिश्ते मिले प्रथम मनुष्यानन, दूसरा गोआनन, तीसरा गरुडानन और चौथा सिंहानन था । वे क्रमश मनुष्य जाति, पशु जाति । (पालतू), पक्षी जाति और वन पशु जातियो के शासक थे । विरही सबसे बाते करता हुआ अपने गतव्य स्थान की ओर बढता ही गया । इस वार एक फरिश्ता ऐसा मिला जो कनिष्ठिका उँगली को एक ओर ऊँचे और दूसरी ओर नीचे घुमाता था । पूछने पर पता चला कि उसके हाथ पर सूर्य का उदय और अस्त होना निर्भर है । आगे दो फरिश्ते और मिले, जिनके अधिकार मे खारे और मीठे दो समुद्र थे । वे दोनो समुद्रो को न तो मिलने देते थे और न अलग ही रखते थे । एक सागर और मिला, जिसमें मछलियाँ ही मछलियाँ थी । उनमे एक मछली सबकी प्रधान थी । विरही सबके सबध मे ज्ञान प्राप्त करता हुआ बढता ही चला गया । अत मे ऐसे स्थान पर आया जहाँ उसको इसराफील, जमीकाईल और जवराईल मिले । कनक के पछी दिखाई दिए, जो वैकुठ वास करते थे । वक्ष-वृक्ष मे उत्तम भोजनो का प्रवध था । विरही ने पेट भर भोजन किया । पश्चात् ख्वाजा खिज्र मिले, जिमसे उसकी अच्छी तरह बातचीत हुई । खिज्र विरही को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ । उसने विरही से कहा कि अभी नवी महम्मद साहव को ससार मे प्रकट होने के लिए वहुत वरस शेष है । विरही भौचक रह गया और ध्यान लगाकर नवी का स्मरण करने लगा । उसे ध्यान मे नवी का दर्शन हुआ, जिससे उसके चित्त को बडी शाति मिली । पश्चात वापस लौट आया । माता पुत्र को पाकर बहुत प्रसन्न हुई । विरही की चर्चा समस्त संसार मे होने लगी और वह पूजा जाने लगा ।

रचनाकाल

सन हजार चालीस। कथा बखानी बिस्तारवान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सन् हिजरी में सन् १०४० [illegible] १७७७ वि० दिया है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय में देखिए, "[illegible]" [illegible] पत्र।

संख्या १२८न. तमीम अनसारी की कथा, रचयिता—कवि जान, स्थान—[illegible] (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—[illegible] × [illegible] [illegible] पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०२ वि०, सन् १०५५ हिजरी, लिपिकाल—सं० १७[illegible] वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—तमीम अनसारी की कथा ॥

॥ चौपई ॥

सुमिरन आदि करौं करतार। इछया सकल [illegible] ॥
दूजे नबी जपूं कहि जान। ऐसौ मुक्त उपावन आन ॥ २ ॥
हुतौ तमीम येक अनुसारी। ताकी बिपति कथा उचारी ॥
प्रेत उडाइ गयौ लै तहा। याकी गैर [illegible] की जहा ॥
तिह धन पूछे बहुत सयाने। सबं जान इहि बात अयाने ॥
पूछत बैठि रही थकि नारी। [illegible] कह्यौ न [illegible] ॥ ४ ॥
चार बरष इहि भांति बिहाये। तिया सुता सुत भूष [illegible] ॥
उमर पिताव पास तिय आई। अपनी बिथा सकल प्रगटाई ॥ ५ ॥
हौं पुनि बालक भूष सताये। चार बरष अति दुषित बिहाये ॥
अब कछु ऐसौ करहु उपाई। जातें भूष हमारी जाई ॥ ६ ॥
उमर अमीर दर्ब कछु दायौ। साढे तीन बरस लौ पायौ ॥

अंत—

पुनि आये तिन भाषी बात। नग्रन मदीनें की [illegible] ॥
तिनकौं ख्वाज बिजर फुरमायौ। इत [illegible] ॥ १४८ ॥
याकौं घर की बढचो [illegible]। तुम अपनै [illegible] लै जा ॥
मोसौं इक बादर लपटायौ। गहर न करी [illegible] लै [illegible] ॥ १४९ ॥
उमर अमीर दिलासा कीनी। याकी तिय याही कौ दीनी ॥
यहु सुष सौं अपनै घर आयौ। दष सिगरौ [illegible] गंवायौ ॥ १५० ॥
संवत सत्रह सै द्वै भनिये। सन हजार पचावन गनिये ॥
सुलप कथा बांधी कवि जान। बाचन लिषत न [illegible] ॥
इति तमीम अनसारी की कथा संपूर्ण १७९७ फागन सुदी ॥ ८ ॥

विषय—तमीम असारी को जब एक प्रेत उड़ा [illegible] असहाय अवस्था में रह गए। उन्होंने तमीम का पता लगाने [illegible] न हो सके। चार वर्ष किसी प्रकार गृह सपत्ति के [illegible]। [illegible] जब कुछ न रहा तब स्त्री अमीर उमर के यहाँ गई और अपनी विपत्ति [illegible]। [illegible] ने कुछ धन दिया जिससे उनके साढे तीन वर्ष और कट गए। [illegible]

कहा यदि आज्ञा दी जाय तो वह किसी पुरुष को रख ले, जो उसका और उसके बच्चो का पालन पोषण कर सके। उमर ने आज्ञा दे दी। एक परदेशी उसी समय मिल गया जिसको लेकर वह घर चली गई। रात को जब सोने की तैयारी कर रहे थे तो उसी समय तमीम असारी पहुँच गया। घोर अधकारपूर्ण रात्रि मे जबकि रह-रह कर वर्षा भी हो रही थी, तमीम असारी की आवाज सुन कर उसकी स्त्री को बडा भय हुआ। उसने समझा कि प्रेत उसके दूसरे पुरुष को लेने के लिए आया है। उसने किवाड नही खोले। भीतर से कहा, तुम तमीम असारी नही हो वरन् उसके रूप मे प्रेत हो और दूसरे पुरुष को लेने के लिए आए हो। तमीम ने साक्षी के रूप मे अपने घर की सब वस्तुओ के नाम लिए, पर स्त्री को विश्वास न हुआ। प्रत्युत उत्तर दिया कि प्रेत सब कुछ जान सकता है। इस प्रकार बातें करते-करते प्रात काल हो गया। गाँव के लोग इकट्ठा हो गए। सबने स्त्री का पक्ष लिया और तमीम असारी को उमर अमीर के पास जाने को कहा। तमीम निराश होकर अमीर के पास गया और उससे अपनी कहानी आरभ की —

जहाँपनाह, एक रात जब मैंने स्त्री से पानी माँगा तो उसके उदासीन रहने पर मुझे बडा क्रोध हुआ। मै घर से बाहर चल पडा। कुछ दूर चलने पर एक प्रेत ने मुझे उडाया। सागर मे प्रविष्ट होता और अनतर शीघ्र ही आकाश मे उड जाता। इससे मुझे जीवन की आशा न रही और मैं मूर्छित हो गया।

जब चैतन्य हुआ तो अपने को भूमि मे पडा पाया। कही चोट भी नही। चारो ओर बहुत से मनुष्यो को देखा। एक नमाज करता हुआ दिखाई दिया। उसने मुझे एक बाग बताया जहाँ मैंने मेवा खाकर क्षुधा तृप्त की। वहाँ दो सेनाएँ आई और आपस मे लडने लगी। एक सवार ने मुझे घोडे पर चढा लिया। ज्ञात हुआ कि वह तुरक परी था। तुरक परियो ने हिंदू परियो को परास्त कर दिया था। मुझे लेकर वह अपने स्थान पर गया। जब उसको मेरे मुसलमान होने का पता चला तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने मुझे अपने लडके को कुरान पढाने के लिए नियुक्त कर दिया और मेरी इच्छा पूरी करने का वचन दिया। कुरान समाप्त हो जाने पर उसने प्रेत द्वारा मुझे मदीना की ओर रवाना किया। प्रेत मुझे मारना चाहता था, अत बहुत ऊपर आकाश मे उडा ले गया। परतु उसके पख टूट गए और मैं भूमि पर गिर पडा। फिर भी कोई चोट मुझे नही आई। भाग्य सराहता हुआ एक सराय मे आया। वहाँ देखा कि चारो ओर लाल ही लाल बिखरे है, पर ले जाने का कोई साधन नही होने से कुछ भी न लिया। एक मनुष्याकार प्राणी मिला जो मुझे शुतुरमुर्ग के रूप मे सुलेमा के स्थान पर ले गया। सुलेमा के हाथ मे मुद्रिका उतारते समय वह जल कर भस्म हो गया। पश्चात् एक पुरुष प्रकट हुआ जिससे मुझे सब बातें ज्ञात हुई। उसके कहने से पच्छिम दिशा की ओर प्रस्थान किया। मार्ग मे रूपवती परी की पुत्री मिली जिसको कुरान पढाकर प्रसन्न किया। उसने एक प्रेत को मुझे घर पहुँचा देने की आज्ञा दी। परतु वह प्रेत भी एक दिन चल कर गुप्त हो गया। पश्चात् एक महापुरुष मिला जिसने एक हाजी के साथ मुझे मदीना की ओर जाने-वाले जहाज मे बिठला दिया। जहाज पहाड से टकराकर डूब गया। मैं बचकर एक वन मे पहुँचा। वहाँ कई कौतुक देखे। पहिले मुझे इलियास मिला, फिर ख्वाजा खिज्र मिला और तत्पश्चात् वृद्धा के रूप मे लक्ष्मी मिली। खिज्र ने दयावश मुझे बादल द्वारा मदीना पहुँचा दिया।

अमीर उमर को तमीम असारी की कथा सुनकर बडा आश्चर्य हुआ और सहानुभूति प्रकट कर उसको स्त्री बच्चे दिला दिए।

रचना काल

वसंत सत्रह सै द्वै भनिये। संन हजार पंचावन गंनिये ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल १७०२ वि०, सन् १६४५ ई० है। [illegible] १७७७ वि० दिया है।

रचयिता जान कवि हैं। इनके विषय में कृपया देखिए, "रसनायनी [illegible]-पत्र।

संख्या १२६ प. कथा कलदर की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (उत्तर राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०२ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा कलदर की।

॥ चौपई ॥

प्रथम नाम निरजन लीजै। तब आरभ कथा को कीजै॥
नाम लेत उपजै घट ग्यान। प्रान इछ पूज यहि जान॥
बिरहु पेम सिरजे करतार। लै मानस को लावहि पार॥
जा घट मै उपजै ये दोइ। मित मिलाप विरम ना होइ॥
विरहु अगनि मै जोत न जारै। कचन तैं कुदन करि डारै॥
पैमु उदधि मै बूढक दैहै। मित रतन ताकै कर ऐहै॥
पौढत नाहि मित वैरागु। जागत जागत जागै भाग॥
जाके नैन नींद ना वरै। मित रूप तकि दिठु परै॥
प्रेम नाहि जाकै घट माहि। सो निरजोत फिरत ज्यौ छाहि॥
नवी प्रेमु उपज्यौ ससार। सकल पेमुहौं को बिस्तार॥

॥ दोहा ॥

प्रेमु निरजन मैं रवी ऐसे रह्यौ समाइ।
जैसे घन जल उदधि तें न्यारो करयौ न जाइ॥

:o: :o. ·o·

अंत—

धन जे पेम पंथ मरि गये। मरे न मरे अमर जगु भए।
कहत जान जामै ना नेहु। रज समान जानहु सो देहु॥

॥ दोहा ॥

सत्रह सै द्वै पर भये हिम रितु मैं कहि जान।
सुलप कथा यहु पैमु की सुनी सु करयौ बखान॥

इति कथा कलदर की सपूरन फा० सु० ८।

विषय—कलदर किसी मसीत में रहता था। एक दिन घूमता हुआ [illegible] की दूकान से निकला, जहाँ एक चेरी को देखकर मोहित हो गया। [illegible] दे दे और वदले में उसका सर्वस्व ले ले। सौदागर सहमत न हुआ। उसने [illegible] माँगी। कलदर के पास भला उतनी मुद्राएँ कहाँ थी। [illegible] बादशाह को जब पता चला कि चार रूपवती चेरियाँ सौदागर के पास [illegible] मनोवाछित मुद्राएँ देकर कलदर के सामने चेरियों को लेकर [illegible]। लोगो ने उसकी हँसी उड़ाई और खूब फटकारा। परंतु [illegible]। रोता बिलखता वह मसीत में चला गया। एक दिन एक दरवेश मसीत में आया। [illegible]

उसकी घनिष्ठता बढ गई; परतु उसको दिन प्रतिदिन पीला एव निर्बल होते देख दरवेश बडा चकित हुआ। उसने कारण पूछा तो कलदर ने अपनी सारी कहानी सुना दी। दरवेश ने ने कहा, यदि उस जैसे वीस सहस्त्र मनुष्य भी प्रयत्न करे तो भी चेरी नहीं मिल सकती। कलदर ने यद्यपि यह स्वीकार किया तथापि अपने प्रेम को न छोड सका। दरवेश से कहा कि वह प्रेम मे शीघ्र ही प्राण तज देगा। उसकी मृत्यु प्रेम के रूप मे उसके पास आ गई है, अत प्रसन्नतापूर्वक वह उसका आलिंगन करेगा। उसने विनय के साथ दरवेश से अपने कलेजे के भीतर जवाहर होने की वात वात कही जिसको उसकी मृत्यु के उपरात वह कलेजे को चीरकर निकाल ले। पश्चात् जौहरियो को दिखाकर मूल्य ऑके, पर वेचे नही। जवाहर केवल वदशाह को दस हजार मुद्राओ मे वेचा जाय। यह कहते ही वह अचेत हो गया। दरवेश ने उसके कहने के अनुसार ही कार्य किया और कलेजे के भीतर से जवाहर निकाला। जौहरियों को दिखाकर मूल्य आकता, गया। वात वादशाह तक जा पहुँची और उसने दस हजार मुद्राएँ देकर जवाहर खरीद लिया। जवाहर देखकर वादशाह बडा प्रसन्न हुआ और उसको हाथ पर बॉध लिया। उसी प्रसन्नता मे उसने अपने पास उस चेरी को वुलाया जिससे कलदर का प्रेम था। उसके साथ वह रति क्रीडा का आनद लेना चाहता था, पर प्रेमालिंगन करते समय जवाहर चेरी से छू गया और तत्काल जल के रूप मे उसकी छाती के ऊपर विखर पडा। चेरी उचक कर दूर जा खडी हुई। वादशाह को वडा आश्चर्य हुआ। उसने चेरी से भागने का कारण पूछा। चेरी ने कारण वताया तो और आश्चर्य हुआ। जव जवाहर का ध्यान आया तो देखा कि वह अपने स्थान पर नही है। अव तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। सभा मे जाकर समस्त वृत्तात कहा, पर वहाँ भी कोई समाधान न कर सका। अत मे वही दरवेश वुलाया गया जिससे जवाहर खरीदा गया था। दरवेश ने कलदर की सारी कहानी वादशाह को सुनाई। वादशाह सुनकर वडा दुखी हुआ और कहा, "यदि कलदर के प्रेम का पता चलता तो मैं उसको चेरी अवश्य दे देता।"

रचनाकाल

सत्रह सै द्वै पर भए हिम रित मै कहि जान।
सुलप कथा यह प्रेम की सुनी सु करचौ वपान॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७०२ वि० है। लिपिकाल दिया नही। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६फ. कथा निरमल की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी, एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा निरमल की चौपाई॥

कहत जांन कवि जौलौं जीजै। तौलौं करता सुमिरन कीजै॥
पुनि हजरत को लीजै नाम। पूजै सवही मनसा कांम॥
सुलिप कथा वांधी कवि जान। पढत लिषत ना ह्वै अरसान॥
निरमल की सत सुनि मन भायौ। तातें सवकौं जोरि सुनायौ॥
सील समान और कछु नाहि। सती अमर नितु है जगु माहि॥
अपनै पिय सौं विमुप न भई। ते मूये हूं ना मरि गई॥

॥ दोहा ॥

जाकै घट मे होइ सतपति सौं हित ठहिराइ। सील विना कवि जान कहि घरघर रूप बिकाइ॥

कहत जान इक ही पतमाहि। याको बहुत [illegible] ॥
रूपवत तिय जो डिठ परिहै। तासों काहू [illegible] न [illegible] ॥
जासौं होइ जीय भावरि। तापर देवे धरै [illegible] ॥
दमका दय जु कह्यौ न मानत। ताको बीरयाई [illegible] ॥
जैसे कैसे छाडत नाहि। [illegible] ना मन [illegible] ॥
काम अध जोवन मद माता। [illegible] छिन होत न [illegible] ॥

•०: ० •०•

अत—

निरमल जबहि सुने ये बैन। [illegible] सौं [illegible] जग [illegible] ॥
कह्यौ धाइ छत्रपति कों देहि। [illegible] नेहु [illegible] ॥
सत उपर सुनि दाई दारा। नैना काट धरा [illegible] ॥
देखि छत्रपति अधिक लजायौ। पछतावन अपन [illegible] ॥
बहुरौं जबलौं जीयै साहि। परनारी [illegible] न [illegible] ॥
सत निरमल कौ राख्यौ दई। बात अमर जगु मैं यहु [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

कथा कथी यहु जान कवि वाढत मुनि उछाह।
सन सत्रह से चार है मास कहत है माह॥

कथा निरमल की सपूर्न ।

विषय—एक बादशाह बडा ही कामुक था। [illegible] देखने की नित्य अभिलाषा रहा करती थी। जिस पर आसक्त हो जाता [illegible]। यदि दाम देकर सफलता मिल जाती तो अच्छा रहता, नहीं तो बलपूर्वक [illegible]। [illegible] महल के ऊपर खडा होकर चारो ओर देख रहा था कि एक रूपवती स्त्री [illegible] पडी। फिर क्या था, बादशाह बेचैन हो गया। धाई को बुलाकर [illegible] ओर भेजा। धाई उस स्त्री के घर पहुँची और उसके नाम, धाम [illegible] पूछा। स्त्री ने कहा कि वह राजपूत जाति की है और उसका नाम निरमल है। [illegible] जाने के कारण वह विधवा हो गई है। घर मे अकेली रहती है। धाई ने [illegible] समझकर उससे बादशाह की इच्छा प्रकट की। राजपूत स्त्री [illegible] घर से निकालने लगी। धाई भला ऐसा व्यवहार क्यो सहने लगी थी। [illegible] को बलपूर्वक पकडना चाहा पर यह जानकर कि वह छूते ही मार देगी, [illegible]। [illegible] बादशाह के पास वापस गई और उससे सब समाचार कहा। उसने [illegible] स्वय जाने की सम्मति दी जिससे उस के रूप को देख [illegible]। बादशाह सहमत हुआ। धाई के साथ आधी रात को निरमल के घर [illegible]। [illegible] बादशाह को घर मे घुसते देख विनयपूर्वक आने का कारण पूछा। [illegible] कि उसकी आंखो ने उसको घायल कर दिया है। निरमल ने यह सुनते [illegible] निकाल कर बादशाह को देते हुए कहा, "जिन आंखो ने आपको [illegible]।" बादशाह यह देखकर लज्जित हो गया तथा पछताता हुआ [illegible]। [illegible] परस्त्रियो की चाहना छोड दी।

रचनाकाल

॥ दोहा ॥

कथा कथी यहु जान कवि वाढत मुनि उछाह॥
सन सत्रह से चार है मास कहत है माह॥

:०: :०: :०:

अंत— ॥ चौपई ॥

सहंस आंन मो कौं करतार। हौं वासौं करिहौं वहुप्यार ॥
अत बात को सुन्यौ विचार। धन सौदागर डारचौ मार ॥
रहि न सकी करिकै यहु काज। गई इराक डरत वहु भाज ॥
तिह पिन मानस दये पठाइ। सौदागर धन लये वुलाइ ॥
आए तव वहु कीनौ प्यार। दीने वकस पचास हजार ॥
कुलवती लै वेटी कीनी। वाकै पियहि वजीरी दीनी ॥

॥ दोहा ॥

जो तिय सत छाडै नहीं पति रापै भरतार।
मन इछ्या पूजै सकल ह्वै दयाल करतार ॥

॥ सोरठा ॥

संवत् हौ संसार सोरह सै जु तिरानुवो।
कीनो सत्त विचार पूस मास कविजान यहु ॥

इति कथा कुलवती की संपूरन भई १७७७ फसु १२।

विषय—गयासुद्दीन वादशाह का पुत्र कुतुवुद्दीन भ्रष्ट चरित्र का था। जिस स्त्री पर अनुरक्त हो जाता उसके साथ अवश्य व्यभिचार करता। राज्य मे विरली ही स्त्री उससे बच पाती। एक दिन आखेट के समय उसने एक सौदागर की स्त्री को देखा और मोहित हो गया। स्त्री कुलवती थी। वह पुरुषो को देखना ही पाप समभती थी। कुतुवुद्दीन जव घर गया तो जाल रचाकर सौदागर को घोडो के व्यवसाय के निमित्त इराक की ओर भेज दिया। पश्चात् अपनी दूतियो को उसकी स्त्री के पास भेजा। दूतियों ने वडे छल वल मे कुलवंती को शाहजादे के चगुल मे फँसाना चाहा, पर वह किसी प्रकार तैयार न हुई। इतना ही नही, उसने उनकी वडी दुर्गति भी की। अत मे कुतुवुद्दीन ने कुलवती को वलपूर्वक पकडने के लिए कई दूतियो को भेजा। यह देखकर कुलवती डरी तो अवश्य, पर उसने वडी वुद्धिमानी से काम लिया। दूतियो को यह कह कर वापस कर दिया कि वह कुलवती है, अत. शाहजादे से वह गुप्त रीति से मिलेगी, जिससे समाज मे उसकी प्रतिष्ठा वनी रहे। शाहजादा प्रतिदिन अर्धरात्रि को उसके घर आ जाया करें। दूतियाँ प्रसन्न होकर शाहजादे के पास गई और उसे सव वातें कह सुनाई। फिर क्या था, शाहजादा अपनी मनोकामना की पूर्ति के निमित्त तैयारी करने लगा। इधर कुलवती ने अपनी दासियो को सिखा पढा कर शाहजादे के ज्यौनार का प्रवध करने के लिए कहा। उसने उन्हें सावधान कर दिया कि जैसे ही शाहजादा उस पर वलात्कार करें, वे शीघ्र ही उसकी आवाज पर मूसलो से शाहजादे पर आक्रमण कर दें। अर्धरात्रि का समय हुआ और शाहजादा कुलवती के पास आया। ज्यौनार और मद पीकर जव उन्मत्त हो गया तो कुलवती की ओर वासना पूर्ति के निमित्त वढा। कुलवती चिल्लाई और दासियाँ सुनते ही मूसल लेकर शाहजादे के ऊपर भपटी। शाहजादे का प्राणात हो गया। कुलवती वादशाह के भय से पति को खोजती हुई इराक पहुँची। पति से समस्त वृत्तात कहा जिससे वह वहुत प्रसन्न हुआ। गयासुद्दीन वादशाह ने भी जव यह सुना तो पुत्र के मरने से प्रसन्न ही हुआ। उसका मृतक शरीर नगर मे फिराया गया और वरे कर्म करने के लिए प्रजा को चेतावनी दी। कुलवंती को वापस वुलाया गया और उसके पति को वजीर वनाया।

रचनाकाल

संवत हौं संसार सोरह सै ज तिरानुवौं।
कीनो सत्त विचार पूस मास कवि जान यहु ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६९३ वि० और लि० का० सं० १[illegible] वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष [illegible] देखिए, [illegible]। [illegible] रचना शाहजहाँ बादशाह के समय में रची गई।

संख्या १२६य. कथा खिजर खाँ शाहजादे व देवल दे की, रचयिता—जान [illegible] स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—[illegible] × [illegible] इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६९४ वि०, लिपिकाल—सं० १[illegible] वि० प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा खिजर खा साहिजादे वो देवल दे की ॥

॥ चौपई ॥

सुमिरौं आदि जगत को करता। सकल इछ भरता दुष हरता ॥
नाव लेत ऊपजै आनद। ततछिन होहि दूरि दुष दद ॥
इछा दाइक दीनदयाल। रकहि पल मे करत भुपाल ॥
:o: :o: .o:
पातसाह को करों बषान। साहिजहा सम नाहि न आन ॥
दुनिया दीन दए करतार। दयावत पुनि मरद मुदार ॥
जो बर करै निबर तिह करिहै। निरबर के सिर पर कर धरिहै ॥
दै सुभाव मे मूछनि ताव। डरपै राजा राण राव ॥
जौ चढिहै पेलन चौगान। डरिहै सबै जग के सुलितान ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

चिरजीव नित ही रहो साहिजहा सुलितान।
जौलौं रवि संसार मैं तौलौ घट मे प्रान ॥

॥ चौपई ॥

सुनि सुनि लेहु कहै कवि जान। सुलिप कथा इक करो बषान ॥
जोरत अतिमन पेद न होइ। थोरी कथा सुनै सब कोइ ॥
पठत रसन नाहिन अरसात। लिखत हाथ नाहिन षणसात ॥
सुलिप कथा यह बाधी ऐसी। नैननि मध तारिका जैसी ॥
कहा जु या मधि सूझत नाहि। सुष दुष बुधि सबहौं या माहौं ॥
षिजरषान देवल को पेमु। बरनो मनसा बाचा नेम ॥
दुष सुष षिजर षान कौं भयो। ते फिरिकै बरिहौ अब नयो ॥
:o: .o. .o.
हैंदू बहुत तुरक करि डारे। जे न भए ते पल मैं मारे ॥
:o: .o .o:

अंत—
षिजर जोयो जौलौं जग माहि। देवल तें पल बिछुर्यो नाहि ॥
संग रहै उजियारै माहि। जैसे घट लागी परछाहि ॥
अंधियारै हूं इक है जाहि। ज्यौ घट नाहि समतत छाहि ॥
ऐसे पेमु पोति मैं पागे। नैकु न बिछुरे सूतै जागे ॥
रहे एक संग ललना लाल। तब बिछुरे जब पुहच्यो काल ॥

अमर न कोऊ या जग मांहि। बातें सदा अमर रहि जाहि ॥
कावि रचे करतार विनानी। नौतन करिहैं बात पुरानी ॥
जौ कर्त्ता कवि नाहि उपावति। बात पुरातन को प्रगटावत ॥

॥ दोहा ॥

सोरह सैं चौरानुवौ संमत हुतौ जहान।
मास पूस सुद दूज ही कथा कथी कवि जान ॥

इति कथा षिजरषा साहिजादै वा देवल दे की संपूरन भई सवत् १७७८ मिती चैत सुदी ६ लिषत फतेहचद ताराचद का डीडवाना।

विषय—अलाउद्दीन बादशाह ने जब गुजरात पर चढाई की तो राजा करन को हराकर उसका सारा परिवार अपने अधिकार मे कर लिया। रानी कमलावती को, जो अधिक रूपवती थी, उसने अपनी सेवा मे रख लिया। एक दिन कमलावती ने कहा कि उसकी पुत्री देवल दे है जिसको राजा करन भागते समय अपने साथ ले गया। वह उसको अत्यत प्रिय है। यदि बादशाह उसको किसी प्रकार ले आवे तो वह अत्यत प्रसन्न हो और उसका जीवन सुख मे बीते। बादशाह ने इस कार्य के निमित्त अलिफ खाँ सरदार को गुजरात भेजा। राजा करन देवल दे का विवाह राजा सिंघ देव के साथ करना चाहता था। परतु जैसे ही डोला सिंघ देव के पास भेजा गया, अलफ खाँ ने मार्ग मे ही देवल दे को पकड लिया। वह उसको लेकर सीधा बादशाह के पास दिल्ली आया। बादशाह ने देवल को देखा तो उसकी इच्छा उससे अपने पुत्र खिजर का विवाह कर देने की हुई। रानी कमलावती और खिजर की माता भी सहमत हो गई। उस समय खिजर और देवल दोनो अवस्था मे छोटे थे, अत विवाह पीछे के लिए टाल दिया गया। परतु जब दोनो तरुणावस्था मे पहुँचे और दोनो का प्रेम बढने लगा तो बादशाह के विचारो मे परिवर्तन हो गया। उसने खिजर की माता से कहा कि देवल दे यद्यपि राजा की लडकी है, पर वह लूट का माल है। इसलिए वह दासी सदृश है। तुम्हारे भाई अलिफ खाँ की लडकी है, अत उसके साथ खिजर का विवाह करना ठीक होगा जिससे दोनो कुटुबो मे अधिकाधिक प्रेम बढे। राय निश्चित हो गई और खिजर का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध अलिफ खाँ की पुत्री से कर दिया गया। परतु खिजर खाँ देवल दे को न भूल सका। उधर खिजर की माता ने देवल दे को खिजर की आँखो से दूर कर दिया और सेवको को कडी चेतावनी दे दी कि खिजर और देवल दे का कभी मिलन न होने पावे। परतु होनहार बलवान कि खिजर खाँ देवल के विरह मे दिन प्रतिदिन पीला पडने लगा। उसको देखकर उसके सबधी और मित्रो को बडा दुख हुआ। वे सब मिलकर खिजर की माता के पास गए और उसे समझाया कि भाई की पुत्री के लिए पुत्र की आहुति देना मूर्खता है। खिजर की माता को बात जँच गई और बादशाह के परामर्श से अत मे खिजर का विवाह देवल दे से हो गया।

रचनाकाल

सोरह सैं चौरानुवौ संमत हुतौ जहान।
मास पूस सुद दूज ही कथा कथी कवि जान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६९४ वि० और लि० का० सवत् १७७८ वि० है रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विषय मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र प्रस्तुत रचना शाहजहाँ बादशाह के समय मे लिखी गई।

रचयिता के कथनानुसार मुसलमानी कारा मे बहुत से हिंदुओ को मुसलमान (तुरक) बनाया ज़ाता था तथा जो नही बनते थे उन्हे मार दिया जाता था।

संख्या १२६र. कथा कनकावती की, रचयिता—[illegible] (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८ × [illegible] —२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६३, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य [illegible] सं० १६७५ वि०, लिपिकाल—सं० १८७८ वि० प्राप्तिस्थान—[illegible]।

आदि—कथा कनकावती की ॥ चौपई ॥

सुमिरौ आदि अलप करतार। [illegible] ॥
मानस रचन भयौ जब चाव। तब [illegible] ॥
सुर अछिर तौ आदि पठाए। [illegible] ॥
काटि सघन वन नग्र वनाए। [illegible] ॥
ज्यौं साहिब कौ आवन जानै। [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

तबहि राज मानस दयौ सुर अछिर [illegible] ॥
आज दई की दया तें जग मैं रहे [illegible] ॥

कहित जान कवि चित मैं आनौ। [illegible] ॥
लिपत हाथ नाहिन अकुलावै। पढत नहीं रसना [illegible] ॥
ढूढि लही यहु कथा पुरानी। [illegible] ॥
भाषा आनि जो मुष आई। [illegible] ॥
कीनी वुधि परवान विचार। जहा [illegible] सुधार ॥

अंत—

सोई हूं ज करै अविनासी। कहा प्रद लछमी [illegible] ॥
जोई जगपति वहुत रिसायो। महा विरोध [illegible] ॥
सिंघपुरी सगरी सघारी। [illegible] भरथ [illegible] ॥
गढ उडाइ कै डारयौ ककट। भरथ सिंघ दीने दोऊ [illegible] ॥
फिरि तिनहीं जगपतिधी दीनी। करि विवाह [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

पोषन की जिय चाव है पोषन [illegible] ।
देवौ धौं कवि जान कहि कहा दई [illegible] ॥

॥ दोहा ॥

सोलह सै पचहत्तरं जहांगीर कै राज।
तीन द्यौस मैं जान कहि यहु साज्यौ सब साज ॥

इति कथा कनकावती की सपूरन भई सवत् ॥ १७७८ ॥ [illegible] चंद का चौ०।

विषय—भरथनैर नगर के राजा [illegible]। [illegible] का सिंघपुरी के राजा की पुत्री कनकावती से स्वप्न में प्रेम हो गया। [illegible] भरथ ने सिंघपुरी के राजा से युद्ध किया [illegible] आया। परमरूप एक सन्यासी के साथ हो लिया। [illegible] कनकावती को अपने ही पंडित द्वारा जब परमरूप [illegible] तो वह उससे मिलने के लिए अधीर होने लगी। [illegible] उससे विवाह न कर ले। उसने अपने पंडित से परमरूप को लाने [illegible]। [illegible]

भरथनैर गया, पर वहाँ राजकुमार को नही पाया । वहुत प्रयत्न करने पर एक गाँव मे सन्यासी के साथ राजकुमार मिला । वातचीत होन पर राजकुमार का कनकावती की वड़ी चिंता हुई । उसन सन्यासी से भेद छिपाने की विद्या (कछप निधि) प्राप्त की और वहुत से तन्त्र मन्त्र भी सीखे । कुछ दिन पश्चात् जब सन्यासी मर गया तो विद्या के बल से और पडित की सहायता से कनकावती से मिला । कनकावती के इच्छानुसार पडित ने दोनो का विवाह गुप्त रीति से कर दिया । वहुत दिनो के वाद परमरूप कनकावती को लेकर अपने देश चला आया । सिंधराय को इसका पता चला तो जगपति से सव वृत्तात कह दिया । जगपति सवसे पहले उसी के ऊपर टूटा और उसको कैद कर लिया । पश्चात् भरथ सिंह को भी युद्ध मे परास्त कर बदी बना लिया । परमरूप और कनकावती ने नदी म कूद कर प्राण वचाए , परतु नदी पार करने मे दोनो का विछोह हो गया । परमरूप जगराइ नामक राजा के हाथ आया जिसको कोई पुत्र न था । अत उसने राजकुमार को अपने पास ही पुत्र रूप मे रख लिया । कनकावती मल्लाहो के हाथ लगी, जिन्होने उसे ले जाकर राजा जगपति को दे दिया । जगपति को भी कोई सतान न थी, अत कनकावती को ही सतान के सदृश मानने लगा । कुछ दिन पश्चात् जगराइ के कहने पर जगपति ने कनकावती का विवाह परमरूप से कर दिया । दोनो प्रेमी फिर मिल गए और वडे प्रसन्न हुए । परमरूप ने दहेज माँगते समय जगपति से भरतसिंह और सिंहराइ को छोडने के लिए कहा जिसे उसने स्वीकार कर लिया । पश्चात् सारा भेद प्रकट हो जाने पर जगराइ और जगपति पहले तो चकित हुए, पर पीछे भरथ सिंह और सिंहराइ से मिल कर वहुत प्रसन्न हुए ।

रचनाकाल

सोलह सै पजहतरै जहागीर कै राज ।
तीन द्यौस मैं जान कहि यहु साज्यौ सव साज ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १६७५ और लि० का० सवत् १७७८ है । रचयिता जान कवि है । इनके सवध मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र । प्रस्तुत रचना जहाँगीर के समय मे रची गई और तीन दिन मे समाप्त हुई । रचयिता ने इसमे लिखा है कि कथा लिखने मे उसने ग्वालियर भाषा का व्यवहार किया है ।

सख्या १२६ ल. कथा कौतूहली की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १६७५ वि०, लिपिकाल—सवत्—१७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—कथा कौतूहली की चौपाई ।।

परथम निरगुन के गुन गाऊ । हौं नरगुन गुन पार न पाऊ ।।
वाकै गुन अनगन अनलेपै । मोसे निरगुन कहा परेपै ।।

:o: :o: :o:

मोसे अपराधी जग याही ते रचे विरंचि छाडि दये विरद दयाल पहिचानियें ।
सेवक कूं सेवाफल इहाहू के भूप देत वाकूं कभूं जानै नाहि सोउ उहा जानिये ।
सुदर सरूप गुनी कौन कौन मानै मन निगुन निरूप निरगुन ही कै मानिये ।
कहै कविजान भरैं भरिये संसार गति अभरे भरन करता रहीं बषानिये ।।

कवित्त छप्पै

अछिर चारि बिचारि विधि रच्यौ महमद दुख हरन ।
ममी मुहर उहि मिहर भाग कागर जिहि सो घन ।

हहै हेत जल उनहि मीचियो सोउ लह्यो धन ।
ममं मेदनी मनिम वंन वियन की मदन ।
ददं दुख न अपराध नाम ताकी निहृ पटन ॥
कहिजान दुहू जग दूसरो जन विन और न को सन्न ॥

॥ चौपई ॥

पहिलं कथा कथी कवलावती । पाछं कही पुरंदर [illegible] ॥
भाषि वहुरि वात कनकावति । अवहि सुनहु कौतूहल [illegible] ॥
उनमं छद दोइ कं तीन । यामं वहु समसो [illegible] ॥
कौतूहल उपज्यो चित जान । कौतूहल की कियो वखान ॥
जहा जुरं सो चित सौं जोरि । लेहु मर्जारि जहा [illegible] ॥

:o: ·o· ·o·

अंत--

॥ भुजगी छद ॥

करं दान राजा कियो जग अजाची ।
उदीची व दछित औ प्रतीची व प्राची ।
रह्यो नाहि जाचिग सुनी रीति सावी ।
सुआई तमासं सुकेसी घ्रिताची ॥

॥ दोहा ॥

सोलह सै पचहतरं कथा कथी यहु जान ।
फूटे टूटे जोरि यहु जुरतें रापहु कान ॥

इति कथा कौतूहली की सपूरन भई समतु १७७८ चंत सुदी १० ॥ [illegible] फतेहचंद ताराचंद कै कासवई ॥ १८ ॥ चौपई ॥ ७२ ॥ ॥ दोहा ॥ ८१ ॥ ८८ ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ २ ॥ सोरठा ॥ ६ ॥ सारा ही ॥ २२८ ॥ (२३६ जोट होता है) ।

विषय--चन्द्रसेन हुलासपुरी नगरी का राजा था । उसकी पटरानी का नाम [illegible] था जिससे उसको सरवगी नाम का पुत्र हुआ । सरवगी युवावस्था को प्राप्त होने [illegible] चौदह विद्याओ मे भी निपुण हुआ । शील सौंदर्य मे तो वह अद्वितीय था । [illegible] आखेट करने के लिए गया तो दो वनजारो मे उसने राजकुमारी कौतूहल दे [illegible] मे सुना । राजकुमारी के पिता का नाम जगरूप और माता का नाम [illegible] था । [illegible] प्रतिज्ञा थी कि वह न तो विवाह करेगी और न किसी अन्य पुरुष का मुंह देखेगी । [illegible] अन्य पुरुष उसकी दृष्टि मे पडेगा तो उसके लिए मृत्यु का दंड होगा । [illegible] राजकुमार यह जानकर भी उसमे प्रेम करने लगा । वह राजकुमारी को पाने [illegible] देश को चल पडा और उसके उपवन के माली के यहाँ पुत्र रूप में रहने लगा । [illegible] की सहायता से उसने कौतूहल दे को देख लिया । तथा वनजारो ने [illegible] पाया । अब उसे विरह सताने लगा । विना कौतूहल दे के उसको [illegible] पडने लगा ।

एक दिन जब वह राग अलाप रहा था तो प्रधान मन्त्री ने [illegible] । [illegible] द्वारा नगर भर मे उसकी चरचा होने लगी । राजा जगरूप भी [illegible] सुनने गया । उसके साथ चौदह विद्याओ के संबंध मे भी [illegible] । [illegible] मत्री बनाने का हुआ, पर शिर पर केश न होने के कारण ऐसा न हो सका । [illegible] को भी यह बात विदित हुई । जब उपवन मे गई तो गाना सुनाने के लिए [illegible] को बुलाया । राजकुमार जब माली के भेष मे राजकुमारी के सामने [illegible] कुमारी उसके सौंदर्य को देखते ही मोहित हो गई । पीछे गाना सुना [illegible]

जाती रही। इतने मे सध्या हो गई और राजकुमारी को राजमहल मे चला जाना पडा। इस प्रकार दोनो का प्रेम सबध हो जाता है। राजकुमारी मास मे एक दिन उपवन मे जा पाती थी। अत उपवन मे जाने के लिए उस दिन की प्रतीक्षा करने लगी। परतु दैव सयोग से वह वर्ष भर तक उपवन मे न जा सकी। दूसरे दिन पश्चिम देश के राजा के मत्री ने अपने राजा से कौतूहल दे का विवाह करने के लिए महाराज जगरूप से कहा। महाराज जगरूप ने कौतूहल दे की प्रतिज्ञा की वात कहकर मत्री को वापस कर दिया। इस पर पश्चिम देश का राजा बहुत क्रुद्ध हुआ और जगरूप के ऊपर आक्रमण करने के लिए समय की प्रतीक्षा करने लगा। इतने मे एक वर्ष और बीत जाता है और राजकुमारी अपनी धाय की सहायता से राजकुमार सरवगी से मिल लेती है। राजकुमार अपना पूरा परिचय देता है जिसे सुनकर कौतूहल दे उसके हाथो मे अपने को समर्पित कर देती है। दोनो रात दिन साथ-साथ रहने लगते हैं। पश्चात् पश्चिम देश के राजा का आक्रमण होता है जिसमे राजकुमार सरवगी के बाहुबल से राजा जगरूप की विजय होती है। युद्ध मे राजा सरवगी के केशो को भी देख लेता है जिससे उसके राजकुमार होने का उसको विश्वास होता है। पश्चात् राजकुमार सरवगी अपना सच्चा परिचय दे देता है। राजा बहुत प्रसन्न होता है और कौतूहल दे का विवाह उससे कर देता है। कुछ दिन पश्चात् राजकुमार कौतूहल दे को लेकर अपने देश चला जाता है और माता पिता को प्रसन्न करता हुआ आनदपूर्वक रहने लगता है।

रचनाकाल

सोलह सै पचहतरै कथा कथी यहु जान।
फूटे टूटे जोरि यहु जुरतें रापहु कांन॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १६७५ और लि० का० सवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके विशेष वृत्त के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र। प्रस्तुत रचना मे रचयिता ने कथाओ के सबध मे कहा कि पहले उसने "कवलावती" की कथा कही, पीछे "पुरदरावती" की और तदुपरात "कनकावती" लिखी। इन सबके पीछे "कौतूहल दे" का वर्णन किया। पूर्वोक्त कथाओ का वर्णन करने मे दो तीन ही छंद प्रयुक्त हुए है जहा "कौतूहल दे" मे अनेक छद व्यवहृत हुए है :—

पहिलै कथा कथी कवलावती। पाछे कही पुरंदर रावति॥
भाषी बहुत बात कनकावति। अबहि सुमहु कौतूहल गावति॥
उनमैं छद दोइ कै तीन। यामैं बहु समझौ परवीन॥

इसमे सदेह नही कि प्रस्तुत रचना मे बहुत से छदो का प्रयोग हुआ है। छदो के नाम नीचे दिए जाते हैं —

१—दोहा, २—चौपाई, ३—सोरठा, ४—छप्पय, ५—सवैया, ६—कवित्त, ७—भुजगप्रयात, ८—रिल (छ वर्णो का), ९—गैनद छद, १०—त्रिटन, ११—धारी, १२—विजूमाला, १३—झमका (पाँच वर्णो का), १४—भुजगी, १५—नराच छद, १६—पवानी छद, १७—कवला, १८—प री, १९—त्रिभगी, २०—पवगम, २१—गौराद, २२—चदाएा, २३—ताएी, २४—विजोडू, २५—रासा, २६—रोडक, २७—धवल, २८—अरिल, २९—मरिल, ३०—गधएा, ३१—पजा, ३२—चावर, ३३—मीमा, ३४—लीला सरिपा, ३४—चदामाल, ३५—पाडक, ३७—गीतक' ३८—वधा।

सख्या १७९ब कथा सुघटराइ की, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—९, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७२० वि०, लिपिकाल—स० १७८५, वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—कथा सुभटराइ की ॥ दोहा ॥

प्रथम करना सुमिरिये जिन [illegible] [illegible] ।
नाम लये कवि जान कहि [illegible] [illegible] ॥ १ ॥
दूजें हित सों [illegible] [illegible] [illegible] नाम ।
उनतें नीकें सुधरिहैं [illegible] [illegible] के काम ॥ २ ॥
:o: :o: :o:
तीतीय बपानो छत्रपति औरंगजेब [illegible] ।
जंबू दीप गय वस कियो [illegible] महिकं [illegible] ॥
औरंगसाहि महाबली है [illegible] [illegible] [illegible] ।
कोऊ नाहिन जितिहैं [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ६ ॥
बडी बडी फौजें रहैं [illegible] न पावें [illegible] ।
औरंग साहि मुछार की प्रगट्यौ [illegible] [illegible] ॥ ७ ॥
सुभट मेरा चितु जग्त कहि [illegible] [illegible] [illegible] ।
गीदर पुनि कापुरुष नर ज्यौं [illegible] [illegible] पार ॥ ८ ॥
कथा एक भाई बरत उपजाई जिनु [illegible] ।
यामें जानहु जान कहि मन [illegible] [illegible] ॥ ९ ॥
:o: :o: :o:

अंत— सुभटराइ अबहि यहा [illegible] सुनियत [illegible] ।
अचल राज करतार को औन न को [illegible] ॥ ८ ॥
सन सहस चौहत्तरं कथा करी यह जान ।
सत्रह सै अरु तीन पुनि सवत [illegible] [illegible] ॥ ९ ॥
माह रवी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] ।
सुभटराइ की कथा तब पूर्न कर्यौ प्रकास ॥

इति कथा सुभटराइ की सपूरन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मध्ये कयामपा राजे लिपा सवत् सतरह सै १८८४ मिति [illegible] [illegible] १ बुधवार [illegible] [illegible] ४० चार तुक को २०० ॥

विषय—सूर नगर का राजा [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] कोई दुख न था । चार रानियाँ थीं, पर किसी के भी [illegible] [illegible] । [illegible] कृपा से सिद्ध की सिद्धि से चारो रानियों के [illegible] [illegible] । [illegible] नाम सुभटराई रखा गया । राजा को [illegible] [illegible] । राजकुमार जब युवावस्था मे [illegible] [illegible] मे भी पारगत हुआ । माता-पिता ने विवाह [illegible] को न देख लिया जाय, तब तक विवाह न [illegible] । [illegible] विवाह रुक गया । मन्त्रियों ने [illegible] [illegible] विवाह न होने तक वे भी अविवाहित [illegible] । [illegible] देख राजकुमार और उनके साथियों ने [illegible] [illegible] उन्हें अपनी आशा पूरी होने की सभावना [illegible] । [illegible] वस्तुओं को लेकर तथा माता-पिताओं की आज्ञा से [illegible] [illegible] दिशा के राजा के यहाँ [illegible] [illegible] से व्याघ्र उठाकर ले चला । राजकुमार [illegible]

को छुडा लिया। दोनो एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो गए। राजा भी बडा प्रसन्न हुआ। उसने राजकुमारी का विवाह राजकुमार से कर दिया तथा अपने मंत्रियों की कन्याओं से राजकुमार के साथियो का विवाह भी कर दिया। इस प्रकार राजकुमार और उसके साथियों की प्रतिज्ञा पूरी हुई। इन लोगो ने गर्भाधान हो जाने पर स्त्रियो को घर भेज दिया और दिशा भ्रमण के लिए आगे बढे। पश्चिम दिशा के राजा के यहाँ पहुँचे तो दूसरी घटना घटी। एक हाथी ने राजकुमारी को स्नान करते समय सूँड से पकड कर पीठ पर रख लिया और वन की ओर चल पडा। राजकुमार को पता लगा तो हाथी मारकर राजकुमारी का प्राण बचा लिया। इस घटना मे दोनो ने एक दूसरे को देख लिया और प्रेम के वशीभूत हो गए। राजा ने राजकुमार का बडा सम्मान किया और राजकुमारी को उसे ही विवाह दिया। साथ ही मंत्रियो की पुत्रियों का विवाह उसके साथियो मे कर दिया। इन पत्नियो को भी गर्भाधान हो जाने पर राजकुमार और मन्त्री पुत्रो ने घर भेज दिया तथा आगे यात्रा पर चल दिए। दक्षिण दिशा के राजा के यहाँ गए तो उसने इनका बडा सम्मान किया। परन्तु यहाँ भी एक रात आश्चर्यजनक घटना घट गई। पाँच मुँह और दस हाथ वाला एक असुर राजकुमारी को पकड कर आकाश मार्ग की ओर ले उडा। राजा और बडे-बडे शूर वीर देखते ही रह गए, पर किसी से भी कुछ न बन पडा। राजकुमार सुभटराई से न रहा गया। वह राजकुमारी का असुर से उद्धार करने के लिए चल पडा। एक सिद्ध पुरुष से उसकी भेंट हो गई जिसने प्रसन्न होकर उसको कुछ जडियाँ एव अंजन दिए। इनके चमत्कार से उसको सर्वत्र जाने एव अदृश्य होने की शक्तियाँ प्राप्त हुईं। इससे उसने उपर्युक्त असुर का पता पा लिया और उसको मार दिया। राजकुमारी को लेकर वह दक्षिण दिशा के राजा के पास पहुँचा। राजा और रानी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने पुत्री का विवाह राजकुमार से ही कर दिया। यह राजकुमारी पूर्व विवाहित राजकुमारियो से अधिक रूपवती थी। राजकुमार सुभटराई भी इससे बहुत प्रसन्न हुआ। इस विवाह के उपरात मंत्रीपुत्रो का भी विवाह वहाँ के मंत्रियो की पुत्रियो से कर दिया गया। पश्चात् घर का पत्र पाने पर राजकुमार स्त्री और साथियो सहित देश की ओर चल दिया। अतिम दिशा जो बच गई थी इस बार उसकी भी यात्रा पूरी कर दी गई।

रचनाकाल

सन सहंस चौहत्तरं कथा करी यह जान।
सत्रह सै अरु बीस पुंनि संवत हुतौ जहांन॥ ६॥
माह रवी उल अव्वल हो अरु कातक को मास।
सुभटराइ की कथा तब पूर्न लयौ प्रकास॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १७२०, सन् १०७४ फसली है। लि० का० सवत् १७८५ दिया है। रचयिता जान कवि है। प्रस्तुत रचना औरगजेब के समय मे रची गई। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र। प्रस्तुत रचना की पुष्पिका महत्वपूर्ण है। इसमे फतेहपुर और क्याम खाँ शब्दो का प्रयोग है। फतेहपुर रचयिता का निवास स्थान था और क्याम खाँ उसके वश का नाम था।

संख्या १२६श. बुद्धि सागर या मधुकर मालती की कथा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८$\frac{३}{४}$ × ६$\frac{३}{४}$ इच, पंक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण—(अनुष्टुप्)—४०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९१ वि०, लिपिकाल—स० १७७८, वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—अथ बुधिसागर कवि जान कृत चौपई ॥ १ ॥

आदि अगोचर सुमिरिहों [illegible] सकल करतार ।
एक सब्द ही मैं करयो सब [illegible] सुगम पसार ॥
मानस कंचन रतन कौ परखा वरनौं तेह ।
बारह वानी होत है दरसै पेम को देह ॥ २ ॥
दुगम अगम दुष को विथा सुगम कन्त है नाहि ।
करता दीनदयाल है सब काट पून्त आहि ॥ ३ ॥
अब बरनौं कवि जान कहि मधुकर मालति प्रीति ।
मिलि बिछुरन दुष सुष सकल प्रगटावन की रीति ॥
इक मधुकर पुनि मालती [illegible] साची नेह ।
देह देह सुष ना कह्यौ सहे सकल दुष देह ॥ ६ ॥

॥ पवंगम ॥

सोई साची प्रीति जु है या चोर की ।
प्रीत न दोप पतंग सग न चंद चकोर की ॥
नीर मीन नही प्रीति पीति मारग मरम ।
ना जीवत बिन देषे प्रीतम या करम ॥

:o: .o. :o:

अंत—

भार भयो हित सौं पति नाहि । इन दुखनि मैं कीनी [illegible] ।
किरपा बहुत दहुनि सों कीनी । अमित लच्छिमी इनकी दीनी ॥
भली भांत सो मान बढाइ । हृदय माहि दीनो पहुंचाइ ॥
माता के पग परसे जाइ । अति फूली तन मैं न समाइ ॥
निस बासुर ये करहि कलोल । गहरी प्रीति भई रंग चोल ॥
जौलौं जीये या जग माहि । मधुकर मालति बिछुरे नाहि ॥

॥ दोहरा ॥

सोरह सै इकयानुवौ ही फागन बदि एष ।
जान कवी कीनी कथा परिषे ग्यान बिवेष ॥

इति मधुकर मालती की कथा सपूरन भई कविजान की वाधी सवत् १७७८ मिती पोह सुदी ३ अदीतवार दसषत फतहचद ॥

विषय—अयोध्या मे रतन नाम का सौदागर था । [illegible] मधुकर रूप और शील के अतिरिक्त गुणवान और विद्या प्रेमी था । [illegible] एक दिन उनकी दृष्टि पाठशाला मे [illegible] कुछ [illegible] पर पडी । [illegible] लडकी सबसे अधिक रूपवती थी, [illegible] पर पडी और वह भी उनमे प्रेम करने लगी । [illegible] की ही पाठशाला मे पढने लगा । दोनो [illegible] सौदागर की बेटी थी । उसने जब [illegible] दी और उनके गुरु से पर पर ही [illegible] पाने पर मधुकर को बडा दुख हुआ । [illegible] परतु गुरु से सब बात प्रकट [illegible] को भी बडी प्रसन्नता हुई और [illegible] माता पिता को इसका पता चल गया । [illegible] से पुत्र का विवाह करना ठीक नही समझा । अत मे निश्चय हुआ कि मधुकर को [illegible]

के बहाने कुछ समय के लिए परदेश ले जाया जाय। वहाँ उसका मन दूसरी ओर जाएगा और मालती को भूल जाएगा। मधुकर मालती को जब इसका पता चला तब दोनों को अपार दुख हुआ। दोनों ने प्रतिज्ञा की कि प्राण रहते वे अपने प्रेम का पालन करेंगे और किसी भी दशा में अन्यत्र विवाह न करेंगे। मधुकर परदेश चला गया। इधर मालती को विलाइत का वजीर मोल लेकर ले गया। चलते समय मालती ने गुरु से उसका पता मधुकर को देने के लिए कहा। मधुकर जब परदेश में भ्रमण कर रहा था तब उसका पिता मर गया। घर आया तो मालती के चले जाने से बहुत निराश हुआ। गुरु से पता पाकर वह भी माता की आज्ञा लेकर मालती के पास पहुँचा। परंतु मालती से किसी भी प्रकार भेंट न हो सकी। वजीर ने मालती को कई प्रकार के प्रलोभन देकर अपने प्रेम में फसाना चाहा, पर वह अपने सत्त से नहीं डिगी। पीछे बादशाह को उसके संबंध में पता लगा तो वजीर से उसे ले लिया, पर अंत में उसको भी निराश होना पड़ा। उसने उसको फाँसी पर लटकाने की आज्ञा दे दी। शाहजादी के देख लेने पर फाँसी रुक गई। वह उसको अपने साथ ससुराल ले गई, पर वहाँ भी उसको कोई सुख न मिला। शाहजादी का पति उसको चाहने लगा। उसने मालती को बहुत कुछ अपने प्रेम में लाना चाहा पर वह नहीं मानी। अंत में उसने उसको डुबाने की आज्ञा दी। सेवक उसको संदूक में बंद कर समुद्र में डुबा आए। मधुकर जो मालती के पीछे-पीछे फिर रहा था यह देखकर अत्यंत दुखी हुआ। मालती के उद्धार का जब कोई उपाय न सूझा तो अपने पास के रत्न समुद्र में डाल दिए और समुद्र में कूद पड़ा। दूर से एक मछवाहा देख रहा था उसने उसको बचा लिया। इतने में मालती को डुबाने वाले सेवक आ पहुँचे और मालती को निकाल कर उसे अरमनी व्यापारी के हाथ बेच दिया। मधुकर बहुत पछताया कि क्यों उसने रत्न समुद्र में डाल दिए। यदि वे उसके पास होते तो वहीं सेवकों को मूल्य देकर मालती को खरीद लेता। विवश हो अरमनी की नाव में वह भी मालती के संग हो गया। अरमनी मालती को चाहने लगा था, पर मालती अपने को बचाती रही। नाव में मधुकर की बातचीत मालती से हो जाती थी। उसने मालती को बावली हो जाने के लिए कहा। मालती ने वैसा ही किया। अरमनी ने उसको अपने बादशाह के हाथ बेच दिया। पर उस बादशाह को भी निराश होना पड़ा। उसने उसको अरमनी को वापस देना चाहा। अरमनी के बजाय मधुकर ही मालती को लेने गया। बादशाह ने उसको मूल्य वापस कर मालती को ले जाने के लिए कहा। परंतु मधुकर के पास मूल्य कहाँ था। एक मछवाहा उसका मित्र था जो नित्य उसको मछली दे जाता था। एक दिन संयोग से एक मछली के पेट से उसको समुद्र में फेंके हुए अपने ही रत्न मिल गए। फिर क्या था, वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और बादशाह का मूल्य वापस कर तथा मालती को लेकर अपने देश की ओर चल पड़ा। दुर्भाग्य से फिर दोनों समुद्र में बिछुड़ गए। मालती अप्सराओं के पास और मधुकर बगदाद पहुँचा। अप्सराओं की रानी का पुत्र मालती पर अनुरक्त हो गया, पर उससे भी मालती ने अपने को बचाया। अंत में रानी ने उसके इच्छानुसार उसको अपने देश जाने में सहायता दी। बगदाद में बादशाह की उदारता के फलस्वरूप मधुकर और मालती मिल गए।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६९१ वि० और लिपिकाल संवत् १७७८ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६प चेतन नामा, सिष ग्रंथ, ग्रंथ सुधा सिप, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८½ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—॥ दोहा ॥ चेतननामा कवि जान कृत ॥

पहिले अलह रसूल कौं सुमिरत है कवि जान।
चेतन नामा कहत पुनि सुनियहु दै दै कान ॥ १ ॥

॥ फारसीमति छद ॥

प्रथम पन षेल मैं पोयौ। तरुनपन केल मैं षोयौ॥
भए कच ब्रिधपन धौरे। अजों कछु चेत रे बौरे॥ २॥
मनुष कौ जनम तैं पायौ। न करता नाम मन लायौ॥
सुतौ तौ करिनी कौरे। अजौ कछु चेत रे बौरे॥

:o: :o: ·o

करहु तप जाप उमाहा। अजों कछु चेत रे हाहा॥
चेतन नामा सपूरन॥

॥ सिष ग्रथ छद फारसी ॥

सुमिर निस दिन निरंजन कौं। कहा तुम जपहु अजन कौं॥
कलपु लष कोट भजन रे। निरजन रे निरजन रे॥ २॥
पधारो पाग मैं पागं। सुनौ व्रत नाहि उडि भागं॥
त्यौंही अजन भिदे बौरे। निरजन रे निरजन रे॥ ३॥

:o: :o. :o:

मुगध सुनि नाहि मन आनैं। न सिष मानैं बुरौ मानैं॥
न उनकौ मिटत है भ्रम रे। किलो को करत जो स्रम रे॥ २३॥
॥ इति सिष ग्रथ समाप्त सपूरन भयौ ॥

अत— ॥ ग्रथ सुधासिष :: छद फारसी मति ॥

दाताल अलहु रहमान रे। जिन दयो है तियदान रे॥
बिसरहु न रैन बिहान रे। यौं देत मिष कवि जान रे॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जजार रे॥ २॥
पोषन भरन जगदीस रे। ताकहु नवावहु सीस रे॥
करि सेव देव असीस रे। सुष लहौं बिसयावीस रे॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जजार रे॥ ३॥

:o: :o: o

मन मुकर कौं राषहु बिमल। करतार सेवा मैं अचल॥
बिसरहु न कबहूँ एक पल। वामैं तकहु मन इछ फल॥
सुमिरन करहु करतार रे। तजि सकल ही जजार रे॥ १३॥
॥ इति सुधा सिष सपूरन ॥

॥ चेतननामा ॥

विषय—सासारिक माया मोह तजकर भगवद् भजन करने का उपदेश दिया गया है।

॥ सिष ग्रथ ॥

दश अवतारो को छोड़ कर निरजन का जाप करने का उपदेश है।

॥ ग्रथ सुधासिष ॥

सासारिक जजालो से अपने को दूरकर भगवद् नाम जपने का उपदेश दिया गया है। इसमे मक्का मदीने जाने का भी उपदेश है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल और लिपिकाल नही दिए है। रचयिता का नाम जान है। इनके सवध मे देखिए 'रतनावती' का विवरण पत्र।

प्रस्तुत विवरण मे तीन छोटी रचनाएँ है, जिनके नाम है चेतन नामा, सिषग्रथ और ग्रथ सुधासिष।

रचयिता हिंदू संस्कृति और ज्ञान से जितना परिचित है उसको देखकर आश्चर्य होता है। परंतु खेद है कि कहीं कहीं पर वह सांप्रदायिक बातों को न छोड़ सका। जहाँ दश अवतारों को ईश्वर न समझने का वर्णन किया है, वहाँ मक्का मदीना जाने का उपदेश है। इसका कोई कारण नहीं बताया कि निरंजन का नाम किस प्रकार मक्का मदीने जाकर ही भजा जा सकता है। जबकि वह सर्वव्यापक है। राम अयोध्या में नहीं है और कृष्ण मथुरा में नहीं है तो मक्का मदीने में कौन है इसका समाधान नहीं किया गया है —

"निरंजन एक कौ धावहु। कहा चौबीस दस गावहु।
:o: :o: :o:
अयोध्या राम कहिए ना। सु मथुरा स्याम लहिए ना।।
:o: :o: :o:
भए बेकाल बसि सिगरे। तिनहि मानहु जनम धिग रे।।"

—सिषग्रंथ

"करता दए जुग पाइ रे। मकै मदीनै जाइ रे।। सेवा करहु चित लाइ रे।।"

—सुधासिष

संख्या १२६स. वुधिदायक, वुधिदीप, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{1}{4}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि— ।। अथ वुधिदाइक। मोदक छंद ।।

जिंहि नाम लए सब काज सरैं। जप तै जड काहे कौं ढील करैं।।
धन ते जु निरंजन नाम ररैं। पल मैं अघ कोटक होहि परैं।।
सुष कौ भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता।। २।।
पहिले पन षेलनि माहि गयौ। कवहू करतार न नाम लयौ।।
तब तौ नहीं ग्यान सरीर भयौ। तिह कारन तोकौं न दोष दयौ।।
सुष को भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता।। ३।।
:o: :o: :o:
जु निरंजन वोर कौं धावत रे। वड्डी पदई सोई पावत रे।।
करतौं वदगी अरसावत रे। कहि जान सुतौ पछितावत रे।।
सुष कौ भरता दुष कौ हरता। जपि रे जपि रे जपि रे करता।।

ग्रंथ वुधिदायक संपूरन।

अंत—ग्रंथ वुधि दीप ।। चौपई ।।

करता नाव न कवहू लेत। नैंकु न चेतत वडौ अचेत।।
यौंही जनम जुवा सौ हरिहै। दीप हाथि कत कूवा परिहै।। २।।
सोई करत जु जिय कौं भावै। जामैं मुकति न तिह मग धावै।।
निगम पुरान न कानन धरिहैं। दीप हाथ कत कूवा परिहै।।
:o: :o: :o:
माया अगिन चहूं धां धावत। कहत जांन सब जगत जरावत।।
वचैं जु नाव निरंजन ररिहै। दीप हाथ कत कूवा परिहै।।

ग्रंथ वुधि दीप संपूरन भयौ।।

विषय—सांसारिक माया, मोह, लोभ, मोह, और क्रोध आदि तजकर भगवद् भजन करने का उपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल और लिपिकाल ज्ञात नहीं है। रचयिता का नाम जान है। इनके संबंध में देखिए, 'रतनावली' का विवरण पत्र। रचनाएँ दोहा छंद में है। प्रस्तुत विवरण पत्र में विवृत रचनाओं के नाम है—"बुद्धिदायक" और "बुद्धिदीप"।

संख्या १२६ह. घूंघट नावा, दरस नावा, अलक नावा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८¾ × ६½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि— ॥ घूंघट नावां दोहरो ॥

आदि सुमिर करतार कों दोय महमद नाम।
घूंघट नावो जान कहि बरनत हों अभिराम ॥ २ ॥
अबहि चौपई बाधिहों एक भांति तुक चारि।
पाछें फिरि फिरि आइहै है तुक बारबार ॥ ३ ॥
आवत देषि दूरितें लाल। तें कत वदन दुरायो बाल।
कहिधों कौन गही यह चाल। दुष पावत मोहन मुकमाल ॥
लागि रही नैननि कों तारी। घूंघट नैंक उघारहु प्यारी ॥
:o: :o: :o

छूटि गई नैननि की तारी। घूंघट षोलि मिली हँसि प्यारी ॥

इति घूंघट नामा संपूरन भयो १७७७ फ सु. २ ॥

मध्य— ॥ ग्रंथ दरसनावा ॥ पद्धल ॥

नाव निरजन सुमिरू आदि। इंछ्या पूजै जिह प्रसाद ॥
भूलत म्रिगा सुने ज्यों नाद। त्यों भूल्यो सुनि रूप सुभाव ॥
घूंघट षोलि दरस परसाव ॥ २ ॥

दूजें सुमिरन करों नबी को। है मनमोहन प्यारो जी को ॥
गुन संपूरन सब विधि नीको। ताके हितु करि पापरि श्राव।
घूंघट षोलि दरस परसाय ॥ ३ ॥

रैंन विहान रहे लव लीन। जान कहै मोहन आधीन ॥
तरफत जैसें जल बिनु मीन। रैंन बिहांन रहै लवलीन ॥
है दयाल ह्वैवे कौ दाव। घूंघट षोलि दरस परसाय ॥

इति दरस नावा संपूर्न भयो १७७७ फागण सुदी ३।

अंत—अकल नावां पद्धिला ॥ जान कृत ॥

पहलें लेहु निरजन नाम। दोम महमद को पर्नाम ॥
पाछें अलक बषानों दाम। यहु रट टरत न रसना हारी ॥
बहुरि दिषाव अलक घुंघारी ॥ २ ॥

तू सुदर षिरकी मैं षरी। मेरी डिस्टि आंचका परी ॥
नेहु गयो लगि वाही घरी। मन पवन तें फादयो न्यारी ॥
बहुरि दिषाव अलक घुंघारी ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

जान आपुनी पेमु सुनायौ। सुनत सुंदरी कै मन भायौ॥
अतिहीं हित सौं निकटि बुलायौ। जान्यौ याकी पीति करारी॥
छाडी बहुरि अलक घुंघारी॥

इति अलकनावा सपूरन भयौ १७७७ फा० सु० ३।

विषय—शृंगार पूर्ण रचनाएँ हैं।

घूंघट नावां

बाला प्रियतम को दूर मे ही देखकर घूंघट काढ लेती है। प्रियतम अनेक उपमाओ का सहारा लेकर घूंघट निवारण के लिए मनुहार करता है। अत मे घूंघट अलग कर दिया जाता है और दोनो मिल जाते है।

दरस नावां

इसमे नायिका से दर्शन देने का अनुरोध किया गया है। यह रचना कुछ रहस्यात्मक सकेतो से भी युक्त हैं।

अलक नावा

एक सुदर खिडकी मे बाला बैठी है, जिसके खुले बाल शरीर की दुगुनी शोभा बढा रहे है। कवि यह शोभा देख कर मुग्ध हो जाता है। इसका ज्ञान होते ही बाला अपने को छिपा देती है। पर कवि को धैर्य कहाँ? अपने को विनीत बनाता हुआ अनेक उपमाओ द्वारा बाला की स्तुति करता है। अत मे बाला का धैर्य विचलित होता है और पूर्व रूप मे दर्शन देती है।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत विवरण तीन छोटी छोटी रचनाओ का है। इनमे रचनाकाल नही है। लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्न।

रचनाएँ खुट्टिला नामक छद मे है और काव्य की दृष्टि से उत्तम है।

संख्या १२६क१. दरसन नावा और बारह मासा, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्न—३, आकार—८३/४ × ६३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०२ पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—दरसन नावां कवि जान कृत॥
सुमिरौं आदि अलप करतारा। रच्यौ महमद जगत उज्यारा॥
जाकी प्रीती कर्यो संसारा। ताकौं हितु करि हेतु जनाव।
वहु दरसन चुष वहुरि दिषाव॥ २॥
जा दिन कौ दरसन हौ देख्यौ। ता दिन कौ हिरदै अवरेप्यौ॥
दर्पनु न्यान रैन दिन पेष्यौ। पर्गट परसन कौ चितु चाव॥
वहु दरसन चुष वहुरि दिषाव॥ ३॥

:o: :o: :o:

अंत—
चलत जेठ मैं उस्न बयार। विरहनि जार करत है छारि॥
मोकौं सीरी लगै अपार। पिय संग सदन उसीर बनायौ॥
वहु दरसन जब वहुरि दिषायौ॥ ३ ३॥

इति दरसन नामा संपूरन॥

आदि— बारहमासा फुनिंग छद

सुमिरहौं आदि करतारा। रच्यौ जिन नवी उजियारा॥
मिटचौ सब जगत अधियारा। बडाइ ताहि जगु मानो॥
परै कल नाहि बिन जानी॥ २॥

लग्यौ आसाढ घन गाजन।
भयौ दुष सुष लग्यौ भाजन॥
चहू दिस बीज चमकानी।
परै कल नाहि बिन जानी॥ ३॥

अंत— न बोले है कबहु चित सौं।
रहे रूपो नितहौं नित सौं।
भरचौ तन ताहि अब हित सौं॥
लगे घट मोहि सुप रितवन।
कहां वह प्यार की चितवन॥ ४॥
नमो सो रूप उजियारी।
कहा धौं आहि वै नारी।
सदा सनमुष कियें हारी॥
लगे अब जानि तिहिं जितवन।
कहां वहु प्यार की चितवन॥ ५॥

इति बारह मास सपूरन भयौ॥

विषय—विरहिणी के बारह मास के विरह का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल और लिपिकाल नहीं है।

इस विवरण पत्र मे "दरसन नावा" और "बारह मासा" नाम से दो छोटी छोटी रचनाओ के विवरण लिए गए हैं।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके संबंध मे देखिए, 'रतनावती' का विवरण-पत्र। बारहमासा मे प्रयुक्त छद का नाम फुनिग है।

संख्या १२६ख२. सत्तनावा और वर्णनामा, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान, —फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—८¾ × ६¾ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२ परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५, पूर्ण, रूप—पुराना, (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचना काल—संवत्—१६९३ वि० (सत्तनावा) लिपिकाल संवत्—१७७७ वि० (सत्तनावा), प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—सत्तनावा कवि जान कृते चौपई॥ १॥

परथम लेउ नाम करतार। सतो पुरष सिरजे संसार॥
दूजें लेहु महमद नाम। है जिन कौ गत हौ सौं काम॥
सुनि सुनि लेहु कहै कवि जान। अबहि सत सत करहु बषान॥
जो अपनं सत रापै ठौर। सो सतनि कौ हुं सिरमौर॥
सती पुरष है सुकिया नारि। इद्री दूति डिगावन हार॥
जाकौं नाहि डिगत है प्रान। सो सतवत संत कहि जान॥

॥ दोहा ॥

जाको सत नाहिन डुरै संत होइ संसार ।
मन इछ्या पूजै सकल पावै सिरजनहार ॥

॥ सोरठा ॥

सती अमर जगमाहि सुजस जगमगै भान ज्यों ।
असती जैसै छाहि पलक मांहि ढरि जाहिगे ॥

अंत— ॥ सोरठा ॥

कहत जान करतार सत डिढ मोहू दीजिए ।
भौसागर कौं पार करौं तिहारी दया तें ॥

॥ दोहा ॥

सोरह सै जु तिरांनुवै मास पूस कवि जानि ।
यहु सत नावौ संत कौ हितु सौं करचौ वषान ॥

संतनावा सपूरन भयौ १७७७ मिती फागन सुदी ४ लि फतेहचंद ।

आदि— वर्नंनामा कवि जान कृत ॥ दोहा १ ॥
कर्कं करहु करनी भली ज्यौं आगै सुष होई ।
कर्त्ता कौ सुमिरन करै ल्है पर्म पद सोइ ॥ २ ॥
षषै षरी यहु बात है सुनहुं कांन दै दोइ ।
करता को सेवा करहु ज्यौं आगै सुष होइ ॥ ३ ॥

अंत— ऊ ऊत तौ सुष पाईए जौ इत सेवा होइ ।
नीज वयें विनु जांन कहि नाहि लहत फल कोइ ॥ ३२ ॥
बावन अछिर कहत हत सो संसक्रित वषांन ।
भाषा मै इकतीस हीं आवत है कहि जान ॥

इति वर्नमाला सम्पूरन ॥

॥ सत्तनवा ॥

विषय—सत के लक्षणो का वर्णन किया गया है :

रचनाकाल

सोरह सै जु तिरानुवै मास पूस कवि जानि ।
यहु सतनावौ संत कौ हितु सौं करचौ वषान ॥

वर्नंनामा

नागरी के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर उपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस विवरण पत्र मे "सत्तनावाँ" और वर्णनामा" रचनाओ का विवरण है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेप वृत्त देखिए, "रतनावती" के विवरण-पत्र मे ।

'सत्तनावा' मे रचना काल सवत् १६९३ और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है ।

संख्या १२६ग१.वादी नावा, रचयिता—कवि जान, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुप्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—चौपाई १ वदी नावाँ कवि जान क्रिते ॥

पहिलैं सुमिरों सिरजनहार । दूजें नवीं जगत आधार ॥
कहत जान सुनियौ दै कान । वादी नावौं करौं बखान ॥
वादी मीया मोल लै आयौ । तिया देखि कै मोर मचायौ ॥
मीया कहै को भरिहै पानी । मैं तेरैं सुष कौं यह आनी ॥
ज्यौं ज्यौं देषै जोवन काति । त्यौं त्यौं तिया बुरी ह्वै जाति ॥
मन मैं कहै भली ना भई । अब तौ बात हाथ तैं गई ॥

अत—

उततैं गयौ जहा ही वाम । भेंट धरे दासी कै दाम ॥
मनोहार करि पकरे पाइ । बात कही नीकैं समुझाइ ॥
बादी घर ते मियें निकारी । रोस मिट्यौ घर आइ नारी ॥
वहै मिया वहु वाम पियारी । वादी गई करौं बलिहारी ॥

॥ दोहा ॥

उत्तम मानस छाडिकैं कीजे मधिम पीति ।
कहत जान कवि जानियौ है यहु बडी अनीत ॥

इति वादी नामा सपूरन भयौ ॥

विषय—एक मियाँ, जो बडे मनचले थे, एक बाँदी को मोल ले आए । स्त्री ने विरोध किया तो कहा, यह काम करने के लिए है जिससे तुझको ही सुख मिलेगा । स्त्री का मियाँ पर कुछ वश न चल सका, अत मन मसोसकर रह गई । धीरे-धीरे ज्यों-ज्यों दासी युवती होती गई, मियाँ की आँखें उसकी ओर आकर्षित होती गई । जब दासी को वश में कर लिया तो एक रात स्त्री को सोते जान चुपके से उसके पास चला गया । रात अँधेरी थी और आकाश में बादल छाए हुए थे, अत जैसे ही बादल गरजे कि स्त्री की आँखें खुल गई । वह पति को पास न पाकर खोजने लगी । खोजते-खोजते बिजली की चमक मे एक कोने मे मियाँ को दासी के साथ व्यभिचार करते देख लिया । मियाँ ने बहुत कुछ सफाई देनी चाही, पर स्त्री को सतोष न हुआ । वह दूसरे दिन अपनी माता के पास चली गई । मियाँ को इससे प्रसन्नता हुई, अतएव निश्चिन्त होकर दासी के साथ आनद करने लगा ।

बहुत दिन बीत जाने पर एक दिन कुटुंबियों ने उसे घेर लिया । स्त्री को छोड़कर दासी के साथ व्यभिचार करने के लिए उसे बहुत फटकारा । साथ ही साथ जाति से बाहर करने का भी भय दिखाया । अब तो मियाँ बहुत सिटपिटाए और शीघ्र ही दासी को नखास में ले जाकर बेच आए । जो मूल्य मिला उसको लेकर सीधे स्त्री के पास गए और उनको मनाकर घर ले आए ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल उल्लिखित नहीं है । रचयिता का नाम कवि जान है । इनके लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

सख्या १२६घ१. बाजनामा और कबूतरनामा, रचयिता—जान कवि निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी पत्र—५, आकार—८½ × ६½ इच, पक्ति—(प्रतिपृष्ठ),—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५० पूर्ण, रूप—प्राचीन, (जीर्ण-शीर्ण) पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७७७ वि० (कबूतर नामा), प्राप्तिस्थान—हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—

वाजनामा कवि जान कृत ॥

पर्थम हित सौं सुमिरिहौं रचनहार करतार ।
पसु पछी जिय जत जिन पल मै रचे अपार ॥ २ ॥
सकल सिस्ट करता रची प्रेम महमद काज ।
तीन लोक कौं जान कहि दीनौ ताको राज ॥ ३ ॥
वाज जुरा वहरी कुही सवकौ एक विचार ।
औसध समझाऊँ भलै सुनि सुनि लेहु पिलार ॥ ४ ॥
जे औसद कहि कहि गए पहिले मीर सिकार ।
ते इनमैं आने वहुत ग्रथ निहार विचार ॥ ५ ॥

अत—

जौ पगतरै उपजि है रोग । मानस मूत्र लौन करि जोग ।
गदी एक वस्त्र की वानि । इन दुहु मैमि जाइ करि आनि ॥
लै वाकौं वाधै पतवाज । ता ऊपर वैठावै वाज ॥
तौलौं रापै गदी भिजाइ । जौ लौं वाज भलौ ह्वै जाइ ॥

वाजनावा सपूरन ॥

आदि—दोहा कवूतरनामा कवि जान कृत ॥

आदि सुमिर करतार कौ जाकै आदि न अति ।
पलक माहि सव जगु रच्यौ नर पसु पछ्र अनत ॥ २ ॥
दोम महमद सुमिरहौं जातें सव जगु दोम ।
सकल रसूलनि मधि वन्यौ ज्यो उडिगन मै सोम ॥ ३ ॥
सव पंछिनि मे जान कहि ऊत्तम कवूतर आहि ।
नूह नवी कै हेत तें सव कौ वाढी चाहि ॥ ४ ॥
:o: :o: :o:

अंत—

वहुरौ सिरकौ आनि मिलावै । अडे ऊपर भांति वनावै ॥
बचा अंडा तें वाहर आवै । वहे भांति तन मैं प्रगटावै ॥

इति कवूतरनामा संपूरन १७७७ फागन ॥ सु० ५ ॥

विषय—वाज और कवूतर को पकड़ना तथा उनका पालन पोपण करना एव उनके रोग उपचारादि का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस विवरण पत्र मे "वाजनामा" और "कवूतरनामा" का विवरण है । रचना काल का उल्लेख किसी भी रचना मे नही हुआ है । लिपिकाल कवूतरनामा मे संवत् १७७७ वि० दिया है ।

रचयिता कवि जान हैं जिनका पूर्ण वृत्त "रतनावती" के विवरण पत्र मे दिया है ।

रचनाएँ विपयों की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं । प्राचीन काल मे वाज और कवूतर पकडने और पालने मे किस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टि रखी जाती थी, उसका इन रचनाओ से पता चलता है । उनके रोगो उपचार के सवध मे भी ज्ञातव्य वातें प्रकट होती है ।

संख्या १२६ड१. गूढ ग्रथ, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—शी, पत्र—६, आकार—८३⁄४ × ६३⁄४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी' लिपिकाल—स० १८७७, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—गूढ़ ग्रथ कवि जान कृत ॥दोहा ॥

अलह नवी कों सुमिरि कै करि गुर पीर जुहार ।
गूढ ग्रथ कवि जान कहि पाछै करौ उचार ॥ २ ॥
कहत जान इनमाहि मैं राख्यौ ऐसौ भेदु ।
तुरत अर्थ समझ्यो न जै पावत है कर खेद ॥ ३ ॥
रविनदन उज्जल वरन पै कौ सोच्यौ फूल ।
नाम लह्यौ उडतौ फिरै पछी को समतून ॥ ४ ॥ (प्राव)
अरुन वरन सोभा वदन रहत न म्रितक पास ।
जानि लेहु कवि जान कहि आहि सुरग तिह वास ॥

अत—

पारौ पानी ना पिए मिठे कौं पी जाइ ।
कहौ अग्नि सो कौन है पानी ते न बुझाई ॥ ८० ॥
पाइनि बैरी सीस पर अति ही लावे वार ।
चलि ना सकहि भतार सग जाहि पहार पहार ॥

इति गूढ ग्रंथ सपूरन १७७७ फा० सु० ६ ॥

विषय—पहेलियों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल अज्ञात है । लिपिकाल सवत १८.. वि० दिया है । रचयिता का जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावली" या विवरण-पत्र ।

संख्या १२६च१. ग्रथ देसावली, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२१, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रथ देसावली कवि जान कृते ॥

॥ दोहा ॥

सुमिरौ आदि इलाह कौं बहुरि नवी कौ जान ।
बर्नत है देसावली नीकैं राषहु कान ॥ २ ॥
सकल भोम अपवस करी छत्रपति औरग साह ।
अचल रहौ जौ लौं रहै नभ मैं मिहर रु माह ॥ ३ ॥
अवही बषानौ जान कहि सकल धरा विस्तार ।
जैसे ग्रयनि मैं पठ्यौ त्यौं करिहौ उपचार ॥ ४ ॥
कोस चतुर लष जानियहु है पुनि बीस सहस्र ।
ऐसे ग्रथनि मैं कह्यौ ब्यौरो कह्यौ सहस ॥ ५ ॥
एक लाष तेपन सहस जानि लेहु उद्यान ।
देव चरिंद जानि यहु हैं तामैं वह जान ॥ ६ ॥
एक लाष दरियाव है और सहस बत्तीन ।
मगर मीन सालूर अहि तामैं विनयाधीन ॥ ७ ॥

अंत—

ऊपर सप्त जु लोक हैं करिहौं नाम उचार ।
सत्तलोक तपलोक पुनि अरु जनलोक बिचार ॥ ४६ ॥

महालोक सुरलोक पुनि भूवलोक धरि कान ।
लोकालोक सु सातुवो जान लेहु कहि जान ॥

इति देसावली सपूरन संवत् १७७७ मीती फागण सुदी १३ दसषत फतेहचंद का ।

विषय—सृष्टि का भूगोल का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल उल्लिखित नही है । लिपि काल सवत् १७७७ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । इनके विषय मे देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

सख्या १२६छ१ ग्रथ रस कोप, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६७६ वि०, लिपिकाल—स० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रथ रस कोष कवि जान कृत ॥

अलष अगोचर निरजन निराकार अविनास ।
काहू की पटतर नहीं ताको पटतर तास ॥ १ ॥
नमसकार ताकों करों नाव महंमदु ताहि ।
असरन सरन अभरन भरन मैं भजन गुन ताहि ॥ २ ॥
अवहि वषानी नाइका नाइक कहि कवि जांन ।
मथों कथों रस मजरी सुनहु सवै धरि कान ॥ ३ ॥
तन मन मै संतोष ह्वै मिटै चित कौ सोष ।
रुआरस दोष निमास ह्वै धरयौ नाव रस कोप ॥ ४ ॥

॥ प्रथम सुकिया नाइका भेद ॥

जेती नारि विवाहिए, ते सव सुकिया नाहि ।
पतिवरता कौ नाम है समुझ लेहु मन मांहि ॥ ५ ॥

॥ सुकिया की चेस्टा चौपई ॥

निस दिन सेवा करिहै पीय की । और कछु ना भावरि जीय की ॥
हरयें करि है वचन उचार । सुनत नाहि को विन भरतार ॥ १ ॥

अंत—

उतिमा मधिमा पुनि अपुनि अधमै त्यौनी विसवावीस ।
दिव्य अदिव्या दिव्य दिव्य ह्वै चारि सै छत्तीस ॥ १५० ॥
सुकिया प्रकिया पनगना मिलि ह्वै विसवावीस ।
दोइ सहस औ सात सै पुनि गनि लेहु छत्तीस ॥ १५१ ॥
जहांगीर कै राज मैं हरन चित्त कौ दोष ।
सोरह सै षटहतरै करयौ जान रस कोस ॥ १५२ ॥

इति रस कोष सपूरन भयौ १७७७ मिती चैत वदी १ दोह १५२ चौपई ८८ ॥

विषय—संस्कृत ग्रथ रस मजरी के आधार पर नायिका भेद वर्णन ।

रचनाकाल

जहागीर कै राज मै हरन चित्त कौ दोष ।
सोरह सै षटहतरै करयौ जान रस कोष ॥ १५२ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १६७८ वि० और लिपिकाल सवत् १९[illegible] वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र।

संख्या १२६ज१. अथ उत्तम सवदा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—२, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—अथ उत्तम सवदा ॥

॥ दोहा ॥

पर्थम करता सुमिर कै लेउ महमद नाम।
पाछै चारौ यार कौं करत जान पर्नाम ॥ २ ॥
इक दिन नवी सदीक पुनि और उमर उसमान।
गए अली के धाम पे होइ चतुर मिजमान ॥ ३ ॥
तवहि निपालस सहद भरि आन्यौ निर्मल तास।
राख्यौ हित सौं लै अली हजरत जू कै पास ॥ ४ ॥
वार परचौ हौ सहद पर नवी दयौ फुरमान।
तिहुवनि कौं डिस्तात कछु तुम हम करहि वपान ॥ ५ ॥
प्रथम अवावकर कह्यौ दीनदार नर तास।
मधहूं ते मीठी महा है ईमान ता पास ॥ ६ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

मिस्ट सहद तें लागि है कीजत जवहि नमाज।
पाप दूर सब होत है मनहु जन्यौ है आज ॥ २५ ॥
ठाढौ होइ नमाज पर निहचल रापै चित्त।
यह कुच तें वारीक ह्वै कहत जान सुनि मित्त ॥

इति उत्तम सवद सपूरन भयौ ॥

विषय—एक दिन हजरत अली ने नवी साहव और उनके यार अवावकर उसमान और उमर की दावत की। हजरत नवी के सामने खालिस शहद लाकर रखा तो उसमें एक वाल पडा हुआ मिला। वस, इसी पर उपदेशात्मक विवाद छिड गया। नवी साहव ने वारी वारी से प्रश्न किया कि शहद से अधिक मीठा एव वाल से अधिक सूक्ष्म क्या है? अवावकर साहव ने कहा कि आपके पास जो ईमान है वह शहद से भी मीठा अधिक एव वाल से भी अधिक वारीक है। उमर साहव ने कहा, वादशाह के पास लक्ष्मी ही शहद से अधिक मीठी एव न्याय ही वाल से अधिक वारीक है। उसमान ने कहा, ज्ञान ही शहद से अधिक मीठा और वाल से अधिक वारीक है। इस प्रकार वारी वारी से सवने प्रश्न का उत्तर दिया। अन्त में नमाज पढना शहद से अधिक मीठा एव वाल से अधिक वारीक ठहराया गया।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल के उल्लेख नहीं है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, 'रतनावती' का विवरण पत्र।

संख्या १२६झ१. सिपसागर पदनावा, रचयिता—जान कवि स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८३/४ × ६१/४ इच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण) पद्य लिपि—नागरी रचना काल—स० १६९५ वि०, लिपिकाल—सवत् १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—सिष सागर पंद नावा कवि जान का कीया ॥

प्रथम करता सुमिरिए दूजै नवी रसूल ।
पाछे ग्रंथ जु कीजिए सो जगु होइ कवूल ॥ २ ॥
ग्रथनि कै मति जान कहि देउं सबषी कौ सीषु ।
विषु सम लगै अग्यान कौं ग्यानी जैसी ईषु ॥ ३ ॥
सीष वचन औषद कटुक हरननि बुधि गद गात ।
मैठे ज्यौं औगुन करै झूठी मीठी वात ॥ ४ ॥
जिह जगती मैं आइकै नाहि जप्यौ करतार ।
ते करमी उतिहिं गए जरम जुवा सौ हार ॥ ५ ॥
प्रथम मन मैं ग्यांन करि आपहि देषि विचार ।
रज वीरज अपवित्र ते तूं सिरज्यौ करतार ॥ ६ ॥
रज बरीज बसत्र लगै तंत डारिए धोइ ।
पिंड रच्यौ इन दुहुनि तें सो क्यौं निरमल होइ ॥ ७ ॥

अंत—

गर्ब करहि जिन गोत पर विन सुमिरन न सहाइ ।
छत्रपति हूँ जग मरै तबहि अकेलौ जाइ ॥ ३४४ ॥
कोऊ ना गहिराइहै लगें काल की बाइ ।
जग तें केते चलि गए राजा राना राइ ॥ ३४५ ॥
सोरह सै पच्यानुवै ग्रंथ करचौ यहु जान ।
सिष्या सागर नाम धरि वहु विधि करचौ वषान ॥

इति सिष्या सागर पदनामा संपूरन १७७७ फ० वदी २ ॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै पच्यानुवै ग्रंथ करचौ यहु जान ।
सिष्या सागर नाम धरि वहु विधि करचौ वषान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६९५ वि० और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

संख्या १२६ङ१ वैंदक सत पदनावा, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—८½ × ६¼ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९५ वि०, लिपिकाल—स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—वैंदक पदनावा कवि जान कृत दोहा १ ॥

आदि अलह कौ नाव लै दोम महंमद नाम ।
वैंदक सतकी सीषद्यौ कहत जान अभिराम ॥ २ ॥
कहत जान कवि यौ लिष्यौ वैद्यक ग्रथनि माहि ।
अनरुच ह्वै तौ लीजिए जनरुचि लीजै नाहि ॥ ३ ॥
लीजै अपनी भूष सम भोजन षोयौ जात ।
अधिक लीजिए भूषतें तौ फिरि भोजन षात ॥ ४ ॥

मनकौ सुप रिसचित घट तन सुप अलप अहार ।
वहु भोजन वहु चित रिस तन मन करन विकार ॥ ५ ॥
इन चहुवनि ते हानि हूं कहत सयाने लोग ।
अति पैलन अति गाइवौ अति मदि अति नयोग ॥ ६ ॥
अति सोए रग पीति ह्वै अति बोलें पछिनात ।
अति सभोग द्रुवल करै अति भोजन ज्यों जान ॥ ७ ॥

:o: :o: :o:

अंत—

थोहर कै संग पीसि कै मिरस बीज जौलाइ ।
ताकौ यह उपचार है जाकौ दादुर पाइ ॥ ९७ ॥
जो काहू कै अग मैं लगै नाग के दत ।
तौ पीतौ कुकटात कौ बाघत हातूं तत ॥ ९८ ॥
ल्हसंन कूटि मधु मेलि कै ब्रिछी डंक लगाइ ।
वाकौ विषु दुप देत ना लावत ही सुप पाइ ॥ ९९ ॥
जौंव ततईया क्रोध करि काहू काटै आइ ।
फूल करर दूनौं संदल ता ऊपर घसि लाइ ॥ १०० ॥
सोरह सै पच्यानुवै ग्रथ कियौ यहु जान ।
वैंदक सत इह नाम है भाप्यौ वुधि परवान ॥ १०१ ॥

इति पंदनावा वैंदक सत सपूरन ॥ समत १७७७ मिती चैत वदी पद ५ दसपत फतेषद ।

विषय—वद्यक विषय का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै पच्यानुवै ग्रथ क्यियौ यहु जान ।
वैद्यक सत इह नाम है भाप्यौ वुधि परवान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६९५ वि० और लि० का० सवत् १७७७ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि हैं। विशेष के लिए देखिए, "रतनावली" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६८१. सिंगार तिलक, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—१८, आकार—८¾ × ६¼ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible], परिमाण (अनुष्टुप्)—५९४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७०९ वि०, सन् १०३० फसली, लिपिकाल—सं० १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ सिंगार तिलक भाषा कवि जान कृत दोहा ॥

सुमिरन कीजै अलप की रैन दिना कहि जान ।
अंत परमपद पाइए पूजै इंछ्या प्रान ॥ २ ॥
दूजै सुमिरन नवी कौ जो करिहै चरि चाइ ।
ताकै ज्वाला नर्क की नेंकु न नेरै आइ ॥ ३ ॥
करौं सिंगार तिलक कौ टीका कहि कवि जान ।
संसक्रित तें भाषा भए ह्वै सव कौ ग्यान ॥ ४ ॥
ज्यौं भर्ता विनु कामिनी जैसें ससि विनु रैन ।
दान विना ज्यौं लछिमी रसि विनु कवितु वनै न ॥ ५ ॥

रसो के ये स्थाईभाव

॥ दोहा ॥

सोक हास उछाह भय विसमय निंदा क्रोध ।
भावस्थाई आहिए भगनिरति आदि सवोध ॥ ६ ॥

विभाचारी भाव

॥ चौपाई ॥

है निर्वेद ग्लानि स्मृत । सका असुया मद श्रम धृत ॥
आलस और देईन विषाद । चिता मोह हर्ष उनमाद ॥
व्रीडा और चपलता जांनि । निद्रा गर्वा केग वषान ॥
अपस्मार उछव वैवर्न । जड़ता सपुन व्याधि मति मर्न ॥
त्रास वित्रक उग्रता अववोध । विभचारी पातैं उच्चरैं ।
सकल रसन मैं ये विचरैं ।

:o: :o: :o:

अंत—

सवही रसु मैं दोष ये चातुर आनहि नाहि ।
दूषन रहत जु कवितु ह्वै सो प्रगटै जग माहि ॥ ३ ॥
संवत सैं जुनौ और पूस कौ मास ।
भेद सिंगार तिलक कौ कीनौ जान प्रकास ॥ ४ ॥
सन हजार जचैसगै और मुहरम माह ।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि सुनि वाढत उछाह ॥

इति सिंगार तिलक भाषा कवि जान क्रित संपूरन भयौ दसषत फतेहचंद का पोथी घर की समत १७७८ मिती भादवा वदी १५ सुवरवार दोहा ॥१५७॥ चौपई ॥२१२॥ श्री,......

:o: :o: :o:

·लिषतू महमद माह फतेहचंद पास रतनावत लीनी तिसकै वदलै सुधासागर का दोहवा तिलक सिंगार वा स्वास संग्रह फतेहचद कै पत सेती लिषाइ लीनी समत १७८४ भादवा बदी २ ली ० महमद उमर का लीषा सही ।

विषय—संस्कृत ग्रंथ शृंगार तिलक का भाषा मे अनुवाद ।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै जु नौ और पूस को मास ।
भेद सिंगार तिलक को कीनौ जान प्रकास ॥ ४ ॥
सन् हजार ज त्रेस गै और मुहरम माह ।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि सुनि वाढत उछाह ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १७०९ वि० और लिपिकाल सवत् १७७८ वि० है । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

संख्या १२६ड१. पैम मागर, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—१२, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६९४ वि०, लिपिकाल—स० १७७९ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ पैमसागर कवि जान त्रिन ॥

॥ दोहा ॥

लीजै जो आरभ मे प्रथम करता नाम ।
तो निहचै पूरौ परै तुप सौ मगरौ काम ॥ २ ॥
जौलौं घट ज्यो रसन मुप अरु नासिक मे स्वास ।
तौलो सुमिरन कीजिए सब पूजै मन आस ॥ ३ ॥
मन की इछ्या पूरिहै दाइक सुप दुप गव्ध ।
कर्ता तै सब पाइए और न कोइ समथ्थ ॥ ४ ॥

अंत—

काहे चितु भरमत फिरतु जैसे चपल बयार ।
निहचल ह्वै कवि जान कहि घटहि माहि निहार ॥ २६३ ॥
सोरह सै चौरानुवे चैत मास के अत ।
बरन्यो सागर पैमु को जान कवि हित सत ॥ २६४ ॥

इति श्री ग्रथ पैमु सागर सपूरन भयो सवत् १७७६ ॥ मिती चैत सुदी ११ गुरुवार दसतषत फतेहचद का पोथी फतेहचद की हरकदावे ग्रनद ॥

विषय—प्रेम की विवेचना और उसके प्रभाव का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै चौरानुवे चैत मास के अत ।
बरन्यो सागर पैमु को जानि कवि हित सत ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १६६४ वि० और लिपिकाल सवत् १७७६ वि० है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

सख्या १२६ड१. वियोग सागर, रचयिता—जान कवि, निवास स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देसी, पत्र—६, आकार—८३/४ × ६३/४ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१० पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी रचनाकाल—सन् १०६६ हिजरी, लिपिकाल—सवत्—१७८४ वि०, प्राप्तिस्थान—हिदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रथ वियोग सागर कवि जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

नाम लए करतार को पूजत मनसा काम ।
धन धन ते उत्तम नरा सुमिरै आठो जाम ॥ २ ॥
दूजै सुमिरन नबी को जो करिहै चितु लाइ ।
यामै कछु सदेह ना साचु परमपद पाइ ॥ ३ ॥
चिरजीव जग मै सदा साहिजहां पतिसाहि ।
ह्वै क्रिपाल कवि जान कहि सब इल दई इलाह ॥ ४ ॥
अब वियोग सागर कहौ जब बिछुरै है मित ।
तब तन मन कौ देत दुपु अति मिलिबे को चित ॥ ५ ॥
लाल गवन स्रवननि सुन्यो जल भरि आए नैन ।
बाढ़ी चिंता चटपटी मै उपज्यौ है मैन ॥

श्रंत—

दंपत करत चैन संगर है दिन रैन लागत सुहाई रित पावस की श्राइ है ।
घमंडि घमंडि उमंडि उमडि वारिवार रिमझिम रिमझिम नीकी झरी लाइ है ।
मेदिनी भई है जलामई चिकनई लयें उपज्यो प्रसेद रति सहनान पाइ है ।
रसा सौं सुरेस रस परस करत मानो ठौर ठौर देपियत ताकी सरसाई है ।।

।। दोहा ।।

नए पुराने आपुने कवितु किए संयोग ।
सन सहस सत्त छचासठं कीनौ उदधि वियोग ।।

इति ग्रंथ वियोग सागर सपूरन ।। संवत् सतरह सैं १७८४ मिती माह सुदी १५ सोमवार बसषत फतेहचद का ।। सवइया ७७ दोहा ३४ ।।

विषय—वियोग शृगार का वर्णन ।

रचनाकाल

नए पुरांने आपुने कवितु किए सयोग ।
सन सहंस सतछया सठं कीनौ उदधि वियोग ।।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सन् १०६६ हि० है और लि० का० सवत् १७८४ वि० । रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र । रचना साहित्यिक है जिसमे कवि के नए पुराने दोहा, कवित्त और सवैयाओ का सग्रह है ।

संख्या १२६८१. रस तरगिनी, रचयिता—जान कवि, निवासस्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६१, पूर्ण, रूप—पुराना, (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १७११ वि०, हि० सन् १०६५, लिपिकाल—सवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ रसतरंगनी कवि जान क्रित ।

।। दोहा ।।

अलष अगोचर सुमिरिए हित सौं आठौं जाम ।
तौ निहचें कवि जान कहि पूजें मनसा काम ।।
दीनदयाल क्रिपाल अति निराकार कर्तार ।
तन कौ पोपन भरन है मन इंछ्या दातार ।। ३ ।।
नव महंमद सुमिरिए जिन सुमरयौ कर्तार ।
वारापार जिहाज विनु कैसें कीजें पार ।। ४ ।।
साहिजहाँ जुग जुग जिवौ सुलताननि सुलतान ।
जान कहें जिहि राज मै करत अनंद जहान ।। ५ ।।
रस तरंगिनी ससक्रित क्रिते कोविद भान ।
ताकी मैं टीका करी भाषा कहि कवि जान ।।
सव कोऊ समुझत नहीं संसकृत दुगम बषानि ।
तातें मै कीनी सुगम रसकनि हित कहि जान ।। ७ ।।

ग्रंथ उच्चार

पहलें कारन होत है, पाछैं कारज होइ ।
रस के कारन भाव हैं भाषत् वुधइ लोइ ।। ८ ।।

अंत—
एकहीं सिंगार रसु वरन है वानदी मैं जाकों कही कालिंदी जु अगजा है भान की ।
भान दुति कीनी है जु रस की तरगिनी मु दामें नवो रसु गनन्दिन में वखान की ।
मैं तो यहु कीनी भापा कवितु चतुर हितु दुगम तें निपट मुगम करी ग्यान की ।
जौलौं जगु माहि वै थिर रहैं दोऊ नदी तौलौं वहोर है विधि भापा नदी जान की ॥३२०

॥ दोहा ॥

सन् हजार जु पैसठें राविल अवल माम ।
रसु तरगिनी जान कवि भापा करी प्रकास ॥ ३२१ ॥
समत सत्रह सै भयौ ग्यारह तापर और ।
माह मास पूरन भई साहिजहा कैं दौर ॥

ग्रंथ रसु तरगिनी भापा बध सपूरन भई सवत् १७७८ मिती वैसाप सुदी ७ सनीसरवार लिषतं फतेहचद ताराचद का डडिवानिया गोत्त गोइल अग्रवाला श्री पयापागर्ज दोहरे ३२३ रंवंगम ३२ सवईया १०४ सकल छद ४४६ ॥

विषय—भानु कृत सस्कृत ग्रथ रस तरगिनी का भापानुवाद किया गया है ।

रचनाकाल

सन हजार जु पैसगं (पैंसठें) रविल अवल माम ।
रसुतरगनी जान कवि भापा करी प्रकास ॥ ३२१ ॥
समत् सत्रह सै भयौ ग्यारह तापर और ।
माह मास पूरन भई साहिजहा कैं दौर ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७११ वि० एव हि० सन् १०६५ है । लि० का० सवत् १७७८ वि० है ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

प्रस्तुत रचना सस्कृत के प्रसिद्ध कवि भानु कृत "रस तरगिनी" का अनुवाद है ।
शाहजहाँ बादशाह के समय मे यह ग्रथ लिखा गया ।

संख्या १२६९ए१. कद्रप कलोल, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतेहपुर, (राजस्थान, जयपुर), कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ कद्रप कलोल जान का कीया दोहा १ ॥
'कहत जान जौ लीजिए रचनहार कौ नांम ।
तौ निहचैं ही जानियौ पूजैं मनसा काम ॥ २ ॥
जो कछु कवि चाहत कियौ करि दि (?द) रावै सोइ ।
रचनहार के नाम सौं रचना पूरी होइ ॥ ३ ॥
दूजैं सुमिरन नवी को कीजत है चितु लाइ ।
उनकी सेवा जांन कहि संकट होइ सहाइ ॥ ४ ॥
चिरंजीव चगता रहौ जगत माहि 'कहि जांन' ।
सपति दीप आठौं दिसा प्रगटी जाकी आन ॥ ५ ॥

नाम धरचौ यह ग्रंथ की मैं कंद्रप कलोल ।
रसकनि के चित सुनत हीं रस कौ होहि विलोल ॥ ६ ॥
दंपति कौं सिष देति हैं दूती अन अन भाति ।
रूसे देहि मिलाइ कै उपजावैं सुषसाति ॥ ७ ॥
तीन भेद कवि जान कहि यामैं आनौं सार ।
पर्थम तौ वैसध है पुनि रति पुनि सिगार ॥ ८ ॥

अंत—

अंग अनग की ओप अनूप है जोबन रूप विराजति भारौ ।
चद सौ आनंन चादनो सौं तन होइ रह्यौं घर मैं उजियारौ ।
ह्वै कुच बीच कहै कवि जान वन्यौ अति ही तिय कै तिल कारौ ।
लालन कौ मन लूटन काज रहै जुग पव्वन मैं वटपारौ ॥ ११६ ॥
नवला कवला मुष ....

—अपूर्ण

विपय—नायिका भेद के अतर्गत वय सधि, रति और शृगार का वर्णन किया गया है ।

विशेप ज्ञातव्य—रचना अत से खडित है । रचनाकाल लिपिकाल दोनो के उल्लेख नही है । रचयिता कवि जान हैं । विशेप के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र । प्रस्तुत रचना औरगजेव के समय की है ।

संख्या १२६त१. भाव कलोल, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८३/४ × ६१/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—३४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सवत् १७१३ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—अथ भावकलोल कवि जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

पर्थम अल्लह सुमिरयें जिन साज्यौ जगु साज ।
दोम महंमद सुमिरिये सिरज्या जाकै काज ॥ १ ॥
:o: :o: :o:
चिरंजीव चगता रहौ साहिजहां सुलितान ।
सपति दीप मैं तिमर ज्यौं नीकै फेरि आनि ॥ ३ ॥
भाति भाति कौ भाव हैं जो भोजन कच कोल ।
नाव रच्यौ यह समुझिकै यातै भाव कलोल ॥ ४ ॥
कहूं कछू रसु कहुं कछू एक भाति सव नाहि ।
न्यारे न्यारे भाव ये समुझि लेहु मन मांहि ॥ ५ ॥
:o: :o: :o:
नए पुराने आपुनें दोहा सोधि अमोल ।
सन् हजार अरु छ्यासठें कीनौ भाव कलोल ॥ ७ ॥
लघु गुर उत्तम नीच नर है तिनकी यह रीति ।
प्रीति करत हैं नाम पर वैर करै विपरीति ॥ ८ ॥
उत्तम जौ रिस अगन मैं तातौ होत अपार ।
सीरौ ह्वै सीरौ किये बहुत जनावै प्यार ॥ ९ ॥

अंत—

मुगधा भाजी नाहु ते गई न पहुंची द्वार ।
मछरी उछरी नीर मं लगी न पर्ल पार ॥ १५ ॥
नाहि नाहि तूं कत कन्त नाहु नह्यो तुव नेहु ।
देहु रद रसन कहे हं वे देहो तूं देह ॥ १६॥
परं जु प्रेम समुद्र यों विहा ताकों थाह ।
जो मछरी तें उबरिहै तौ मछरी भपि जाइ ॥ १७ ॥
तुव मुप पिय को चद्रमा सौतिन रवि दुपदाइ ।
जो इक नैंन रिसाइहै उनके देत जगाइ ॥ १८ ॥
समत सतरह सं भयो तापर तेरह जान ।
ग्यानी बांचौ ग्यान सौं ह्वं कलोल अभिराम ॥

संपूरन भयो सवैया लिषना रह्यौ ॥

विषय—अनेक भावयुक्त दोहों का सग्रह ।

रचनाकाल

संमत सतरह सं भयो तापर तेरह जान ।
ग्यानो बांचौ ग्यान सौं ह्वं कलोल अभिराम ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७१३ है । लि० का० दिया नहीं । रचयिता का नाम जान कवि है । इनके विषय मे देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र ।

रचना शाहजहाँ काल मे रची गई । इसमें रचयिता के समय-समय पर रचे गए नाना भाव सयुक्त दोहो का सकलन है ।

अत मे एक सवैया खडित है । शेप ग्रथ पूरा है ।

संख्या १२६थ१. ग्रथ पदनामा लुकमान का, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—८३/४ × ६१/४ इन्च पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी तथा सदी लिखित, रचनाकाल—सवत् १७२१ वि०, सन् १०७४ हि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ पदनामा लुकमान का ॥

॥ दोहा ॥

पहलं अलह रसूल कों सुमिरत है कवि जान ।
पदनामा लुकमान को याछे करत बषान ॥ २ ॥
जिते हकीम जगती तिनको गुर लुकमान ।
पद दई है पूत कों सुनियहु दै दै कान ॥ ३ ॥
जौ इन पंदनि पर चलै सो मग चूकै नाहि ।
भलो कहावै जान कहि निहचै जगती माह ॥ ४ ॥
प्रथंम कह्यौ लुकमान यों सुनि सुत दै दै कान ।
नाम लेहु करतार को भूलि न रैन विहान ॥ ५ ॥
जौ लौं तू जीवत रहै या जगती के माहि ।
तौ लौं उर करतार कौ भूलि भलाई नाहि ॥ ६ ॥

अंत—

ये सिष है लुकमान की नीकै रापहु कान ।
हिंदकी भाषा मं करी तुरकी तें फहि जान ॥ ७६ ॥

सन हजार चौहत्तरो माह मास रमजान।
ग्रंथ कियौ यहु जान कवि नीकहि राषहु कान।। ८० ।।
संवत सत्रह सै भये ता ऊपर इकईस।
लगत मास वैसाख ही बाध्यौ विसवावीस।।

इति पंदनाम लुकमान का संपूरन।।

विषय—लुकमान हकीम के उपदेशो का हिंदी मे अनुवाद किया गया है।

रचनाकाल

सन हजार चौहत्तरो माह मास रमजान।
ग्रथ कियौ यहु जान कवि नीकहि राषहु कान।। ८० ।।
सवत सत्रह सै भए ता ऊपर इकईस।
लगत मास वैसाप ही बाध्यौ विसवावीस।।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७२१ वि०, सन् १०७४ हि० है। लिपिकाल नही दिया है। रचयिता का नाम जान कवि है। विशेप के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र।

संख्या १२६८१. जफरनामा नौसेरवा का, रचयिता—जान कवि, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—८$\frac{1}{2}$ × ६$\frac{1}{8}$ इच, पक्ति—(प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी तथा कैथी मिश्रित, रचनाकाल—स० १७२१ वि०, लिपि—काल—सवत् १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—जफर नामा नौसेरवां का कवि जान कृत।।

।। चौपाई ।।

प्रथम ताकौ करौं वषान। जिन दीनौ घट कौं ज्यौ दान।।
जीव विना तन माटी आही। निकस गयें लैं गाड़ें ताही।।
अंध होत जौ देत न नैंन। गुग होत जो देत न बैंन।।
जौ ना देत अंग कै कांन। बोरो भावत सकल जहान।। ३ ।।
जौ नहीं नासिक करत प्रकास। भली बुरी को समुझत बास।।
जौ कवहु कर नाहिन पावत। दांन जुझ कौं कहा उचावति।। ४ ।।
जौ नाहिन दीने हुते पाइ। कैसै कोउ तीरथन जाइ।।
जौ वुधि चित कौ दई न होत। तौ कैसे उपजत घट जोत।। ५ ।।
वुधि उज्योरैं मारग सूझ्यौ। करता सुमिरन कौ गुन वूझ्यौ।।
कित लौं कोऊ करै वषानि। सब कछु अलह दयौ कहि जान।। ६ ।।
दूजें सुमिरन करौ नवी कौ। सकल रसूलन मैं है टीकौ।।

:o: :o: :o:

अविचल रहौ साहि औरग। जौ लौं पानी जमुना गंग।।
जौ लौं ध्रुव चंद्रमा भान। तौं लौं राज करौ सुलतान।।
साहिजहां सुत अद्भुत सूर। दुर्जं लै पहुचाये दूर।।
इकछित राज करैं ज्यौ भान। उदै अस्त लौं जाकी आन।। १० ।।
अवं विग्रंथ कौ करौ उचार। चातुर सुनि कै करिहैं प्यार।।
नगर मदाइन पुजवन काज। नोसेरवां करत तित राज।। ११ ।।

अंत—

बहुत नाम काकौ मुष आवै । जोई जिय कौं अति ही भावै ॥
सन सहस चौहत्तर जान । तब कीनो यह ग्रंथ बखान ॥ १३५ ॥
सवत सत्रह सै इकईस । सिष भाषी है विसवावीस ।
इन पंदन कौं कान जु करै । तातै कबहू चूक न परै ॥

इति ग्रंथ जफरनामा संपूरन भयौ सवत् १७७७ मिती चैत वदी २ ॥

विषय—नौशेरवा बादशाह ने एक दिन अपने वजीर बुजर्च मिहिर को ऐसा ग्रंथ रचने के लिए कहा, जो समझने मे कठिन से कठिन और आसान से आसान हो। वजीर अपने गुरु अरस्तू के पास गया और उसे उपर्युक्त प्रकार मे निवेदन किया। अरस्तू ने गूढ से गूढ प्रश्न करने को कहा और जिनका उत्तर वह स्वय देने के लिए तैयार हुआ। अत प्रश्नोत्तर का क्रम चला और पुस्तक तैयार हो गई। यही पुस्तक 'जफरनामा' के नाम से प्रसिद्ध है जिसमे गूढ से गूढ ज्ञानोपदेश और नीति सबधी बाते हैं।

रचनाकाल

संवत सत्रह सै इकईस । सिष भाषी है विसवावीस ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल सवत् १७२१ और लिपिकाल सवत् १७७७ वि० है।

रचयिता का नाम जान कवि है। इनके सबध मे देखिए, "रतनावती" का विवरण पत्र।

रचना औरगजेब के काल मे लिखी गई।

संख्या १२६ध१. मान विनोद, रचयिता—कवि जान, स्थान—फतेहपुर, (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८३/४ × ६१/४ इच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२ परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी तथा फारसी मिश्रित, लिपिकाल—सवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग।

आदि—ग्रंथ मानविनोद कवि जान कृत ॥

॥ दोहा ॥

बनिता है लडबावरी अति रसनि सौं हेत ।
पट रित मैं सजनी हितू मान करन नहि देत ॥ २ ॥
त्रिद उपचारन पोष है सतोषत है प्रान ।
जैसे कैसे जान कहि करन देत ना मान ॥

॥ सवईया १ ॥

गरजन घन घटा प्रगटोनी बीच छटा अपनी अपनी घटा दंपति की जोरी है ।
सीत रस...लागै समर समीर जागै पीयन सौं करै केल साबरी औ गोरी है ।
पीय पीय पपीहा करै सुती कहै पावस मैं न्यारी रहै तेतो नाम भोरी है ।
समयो विचार उठी चलि न लगाव वार मान धारवे कौ कहा और रित थोरी है ॥
पावस की जामनी भयावनी लगत भारी निपटि ही कारी मानौ काजर मैं बोरी है ।
चपला चमतकार इद गह्यौ हथियार ताकौं डारै मारि नाह धक तै बिछोरी है ।
दादुर पपीहा मोर सोर कै कहत यह जाकै नाही सदन पीय मदन मरोरी है ।
हौ तौ तेरी हित तातें तोको समझावति हौ मान करिवे कौ कहा और रित थोरी है ॥

सलिता समुद्र मिली लता तरवर चढ़ी मिलि तु हूं पीय अंक चढ़ि आनंद बढ़ाव री ।
घटा संग देषि बीजि छटा कैसे चमकतु तूं हूं हंसि प्रीतम सों मान रसु चाव री ।
पावत है द्रुप समैं पावस जु न्यारी रहै भोरी है डरारी कारी लागति विभावरी ।
कोकिला पपीहा मोर सोर है समर वान माल ठानवे को यहु कौन रितु बावरी ॥

अंत—

तैं जू कह्यो रूस रहिवें कों कहा थोरी रितु अनतु न रूसीहून रूसी सिष कांन की ।
रुसन की रितु अब मोकों समुझाइ देहु ऐनमंन कही जिन कहैं आन आन की ।
तोही सों हों हितु पिय जीवत है तेरैं जिय मैं मगन रहत है लगन तो सुजान की ।
तेरी सौत सांच कहीं काहे मौन साध रही षटरितु न लहौ कोऊ रित मांन की ॥

ग्रंथ मान विनोद संपूरन भयौ दसपत फतेहचंद का संवत् १७७८ मिती भादुवा सुदी सोमवार दसतषत फतेहचंद का श्री ॥

विषय—मान सबंधी कवित्तो का मग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल ज्ञात नही है । लि० काभ सवत् १७७८ वि० है रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "रतनावती', का विव पत्र ।

प्रस्तुत रचना कवित्तो मे है जो साहित्यिक दृष्टि से उत्तम हैं ।

संख्या १२६न१. विरही को मनोरथ, रचयिता—जान कवि, स्थान—फते (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—८$\frac{3}{4}$ × ६$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृ २१, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचनाकाल—सवत् १६९४ वि०, लिपिकाल—सवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्था हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ विरही को मनोरथ दोहा ॥

कहौ मनोरथ विरहिया मन को उकत बनाइ ।
जो तरंग घटि उपजिहैं सो दैहौं प्रगटाइ ॥
चित्र पूतरी देषिकैं चक्रित रही कहि जान ।
लगी टगी रसना थकी निकसि गए हैं प्रान ॥ ३ ॥
विरह श्रम मैं विरहिया पूछत सवसों वात ।
फिरि उत्तर दै आपुही...तत दिन रात ॥ ४ ॥
क्यों न चलत वैठ्यो थकित कहत पहारक...म ।
डरनन मिस रोयो करैं तोहू कों पिय पैमु ॥ ५ ॥
गिर भाषै सुनि विरहिया मेरी सम तूं नाहिं ।

अंत—

काहे चित भरमत फिरैं जैसे चपल बयार ।
निहचल ह्वै कवि जान कहि घरही मोहि निहारि ॥ ४३ ॥
सोरह सै चौरानवे चैत मास कै अंत ।
बरन्यो सागर पैमु कौ जान कावि हित संत ॥

ग्रंथ विरही का मनोरथ संपूरन भयो १७७८ ॥ भादुवा सुदी १० ॥

विषय—विरह विषयक दोहो का मग्रह ।

रचनाकाल

सोरह सै चौरानवें चैत मास [illegible] [illegible] ।
वरन्यौ सागर पैमु को जान [illegible] [illegible] मन ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल संवत् १६६८ और [illegible] [illegible] संवत् [illegible] है । रचयिता जान कवि है । इनके विषय में देखिए, "रतनावती" का [illegible] पत्र ।

संख्या १२६५१. पैमुनामा (? प्रेमनामा), रचयिता—जान [illegible] [illegible]—[illegible], (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—[illegible] × [illegible] [illegible] पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी और कैथी मिश्रित, रचनाकाल—संवत् १६७५ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—अथ पैमुनामा

॥ चौपई ॥

प्रथम पैमु भयौ करतार । रच्यौ महमद पैमु पियार ।
पैम नबी सिरज्यौ संसार । पैम नबी ससि सूरज तार ॥
पैम नबी आकास रचाए । सुरग धाम निध चंद बनाए ॥
वेपत सुनत रचन करतार । सबै महमद पैम प्रकार ॥

॥ दोहा ॥

पहिले तौ कवि जान कहि हो न जगति की साज ।
रचना रची विरच सब पैम महमद काज ॥ २ ॥

अंत—

घाट वाढ एक्कै नही वरिष ... हि मास ।
ते संपूरन जान कहि सभ में पैमु निवास ॥

॥ दोहा ॥

सोरह सै पचहत्तरै जहागीर को आन ।
पैमु भयौ चित जान कवि कीनो पैमु बखान ॥

इति पैमुनामा संपूरन भयौ मिती भादुवा सुदी ११ मंगलवार दसतषत फतेहचंद का । दोहा २१ चौपई २० श्री श्री श्री ॥

विषय—प्रेम विषय का वर्णन ।

रचनाकाल

सोरह सै पचहत्तरै जहागीर को आन ।
पैमु भयौ चित जान कवि कीनो पैमु बखान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १६७५ वि० है । [illegible] ।
रचयिता का नाम जान कवि है । विशेष के लिए देखिए, "[illegible]" का [illegible] पत्र ।

प्रस्तुत रचना जहागीर बादशाह के समय में लिखी गई ।

संख्या १२६फ१. नाममाला अनेकार्थ, रचयिता—[illegible], स्थान—[illegible] (जयपुर, राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—११, आकार—[illegible] × [illegible] [illegible] पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी [illegible], प्राप्तिस्थान—हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयाग ।

आदि—ग्रंथ नाममाला अनेकारथी कवि जान कृत

॥ दोहा ॥

पर्थम सुमिरौं एक कौं जाके भाव अनेक ।
एकं कारहि सुमिरिहै साचौ ताहि विवेक ॥
दूजें सुमिरौं नबी कौं मन रसना करि एक ।
कहत जान जिहि नाम तें आनद होंहि अनेक ॥ ३ ॥
अबहि नाममाला करौं अनेकार्थी नाम ।
संसक्रित तें भाषा रची सुगम भई अभिराम ॥ ४ ॥
एक भांति के वर्न में एक ठौर ही कीन ।
जो चाहिए सो पाइए तत सुनहु प्रवीन ॥ ५ ॥

अथ ककार वर्न ॥क॥

चितु मस्तक नीर तन कर्ज दर्व र काम ।
पवन कनक सुष काल पुनि जानहु ब्रह्मा नाम ॥ ६ ॥
विप्र जु न्हावै भोर कौं कीट दभ कहि जान ।
कर कवल कथा वहुरि इते कुथा धरि कान ॥ ७ ॥

अंत—इकार वर्न

पंच इंद्री इद्र पुनि पच विपै रु सरेस्ट ।
इद्र एक व्याकर्न पुनि भापत है वुधि स्रेस्ट ॥ ३८ ॥
धरा वाम वुधि अविका नीर सरसुती गाइ ।
इला कहति इन सवनि कौं जान कह्यौ समुझाइ ॥ ३९ ॥
नीर प्रिथवी वचन पुनि और जानियहु वांन ।
इन सवकौं ईरा कहैं जे पडित कहि जान ॥ ४० ॥

॥ उकार वर्न ॥

ह्वै स्थान ये काति कौ और समीप स्थान ।
पुनि.................................... ॥

विषय—कोशविपयक ग्रथ ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अत से खडित है, इसलिए रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात रह गए ।

रचयिता का नाम जान कवि है । विशेप के लिए देखिए, "रतनावती" का विवरण-पत्र ।

संख्या १२७. प्रेम लीला, रचयिता—मिरजा मुहम्मद जान, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—$७\frac{८}{१०}$ × $४\frac{८}{१०}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुप्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, लिपिकाल—स० १६०६ वि०, सन् १२६५ हि०, प्राप्ति-स्थान—श्रीयेत् गोपालचद्र सिंह एम० ए०, सिविल जज, मुलतानपुर, (अवध) ।

आदि—

बांसुरिया विछुरन भई भारी । विछुरन दुख वह रोइ पुकारी
जब वह रोइ विछुर बनवारी । धुनि सुनि रोये पुरुष अरु नारी
जल सो विछुरि मछरिया रोइ । मेरो मिलन वहुरि कव होइ
कैसे निवहै जीवन मेरो । रीत परे संग तजौ न तेरो

निकसि तीर सो बाहर पड़ी । खन उलटी छन मूर्छा गही
तरुवर सो जिमि पाती झड़ी । पौन क मारी इत उत पड़ी
विरह वियोग किमि जाने कोइ । जापर बीते जाने सोइ
अपने प्रीतम लाल से मिलि बिछुरे जनि कोइ
बिछुरन दुख सो जानहि जो कोइ बिछुरा होइ

अंत— मेरे मन की कामना पूरन कर भगवान
हाथ जोडि विनती करूँ विनती लीजे मान
हूँ अजान सेवक मैं तेरो । तू सुजान साहब है मेरो

मैं अजान को सब तू जाने । वृथा . ...
ना कछु जानो ना कछु बूझो । अगम पथ का अन्त न सूझो
अगम पथ को मैं बैरागी । अगम पथ क. . . . . . . नागी ।
वामग को कर मोह बनावो । मोह तोह लहत को पो छाड छिपायो
निरमोहीं कर मोर गोसाई । ना फिर हँसि है लोग लुगाई
अंत काल जो मोह जिआयो । इन आगिन जन मोह जनावो

अहो रखैया लाज की अहो गरीब नेवाज ।
मोह अस पतित बेकाज की राख लीन जो लाज ॥

प्रेम लीला मिनत शनीफ मिरजा मुहमद जान . सन १२६५ हिजरी ।

विषय—प्रेममार्गीय (सूफी) रचना ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता मिरजा मुहमद जान हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लि० का० संवत् १९०६ वि० है ।

रचयिता का अन्य परिचय नहीं मिलता ।

संख्या १२८. "शत्रुवंश कुठार", रचयिता—जानकी दास, निवास स्थान—बरौली, (सुलतानपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—९ × ४½ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९०८ वि० प्राप्तिस्थान—श्री प० रामसहाय मिश्र, ग्राम—बरौली, पो० गवरा, सुलतानपुर, (अवध) ।

आदि—

जब तुम शत्रुहन त मम रिपु हनि डार ।
कहे जनकी दशरथ सुत आपन नाम विचार ॥ ६ ॥
दुर्गा दुर्गति करिहे मम अरि उर भ्रम जाल ।
"जनकी दास" कहे काली तवल नज विशाल ॥ ७ ॥
निमक हरामिहिं खरग से हनिडारहु जग माय ॥
"जनकीदास" कहे जोरि कर पै मोहि बहुत नचाव ॥ ८ ॥
नेमी तव समुझव नहीं वही किहिनि बिस्तार ॥
"जनकी कहे" ऐसे अधिहि काली कर जजार ॥ ९ ॥

॥ अथ कवित्त ॥

रामदूत सवारि पवनसुत रिपुमान हनित अर्जनि नदा ॥
दुष्ट निकंदन दुख भजन सरनपाल कपि माद सदा ॥

कवि कोविद सज्जन मुनि बरनत संकर वेदपुरान बदा ॥
"जनकोदास" प्रभुता तव बरनो मेरे वैरी सू सिर पर बरसे गदा ॥ १ ॥

अंत— ॥ अथ दोहा ॥

जे जन पठति नित्य अथ मगर अतवार
तासू ,सबुहि काली करें सत्ति खेंकार।

इति श्री पोथी सत्रुवन कुठारी समाप्त माघ मास कृष्ण पक्ष तिथि अठी विध्र सुत वार त---१०६०८ सन् १२५६ ।

विषय---दुर्गा एव हनूमान की प्रार्थना ।

विशेष ज्ञातव्य---ग्रथ खडित है। केवल द्वितीय ग्रौर चतुर्थ मध्यक पत्रे उपलब्ध हैं। सपूर्ण चार पत्रे थे। रचना काल अज्ञात है। लिपिकाल स० १६०८ वि० है।

सख्या १२६. पदस्वयवर के, रचयिता---जीराम, कागज---देसी, पत्र---६, आकार---११×७ इच, परिमाण '(अनुष्टुप्)---१८६, पूर्ण, रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---प० विस्वनाथ जी तिवारी, ग्राम---नदना, पोस्ट---वरहज बाजार, जिला---गोरखपुर ।

आदि---श्री गणेशाय नम. पद स्वयवर के

॥ सरस्वती ॥

ग्ररी ऐरी माई ब्रह्मभवन है ग्राव ललत सुभग पद शियाराम पद सेवक पै प्रकटाव ॥टेक॥
सकल सिंगार करी हस पै सवार हुइ पुस्तक हाथ ली हो विणा कु वजाव ।
सात स्वर ग्राम तिन मूरछना राग रूप होय मेरे हिय सरसाव ॥ १ ॥
दीन पुकारें राति दिना धरें ध्यान तेरा आठ पहर जपो नाम करी चाव ।
तेज दे प्रकाश भरी सभा के विच मे मेरा भरम मिटाव ॥ २ ॥
गाऊँ मैं सजीले पद वासी छोडी कहो सद शिया का स्वयवर कहने मैं भाव ।
सुगम पियारी छवि आवें सुनी भला ज्ञान असि लड़ी बताव ॥ ३ ॥
मचन पै भूप बैठे नर नारि असि कहे शिया जोगी वर रानि राजा कुं बताव ।
कहत जी राम नाहि देर लावें राजा इव भला बना है दाव ॥ ४॥

:o: :o: :o:

मध्य---

॥ रामजी ठावें ॥

अजी एजी जैसे उछल के हरी चलता । मटकि चटकि प्रभु छैल छविला मुकुट शिश पै हलता ॥टेक॥
ग्रंठि कै सो थंभ मारी देषति सोभा विसारी रावण सो आय देषि हिए मांहि जलता।
शीया जी समेत सभ प्रजा विसुखि हो देष्यो सफल मनोरथ फलता ॥ १ ॥
संदूक कै चौफेरें रघुनाथ नाच कुंद फीरें वडी वाकें विच सभा मैं प्रभु षिलता ।
लाय मुठि ठाय धनु मान तेज वोरीयो का छिन्न एक मैं ढलता ॥ २ ॥
ठायो हि निकसि लगे नाचने षेंचत फिरें ठणक ठणक रूण झूण घोरें ढलता ।
को हो कू को हो कू तुम तुनुनुनु धक् धक मेघ घोर मैरमें रलता ॥ ३ ॥
षेंचतें उठायो फिरें षाली हि नीशाने धरें मन मैं रावण रोवें बैठा थेली मलता ।
कहत जी राम करे तिन टुक विचहु तै जनक ग्रक भरी मिलता ॥ ४ ॥१२॥

॥ चारण कहै ॥

अजी एजी शीता रामचंद्र कि जोरी । विधि ना लिषि विचारी एकशि सुनो असिका मेरी ॥टेक॥

ठाव त्यो धमकि धनु पंचि पाचि तोरीगे राजं ध्वनि दसो दिसा भरी है बहोरी ।
वाजते है तासे डोर ढोलकि महनाइ भेरी गावनि है मगन प्रभु के गुन गोरी ।
दान लेय जाचक अघाय झोरी चले भरी भर्जा नद बा पोरी ॥ १ ॥
इतने मैं राजा सभ नीच सो रोसाय गए वाजं तरवारि पैनं फरान सबं हूं गी ।
युद्ध विना जीतोहि मिले ना शिता काहू कु दिअमं कुमकाय बं बजाई नाम थ.गी ॥
साधु राजा शीलवान धरा चुचकारीक रहे दधे प्रेम को टोरी ॥ २ ॥
सुन घन घोर भृगुनाथ तो रीसाय कहे शिव का चाप इय दीया बिन तोरी ।
लक्ष्मण रीशाय क जूवाव दोय स्वामी कहे प्रभु नं मनाए मो तो दोउ कर जोरी ॥
धनुष चढायवाकि कला पंचि लइ दत्य चले परी परी चोरी ॥ ३ ॥
भृगुपति हसे जव अस्तुत गाय कहि मैं तो याने चरनो मं मनवो यहोरी ।
भक्ति दान ज्ञान इन दीजे भगवान मोहि वन्नी जी मैं जाय पनो देवि गुम टोरी ।
कहत जीराम फूलमाल गल डारी हसि शीता जनक किशोरी ॥ ४ ॥

:o: :o: :o:

अत— ॥ भाटक ॥

अजी एजी जीवो दशरथ अवधि नरेश । राम लक्ष्मण भरथ शत्रुघन सुख
पायो यह देस ॥टेर॥

महादेव गौरी गंगा गायत्री सावित्री विघन निवारो गजबदन गनेश ।
ब्रह्मा मुनि सारद श्री अंबिका भवानी थारा मेटो सकल कलेस ॥ १ ॥
योगीनी रभंरो तो सहाय करो विष्णु तेरी कृपा करो प्रभुजी इंद्र सुरेस ।
दान ले पछिक गया काया तो सकल मेरी धो मं निस दिन ॥ २ ॥
जो को गावं या कु मन लायक सुनं जो जा पूजन करं जो प्रेमी मिटन क्लेश ।
सारद कि दइलडी उमग सं कहो सुनो सभ कु यो उपदेश ॥ ३ ॥
कहत जी राम रघुनाथ नीकं हाथ दीया भाटन कुशल पतरी का सदेश ।
राम जं राम श्रीराम शीताराम पद राति दीवस रटं सेष ॥ ४ ॥२४॥

:o: :o: :o

विषय—ख्याल शैली मे सीता स्वयवर का वर्णन किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—रचना काल और लिपिकाल अज्ञात है। रचना पदो मे, ख्याल और लावनी वाजो की शैली मे, की गई है। हिंदी मे प्रचार का बहुत कुछ श्रेय ख्याल और लावनी वाजो को भी है। अत इस दृष्टि मे रचना महत्वपूर्ण है।

सख्या १३०. "नारायण लीला", रचयिता—जीवन दास (?) कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८३/४ × ४५/८ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८ परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८ खडित, रूप—प्राचीन, (जीर्ण-शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री [illegible] प्रसाद चतुर्वेदी, ग्राम—महगवा, पो०—मरहद, जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री मते रामानुजाय नम ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी। ब्रह्मा आदि को हान जीव अन्तर्यामी।
सचराचर वहिरा व्रत्ता अभ्यतर होई। सर्वात्मा सर्वज्ञ नाम नारायण सोई।
सर्वभूत्तहित्त कारणे नारायण नामा। भुवन चतुर्दश रुद्र रादि इन्द्र के विश्रामा।
शेष नाग पर्यंक शायन पकज नाभि जाता। तहां अयनते चतुरानन सृष्टि आदि विधाता।
भूत भविष्यत वर्तमान नानाविधि अवतारा। नारायण आदि मूर्त्ति दशानन [illegible]।

नारायण गुणनाम अर्थको करिहैं वाख्याना । नारायण महिमा अनंत नारायण भल जाना ।
श्री नारायण अवतार कथा सुनहु मन लाई । कर्म नशाई वहु ज्ञान हरि भक्ति कराई ।

:o: :o: :o:

जाति अनुक्रम कारि वराह सुंघत सुंघत डोलै।
जाको खोज निगम करै नेति नेति जो वोलै ।।

:o: :o: :o:

अंत—

ताते इह कुमार अवस्था वड भागन पाई ।
राज काज सव छाँडि के हरि के गुण गाई ।
सर्व वालक कहे प्रहलाद हम तुम एक नग्र के वासी ।
एक संग वसै एक पाठ पठै इह वुद्धि कहा प्रकाशी ।
तव वोले प्रहलाद भक्त सव वालका सुनोरे भाई ।
जो मैं पूर्व कथा सुनी सो कहूं समुझाई ।
एक समय असुरराज तपकरण सिधारे ।
तेहि औसर सुरराज चढि मुलतान पुर पटणमारे ।
काया धुकों जे चल्यो व्रह्म पुत्र छोड़ाई ।
तेहि अवसर गर्भवास मोहिना........।

—अपूर्ण

:o: :o: :o:

वैसा मासे कृष्ण पक्षे सुक्र................
पठना रचिवैस्लवा जिवनदासंदासं श्रीराम.....।

विषय—नारायण के अवतारो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । समस्त १० दस पत्रे उपलव्ध है । मध्य के सात आठ तथा वारहवें सख्या के पत्रे लुप्त हैं ।

संख्या १३१. ज्ञान चद्रिका (नासकेत पुराण), रचयिता—जीवन राम, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—९×६$\frac{3}{10}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७६, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि कैथी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी-सभा, वाराणसी ।

आदि—

नासकेतु स्पुंनी करै प्रनामा ।। वाउ वेगी पहुचे नीज धामा ।।
जेही वीधी गएउ सरग उठी भाई । तेही वीधी तुरीत वही पहुंचे आइ ।।
ऐह सव चरीत कहो मैं गाइ ।। नीमीखारथ मंह पहुंचे आइ ।।
मातु पिता रोवत इत देखी ।। सोक वीवस वहु सोक विसेखी ।।
मातु पिता दुख पावत नीके ।। नासकेतु आए मुनी जी के ।।
उदआलक सुत देखी हरखाए ।। हरख समेत लीन्ह उर लाए ।।
उदालक मनि हर्ख जुत लीहे पुत्र उर लाए ।।
गदगद गीरा न आवइ वार वार हरखाए ।।
उदालक कह अती हरखाई ।। जन्म सकल सव जग सोहाइ ।।
क्रीआ सकल सुत पूरन कीन्हा ।। इहा आइ मोही दरसन दीन्हा ।।
पूजा आजु सकल वीधी पूजा ।। सुत समान धर्म नहीं दूजा ।।

:o: :o: :o:

उदालक पितु नाम है जननी मातु सुदेनु ॥
चन्द्रावती जानत सर्व नाम रघुराज के देनु ॥

अंत—

दीज हत्या अधीक पातख नाना ॥
नीरकीत होइ कवन वीधाना ॥
ब्राह्मन देखत करत नर कोइ ॥
तीन्ह सम पाप अवर नहीं होइ ॥
वीस्वासघात करत पर कोइ ॥
आनक कीत वीधीनी कर सोइ ॥
सुदरनीय दीज गवन कराही ॥
सो दीज नरक सत्य चली जाही ॥
सुदर भवन दीज आसन करइ ॥
नींदही वेद नरक चली जाही ॥
गुर नीदक देखेउ जग माही ॥
नीकीत होही कवे सुख नाही ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—नासकेत मुनि का जमपुर जाना और वहां से लौटकर आना तथा जमपुरी में सुख-दुख का वर्णन करना।

संख्या १३२. आठ प्रहर मूल चेत प्रसग भाग १—२, रचयिता—जुगतानंद, कागज—बांसी, पत्र—१५, आकार—४½ × ३½ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्य भाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी।

आदि—

है निरखत छाही, जुगतानंद कहै ना तजै हरिको अति हरषाय ॥
ऊठि वडे प्रभात ही घोडे परम समाय ॥ ६ ॥

॥ कुंडलिया ॥

पहर छठे के लगत ही सुमरो ना भगवान ॥
करै धंध मन मग महो भोंडू निपट अयान ॥
भोंडू निपट अयान वान ऐसो नही गेरै ॥
निकट आतमा राम तास को छिन नहिं हेरै ॥
जुगतानंद कहैं समझ विन है पसु को सामान ॥
पहर छठे के लगत ही सुमरो ना भगवान ॥ ७ ॥

मध्य—

अथ आठ पहर दूसरे मूल चेत प्रसंग वरनते ॥

॥ दोहा ॥

सुभ मारग अटि जोग गति ज्ञान उदै हो जाय ॥
जो सतगुर पूरन मिलै देवै तिमिर नसाय ॥ १ ॥

आठ पहर दूजै कहूं मूल चेत परसंग ॥
गुर मिल चेतन होते है नातरफ सै कुसग ॥ २ ॥
वहुतक नर भूले फिरै कहूं जू तिनको चाल ॥
चिंता चाह लगी रहै और न दूजो ष्याल ॥ ३ ॥

अत— ॥ दोहा ॥

ब्रह्म दरस औ परस है ब्रह्म सरस सुष षांनि ॥
ब्रह्म गुरु और सिष भयौ ब्रह्म एक पहचानि ॥ १५ ॥
अलद जल पाले मैं भेद कछू मत मानियौ ॥
जल ही पाला भयौ फेरि जल जानियौ ॥
चरनदास को रूप ब्रह्म ही रूप है ॥
जुगतानंद सोई लह्यौ प्रगट और गूप है ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

जव भयौ चेतन रूप मै सब चेतन दरसाय ॥
जटता अंग विसारिया मुकति वंध अवकाय ॥ १७ ॥

इति श्री गुसाईं जुगता नंद जी कृत आठ पहर मूल चेत परसंग समाप्त ॥ लिखतम विसनानंद जी की ॥

विषय—इसमे आठो पहर के कृत्यो का वर्णन है और वीच-वीच मे उपदेश भी दिए गए हैं।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ के रचयिता का नाम जुगतानद है। इनके गुरु का नाम चरणदास था। इससे विशेष इनके विपय मे ज्ञात नही।

ग्रथ आदि के तीन पन्नो के नष्ट हो जाने से खडित है।

संख्या १३३. ढाढियादान, रचयिता—जैकृष्णदास, कागज—देसी, पत्र—४½, आकार—४ × ५।।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री विद्या विभाग, कांकरोली, सरस्वती भडार, हिं० व० स० ४३, पु० स० २।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री कृष्णायनम. ॥ राग सोरठ।

पुत्र भयौ आनंद ह्वै पूरन परमानद, ढाढी आयो जाचने तन मन भरि आनंद ॥१॥
बनी सभा सुंदर महा सोभा वरनी न जात, इद्र सभा जहां वारिए औरन की कहा बात ॥२॥
रतन जटित खंभा वने कनक भई सव भूमि, लगी वितानन झालरी मोतिन की रही झूमि॥३॥
सत्यलोक शिवलोक की वैकुंठहू की जानि, रही सपदा छायकें तिहू लोक की आनि ॥४॥

मध्य—

नवहु नंद की जस अमल जानत सव संसार, रोम रोम रसना करो तउव न पाऊं पार ।४२
कहा वरनौ श्री नंद कौ वरनत वेद पुरान, पुत्र भयें ऐसो कोहु दियो न दैहे दान ।४३
पुत्र भयें सुख होइ सति एक एक परिवार, यह सुख व्याप्यो सकल हिय थिर चर जो संसार ।४४
प्रहसित ह्वै श्रीलक्ष्मी आनि खरी भई द्वार, अनघन देत घटे नहीं अछय भरे भंडार ।४५
मैं विचार मन मैं कियो अरु सुन्यो पुरानन मांहि, नंद गेह परगट भए पुरुषोत्तम भ्रम नांहि।४६।

अंत—वरषा वरषे भुवि जैसैं दीन्हो व्रज नारिन ऐसें।

चारिहू दिसि संपति छाई द्रग द्रष्टि नही ठहराई।
ठहराइ नहि द्रिग दृष्टि जगमग सोन के परवत लगे।

लेहि कहा लगि चकित ह्वै रहे परम गुरु तन मन पगे ।
पगे सुख दोऊ लगे नाचन देत आसिष चाव सौं ।
वरन्यौ यह जस निर्मल अति जैकृष्ण जन वहु भाय सौं ।१।।

इति श्री जै कृष्णदास कृत ढाढिया दान सपूर्ण ।

विषय—श्रीकृष्ण के जन्म होने पर ढाढी का याचना करने को आना और श्रीकृष्ण की महिमा वर्णन करना, पश्चात् नदराय जी का ढाढी को प्रचुर मात्रा मे दान, दाक्षिणा देना आदि वर्णन । शुद्धाद्वैत सप्रदाय की दृष्टि से ग्रथ कीर्तन पद्धति का है और इसमें नंद महोत्सव का सागोपाग वर्णन है । .

संख्या १३४क. रामार्णव (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पचम आगार), रचयिता—झामदास, कागज—देशी, पत्र—३८७, आकार—[illegible] इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४६४, खंडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० भगवानदत्त मिश्र, ग्राम—ककरा, पो०—हनुमान गंज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ।। शीतारामाभ्या नम श्री सद्गुरु चरण पकज भ्यो नम श्री मद्गनुते नमः ।।

।। श्लोक ।।

सिधूरास्य सर्व भूतै रुपास्य देवै वद्य मगलादि गनेशम् ।
विना नावै कोटि विछेदकार वदे नित्य मवंद सर्व गुभुम ।। १ ।।

:o: :o. o

।। सोरठा ।।

सेइ सजल घनश्याम रामसीय दामिनि सरिस ।
हरत घोर भवधाम करुणा जल जग शमि गुपद ।। १ ।।
नील पंकरुह पाउ वशत सुमुनि मन मधुप जेंह ।
वदो सोइ वह भाउ ध्याउ जाहि गिरिजारमण ।। २ ।।

:o: :o· .o.

।। दोहा ·

कवित विवेक न एक मोहि नहि वहु वुद्धि विशाल ।
वरणो एह तव सुजस तव जव अति होहु कृपाल ।। १ ।।

:o: :o· :o

।। चौपाई ।।

रघुपत्ति व्याह कथा कछु वरणी । कहत सुनत मन वांछित करणी ।।
सुनि अब अपर चरित चित लाई । हरण सकल मदेह सदाई ।।

:o: .o. .o·

अंत—

जो चाहत सिमति मंद छंद आपु सो आपु ।
"झाम राम पद मलिन नहि सहिहो पुनि परितापु ।। १२ ।।
राम भजन तें काम सव सिद्धि होत विनु सिद्धि ।
पारस परस कुधातु ज्यो निर्म्मल शमलन रिद्धि ।। १३ ।।

इति श्री मद्राम चरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमने विमल विज्ञानान्य भक्ति प्रदायके उमा महेश्वर सम्वादे पचमार्णवे वानर सैनिकागमनन्नाम दशमस्तरङ्ग ॥१०॥ सो० २॥ दो० १३॥ चौ० ३६॥ छंद १ ॥ स० ॥ ५२ सुदर काड समरत सो० २१ दो० १७१ ॥ चौ० ६४६ ॥ छं० १८ ॥ सं० ८६१ इति रामर्णवें सुदर काड समाप्तम् ॥ श्री राम श्री ॥

विषय—अयोध्या काड, अरण्यकाड, किष्किंधा काड और सुदर काड की राम कथा का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे वालकाड, लका काड और उत्तर काड को छोडकर शेप काड वर्तमान है। रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १३४ख. रामचरित्र, रामार्णव (वाल और सुदर काड), रचयिता—झामदास, कागज—देसी, पत्र—१८७, आकार—वा० का० १३$\frac{3}{4}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, सु, का०—१०$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{3}{4}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ')—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६६६४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१८ वि०, लिपिकाल—१८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—ढेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट—माडा, जिला—इलाहावाद

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्लोक ॥

वाछा भूमिरुहं रामं जग व्याधेर्वरौषधम् ।
वदे वेदान्तविद्वंद्यं भवाब्धे कुम्भसंभवम् ॥ १ ॥
:o: :o: :o:

॥ सोरठा ॥

वंदौ गणपति पाए मगलादि अनिमादि प्रद ।
अज्ञ तिमिर उर छाए जासु ध्यान दिनमणि सुषद ॥ १ ।
:o: :o: :o:

॥ चौपाई ॥

वंदौ प्रथमहि सज्जन चरणा। जासु गिरा गोपतितम हरना ॥
कृपा सिंधु सतत सुपदाता। विचरहिं विस्व जीव हितराता ॥
छमा छमा सम सगुण विलासी। विधु सम गिरा पियूष प्रकाशी ॥
सुरसरि सम सुभ चरित सुहाई। सन्मुष होत सरिस फलु पाई ॥
:o: :o: :o:
संवत करि विधु वसु महि मांही। मधु सित सोम राम जनु जांही ॥
मंगल मूल जानि आनंदी। करौं कथा रघुपति पद बंदी ॥
विंध्य क्षेत्र सुरसरि कय तीरा। करौं कथा भजन भव भीरा ॥
:o: :o: :o:

अंत—
निज बल वर सव तुम्हहि सुनावा। संक न जु उर हर्ष बढ़ावा ॥
अस विचरि मोहि आवत जाता। वेर न पीर न रघुपति भ्राता ॥
अस सुमंत्र करि कपिन्ह समेता। गयउ महेन्द्रो परिचय वेता ॥
:o: :o: :o:

॥ छंद ॥

एह करि विचार महेन्द्र ऊपर आइ अद्भुत तनु धरो।
प्रतिमा महा महिधर समान सुवरण सुवरण मय ररो।
कनि नोह मम वरचाहरण महि मांह वज्र विराजही।
जन झाम काम करंत सोइ रिपु हन मतन्ह गाजही।

॥ सोरठा ॥

सकल सक भवपक वहु वलक नाना दुवद।
महावीर श्रुति श्रक रसनारमत विलास रव ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

एह कलि पारावार मह परो न पारावार।
झाम राम गुनगान तें विनु प्रयास निस्तार ॥

इति श्री मद्रामचरित्रे रामार्णवे सकल पाप प्रशमने विमल विज्ञानजन्य भक्ति प्रदायके उमा महेश्वर संवादे चतुर्थार्णवे समुद्र संतरणे व्यवसायो नामैकादशस्तरंग सो० ॥१॥ दो ॥ २३ ॥ चौ० १८४ ॥ छद ॥ १ ॥ सो० २६ ॥ दो० ॥ २०६ ॥ चौ० ॥ १५७६ ॥ ॥छं० ॥ २५ ॥ इति श्री चतुर्थं ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन।

रचनाकाल

संवत करि विधु वसु महि माही। मधु सित सोम राम जनु जाही ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल संवत् १८१८ है लि० का० 'बालकांड' के अंत में संवत् १८६५ दिया है। अतः चतुर्थ कांड (किष्किंधा) का भी यही लिपिकाल समझना चाहिए।

रचयिता का नाम झामदास है। स्थान से पता चलता है कि ये पहिले कहाँ थे। विंध्याचल घाट पर इन्होंने प्रस्तुत रामायण की रचना की। आकार प्रकार में प्रस्तुत रामायण 'रामचरितमानस' से दुगुनी है। इसमें रामायण के प्रसिद्ध प्रसिद्ध स्थानों की चर्चा भी नहीं है। साहित्यिक दृष्टि से यह साधारण कोटि की रचना है।

यद्यपि इसकी प्रस्तुत प्रति जीर्णशीर्ण तथा खंडित रूप में है तथापि 'बाल' और 'चतुर्थ कांड' ही ऐसे हैं जिनके विवरण सुविधापूर्वक लिए गए हैं। अन्य कांडों के पत्र बहुत अस्तव्यस्त एवं जीर्णावस्था में होने के कारण, उनके विवरण नहीं लिये जा सके।

रचयिता ने ग्रंथ का नाम 'रामचरित रामार्णव' रखा है। चतुर्थ कांड का प्रथम पत्र लुप्त है।

संख्या १३४ग. ज्वरांकुस, रचयिता—झामदास, कागज—देशी, पत्र—[illegible], आकार—७ × ४११⁄१६ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], रूप—[illegible], पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ ज्वरांकुस ॥

महावीर धीर पर पीर के हरननिहार वार वार वदत वर्णन न जानि जोर।
भूत प्रेत पूतना पतग पवमान जस मसक समान परि रस अध आदि दोर ॥
दुष्ट दोष द्रावण श्री रावण विरावण के द्रावण प्रचंड दोर दंड अति [illegible] ।
रामदूत पवनपूत पुरहूते वंदनीय "झाम" काम अपर राम [illegible] ॥

:o: :o: :o:

साकीनो औ डाकोनी बराकिनी के जोर कहा महामारी मारी आदि क्षरण मे विदारी है ।
ब्रह्म रक्ष जक्ष भूत हूतके करत भारे भाजि जात प्रेत औ पिशाच आँच भारी है ।
दृष्टि दोष मुष्टि दोष रोष जन्य दोष महा कहातें विचारि जाके दभ दंभ धारी है ।
जाके नाम ज्वलन जलाय क्षन माह दुष सो सुभाव "झाम" काम कीस क्यों विसारी है ॥

अंत--
मंत्र यत्र तंत्र हेरे भेषज घनेरे मेरे दुष के हरैया नाहि दूसरो निहारिए ।
दीन अति पीन आधि व्याधि सो विकल महा मेरी दिसि देषि वाण आपने विचारिए ।
वीर वलिवंत संत संकट हरनिहार भार अधिकार..................

:o: :o: :o:

---अपूर्ण

विषय---हनुमान जी की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य---रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । पुस्तक अपूर्ण है । आरभ के केवल दो पत्रे उपलब्ध है । इसकी दूसरी भी प्रति मिली, पर वह भी खडित है ।

रचयिता झामदास है । इनकी रामायण का भी विवरण लिया गया है ।

संख्या १३४घ. ज्वराकुश, रचयिता---झामदास, कागज---देसी, पत्र---५, आकार---७ × ३$\frac{७}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---४५, खडित, रूप---पुराना, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्ति स्थान---काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि..विदारी है ।
ब्रह्म रक्ष जक्ष भूत हूत के करत भोर भाजी जात प्रेत औ पिसाच अचंभ भारी है ।
दृष्टि दोष मुष्टी दोष रोष जन्य दोष महा कहाँ तें विचारि जाके दंभ दंभ धारी है ।
जाके नाम ज्वलन जलाय क्षन माह दुष सो सुभाव झाम काम कीस क्यो विसारी है ॥ २ ॥

अंत---
.........ल प्रताप जाको ताको जेन्ह वुझी फल कोल करी डारी है ।
जानत अषंडल प्रभाव जाके राहु वाहु वीक्रम वीलोकी कै सीधारी है ।
देवता समेती देव चक्र औ कचीत भारे हीर टुट दानव देषी दोरा जोरा भारी है ।
सोइ वाहु वीक्रम वीलोकीकै प्रसीधी जानै लोक सारे थारे वल "झामदास" त्रास को वीसारी है ॥ १८ ॥
संत सुषदाई औ सहाई सदा संकटके वंकट से सोक जो विलोकतै मीटाई है ।
दपट औ झपट लंगुर की लपेट पीछे कोन ऐसो सत्रु जसोधरि.............

:o: :o: :o:

---अपूर्ण

विषय---हनुमान जी की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य---पुस्तक आदि अत से खडित है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या १३४ड. ज्वराकुश, रचयिता---झामदाम, कागज---देसी, पत्र---४, आकार---७$\frac{१५}{१६}$ × ४$\frac{१}{१६}$ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)---६, परिमाण (अनुष्टुप्)---६१, खडित (केवल प्रथम पत्र नही), रूप---प्राचीन, पद्य, लिपि---नागरी, प्राप्तिस्थान---प० रामकिशन जी मिश्र, ग्राम--ककरा, डा०--हनुमान गज, जिला--इलाहाबाद ।

आदि........................... . आमुन प्रसिद्ध गाई है ।
आनन की सूल अवगाहु वाहु सूल महा कहाँ कहाँ उदर की सूल [illegible] है ।
वक्ष कुक्ष कटि सूल जानु जंघ सघ मूल पाय सूल पृष्ठ मूल [illegible] है ।
सूल समुदाई महावीर वेगि दूरि करु वुनि [illegible] आपनो प्रसिद्ध वेद गाई है ॥ ३ ॥
अतिसार सन्यपात जात जो अनेक भाँति महावीर [illegible] [illegible]
ज्वरन के जूह दुप देत तव दास कहूँ वाम हर [illegible] निज नाम [illegible] ।
होत आचरज एह वीर वलवान वहु नाम तो जपन [illegible] ।
भानु की उदय पवमान सुत जोहि जिय जगत वहू [illegible] ॥ ७ ॥

अंत—

शोभा के सदा अगार शीलता पारावार वार वार संत-श्रुति [illegible] गाई है ।
हाटि काइ के अकार कीश केशरी कुमार चारु वर्ण जानु पानि [illegible] है ।
शीश क्रीट भारी भ्राजु कर्ण कुंडलै विराजु साजु अंग अंग मो अनग की निकाई है ।
झामदास रूप सोई मानस निमेष जोई होई सोई आनद समुद्र सुपदाई है ॥ [illegible] ॥

इति श्री ज्वराकुंश हनुमत्कवि का समाप्तम् ॥

विषय—हनुमान की विरुदावली वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम पत्र लुप्त है । रचनाकाल और लिपिकाल [illegible] ।

संख्या १३५. दम्पति प्रत्युत्तर, रचयिता—टोडरमल (कायस्थ) [illegible]—सुवसुवा (?), कागज—देसी, पत्र—४, आकार—१० × ८ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी [illegible]—सं० १८६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरी प्रचारिणी सभा (हिन्दी नगर) काशी ।

आदि—श्री गणेशायनम अथ दपति प्रति उत्त ग्रंथ दोहा ॥

श्री गुरु गणपति शारदा वदि चरण अभिराम ॥
गुन अवगुन सव दिशन के वरने करि परनाम ॥ १ ॥
पत पत्नी सवाद यह टोडर प्रघट सुचीन ॥
दपति प्रतिउत्तर यही ग्रंथ नाम धरि दीन ॥ २ ॥
दपति बैठें परस्पर बातैं करत विनोद ॥
इछया उपजी पुरुष सों कही मानि मन मोद ॥ ३ ॥

पति उवाच—

देसाटन पूरव दिसहि करिहैं सो गनि धाम ॥
सुखदायक ह्वा चीज जो वरिनि सुनावौ नाम ॥ ४ ॥

मध्य—

पति उवाच—

पूरव ते रापे भलै दक्षिन को सब जाँहि ॥
कोन चीज उपजति जहाँ वरनि कहों ता माहि ॥

॥ कवित्त ॥

पल्लूदार सेलाजर जरीदार मेला मानू,
चोरवर चीरा हेरी टोडर सुनाए हैं ॥
पारिज पजूरि अनंनास से अजीर केला,
कटहर वेर तोता फल सुनाए हैं ॥

पुरट प्रवाल मणि माणक रतन लाल,
अतिही विसाल वेस मुकुता सुहाए हैं ॥
तरनी अनूप मन हरनी सो प्यारी सुनि,
दक्षिन दिशा के गुन वरनी सुनाए हैं ॥ ६ ।

अंत—
तिय उवाच—
चीज चारचो दिसनि की आवति अनूठी जहाँ,
तीय कमनीयता की छवि सरसाई है ॥
वृंदावन गोवर्धन मथुरा महावन है,
अति ही पुनीत वृज वेदनि बतायौ है ॥
गेहूं गुड षांड घृत तदुल तावल जुत,
पान पान टोडर छओं रितु सुहाई हैं ॥
राषौं विस्वास इष्ट देव जू सहाइ रहें,
मध्य देश रहिवे कूं पिया सुषदाई है ॥ २१ ॥

उक्ति सखी की सखी की प्रति दोहा —
वुधिवल करि राख्यौं पिया तिया जु उक्ति उछाय ॥
रैंनि दिना विछुरत नहीं कृपा कृष्ण की पाय ॥ २ ॥

उक्ति कवि की दोहा—
विधु वसु रस रिषि अंक गिनि विक्रम साष वितीत ॥
नभ तम दसमी गुरु दिना रच्यौं ग्रंथ करि प्रीति ॥ २३ ॥
टोडरमल कायथ प्रगट वसत सुवसुवा वास ॥
जगति सिंह जैपुर नृपति राज सुषद परकास ॥ २४ ॥
कवि कोविद सव जन जिते सीखें सुनें नवीन ॥
जथा जोग मे रीत है प्रणवपौं प्रणव प्रवीन ॥ २५ ॥

इति श्री दंपति प्रति उत्तर ग्रंथ टोडरमल कृत संपूर्णम् ॥ श्री ॥

विषय—ग्रथ मे उत्तर प्रत्युत्तर द्वारा भारतवर्ष मे जितनी चीजें पैदा होती अथवा पाई जाती है उनका वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना के स्थान एक ही हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ भी सकलित हैं —

१ कलि चरित्र—वाण कवि कृत
२ कलियुग रासो—गोविद
३ स्फुट सग्रह—

संख्या १३६. लालदास की कथा, रचयिता—डूंगरसी साधु, कागज—आधुनिक, पत्र—७१, आकार—७$\frac{1}{2}$ × ५$\frac{1}{2}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६६ पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६५५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह ४।५५ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा ।

आदि—श्री राम जीः अथ वावा लालदास जी महाराज की कथा लिष्यते ॥
साद संत की अग्या पाऊं । लाल भगत की कथा सुनाऊं ॥
पुरपटन सेर परबास सुथान । तहां "डूगरसी" साधं ने कियो बषाण ॥
प्रथम सुमरूं हरगुर साध । वाणी बकसो बुध अगाध ॥

निहचे हो निरमल जस गाऊं । परम तत्त को मारग पाऊं ॥
परम तत पूरन जगदीसा । सो वंठो अंतर घट दीसा ॥
गाफल ढूंढे पार न पावे । हर अपने जन कूं मारग लावे ॥

:o: :o: :o:

भरत षंड जहाँ उत्तम ठाव । धोली दूब नना को गाव ॥
पिता वसे ससरे सुपवास । जा घर जनम लीयो लालदास ॥
धन धन घड़ी धन्य वह रैन । माता पिता सुष पायो चैन ॥

:o: :o: :o:

पिता चांदमल समदा माय । जिनकी कूष औतरे आय ॥
सदां सुचेत रहै दस मास । मत मीन जहा देषो साँच ॥
तब गरब सूं बाहर आए । जननी सूं ननमुष बतलाए ॥
औधा वासण सूधा कीया । दया हुई जब नव भर दीया ॥
जोई कहै सो साची होई । जाका मरम न जाने कोई ॥

॥ दोहा ॥

संमत पदरह से सतावणों १५५७ लाल लियो औतार ।
हिंदु तुरक बिच वैठकर होत भगत परगान ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

कथा हुई किरया भई वाणी हुई अगाध ।
सतगुर मिहर मया करी भन गावं डूगर साद ॥
राम गुन गाइए ॥ हरे चोपई ॥

इति श्री डूंगर साध कृत लालदास जी की कथा सपूरन ॥ लिपी मंगत प्रसाद मे रसोईया नें हादरपुर का ने लिपाई महंत श्री मलूक दास जी ने माई भोगरी अगोन की ॥ १ ॥ चादनी साठा वाड़ी की ॥ २ ॥ राजकोर बेरला की साहो भोहारी ॥ ४ ॥ आगार दे वुढोली की ॥

ग्यान दास जी का चेला मलुक दास जी ॥ ८ ॥ वाचे विचारे जांकू नाम राम सोरो भादवा बदी १४ मगलवार संवत् १९५५ ॥

विषय—भक्त लालदास की कथा वरणन की गई है।

भक्त लालदास सवत् १५५७ मे उत्पन्न हुए थे। पिता का नाम चांदमल था। माता का नाम समदा था। निवासस्थान अलवर रियासत मे धोलीदूब गांव था। ये जन्म से ही अलौकिक गुण सपन्न थे। इनकी कृपा से कितने ही पापियों का उद्धार हुआ। ग्रथ मे इनके पुत्र, पुत्रियो और शिष्यों का उल्लेख किया गया है। शिष्य परम्परा इस प्रकार है —

लालदास
|
वेगादास
|
भारूदास
|
निहालदास
|

हीरादास
|
ठाकरदास
|
ज्ञानदास
|
मलूकदास
(स० १६५५ मे वर्तमान। इन्ही के कहने से प्रस्तुत प्रति लिखी गई)

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है। लिपिकाल सवत् १६५५ है। रचयिता का नाम डूंगर सिंह साधु है। इन्होने अपना और परिचय नही दिया।

संख्या १३७. ज्योतिष और गोलाध्याय (टीका), रचयिता—तामसन साहब, कागज—आधुनिक, पत्र—१२०, आकार—८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६००, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७६ वि०, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० महावीर जी मिश्र, ग्राम—ठटा, पोस्ट—वीवीपुर, जिला—इलाहावाद।

आदि—ज्योतिष के विवरण ॥ आकर्षण विषय ॥

ईश्वर ने सब वस्तुओ को ऐसा स्थापन किया है कि सब वस्तु महत्व क्षुद्रत्व के अनुसार आपस में आकर्षण करती है तिससे सब बड़ी वस्तु चारो ओड़ की छोटी वस्तुओ को अपनी तर्फ खेंचती है इसलिए सूर्य पृथ्वी को अरु और और ग्रह को आकर्षण करता है। और पृथ्वी चाँद को आकर्षण करती है क्योकि पृथ्वी से छोटा है।

अंत—अब पृथ्वी को दर्शन समाप्त हुआ है पृथ्वी के वीच मे कोई एक देश ऐसा नहीं है कि उसका विवरण इस पुस्तक मे पाया नहीं जाता है। इन सभी से हम ये ज्ञात होते हैं कि जहाँ विद्या व्याप्त है और ब्रह्म का सत्य आराधन चलता है वहाँ लोक उंचा अभिलाषी अरु ज्ञानी अरु प्रबल अरु सुखी है परंतु जहाँ विद्या का अभ्यास नहीं वहाँ के लोक दीन अरु हीन अरु दुःखी अरु दुर्वल हैं।

विषय—आकर्षण, खगोल, जगत, ग्रह और उनकी गति, धूमकेतु, तारे, नक्षत्र, पृथ्वी, अक्षाश, देशातर तथा पृथ्वी भर के देशो, समुद्रो, पहाडो एव अन्य वातो का वर्णन।

संख्या १३८क. शालिहोत्र, रचयिता—राताचद या चेतनिचद, कागज—देसी, पत्र—४२, आकार—६½ × ६ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१६ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० लाल सकर्षण सिंह, ग्राम—सुदरपुर, पोस्ट—वारा, जिला—इलाहावाद।

आदि—श्री गनेशनमः आथा लीखते सालहोत्र ॥

वंदी चरन गुर कोमल कलमख तिमीर दीनेस।
सालीहोत्र गरनथं कहौउ वुधि देहु गनेस ॥ १ ॥
वीजं करन वाजं करन गावत चारिउ वेद।
नकुल कहै सहदेउ से रवि वाहन को भेद ॥ २ ॥
वाहन भूसुर कोस नर छतिरीन कोहे जन।
वइसो वीरपभ वहनं कहउ महीपा सुदर नीदन ॥ ३ ॥
रवी ससी के जे वश मे छत्री वीर परचंडं।
एक तुरित वीरवल वीजं इकरत अभड ॥

अंत—

॥ नाएी नैन बतावे देषी । प्रगीत सुभाव सबन्न अस्तेषी ॥ ५५ ॥
वैद करें रोग पहिचानी । ताके राय न धर्म हानी ॥ ५६ ॥
गुरह पडे गोपी नाथा । कनवुयज में ए भए सनाथा ॥
तेनके सुत चरीउ अधीकाई । इद्रजीत सीधामन जदुराई ॥
चौथे तरचद वहएनो । जे एह अस्व बीनोद बनाएयो ॥
हरी चेतनी नमको आमा । सालहोत्र भयो परकामा ॥ ६० ॥
कुसल सीघ महराज अनुपा । चीरजीव भूपन में भूपा ॥ ६१ ॥

॥ सोरठा ॥

एह ग्रंथ सुपसारा जेनके है होनहि उएये ।
लीजे सुघर बीचारा चीतन चद यहे जय ॥ ६२ ॥

॥ दोहा ॥

संवत् सोरह सैए आधीका चारी चौगुनो जान ।
ग्रथ कहो कुसलेसहित रक्षक श्री भगवान ॥ ६३ ॥

इति श्री सालहोत्र सात अस्वची कीस समपातह ॥

विषय—सालिहोत्र विपय वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् सोरह सैए आधीका चारी चौगुनो जान ।
ग्रथ कहो कुसलेस हित रछक श्री भगवान ॥ ६३ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १६१६ वि० है । लिपिकाल नहीं दिया है । रचयिता का नाम ताराचद या चेतनीचद है । ये चार भाई थे जिनके नाम इद्रजीत, सिधामन, जदुराई और ताराचद थे । पिता का नाम गोपीनाथ पाडे था जो कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे । रचयिता कुशलसिंह नामक राजा के आश्रय मे रहते थे । प्रस्तुत प्रति की लिपि अशुद्ध है ।

संख्या १३८ख. शालिहोत्र, रचयिता—ताराचद (चेतनचद), कागज—देशी, पत्र—२५, आकार—८½ × ५ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री हर शकरप्रसाद सिंह, खडहर, पो०—मुफ्तीगज जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम. ? । अथ सालहोत्र लिष्यते ॥ दोहा ॥

नमो निरजन देव गुरु ॥ मारतड प्रकास ॥
रोगहरन आनद करन ॥ सूपदायक जगदीस ॥ १ ॥
श्री महाराजधिराज गुर ॥ सगर वंश नरेस ॥
गुन गाहक गुन जननि के ॥ जात वीदित कुसलेस ॥ २ ॥
जासू नाम प्रताप को ॥ चाहत जगत उदोत ॥
नर नारी सुप सुपक है ॥ कुसल कुसल कुसलोत ॥
:o: :o: :o:
वालापन तें सरन रहि ॥ मैं सुष पायो भूर ॥
सालहोत्र मत देषिकें ॥ वरनत चेतन चद ॥ ६ ॥

श्री कुसलेस नरेश हित ॥ नित चित चाउ लह्यौ ॥
"अश्व विनोद" शो ग्रथ यह ॥ शार विचारी कह्यौ ॥ ७ ॥
:o: :o: :o:
मुल मान साषा सुमधू ॥ पत्रं शूभकरत राज ॥
सुमन सुफल फलिग्रो सदा ॥ कुशल सिंह महाराज ॥ ८ ॥
:o: :o: :o:
विसशी कुल के वंश जे ॥ क्षत्रि वीर प्रचड ॥
एक तुरी तरवारि वल ॥ वीजें करत व्रह्माड ॥ ११ ॥
:o: :o: :o:
तेहि वाहन को भेद सव ॥ सुनहु सकल सहदेव ॥
पशुदेही मतो जानु ऐह ॥ हैं देवन मे देव ॥ १३ ॥

अंत—

घुरहा पाड़े गोपीनाथ ॥ कान्ह कुविज से भये सनाथ ॥
तिन्ह के सूत चारो अधिकाई ॥ इद्रजीत लछिमन जदुराई ॥
चौथे "ताराचंद" कहाए ॥ जेहि ऐह अश्व विनोद वनाये ॥
हरिपद चित नाम की आसा ॥ सालिहोत्र भाग्यो परकासा ॥
"कुशल सिंह महराज अनुपा ॥ चीरजीव. . . . . . .अपूर्ण ॥
....(खडित) ॥
चदन चंद कहौ जथा ॥

॥ दोहा ॥

संवत वोन से अस्रुक चारो चौगुनो जानु ॥
ग्रंथ कहो कुसलेसहित रक्षक श्री भगवान ॥

इति श्री अश्व विनोदक ग्रथ समाप्तम् । सवत् ॥ १९३० ॥

विषय—अश्वभेद, उनके रोग और लक्षणादि का वर्णन ।

रचनाकाल

॥ दोहा ॥

संवत वोन सं अधीक चारी चौगुनो जानु ।
ग्रथ कहो "कुसलेस" हित रक्षक श्री भगवान ॥

संख्या १३९. तत्व उपदेश या पोथी ज्ञान गोष्ठी, रचयिता—ताराचद, कागज़—देसी, पत्र—२७, आकार—७½ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४३, खडित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८१२ वि०, प्राप्ति-स्थान—प० व्रह्मादत्त जी पाडे, ग्राम—कनेरी, पोस्ट—फूलपुर, जिला—आजमगढ ।

आदि—....................तजोगी ॥

॥ सोरठा ॥

पिता पितंवर नाम पेडवाल शासन कहै ।
जन्मवास ता धाम नगर वराहिम महम ढिग ॥
न पूरन जोगेश "रामचंद्र" शत रामचंद शतगुर भए ।
जथा कथन उपदेश प्रत्ति शदेह तथा लिप्यौ ॥

गए सकल संदेह जादिन ते शतगुन मिले ।
मिटेउ भरम मन देह पूरब शुभिन पुन्य ते ॥
श्रीवासतव सोई कामथ दुसरी पक्ति है ।
सालहोत्र पद होइ मूल ग्राम मोइ भोजपुर ॥

॥ दोहा ॥

परसराम तें भागमल रामचद सुत तासु ।
पिता पर पिता जानियो विस्न भगति विग्यान ॥
पाथर तें कचन भयो पारस गुर गोविंद ।
"रामचद" को चद शो कियो विमल सुप वद ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम मिलाप गुस्टि जो भई । तत्व कला पुरन निरमई ॥
स ग्यान कर्म अध्यातम सत्व । ॥

अत—

जब फिरि चहै जमावन षेत । उहै बीजतें उपजे हेत ॥

राम राम राम इती श्री तत्व उपदेश पोथी ग्यान गोष्टिवला समाप्तः भादो... तारा-चद लीषीत रेवती राम कायस्थ अस्ठाने स्थान सहीपर तपं दुर्बया प्र नीजामदाद मवार, ... शमत १८१२ मीती भादौ शुदी १० मोकाम आजमगढ मो लीषा ॥

:o: :o: .o

पचम मुद्रा प्राणायाम । एइ पाचो मुद्रा नाम ॥
मुद्रा चरी उनमुनी । ... . ॥

:o: :o: o

—अपूर्ण

विषय—तत्वज्ञान का उपदेश किया गया है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है। प्रथम पत्र और तीसरे पत्र से ... तीस से लेकर छत्तीस तक एव चौवन के पश्चात् के पत्र नहीं है। ... सवत् १८१२ वि० है।

सख्या १४०क. अद्भुत विलास (वशीकरण विधि), रचयिता—... वांसी, पत्र—६, आकार—८ × ५ इच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६५५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह) काशी।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ अद्भुत विलास लिरव लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

जैसे जैसे पोहप सग सुर है ॥ जो तिल के तेल ॥
तैसे तैसे वास गुन कहिए वाको नाम फुलेल ॥

॥ चौपाई ॥

कोई ब्रामचरज है दीषलावं ॥ कोई जाटक चाटक लावं ॥
कोई ईंद्रजाल लै आया ॥ कोई माया रूप दिखाया ॥
कोइ लोक अंजन मोहन करें ॥ कोइ चितन की सुरत हरें ॥
कोइ रूप पलट के हरे ॥ देषं ओर और कुछ करे ॥

॥

कोई फल अनरत फलै ॥ कोई वात करत जो चलै ॥
कोई जल पैठो होई जलवासी ॥ कोई अगिन सेज ले उदासी ॥
कोई नीर जीव सर जीव दिपावै ॥ कोई चित्र रोवै और गावै ॥
सव गुनियन मिलि कोतक कीना ॥ जो देषे सो अचरज गिना ॥

मध्य— ॥ और वसीकरन ॥
चाहै नारि पुरुष वस कीजै ॥ तव ऐसी वीधी कीजै ॥
मूल कनेर लाल की अने ॥ वरस आदित लीजै ॥
पीसी कुटि के गोली करिए ॥ आन सुषावै छाही ॥
आगे जतन कहुगो जैसो ॥ तिसमें धोष नाही ॥
तिल के तेल जलावै गोली । जैसे छार दीषवै ॥
तव इह नल छानिए ॥ वस तरसीर के लावै ॥
कामनी करे तेल का मरदन ॥ अपने पीया सो सोवै ॥
पुरुष होय कामनी के वश मैं ॥ कपट हीए का पोवै ॥

अंत— ॥ और वसीकरन ॥
जो आने चरवी मीढ़हा की ॥ ताही अगिन मे धरीय ॥
मेल फुलेल ताही ओटावै ॥ दोहु एकत्र करीय ॥
उठि के प्रात हथेली धरिके ॥ लंके भोह लगावै ॥
जो सनमुष होइ देषे ताको ॥ संग लगा सोइ आवै ॥

इति श्री अद्भुत विलास ॥ वसीकरण वीध समापतं ॥

विषय—इसमे वशीकरण की विधियाँ दी हुई हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—रचयिता का नाम ताहिर है। ये संभवत आगरे के रहनेवाले थे; क्योंकि मुखपृष्ठ पर श्री मयाशंकर जी याज्ञिक ने उन्हे 'आगरे के रहनेवाले थे' लिखा है। रचनाकाल सं० १६५५ वि० का अंत समय है —

संवत सोले सौ गने और पचपन मे राष ॥
अंत काल गिनि लीजिए वेद भेद सव भाष ॥

प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित दो ग्रंथ संकलित हैं —

१. अद्भुत विलास—ताहिर कृत
२. भरत विलाप—ईश्वरदास कृत ।

संख्या १४०ख. मुक्ति विलास (हठ प्रदीपिका), रचयिता—ताहिर, कागज—देसी, पत्र—२६, आकार—६$\frac{3}{4}$ × ४$\frac{1}{2}$ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३९०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ मुक्तिविलास लिप्यते ॥
॥ चौपई ॥
ऊंकार आदि [अविनासी । रूप अपार ज्योति प्रकासी ॥
पर दरसन जे सिद्ध कहांवै । परम तत्व दरसन को पावै ॥
गहै नाक अरु गाल वजावै । अदिन पंथ नाही [वे पावै ॥
पलक मुरती उर धरहि । जल पर चिति पुनका करहि ॥
मुंदै नैन षोज नहीं पावै । पुनि तिहि षोज षोज मन लावै ॥
बहुतै कहै कहानी भूलै । प्रगट कमल अग्नि महि फूलै ॥

अंत—

इडा पिंगला धमनि में दोऊ चलत ससि भान ।
तामस कहिए चद्रमा राजस सूरज जान ॥
उपाइ सबै हठ किए राजजोग सिधि सार ।
सजम जोग अस्ट करि काल बचावन हार ॥
ताहर सुकवि सुभाइ सब कीयो सार उधार ।
रुढ (?गूढ) विद्या वरनन कीयौ नाना ग्रंथ विचार ॥
नाना रिष के मति बिना धात चढौहि पास ।
हठ विद्या अभ्यास तें दियो मोह तम नास ॥
कवि ताहर वरनन कियौ साधन जोग अभ्यास ।
अहिमद गुरु की कृपा तें दिए कपाट हिए के खोल ॥ १६ ॥

इति श्री मुक्ति विलास जोग साधन पूर्वाचार्य हठ प्रदीपका ग्रंथ संपूर्ण ॥ १ ॥

विषय—हठयोग का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल ज्ञात नहीं है । रचयिता का नाम ताहिर है । इनके गुरु का नाम अहमद था । और वृत्त नहीं मिलता ।

ग्रंथ अपने विषय का उत्तम है । इससे यह पता चलता है कि मुसलमान भी योग विद्या से प्रभावित हो चुके थे ।

प्रस्तुत ग्रंथ निम्नलिखित ग्रंथों के साथ एक हस्तलेख में है —

१ सामुद्रिक, २ ग्रहदान विधि, ३ दिन प्रमाण घटिका विचार, ४ स्वरोदय टीका, —अखैराम, ५ शकुन विचार ।

संख्या १४१क. रामायण (बालकांड), रचयिता—गो० तुलसीदास [illegible], पत्र—१६४, आकार—११ × १०½ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०३४, खंडित, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६३१ वि०, लिपिकाल—सं० १७४९ वि०, प्राप्तिस्थान—पं० रामेश्वरप्रसाद मिश्र, ग्राम—[illegible], पो०—भैंसा बाजार, जि०—गोरखपुर ।

आदि—

.... जोनी । सुमिरत दिव्य द्रिष्टि हिय होनी ॥
दलन मोह तम सो सु प्रकासू । बड़े भाग उर आवै जासू ॥
उघरहिं विमल विलोचन ही के । मिटहिं दोष दुख भव रजनी के ॥
सूझहिं रामचरित मनि मानिक । गुप्त प्रगट जहाँ जो जेहि खानिक ॥

॥ दोहा ॥

जथा सुअंजन अंजि द्रिग साधक सिध सुजान ।
कौतुक देखहिं सैल वन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

अंत—

॥ छंद ॥

निज गिरा पावनि करन कारन राम जस तुलसी कह्यो ।
रघुवीर चरित अपार वारिनिधि पार कवि कौने लह्यो ।
उपवीत व्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं ।
वैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुख पावहीं ।

॥ सोरठा ॥

सिय रघुवीर वीवाहु जे सप्रेम गार्वाहं सुर्नाहं ।
तिन कहु सदा उछाहु मंगलायतनु राम जसु ॥ ३८८ ॥

इति श्रीराम चरित्रे मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने प्रथम सोपान : समाप्तं सुभमस्तु इति वालकाड संवत् १७४९ समै नाम जेठवदि सतमी वार सुक्रवार ॥ ली० चुरामनि दास वासूदास सुत जाति रैदास मुरति थान सगड़ी सभसतन्ह के पाउ की षाक ॥ दोहरा ॥

जो जन रुखेउ विषय रस चीकने राम सनेह । तुलसीते प्रिय राम कहं कानन वसहु कि गेह ॥१॥
काम गाइ के दूध सो हाड चाम सो नाहिं । तुलसी अंवृत पीजिए साधून्ह के मुष माहि॥२॥

विषय—वालकाड रामायरण की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत प्रति मे सख्या १ और सख्या ४३ के पत्ने नही है । एक पत्ने पर दो कागद चिपके होने के कारण कितने ही पत्रो के एक ओर के लिखे पृष्ठ भी लुप्त हो गए हैं ।

रचनाकाल स० १६३१ तथा लिपिकाल स० १७४९ वि० है । प्रति प्राचीन होने से ही इसका विवरण लिया गया है ।

संख्या १४१ख. रामायण (अयोध्याकाड), रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—६ × ८½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१२, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १७७७ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (दाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—वरदह जिला—आजमगढ) ।

आदि..सुंदर सव भाति ॥
कहि न जाय कछु नगर विभूती । जनु एत निय विरंचि करतूती ॥
सव विधि सव पुरलोग सुपारी । रामचंद मुष चंद निहारी ॥
मुदित मातु सव शखि शहेली । फलित विलोकि मनोरथ वेली ॥
राम रूप गुन शील शुभाऊ । प्रमुदित होहि देषि मुनि राउ ॥

॥ दोहा ॥

सवके उर अभिलाष अस कहहि मनाइ महेसु ।
आपु अछत जुवराज पद रामहि देहु जनेषु ॥ १ ॥
एक वार जानकी समेता । वैठे प्रभु निज रुचिर निकेता ॥
भुज प्रलंव उर नयन विशाला । पीत वसन तन स्याम तमाला ॥
कोटि मनोज देषि छवि मोहा । सीता कर चामर वर सोहा ॥

मध्य—

मोहि लगि सवै सहेउ संतापू । वहुत भांति दुष पावा आपू ॥
अव गोसाइं मोहि देउ रजाई । सेवउं अवध अवधि भरि जाई ॥

॥ दोहा ॥

जेहि उपाड पुनि पाय जनु देषै दीनदयाल ।
सो सिष देइअ अवधि लगि कोशलपाल कृपाल ॥

अंत..................................नहि ।
सीय राम पद प्रेम अवसि होइ भव रस विरति ॥ ३२६ ॥

इति श्री रामचरित मानसे सकल कलुष विध्वंसने विमल वैराग्य संपाति जोगो नाम द्वितीय सोपानः समाप्तः ॥ शुभमस्तु संवत् ॥ १७७७ ॥ वैशाख मासे कृष्ण पक्षे रवं दाशर... दाशी पुस्तक समाप्त शुभमस्तु ॥ राम राम.......

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रति जीर्ण शीर्ण तथा खण्डितावस्था मे प्राप्त हुई है । लिपिकाल सवत् १७७७ होने से यह काफी प्राचीन है ।

संख्या १४१ग. रामायण, गोस्वामी तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—२९९, आकार—९ ४/१० × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—९८०७, अपूर्ण (खडित)—रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कैथी, लिपिकाल—स० १७५२ वि०, प्राप्तिस्थान—बाबू मूसनसिह, ग्राम–सेवराई, पो०–गदवग, जिला–गाजीपुर ।

आदि.............. ।

करहु हरखी होअ रामहि टीका । मंत्री मुदीत सुना नृप बानी ।
... ... । अभीमत बीरव परा जनु पानी ।
बीनती सचीव करं कर जोरी । जीअहु जगतपती बर्ख बरोरी ।
जग मंगल भल काज बीचारा । बेगी नाथ न लाइअ बारा ।
नृपही मोद सुनी सचीव सुभाखा । बढत बवरी जनु लहत सुसाखा ।

॥ दोहा ॥

कहेउ भूप मती राज कर, जो जेही आएसु होइ ।
राम राज अबीखेक होत, बेगी करीअ सोइ सोइ ।

:o: ·o· :o·

अंत—इती श्रीराम चरित्रे मानसे सकल कलीकलुष बीधसनो नाम पोथी उत्तरकांड सपुरन समापतह जो प्रती देखा सो लीखाम्म दोख न दीअते पंडित जन सो बीनती मोरी छुटल अछर लेव सम जोरी ॥ सम १७५२ समे नाम माघ सुदी पुन्नवासी सोवास प. राघाधार सनी जीव का निकट बीपं ।

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य–ग्रथ अपूर्ण है । केवल १९९ पत्रे उपलब्ध हैं —

अयोध्या काड	३१ पत्रे ।
अरण्य काड	३१ पत्रे ।
किष्किधा काड	२५ पत्रे ।
सुदर काड	२६ पत्रे ।
उत्तर काउ	८० पत्रे ।
कुल	२९९ पत्रे ।

लिपिकाल सवत् १७५२ वि० है । प्रस्तुत प्रति जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है और इसकी लिपि अत्यत भ्रष्ट है ।

संख्या १४१घ. रामायण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—३१४ (काडो के क्रम से उनके पत्रो पर अलग अलग सख्याएँ लगी है), आकार—१३ इच × ६ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००००, पूर्ण रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९७७, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भडार, द्वि. विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ६१, पु० स० ३ ।

आदि—श्री रामचन्द्राय नम. ॥ श्री रामो जयति ॥ श्री जानकीवल्लभो जयति ॥

वर्णानामर्थसघाना रसाना छंदसामपि ।
मंगलाना च कर्त्तारौ वदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥

भवानी शंकरौ वंदे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वांतस्थमीश्वरं ॥ २ ॥
वदे वोधमयं नित्य गुरुं शंकररूपिणं ।
यमाश्रितोहि वक्रोपि चद्रः सर्वत्र वंद्यते ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० १ किष्किंधा कांड, चौपाई ॥

आगे चले वहुरि रघुराया । रिष्यमूक पर्वत नियराया ॥
तहाँ रह सचिव सहित सुग्रीवा । आवत देखि अतुल वल सीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल वल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखु तें जाई । कहेसि जानि जिय सयन वुझाई ॥
पठए वालि होहि मन मैला । भागो तुरत तजौ यह सैला ॥
विप्र रूप धरि कपि तहां गएउ । माथ नाइ पूछत अस भएउ ॥

अंत—

पुण्यं पापहरं सदा शिवकरं विज्ञान भक्ति प्रदं ।
माया मोह मलापहं सुविमल प्रेमाम्वुपूरं शुभं ।
श्रीमद्रामचरित्रमानसमिदं भक्त्यावगाहंतिये,
ते संसार पतंग घोर किरणैंदंह्यंति नो मानवा. ॥ २ ॥

इति श्री राम चरित्र मानसे सकल कलि कलुष विध्वंसने अविरल हरि भक्ति संपादिनी नाम सप्तम सोपानः ॥

संवत् १७७७ वर्षे आषाढ सुदी ६ वुधे लिखतं श्री अमदावादे श्री राय जी पठनार्थं ॥ श्री राम ॥

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन ।

संख्या १४१ड. रामायण, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५६१, आकार—६$\frac{२}{१०}$ × ४ इंच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७८३ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामराज पण्डेय, ग्राम—मडही, पो०—पतरही, जिला—जौनपुर ।

आदि— ॥ सोरठा ॥

जो सुमिरत सिधि होई गन नायक करिवर वदन ॥
करौ अनग्रह सोई वुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥
मूक होई वाचाल पंगु चढ़ै गिरिवर गहन ॥
जासु कृपा सो दयाल द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

भरत चरित करि नेमु तुलसी जो सादर सुनहिं ॥
सीय राम पद पेमु अवसि होइ भवरस विरति ॥ ३२५ ॥

इति श्री राम चरित्र सकल कलुष विधंसने वीमल वैराग्य सपादनी नाम द्वितीय सोपान समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ संवत् ॥ १७८३ ॥ राम राम ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीनहित तुम्ह समान रघुवीर ॥
अस विचारि रघुवंस मनि हरहु विषम भवभीर ॥
कामिहि नारि पियारि जिमि लोभीहि प्रिय जिमि दाम ॥
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम ॥ १३० ॥

बालकाड	१६१ पत्रे
अयोध्या काड	१५७ पत्रे
आरण्य काड	२८ पत्रे
किष्किधा काड	१६ पत्रे
सुदर काड	३६ पत्रे
लका काड	७३ पत्रे
उत्तर काड	६० पत्रे
समस्त	५६१ पत्रे

विशेष ज्ञातव्य—"गोस्वामी तुलसीदास" कृत रामायण की प्राचीन प्रति (सं० १८८२ वि०) की मिली।

संख्या १४१च. "रामसतसई" या तुलसी सतसई, रचयिता—तुलसीदास स्वामी—देशी, पत्र—४७, आकार—१०½ × ५३/६ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १६५१ वि०, प्राप्तिस्थान—पडित भागवत तिवारी, ग्राम—सुरथा, पो०—[illegible] ([illegible]) जिला—गाजीपुर।

आदि—श्री गनेसाएनम्हः श्री राम सतसई लिखते दोहा ॥

नमो नमो श्रीराम प्रभु परमातम परधाम।
जेहि सुमिरत सिधि होत है तुलसि जन मन काम॥

राम वाम दिसी जानकी लखन दाहिनि वोर। ध्यान सकल कल्यानमय तुलसि सुरतर तोर॥
परम पुरुष परधाम वर जापर अपर न आन। तुलसि सो समुझत सुनत राम सोइ निरवान॥
सकल सुषद गुन जासु ते राम कामना हीन। सकल काम प्रद सर्वहित तुलसी कहहि प्रवीन॥
जाके रोम रोम मति अमित अमित ब्रहमड। सो देषत तुलसि प्रगट अमल सु अचल प्रचड॥

:o: :o: :o:

अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिज गुरुवार। माधवसित सिय जन्मतिथि सतसैआ अवतार॥
हरन भरन अति अमित विधि तत्य अर्ध कविरिति। साकेतक सो ध्यातमत तुलसि दहत [illegible]॥
विमल वोध कारन सुमति सतसैआ सुषधाम। गुरमुष पढोगति पाईहै विरति भगति अभिराम॥
मनभय जरसत लागुजुत प्रगटछद जुत होए। सो घटना सुषदा सदा पहन गुरहि [illegible]॥
जल समान तत वान लघु अपर वेद गुर मान। सजोगादि विकल्प पुनि पदन [illegible]॥
वीर्घ लघु करी तह पढ़व जह सुष लह विश्राम। प्राकृत प्रगट सुनाय [illegible] सुपासुष काम॥

अंत—

जो जगदिस तो अति भलौ जो महिस तव भाग।
जन्म जन्म तुलसि चहहि राम चरन अनुराग॥
का भाषा का संस्कृत विभव चाहियत साच।
काम जो आवै कामरी का लेय करोच कुमाच॥
वरण विसद मुकुता सरिस अर्थ सुत्र ननतुग।
सतसइआ स्रवर विसद गुण सोभा सुमसुन॥
वरमाला वाला सुमति उर धारे जुत नेह।
सुषं सोभा सरसात नित लहै नाम [illegible]॥
भुप कहहि लघु गुणिन कह गुनि कहहि लघु भुप।
महि गिरिगत दोउ लपत जिमि तुलसि लघं सुरूप॥

॥ दोहा ॥

चारु विचारि चल परी हरि वाद विवाद ।
सुकृत सिमस्या रथ अपध परमाथ मरजाद ॥

इति श्री मद्गोसामि तुलसिदास विरचिताय सत्य सातिय सतया सर्ग समापत सुभमस्तु सिधि संतु संवत् १६११ साल माह चैत सुदी रोज दीन एक एतवार के लिषा मयाराम सतसइ संपुरन सर्ग ॥ ७ ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

अहि रसना थन धेनु सर गनपति दिज गुरुवार ।
माधव सित सिय जन्म तिथि सतसैआ अवतार ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल स० १५४२ है, जो सगतिजनक नही जान पडता । सभवत. 'सर' लिपिकाल द्वारा गलत लिखा गया है । वास्तव मे उसे 'रस' होना चाहिए । इससे सवत् १६४२ वि० होता है, जो गो० तुलसीदास जी के समय को दृष्टि मे रखकर ठीक जान पड़ता है ।

संख्या १४१छ. सर्वागपीर मोचन (हनुमान वाहुक), रचयिता—गो० तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६¾ × ४½ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता—ढेरातर के महाराज, स्थान व पो०—माडा, जि०—इलाहावाद) ।

आदि..................... ।

शीलधाम पूरोकाम आठो जाम लेत नाम कीशपति कृपा करि रोष विसराइए ।
दास शीश पीर वीर कालनेम सम जानि वातपूत लूम्वते लपेटि कै भवाइए ।
डाटि कै चपेट मारि दूरि डारि कीशनाह पुन्यवाह तुलसी के सीश ढिग ल्याइए ॥ ७ ॥
पाप के प्रभाव की कि कर्म के सुभाव की कि काल के करालता की प्रेरिका हू रिश की ।
जंत्र मंत्र ओटकी कि दुराचार मोटकी कि पूर्वो द्विज दोह की अघ ओघ वलीश की ।
एते हेरु शंभव पिशाची रूप शिषापीर भागि जाहि वेगि वानि वलि कीश की ।
आन हनुमान की सपथ वलवान की दोहाई कवि धीश की जो रहै पीर शीश की ॥ ८ ॥

आरत वेयन पुकारत ही कपिनाथ न नेकु अवार लगाए ।
राघव दूत अकूत वली जन हेतु विशाल लङ्गूर लफाए ।
शीश कि पीर पिशाचिनि लङ्किनि समुझि समेटि पछारि भवाए ।
गात शुभाय भए तवही जही तुलसी हनुमान मनाए ॥ ६ ॥
लोचन पीर प्रवेश करो तव पंडित लोग सुनो परिमाना ।
औषद मूल विचारि हिए करु मारुतनंदन के पद ध्याना ।
होइह लोचन शुच्छ सुहावन छूटहि पाप व्यथा वलवाना ।
राम कृपावल पाय प्रतीति सदैव भजै तुलसी हनुमाना ॥ १०० ॥

:o: :o: :o:

अंत—

रचिकै सुभेषज गो संत द्विजन कीधौ मित्र सो विरोध कीन्हो लोभ लागि थाति की ।
कीधो कुलवंती नारि गृह सो निकारि दीन्हो प्रीति मानि चेरी सो अति नीच जाती की ।

तुलसी कहत कीधो कुल के कलङ्क है फेर माह दुष्टन की अनि [illegible] ।
पापिनी निशाश्चरी ति जानिकै कृपानिधान महावीर दूरि कीजै पीर [illegible] ॥८॥

छप्पय

जय रघुवर व(र) दूत जयति नम मारु [illegible] ।
जय कपि कुल पङ्कज दिनेम तिमिर गन [illegible] ।
जय सुर मुनि हेतु दशानन दर्प [illegible] ।
जय महिरावन कालनेमि निशिचर मद [illegible] ।
जय राम काज लगि प्रगट भय कपि [illegible] ।
रुजहर अघहर कष्टहर जय हनुमान धुरन्धर धर्म्म धुरन्धर ॥

इति श्री गोसाइ तुलसीदास विरचिते सर्वांगपीर मोचन हनुमान [illegible] समाप्तम् सुभम मिथे ॥ १ ॥ सवत् १८७४ फागुण शुक्ल नवमी चंद्र वासरे लिखित [illegible] रघुबर-दयाल मिश्रेण स्वार्थ परार्थ वा श्रीमते रामानुजाय नम ॥

विषय—समस्त शरीर कष्ट निवारण के लिए हनुमान की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के आरंभ के दो पन्ने नहीं हैं । [illegible] है । लिपि-काल सवत् १८७४ है ।

संख्य १४२क. बानी, रचयिता—तुलसीदास, कागज—[illegible], पत्र—[illegible], आकार—६ × ४½ इच, पंक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—[illegible], रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—[illegible] । (दाता—प० हनुमानप्रसाद मिश्र, ग्राम—मोनई [illegible], पो०—[illegible] जिला—[illegible]) ।

आदि— ॥लिख्यते छद ॥

सत सुरति समुझती हार साधो नीरख नीत नैनन रहो ।
धून धधक धीर गभीर मुरली मरम मन मारग गहो ।
सम सील लील आपील पेलं पेल पुलो पुली लयो पर ।
नीत नेम प्रेम पीपार पी को सुरती नजि पल पल भरं ।
धर गगन डोर अपोढ परर्स पकर पट पं.व पोय धरं ।
सर साध सुन सूधार जानो ध्याय धर जय घोर घूमा ॥
जहा रूप रेप नभेष काया मनन माया तन [illegible] ॥
अली अत मूल अतूल कवला फूल फोर फोर धरी धरं ।
तुलसी तार नीहार सूरति संत मत मत मन धरं ॥ १ ॥

अंत—अदबुद आद अलेषा री सषी [illegible] ॥ टेक ॥
उदित मुदीत दोउ सहेर सोहावन स्याम सेत [illegible] ।
अरज नेत्र नभ फटक सीला पर पद नीरवान पीछेदा री ॥ १ ॥
सील पीली बीजे पेल चाँदाचल सोल नीचर पर ठेरा ।
समुंदर सात पार जल पड़ी [illegible] ॥ २ ॥
नीरखो चार पानी गत चारी पीघ पीघ [illegible] ।
केवल ग्यान होत गंकारा देषे [illegible] री ॥ ३ ॥
ये नीरवान भूमि मति मारग [illegible] ।
सीरवग जैन धरम मत माही उनके [illegible] री ॥ ४ ॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावै [illegible] ।
सास्त्रं साद भाय पोथी देषं पोलत [illegible] री ॥ ५ ॥

या के परे भौंन बीधि न्यारी सुंनवाई सबीधि देषा ।
ताके परे पार सत साहेब सो पद संतन लेषा री ॥ ६ ॥
सुनी सुन प्रत प्रत माहों जहां नीरवान ना पेषा ।
केवल आद आत मा नाहो धरम कर्म नहो येका री ॥ ७ ॥
सुर चंदा नही धरनी अकासा तेज पौन जल छेका ।
ताके परे पार नीरष न्यारा तुलसी हीये द्रोग देखा री ॥ ८ ॥

:o: :o: :o:

—अपूर्ण

विषय—निरगुन मतानुसार भक्ति और ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना खडित हे । मध्य भाग के कई पन्ने लुप्त है । देखिये "दत्तलाल की बाराखड़ी" का विवरण पत्र ।

संख्या १४२ख. बानी ?, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—$८\frac{२}{१०}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री प० रामदेव शुक्ल, ग्राम–राजापुर, पो० गौरा बादशाहपुर, जिला–जौनपुर ।

आदि—जब मन हाथ होय जेहि प्रानी ॥
ततछन भेंटे सारगपानी ॥

॥ दोहा ॥

जो मन जीति सकै नहि ॥ वो ममता नहि त्याग ॥
तब सर्गुन के पथ लै ॥ ज्यो जोगी के आग ॥
वेद भेद लै रहे निवारा ॥ जो कहै ग्रथ सो करे विचारा ॥
पूजिय वोडर तीरथ कीजै ॥ पिंड पानी पित्रन्ह कहँ दीजै ॥

:o: :o: :o:

सर्गुन रूप दशो अवतारा ॥ ताकर सुनहु सब बेवहारा ॥
तामह सातो जन्म मुरारी ॥ निर्गुन रूप जानतु बनवारी ॥
॥ दोहा ॥ नवधा भक्ति कहो मैं ॥ सुनो रिषं मन लाइ ॥
अध्यातम महं देषियहु ॥ कह कविवर समुझाइ ॥
प्रथम भक्ति दरशन हरि संता ॥ दूसर समगुन रहे जपता ॥
तीसरि भक्ति कहो जिन भांति ॥ गुरपद लीन रहे दिन राती ॥
पहिले आपुहि चीन्ही के तब चीन्हे संसार ॥
"तुलसी" मन के बोध तें भेंटत लागु न बार ॥

अंत— ॥ दोहा ॥

सहस बार सो नहि जपै तौं सत बार जपंत ।
गुगुल होम करि अभ्रदल करिहें अग्नि प्रजंत ॥
हुमराष कुंभे भरे पट कुंभे षटमास ॥
तब सब लै धरनी तले जहां वेदी तहां वास ॥

:o: :o: :o:

जाके राम हृदय मंह आया ॥
सो परिनाम चिन्त लगाया ॥

:o: :o:

जलज पत्र ज्यो रहे जल माहीं ॥
आपन भेद न कहे कोइ पाही ॥
अजपा जाप न जानै कोई ॥
वासर निसा तत्वचित होई ॥
परदारा विमुष रहैं [illegible] ॥
.... ॥

:o: :o: :o:

विषय—संतमतानुसार ज्ञानोपदेश तथा ईश्वरभक्ति वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण और खंडित है। केवल [illegible] पत्र [illegible] है। [illegible] होने के कारण रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है।

संख्या १४२ग. रत्नसागर ज्योतिष या वृहस्पति [illegible], रचयिता—तुलसी, [illegible]—वासी, पत्र—१७, आकार—६$\frac{१}{८}$ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—[illegible]८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—[illegible] दुबे, रेकवारेडीह, पो० मऊ, जिला—आजमगढ़।

आदि—रत्नसागर ज्योतिष ?
श्री गणेशाय नमः। अथ पोथी रत्नसागर ज्योतिष श्री शिव उमा सम्वाद तुलसी कृत लिष्यते।

॥ अथ दोहा ॥

जय जय श्री रघुवंशमणि दीनदयाल कृपाल।
अस कहि श्री गौरीश्वर बोले वचन रसाल।

॥ चौपाई ॥

सुनहु उमा अति रुचिर प्रसंगू। सुमति विलास वर्नित [illegible] [illegible]।
सुर गुरु दशा केर फल जैसा। द्वादश राशि बषानो तैसा।

॥ अथ मेष राशि ॥

मेष राशि पर जब गुरु रहहीं। [illegible] एक तब [illegible] [illegible] [illegible]।
नर सु अन्न संग्रह सब करिहै। प्रथम मास [illegible] [illegible] [illegible]।
ताहि समय श्रावन के मासा। सप्त दिवस [illegible] [illegible] [illegible]।
बिक्री होइ सुअन्नन्ह केरी। तेहि आगे दुर्भिक्ष न [illegible]।

:o: :o: :o:

अंत— सुर गुरु द्वादस रासि पर माना।
गनित प्रचल से निगम बषाना।

:o: :o:

॥ छंद ॥

निर्भय सहित परिवार होइ अनेक भव सचु पावही ।
तिहु भाति कपट विहाइते नर वेद मत मैं ल्यावही ।
पट अष्ट दश सन्मत इहै दिज चरन रति प्रिय जाहि को ।
तुलसी कृपा गिरिजेश करि अमरेश पद जग ताहि को ।

॥ सोरठा ॥

देहि सपद भगवंत वारहि वार वेद क ।
बसहि हृदय श्रीकत सुख सिंधु कृपायतन ।

इति श्री बृहस्पति कांड तुलसीकृत शीव उमा संवादे ज्योतिष मत संपूर्ण ।

:o: :o: :o:

विषय—शिव उमा सवाद । राशियो का विचार । सवतो का फल । तथा उनका देश विशेप पर क्या प्रतिफल होगा ? आदि का विचार ।